THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_176401

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—707—25-4-81 10,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 R16R Accession No. P. G. H6337

Author रामकर्ण. संपा.

Title राजरूपक. 1941.

This book should be returned on or before the date last marked below

बालाबख्श-राजपूत-चारण-पुस्तकमाला—६

राजरूपक

संपादक

पं० रामकर्ण

प्रकाशक

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

सं० १९९८

प्रथम संस्करण
१०००

प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा,
काशी

मुद्रक
श्री अपूर्वकृष्ण वसु
इंडियन प्रेस, लिमिटेड
बनारस ब्रांच

निवेदन

जयपुर राज्य के अंतर्गत ह्योतिया ग्राम के रहनेवाले बारहट-नृसिंहदास जी के पुत्र बारहट बालाबख्श जी की बहुत दिनों से इच्छा थी कि राजपूतों और चारणों की रची हुई ऐतिहासिक और (डिंगल तथा पिंगल) कविता की पुस्तकें प्रकाशित की जायँ जिसमें हिंदी-साहित्य के भांडार की पूर्ति हो और ये ग्रंथ सदा के लिए रक्षित हो जायँ। इस इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने नवबर सन् १९२२ में ५०००) काशी-नागरीप्रचारिणी सभा को दिए और सन् १९२३ में २०००) और दिए। इन ७०००) से ३॥) वार्षिक ब्याज के १२०००) अंकित मूल्य के गवर्मेंट प्रामिसरी नोट खरीदकर ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट फंड्स, युक्तप्रांत के पास जमा कर दिए गए हैं। इनकी वार्षिक आय ४२०) रु० होगी। बारहट बालाबख्श जी ने यह निश्चय किया है कि इस आय से तथा साधारण व्यय के अनंतर पुस्तकों की बिक्री से जो आय हो अथवा जो कुछ सहायतार्थ और कहीं से मिले उससे "बालाबख्श-राजपूत-चारण-पुस्तकमाला" नाम की एक ग्रंथावली प्रकाशित की जाय जिसमें पहले राजपूतों और चारणों के रचित प्राचीन ऐतिहासिक तथा काव्य-ग्रंथ प्रकाशित किए जायँ और उनके छप जाने अथवा अभाव में किसी जातीय संप्रदाय के किसी व्यक्ति के लिये ऐसे प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ, ख्यात आदि छापे जायँ जिनका संबंध राजपूतों अथवा चारणों से हो। बारहट बालाबख्श जी का दानपत्र काशी-नागरीप्रचारिणी सभा के तीसवें वार्षिक विवरण में अविकल प्रकाशित कर दिया गया है। उसकी धाराओं के अनुकूल काशी-नागरीप्रचारिणी सभा इस पुस्तकमाला को प्रकाशित करती है।

विषय-सूची

विषय पृष्ठ

(१) प्रथम प्रकाश

मंगलाचरण १
प्रार्थना ६
वंशोत्पत्ति ७
ज़सवंतसिह जी का स्वर्गवास १७

(२) द्वितीय प्रकाश

बादशाह औरंगजेब का अजमेर आना २३
अजीतसिह जी का जन्म २६
दिल्ली में बादसाह का राठौड़ों पर सेना भेजना ३१
दोनों रानियों को सिर काटकर यमुना में बहा देना ... ३२
दिल्ली में राठौड़ और बादशाही सेना का युद्ध ३३

(३) तृतीय प्रकाश

तहवरखान का अजमेर आना ४१
तहवरखान का पुष्कर में राठोड़ों से युद्ध ४५

(४) चतुर्थ प्रकाश

कुंडाद्रह में तहवरखान से रूपसी का युद्ध ४८

(५) पंचम प्रकाश

औरंगजेब का अजमेर आना ५१
औरंगजेब का चीतौड़ पर जाना और सीसोदियों का औरंगजेब से युद्ध ५३
राठौड़ों का जालौर को घेरना ५५
औरंगजेब का उदयपुर पर जाना ५६
बादशाह का अजमेर आकर जालौर की सहायता करना ... ५७
राठौड़ों का सोभत हो जोधपुर घेरना ५७
इन्द्रसिंह का दिल्ली से जोधपुर आना ५८
इन्द्रसिंह का खेवासर में सोनंग और दुर्गदास से युद्ध ... ५९

विषय पृष्ठ

(६) षष्ठ प्रकाश

इन्द्रसिंह के भाग जाने से बादशाह का उस पर कोप ... ६३
बादशाह का शाहजादा अकबर और तहवरखान को राठोड़ों पर भेजना ६४
महाराणा राजसिंह का राठौड़ों के शामिल पुत्र भीमसिंह को भेजना ७६
राठौड़ों का बादशाही सेना से नाडोल में युद्ध ७८

(७) सप्तम प्रकाश

अकबर और तहवरखान का राठौड़ों से मित्रता करना ... ९१
राठौड़ों का अकबर को बादशाह बनाना ९४
बादशाह का अकबर बादशाह बनने से घबराना ... ९४
अकबर का अजमेर में बादशाह को घेर लेना १००
तहवरखान का बादशाह के पास जाना १०१
बादशाह का तहवरखान को मारना १०२
अकबर का बादशाह से मिलने का राठोड़ों को भ्रम ... १०३
राठोड़ों का अकबर को छोड़कर जाना १०३
अकबर का गाफिल रहना १०४
अकबर का राठोड़ों के पास जाना १०६
दुर्गदास का अकबर से मेल करना १११
राठोड़ों का अकबर को धैर्य बँधाना ११४
राठोड़ों का उत्साह ११५
अकबर के स्त्री-पुत्रों को दुर्गदास के भाई खेमकरण को सौंपना ... ११५
अकबर की खबर के लिये बादशाह का दूत भेजना ... १५२
बादशाह का अकबर और राठोड़ों के पीछे शाहज़ादा आलम को भेजना १५३
राठोड़ों का आलम को रोकना १५६
शाहजादा आलम को रोकनेवाले वीरों के नाम और उत्साह ... १५७
दुर्गदास का अकबर को लेकर दक्षिण में जाना १७४
आलम का राठोड़ों से युद्ध १७५
दूतोंका औरंगजेब से कहना कि दुर्गदास अकबर को दक्षिण में ले गया १७७
आलम को पश्चिम की तरफ और आजम को पूर्व की तरफ रखना १७८
औरंगजेब का अकबर के पीछे दक्षिण में जाना १७९
दुर्गदास का सोनग चांपावत को अजीतसिंह जी के रक्षार्थ भलामन देना १८०

विषय ... पृष्ठ
अजीतसिंह जी का आबू पहाड़ की तलहटी में गुप्त रहना ... १८१
इनायत खाँ और उसके पुत्र रावणखंड का जोधपुर में रहना ... १८२
सोनग प्रमुख क्षत्रियों का देश में उपद्रव करना १८३
राजपूत वीरों का जोधपुर को घेरना १८८
राजपूत वीरों का मुसलमानी सेना से युद्ध १८९

(८) अष्टम प्रकाश

राठोड़ों का सोझत पर आक्रमण १९५
राठोड़ों का देश में उपद्रव और लूटपाट करना १९९
बादशाह का आसतखान आदि द्वारा संधि का प्रस्ताव ... २००
सोनग के मरने से संधि के प्रस्ताव का रुकना २०१
सोनग के अभाव में चांपावत अजबसिह सेनापति ... २०२
मेड़तिया मोहकमसिह का बादशाही मनूसब छोड़कर राठोड़ों से मिलना २०२
राठोड़ों का मेड़ता में मुसलमानों से युद्ध २०३
अजबसिह का वीरगति को प्राप्त होना २०७
चांपावत उदयसिह सेनापति २०६

(९) नवम प्रकाश

राठोड़ों की सेना का वर्णन २०६
राठोड़ों का अजमेर की ओर जाना और पुर, मंडल को लूटना ... २१३
कासमखाँ का पराजित होकर भागना २१६
भाद्राजण में नूरमली की पराजय २१७

(१०) दशम प्रकाश

राठोड़ों का देश में जहाँ तहाँ उपद्रव और खैरालू में सैयद मुहम्मद से युद्ध २१८
अनायतखाँ और नूरमली से राठोड़ों का युद्ध २२१
नूरमली की पराजय २२३

(११) एकादश प्रकाश

नूरमली का जैतारण में ऊदावत जगराम आदि से युद्ध और उसकी पराजय २२४

विषय पृष्ठ

(१२) द्वादश प्रकाश

भाटी रामसिंह का अबदुल्लाखाँ को मारना २२९
मेड़तिया मोहकमसिंह का सैयद अली को मारना और गोहर का भागना २३१
जालम का असतखाँ के पुत्र को हराना, उसका वापिस अजमेर जाना २३२
असतखाँ का राठोड़ों को इजारा देने का लोभ देना ... २३३
पाली पर राठोड़ों का आक्रमण और महम्मदअली के पुत्र का खडाला के रणांगण से भागना २३५
करणोत खींवकरण और ऊदावत जगराम आदि का जोधपुर और अजमेर के बीच में उपद्रव करना २३८
नूरमली का मिणियारी जाना और राठोड़ों से युद्ध ... २४२
चौहानों का मंडोर को लूटना और खोजा साहबा से युद्ध ... २४४
नूरमली का जोधपुर आना २४७
सोझत में सैराणी से राठोड़ों के युद्ध में सामतसिंह रामसिंह का काम आना २५०

(१३) त्रयोदश प्रकाश

उसतरां के थानेदार कूंपावत आना को हराना और थाना लूटना २५२
मोहकमसिंह को मेड़ता में मुहम्मद अली का धोके से मारना ... २५४
सोझत के थानेदार सुजाणसिंह से राजसेना का युद्ध, उसमें उरजनोत भाटी महेशदास काम आया २५६
राठोड़ों का शत्रुओं को मारने का उत्साह २६१
चांपावत उदयसिंह आदि का बीकानेर की तरफ़ जाकर थानेदारों को हटाना और फिर जोधपुर पर आक्रमण करना ... २६५
जूंझारसिंह के पुत्र संग्रामसिंह का मनसब छोड़कर आना ... २६५

(१४) चतुर्दश प्रकाश

नूरमली की राठोड़ों पर चढ़ाई २६९
नूरमली के सहायतार्थ भाई महम्मदअली का आना और भाद्राजण में युद्ध २७३

विषय पृष्ठ

(१५) पंचदश प्रकाश

पड़दलखाँ का सिवाने जाना और वहाँ से भागना ... २७५
नूरमली का भाटी सबलसिंह से मुकाबला २७६
सबलसिंह की दो कन्याओं का पकड़ा जाना और सबलसिंह का उनके साथ होना २७७
सुंदरदासोत रतनसिंह का पड़दलखाँ को मारना ... २८१

(१६) षोडश प्रकाश

मिरजा नूरमली का मेड़ता से टोडे जाना और सबलसिंह को साथ ले जाना और सबलसिंह का मिरजा को मारने का उद्योग निष्फल और उसी का मारा जाना २८२
वीसलपुर के समीप युद्ध में मीर फतू के मामा अबदुल का वध ... २८४
टोडा में शेख वहवदी के साथ नूरमली का युद्ध, उसमें दोनों का मारा जाना २८६
सांचोर का थाना लूटना २८७
राठोड़ों का मेड़ता में मिरजा अहमद अली को घेर लेना ... २८८
राठोड़ों का देश में भ्रमण करते जोधपुर के घेरा देना ... २८९

(१७) सप्तदश प्रकाश

भाद्राजण से मिरजा रावणखंडी का भागना और इक्का को मारना २९२
राठोड़ों का जालौर पर जाना, विहारी फतैखाँ का भागना, जालौर को लूटना २९३
राठोड़ों का जोधपुर के पास देईझर लूटना २९५
राठोड़ों की राजा को देखने की उत्कंठा, उसी अवसर पर हाड़ा दुर्जनसाल का आना २९५
खीची मुकनदास का राजा को प्रकट करना २९६
राजा अजीतसिंहजी के दर्शन का आनंद २९७
इनायतखाँ का औरंगजेब को राजा प्रकट होने की इत्तिला भेजना... ३०१
महाराजा अजीतसिहजी का देश में भ्रमण ३०३
दुर्गादास का दक्षिण से आकर भीमरलाई जाना और महाराजा का सम्मान करना ३०५

विषय पृष्ठ

(१८) अष्टादश प्रकाश

औरंगजेब का छल, अर्थात् जसवंतसिंह जी का दूसरा कृत्रिम पुत्र बनाना ३०८
हाड़ा दुर्जनसाल का राठोड़ों के साथ बूँदी जाना, वहाँ गोली लगकर उसका मारा जाना ३०९
राजा के पास सेवा में सरदार ३१३
गुजरात के सूबादार शुजायतखाँ का संधि के लिये प्रस्ताव ... ३१७
इनायतखाँ के पुत्र अहमदअली को राठोड़ों का लूटना ... ३१७

(१९) एकोनविंश प्रकाश

कलामबेग का मारवाड़ में दौरा करना ३२०
सुजाबेग से राठोड़ों का युद्ध, उसमें सुजाबेग का भागना ... ३२१
महाराजा अजीतसिंह का पीपलोद में विराजना ३२२
सफीखाँ का अजमेर में दुर्गदास से युद्ध में भागना ... ३२३
सफीखाँ का बादशाह को असत्य लिखना कि दुर्गदास भागकर दक्षिण में गया ३२४
शुजाअतखाँ का महाराजा की तलाश में इसाक मियाँ को भेजना ... ३२५
शफीखाँ का धोका देकर अजमेर बुलाना ३२६
महाराजा का अजमेर से वापिस आना ३२७
महाराणा जयसिंह जी की सहायता करना ३२८
लाखा का इक्के को मारना ३३१
औरंगजेब को अपनी पोती के ओर की चिता ३३२
राठोड़ों का अनेक स्थानों में युद्ध और मीरों को पकड़ना ... ३३३
बादशाह को अकबर के अन्त:पुर की चिंता ३३७
सुजाअतखाँ का दुर्गदास के पास दो दूत ब्राह्मण भेजना ... ३३९
अजीतसिंह जी का आडावला में पेशकसी लेना ३४०
महाराजा का लश्करखान को भगाना ३४१
महाराणा जयसिंह जी के पुत्र से फिर विरोध हुआ तब महाराजा को अपने भाई गजसिंह जी कन्या ब्याहना ३४५
महाराजा का देवलिया के राजा की कन्या का पाणिग्रहण करना ... ३४६
महाराजा का सीरोही में जाना ३४७

विषय ... पृष्ठ
औरंगजेब का सुजाअतखाँ द्वारा दुर्गादास से संधि का प्रस्ताव ... ३४९
महाराजा का शाहजादा, सुजाअतखाँ और दुर्गादास के साथ जोधपुर में आना ३५१

(२०) विंश प्रकाश

दुर्गादास का सुरतांण को लेकर दक्षिण में जाना ३५५
महाराजा का जालोर जाना ३५५
महाराजा का जैसलमेर के रावल की कन्या से विवाह ... ३५५
महाराजा का हलवद में झाली, रोहेचा में फतैसिंह की कन्या और होठसू में चतुरसिंह की कन्या का पाणिग्रहण ... ३५६
महाराजा का जालोर में निवास करना ३६०
बादशाह का आजम को गुजरात के सूबा पर रखना ... ३६०
भटियाणी मिरधावती का पाणिग्रहण ३६०
औरंगजेब का धर्म के लिये दुराग्रह ३६३
महाराजा धर्म के रक्षक हों ऐसा आशीर्वाद ३६३
महाराजकुमार अभयसिंह जी का जन्म ३६६
महाराणी का प्रथम स्वप्न ३६६
महाराजकुमार का जन्मोत्सव ३६९

(२१) एकविंश प्रकाश

महाराजकुमार का वर्णन ३८३
सांचोरा सहँसमल की कन्या का पाणिग्रहण ३८६
महाराजा को मेड़ता मिलना ३८७
राव इन्द्रसिंह के पुत्र मोहकमसिंह का मन में जलना ... ३८७
जैतावत अर्जुनसिंह का मोहकमसिंह से मेल करना ... ३८८
मोहकमसिंह का मेड़ता से जालोर पर चढाई करना ... ३९०
महाराजा के पास सहायतार्थ सामंतों का जाना ३९१
महाराजा का युद्धार्थ तैयारी करना ३९३
युद्ध में मोहकमसिंह का पराजय ३९९

(२२) द्वाविंश प्रकाश

इब्राहिम का महाराजा से मिलना ४०४
महाराजा का भोमियों को सीधा करना ४०६

विषय पृष्ठ

महाराजा का जोधपुर पर अधिकार करना ४०७
परगनों से मुसलमानों को भगाना ४१३
महाराजा का रानियों और महाराजकुमार को जालोर से जोधपुर बुलाना ४१४

(२३) त्रयोविंश प्रकाश

आलम का युद्ध करके बादशाह होना ४१७
आलम का अजमेर आना और महाराजा का सामना करना ... ४१९
बादशाह का संधि के लिये महाराजा के पास चेला नाहरखान को भेजना ४२१
बादशाह का महाराजा से मिलना और तेगबहादुर खिताब देना ... ४२४
आलम का कामबख्श पर चढ़कर दक्षिण में जाना ... ४२५
महाराजा और जयपुर महाराजा का बादशाह के साथ जाना ... ४२५
नरबदा से महाराजा का जयपुर महाराजा सहित वापिस लौट आना ४२६
दोनों राजाओं का उदयपुर जाना और महाराणा से मिलना ... ४२७
महाराजा का जोधपुर आना और महराबखाँ का भागना ... ४२७

(२४) चतुर्विंश प्रकाश

जयपुर महाराजा जयसिंहजी का जोधपुर में सूरसागर स्थान में रहना ४३३
महाराजा का सैयदों को मारकर सांभर लेना ४३४
महाराजा का जयपुर महाराजा को आंबेर में जमा देना ... ४४१

(२५) पंचविंश प्रकाश

महाराजा का दीपावत भंडारी खीमसी और रघुनाथ को राज्य का काम सौंपना ४४४
महाराजा का राव इन्द्रसिंहजी से नागौर लेना ४४६
महाराजा और जयसिंहजी का कोलिया गाँव में शामिल होना ... ४४७
बादशाह का अजमेर आकर अजीम के द्वारा संधि करके जोधपुर जयपुर देना ४४८
महाराजा का पुष्कर स्नान कर जोधपुर आना ४४९
आलम का उत्तर दिशा में मरना ४५३
मौजुद्दीन का बादशाह होना ४५४
महाराजा को दक्षिण और गुजरात का सूबा मिलना ... ४५४
मौजुद्दीन को मारकर फ़र्रुखसियर का बादशाह होना ... ४५५

विषय पृष्ठ
फर्रुखसियर का मुगल जुलफकार को मारना और सैयदों का बल बढ़ना ४५६
मोहकमसिंह का सैयदों के पास जाना ४५६
मोहकमसिंह को दिल्ली में मरवाना ४५७

(२६) षड्विंश प्रकाश

सैयद हसनअली का क्रुद्ध होकर अजमेर आना ४५९
महाराजा का सैयद के मुकाबले में जाना और वापिस जोधपुर आना ४६०
खींवसी भंडारी की अर्ज से महाराजकुमार अभयसिंह जी को दिल्ली भेजना ४६२
म० कु० अभयसिंह जी की दिल्ली में बादशाह से भेंट ... ४६८
बादशाह का अभैसिंह जी को गुजरात का सूबा देना ... ४७०
महाराजकुमार का दिल्ली से जोधपुर आना ४७४

(२७) सप्तविंश प्रकाश

म० अजीतसिंहजी का गुजरात सूबा पर जाना ४७५

(२८) अष्टविंश प्रकाश

महाराजा का नागौर पर सेना भेजना और राव इन्द्रसिंह जी का नागौर से चला आना ४७८

(२९) एकोनत्रिंश प्रकाश

महाराजा का जैतावत अर्जुनसिंह को मरवाना ४८२
महाराजा का इंद्रसिंह के पुत्र मोहनसिंह को मरवाना ... ४८३

(३०) त्रिंश प्रकाश

महाराजा का अहमदाबाद से द्वारका यात्रा करना ... ४८५
महाराजा का झालों के हलवद राज्य को विजय करना ... ४८५
द्वारकानाथ का दर्शन करना ४८८

(३१) एकत्रिंश प्रकाश

महाराजा का द्वारका से जोधपुर आना ४९४
बादशाह का सैयदों से नाराज होना ४९४
देवडा मानसिंह की कन्या का पाणिग्रहण ४९५
महाराजा का दिल्ली जाते पुष्कर आदि में ठहरना ... ४९६
महाराजा का दिल्ली के समीप सराय में ठहरना ... ४९७

विषय — पृष्ठ
दिल्ली में महाराजा का सैयदों से स्वागत किया जाना ... ४९८
बादशाह के भेजे हुए दूत कादरखाँ का महाराजा से मिलना ... ४९९
महाराजा का बादशाह के पास जाना ५०१
दरगाह से वापिस आते महाराजा का सैयदकृत स्वागत ... ५०३
महाराजा की सैयद अबदुल्ला के साथ मित्रता ५०६
बादशाह का महाराजा के डेरे पर आना ५०७
महाराजा का बादशाह के दरबार में जाना ५०७
दक्षिण से हसनअली को बुलाना ५०८
हसनअली का दक्षिण से दिल्ली आना ५०९
फर्रुखसियर को मारकर रफील् उद्दरजात को तख्त पर बिठाना ... ५१२
उक्त बादशाह के मर जाने से रफीउद्दौला को तख्त पर बिठाना ... ५१४
रफीउद्दौला के मर जाने से मुहम्मदशाह को तख्त पर बिठाना ... ५१५

(३२) द्वात्रिंश प्रकाश

नेकू बादशाह को कैद करना ५१६
महाराजा का सैयदों के कोप से जयसिंह की रक्षा करना ... ५१७
महाराजा का दिल्ली से जोधपुर आना ५१८
जयसिंहजी का सूरसागर में ठहरना ५१९
महाराजा की कन्या जयसिंह जी को ब्याहना ५२१

(३३) त्रयस्त्रिंश प्रकाश

महाराजा का अजमेर पर अधिकार करना ५२३

(३४) चतुस्त्रिंश प्रकाश

बादशाह का मुदफ्फरखान को जोधपुर पर भेजना ... ५२५
महाराजा का मुकाबला में महाराजकुमार अभयसिंह जी को भेजना ... ५२८
मुदफ्फरखाँ का भागकर आंबेर में घुसना ५३४
अभयसिंह जी का दिल्ली में उपद्रव करने से धूकलसिंह नाम ... ५३५

(३५) पंचत्रिंश प्रकाश

महाराजकुमार का त्रिवेणी में स्नान ५४०
„ खाटू में विवाह ५४१
„ लदाणा में विवाह ५४२

विषय ... पृष्ठ

(३६) षट्त्रिंश प्रकाश

अभयसिंह जी का अजमेर आना ५४९
अजीतसिह जी का सांभर में निवास ५५०
बादशाह का चेला नाहरखान को संधि के लिये भेजना ... ५५०
नाहरखान को सांभर में मारना ५५१

(३७) सप्तत्रिंश प्रकाश

चूड़ामणि के पुत्र का महाराजा के शरणागत होना ... ५५२
बादशाह का हैदरकुली और इरादतखाँ को अजमेर पर भेजना ... ५५३
महाराजा का अजमेर में ऊदावत अमरसिंह को रखना ... ५५७
हैदरकुली और इरादतखाँ का महाराजा से संधि करना ... ५६१

(३८) अष्टत्रिंश प्रकाश

महाराजा का महाराजकुमार को बादशाह के पास भेजना ... ५६३
महाराजकुमार का दिल्ली में पहुँचना ५७६

(३९) एकोनचत्वारिंश प्रकाश

महाराजकुमार का बादशाह से मिलना ५७८
महाराजा अजीतसिहजी का स्वर्गवास ५७८
रानियों का सती होना ५७९
म० अभयसिंहजी का दिल्ली में महाराजा का स्वर्गवास सुनकर उत्तर-क्रिया करना ५९६
जयसिंह जी का अपनी कन्या अभयसिहजी को मथुरा में ब्याहना ... ५९८
महाराजा अभयसिंहजी का बाई सूरजकँवर से वृंदावन में मिलना ६१४
जयसिंह जी का मथुरा और महाराजा का दिल्ली जाना ... ६१५

(४०) चत्वारिंश प्रकाश

महाराजा अभयसिहजी का दिल्ली जाकर बादशाह मुहम्मदशाह से मिलना ६१६
महाराजा का दिल्ली से जोधपुर आना ६१६
महाराजा का कवि और सेवकों को यथायोग्य देना ... ६२२

(४१) एकचत्वारिंश प्रकाश

बादशाह का इरादतखाँ, वंगस और जयपुर महाराजा को सेना देकर भेजना ६३०
बादशाही सेना का अजमेर और नागौर पर अधिकार करना ... ६३०

विषय पृष्ठ
महाराजा का जोधपुर में होली का त्योहार मनाना ... ६३१
महाराजा की नागोर पर चढ़ाई ६३१
महाराजा का युद्ध करके नागौर लेना ६३२

(४२) द्वाचत्वारिंश प्रकाश

महाराजा का वसंत का उत्सव मनाना ६४१
महाराजा का दिल्ली जाना और बादशाह से मिलना ... ६४७
सेरबिलद का गुजरात में प्रबल प्रताप ६४८
बादशाह का सूबादार के बल पकड़ने से चिंताग्रस्त होना ... ६५०
बादशाह का दरबार करके सेरबिलद पर जाने को कहना ... ६५१
दीवान कमरदाखाँ का महाराजा अभयसिंह जी को सेरविलंद पर भेजने को कहना ६५५
बादशाह का महाराजा अभयसिंहजी को बुलाकर गुजरात का सूबा देकर सेरविलद पर जाने के लिए बीड़ा देना ६५७
महाराजा का मारवाड़ में आना ६५९
महाराजा के वर्णन में ऋतु वर्णन ६६०
महाराजा के फिर चार विवाह ६७०
महाराजा का चढ़ाई करते घर का प्रबंध करना ६७१
महाराजा का गुजरात जाने के लिए तैयार होना ६७४
महाराजा का जोधपुर से प्रयाण करना ६९९

(४३) त्रिचत्वारिंश प्रकाश

महाराजा का जालोर में मुकाम ७०१
सीरोही के राव मान की पुत्री का पाणिग्रहण ७०४
महाराजकुमार रामसिंहजी का जन्म ७०५

(४४) चतुःचत्वारिंश प्रकाश

महाराजा का सीरोही से रवाना होकर गुजरात जाना ... ७०७
महाराजा का अहमदाबाद पहुँचना ७१०
महाराजा का आना सुनकर सेरविलंद का जोश ७१४
महाराजा का जोश ७१४
महाराजा का व्यूहरचना करना ७१६

विषय ... पृष्ठ
कवियों का विरुद उच्चारण करना ७५८
युद्ध का नक्कारा और युद्ध का आरंभ ७६५
संग्राम का वर्णन ७७५
तीनहजारी तरीनखां पठान का मारा जाना ७९१
कायमखान, एवजखान, अबदल का युद्ध ७९३
अलियारखान का युद्ध ८०२
बखतसिहजी का अलियारखान को मारना ८०४
सेरविलंद का रणांगण से विमुख होना ८०४
महाराजा के वीर सरदार काम आए ८०६
महाराजा की विजय ८११

(४५) पंचचत्वारिंश प्रकाश

सेरविलंद का पराजय ८१२

(४६) षट्चत्वारिंश प्रकाश

नींबाज के ठाकुर ऊदावत अमरसिह का अजमेर से आना ... ८१५
अमरसिह को देख महाराजा का प्रसन्न होना ८१७
संधि का प्रस्ताव ८२०
अमरसिह द्वारा संधि होना ८२२
शुद्धिपत्र ८२५

भूमिका

राजपूताना का इतिहास जैसा डिंगल भाषा में वर्णित है, वैसा अन्य किसी भाषा में उपलब्ध नहीं है। कारण यह कि डिंगल भाषा राजस्थानी भाषा है और यह सर्व-सम्मत तथा युक्ति-युक्त है कि जैसा वर्णन प्रचलित देश-भाषा में होता है वैसा अन्य भाषा में नहीं हो सकता। जैन धर्म के आचार्यों ने जैन धर्म प्रचार के लिये जितने ग्रंथ लिखे वे सब मगध देश के संबंध से मागधी भाषा में लिखे गए। क्योंकि आदि जैनाचार्य का निवास मगध में था। गुजरात के निवासी कवियों ने गुजराती भाषा में लिखे। देहली के बादशाह प्रायः ईरान (पारस) देश से आए थे। इसलिये पारस देश के संबंध से बादशाहों के समय में जो ग्रंथ लिखे गए वे सब प्रायः पारसी भाषा में हैं। बंगाल के निवासी कवियों ने जो ग्रंथ लिखे वे बंगाली भाषा में हैं। महाराष्ट्र देश के कवियों ने जितने ग्रंथ लिखे वे सब मराठी भाषा में हैं। पंजाब के निवासी कवियों ने पंजाबी भाषा में लिखे। व्रज-मंडल के निवासी कवियों ने व्रज-भाषा में ग्रंथों की रचना की। यह ठीक है कि यथार्थ रहस्य अपनी देश-भाषा में जैसा रहता है वैसा अन्य भाषा में नहीं रहता और वही हृदयंगम होता है।

डिंगल भाषा राजस्थानी भाषा है इसी से राजस्थान के कवियों ने अपनी राजस्थानी भाषा में कविता निर्माण की है। डिंगल भाषा ओजस्विनी और वीररस की पूर्ण पोषक है और राजस्थान वीर पुरुषों का आकर है इसलिये डिंगल भाषा अधिकतर वीर-रसमय देखने में आती है। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि डिंगल भाषा केवल वीर-रसमय ही है। इसमें शांत, शृंगार, करुण आदि समस्त रसोंवाली कविता उपलब्ध है।

शांतरस के लिये 'हरिरस' आदि ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। शृंगार-रस के 'मधु-मालती, ढोला मारवण रा दूहा, रतना हमीर री वात, पन्ना वीरमदे री वात, ढोला मारवण री वात' आदि अनेक ग्रंथ विद्यमान हैं। करुणरस से भरे 'करुण बतीसी' आदि अनेक ग्रंथ हैं। अद्भुत रसवाली कविता 'कायर बावनी' आदि ग्रंथ देखने में आते हैं। हास्यरस के ग्रंथ 'विदुर बावनी' आदि मिलते हैं, जो अपनी अपनी कोटि में अप्रतिम हैं।

डिंगल भाषा के कवि मुख्यतया चारण और भाट हुए हैं और वर्तमान समय में भी प्रायः वे ही दृष्टिगोचर होते हैं। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि चारण और भाटों ने ही डिंगल की कविता का ठेका ले लिया है। डिंगल भाषा में सेवग, ओसवाल, ढाढी और ब्राह्मण आदि के निर्मित ग्रंथ भी दृष्टिगोचर होते हैं। उदाहरण-स्वरूप एक-दो नाम निदर्शित किए जाते हैं- सेवग मंछाराम का निर्माण किया हुआ 'रघुनाथ-रूपक' प्रसिद्ध ग्रंथ है। ओसवाल उत्तमचंद्र की निर्माण की हुई 'नाथचंद्रिका' और 'भ्रमविहंडन' देखने में आते हैं। ढाढी रामचंद्र का निर्माण किया हुआ 'वीरमायण' उपलब्ध है। इनके सिवाय अनेक कवियों के निर्माण किए हुए अनेक गीत, छंद आदि मिलते हैं, जिनकी संख्या करना अशक्य है।

डिंगल के प्रसिद्ध ग्रंथो में 'पृथ्वीराज रासो, वीसलदेव रासो. वंशभास्कर, सूरजप्रकाश, राजरूपक, विजैविलास, नाथ-चरित्र (महाराजा मानसिंहजी कृत), पाबूप्रकाश, अजितग्रंथ. वेली कृष्ण रुक्मिणी री, ढोला मारवण रा दूहा, रतनरासौ, जयतसी रो छंद' आदि एतादृश अनेक छंदोबद्ध ग्रंथ हैं।

गद्य ग्रंथ भी बहुत हैं— दिग्दर्शन के लिये दो-चार ग्रंथों के नाम प्रदर्शित किए जाते हैं—'मधुमालती री वात, ढोलामारवण री वात, डाढ़ाळा री वात, रतन महेसदासोत री वचनिका, गोरा वादल री वात, नैणसी री ख्यात, दयालदास री ख्यात आदि।

'राजरूपक', जिसका उल्लेख ऊपर कर चुके हैं, रतनू चारण वीरभाण की कृति है। यह कवि जोधपुर के महाराजा अभयसिंहजी के समय में था। महाराजा अभयसिंहजी को देहली के बादशाह मुहम्मदशाह ने गुजरात का सूबा इसलिये दिया था कि गुजरात का सूबहदार शेर विलंदखाँ गुजरात के पटेल की सहायता पाकर बहुत बल पकड़ गया था। वह स्वयं गुजरात का स्वामी बन बैठा था और बादशाह की आज्ञा का पालन नहीं करता था। नीति में कहा है—स्वामी की आज्ञा का उल्लंघन स्वामी को बिना शस्त्र मारना है— "आज्ञाभङ्गो नरेन्द्राणामशस्त्रवध उच्यते"। बादशाह को यह कब सहन हो सकता था। उसने अपने अमीरों को गुजरात का सूबा देते हुए शेर विलंदखाँ पर जाने को कहा तो सब अमीर मौन साध गए; क्योंकि वह गुजरात में पूर्ण बलिष्ठ हो गया था। उस समय महाराजा अभयसिंहजी ने बादशाह की आज्ञा को शिरसा धारण किया और मुजरा (सलाम) करके शेर विलंदखाँ पर जाने की तैयारी करने के लिये देश को रवाना हो गए। मारवाड़ में आकर पूर्ण वीर सेना का संग्रह किया और अपने लघु भ्राता बखतसिंहजी

को सहायतार्थ नागोर से बुलाया। यह बखतसिंहजी वे ही हैं जिनकी वीरता की प्रशंसा करते हुए कर्नल जेम्स टॉड ने लिखा है—"आजकल अँगरेजों की कृपा से अँगरेजी भाषा के प्रसाद से देशीय कृतविद्य युवकगण म्याटसिनी, ग्यारीबाल्डी, क्रामवेल, नेपोलियन, वेलिंगटन इत्यादि विलायत के महारथियों के नाम सुनकर मिस्र, ग्रीस, रोम, कार्थेज, ट्रेस, फ्रांस, इंग्लैंड, स्पेन, डेनमार्क, जर्मनी, आस्ट्रिया और आजकल के अमेरिका इत्यादि पाश्चात्य और नवीन जगत् के इतिहास में महावीरों की असीम वीरता पढ़कर विचार करते हैं कि उनके समान वीर संसार में दूसरा उत्पन्न नहीं हुआ। ....परंतु हम उनसे कह सकते हैं कि अठारहवीं शताब्दी के सामान्य मारवाड़ राज्य के इस बखतसिंह के समान असीम साहसी और वीर विलायत में और नवीन जगत् में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। एक लाख शत्रुसेना के मुख में थोड़ी पाँच हजार सेना लेकर कौन विलायत का वीर साहस में भरकर पड़ा था? इसलिये जगत् के वीरता के इतिहास में यह एक अनुपम साहसी वीर पुरुष कहने योग्य है।"

महाराजा अभयसिंहजी उक्त अपने छोटे भाई के साथ अहमदाबाद गए। वहाँ शेर विलंदखाँ से महा घोर युद्ध हुआ जिसमें शेर विलंदखाँ परास्त हुआ और महाराजा अभयसिंहजी की विजय हुई।

उस युद्ध में महाराजा अभयसिंहजी के साथ अन्य चारण भी थे, परंतु दो चारणों ने महाराजा अभयसिंहजी के उक्त युद्ध का वर्णन करते हुए महाराजा का सविस्तर इतिहास लिखा है। एक तो यही 'राजरूपक' ग्रंथ का कर्ता रतनू वीरभाण और दूसरा आल्हावास ग्राम का निवासी कविया करणीदान। करणीदान ने महाराजा अभयसिंहजी के वर्णन का "सूरज-प्रकास" नामक ग्रंथ निर्माण किया और रतनू वीरभाण ने "राजरूपक"।

ये दोनों कवि अहमदाबाद के युद्ध में उपस्थित थे, इसलिये इन्होंने वहाँ का आँखों-देखा यथार्थ वृत्तांत लिखा है। 'राजरूपक' के कर्ता ने अपने ग्रंथ में यह विशेषता रखी है कि घटना का संवत् और समय लिखा है, जो इतिहास के लिये महत्त्व का बोधक है। करणीदान ने इस पर ध्यान नहीं रखा, जिसकी इतिहास में आवश्यकता है।

ग्रंथ समाप्त होने पर दोनों कवियों ने महाराजा से श्रवणगोचर करने के लिये अर्ज करवाया तो महाराजा ने ग्रंथों का परिमाण पूछा। दोनों ने अपने अपने ग्रंथों का परिमाण बतलाया। महाराजा को उतने बड़े ग्रंथों को उन दिनों में, जब कि हमेशा लड़ने-भिड़ने का मौका बना ही रहता था और

बादशाह की सेवा में उपस्थित रहना भी आवश्यक था, सुनने का अवसर कहाँ था। महाराज ने दोनों कवियों को कहा कि तुम अपने अपने ग्रंथ का सारांश लेकर छोटे ग्रथ बनाओ, हम सुनेंगे। कविया करणीदान ने 'सूरजप्रकास' का सारांश लेकर 'विड़दसिणगार' नामक ग्रंथ का निर्माण किया। महाराजा ने उस छोटे ग्रथ को सुना और प्रसन्न होकर उसे लाखपसाव दिया और उसका इतना मान बढ़ाया कि कविया करणीदान को हाथी पर सवार किया और स्वयं घोड़े पर सवार होकर उसकी जलेब (हाजरी) में चले और उसको उसके स्थान पर पहुँचाया। इस विषय का यह दोहा प्रसिद्ध है—

अस चढियौ राजा अभौ, करि चाढे कवराज।
पोहर हेक जलेब में, मौहर चले महाराज॥

'राजरूपक' के कर्ता रतनू वीरभाण को भी वही वार्ता कही गई कि तुम अपने ग्रंथ का सारांश लेकर छोटा ग्रंथ बनाओ तो इस कवि ने महाराजा से अर्ज किया कि मैने ऐसा ग्रथ नहीं रचा है जिसका साराश लेकर छोटा ग्रंथ बन सके। कहीं गागर का जल कुलिया में आ सकता है? बस राजा ही तो थे, इस कवि का ग्रंथ बिना सुने रह गया। इसने अपने ग्रंथ में आसामियों के नाम और संवत्, मास, तिथि आदि का उल्लेख करके ब्यौरेवार इतिहास लिखा था, इसलिये उसका संक्षिप्त होना असंभव था, जिससे उसने अर्ज किया कि मुझसे तो अपने ग्रंथ का अपमान नहीं हो सकता। इसी से वीरभाण लाखपसाव से वंचित रह गया।

तदनंतर महाराजा अभयसिंहजी से पाँचवें पुरुष महाराजा मानसिंहजी हुए। उन महाराजा को कविता, गानविद्या और वेदांतशास्त्र में अत्यंत ही अभिरुचि थी और स्वयं महाराजा तीनों विषयों के पूर्ण ज्ञाता थे। उक्त तीनों विषयों के ग्रंथ महाराजा ने स्वयं निर्माण किए थे।

१—कविता में इनका 'नाथचरित्र' बड़ा ग्रंथ है। वह भाषा और संस्कृत दोनों में है।

२—गानविद्या में उनके अनेक कीर्तन और ध्रुवपद हैं।

३—वेदांतशास्त्र में मुण्डकोपनिषद् की व्याख्या निर्माण की।

महाराजा के समक्ष नियमानुसार तीनों विषयों के ज्ञाताओं की सभा हुआ करती थी। जब कविता-विषयक सभा हुई, उसमें कविता संबंधी ग्रंथों के नामों का प्रसंग चला, जिसमें 'राजरूपक' का नाम कर्णगोचर हुआ और उसके

साथ यह वृत्तांत भी ज्ञात हुआ कि महाराजा अभयसिंहजी ने 'सूरजप्रकास' के कर्ता को लाखपसाव इनायत किया था और 'राजरूपक' का कर्ता पुरस्कार से वंचित रह गया। तब महाराजा को उक्त ग्रंथ देखने की अभिलाषा हुई। महाराजा ने स्वयं उक्त ग्रंथ को देखा और प्रसन्न होकर वीरभाण के पौत्र को, जो उस समय विद्यमान था, गाँव से बुलाकर 'घड़ोई' नामक ग्राम इनायत किया। इस समय वह ग्राम उसी के वंशजों के अधिकार में है। महाराजा उक्त तीनों विषयों के रसिक और गुणग्राहक थे, इस विषय का किसी कवि ने यह दोहा कहा था—

जोधे कीधौ जोधपुर, व्रज कीधौ व्रजपाल।
लखनेऊ कासी नगर, मान किधौ नेपाल॥

पंडित रामकर्ण आसोपा

पुस्तक का सारांश

प्रथम श्री राधाकृष्ण का मंगलाचरण करके फिर गणेश और सरस्वती का मंगलाचरण कर गणपति की प्रार्थना की गई है कि मैं अभयसिंहजी का गुणगान करता हूँ सो मुझे वाणी प्रदान करें।

फिर सृष्टिक्रम कहा गया है कि अगम अविकार ईश्वर ने प्रकृति से पाँच तत्त्व उत्पन्न किए। उस पीछे एक अंड उत्पन्न हुआ। वह नारायण-स्वरूप था। उसकी नाभि से कमल में ब्रह्मा उत्पन्न हुआ, जिसने सृष्टि की रचना की। उसके मानस पुत्र मारीच, उसके कश्यप, उसके सूर्य-पुत्र हुआ; उस सूर्य के वंश में रामचंद्र विष्णु का अवतार हुआ। उस कुल में महाराजा अभयसिंहजी हुए।

सूर्यवंशियों का आदिस्थान अयोध्या था। इस वंश के राजाओं ने पूर्व कई नगर और ग्राम बसाए और सेतराम तक पूर्व में राज्य किया। सेतराम का पुत्र सीहा हुआ। यह द्वारका यात्रा को पश्चिम में आया। द्वारकानाथ के दर्शन करके मारवाड़ में आया और मारवाड़ में राज्य की नींव दी। उसके पुत्र आसथान हुआ। आसथान का पुत्र धूहड़, उसका रायपाल, उसके कन्हराव, उसके जल्हराव, उसके छाड़ा, उसके तीड़ा, उसके सलखा, सलखा के वीरम, उसके चूंडा, उसके रणमल, उसके जोधा, उसके सूजा, सूजा के वाघा, उसके गांगा, उसके मालदेव*, उसके उदयसिंह, उसके सूरसिंह, उसके गजसिंह, उसके जसवंतसिंह। इसका नाम जसराज भी लिखा है। इसके समय में औरंगजेब बादशाह था। उस समय में इस राजा ने धर्म की मर्यादा रखी। संवत् १७३५ में पौष वदि १० गुरुवार को इस राजा का स्वर्गवास हो गया।

रानी जादवजी सती होने को तैयार हुई, परंतु उदयसिंह ने उसे रोक दिया; क्योंकि वह गर्भवती थी। जसवंतसिंहजी के मरने पर औरंगजेब ने हिंदुस्तान की आगल टूटी समझकर सबको एक करना चाहा, और यवनों का बल बढ़ा।

इति प्रथम प्रकाश

औरंगजेब अजमेर आया। उस समय उदयपुर के राणा जयसिंह ने अपने पुत्र को बादशाह की सेवा में भेजा, और कछावा, चौहान आदि सब आए।

---

* कवि ने "राव मारू" लिखा है, मालदेव का नाम नहीं लिखा।

औरंगजेब ने बहादुर खाँ को प्रबंध करने के लिये जोधपुर भेजा। उसने बादशाह का पंजेवाला हुक्म दिखाकर कहा कि सब घोड़े-हाथी आदि लेकर अजमेर बादशाह की हजूर में चलो। उस समय भाटी रघुनाथ और कायस्थ केसरीसिंह दोनों हाथी-घोड़े आदि लेकर बहादुर खाँ के साथ दिल्ली गए। इस अवसर पर इंद्रसिंह भी दक्षिण से दिल्ली आ गया था।

उधर पेशावर से राठोड़, राजा की रानियों सहित रवाना होकर लाहौर आए। यहाँ जादव रानी के उदर से सं० १७३५ चैत्र वदि ४ बुधवार को महाराज अजीतसिंहजी का जन्म हुआ। लाहौर और जोधपुर में बधाई बँटी। राठोड़ लाहौर से दिल्ली आए। बादशाह ने वैशाख मास में राठोड़ों को कहलाया कि जसवंतसिंह के पुत्र को हजूर में हाजिर करो। यहाँ केसरीसिंह और रघुनाथ, जो जोधपुर से दिल्ली गए थे, बादशाह से मिले। बादशाह ने इंद्रसिंह से कहा कि जो मेरे कथनानुसार करेगा तो मै तुझको जोधपुर दे दूँगा। तू रायसिंह का पुत्र है। वह मेरा परम प्रिय था।

दूसरे दिन राठोड़ दरगाह में गए। हाथी-घोड़े आदि दीवान को दिखलाए और बादशाह ने भी उनको देखा। बादशाह ने राठोड़ों से हिसाब पूछा तो केसरीसिंह ने कहा कि यह काम मेरे जिम्मे था, इसका जवाब मैं दूँगा। यह निर्धारित हुआ। फिर केसरीसिंह विषपान करके मर गया, हिसाब कौन दे। इस तरह केसरीसिंह ने स्वामी के लिये प्राण दिया। औरंगजेब ने हुक्म दिया था कि जसवंत के पुत्र को हजूर में हाजिर करो, उसका उत्तर राठोड़ों ने यह दिया कि अजीतसिंह को आप इनका राज्य दे दें तो सुख रहेगा। यह सुन औरंगजेब अत्यंत कुपित हुआ और इंद्रसिंह से कहा कि मेरे हुक्म को कबूल करे तो जोधपुर तुझको दे दिया जाय। उसने आज्ञा स्वीकृत की। बादशाह ने उसको जोधपुर का परवाना सं० १७३५ ज्येष्ठ वदि १२ सोमवार को लिखकर दे दिया। इंद्रसिंह जोधपुर को रवाना हो गया। राठोड़ों को इस बात की खबर लगी, तब मरुधराधीश को गुप्त रीति से मारवाड़ की तरफ भेज दिया। सब लोग मरने को तैयार हो गए। उस समय जसवंतसिंहजी की रानी ने कहा कि खड्गधारा से पवित्र करके मुझे जमना में बहा दो। उस समय बादशाह की चौकी बैठ गई थी। उसके अंदर ५०० सुभट रहे, बाकी सब देश को चले आए। उस समय रघुनाथ भाटी ने कहा, आज का दिन धन्य है कि हम स्वामी के वास्ते काम आवें। रणछोड़दास जोधा से रानी ने कहा कि पहले मुझे काटकर जमना में बहा दो। वैसा ही किया गया।

दिल्ली का युद्ध

तत्पश्चात् महा घोर युद्ध हुआ, जिसमें जोधा रणछोड़दास, पृथ्वीराज, चीठलदास, चंद्रभाण, दीपसिंह, कुंभकरन, माधोसिंह, जगत्सिंह, रामसिंह। सोढ का पुत्र रघुनाथ, हरदास के पुत्र जगत्सिंह, सकतसिंह और गिरधारीदास, केसरीसिंह का पुत्र ऊदा, द्वारा मानावत, बीकावत धनराज, रतन का पुत्र केशव (भाटी)। कूंपावत महासिंह, माधवसिंह, मोहणसिंह। मेड़तिया किसनसिंह, भीमसिंह, नाहरखान। पातावत केसरीसिंह। ऊदावत भारमल, गोइंददास, आसकर्ण, जसु, गोवर्धन, रुघनाथ। रिणमलोत हरिसिंह का पुत्र सुंदरदास। भोजावत सुंदरदास। मंडला लक्ष्मीदास। चौहान, अखैसिंह जैतमाल, ऊदो, मेरूसिंह, डूंगरसिंह। सोभावत जोगीदास कुसलसिंह का पुत्र। डूंगरौत माना। कायस्थ हरिराय। मुहता विसना। चारण सांदू सूरजमल, नवल का पुत्र मीसण रतन। राठोड़ां के सब ५०० वीर मरे और बादशाह के १००० मरे और ३०० घायल हुए।

इति द्वितीय प्रकाश

सं० १७३६—औरंगजेब ने अब राणा के ऊपर सत्तर हजार सेना भेजी, जिसमें तहवरखान सेनापति था। वह अजमेर आया। उसके पश्चात् चारों पुत्रो के साथ औरंगजेब खुद आया। इधर राठोड़ों ने सिर उठाया, जिससे तहवर खान अति क्रुद्ध हुआ। उधर मेड़तिया माधोदासौत रूपसिंह और गोकुलदास को (दोनों प्रतापसिंह के पुत्र और राजसिंह के भाई थे) राजसिंह ने उत्तेजित किया। उस समय गोकुलदास का पुत्र हठमल बोला, जो जगत् में नाम रखे वही धन्य है। अचलदास का पुत्र केसरीसिंह, रामसिंह का पुत्र चतुर्भुज, जगत्सिंह, हरिसिंह का पुत्र सुंदरदास, मानसिंह का पुत्र हरनाथ ये सब पुष्कर में आए। वहाँ अजमेर से तहवरखान आया। वाराहजी के मंदिर के आगे युद्ध हुआ। दो घड़ी तलवार चली जिसमें तहवरखान का हाथी १०० धनुष पीछे हटा। संवत् १७३६ भादों वदि ११ को यह युद्ध हुआ था, जिसमें राजसिंह उक्त सुभटों के साथस्वर्ग को सिधारा (पोहकर की लड़ाई समाप्त)।

इति तृतीय प्रकाश

तहवरखान मारवाड़ में दौरा करता है। ऊदावत रूपसिंह कुंभकरण के पुत्र कूंड़ाद्रह के स्वामी पर तहवरखान की फौज आई। उसमें लड़कर रूपसिंह काम आया। संवत् १७३६ की आश्विन सुदी में यह घटना हुई।

इति चतुर्थ प्रकाश

औरंगजेब ने उदैपुर पर बड़ी सेना के साथ चढ़ाई की, प्रथम अजमेर आया। ख्वाजा पीर की पूजा की। पाँच दिन अजमेर में ठहरा, फिर मेवाड़ की तरफ चला। उधर सीसोदिये सब युद्धार्थ तैयार हुए। इधर राठोड़ों ने सिर उठाया। सोनंग ने जाकर बिहारी पठानों के जालोर को जा घेरा। इधर औरंगजेब दहबारी पहुँचा। वहाँ कूंपावत उगरसिंह और उदयसिंह साँवलदासोत युद्ध करके स्वर्ग को सिधारे। बादशाह उदैपुर आया और आजमशाह चित्तौड़ गया। इतने में जालोर से खबर आई कि राठोड़ जालोर पर आ गए हैं (उस समय जालोर का शासक फतहखाँ था), हमें मदद दीजिए। यह खबर पाते ही बादशाह वापिस अजमेर आया और बिहारियों की मदद में मुकरबखान को भेजा। राठोड़ जालोर से सोजत आए। यहाँ पेशकसी ले जोधपुर को आ घेरा। तब पंवार गोविददास वधनोर इंद्रसिंह के पास गया और सब वृत्तांत कहा।

सं० १७३६ के ज्येष्ठ सुदि ३ को रवाना हो १० को इंद्रसिह जोधपुर आया। ११ को मंडोवर में डेरा किया।

उस समय जोधा मुकनसिह का पुत्र भांण सोनग और दुर्गदास आदि ने कहा कि इंद्रसिह आ गया है। खेतासर में प्रभात के समय युद्ध होगा।

पंचांग सं० १७३७

खेतासर की लड़ाई में चाँपावत साहबखान मथुरादासोत काम आया। राठोड़ों की विजय हुई, इंद्रसिह रण छोड़ भाग गया। यह युद्ध ज्येष्ठ सुदि १३ को हुआ था।

इति पंचम प्रकाश

राठोड़ों ने फिर जालोर के बिहारियों को घेरा और इंद्रसिह भाग गया। यह सुन बादशाह अत्यंत कुपित हुआ। इद्रसिह पर नाराज होकर मन से उतार दिया। और बादशाह बहुत कुपित हुआ तब तहवरखान ने शाहजादा अकबर को बुलाया। बादशाह ने अकबर से कहा कि शत्रु को पकड़कर लाओ। बादशाह के आज्ञानुसार अकबर राठोड़ों पर तैयार हो हाथी पर सवार हुआ, इसके शामिल तहवरखान भी था। इधर रणछोड़दास सोनंग आदि तैयार थे। इस समय तेरह ही शाखाओं के राठोड़ एकत्र हो गए थे। जोधा, ऊदा, कर्मसोत, मेड़तिया, करणोत, चांपावत, कूँपावत, जैतमाल, माला, देवराजोत, गोगादे, पातावत, रूपावत, ऊहड़, धांधल, भाटी, चौहान, ईंदा, पडिहार, खूमाणा, सोनगरा, पँवार तथा उस समय सीसोदिया भीम भी आया और सीसोदिया और राठोड़ शामिल हो गए और मुसलमानी सेना के साथ युद्ध हुआ। वहाँ का भार जोधा

नाडोल का युद्ध सं० १७३७ आश्विन वदि ७

मुकनसिंह के पुत्र इंद्रभांण ने धारण किया। उस समय राणा राजसिंह का दूत आया और उसने पत्र देकर कहा कि राठोड़ और सीसोदिया एक मन हो जाओ और मेल रक्खो। मेवाड़ को तुमसे जुदा मत समझो, तब सोनंग आदि राठोड़ों ने भीम से कहा कि कल सूर्योदय होते ही युद्ध छेड़ दो। फिर जल्दी उठकर राजपूत अपने नित्य-नियम से निबटे। दूत ने जाकर तहवरखान से कहा कि राजपूत सब एक हो गए हैं, युद्ध को तैयार हैं, उधर तहवरखान तैयार हुआ। दोनों सामने आ खड़े हुए। महा घोर संग्राम हुआ। इधर राठोड़ों में सोनंग और दुर्गदास और सीसोदियों में भीम अग्रणी थे। आधा प्रहर तलवार चली। प्रथम मुकनसिंह के पुत्र इंद्रभांण ने अपना घोड़ा शत्रुसेना पर चलाया। वीरता से लड़कर मारा गया। तत्पश्चात् भाला हाथ में लेकर भीम का पुत्र सूरजमल आगे बढ़ा। यह भी शत्रु सहार करके मारा गया। ऊदावत अजयसिंह, जैतावत जैतसिंह, कूंपावत कान्हसिंह, कान्ह के साथ रोहाड़िया चारण भीम ये काम आए। यह युद्ध सं० १७३७ के आश्विन की १४ को हुआ। इधर भीम सीसोदिया ने युद्ध किया। तहवरखान ने इस युद्ध का वृत्तांत अकबर से कहा और कहा कि आज सोनंग दुरगा के बराबर कोई नहीं है। (इति नाडोल का युद्ध)

इति षष्ठ प्रकाश

तहवरखान और अकबर का राठोड़ों से मेल

इसके पश्चात् तहवरखान और अकबर ने बादशाह से बदलने का विचार कर राठोड़ों के पास दूत भेजा। उसने सोनंग और दुरगा को पत्र दिया और कुरान बीच में देकर राठोड़ों से मेल किया। यह मेल स० १७३७ की माघ वदि ९ को हुआ तब राठोड़ों ने दुर्गदास से पूछा, यह क्या हुआ? कैसे हुआ? दुर्गदास ने कहा हानि-लाभ ईश्वर के हाथ है। यह कहकर कहा कि आपन उनसे आध कोस दूर रहें और बातचीत करें। फिर दोनों में मेल हो गया। अकबर और तहवरखान राज्य के लोभ में फँस गए।

अकबर का छत्र धारण करना

अकबर ने छत्र धारण किया, यह वार्ता सारे संसार में फैल गई। यह सुन बादशाह पुत्र पर अति कुपित हुआ और मन में घबराया। उस समय अकबर के पास एक लाख और औरंग के पास आठ हजार सेना थी। दिल्ली के घर में फूट देवी ने प्रवेश किया, जिससे औरंग बहुत घबराया। अकबर सेना लेकर अजमेर पर आया। उस समय तहवरखान के मन में यह विचार हुआ कि मैं बादशाह के पास जाकर अकबर की बुराई करूँगा

और अकबर को कैद करा दूँगा तो मुझे इनाम मिलेगा। इस विचार से वह अकबर से बिना पूछे प्रहर रात्रि के समय रवाना हो अजमेर गया। रवाना होते समय तहवरखान ने राठोड़ों के पास दूत भेजकर कहलाया कि बाप-बेटे एक हो गए हैं, तुम अपने देश को चले जाओ। यह बादशाह के पास पहुँचा। उसने बिना मिले ही उसे मारने का हुक्म दे दिया और वह वहीं मारा गया। इधर राठोड़ों ने उस कपटी तहवरखान की बात को सत्य मान लिया और अधरात्रि के समय राठोड़ धोखा समझकर वहाँ से जाने को तैयार हुए और रवाना हो गए। उधर अकबर आनंद में मग्न है, गाना सुनता है। जब राठोड़ रवाना हुए तो यवनों की सेना भी विचलित होकर चली गई।

अकबर तो स्त्रियों के साथ गाना सुन रहा था। अर्धरात्रि हुई तब उसे सूचना मिली। उसने मन में विचार किया कि भावी प्रबल है; परंतु उसने हिम्मत रखी और मूछ पर हाथ धरा, और एक हजार मुगलों को साथ ले राठोड़ों के पीछे चला। हुरमखाना उसके साथ था। दस कोस पर जाते हुए राठोड़ों के पास पहुँचा। दूतों ने राठोड़ों को खबर दी कि अकबर आया है। उस समय डेढ़ प्रहर दिन चढ़ा था। जब वह पास आया और उससे मिले तो उसका भाव जानकर उसका आदर किया। हुरमो को दूर रखा जिनके साथ उड़दा बेगणियाँ थीं। एक प्रहर तक इनके वार्तालाप हुआ और सलाह हुई। इतने में बादशाह के दूत आए। उनसे बातचीत हुई तो ज्ञात हुआ कि औरंग के पास इस समय ५२ हजार फौज है। अकबर ने बादशाह के दूतों से वार्तालाप करके दुर्गादास से हाथ मिलाया और कहा कि चाहे औरंग मरे या मारे, जंग करना चाहिए। दुर्गादास ने कहा कि पहले राठोड़ों से सलाह कर लो, फिर विचार कर काम करो। तब आठों मिसल के राठोड़ों को बुलाया और अकबर ने कहा कि मुझे तुम्हारा भरोसा है, मैं तुम्हारे पास आ गया हूँ, तुम अपने कुल की लज्जा को देखो। मेरे मरने या जीने को सुधारो। तब राठोड़ों ने कहा—हम टुकड़े टुकड़े हो जावें; परंतु आपका साथ नहीं छोड़ेंगे।

सोनंग ने कहा कि अकबर को आँच नहीं पहुँचेगी। चांपावत अजबसिंह, सामंतसिंह, भगवानदास (यह सोनंग का चचा था), गिरधारीदास के पुत्र हरिनाथ और कान्ह ये उसी तरह बोले। दुरगदास का भाई खेमकर्ण था। उसे अकबर ने अपना हुरमखाना सौंप दिया और कहा कि इसका मुझे भरोसा है। चौहान चतुरसिंह, फतैसिंह, (पृथ्वीराज का पुत्र)

हरनाथ, (भोजराज का पुत्र) सबलसिह, केसरीसिंह का पुत्र तेजसिह । भाटी—राजसिह रावल सबलसिह का पुत्र, किशोर महेशदासोत, रामदास, हरिदास का पोता, दुर्जनसाल, हरिसिह, सूरजमल, जगन्नाथोत, सबलसिंह प्रयागदासोत, इसका भाई आसकरण, नाहरखाँ, अमरसिंह, उरजणोत—रूपसिंह, लाखा महेशदास ।

कूंपावत—रामसिह जैतसिहोत, फतैसिह विजैसिंहोत, माधोसिंह दयालदासोत, रामसिह और केसरीसिह सबलसिहोत, भावसिह सबलसिहोत, रूपसिह केसरीसिहोत, दौलतसिह उगरावत. अजबसिह अमरसिहोत, सुंदरदास गोविददासोत ।

जैतावत—गोवरधन, अजमाल माधवदासोत, इसका भाई किसनसिह ।

बाला—तेजसिह सूजावत, अखैसिह ।

महेचा—विजयसिह मनोहरदासोत, हठीसिह. सूरसिंहोत, पृथ्वीराज अमरसिंहोत ।

धवेचा—सूजो सकतसिहोत—इसके साथ साहिबसिह जैतावत ।

ऊहड़—भगवान सुंदरदासोत, भोजराज ।

करमसोत—हरनाथसिह भीमोत. गिरधारी बलिरामोत ।

ऊदावत—पेखिराम, राजसिह बलिरामोत, जगत्सिह विजयसिहोत, श्यामसिह कुंभकरणोत, गोविद कुंभकरणोत. तेजसी: रूपसिह रामचंदोत, नाहरखा गोरधनोत, भीमसिंह आणंदसिहोत ।

जोधा—रणछोड़दास (दिल्ली में काम आया) शिवसिह, भीमसिह, रणछोड़दासोत ।

मुकनसिह, करणसिंह मुकनसिहोत. चंद्रभाण, हैवतसिह लखमणोत, सबलसिह गोविददासोत, अखैसिह रिदावत, अमरसिह किशोरसिहोत, हरनाथ भाणोत, सबलसिंह माधोदासोत, रामसिह वेलावत ।

मेड़तिया चांदावत—हेमतसिह सकतावत, आणंदसिह हरिसिंहोत, हरिसिंह मोकमसिहोत, विसनसिंह नाथावत (पुष्कर की लड़ाई में काम आया) ।

मेड़तिया रायमलोत—दलराम अजबावत. चतुरसिह विजावत, जोधसिंह राजसिंहोत, देवीदास विसनसिंहोत. देवीसिंह माधोसिंहोत ।

मेडतिया विसनदासोत—सूरसिंह प्रतापसिहोत, मानसिंह दलपतोत ।

पातावत—पीथल, मुकनसिंह, भगवान् ।

रूपावत—दुरगो, जगो ।

मंडला—भावसिंह ।

मांगलिया—सुंदरदास, भगवान, राजसिंह, ये तीनों जसावत।

खूमाणा—ऊदो, खेमसिंह, माधोसिंह पृथ्वीसिंहोत।

ईंदा—भोज, जैतसिंह।

धांधल—गोविंद मनोहरोत, कीर्तिसिंह जसावत, उदयकर्ण मानसिंहोत, मुकनसिंह सुंदरदासोत।

पड़िहार—भीम का पुत्र सांवल, भदावत जोधसिंह सादावत, महेश आणदसिंहोत, विजयसिंह जोगीदासोत, नरहर, जोगीदास आणंदोत, बलू, खेतसी।

सोभावत—वीठलदास कुसलावत, दयालदास वेणावत, जीवणसिंह जोगावत, बदरीदास, पिराग (डोढ़ीदार)।

धांधू—हरदास, राम. दोनों उरजावत।

कलावत—नरहर, बलू. नारायणदास केशवदासोत।

गहलोत—वीरमदे, देवराज, धनराज, तीनों चतुरावत।

कायस्थ—केसरीसिंह (दिल्ली में विष खाकर मरा), हरकिसन चंदोत।

खीची—रावत मुकनदास झलावत, इसका भाई सिवसिंह (इन्होंने अजीतसिंहजी के पास रहकर रक्षा की थी), जोधसिंह जोगावत।

भंडारी—आसकरण, रायचद दीपावत, सावंतसिंह खांवसी का पुत्र, हेमराज जगनाथ का पुत्र।

पुरोहित—अखैराज, द्रोण (द्रोणाचारज)।

व्यास लिखमीचद, बालकृष्ण मुरार का पुत्र।

बारहट केसरीसिंह भीम का पुत्र, कान्ह (नाडोल में काम आया) आसकर्ण नाथावत, भैरूंदास चावँडदासोत।

अकबर इन सबको देखकर नगारा दे पश्चिम की तरफ रवाना हुआ। उधर औरंग अपनी सेना सजाकर अकबर का पीछा करने को तैयार हुआ। उस समय सोनग दुर्गदास ने कहा कि अकबर को यत्न से रखना। कोई इसकी पीठ न दबावे। फिर सब राठौड़ सजकर तैयार हो गए। उस समय दुर्गदास अकबर को लेकर दक्षिण की तरफ गया। उसके साथ ये सरदार थे—

कूंपावत—फतमल विजयसिंहोत, रामसिंह जैतसिंहोत।

मेड़तिया—मोहकमसिंह, रणछोड़दास, अमरसिंह, मदनसिंह, हरिसिंह।

जोधा—आसथान, माधोसिंह, आणंदसिंह।

चांपावत—भदो, सबलसिंह, तेजसिंह, नारायणदास।

चौहान—उगरसिंह, फतैसिंह।

भदावत—माधोसिंह, लालसिंह, हमीर।

मांगलिया—राजसिंह, कुंभकरण ।

भाटी—रावलोत प्रतापसिंह, उरजनोत—अजबसिंह ।

देवड़ा—डूंगरसी, सोनगरा—विजयसिंह, खीची—जैराम आसावत ।

करणोत—विजयसिंह कचरावत, फतैसिंह रामसिंहोत, नाथो जोगावत, दयालदास जोगीदासोत ।

चारण सांदू जोगीदास, मीसण-भारमल, सूरौ, आसल-धनो, वीठू-कानौ ।

ये लोग इस मुहूर्त्त में रवाना हुए—योगिनी पीठ की, चंद्रमा दक्षिण हाथ को, कालभैरव दाहिना ।

बादशाह ने इनकी तलाश में अपने मनुष्य भेजे । परंतु इनका पता नहीं लगा । दूतों ने जाकर बादशाह से कहा कि यह पता नहीं लगा कि अकबर किधर गया । यह सुन बादशाह के मन में सताप हुआ । आखिर यह पता चला कि दुर्गदास अकबर को दक्षिण की तरफ ले गया । यह पता सात कोस जाने पर लगा । तब बादशाह ने सवारी के लिए हाथी मँगाया । नक्कारे पर डंका पड़ा और औरंग जालोर से चला । इतने में दूसरे दूत आए । उन्होंने कहा कि अकबर दुर्गदास के साथ दक्षिण को जाता है । गुजरात को दाहिनी ओर छपन के पहाड़ों को वाम भाग में रखकर गए हैं । औरंग ने आजम से कहा कि अकबर को पकड़ बाँधकर लाओ । उसने आज्ञा स्वीकृत की, आलम पश्चिम को और आजम पूर्व को चला । उदयपुर को बीच में छोड़ा । अजमेर और जोधपुर में सूबहदार रखे गए ।

दुर्गदास ने रवाना होते समय सोनंग से कहा था कि तेरे खडे रहते म० अजीतसिंहजी पर बादशाह की घात न हो । यही अपना कर्तव्य है । खीची शिवदास और मुकनदास राजा की रक्षा के लिये नियत हुए । अर्बुद पहाड़ में महाराजा गुप्त रहे । या तो दुर्गदास या चांपावत सोनंग या खीची मुकनदास को महाराज की खबर है । सबको इतना ही ज्ञात है कि राजा गुप्त है । जनता ऐसा अनुमान करती है कि या तो जेसलमेर या सिरोही या बीकानेर में हमारा राजा है । नवसाहसा (राठोड़) और दससाहसां (गहलोत) दोनों एक हैं । इनायतखाँ जोधपुर में १०००० सवारों से बैठा है । दुर्गदास के जाने पर इधर सोनंग आदि चापावत जिनमें शिवदान, अर्जुन, सामंतसिंह, उदयसिंह, अखैसिंह, तेजसिंह, मुकनसिंह, जसवंतसिंह, फतैसिंह, नाहरखाँ, युद्धार्थ तैयार हैं ।

करणोतों में—खींवकरण, महराज, अर्जुन, केसरीसिंह, जगतसिंह, महवेचा—विजयसिंह, जैतमाल सूजा, करमसोत लखधीर ।

जोधा—शिवदान, भीमसिंह, भांण, करणसिंह, हैबतसिंह, चंद्रभांण मुकनसिंह का पुत्र, पीथल, हरनाथ भाण का पुत्र।

करमसोत—हरनाथसिंह, जसवतसिंह, केसरीसिंह, रामसिंह, कुंभकरण। माधोसिंह, भावसिंह, दोलसिंह, रूपसिंह, सुंदरदास।

ऊदावत—राजसिंह बलिरामोत, जगराम विजैसिंहोत, सामलदास कुंभकरण का पुत्र, रूपसिंह, अजबसिंह रामसिंहोत, नाहरखाँ गोरधन का पुत्र।

चौहान—चतुरसिंह, महराज, बाला—अखैसिंह, ऊहड़—भगवानदास, भोजराज।

जैतावत—माडण—मेड़तिया—सूरसिंह, हरिसिंह। चांदावत—रायमल, दलराम।

माधोदास मेड़तिया—हैमतसिंह, रूपसिंह, जादव (भाटी)—राजसिंह सबलसिंहोत, माडेचा (भाटी) रामसिंह मुकनदासोत, अमरसिंह नाहरखान प्रयाग के पुत्र, सूरसिंह केसरीसिंह का पुत्र।

माडेचा—महेश भाण का पुत्र, रामसिंह हरिदासोत, हरिसिंह, सूजो, दुर्जनसाल।

ईदा—भोजराज, रूपावत, पातावत, धांधल आदि छत्तीस ही वंश उपस्थित हुए। इन्होंने जोधपुर को घेरा।

अजमेर से रवाना होते समय इनायतखान की अर्जी पहुँची कि राठोड़ों ने मुझे घेर लिया है, मैं किले में घिरा हुआ बैठा हूँ। सूर्योदय होते ही शाइस्ताखा को २००००सेना देकर सहायतार्थ जोधपुर भेजा।

राठोड़ों और मुसलमानों के बीच घोर युद्ध हुआ। उस युद्ध में रावल सबलसिंह के पुत्र राजसिंह ने शत्रुसेना के मध्य अपना घोड़ा बढ़ाया। उसके साथ महेशदास का पुत्र किशोरसिंह था। ये बड़ी वीरता से तलवार बजाकर स्वर्गगामी हुए। भाटी आसकरण प्रयागदासोत इसी लड़ाई में काम आया और उसका पुत्र भोजराज भी। भाटी रामसिंह और उदयसिंह ये भी बड़ी वीरता से लड़ वीरगति को गए। चांपावत अखैसिंह, कूंपावत लालसिंह, धांधल मुकनसिंह खीची सुंदरदास, रतनू चारण जगनाथ मालावत, ये मारे गए। हिंदू २०० और मुसलमान ४०० मरे।

बादशाह ने इस युद्ध के समाचार अजमेर ४ मजल पर जाते हुए सुने। मन में बहुत दुःखित हुआ।

इधर चांपावत कानसिंह और हरनाथ सोजत पर गए। सैंतीस (सं० १७३७) का वर्ष समाप्त हुआ, अड़तीस का संवत् शुरू हुआ। चातुर्मास

की ऋतु थी। सरदारखां सोजत में सहायतार्थ आया था, वह जखमी हुआ। गिरधारीसिंह के पुत्र हरिसिंह ने अच्छी तलवार बजाई। कानसिंह और हरनाथ शत्रुसंहार करते हुए इस युद्ध में मारे गए।

इति सप्तम प्रकाश

वीठलदास के पुत्र सोनंग के पराक्रम से बादशाह के मन में अत्यंत उच्चाट है इसके लिये उसने अनेक दैवी उपाय किए। अंत में दीवान आसतखाँ की मारफत सोनंग से संधि करना निश्चित किया कि अजीतसिंहजी को हफ्त हजारी मन्सब और दूसरों को यथायोग्य मन्सब दिए जायँगे। इसमें मध्यस्थ अजमेर का सूबहदार अजीमदीन हुआ। कुरान बीच में दिया।

उस समय आसतखाँ अजमेर में, सोनंग मेड़ते के समीप और साहवदी (शाइस्ताखाँ) अजीम की सहायता में था।

सं० १७३८ आश्विन सुदि ६ को औरंगजेब अजमेर से रवाना हुआ। आसतखां अजमेर में ठहरा। सं० १७३८ की आश्विन सुदि ११ को सोनंग का स्वर्गवास हो गया। आसत खांन ने यह समाचार सुनते ही बादशाह के पास दूत भेजे। बादशाह सुनकर आनंदित हुआ, नक्कारे बजाए गए और संधि की वार्ता रुक गई।

राठौड़ों में शोक छा गया। उस समय वीठलदास के पुत्र अजबसिंह ने मूछों पर हाथ रखा और प्रतिदिन लड़ाइयाँ करनी शुरू कीं। मुसलमानों की फौजें जोधपुर और अजमेर में सजी जाती हैं। उस अवसर पर मेड़तिया मोहकमसिंह कल्याणोत मन्सब छोड़कर राठोड़ों के शामिल हुआ। राठोड़ों ने मेड़ता इलाका में दंड उगाहना शुरू किया। ईंदावड़ में अजबसिंह सूर्योदय के समय पहुँचा। वहाँ से ४ कोस चलकर तालाब पर डेरा किया। वहाँ मुसलमानों की फौज आई। राठौड़ मुकाबले में गए। महातुमुल युद्ध हुआ। वहाँ राठोड़ करण ने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया, और रणधीर प्रतापसिंह और अजबसिंह भी आ पहुँचे। सबलसिंह और अजीतसिंह ने बड़ा पराक्रम किया। रामसिंह और नाहरखान चापावत बड़ी बहादुरी से लड़े। जैतावत सामंतसिंह और जैतसिंह बादशाही झंडे के पास पहुँचे। मेड़तिया गोपीनाथ, अनोपसिंह, घासी और सादूल बहादुरी से लड़कर काम आए। जोधा अर्जुनसिंह भाटी कान्ह, पड़िहार महेशदास आणंदोत, रोहड़िया चारण आईदान भीमोत, भगवान विजावत, आसकरण और रतनसिंह (ये बारहठ) लड़े। पुरोहित रुघनाथ गुणपतोत काम आया।

इस लड़ाई में पाँच चांपावत अजबसिंह, सबलसिंह, रामसिंह, हरिचंद, नाहरखान बहादुरी से लड़कर काम आए। जैतावत दो, मेड़तिया चार, जोधा एक, भाटी एक, पड़िहार एक, सेवड़ पुरोहित एक, तीन बारहठ। इनमें अग्रणी अजबसिंह वीठलदासोत था। वह मारा गया। (संवत् १७३८ कार्त्तिक सुदि २ मंगलवार को यह युद्ध हुआ था।)

इति अष्टम प्रकाश

बादशाह इस युद्ध का वृत्तात सुन प्रसन्न हुआ, और अजमेर में शाहजादा अजीम और असदखा को रखा। जोधपुर में इनायतखां प्रबधकर्त्ता है।

अजबसिह के मरने पर चापावत उदैसिंह सेनापति नियत हुआ। उसके साथ सामंतसिह, अखैराज, तेजसी, भगवान, मुकनदास, जसराज, नाहरखांन, भाण, विजा, लाखा, फतैसिंह ये चांपावत थे। बाला अखैराज, करणोत खींवकरण दुर्गदास का पुत्र, तेजसिंह, देवा जसराजोत, जगतसिंह दुरगादास का भतीजा।

जोधा—सबलसिंह, महेचा विजैसिंह, जैतमाल सूजा, करमसोत लाखा, ये सब खींवकरण के साथ थे।

ऊदावत—राजसिंह, जगराम, सामलदास, रूपसिंह, नाहरखां।

मेड़तिया—मोकमसिंह, जोधा—उदैभांण, शिवदान, भीमसिंह, करणसिंह।

कूंपावत—दक्षिण से फतैसिंह रामसिंह आए।

जैतावत—मांडणसी, गोरधन। करमसिंहोत—हरनाथ, जसकरण।

चौहान—चतुरसिंह दयालदासोत, फतैसिंह दक्षिण से शाहजादे को पहुँचाकर आया। भाटी—रामसिंह, दुजणसाल, सूजो, हरिसिंह, अमरसिंह, नाहरखांन, सूरसिंह केसरीसिंहोत, लखधीर, महेशदास। (सेनापति उदयसिंह धीर का पुत्र) ये सब मार्गशीर्ष सुदि २ गुरुवार को अजमेर की तरफ चले, जिनमें जोधा ऊदावत आदि सब शामिल थे।

जोधपुर में रक्षक इनायतखाँ था, अजमेर में दीवान आसतखाँ और शाहजादा अजीम थे। राठोड़ों ने बड़ा शोर मचाया, कई गाँव लूटे, गायों को घेरा, और फागुन सुदि ३ को पुर, माडल को लूटा, तब अजमेर से कासिमखाँ सेना लेकर आया। कासिमखाँ उनका बल प्रबल देख टल गया। उसका माल राठोड़ों ने लूटा। चैत वदि ८ को सोजत को घेरा। इनायत खाँ जोधपुर में था परंतु उसको दम लेने को जगह नहीं। सं० १७३९ में नूरअली जैतारण में था। उसको श्रावण वदि १४ को जगराम विजावत ने

भगा दिया और जैतारण लूटा। सोजत में चांपावत विजैसिंह सबलोत ने उपद्रव मचाया। उत्तर दिशा में रामसिंह ने लूट-मार की।

कासिम खाँ मुकन के पुत्र से लड़कर भागा, भाटी भांण ने चेराही का थाना लूटा, नूरअली भाद्राजण पर चढ़कर आया तब जोधा उदयभांण मुकाबले में गया और नूरअली को भगाया।

इति नवम प्रकाश

अब चांपावत उदयसिह, करणोत खींवकरण, ऊदावत राजसिह और मेड़तिया मोहकमसिह गुजरात की तरफ चले। ग्रीष्म ऋतु थी। सोजत से रवाना हुए, खैरालू नगर को लूटा, वहाँ से गाँवों को लूटते दंड उगाहते राणपुर आए। भादों के कृष्णपक्ष में गुजरात का शासक मुहम्मद सेना लेकर आया। इसके साथ राठोड़ों का भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में करणोत केसरीसिंह, भाटी गोकलदास भंडारी रायचंद, जीवराज और भगवान, मुहता सुजाणमल, फौजदार रामो, देरासरी मुरलीधर पंचोली शिवदास पड़िहार अहमदखाँ ये काम आए। अनायतखाँ जोधपुर में और पाली के थाने पर नूरमली है। बाला विसनदास ने पाली के समीप लूट मार की जिसकी पुकार नूरमली के पास गई तब वह बालों पर चढ़कर आया। उसने बालों का किला घेर लिया। तब बालो ने इस पर एक साथ आक्रमण किया, लड़ाई हुई, नूरमली रणभूमि छोड़ भाग गया। यह युद्ध सं० १७३९ भादों सुदि १३ को हुआ था।

इति दशम प्रकाश

चांपावतों ने फिर सोजत पर आक्रमण किया तब सोजत के शासक सीदी ने उदयसिंह को प्रतिवर्ष ७०००) रुपये देने का वादा करके संधि कर ली।

ऊदावत जगराम ने कार्तिक बदी १२ को जैतारण को घेरा, जोधपुर और अजमेर पुकारू गए। असतखाँ और इनायतखाँ ने इसके सामने नूरमली को भेजा। इस युद्ध में सब ऊदावत जमा हो गए और मेड़तिया मोहकमसिंह और हैमतसिंह भी इनके शामिल हुए। जगतसिंह राजसिंह का पुत्र, रिदैसिह, सांमल कुंभा का पुत्र, सब से आगे जगराम बढ़ा, लालसिंह उसके साथ हुआ। नूरमली हाथी पर सवार होकर युद्ध-स्थल में आया। महा घोर युद्ध हुआ। इसमें राठौड़ों के ५० और मुसलमानों के ५०० मनुष्य मरे। इस युद्ध में मेर नरा ७ सुभटों से मारा गया (यह युद्ध मार्गशीर्ष वदि १२ को हुआ था) राठोड़ों की विजय हुई।

इति एकादश प्रकाश

भाटी रामसिंह मुकनसिंहोत पाली पर चढ़कर गया। इसके मुकाबले में अबदलखाँ ५०० सवारों से आया। रामसिंह ने बड़े वेग से उस पर आक्रमण किया। युद्ध हुआ। रामसिंह ने भाले से अबदलखाँ को मार डाला। तीस मुगल मरे। यह युद्ध वैशाख वदि २ को हुआ था।

वैशाख सुदि ६ को मेड़तिया मोहकमसिंह ने मेड़ते को घेरा। मुकाबले में शेख गोहर आया। विकट युद्ध हुआ। इसमें मोहकमसिंह के हाथ सेदअली मारा गया। गोहर शेख भागा। राठोड़ों की विजय हुई।

मगरा (पहाड़ सिलसिला) में ऊदावत राजसिंह, जगराम, सांमल नाहरखाँ, जोधा भीम, सिवसिंह, इन पर असतखान ने अपने पुत्र को अजमेर से बिदा किया। राठोड़ उनके चारों ओर हो गए जिससे मुसलमानों के पास ऊँटों की कमी होने से रसद नहीं पहुँचती है। इससे उसे वापिस लौटना पड़ा। जगराम की विजय हुई।

आसतखान ने यह विचार किया कि इनको लोभ देकर वश में करना चाहिए। फिर उसने कहा कि तुम मनसब इजारे लो, हम देते हैं। परंतु जब तक राजा प्रकट न हो तब तक युद्ध का नाम मत लेना। इनायतखाँ का दामाद सिकंदर इस काम के लिये नियत हुआ। कई लोभ वश हो उसके पास गए। ग्रीष्म व्यतीत हुआ। वर्षा ऋतु का आरंभ हुआ।

सं० १७४० की श्रावण वदि १४ को आसतखान अजीम को साथ लेकर दक्षिण की तरफ गया। इनायतखाँ को दोनों सूबों की भलामन दी गई। शरद व्यतीत हुई। हेमंत ऋतु आधी गई होगी कि फिर उपद्रव उठा।

सामंतसिंह जोगीदासोत भगवानदास और तेजसी आईदानोत मुकनसिंह ये पाली थाणा पर अचानक गए और गायों को घेरा। नवाब का पुत्र मुहम्मदअली मिरजा मुकाबले में तैयार हुआ। युद्ध हुआ। इसमें भाटी वेणीदास केशवदासोत मारा गया।

राठोड़ों के १० और शत्रु के ३० मरे। भायल देदा घायल हुआ। यह युद्ध खारला में पौष सुदि ९ को हुआ था। इसके अनंतर करणोत खींवकरण जोधपुर से उत्तर को चला। इसके साथ राम हरिदासोत है। प्रति दिन युद्ध होता है। ऊदावत राजसिंह, जगतसिंह और जोधा सिवदान ने जोधपुर और अजमेर के बीच में बड़ा उपद्रव किया। इनके शामिल कूंपावत फतैसिंह विजयसिंहोत, जैतावत राम और पदमसिंह, केसरीसिंह, भीम सबलोत, भाटी सूरा और महेश, माडेचा रामा मुकनदासोत, जोधा सूजा किरतावत तथा

चांपावत सामंतसिंह ने गाँव गांघाणी में बहुत से यवनों को मारा। इधर से चांपावत सामंतसिंह और उधर से भाटी रामसिंह आया और यवनों का संहार किया। बहुत से गाँवो में पेशकसी ली। ऐसे लूटते हुए जैतारण आए। यहाँ ऊदावत जगराम आदि शामिल हो गए। उधर राठोड़ सोजत पर गए। इनमें मुखिया मेड़तिया सादूल था। हैमतसिंह इसके शामिल हुआ। इन्होंने नबाब के सघ को मारा।

मगरा में राठोड़ों का उपद्रव सुन नूरमली जोधपुर से चला, सीधा पाली के थाना पर गया, और वहाँ से मिणियारी गाँव गया। चांपा नरहरदास मुकाबले में आया। रा० ऊदावत रूपसिंह रामसिंहोत उसके शामिल बारहठ केसरीसिंह हुआ। यह युद्ध सं० १७४० के वैशाख में हुआ।

मिणियारी में मिरजा से नरहरदास का युद्ध

भाटी हरदास के दुरजणसाल और हरिसिंह ने मंडोवर को लूटा। खोजा साल्हा से लड़ाई हुई। साल्हा भागकर जोधपुर में आया। यह सुनते ही नूरमली भी जोधपुर आया। मगरा में रामसिंह और सामंतसिंह आदि दौड़ते हैं। सीदी से थाना तागीर हुआ और सेरांणी मन में संतप्त हुआ और ११००० सेना लेकर चला। राठोड़ों को खबर लगी कि मुगलों की बड़ी फौज आती है। इन्होंने भी नक्कारा बजाया। दोनों की मुठभेड़ हुई। इस समय चांपावत सामंतसिंह क्रोध करके चला। उसी के समान भाटी रामसिंह आगे बढ़ा। महा भीषण संग्राम हुआ। मुसलमान रणभूमि में गिरने लगे। उधर से मेड़तिया हैमतसिंह आया। जोधा धनराज ने अपना घोड़ा चलाया। मुसलमान १००० और राठौड़ २०० मरे। इस लड़ाई में सामंतसिंह, रामसिह, हैमतसिंह, धनराज और विहारीदास ये पाँच सरदार काम आए।

इति द्वादश प्रकाश

उसतरां के थाने में कूंपावत आना था। करमसोत हरनाथ भीमसिंहोत उसका भतीजा जसा सूर्योदय के समय थाने पर चढ़कर आए। युद्ध हुआ। राठोड़ों ने थाना लूट लिया, फिर गांघांणी का थाणा लूट मंडोवर पर आए। परंतु मंडोवर वाले मीयां भाई भाग गए। वैसाख सुदि १२ को मुहम्मदअली चढ़ा और मेड़ते गया। मुहम्मदअली ने मेड़तिया मोहकमसिंह के प्रीति-वालों से पूछा और मोहकमसिंह को धोखे से मारने के लिये प्रीति की बात

की। मोहकमसिंह को मेड़ते के महलों में बुलाया और उसे धोखे से मार डाला। यह घटना आषाढ़ सुदि ९ मंगलवार को हुई थी।

सं० १७४१ में सोजत पठानों से तागीर होकर सुजाणसिंह को हुई। मुकनसिंह का पुत्र रामसिह, पूरणमल, हरिसिह, प्रवाडमल, सूर, दुरजणसाल हरदासोत भाटी, सूजा कीरतसिह का पुत्र और रणछोड़ ये हमेशा थानो पर जाते हैं और लड़ाई होती है। थानेदार संध्या समय दरवाजा बंद कर लेता है और दिन निकले खोलता है। यह सुनकर इनायतखाँ मन में जलता है। उसने शेख फाजल को उसी क्षण रवाना किया। यह १००० सवार लेकर चला। रणछोड़ ने इसके सामने घोड़ा बढ़ाया। आगे थाने पर सिंधी थे और उनके शामिल ऊहड़ भी थे। मुहम्मद सिंधी इस लड़ाई में मारा गया और शेख भाग गया। सोजत में सुजाणसिंह था। उस पर भाटी महेश गया। भीम अजीतसिहोत इसके साथ हुआ। युद्ध हुआ, जिसमें उरजनोत भाटी उदैभाण का पुत्र महेशदास मारा गया।

चापावत लाखा, फता, कूंपावत केसरीसिह और रामसिह ने जोधपुर में बखेड़ा करना शुरू किया। सामंतसिंह, रामसिंह और मोकमसिह के मरने से बादशाह का सोच मिटा था; परंतु चांपावत, करणोत, ऊदावत, बाला, भाटी और चौहान विद्यमान थे, जिससे विघ्न मिटा नहीं। चौहान चतुरसिह ने कहा कि उपद्रव नहीं मिटना चाहिए। राठोड़ संग्रामसिह महेशदास का पोता उसके शामिल हुआ। बारठ केसरीसिह ने कहा कि सग्रामसिह को मैं ले आऊँगा। बारठ सांगा के पास गया। उसने सांगा से कहा कि सामंतसिह मर गया है, अब वह भार आप अपने कधे पर उठावे। सांगा ने बंधुओं से कहा कि केसरीसिह यह कहता है कि अब बादशाही मन्सब छोड़ता हूँ। इतने में भाद्राजण का जोधा उदयभाण आया। सब राठोड़ इकट्ठे हो गए। संवत् १७४२ के कात्तिक सुदि ९ को ये सब एकत्र हो गए। उस समय इन्होंने दो विभाग किए; एक में अग्रणी उदयसिंह, उसके साथ करणोत खींवकरण, तीसरा भाटी रेणायर (रिडमल)। ये बीकानेर की तरफ गए। देश को लूटा और थाने भ्रष्ट किए। दूसरे विभाग में—संग्रामसिंह, यह जोधपुर की तरफ आया। इसके साथ भोपत जोगावत, तेजसिंह मुकनसिंह, बलरामोत और जोधा उदयभांण। तेजसी दुर्गदासोत सब के आगे था। बाला अखैसिंह, ऊदावत रूपसिंह, चौहान चतुरसिंह, फतैसिंह, कूंपावत छत्रसिंह फतैसिंह। जैतावत रामसिंह, पदमसिंह, कूंपावत केसरीसिंह रामसिंह सबलावत। प्रागदासोत जादव, अमरसिंह, नाहरखांन, उरजणोत भाटी सूजा, ये

सब जोधपुर पर चले। ये बालोतरा और पचपदरा लूटकर जोधपुर पहुँचे। मुगलों ने दरवाजे बंद कर लिए।

इति त्रयोदश प्रकाश

संग्रामसिंह जूंझारसिंहोत का धावा

इनायत खाँ जोधा उदयभाण पर क्रुद्ध हुआ कि यह हमेशा उपद्रव करता है। नूरमली को इसके पीछे भेजा वह सेना। लेकर सुहिंद्र गिरि आया। यहाँ उदयभाण के शामिल करण मुकनदासोत, चंद्रभाण, हैमतसिंह, पृथ्वीराज और बारठ केसरीसिह भीमोत हुए। युद्ध हुआ। इसमें जोधा मानसिंह कल्याणोत मारा गया। राठोड़ो ने मुगलों का आराब, लूट लिया, एक तोप पचीस हजार की और १०० ऊँट लूटे। यह युद्ध माघ सुदि ७ शनिवार को हुआ था। इसमें ५०० यवन मरे और १००० घायल हुए। मिरजा नूरमली ने इनायत खाँ को खबर पहुँचाई तब उसने मुहम्मद अली को भेजा। (भाद्राजण की दूसरी तीसरी लड़ाई हुई)।

इति चतुर्दश प्रकाश

पुरदल खाँ सिवाना पर गया। उसके साथ मेवाती नाहरखांन था। ये काणाणा के थाने पर आए। मोकलसर में उस समय अखैसिंह था। चांपावत सब अजमेर की तरफ गए। उनके पीछे नूरमली गया। महेव गाँव पर तुरक चढ़ आए। तब सबलसिंह ने मोरचा सभाला। इसके शामिल महेशदास आसावत, मोहकमसिह मनोहरदासोत, कुंभकरण किसनावत, सुजाणसिंह रामसिहोत, मेघसिह माधासिहोत भोज और भोज का पुत्र ये भाटी हुए। इस युद्ध में ६ सरदार मारे गए। सबलसिह तुरकों से लड़ रहा था। इतने में खबर आई कि दो बेटियाँ पकड़ी गई। सबलसिंह बेटियों के शामिल हो गया। बेटियों के वास्ते आसावत सबलसिंह कैद हो गया। उसने सोचा कि बेटियों को मारकर मिरजा को मारूँ। मिरजा मेड़ते गया। महेव गाँव लूटा। मेड़ते में मिरजा दानों भाई शामिल हो गए। बाला अखैसिह ने राजपूत जमा किए। चांपावत अखैसिंह धीरोत, सूजा वीरम का पुत्र, लखसिंह प्रतापसिंहोत, और प्रयागदासोत भाटी, तेजसी, अमरसिह. नाहरखांन चांपावत, भीम पातावत, बाला पर्वतसिंह, तेजसिंह। बाला अखैसिंह ने घोड़ा बढ़ाया। उस समय सं० १७४२ की चैत्र सुदि १ थी। अखैसिंह ने तुरकों पर आक्रमण किया तब उधर से पुरदलखाँ ने घोड़े उठाए। इधर अखैसिंह, एक बाला और चांपावत शत्रुओं पर पड़े।

उस समय रतनसिंह सुंदरदासोत आगे बढ़ा और तुरक को ललकारा। इसने पुरदल खांन को मार लिया, परंतु यह भी मारा गया। यह युद्ध काणाणा के थाने पर हुआ था। इसमें मुखिया अखैसिंह बच गया। राठौड़ों के १०० और तुरकों के ६०० भट मारे गए।

इति पंचदश प्रकाश

मिरजा मेड़ते से तोडे की तरफ गया। सबलसिंह उसके साथ कैद में है, बेटी भी साथ है। मिरजा ने चलते हुए कुचील गाँव में डेरा किया और भाटी कन्या के साथ विवाह करने का विचार किया कि सबलसिंह श्वशुर किया जाय। सबलसिह के मन में कपट था कि इस मिरजे को मार लूँ। विवाह की रीति के अनुसार अफीम मँगाई और तलवार भी माँग ली। मिरजा उत्साह के साथ मनुहार करता है, मरना विचारकर सबलसिंह उठा और चार घोड़े तैयार किए फिर कनात को फाड़कर जनाना के अंदर गया। नूरमली ने उसे जाता देखकर तलवार हाथ में ली और सबलसिंह की पीठ पर आया। तकिया पड़ा था जिससे वह गिर गया तब पलंग को आड़ में दिया। इधर तुरक उस पर दौड़कर आए। लड़ाई हुई जिसमें सबलसिंह मारा गया।

जोधपुर के पास हमेशा उपद्रव होता है। भाटी दुर्जनसाल ने ईदगाहवाली मस्जिद को सूअरों के रक्त से लाल कर दिया। उरजनोत भाटी इसके शामिल हुए। सूरसिंह भाटियों को लेकर आया। पाँच तुरकों को मारा। वहाँ से ऊँट लेकर वीसलपुर गया। तब मीर फतू इसके पीछे गया। भाटी सामने हुए और युद्ध हुआ। इस युद्ध में मीर का मामा अबदुल्ला ८ मनुष्यों के साथ गिरा। इधर शूरसिंह, केसरीसिंहोत, शिवसिंह, प्रतापसिंह, रतनू चारण सहसमल ये काम आए। यह युद्ध सं० १७४२ ज्येष्ठ सुदि ३ को हुआ था।

नूरमली तोडे के अंदर है। यहाँ युद्ध हुआ जिसमें नूरमली और शेख दोनों मारे गए। राठोड़ों ने राड़द्रह को लूटकर साचोर को लूटा। पचास यवन मारे गए। राठोड़ों के हाथ बहुत घोड़े ऊँट लगे। इस युद्ध में अग्रणी अखैसिंह लखावत और खींवकरण आसकरण का पुत्र थे। चांपावत करणसिंह और महवेचा जैता भी इनके शामिल थे। मार्गशीर्ष वदि १० [सं० १९४२ (२)] को साचोर लूटा गया।

ऊदावत जगराम धीरोत गोड़वाड़ की तरफ गया। प्रथम उसने पाली में लूट की। फिर आगे अजमेर तक गया। थाँवला का थाना लूटा। इनके ऊपर रावणखंड* मिरजा जोधपुर से चढ़कर आया। उसे राठोड़ों ने मेड़ते में आते घेर लिया और पराजित किया। इस मिरजा का नाम मुहम्मद अली था।

सं० १७४२ का माघ मास व्यतीत हुआ। अब चाँपावत संग्रामसिंह झूँझारसिंहोत और उसका भाई भोपत आए। वैसा ही भगवानदास था। तेजसी और मुकनसिंह ये सब राठोड़ अबदल खाँ के प्राणों का हरण करनेवाले एकत्र हुए। भाटी और चौहान चतुरसिंह व फतैसिंह शामिल हुए। ये सब खान पर चढ़कर पाल्हासणी गाँव आए। इन्होंने थाना को लूटा जिसमें बहुत द्रव्य हाथ लगा। वहाँ से थली की तरफ गए। फलोधी पर गए, दंड लिया, फिर जोधपुर की तरफ आए। नांदिया के थाने में नाहरखान था। उसे मारकर गाँव गांधाणी में आए। वहाँ से जोधपुर आए। तब इनायत खाँ घबराया।

इति षोडश प्रकाश

संग्रामसिंह जूंझारसिंहोत और भगवानदास जोगीदासोत ने गश्त करके आकर जोधपुर को घेरा।

उधर रावणखंड ने बूसी गाँव को लूटा। वहाँ से भाद्राजण पर आया। लड़ाई हुई जिसमें ३० तुरक मारे गए। वहाँ से वह जोधपुर गया। वहाँ चार दिन ठहरा। वहाँ से पीपाड़ गया। खुसालबेग इक्का इसके साथ था। वह फौज से अलग ही चलता था। हरनाथ चंद्रभाणोत से उसकी मुठभेड़ हो गई। हरनाथ ने इक्के को मार लिया।

चैत्र व्यतीत हुआ। ग्रीष्म ऋतु का आरंभ हुआ। जालोर गढ़ में विहारी पठान फतहखांन था। उस पर महाराज की सेना ने चढ़ाई की। उस सेना में चाँपावत, ऊदावत, कूंपावत, करणोत, जोधा, बाला, महेचा, ऊहड़, करमसोत, धवेचा, भाटी, चौहान सब थे। फतहखान इनके प्रबल बल को देखकर भाग गया और धर्मद्वार (शरण) में चला गया। सेना ने नगर को लूटा। यह आक्रमण वैशाख वदि १४ को हुआ था।

---

* जिसका ऊपर का होंठ कटा हुआ होता है उसे रावणखंड कहते हैं।

हरदासोत भाटियों ने देईसर गाँव लूटा, फिर जोधपुर को घेरा। सं० १७४२ व्यतीत हुआ।

सं० १७४३ में राठोड़ों ने महाराजा को देखना चाहा, जिनमें अग्रणी जोधा केसरीसिंह मानसिंहोत, छोटा भाई हरिराम और किसनसिंह जगन्नाथोत ये थे। इसी अवसर पर हाडा दुर्जनसाल १००० सवार लेकर आया और राठोड़ों के शामिल हुआ। चाँपावतों ने इसको अपनी कन्या ब्याही, जो सुजाणसिंह की पुत्री मुकनसिंह की बहिन थी। तेजसी और मुकनसिंह ने दुर्जनसाल से कहा कि महाराजा अजीतसिंहजी को प्रकट करो। तब राठोड़ों ने महाराजा के दर्शन के लिये खीची मुकुंददास को बुलाया और महाराजा का दर्शन कराने के लिये कहा तो उसने कहा कि दुर्गदास दक्षिण में हैं। मुझे महाराज को उसने सौंपा है। मैं उसके बिना नहीं दिखा सकता, तब चौहान मुकनसिंह ने कहा कि हम अन्न-जल तभी लेंगे जब महाराज का दर्शन होगा। तब मुकनदास कल्याणोत ने आबू की भूमि से महाराजा को लाकर दर्शन कराया। सं० १७४३ की चैत्र सुदि १५ को महाराज का दर्शन हुआ। यहाँ महाराज के स्वरूप का वर्णन है। इस समय मुख्य सरदार ये थे—चाँपावत उदयसिंह, संग्रामसिंह, भूपालसिंह, तेजसिंह, मुकनसिंह, विजयसिंह, नाहरखान हरिसिंहोत। ऊदावत—राजसिंह, जगराम विजयसिंहोत, साँमलदास, रूपसिंह, नाहरखाँन। कूंपावत—भोपत जगावत, रामसिंह, फतैसिंह, केसरीसिंह। भाटी—सूरजमल, राजसिंह, सूरसिंह, हरनाथ चतुर्भुजोत, तेजसिंह, अमरसिंह, नाहरखाँन, किसनसिह किसोरसिंहोत। खीची मुकनदास, ऊहड़ भगवान, प्रोहित अखैसिंह। पड़िहार विजयसिंह, साँमलसिह। जती (जैन) ग्यानविजय (शक्ति का उपासक) बारहठ केसरीसिंह, वाघा इत्यादि। सबने दर्शन करके कहा कि आज का दिवस धन्य है, शुभ घड़ी है जो स्वामी का दर्शन हुआ। हाडा दुर्जनसाल ने निछरावल की। सब की निजर निछरावल हुई। तदनंतर सांगा (संग्रामसिंह) ने मिहमानी दी। सबको भोजन कराया। सांगा सीख करके गया। अपने पुत्र उदयभाण को महाराजा के पास रखा। इनायत खाँ ने यह सब वृत्तांत बादशाह के पास लिख भेजा। उसने लिखा कि राठोड़ों ने अजीतसिंह को प्रकट कर दिया है। अब पूरी मदद मिले तो इच्छानुसार कर सकता हूँ। शुजाअतखाँन गुजराती को मेरे सहायतार्थ देना चाहिए। औरंगजेब सुनकर मन में सोच करने लगा और अपना दूत महाराजा को देखने के लिये भेजा।

राठौड़ अजीतसिंहजी को लेकर आउवा गए। ठाकुर ने मोतियों से वधाया, और घोड़े नजर किए। तदनंतर, बगड़ी, रायपुर, बीलाड़ा, बलूंदा, रीयां, आसोप, लवेरा, खेड़, खींवसर, होकर कोलू आए। यहाँ सं० १७४४ के भाद्रपद सुदि १० को पाबूजी का दर्शन किया। वहाँ से पोहकरण आए। इस समय दक्षिण से दुर्गदास आया। उसके साथ अखैसिंह रतनसिंहोत जोधा था। दुर्गदास प्रथम नागाणा गाँव गया। वहाँ नागणेचियाँ देवी के दर्शन कर भीमरलाई गाँव में आया। यहाँ भाई खींवकरण मिला। उसने समस्त वृत्तात कहा। महाराजा पोकरन से रवाना हो रामसापीर के देवालय दर्शनार्थ गए। वहाँ से भीमरलाई गए। दुर्गदास ने नजर न्योछावर की, मोती सिर पर वारे गए। वहाँ से महाराजा गूंघरोट गए। दुरजणसाल हाडा भी साथ था।

इति सप्तदश प्रकाश

बादशाह ने दूत भेजकर जिज्ञासा की ता दूतों ने जाकर सब महाराजा का वृत्तांत कहा। सुनकर बादशाह घबराया। इनायत खाँ ने अजमेर से बादशाह के पास अर्जी भेजी कि गुजरात के सूबहदार शुजाअत खाँ को सहायता में भेजें तो मैं राठौड़ों के लिये पर्याप्त हो सकता हूँ, इधर से मैं जाऊँ और उधर से वह आवे। इनायत खाँ इस विचार में था कि वह सं० १७४४ में मर गया। बादशाह को इसका बड़ा रंज हुआ।

बादशाह ने उस समय एक कपट किया। कृत्रिम अजीतसिंह बनाया गया और उसका नाम महम्मदराय रखा और हुक्म दिया कि जो इससे मेल रखेगा वह पंच हजारी मन्सब पावेगा। वह महम्मदराय दक्षिण में सातवें दिन मर गया। यह सुन राठोड़ों को खुशी हुई। बादशाह ने जोधपुर शुजाअत खाँ के अधीन किया और गुजरात का देश भी उसके अधीन रखा।

हाड़ा दुरजनसाल राठोड़ों की सहायता पाकर बूँदी पर गया। इसने मार्ग में मालपुर लूटा और पुर को लूटा। यह मांडल में गया तब दूदा मुकाबला में आया। लड़ाई हुई, जिसमें बादशाही सेना भागी, परंतु शत्रु-सेना में से गोली आई और दुरजनसाल के लगी, जिससे वह मर गया। राठोड़ों ने पुर पर सवार भेजे। लड़ाई हुई। पुरवालों ने २०० मुहरें दंड दिया। फिर पेशकसी लेकर राठोड़ मारवाड़ में आए।

उधर से शुजाअतखाँ आया, इधर महाराजा के हित के वास्ते सब राठोड़ एकत्र हुए। चांपावतों में उदैसिंह, भोपत, तेजसी, जूंझारसिंह,, जसवंतसिंह,

अर्जुनसिंह, भीमसिंह, हठीसिंह । करणोत दुर्गदास, खींवकरण, तेजसिंह, देवसिंह । कूंपावत रामसिंह, विजैसिंह, भगवानदास । जैतावत मांडण, रूपसिंह, फतैसिंह । ईंदा किसना । भाटी सूजो, राजसिंह, सूरसिह, लखो, महेशदास, तेजसी, अमरो, सायबखाँन । जोधा भांण, भीम, सबलसिंह, हैबतसिंह, शिवसिह । मेड़तिया कुसलसिंह, कल्याणसिंह, जूंझारसिंह, विजैसिह, सूरसिंह, जोधसिंह, दलपत । ऊदावत जगराम विजैसिहोत, राजसिंह, रिदैराम, रूपसिह, साँवलदास, सायबखाँन । करमसोत नाथूसिह, लखधीर । चौहान चतुरसिह, अजबसिह, लालसिंह, फतैसिह । बाला अखैसिह, पर्वतसिंह, प्रयागदास । जैतमाल मगलसिह । महवेचा विजैसिह । धवेचा सूजा । ऊहड़ भोपत, भोज । भायल आसो, रतन । खीची मुकनदास, शिवसिंह कलावत । धाँधल उदैकरण, किरतसिंह, गोयंददास । पड़िहार साँमल विजैसिहोत । नरहर आना का पुत्र । खुमाणा सुंदरदास, महेशदास । सोभावत दयालदास, प्रयागदास । भंडारी आसकरण, हेमराज । पंचोली हरकिसन, इंद्रभाण । मीयाँ आरब । व्यास बालकिसन । पुरोहित अखैसिंह । आचारज रिणछोड़ । चारण केसरीसिह, बाघा आदि १०० । अबदार हेमराज ।

सं० १७४५ में शुजाअतखाँन ने पत्र लिखा कि तुम उपद्रव मत करो, इजारा कर लो । खानें ले लो, राहदारी की चौथ लो । इनायतखाँन का बेटा मुहम्मदबेग जोधपुर से रवाना हो दिल्ली को चला । जोधा चंद के पुत्र हरनाथ ने उसका पीछा किया । इसके साथ मेड़तिया अखैसिह, गोकलदास, सूरसिंह प्रतापसिंहोत, सबलसिह और सकतसिह थे । मुहम्मदबेग ढूंढाड़ के गाँव रैणवाल में पहुँचा । वहाँ इसे जोधा हरनाथ मिला । उसे देखकर वह सब सामान और द्रव्य छोड़कर भाग गया और किले में घुस गया । कछवाहों ने इसकी रक्षा की । यहाँ बहादुरसिंह चदोत मारा गया ।

इति अष्टादश प्रकाश

औरंग ने इसी वर्ष में शंभु मरहटा को पकड़ लिया ।

काजमबेग मारवाड़ पर चढ़कर आया । इधर चांपावत मुकनसिंह सूरजमलोत ने बड़ी लूट पाट की, और काजमबेग को जा घेरा । वह भागकर अजमेर गया । अजमेर का सूबहदार सूजाबेग था । वह मुकाबला में आया । उसे राठोड़ों ने घेर लिया । वह भी कुछ लड़कर भाग गया । वहाँ की रसद राठौड़ों के हाथ लगी ।

महाराजा पीपलोद में हैं । सूजाबेग से अजमेर का सूबा तागीर हुआ । उसके स्थान में शफी खाँ आया ।

राठोड़ों ने टोहाणा का थाना लूटा । वहाँ से वे अजमेर गए । दुरगदास ने अजमेर को घेरा । शफी खाँ ने बादशाह को झूठी अर्जी दी, जिसमें लिखा कि दुर्गादास जख्मी होकर भाग गया है । दक्षिण की तरफ गया है । बादशाह ने उसकी बहुत खातिर की और लिखा कि दुर्गादास को मारकर आना, नहीं तो चूड़ी पहनाकर कैद कर लूँगा । तब शकी खाँ घबराया और लिखा कि यह देश शुजाअतखाँ के समीप है, उसे हजरत लिखें, मैं फिर इसका उपाय कर दूँगा । शकीखाँ ने महाराजा की शोध में मियाँ ईशाक को भेजा । वह पीपलोद आया । महाराजा के मन्त्रियो से मिला । मुकनदास खीची ने उसे महाराजा से मिलाया । उसने शफी खाँ का पत्र महाराजा को पढ़ाया । उसमें लिखा था कि आप एक बार अजमेर आवें, आपको जोधपुर मिल जायगा । मार्गशीर्ष सुदि में महाराजा अजमेर को रवाना हुए । उनके साथ २०००० राठोड़ थे । मुकनदास खीची और मुकनसिंह चाँपावत साथ गए । दुर्गदास घर बैठा रहा । मुकनसिंह और मुकनदास शफी खाँ से मिले । वार्तालाप होने पर ज्ञात हुआ कि कपट है. तो भी राठोड़ों ने कहा कि अजमेर देखेंगे । तब महाराजा अजमेर गए । खान से मिले, दो घड़ी वार्त्तालाप हुआ । राठोड़ों ने विचार किया कि अजमेर लूट लें । तब शफी खाँ घबराया और हाथी, घोड़े, जवाहिरात महाराजा के नजर किए । महाराजा वापिस देश में आए ।

उदयपुर के महाराणा जैसिंहजी का, अपने पुत्र अमरसिंह के साथ, फसाद हुआ । तब महाराणा घाणेराव आए और मेड़तिया ठाकुर की मारफत राठोड़ो से सहायता चाही । महाराजा ने चार सरदार सेना देकर भेजे । करणोत दुर्गदास, चाँपावत भगवानदास, जोधा दुरजणसाल और ऊदावत अखैसिंह । ये राठोड़ सेना लेकर घाणेराव गए । राठोड़ों और सीसोदियों ने मिलकर पिता पुत्र में संधि करवा दी ।

सं० १७४९ कार्त्तिक शुक्ल में मीर सेना लेकर खेजडले आया । वहाँ से वीसलपुर । वहाँ से चलकर माता के देवल पर आया । वहाँ वाघा ने इसको मार हटाया । मीर फिर हल्ला करके माताजी के स्थान पर आया । उसी अर्से में लाखा भी माताजी के स्थान पर पहुँचा । मीर वहाँ एक साँड को मारकर मेवाड़ की तरफ चला । लाखा ने पीछा करके उसे मार डाला ।

राठोड़ राणा को गद्दी बिठाकर पीछे मारवाड़ में आए । उस समय महाराजा अजीतसिंहजी के पास ३०००० फौज जमा हो गई थी । इनको

बल पकड़ता देखकर बादशाह के मन में विचार हुआ कि मेरी पोती राठोड़ों के हाथ में है और वे सिरजोर हो रहे हैं। और राजा भी जवान हो गया है। इस समय अगर दुर्गादास पकड़ा जाय तो मैं सुखी हो सकता हूँ। उसके मन में शक पैदा हो गया था। इसलिये उसे रात्रि में निद्रा नहीं आती थी। बादशाह ने इसके वास्ते नवाब शफी खाँ और कुलवी नारायणदास को भेजा। इनको इधर एक साल हो गया परंतु कुछ सफलता नहीं हुई।

सं० १७५० में मोकलसर पर तीन सूबहदार वैशाख में चढ़कर आए। जोधपुर से काजमबेग, सिवाने का हाकिम सूजा और जालोर का हाकिम कमाल खाँ। बाला राठोड़ अखैसिंह माधोदासोत ने इन पर आक्रमण किया, और तीनों को मार भगाया। यह घटना माघ मास के शुक्ल पक्ष में हुई थी।

एक मीर चढ़कर लूणावास पर आया। इसके सामने चाँपावत मुकनसिंह गया और लड़ाई हुई, जिसमें मुकनसिंह और तेजसी ने उसे पकड़ लिया।

संवत् १७५१ में कई राठोड़ों ने इजारा लिया, कितने ही नौकर हो गए और इनको चौथ देना भी मुकर्रर हुआ। इस साल काजमबेग नवाब का नायब हुआ। बादशाह ने शुजाअतखाँ को लिखा कि दुर्गादास तुम्हारे देश में है इसलिये तुमको लिखा जाता है कि या तो अकबर की हुरमों का प्रबंध करो, या दुर्गादास को पकड़ो या हाथ में चूड़ी पहनो और मेरे पास आओ। यह पढ़ नवाब घबराया। उसने मुंशियों को बुलाया। मुंशियों ने यह सलाह दी कि आप बादशाह के पास अर्जी भेजो। उसमें लिखो कि "मै दुर्गादास पर जाता हूँ। जाते ही अचानक हमला करूँगा, उसके जनाना को भी मारूँगा। उसमें यदि अकबर का कुटुंब मारा गया तो मेरा दोष नहीं।" यह अर्जी पढ़कर बादशाह ने लिखा कि तुमने बहुत ठीक लिखा है। जिस तरह हुरमां हमारे हजूर में आवें वैसा उपाय करो। यह हुक्म पढ़कर शुजाअतखाँ अत्यंत प्रसन्न हुआ और दुर्गादास के पास पत्र लिखकर भेजा। नागर ब्राह्मण ईश्वरदास और साचोरा ब्राह्मण गिरधर दोनों दुर्गादास के पास आए। यह बावन (१७५२) की साल थी। उस समय उदयसिंह लखधीरोत महाराणा के पास था। अन्य सब राठोड़ महाराजा के पास थे।

महाराजा सेना लेकर आडावळा की तरफ गए। नवाब गुजरात गया। जोधपुर में लसकर खाँ है। वह चढ़कर कुरमाल की नाल (घाटी) में आया। महाराजा भी उधर ही थे। युद्ध हुआ। वहाँ दुर्गादास का पुत्र महकरण आगे बढ़ा। जैतावत मांडण बीकावत, मेड़तिया दलराम ये उसके

साथ हुए। करणोत देवकरण, ऊदावत रूपसिंह, भाटी सूरसिंह केसरीसिंहोत, करणसिंह और चंद्रभाँण। कूंपावत भावसिंह, किसनसिंह, हरनाथ। जोधा सबलसिंह गोयंदासोत। महेचा विजयसिंह। ऊहड़ भोज और भगवान। खूमाणा सुंदरदास और महेशदास। इन्होंने यहाँ ऐसी तलवार चलाई कि लसकर खाँ भाग गया।

बादशाह ने जब यह वृत्तान्त सुना तो गुजरात की तरफ अपने दूत भेजे और कहलाया कि दुर्गादास को धन, संपत्ति, हाथी, आदि देकर अकबर के कुटुंब को ले लो; क्योंकि बादशाह के मन में महाराजा की तरफ का भ्रम उत्पन्न हो गया था। तब शुजाअतखाँ ने दुर्गादास को पत्र लिखा और उस विषय का प्रपंच किया। दुर्गादास ने अकबर की स्त्री को तो दक्षिण में पहुँचा दिया और उसके बेटा-बेटी दुर्गादास के पास रहे।

इस अवसर में महाराणा और अमरसिंह के फिर गृहकलह हुआ। उस समय महाराणा ने अपने भाई गजसिंहजी की बेटी महाराजा अजीतसिंहजी को ब्याही। ज्येष्ठ मास में विवाह हुआ। इसके पश्चात् देवलिया में सं० १७५३ आषाढ़ सुदि ९ को विवाह हुआ। वहाँ से एकलिंग महादेव आए। वहाँ जयसिंहजी से मिले। पाँच दिन वहाँ ठहरे। वहाँ से सिरोही आए। राव उदयसिंहजी से मिले। माता ने दोनों का सत्कार किया। वहाँ से मारवाड़ में आए। उस समय महाराज के कृपापात्र चार थेः—भंडारी वीठलदास, आसकरण, मूहणोत सागो और खीची शिवसिंह।

बादशाह के पास दुर्गादास की सिफारिश हुई। दुर्गादास ने अकबर की कन्या को बादशाह के पास भेजा। उस समय उससे हुरमां नाजर आदि ने पूछा तो दुर्गादास ने उसे जिस रीति से रखा था, वह सब वृत्तांत कहा। सुनकर बादशाह प्रसन्न हुआ और कहा कि दुर्गादास अकबर का पुत्र लावै तो मैं उसे पाँच हजारी मन्सबदार करूँ। दुर्गादास के पास पत्र आया तब दुर्गादास ने महाराजा को उदैसिंह के साथ कोरटे पहुँचाया। खुद सुरताण को लेकर दक्षिण को जाने लगा, परंतु शाहजादा को संदेह उत्पन्न हो गया जिससे वह जोधपुर आया। उसके स्वागतार्थ तीन नवाब गए। लसकरखाँ, हइयातखाँ और मौरँगखाँ। इन्होंने महाराजा को लिखा कि जोधपुर आइए तब महाराजा जोधपुर गए और वहाँ से बालसमन्द की तरफ गए। नवाब महाराजा से मिला और सिवाने की राहदारी की चौथ देना कबूल किया।

सं० १७५४ के पौष मास में साचोर, थराध और जालोर देखने का महाराजा ने विचार किया। बादशाह का कोप भी अब शांत हो गया।

इति एकोनविंश प्रकाश

दुर्गादास औरंगजेब के पास दक्षिण गया। महाराजा जोधपुर देखने आए। वहाँ से जालोर गए। वहाँ कमालखाँ था। उससे जालोर तागीर हुआ। संवत् १७५५ की आषाढ सुदि ५ को महाराज जालोर गए। महाराजा का जालोर पर अधिकार हो गया। वहाँ से विवाह करने को सु० ६ को जेसलमेर गए। रावल अमरसिंह की कन्या से विवाह हुआ। हलवद से यात्रा करने के लिये हलवद की रानियाँ नाथद्वारे आई थीं। उन्होंने डोला भेजा। वैशाख में महाराजा के साथ झाली का पाणिग्रहण हुआ। आषाढ सुदि ९ को ब्याह करने को महाराजा रोहचे गए। पृथ्वीराज के पुत्र फतैसिंह की कन्या के साथ महाराजा का विवाह हुआ। सं० १७५७ में महाराजा विवाह करने को होठलू गए। चौहान चतुरसिंह की कन्या के साथ (जो लालसिंह की बहिन थी) विवाह किया। यह विवाह माघ वदि १० सोमवार को हुआ था। इसी वर्ष गुजरात का सूबहदार शुजाअतखाँ मर गया। गुजरात के सूबा पर शाहजादा आजम गया। जोधपुर में ईसफअली आया। स० १७५८ में भाटियों के यहाँ विवाह हुआ। यह रावल दला की पुत्री थी। इसका नाम मिरघावती था।

सं० १७५९ में आजम ने जोधपुर पर कब्जा किया। जैपुर का राजा जैसिंह बादशाह की नौकरी में था। महाराजा की रानी चतुरसिंह की कन्या चौहानजी के गर्भ में महाराजा अभैसिंहजी आए। सं० १७५९ मार्गशीर्ष वदि १४ को अभयसिंहजी का जन्म हुआ। उस समय विशाखा नक्षत्र, मिथुन लग्न, शोभन योग और शकुनि करण था। उस उत्सव में कैदी कैद से छोड़े गए, मुल्क में बधाई बँटी।

महाराजा अभैसिंहजी की जन्म-कुंडली

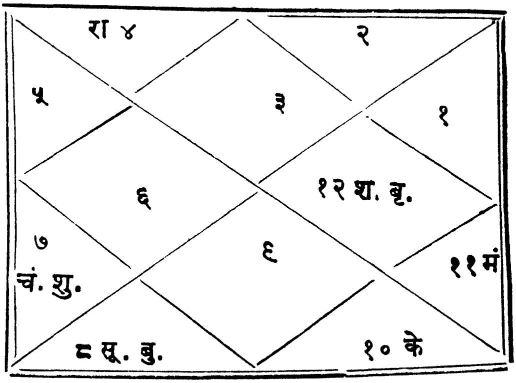

इति विंश प्रकाश

सं० १७६० में महाराज विवाह करने को साचोर गए। सहसमल की कन्या के साथ विवाह हुआ। आजमशाह शाहजादा ने जोधपुर से ईसफ-अली को बुला लिया। मुरशिदकुली को मारवाड़ में भेजा। वह जालोर में महाराजा से मिला। उसने मेड़ता महाराजा अजीतसिंहजी के नजर किया। महाराजा ने मेड़तिया कुसलसिंह और धाधल गोविंददास को मेड़ते भेजा। इद्रसिंह का पुत्र इस बात से बहुत जला और औरंग के पास अर्जी भेजी कि अगर आप मुझे जोधपुर की नायबी दें तो मैं आपको सेवा कर दिखाऊँ।

संवत् १७६१ के वर्ष में औरंग ने मुरशिदकुली को जोधपुर से बुलाकर उसके स्थान में जाफरबेग को भेजा और मोहकमसिंह को मेड़ते में रख दिया। मोहकमसिंह ने जालोर उमरावों के पास पत्र भेजे और कपट की बातें होने लगीं। वे लोग कहते हैं कि बादशाह ने मोहकमसिंह को बड़ा कुरब दिया है, कितने ही कच्चे कानोंवालों ने उस पर ध्यान भी दिया। उस समय भाटी इंद्रभाण और जोधा भीम ने उस कपट को देख महाराजा का पक्ष लिया। पालहर (चांपावत) तेजसिंह सांचोर से चलकर आया।

सं० १७६२ के कार्तिक वदी १३ को मोहकमसिंह मेड़ते से रवाना होकर जालोर पर आया। उसके साथ तीन हजार सवार थे। परंतु इसकी सूचना जालोर पर महाराजा को पहिले ही मिल गई। महाराजा ने अपने पुत्र और जनाना को वहाँ से निकाल दिया। उनके साथ निम्न लिखित सरदार भेजे गए—चौहान चतुरसिंह, लालसिंह का पुत्र बहादुरसिंह। खीची शिवसिंह, रावत गोकलदास। धांधल गोविंददास, फतैसिंह और भगवानदास। पुरोहित रिडमलसिंह। सिकदार दयालदास। मांगलिया तेजसिंह, साहिबसिंह। वानर राठोड़ केशवदास का पुत्र नारायणदास। ये सब ८०० सवार थे, जिनका महाराजा को पूर्ण विश्वास था।

इनको रवाना करके अजीतसिंहजी निम्न लिखित सरदारों के साथ युद्धार्थ तैयार हुए—चाँपावत तेजसिंह आईदानोत और राजसिंह का पुत्र किसनसिंह। जोधा भीम रणछोड़दासोत। भाटी भीम का पुत्र इंद्रभांण। कूंपावत सबलसिंह का पुत्र रामसिंह। चौहान फतैसिंह का पुत्र जगन्नाथ। ऊदावत कुंभकर्ण का पुत्र सांमसिंह, गोयंददास का पुत्र देवीसिंह, जूंझारसिंह का पुत्र तेजसिंह, चंद का पुत्र दलसिंह और भीवसिंह रायमलोत। खीची गोपालदास शिवराम का पुत्र। मांगलिया महेशदास और उसका भतीजा किसनसिंह। व्यास बालकिसन का पुत्र दीपा। ये रात्रि के समय महाराजा के साथ चले।

उसी रात्रि में मेड़तियों और ऊदावतों के पास खबर पहुँची, तब वे भी सब एक प्रहर में आकर शामिल हुए। राजुखाँन ने नक्कारे पर डंका दिया। इतने में खबर आई कि महाराजकुमार प्रसन्न हैं।

महाराजा अजीतसिंह ने उस समय कहा कि शत्रुओं को निर्मूल करूँ तो मैं जसवंतसिंहजी का पुत्र कहलाऊँ। इतने में रज आकाश में उड़ती नजर आई और ये सरदार फिर आकर महाराजा के शामिल हुए—मेड़तिया कुशलसिंह अचलसिंहोत। चाँपावत विजैसिंह चंद्रभांणोत। ऊदावत जगरामसिंह, रिदैराम, प्रतापसिंह, रूपसिंह रामचंदोत, गोवरधन का पुत्र नाहर खाँ। कूंपावत जैतसिंह के पुत्र रामसिंह और पदमसिंह, फतैसिंह विजयसिंहोत, माधोसिंह का पुत्र फतैसिंह, और केसरीसिंह। भाटी सूरसिंह केसरीसिंहोत, सूजा जगन्नाथोत।

पाँचवें दिन जोधा वनैसिंह, करणसिंह और चंद्रभाण भी शामिल हो गए। दिन निकलते मोहणसिंह, जोगीदास, सबलसिंह, हैवतसिंह और पृथ्वीसिंह भी आ गए। इनको देखकर मोहकमसिंह निराश हो गया। उसके मन में चिंता बढ़ी। मोहकमसिंह जालोर से भागा और थल में गया। महाराजा ने उसका पीछा किया। मोहकमसिंह भागकर दूनाड़े आया। महाराजा सैन्यबल सहित वहाँ पहुँचे और युद्ध हुआ। वहाँ से मोहकमसिंह गर्वरहित होकर नीसांण और फतैजंग जैसा हाथी छोड़कर भागा। इस युद्ध में अग्रणी तेजसिंह आईदानोत, कूंपावत सबलसिंह का पुत्र रामसिंह, जोधा जोगीदास, मेड़तिया जसरूप ये घायल होकर उठाए गए, परंतु मोहकमसिंह को भगा दिया। यह युद्ध सं० १७६२ माघ सुदि १३ को हुआ था। यहाँ महाराजा के पास बीस हजार सेना जमा हो गई थी। विजय पाकर महाराजा कांकाणी आए। यहाँ सूबहदार मिरजा और मुकीम बीच में आए। मोहकमसिंह का पीछा छुड़ाया। साठ हजार रुपए इन्होंने महाराजा को दिए। महाराजा यहाँ से वापिस जालोर गए।

इति एकविंश प्रकाश

संवत् १७६३ में महाराजा का प्रताप बढ़ा। सरदारों को जागीरें दी गईं। चारणों को लाख पसाव दिए गए। इसी अर्से में दूतों ने आकर खबर दी कि अहमदनगर में औरंगजेब बीमार हो गया है और लाहोर से नवाब जल्दी से आता है। तब महाराजा ने सरदारों के नाम पत्र लिखे। आठों मिसल के सरदार आए। सेना बहुत जमा हो गई। उस समय इब्राहीम खाँ महाराजा से मिलने को जालोर आया। महाराजा उससे मिले। मुगल

माघ मास में गुजरात पहुँचा। महाराजा ने प्रथम देवडों को पादानत किया। फिर राड़दड़ा के स्वामी को। तत्पश्चात् सूराचंद आए। सूराचंद में फिर सेना इकट्ठी की। चैत्र वदि २ को दूतों ने आकर औरंगजेब के मरने की खबर सुनाई। बड़ी खुशी हुई। वहाँ से महाराजा रवाना होकर पंचमी को जोधपुर आए और आते ही किला ले लिया। मिरजा किले में था। वह डेरों में चला गया। महाराजा गद्दी पर बैठे। दूसरे दिन फिर पीछे राठोड़ों की सेना आई जिससे यवन और घबराए। मोहकमसिंह मेड़ता छोड़कर नागोर चला गया।

जाफर खाँ जोधपुर में था। वह लड़कर मारा जाता; परंतु कूंपावत किरतसिंह ने उसको शरण दिया और उसको निर्भय किया। कई मुसलमान भागकर अजमेर गए, कई किरतसिंह के घर पर गए, कूंपावत भीम ने मीर को मारा उस समय वह घायल हुआ। तेजसिंह का पुत्र गोपालदास बाला राठोड़ मुगलों से लड़कर मारा गया। कीरतसिंह ने जाफर खाँ को शरण दिया था; परंतु उसका द्रव्य सब इसने ले लिया। कई तुर्क भाग गए, कई छिप गए उनको माला कंठी पहनाकर छोड़ा; फिर सोजत के थाने के तुर्कों को मार हटाया। पीछे मेड़ते में मेवाती थे, वे भी मारे गए। चैत वदि १३ को जोधपुर का गढ़ सजाया गया। म्लेच्छों का संसर्ग होने से, गंगाजल, यमुनाजल और पुष्कर के जल से महल धुलवाए गए, ब्राह्मणों से वेद-मंत्र पढ़ाए गए।

इति द्वाविंश प्रकाश

औरंगजेब के मरने पर उसके पुत्र आलमशाह मुलतान से और आजम दक्षिण से दिल्ली की तरफ रवाना हुए। वैशाख वदि ७ को जनाना और महाराजकुमार जोधपुर आए।

आजम, आलम दोनों आगरा में आए। आलम तख्त पर बैठा। उसने अजीतसिंहजी के जोधपुर ले लेने से इधर की तरफ प्रयाण किया। आकर अजमेर में ठहरा। अजमेर में देखता है कि जहाँ तहाँ झालर घंटा बजती है, देव-पूजा होती है। अब अजीतसिंहजी के पास ऊहड़ भगवान का पुत्र हरिदास गढ़ पर आया। फिर अभैसिंहजी, दलेलसिंह, भीमसिंह, दुरगदास, माँगलिया ऊदा, रतनसिंह आदि ८०० भट गढ़ पर आए। यवन बीलाड़े आया, तब महाराजा सामने गए।

बादशाह ने अजीतसिंहजी का बल बढ़ता देखा, तब अजीम की सलाह से मेल करना चाहा और चेला नाहरखाँन को भेजा। महाराजा ने नाहरखाँन से

वार्तालाप करके उसे वापिस भेजा। उसके साथ चांपावत भगवानदास जोगावंत भेजा गया। बादशाह ने अजीम से कह दिया और फरमान दे भगवानदास को वापिस भेजा। वह लेकर आया। नाहरखाँन भी साथ था। महाराजा ने मुसलमानों का दल देखने का विचार कर फागण वदि ११ को प्रयाण किया। वीसलपुर डेरा हुआ। उधर से संधि के लिये बादशाह ने खानाखान नवाब के पुत्र मैरसखाँन को भेजा। उसके साथ भदोरिया राजा और बूँदी महाराज बुधसिहजी थे। उसके साथ २०००० सेना थी। वह पीपाड़ आया। महाराजा उसके सामने गए। दोनों की मुलाकात हुई। वहाँ से महाराजा नवाब के साथ चले। आणंदपुर में बादशाह से मुलाकात हुई। बादशाह ने महाराजा का आदर-सत्कार किया और तेग बहादुर की पदवी प्रदान की।

दैववश महराब खाँ ने जोधपुर लेना चाहा और शीघ्रता से चला। उसके साथ मोहकमसिंह था। इससे महाराजा क्रुद्ध हुए। अजीम आदि नवाबों को खबर लगी, तब उन्होंने पत्र भेजे। महराब खाँ किले में आया, परंतु मोहकमसिंह नहीं जा सका। तब मोहकमसिह खिसियाना होकर वापिस गया।

उधर आलमशाह कामबख्श पर चढ़कर दक्षिण की तरफ गया। उसके साथ महाराजा अजीतसिंहजी गए। जब आलम का कृपापात्र दूसरा राजा हो गया तो अजीतसिंहजी रुष्ट हुए। आँबेर का राजा नित्य जाकर महाराजा से मिलता है, इससे उसको भी आलमशाह ने आँबेर नहीं दिया। बादशाह ने अपना थाना रख दिया। उस समय अजीतसिहजी ने आसावत दुर्गादास को बुलाया और तुरकांणी उठाने का विचार किया। नर्मदा तक तो ये दोनों राजा बादशाह के साथ गए। यहाँ इन दोनों का विचार बदल गया। नर्मदा से वापिस लौटकर उदैपुर आए। महाराणा संग्रामसिंह ने बड़ा आदर-सत्कार किया। वहाँ से आउवे आए। वहाँ से जैतारण गए। वहाँ से दोनों राजा जोधपुर आए। महराब खाँ भी शामिल हो गया।

श्रावण वदि ७ को महाराजा ने ३०००० सेना से जोधपुर पर आक्रमण किया। उस समय महाराजा के साथ ये सरदार थे :—रणमलोत जोधसिह। करणोत दुर्गादास का बेटा तेजसिंह, अभैकरण, खींवकरण, देवकरण, दलेलसिह, जगरामसिंह। चाँपावत भगवानदास, हीरसिंह, उदैसिंह, विजैसिंह, अचलसिंह, सकतसिंह, मुकनसिंह, राजसिंह, किसनसिह, केसरीसिंह, हरीसिह, कुंभकर्ण। कूंपावत विजैसिंह, रामसिंह, केसरीसिंह, भीमसिंह, फतैसिंह, हरनाथसिंह। भाटी हरनाथसिह, भाण, अमरसिह, खानसिंह, रणछोड़दास, सूरजमल, जीवणसिंह, खेतसिंह, सूरसिह, लालसिंह, अखैसिह।

जैतावत फतैसिंह, और रूपसिह । जोधा भीमसिंह, चंद्रभाण, मोहनसिंह, जोगीदास, सकतसिंह, पृथ्वीसिंह । ऊदावत जगरामसिंह, रिदैराम, प्रतापसिंह, मानसिह, विजैसिंह, दलेलसिंह, जूंझारसिंह और हरनाथसिंह आदि । चौहान फतैसिंह, लालसिंह, अजबसिह इत्यादि सुभटों के साथ ३०००० सेना से महाराजा ने प्रयाण किया, किले को घेरा । सूबहदार महराब खाँ घबरा गया । उसने कहा कि आप बचावें तो बच सकता हूँ । उस समय दुर्गादास ने युद्ध को रोका और महराब खाँ को धर्मद्वार पहुँचाया अर्थात् शरण दिया । वह गढ़ छोड़कर चला गया । सवत् १७६५ की श्रावण * १३ रविवार को कन्या लग्न में जोधपुर लिया और जैसिंहजी को सूरसागर में आश्रय दिया ।

इति त्रयोविंश प्रकाश

जैसिंहजी ने महाराजा से अपनी जन्मभूमि के लिये कहा, तब महाराजा उनको साथ लेकर जैपुर की तरफ चले । मेड़ते मुकाम हुआ । वहाँ से महाराजा अजमेर गए । अजमेर को घेर लिया । वहाँ से पेशकसी लेकर साँभर गए । साँभर के थानेदार ने बादशाह से सहायता की प्रार्थना की । सहायतार्थ सात सूबहदार साँभर आए । इधर महाराजा अजीतसिंहजी सेना लिए पहुँचे । साँभर के थानेदार ने कोट का आश्रय लिया । उधर से सैयदों की फौज आई, इधर से महाराजा का फौज बढ़ी, जिसमें कछवाहे भी शामिल थे । शत्रु-सेना के साथ घमासान युद्ध हुआ । इस युद्ध में कूंपावत भीमसिंह मारा गया । उधर सैयद हुसेन आदि पंचहजारी छ:हजारी मारे गए । सात ही सूबहदार पराजित हुए । यह युद्ध दीपमालिका के दूसरे दिन प्रतिपदा (कार्तिक सुदि १) को हुआ । इस पराजय से घबराकर आँबेर का सूबहदार आँबेर छोड़कर चला गया और महाराजा मार्गशीर्ष मास में आँबेर गए । महाराजा जैसिंहजी को आँबेर की गद्दी बिठाकर जोधपुर आए । इस प्रकार साँभर लिया ।

इति चतुर्विंश प्रकाश

आलमशाह कामबख्श को मारकर दक्षिण से वापिस आया । उस समय वह साँभर पर महाराजा का अधिकार हुआ सुन मन में दुःखित हुआ । उस समय अजीतसिंहजी ने योग्य मंत्री चाहा और दीपावत भंडारी रघुनाथ को हुजदार व खेमसी को सं० १७६६ की भादों सुदि ६ को दीवान बनाया

---

* मूल ग्रंथ में शुक्ल या कृष्ण लिखना छूट गया है—“तिथ तेरस पख तरणि वार सुभकरण चंद्रवर”।

और नागौर पर चढ़ाई की। नागौर को घेर लिया। इंद्रसिंह पैरों पर आ पड़ा और दिल्ली गया। आलमशाह दिल्ली से रवाना हुआ। इधर महाराजा सेना लेकर रवाना हुए, उधर से आँबेर का राजा सेना लेकर आया। कोलिया में मुकाम हुआ। इधर से आलमशाह अजमेर आया और अजीतसिंहजी का बल देखकर पुत्र अजीम को बुलाया। उसकी सलाह से चेला नाहरखाँन को भेजा। वह कोल पंजा लिए आया। बादशाह का कोल पंजा दिखाया। उसे देख महाराजा अजीतसिंहजी और जैसिंहजी आषाढ़ वदि १ को अजमेर आए। बादशाह ने मारवाड़ सौंप दिया। महाराजा अजीतसिंहजी ने जैसिंहजी को ढूंढाड़ का राज्य दिलवाया। बादशाह ने महाराजा को जर, जवाहिरात, हाथी, घोड़े और तोड़ा दिया। महाराजा मारवाड़ का नौमोहरा लेकर पुष्कर आए; दान-पुण्य किया। पुष्कर से महाराजा ने जैसिंहजी को रवाना किया। श्रावण में महाराजा जोधपुर आए। दीपमालिका जोधपुर में करके हरिद्वार जाने के लिये वे सवार हुए।

हेमंत और शिशिर मेड़ते में ठहरे। उस समय खीची सिवा ने अर्जी की कि अभैसिंहजी आपके पुत्र अवतारी पुरुष हैं। गोड़ केसरीसिंह ने विवाह-दिन लिखकर भेजा। महाराजा ने गोड़ रानी के साथ विवाह किया और मारोठ पर अपना अधिकार कर लिया। तदनतर महाराजा कुरुक्षेत्र गए। वहाँ से बरफ के देश नाहन आदि में गए। वहाँ के राजाओं को सर किया और दंड लिया। शिशिर ऋतु में महाराजा उधर से हरिद्वार आए, वहाँ अनेक दान दिए। वहाँ से मारवाड़ आए। होली का त्यौहार जोधपुर में हुआ।

आलमशाह चैत्र में मर गया, तब उसके पुत्र सब युद्ध करने के तैयार होकर आए। यह खबर जोधपुर में आई। उस समय महाराजा ने भंडारी खीमसी के बादशाह की सेना में रख छोड़ा था। उसके साथ पंचोली गुलालचंद था। उन्होंने महाराजा के पत्र लिखकर भेजे कि दिल्ली का तख्त मौजुद्दीन ने ले लिया है। भंडारी खीमसी के बुलाकर उसने पूछा कि क्या तुम प्रसन्न हो। उसने स्वामि-भक्ति दिखाकर बादशाह के प्रसन्न किया। बादशाह ने महाराजा के गुजरात का सूबा दिया। महाराजा ने सं० १७६९ की वर्षा और शरद् ऋतु मारवाड़ में व्यतीत की। मगसर में गुजरात की भूमि देखने के महाराजा ने अपनी सेना भेजी। इसी अर्से में सैयदों के साथ लेकर फरुखसियर मौजुद्दीन पर चढ़कर आया। मौजुद्दीन के मारकर वह बादशाह बन गया। इसने जुल-

फिकारखाँ को माघ मास में मार डाला और सैयदों का बल बढ़ा। मोहकमसिंह सैयदों से मिला और उनकी हाजरी साधने लगा। यह खबर महाराजा के पास आई। व्यास दीपचंद ने मोहकमसिंह का सब वृत्तांत महाराजा से कहा। महाराजा ने भाटी नाहर और अमरा को बुलाया और इनको मोहकमसिंह को मारने को कहा। इन्होंने स्वीकार किया। इनके साथ महेचा करणसिंह, धवेचा नाथा और अमरसिंह, चांपावत भीम का पुत्र खेमसिंह, भाटी जगत्सिंह, डूंगरसिंह, इनके सिवा ६० सुभट और भी लिए गए। इन्होंने मोहकमसिंह को दिल्ली में भादों मास में मार लिया। बादशाह सुनकर क्रुद्ध हुआ।

इति पंचविंश प्रकाश

मोहकमसिंह को मारने से महाराजा प्रसन्न हुए। सैयद हसनअली खाँ इस बात से क्रुद्ध हो सेना लेकर मारवाड़ पर आया। वह सं० १७७० के वैशाख में अजमेर आया। महाराजा मुकाबला करने को ६०००० सेना लेकर रवाना हुए। जनाना और महाराजकुमार को सिवाने भेज दिया। महाराजा ने संधि करने के लिये मियाँ को बुलाया; परंतु प्रीति का बरताव नहीं हुआ; क्योंकि मिया कपट से भरा हुआ था। तब महाराजा वापिस जोधपुर चले आए, गढ़ का पूरा प्रबंध किया। किले का प्रबंध चांपावत जोगीदासोत भूपालसिंह के जिम्मे किया। दूसरा हरिसिंह खान का पुत्र, उगड़ो सबलसिंह का पुत्र, ऊदावत सुभराम जगराम का पुत्र, कूंपावत किसनदास, तेजसिंह मेघसिंहोत, ऊहड़ हरिसिंह, ईंदा भोजा, रामसिंह और देदो, जोधा हरिसिंह मानसिंहोत, दयालदास, खूमाणा सबलसिंह, राजसिंह और भगवानदास २००० सुभटों सहित। संधि का पैगाम सैयद के पास गया तब उसने कहा कि महाराजा बादशाह से मिलें तभी बादशाही सेना वापिस लौट सकती है। तब सरदार और मंत्री सब महाराजा की रक्षा के लिये उपाय सोचते हैं कि यवनों को हमारा विश्वास नहीं है। वहाँ भंडारी खीमसी बोला कि महाराजा के स्थान में महाराजकुमार बादशाह के पास जायँ तब तो यह चिंता मिट सकती है। क्योंकि इनका जन्म हुआ है तब से प्रताप बढ़ता ही चला जाता है और सब संताप मिट गया है।

यह सुनकर सब उमरावों ने कहा कि वाह वाह! यह सलाह बहुत नेक है। महाराजा ने भी इस सलाह को पसंद किया। उस समय बारहठ केसरीसिंह ने कहा कि पहले भी ऐसा हुआ है। दौलतखान सेखा के

सहायतार्थ आया था तब राव गांगाजी ने कुँवर मालदेव को बुलाकर सेनापति किया था। उसने सेखा को मारकर दौलतखान को लूट लिया था। कुँवर को जल्दी बुलाया जाय, इसमें देर न की जाय। यह सुन भंडारी खीमसी ने केहर बारहठ से हाथ मिलाया और हर्षित हुआ।

महाराजा ने कुँवर अभैसिंहजी को अपने पास बुलाया। वे तुरंत महाराजा के चरणों में आ उपस्थित हुए। महाराजा ने कुँवर से कहा कि तुम्हारे बिना यह संकट मिटने का नहीं है। उस समय महाराजा के मन में दुविधा लगी। महाराजकुमार सुकुमार बालक हैं और उधर शत्रु महाबलवान् है। परंतु कुँवर का प्रताप देखकर मन में प्रसन्न हैं। उस समय इंद्रभाण भाटी को बुलाया। वह भीम का पुत्र आकर हाजिर हुआ। महाराजकुमार हाथ जोड़कर सामने खड़े हुए। उस समय यह दृश्य ऐसा था कि मानों दशरथ के सामने रामचद्र खड़े हैं। महाराजकुमार प्रणाम करके सवार हुए। सैयद महाराजकुमार के आ जाने से शांत हो गया और मन में प्रसन्न हुआ और महाराजकुमार को लेकर वापिस लौट गया। महाराजकुमार के साथ ये थे—भीम का पुत्र भाटी इंद्रभांण जिसके साथ ४००० सेना थी, दूसरा भंडारी खीमसी, गुलालचंद कायस्थ। संवत् १७७० के आषाढ़ के अतिम समय में महाराजकुमार दिल्ली पहुँचे और बादशाह के दरबार में गए। बादशाह ने इनका आदर किया और गुजरात का सूबा दिया। गुजरात का सूबा लेकर महाराजकुमार अपने डेरे पर आए। मारवाड़ में इस बात की बड़ी खुशी हुई। अहमदाबाद के सूबा पर अधिकार करने के लिये महाराजा ने दानसिंह के पुत्र सकतसिंह आईदानोत को बुलाया और खेतल (खीमसी) का पुत्र विजैराव बुलाया गया। इनको गुजरात के सूबा पर भेजा। महाराजा जोधपुर में हैं, ये अहमदाबाद गए हैं। महाराजकुमार दिल्ली में हैं। आसोज में महाराजकुँवर को फिर मान देने के लिये बुलाया। जवाहिरात, हाथी, सिरपेच, नोबत, मोतियों की माला और पाँचहजारी मन्सब दिया। हसनअली खाँ और अबदुल्ला खाँ दोनों इनसे राजी हैं।

जेठ मास में महाराजकुमार बादशाह से बिदा होकर जोधपुर आए। महाराजा ने मोतियों से वधाया।

इति षड्विंश प्रकाश

संवत् १७७२ में महाराजा अजीतसिंहजी गुजरात के सूबा पर गए। महाराजकुँमार साथ थे। भादो मास में जालोर डेरा हुआ। नीबज

का सकतसिंह देवड़ा किसी को धारता नहीं था। वह महाराजा के पैरों पड़ा। उसने पेशकसी देना स्वीकृत किया। सीरोही से पालनपुर गए वहाँ पीरोज खाँ था। वह सामने आकर मिला। वहाँ से थिराध गए। वहाँ का राणा चौहान पंचाऊण था। वह भी पैरों में आ पड़ा। एक लाख रुपए और ५० घोड़े उससे दंड के लिए गए। वहाँ से कमोई गए। वहाँ का मालिक कोली खींवकरण था। उससे पेशकसी लेकर पाटण गए। रास्ते में जितने बाँके थे उनको सीधा करके फाल्गुन में शाहीबाग में जाकर डेरा किया। वहाँ भंडारी विजैराज और चांपावत सकतसिंह महाराजा के पास आए। गुजरात को अधीन करके महाराजा जेठ महीने में अहमदाबाद के कोट में दाखिल हुए। यहाँ से महाराजा ने भंडारी खीमसी के पुत्र थानसिंह, विजैराज और चांपावत सकतसिंह को राजपीपले पर भेजा।

इति सप्तविंश प्रकाश

महाराजा ने नागोर लेने के निमित्त इनको भेजा—जोधा भीमसिंह रणछोड़दासोत, ऊदावत अमरसिंह कुसलसिंहोत, चांपावत हरिसिंह, किसनसिंह जसवंतोत, भाटी भीम का पुत्र इंद्रभाण, हरिसिंह माधोसिंहोत, कूंपावत कान्हसिंह रामसिंहोत, करमसोत अजबसिंह, मुहता जीवणदास, माधोदास चंदोत कायस्थ, सोजत से भंडारी सारंगधर, मेडता से भंडारी पोमसिंह, इन्होंने जाकर नागोर को घेरा। इंद्रसिंह बड़ी सेना देखकर नागोर महाराज को देकर शरण आ गया। सं० १७७३ श्रावण सुदि ३ को इंद्रसिंह ने नागोर छोड़ा।

इति अष्टविंश प्रकाश

महाराजा ने नागोर पर अधिकार करके चांपावत और भाटियों को जैतावत अर्जुनसिंह पर जाने की आज्ञा की। भाटी खेतसी, जीवणदास, हरदास और चांपावत हरिसिंह किसनसिंह, केसरीसिंह, हरिसिंह के पुत्र सूजा और सहँसमल सांवलदास का पुत्र रासा, इनके जाते ही अर्जुनसिंह गढ़ छोड़कर भागा। चांपावत हरिसिंह इसके पीछे गया। पहाड़ों में जाते अर्जुनसिंह के पास वे पहुँचे। वहाँ भी यह पहाड़ को पार करके निकल गया, परंतु हरिसिंह इसकी पीठ पर लग गया। दोनों की मुठभेड़ हुई। एक घड़ी तलवार चली। इस लड़ाई में अर्जुनसिंह और दलथंभण दोनों मारे गए। शत्रु को मारकर भाटी और चांपावत लौट कर आए। महाराज-

कुमार अभैसिंहजी नागोर आए और इंद्रसिंहजी भाग कर कोट गए। महाराजा का विचार शत्रु को निर्मूल करने का हुआ तब इंद्रसिंह के पीछे इनको भेजा। जोधा दुरजणसाल साबलसिंहोत, उसका भाई फतैसिंह, मुहकमसिंह, उसका पुत्र सूरसिंह, महवेचा वैरीसिंह। दुर्जणसाल शत्रु की पीठ पर चला। इंद्रसिंह दिल्ली जाता था। उसका मुकाम कासली गाँव (ढूँढाड़) में हुआ। वहाँ दुर्जणसाल शत्रु के पास पहुँचा। पिछली रात्रि में दुर्जणसाल ने शत्रु पर आक्रमण किया। युद्ध हुआ। इस लड़ाई में सूरसिंह के हाथ इंद्रसिंह का पुत्र मोहणसिंह मारा गया। इंद्रसिंह भाग गया। महाराजा के सुभट विजय पाकर आए। हरिसिंह शत्रु को मारकर दक्षिण से आया। दुर्जणसाल पूर्व से जय पाकर आया। यह खबर गुजरात में महाराजा के पास पहुँची तब महाराजा ने दोनों को अहमदाबाद बुलाया।

इति एकोनत्रिंश प्रकाश

संवत् १७७३ में महाराजा सब शत्रुओं को विजय करके द्वारका दर्शन को चैत्र सुदि में रवाना हुए। मार्ग में हलवद आए। वहाँ का स्वामी झाला जसा मद-मुक्त किया गया। इस पर महाराजा ने भंडारी थानसी को भेजा था। उसने पुर को विध्वस्त करके थाना बिठा दिया। हलवद का स्वामी महाराजा के साथ हुआ। तदनंतर जामनगर को जा घेरा जिससे तमाइची जाम घबराया और हाथ जोड़कर सामने आ खड़ा हुआ। तीन लाख रुपए नक्द और २५ घोड़े भेंट किए। ज्येष्ठ मास में द्वारका पहुँचे। इस यात्रा में जनाना और महाराजकुमार भी साथ थे। इस यात्रा में महाराजा के साथ साठ हजार मनुष्य थे।

इति त्रिंश प्रकाश

सं० १७७३ (४) की श्रावण बदी में महाराजा जोधपुर आए। इसी वर्ष में सैयदों और मुगलों में परस्पर विरोध हुआ। सैयद हसनअली दक्षिण में और अबदुल्ला खाँ दरगाह में था। बादशाह भी इनसे नाराज हो गया। अबदुल्ला खाँ घबराया। उसने महाराजा से सब वृत्तांत कहा। महाराजा ने विचार किया कि इसने मुझको भाई कहा है। इसके और बादशाह के मनोराग है। इधर अबदुल्ला खाँ के पत्र आते हैं, उधर बादशाह के आज्ञापत्र आते हैं। तब महाराजा ने दिल्ली जाने का विचार किया। जोधपुर से डेरा राई के बाग हुआ। वहाँ देवड़ा नारायणदास की बेटी का डोला आया। महाराजा ने उस कन्या का पाणिग्रहण किया। वहाँ से

नागोर, नागोर से मेड़ते, वहाँ से पोकर आए। वहाँ बहुत दान-पुण्य किया। वहाँ से दिल्ली गए। दिल्ली से दस कोस पर अलावरदी सराय में डेरा किया। महाराजा के आने से सैयदों को बड़ी खुशी हुई और मुगलों के मुख मुरझा गए। सैयद ने अपने पुत्र को महाराजा के सामने स्वागतार्थ भेजा। बादशाह को वह बुरा मालूम हुआ। महाराजा एक मास तक उसी सराय में ठहरे। उधर बादशाह से जैपुर के राजा जैसिंहजी ने मेल किया। इधर सैयदों ने अजीतसिंह जी को अपने पक्ष में लिया। इस तरह दुराजा हो गया। उस अवसर पर बादशाह ने ईरानियों से सलाह करके इतकादखाँ को भादों सुदी ७ को महाराजा के पास भेजा। वह बादशाह का फरमान लेकर आया और उसके साथ जवाहिरात लाया। बादशाह के मन में घात करने की है और जाहिरा मित्रता दिखाता है। इतकाद खाँ ने महाराजा से कहा कि यदि आप हजरत से मेल रखेंगे तो आप सर्वोपरि हो जायँगे। तब महाराजा ने इतकाद खाँ से कहा कि सैयदो के खड्गबल से मौजुद्दीन मारा गया और जुलफिकार खाँ जैसे शत्रु हटाए गए हैं। इनको हितैषी समझना चाहिए। इतकाद खाँ ने महाराज से एकांत में इस प्रकार की वार्त्ता करके बादशाह से मेल के लिये कहा भी; परंतु बादशाह ने ध्यान नहीं दिया। बादशाह ने ईरानियों से सलाह करके खानदौरा को कोटे के राव भीम हाडा के साथ भेजा। भीम ने महाराजा को बादशाह से मिलने के लिये कहा। महाराजा जाने को तैयार हुए। उस समय महाराजा के साथ ये थे—

जेसलमेर का विसनसिंह, देरावर का स्वामी पदमसिंह, उदयपुर का फतेसिंह महाराणा राजसिंह का पुत्र, सीतामहू का राठोड़ मानसिंह, चंद्रावत राव गोपालदास, खांडेला का स्वामी उदयसिंह, मनहरपुर का स्वामी सकतसिंह, कछवाहा आना का पुत्र किसनसिंह। इनके साथ महाराजा बादशाह के दरबार में गए। बादशाह के मन में कुटिलता थी, परंतु जाहिरा प्रीति दिखाई। उस समय बादशाह ने इनको सबसे ऊपर का कुरब दिया।

आदिलखाँ हफ्तहजारी था, उससे भी ऊपर का कुरब दिया। एक करोड़ दाम इनायत किए। दो हजार घोड़े दोअस्पा किए गए। मुरातब में मस्त हाथी, पाँच रंग के वस्त्रों का खलीता, तलवार, खंजर, सिरपेच, कलंगी, मोतियों की दुलड़ी माला। इस प्रकार सम्मानित होकर महाराजा डेरे पर आए। इतने में मोतीबाग से अबदुल्ला खाँ के दूत आए। उन्होंने कहा कि अबदुल्ला खाँ आपसे मिलना चाहता है। महाराजा उसके बाग में गए।

अबदुल्ला सामने आया और अपने स्थान पर ले गया। वहाँ उसका समस्त कुटुंब महाराजा से मिला। महाराजा ने उन सब का मधुर वचनों से सत्कार किया। तब अबदुल्ला खाँ ने कहा कि ये सब आप ही के फरजंद हैं। लज्जा आपके हाथ है। पाँचहजारी मन्सबदार तक के सैयदों ने महाराजा को प्रणाम किया। अबदुल्ला खाँ ने अच्छे घोड़े, दो खासा हाथी, तोरा, सात दुशाले, सात ही प्रकार के जवाहिरात की रकमें, मोतियों की माला, सिरपेच, जड़ाऊ कलंगी, जड़ाऊ खंजर, ये महाराजा के नजर किए और बड़े प्रेम की बातें कीं। ये समाचार बादशाह और नवाबों ने सुने। फिर महाराजा अपने डेरे पर आए। ईरानी इस बात से जल मरे। बादशाह भी मन में घबराया। महाराजा बादशाह की कुछ परवा नहीं करते हैं।

महाराजा ने उस समय अपना एक डेरा खड़ा किया जिसके रूपे की चोमें हैं, दुहरे पर्दे हैं, जो पाँच तह के हैं। शिखर पर कलिंद्री शोभा दे रही है। हजारों फर्रियाँ लगी हैं। उस डेरे के अंदर महाराजा ने दरबार किया। कवींद्रो ने उस समय आपका विरुद पढ़ा। महाराजा ने सब उमरावों को द्विगुण द्रव्य दिया। जैसिंहजी आदि सब राजा हार मानकर लज्जित हुए। मुगलों के हृदय में अबदुल्ला एक शल्य हो गया। महाराजा और नवाब दोनों एक हो गए। तब बादशाह पौष सुदी ३ को महाराज के डेरे पर आया। अबदुल्ला खाँ ने सब इंतिजाम किया। एक लाख रुपयों की चौकी बनाई गई। हाथी, घोड़े, जवाहिरात बादशाह के नजर किए। फाल्गुन मास में महाराजा और अबदुल्ला खाँ बादशाह के दरबार में गए। महाराजा नवाब के साथ वापिस डेरे पर आए। उस समय उसका भाई हसनअली खाँ दक्षिण में था। अबदुल्ला खाँ ने उसे पत्र लिखकर भेजा कि बादशाह मुझे मारने के विचार में है। महाराजा अजीतसिंहजी मेरे शामिल हैं। यह पत्र पढ़कर उसने दूतो द्वारा पत्र भेजा और लिखा कि मैं आता हूँ। हसनअली खाँ दक्षिण से रवाना होकर २४वें दिन दिल्ली आया। दिल्ली में इस प्रकार का उत्पात खड़ा हुआ। बादशाह घबराया। दूसरे दिन महाराजा अजीतसिंहजी से हसनअली ने सलाह की और उसी दिन पैंड़ पैंड पर अपनी चौकियाँ रखकर बादशाह के दरबार में गया। महाराजा अजीतसिंहजी उसके साथ में थे। महाराजा को पूछ, बादशाह को पकड़कर कैद कर लिया और मार डाला और दूसरा बादशाह बना दिया, जिसका नाम रफीउद्दरजात था। बादशाह दूसरा हो गया तब जैसिंहजी वहाँ से चुपचाप निकल गए। अब राजा लोग महाराजा के द्वार पर आते हैं। बादशाहत

तीनों के हाथ में है। एक तो महाराजा अजीतसिहजी और दो सैयद भाई। दोनों सैयद भाई अजीतसिहजी के गुण गाते हैं और मोतियों से वधाते हैं। दूसरा बादशाह चार महीने में मर गया, तब तीसरा बादशाह बनाया गया। उसका नाम रफीउद्दौला था। ईरानी मुगलों ने आगरे के अंदर बखेड़ा किया। दूसरा बादशाह नेकुशाह नामक आगरे के तख्त पर बिठा दिया गया। यह सुनते ही हसनअली खाँ फौज लेकर आगरे की तरफ रवाना हुआ और दिल्ली में महाराजा रहे। अबदुल्ला खाँ और महाराजा दिल्ली में हैं। दिल्ली का भार इनकी भुजाओं पर है। बादशाह और हसनअली खाँ आगरे आए। बादशाह नेकुशाह को भादों में पकड़ कर कैद कर लिया और उसके पुत्र और भतीजों को पकड़कर दिल्ली ले गया। इसी अर्से में रफीउद्दौला भी मर गया। तब महाराजा अजीतसिंहजी ने अच्छा मुहूर्त्त देखकर तीसरे बादशाह मुहम्मदशाह को तख्त पर बिठाया।

इति एकत्रिंश प्रकाश

जैसिंहजी फर्रुखसियर के मारे जाने पर जैपुर चले आए थे, जिससे सैयद उस पर कुपित हुए, और हसनअली खाँ फौज लेकर जैपुर की तरफ चला। बादशाह फतेपुर सीकरी में आया। उस समय जैसिहजी के ६ उमराव महाराजा के शरण आए और बड़ी नम्रता और शिष्टाचारी की। उस समय महाराजा अजीतसिंहजी ने उसकी सहायता की। सैयद को ज्यों त्यों समझाकर वापिस लौटाया। जैसिंहजी घबरा रहे थे। उस समय महाराजा ने चांपावत हरनाथसिंह और भंडारी थानसी को भेजकर उनको संतोष दिलाया।

मुहम्मद शाह को तख्त पर बिठा, जैसिंहजी का आपदा से उद्धार कर महाराजा ने बादशाह से बिदा माँगी। अहमदाबाद और अजमेर का पट्टा लिखाकर महाराजा दिल्ली से रवाना हुए। जैसिंहजी आपकी सेवा में साथ रहे, दूसरे बूँदी के हाडा राव बुधसिंहजी हैं। आते समय मनोहरपुर में विवाह किया। मार्गशीर्ष मास में महाराजा बूँदी और जैपुर के राजाओं के साथ जोधपुर आए। सांगा राणा की चौकी पर मेड़तिया अभैसिंह था, जो सैयदों के लिये शल्य था, परंतु महाराजा की सेवा करता था। जैसिहजी सूरसागर में रहे। बुधसिंहजी और अभेसिंहजी भी जोधपुर में कई दिन रहे। वसंत ऋतु का आगमन हुआ। चैत्र मास में महाराजा की कन्या सूरजकँवरी जैसिंहजी को सं० १७७६ ज्येष्ठ वदि ९ को ब्याही गई थी। परंतु अपने

सामंत गण और मुत्सद्दियों से पहले सम्मति ली गई:—जैसे प्रधान चांपावत माधोसिंह, भंडारी खींवसी, दीवान भंडारी रुघनाथ, पुरोहित, व्यास और बारहठ, जेसलमेर के रावल अमरसिंहजी की भी संमति ली गई।

इति द्वात्रिंश प्रकाश

चातुर्मास आ गया है। आँबेर और बूँदीपति जोधपुर में महाराजा की सेवा करते हैं।

इस वर्ष में ईरानी मुगलों ने छल-कपट करके हसनअली खाँ को मार दिया। यह खबर जोधपुर में आई तब महाराजा ने जैसिंहजी को आंबेर भेज दिया और आप कार्तिक वदि १२ को अजमेर लेने को चले। मेड़ते में मुकाम किया, छः मास वहाँ ठहरे, सेना एकत्र की, ग्रीष्म ऋतु में जाकर अजमेर ले लिया। महाराजा ने अजमेर पर अधिकार किया, तब अजमेर के मदिरों में घंटा-झालर आदि बजने लगे। मसजिदों में मुल्लों का बाँग (अजाँ) देना बंद हो गया। देवों की पूजा होने लगी, पीरों की पूजा बंद हो गई। बादशाह को यह खबर लगी।

इति त्रयस्त्रिंश प्रकाश

संवत् १७७८ में बादशाह ने मुदफ्फर खाँ को अजमेर पर भेजा। वह वर्षा ऋतु में अजमेर आया। महाराजा ने उसके मुकाबले में महाराजकुमार अभैसिंहजी को तैयार किया। आठों मिसल के सरदार उनके साथ दिए। तीन हजार सेना लेकर अभैसिंहजी चले। महाराजकुमार के दक्षिण भाग में चाँपावत, कूंपावत और भाटी। अग्रभाग में जैतावत, जोधा, मेड़तिया, ऊदावत और करमसोत। एक अणी में चौहान, जैतमाल, बाला, ईंदा, ऊहड़, खूमाणा, पँवार, सोनिगरा, देवड़ा, खीची, धाधल, गोगादे देवराजोत, मंडला खेतसीयोत, पड़िहार, पातावत, भदावत, रूपावत, वैसे ही पुरोहित, व्यास, मंत्री और बारहट, चेला, सिंधी, अरब। राठोड़ों की जोर शोर की चढ़ाई सुनकर मुदफ्फर खाँ भाग कर आँबेर में जा घुसा। खुद मुदफ्फर खाँ तो वहाँ से दिल्ली को चला गया। सेना को छोड़ गया। तब जैसिंहजी घबराए। महाराजकुमार की विजय हुई सुनकर महाराजा हर्षित हुए। महाराजकुमार आँबेर से आगे बढ़ शाहजहाँपुर गए। उसे लूट वहाँ से नारनौल गए। उसे लूटकर महाराजकुमार त्रिवेणी स्नान करने गए।

इति चतुस्त्रिंश प्रकाश

बादशाह इस आक्रमण को सुनकर घबराया। महाराजकुमार के प्रताप को सुनकर पाटण के स्वामी तुंवर बगसीराम ने अपनी कन्या महाराजकुमार को ब्याहने की इच्छा की। परंतु महाराजकुमार ने प्रथम खाटू ब्याह किया, पश्चात् पाटण का विवाह हुआ। विवाह करके राजकुमार साँभर आया। मुसलमानों को मार भगाया। तदनंतर लदाणे के स्वामी नरूका केसरीसिंह की कन्या के साथ विवाह हुआ।

इति पंचत्रिंश प्रकाश

साँभर राठोड़ों ने ले लिया है यह सुनकर बादशाह ने चेला नाहरखान को भेजा। महाराजा भी सेना लेकर महाराजकुमार से मिलने के लिये साँभर आए। महाराजा ने राजकुमार को घर जाने की आज्ञा दी। वे अजमेर आए। माता चौहानजी से मिले। पुत्रवधुओं ने सासू के चरण स्पर्श किए। वहाँ से राजकुमार जोधपुर आए।

चेला नाहरखान महाराजा के पास साँभर गया। उसने महाराजा के सामने साभिमान वचन कहे और डेरे पर चला गया। महाराजा ने उसे मारने के लिये फौज भेज दी। नाहरखान के साथ चार हजार सेना थी। वह मारी गई और नाहरखान भी मारा गया।

इति षट्त्रिंश प्रकाश

साँभर के मुकाम पर ही चूड़ामणि का बेटा महाराजा के शरण आया। बादशाह ने उस समय अपने मंत्रियों से कहा कि साँभर गया, अजमेर गया, और नाहर खाँ मारा गया। अजीतसिंह को दंड देना चाहिए। यह विचार करके काबुली हैदरकुली खाँ और इरादतबंद खाँ को सेना देकर भेजा। जैपुर महाराजा जैसिंहजी नवाब के साथ हुए। जैसिंहजी और नवाब बादशाही सेना लेकर आए। महाराजा भी आठ कोस साँभर से सामने गए। उस समय सामंतों ने तो कहा कि कल प्रातःकाल होते ही युद्ध करेंगे, परंतु भंडारी खीमसी और पुरोहित राजसिंह ने अर्ज की कि शत्रु की सेना बहुत अधिक है। इस समय युद्ध करना ठीक नहीं है। लूट-मार करना भला है। महाराणा प्रताप ने जन्म भर लूट-मार की। राव मालदेवजी ने भी यही काम किया। इस समय आपको ऐसा ही करना चाहिए। लूट-मार करने में कोई अकीर्त्ति नहीं है, और हानि भी नहीं है। महाराजा जसवंतसिंहजी ने भी औरंगजेब के साथ क्या किया था, जिनसे कि औरंगजेब घबराता था। जैसा मौका हो वैसा करना चाहिए। दैवगति सदा

बलवती है। महाराजा ने उनकी अर्ज मान कर सामंतों से कहा कि इस समय लूट-मार करना ही ठीक है। फिर लूट-मार शुरू कर दी और अजमेर आए। अजमेर के किले को दृढ़ किया और उसमें अपने सामंतों को रख दिया और ऊदावत अमरसिंह को वहाँ का प्रधान नियत किया।

ऊदावत जगराम का पुत्र अमरसिंह, राजसिंह, मालमसिंह, जोधा बलदेवसिंह, अखैसिंह नाहरसिंहोत, चापावत जगन्नाथ दानसिंहोत, कूंपावत हरभाण, मेड़तिया रामसिंह कल्याणसिंहोत। भीम रुघनाथसिंहोत, रामसिंह ईसरदासोत, चाँदसिंह विजैसिंहोत, ईसरदास विजैसिंहोत। चहुवाण तेजसिंह चाँदसिंहोत, भाटी उदयभाण जैतसिंहोत, भंडारी विजयराज, मूहणोत साँगो, कायस्थ माधू।

संवत् १७८० के श्रावण में मुसलमान चढ़कर अजमेर पर आए, गढ़ को घेरा। तारागढ़ बारूद के धुएँ से छा गया। चार महीने हो गए परंतु गढ़ शत्रुओं के हाथ नहीं आया। जैसिंहजी शत्रुसेना के साथ थे। वे भी हार गए। तब इन्होंने बादशाह को संधि के लिये लिखा। उसने महाराजा के नाम फरमान भेजा। हैदरकुली ने मध्यस्थ होकर संधि की और राठौड़ों से कहा कि अब तुम अजमेर छोड़ दो, बादशाह से प्रीति मत तोड़ो। इस अवसर पर महाराजा ने अमरसिंह को बुला लिया।

इति सप्तत्रिंश प्रकाश

महाराजा ने बादशाह से मिलने का विचार किया, तब उमरावों ने कहा कि आप महाराजकुमार को बादशाह के पास भेजें। महाराजा ने उनका कथन स्वीकृत कर महाराजकुमार को दिल्ली बादशाह के पास भेजा :—

उनके साथ चाँपावत हरनाथसिंह तेजसीयोत, सकतसिंह दानसिंहोत, जोरावरसिंह भाणोत, मालदेव विजयसिंहोत, किसनसिंह जसवंतोत, सूजा और सहसमल हरसिंहोत, रासौ साँमलोत, भैरवसिंह नाहरसिंहोत, करणोत चैनकरण दुरगदासोत, सिवसिंह खींवकरणोत, किसनकरण तेजकरणोत, जादव भाटी—सूजो साहिबसिंहोत, प्रतापसिंह इंद्रभाणोत, सूरसिंह और डूंगरसिंह नाहरसिंहोत, नाथो अमरसिंहोत, भाँण रणछोड़दासोत, जीवणदास दुजनसलोत, हठीसिंह सूरावत, सामंतसिंह सूरावत, सुरतसिंह जैसावत, साहिबसिंह भाणोत, ऊदावत—अमरसिंह, जसवंतसिंह प्रतापसिंहोत, भाखरसिंह रिदैरामोत, सवाईसिंह मानसिंहोत, और इनके पुत्र, जोधा—प्रतापसिंह भीमोत, भीम, अर्जुनसिंह, राजसिंह किसनसिंहोत, अमरसिंह दलावत, दुरजणसाल सबलावत,

मेघराज, प्रतापसिंह किसनसिंहोत। मेड़तिया—पदमसिह कल्याणोत, अजो विजावत, दलो जूंझावत, जैतो सूरसिंहोत, पृथ्वीसिंह और मुकनसिंह रामसिंहोत। कूंपावत कान्हसिह, भाण फतैसिंहोत, देवीसिंह सामंतोत, सबलसिंह वाघोत, लूणो केसरीसिंहोत, चौहान—अजीतसिह चतुरसिंहोत, प्रतापसिंह चतुरसिंहोत, हरिसिंह लालसिंहोत, करमसोत—फतैसिंह, दलो, रायसिंह कलावत, सिवसिंह माधोसिंहोत, उदैसिह हरिसिंहोत, जैतावत अजबसिंह, हठीसिंह, उदयसिंह ये प्रतापसिंहोत, सावंतसिंह माधोसिंहोत, सकतसिंह वीठलदासोत, अचलसिंह, फतैसिंह, रुघनाथसिंह, रूपसिंहोत, महेचा—करनसिंह, धवेचा—अमरसिंह, ऊहड़—उदयसिंह, ईंदा-सामसिंह-जैतसिंहोत, माँगलिया—साहिबसिंह सुंदरदासोत, खूमाणा—हरिसिंह महेसोत, खीची—हरनाथसिंह, धाँधल-केहर उदयसिंहोत, पड़िहार—साँवलदास जोगीदासोत, लादुसिंह जामसिंहोत, उदयसिंह जुगराजोत, धावड़—गूजर ठाकुरसी, मयाराम का पुत्र रायाराँम, भंडारी रुघनाथ, मुहता गोपालदास कल्याणोत, मुहता गिरधरदास जीवराज का पुत्र, बारहठ—रुघनाथ, पुरोहित—सूरजमल अखावत, रावत जीवण दीपावत, सुरतो अणदावत।

मार्गशीर्ष सुदि ७ मंगलवार को महाराजकुमार रवाना हुए। दिल्ली गए, बादशाह से मिले, आँबेर राजा जयसिंहजी और कोटा रावजी से मिले।

इति अष्टत्रिंश प्रकाश

महाराजा अजीतसिंहजी देवलोक को सिधारे। संवत् १७८० आषाढ़ सुदि १३ मंगलवार को इनका अंतकाल हुआ। चंदन अगर इत्यादि के काठ की चिता रचाई गई। नाजर नथू ने रानियों से कहा कि राजा जाता है, तैयार होओ, सती होने को इतनी रानियाँ तैयार हुईं :—चौहान रानी राजमती, भटियाणी रानी लालाँ, ये दोनों पटरानियाँ थीं, राणी मिरघावती तुंवर, चावड़ी रानी, राणी भटियाणी देरावर, रानी सेखावत। पड़दायतें ५८ और नाजर नथू।

कवि कहता है कि इन रानियों ने स्नान करके शृंगार किया फिर नारायण का नामोच्चारण कर चलने की तैयारी की। महाराजा की वैकुंठी चली तब ये पालकियों में बैठकर चलीं। कवि, पुरोहित, मंत्री, प्रधान, सब ने चौहान रानी से अर्ज किया कि आपके अभैसिंहजी जैसे पुत्र हैं, आप दान-पुण्य करो और अपने शरीर की रक्षा करो। रानी ने कहा कि काल संहार करता है। यह शरीर रहना नहीं है, फिर थोड़े काल के लिये पति बिना जीना

धिक्कार है ऐसा कहकर उनको निरुत्तर किया। सतियों के आगे नकीब पुकारते हैं, बाजे बज रहे हैं, बड़ी धूमधाम से सवारी हुई। ब्राह्मण, गरीब, अनाथों को असंख्य द्रव्य लुटाया। हीरे, माणिक, मोती आदि लुटाए गए। चंदन, अगर आदि सुगंधित काष्ठ से चिता चुनी गई। चिता के मध्य में महाराजा बिठाए गए। छहों रानियों ने गंगाजल छिड़का, फिर परिक्रमा दे, खमा खमा करके वे चिता में बैठीं। ब्राह्मण राम ने आज्ञा दी तब चिता जलाई गई।

महाराजा अजीतसिंहजी का स्वर्गवास वर्ष ४५ तीन मास २० दिन से हुआ। महाराजा अभैसिंहजी को ये कुसमाचार मिले, तब जमना में जाकर स्नान किया और तिलांजलि दी। पिता के निमित्त अनेक दान दिए। लोकाचार में जैसिंहजी, कोटा रावजी और भदौद का राजा आए। जमना पर खानदौराँ आदि मीर मिलने आए। बादशाह ने सांत्वना की, सवाई जयसिंहजी ने अपनी कन्या का संबंध महाराजा अभैसिंहजी के साथ वहीं किया। मथुरा में संवत् १७८१ के भादों वदि ८ को विवाह हुआ। विवाह करके मथुरा से वृंदावन गए। वहाँ बाई सूरजकुँवरजी को मिलने के लिये बुलाया, महाराजा जयसिंहजी को भी बुलाया, विवाह करके वापिस दिल्ली गए।

इति एकोनचत्वारिंश प्रकाश

महाराजा बादशाह से मिल बिदा लेकर शिशिर ऋतु में जोधपुर आए। पाँचवें दिन दरबार किया। सबका सत्कार कर दयालदास सिकदार को अपनी दरी पर बैठने का कुरब दिया। गोरखदास बारहठ को गाँव और उठने का कुरब दिया। बारहठ रघुनाथ को सोने की कंठी, मोती-कड़ा, पाँच घोड़े और गाँव दिया। और इन दोनों को कविराज की पदवी दी। खिड़किया बखता, और दधवाडिया मुकन को शासन गाँव दिए। व्यास फतैराज और पुरोहित सूरजमल को उठने का कुरब दिया। प्रथम दरबार में उमराव, चारण, भाट, पुरोहित, सब को निवाजस हुई, उसका विवरण।

इति चत्वारिंश प्रकाश

अजीतसिंहजी ने अजमेर पर अधिकार किया तब बादशाह क्रुद्ध हुआ और अजमेर पर सेना देकर इरादतखाँ और बेगस को भेजा। जैसिंहजी सहायता में भेजे गए। ये इंद्रसिंह को लेकर नागोर आए। अजमेर छूटने के साथ नागोर भी दूसरों के हाथ में चला गया। होली के पश्चात् महाराजा अभैसिंहजी ने नागोर पर चढ़ाई की। जोधपुर से जैतारण डेरे हुए। बखतसिंहजी भी आपके साथ थे। जैतारण से मेड़ते डेरे हुए।

इंद्रसिंहजी को दिल्ली और कछवाहों की मदद थी, जिससे उन्होंने कठोर उत्तर दिया। महाराजा ने बड़े जोर-शोर से आक्रमण किया तब वह नागोर छोड़कर दिल्ली की तरफ चले गए। महाराजा नागोर पर अधिकार करके मेड़ते आए। अब संवत् १७८२ के वर्ष का आरंभ हुआ। महाराजा ने छोटे भाई बखतसिंहजी को बुलाया और उनको सवालख देश दिया और नागोर भेजा। महाराजा जैतारण आए। जोधपुर के थाने में चौहान प्रतापसिंह को रखा। उसी अर्से में बादशाह ने सेरविलंद को गुजरात के सूबा पर भेजा। वह रवाना होकर मारवाड़ के मार्ग आया। महाराजा शरद् ऋतु के अनंतर मगसर में जालोर गए। वहाँ के भोमिया ग्रासियो को दबाया। वे पैरों आ पड़े। बाला, देवड़ा, सींधल, बोड़ा, बालीसा, देवल, राड़दडा, सोढा, चौहान, आदि ने सेवा करना स्वीकार किया। जालोर से महाराजा सिवाना आए। वहाँ से सं० १७८३ के श्रावण में जोधपुर आए।

इति एकचत्वारिंश प्रकाश

शीतकाल में महाराजा दिल्ली को जाने के लिये रवाना हुए। जैतारण मुकाम हुआ। वहाँ से मेड़ते, मेड़ते से परबतसर। यहाँ महाराजा को शीतला का रोग हुआ। शीतला का रोग निवृत्त होने पर परबतसर से जैपुर गए। वहाँ ससुराल होने से कुछ दिन ठहरे। वहाँ से वसंत के अंत में दिल्ली गए। बादशाह से मिले। बादशाह ने बड़ा मान दिया। संवत् १७८४ के वर्ष का आरंभ हुआ। एक वर्ष के अनंतर महाराजा ने घर जाने की इजाजत माँगी। बादशाह ने इजाजत नहीं दी, क्योंकि गुजरात में सेरविलंद जोर पकड़ गया था। गुजरात उसने दबा लिया था। उसने कोली, मंडलीक, झाला, चूडासमा, वाघेल, गोहिलवाड़ के गोहिल आदि को विजय करके बराड़ का घाटा जा दबाया था। इसने मरहठों को अपनी तलवार के बल मर्यादा में रखा था। सं० १७८५ में मुहम्मदशाह मन में विचार करने लगा—उत्तर में जकरियाखान स्वतंत्र हो गया है, पूर्व में सादितखान, दक्षिण में निजामुल्मुल्क ने अपनी आज्ञा प्रवृत्त की। गुजरात में सेरविलंदखाँ ने अपना कपट प्रकट किया। एक दिन बादशाह ने दरबार किया। सत्तरखान और बहत्तर उमरावों को बुलाया। उस दरबार में कमरदीखाँ, खानदौरा, तुर्राबाज बक्स आदि बारह बारह हजारी मन्सबदार खड़े हैं। उनमें एक मारवाड़ के राजा भी हैं। बादशाह ने सबके सामने

कहा कि सेरविलंद पर जाने का बीड़ा लो। वहाँ ईरानी, तूरानी, जवन, दुरास, प्रलासी, मकरांणी, हरैबी, सिंधी, अरबी, गक्खड़, खुरासाणी, रहमान, अखूनी, सीदी, हबशी, राफसी, सुन्नी, मीरपाक, ऐराक, मकाई, तुरक, गुरजस, थासीताई, बलखी, सैयद, पठान, मुगल, खारी, बुखारी, काबली, खंधारी, आदि सब उपस्थित थे। परंतु किसी ने बीड़ा नहीं लिया, दरबार खतम हुआ। बादशाह ने अंदर जाकर कमरदीखाँ को बुलाया और उससे कहा कि कोई बीड़ा नहीं लेता है क्या किया जाय? तब कमरदीखाँ ने कहा कि इस समय तो हमें अजीतसिंह का पुत्र अभयसिंह दीखता है। उसके बिना सेरविलंद पर कौन जा सकता है? यह सुन बादशाह ने प्रातःकाल होते ही महाराजा अभयसिंहजी को बुलाया और कहा कि सेरविलंद हुक्म नहीं मानता है उस पर जाने के लिए मैं बीड़ा देता हूँ। तुम जाओ, बाकी दीवान कहेगा। यह कहकर बीड़ा दिया और उसके साथ गुजरात के सूबा का पट्टा दिया, और खिलअत, हाथी, घोड़े, नकद, तोरा, सात वस्त्र, मोतियों की माला, सिरपेच देकर महाराजा को आषाढ़ में बिदा किया। महाराजा मारवाड़ की तरफ चले। प्रथम जैपुर आए, श्रावण में वहीं ठहरे। वहाँ से मेड़ते भाद्रपद में आए। मार्गशीर्ष में महाराजा मेड़ते से जोधपुर आए। मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास के मध्य चार विवाह हुए। जेसलमेर के ईसरदास की बेटी, भाटी नाहरखांन की बेटी, रावल माधोसिंह की बेटी और जोरावरसिंह की बेटी। जनाना की निगरानी पर नाजर दौलतराम रखा गया। दिल्ली बादशाह के पास खीमसी के पुत्र अमरसिंह भंडारी को रखा, दूसरा मुहता जीवणदास, तीसरा पुरोहित वरधमान।

जोधपुर शहर भाटी साहिबखान के पुत्र सूजा की अधीनता में दिया गया। जोधपुर के किले में फतैसिंह माधोसिंहोत और दूसरा कूंपावत करन को रखा। तीसरा ऊहड़ हरिसिंह। धांधल विहारीदास गोयंदासोत, सिकदार दयालदास का पुत्र अमीदास, मुहता गिरधारीदास जीवणदास का पुत्र। फिर सेना सजकर महाराजा हाथी पर सवार हुए।

संवत् १७८६ चैत्र सुदि १० को प्रातःकाल महाराजा जोधपुर से चढ़े। भाद्राजण में मुकाम हुआ। वहाँ चांपावत नाथूसिंह के पुत्र अचलसिंह को बुलाया और उसके पुत्र बखतसिंह को बुलाकर दोनों को मालगढ़ बसाकर मालगढ़ में रखा।

इति द्वाचत्वारिंश प्रकाश

वहाँ से महाराजा जालोर गए। सिवाना में भंडारी वछराज और चौहान चतुरसिंह के पुत्र लालसिंह को रखा। बाला उदयसिंह को माँकलसर में रखा, जालोर में ग्रीष्म ऋतु व्यतीत की, उद्दंडों को दंड देकर सीधा किया। रहवाड़ा का स्वामी लाखा पादानत नहीं हुआ तब उस पर सेना भेजी। उसने पहाड़ को घेर लिया। पहली अणी में चाँपावत सूरजमल था। वह लड़ाई में मारा गया, परंतु देवड़ा भी पहाड़ छोड़कर भाग गए। महाराजा ने वहाँ अपना थाना रख दिया, जालोर में भंडारी मनरूप को रखा, महाराजा की सेना ने गाँव पोसालिया लूटा तब सीरोही के राव ने संधि के लिये दूत भेजा। महाराजा के पास चावड़ा मायाराम था। उसने वार्तालाप करके संधि की तजबीज की, जिसमें यह तय हुआ कि मानसिंह की बेटी महाराजा को ब्याही जाय। आठ घोड़े और चार हाथी महाराजा को दिए जायँ। यह विवाह भादों वदि ८ को हुआ। देवड़ा नारायणदास महाराजा के पास हाजिर हुआ। भादों वदि १० को महाराजकुमार रामसिंहजी का जन्म हुआ।

इति त्रयश्चत्वारिंश प्रकाश

सीरोही राव ने महाराजा के साथ कुछ अपनी सेना भेजी। महाराजा सीरोही से चलकर आगे बढ़े तब सेरविलंद को खबर लगी कि मारवाड़ का राजा आता है। उसने घमंड के मारे कहा कि मेरे सामने कौन ठहर सकता है? ईरानी असतखाँन जैसे तो मुझसे काँपते हैं। महाराजा ने यह सुनकर मूछ पर हाथ रखा। अब वे अहमदाबाद पहुँचे।

नवाब सेरविलंद खाँ ने कहा कि मुहम्मद शाह दिल्ली छोड़े तो मैं अहमदाबाद छोड़ूँ। महाराजा के कान पर यह बात आई। महाराजा ने अपने भाई वखतसिंहजी को और उमरावों को बुलाया। चांपा, कूंपा, करणोत, जैतावत, जादव, जोधा, ईंदा, ऊदावत, करमसोत, चौहान, बाला, जैतमाल, महवेचा, ऊहड़, पातावत, रूपावत, सोनगरा, देवड़ा, ईंदा, खीची, रिणमलोत, मंडला, भदावत, सोढा, पड़िहार, सींधल, भायल, खूमाण, सोभावत, गोड़, हाडा, कछवाहा, सीसोदिया, धाँधू, गहलोत, धाँधल इत्यादि सबको महाराजा ने उत्साहित किया।

भंडारी गिरधर, रतन, विजैराज, कायस्थ लाल और बालकिसन ये भी शामिल थे। महाराजा ने कहा कि मुगलों के सामने तो मैं रहूँगा, बाएँ हाथ भाई बखतसिंह, और दाहिने हाथ भंडारी विजैराज रहेगा।

मेड़तिया जालिमसिंह किसोरसिंहोत, सुरत्तसिंह, गजसिंह, राजसिंह, सालिमसिंह, जसवंतसिंह, सुभकरणसिंह, शिवसिंह, गुलाबसिंह, साँवतसिंह, दलसिंह, नाहरसिह, मोहणसिंह, छतरसाल, ये सब रघुनाथसिंहोत भंडारी विजैराज के साथ थे। गिरवर का पुत्र सिवसाह, अमरसिंह का पुत्र धीरसिंह ये दाहिनी अणी में।

सामने की अणी में जोधा, जिनमें मुख्य महाराजा खुद थे। इस अणी में चाँपावत सकतसिंह दानसिहोत, माधोसिंह भोपतोत, कुसलसिह नाथूसिंह का पुत्र, प्रेमसिंह पाली का ठाकुर, दलौ मुकनावत, किसन रुघावत, अनो पतावत, किसन जसावत, अमर धनावत, जैतो भाँणोत, पदम अनावत, रूपसिंह तेजसीयोत, मुहकम और रणछोड़ जगरामोत, केसरीसिंह जसावत, सहसमल बलुओत, सुरतसिह और गजसिंह हरिसिंहोत, रामो करणसिंहोत, रूपावत सुरतसिंह, जूंझारसिह वीरोत, अणत फतावत, हठीसिंह रणछोड़दासोत, बखतसिंह माधवसिहोत, हिंदुसिंह तेजसीयोत। गजसिंह हरिसिहोत, किशोरसिह गुमानसिंहोत, जोरो भाणोत, तेजसिह अचलसिहोत, फतैसिंह अमरसिंहोत, उमेदसिंह भावसिहोत, मालो विजावत, अमर लखावत, विसन दूदावत, चाँपो सकतावत, भैरव खानोत, हठीसिंह माडणोत, अगर गोविंददासोत, गजो विजावत, अजबो और पतो वेणावत। चाँपा शामिल रिणमलोत—नाहर नरहरोत, सुरतो अनाड़सिंहोत, बुधसिंह किरतावत (इति चाँपावत)।

करणोत—अभैकरण दुर्गादासोत, कुँवर सिंघो, जैतो मेहकावत, चैनो, देवो जसावत, सिवो खेमसुत, पतो महकांणी, किसनो तेजावत, सागो जगावत, मुकनो कचरावत, चुतरो फतावत, जगतो वखतावत, भीम, तेजसो, नाथ भोजराजोत, साहिबसिंह भीमोत।

कूंपावत—कान्ह रामोत, किरतो सूजावत, उदयभांण, सदो, पीथल ये ३ फतावत, रामसिंह सबलोत, हरिभांण भोपतोत, खेम फतावत, कान्ह, रुघनाथसिंह, छतरसिंह, सबलसिंह वाघोत, देवो सामंतोत, जवानसिह इसका भाई। जसो चुतरोत, जोरो पदमसिंहोत, चैलो और वखतो भावसिंहोत, वखतो ईंदावत, भीम हठीसिंहोत, नाथ और सांमल भोपतोत, हठीसिह सुरताणोत, चुतर करमचंदोत, रतन भीमोत, सांगो सूजावत, माधो जसावत, सुरताण सामंतोत, दुजणसाल पदमसिंहोत। बगसीराम बहादरोत, ईसरदास माधोदासोत।

जैतावत—रुघनाथसिंह रूपसिंहोत, फतो गिरवरदासोत। कलो रूपसिंहोत, भांण श्यामसिंहोत, शिवदान ईंदावत, गोपीनाथ पतावत। केसरीसिंह सांवलोत, उमेदसी अनावत, बखतो मानसिंहोत, नाहर जोरावरसिंहोत, छतो गोरधनोत, ऊदो भगवानोत, जैतावतों के शामिल भदावत।

जादव (भाटी)—रावल अमरावत, बखतो पीथलोत, विसनो पदमसिंहोत, मालो सुंदरावत, उमेदसी विजयपालोत, जैसा—सुरतांण पदमावत, सांगो साहिबोत, बीदल वैरसीयोत, पतो ईंदावत, गोविंद जैसिंहोत, सूरो खानोत, नाथो अमरावत, वाघो तेजावत, डूंगर खानोत, हरिराम सगतावत, रामसिंह खानोत, केसरीसिंह मानसिंहोत, वीरम सबलोत. जगो अजबाणी, रुघो जगावत, जीवण जेसावत, बखतो उगरावत, भाखर गिरवरोत।

हरदासोत—उदियाभांण, सूरजमल जगाणी कँवर, पदमोजगांणी, जीवणदास दुर्जणसालोत, सिवो खेतसीयोत, दलो राजसिंहोत, मुहकमसिंह जगत्सिंहोत, प्रेमसिंह और सबलसिंह अमराणी, बिजै माधोसिंहोत, सूजो नरावत, भाउ का पुत्र। अर्जुनोत—हठीसिंह सूरसिंहोत, सांवत सूरसिंहोत, देवसिंह, सोभो ये ४ सूरावत, लाखो हरिसिंहोत, नाहर और वरसिंह लखधीरोत, मुकनसिंह वीरोत, माधोसिंह गोपालदासोत, सिवसिंह कँवर, हरनाथ चतुरसिंहोत, अना और पृथ्वीसिंह सुजाणसिंहोत, गजसिंह अना का पुत्र, नाथो गोरधनोत, हदो गिरवरोत, जीवण हरनाथोत, हाथीराम भाई, बखतो जैता का पुत्र, जसो सिवदानोत। ये वरसिंहोतभाटी। बीकमपुर के :—अजबो जगमालोत, दलो माधोसिंहोत, सिरदारो कुसलावत।

जोधा—राजसिंह किसनसिंहोत, फतो जूंझारोत, नाहर करणोत, वाघबिहारीदासोत, जोगो करणोत, मोहण भाणोत, पतो उसका पुत्र। जोगावत—लालो जोगावत, देवीदान भाणोत, आसकरण चंद्रभांणोत, दलो पिथावत, दुजणसाल सबलावत, सूजो और अभो दुजणसाल के पुत्र। अभो नाथोत, हठीसिंह जोगांणी, गुमान हठीसिंह का पुत्र, साहिब जोधावत, भांण जैसिंहोत, जोरो फतमालोत, माधोसिंह किशोरसिंहोत, फतो सिवदानोत सकतो नाथोत, हरिसिंह फतावत, वाघ भांणोत, डूंगरसिंह अमरसिंहोत, आनो दीपसिंहोत, तेजो दीपावत, आईदान जसावत, पदम दलावत, किसोरसिंह फतेसिंहोत, सवाईसिंह माधोसिंहोत, अभैसिंह गुमानसिंहोत, माधवसिंह करणसिंहोत, नाहर देवीसिंहोत, बखतो जगत्सिंहोत। जोधों के आगे भाटी सकतसिंह भगवानोत।

ऊदावत—रिदैराम राजसिंहोत, जसवंत प्रतापसिंहोत, बखतो और मान सुभकरणोत, मानसिंह का पुत्र, मुकन सांमलोत, चंद गोविंदोत, अजबो रूपसिंहोत, बखतो दीपावत, पहाड़सिंह कुसलसिंहोत, जसवंत हरनाथोत, नाथो दीपावत, जोरो जगरामोत, जगत्‌सिंह रूपसिंहोत, हरिकिसन अखैसिंहोत, मयाराम अभैसिंहोत, सिवदान सबलावत, करण प्रतापसिंहोत, जोधो अजबावत, अनो हरनाथोत, सिंघ कान्हसिंहोत, नवलसिंह रुघनाथसिंहोत, गोवर्धन हदावत, पेमो जोगावत, अखौ बछराजोत, इंदो सबलावत, किसनो सूजावत ।

तूंवर—सिंघ, सुरतांण कुंवर, जैत किरतावत, जोरावरसिंह, पीथल, ईसरो ये कूंपावतों के शामिल ।

ऊदावतों के साथ—माधोसिंह अखावत, जोरावर सकतावत, गजसिंह तेजसिंहोत ।

मेड़तिया—सेरसिंह सिरदारोत, सूरजमल-भाई, भोमसिंह कुसलसिंहोत, सांमौ जैतावत, जूंझारसिंह अचलसिंहोत, कुंवर वनेसिंह, सुरतांण कुसलावत, चंद जसकरणोत, अभौ और अखौ भोजराजोत, पदमसिंह, रामसिंह कलावत, सहसमल और जगतसिंह (ये माधोदासोत मेड़तिया) । जैतो सूरसिंहोत, बखतो सूरसिंहोत, माधवसिंह मानसिंहोत, भगवतसिंह मुहकमसिंहोत, थानसिंह रासावत, हिम्मतसिंह जगमालोत, नवलसिंह माधवसिंहोत, जीवण हठीसिंहोत, गजसिंह मदनावत, वेणो गिरवरदासोत, रासो अनावत (ये विसनसिंहोत) । मुकनसिंह दलरामोत, वनेसिंह दलावत, पतौ पीथलोत, फकीरदास जोधसिंहोत (ये रायमलोत) । अभौ विजावत, नाथो अखावत, देवीसिंह जोधसिंहोत, हिंदुसिंह नवलसिंहोत, सुखो लालो (ये चाँदावत) । रुघनाथसिंहोतों में गोयंदासोत—धीरसिंह अमरसिंहोत सिवसिंह गिरधरोत ।। चौहान—हरिसिंह लालसिंहोत, मुहकम सिखरोत, पीथल कान्ह, अजबसिंह चुतरसिंहोत, नाथो अजबसिंहोत, सदो दलावत, तेजसी चंदोत, पुत्र अभौ, माधोसिंह मुरारदासोत, गिरवर हरनाथोत, दुजणसाल सबलावत, इंदो लालसिंहोत ।। करमसोत—चूंडो मुकनसिंहोत, केसरीसिंह भोपतोत, ऊदो हरनाथोत, सिभुसिंह, अजबो गोपीनाथोत, पदमो, खड्‌गसिंह, सिंघ जसावत, रासो कलावत, जैत लखावत, गोकल गिरधरोत, सिवो माधोदासोत, साँवतसिंह माधोसिंहोत, सकतसिंह बीठलोत ।। ऊहड़—सिवो प्रयागदासोत, गुमानसिं हठमालोत, सबलसिंह रूपसिंहोत, सुजांण भगवानदासोत, अनौ रुघावत खेम कलावत ।। सोनिगरा—सिवसिंह हरिसिंहोत, बाँकीदास रिणमलोत उदयराम सांमसिंहोत, जैतो उदयारामोत, कलो, बलिकरण विजावत, फतै और छतो हरिसिंहोत, हेमतसिंह दुजणसालोत, दीपो सत्रसालोत, लालसिंह

भांणोत, अमरो छतरसिंहोत ॥ जैतमाल—विसनो सकतावत, भीम अमरसिंहोत, श्यामसिंह ईसरोत, हरिराम माधोसिंहोत, कमो सांमदासोत ॥ धवेचा—(* डूंगरोत) पातावत—रणछोड़दास राजसिंहोत, मेघो किसनसिंहोत, सूरसिंह, पीथलोत, इंद्रभाण जोधसिंहोत, रूपसिंह, जसवंतसिंह, बदरो दुरगांणी ॥ गोगादे—जगत्सिंह रिदैरामोत, रूपसी सबलसिंहोत ॥ चाहड़दे—हरजी बलुओत ॥ खेतसीयोत—अखो धनावत, भोजो देवाउत । ईंदा—लखौ जैतसिंहोत, अनसाह भोजावत । जगत्सिंह जैतसिंहोत । देवीदास करनोत, कुसलौ रामोत । खूंमाणा—खान सुंदरदासोत, पुत्र दोलसिंह, हरी सबलसिंहोत, हरिसिंह महेशदासोत ॥ खीची—ऊदो गोकलदासोत, दयालदास गोपालदासोत, जोधो जोगावत, हरनाथ जोधावत, बखतसिंह करनावत, अजबो हरिसिंहोत, जैराम आसावत, केहरिसिंह फतावत, ओपसिंह सकतावत, नाहर सामावत, किसनो उदयसिंहोत, भगवानो और नरहर भाई मुकनसिंहोत, अखैसिंह केशवदासोत, पतो फतावत, अणदो बदरावत, जैतो किरतावत, विहारीदास खानोत, जीवण सबलोत, सिवसिंह रूपसिंहोत, दीपो दुरगावत, कुसलसिंह अणदावत, जगतो और छतौ जैतसीयोत ॥ पड़िहार—साँमल जोगावत, सोभो पुत्र, नाथो उदयसिंहोत लालसिंह का पुत्र, जगदेव भांणोत, लालसिंह रूपसिंहोत, जसवंत राजसिंहोत, पदम फतावत, अखैसिंह नाथोत ।

सोभावत—दलो रणछोड़दासोत, तुलसीदास प्रयागदासोत, लखो प्रयागदासोत, चंद गोरधनोत, नरहर नारायणोत, तेजसी केसावत । वानर राठोड़—रिणछोड़ रामोत ॥ धाँधू—सामंत सुंदरदासोत ॥ माँगलिया—रणछोड़दास और लखमण । अबदार चौहान-विहारीदास सिवसिंहोत, साँगो भाई, राम लखावत, लाडखाँ दलावत । गैहलोत—उदयराज और नथमल भाई, पुत्र विहारीदास, नाहरखाँन दानसिंहोत, किसन कुंभावत । धावड़—ठाकुरसी, मयाराम । गूजर—केहर साँमदासोत, सुंदर और खेतल वाघोत । व्यास—फतो दीपचंदोत, भाई उदयचंद, गाहड़मल जसावत । पुरोहित सिवड़ सूंजो और केहर अखैसिंहोत, रणछोड़दास पुत्र नंदलाल ॥ जैदेव द्रोणाचारज का पुत्र । भंडारी-गिरधर, रतन, दलो, धनरूप, विजैराज खेतसीयोत, साँमलदास लूणावत, अमरो देवाउत, (दीपावत) लिखीमीचंद, माईदास, देवीचंद । सिंघी अचल, जोधमल, जीवण । मुहता-गोकल सुंदरदासोत । गोपालदास

---

* कवि ने धवेचा राठोड़ों का उल्लेख कर दिया है, परंतु नाम लिखना रह गया ।

कल्याणदासोत, देवीसिंह, मेघसिंह, सदाराम रूपमलोत । मोदी पीथल, टीकम । पचोली-बालकिसन, लालो, हरिकिसनोत, दोलो, माधो, रूपो, चंद के पुत्र (बलुओत) ।

बखतसिंहजी बाईं अणी में सन्नद्ध होकर खड़े हैं । महाराजा मूछ पर हाथ रखकर युद्धार्थ तैयार हुए । चारण भाट गुणगान कर रहे हैं । रोहड़िया गोरखदान, दूसरा करणीदान केसरदान का पुत्र । रुघनाथ दधवाड़िया । मुकन । कविया करणीदान, खड़िया बखता, दधवाड़िया द्वारकादास, साँदू खेतसी, रोहड़ सुभदान, आसल धीर । इस समय महाराजा के पास एक लाख सेना थी । महाराजा ने युद्धारंभार्थ नक्कारा बजाने की आज्ञा की । उधर सेरबिलंद हाथी पर सवार हुआ है । उसके साथ तीन हजारी मन्सबदार कायमखाँन, दूसरा तरीन खाँ, तीसरा अलीवार और चौथा सैयद अबदलअली भी हाथी पर सवार हुआ । हिंदुओं में मानसिंह और महासिंह उसके शामिल हैं । सेरबिलंद खाँ के पास पचास हजार सेना है, युद्ध का आरंभ हुआ । प्रथम तोपों की लड़ाई हुई, फिर (चाँपावत) सकतसिंह, माधोसिंह और कुसलसिंह आगे बढ़े और करणोत अभैकरण शत्रु सेना पर चला । कूपावत जैतसिंह, कान्ह, भाँण, प्रतापसिंह भीमोत, राजसिंह किसनावत, मेड़तिया सेरसिंह सदावत, सूरजमल, अभैसिंह बिजावत, ऊदावत हदसाह (हिरदैराम) बलिरामोत, बखतसिंह सुभरामोत, जैतावत फतैसिंह नाथोत, करमसोत उदयसिंह और रूपसिंह । भाटी भाँण, बखतसिंह अमरसिंहोत, संग्रामसिंह, रुघनाथसिंह, नाहरखान के पुत्र, हठीसिंह सूरसिंहोत, चौहान अजबसिंह चतुरसिंहोत, लालसिंह का पुत्र हरिसिंह और लालसिंह का पुत्र मोहकमसिंह ये बढ़े । उनके साथ बखतसिंहजी के उमराव बढ़े और महाराजा आगे बढ़े, शत्रुओं को घेर लिया । इधर से महाराजा ने बाग उठाई । उधर से सेरबिलंद आगे बढ़ा और युद्ध ने जोर पकड़ा ।

महाराजा के आगे मेड़तिया रूपसिंह हाथियों का संहार कर रहा है, उसी प्रकार ऊदावत बड़ा पराक्रम दिखा रहे हैं और करमसोत भी पीछे नहीं हैं । चौहान भालों से शत्रुओं को विद्ध करते हैं । जैतमाल मालिक के आगे तलवार बजा रहे हैं । ऊहड़, धाँधल, पड़िहार, सोभावत, व्यास, पुरोहित, मंत्री सब युद्ध कर रहे हैं । इतने में बाईं अणी पर भाई बखतसिंहजी बढ़कर आए, जिधर यवनों की दाहिनी अनी थी । उस समय मेड़तिया जालमसिंह रुघनाथसिंहोत व गोयंदासोत मेड़तिया सिवसिंह और धीरसिंह भंडारी बिजैराज ने घोड़े उठाए । यह दाहिनी अनी में थे जिधर यवनों की बाईं अनी थी ।

बखतसिंहजी ने बाईं अणी में रहकर यवनों का संहार कर डाला। सेरविलंद को देखकर महाराजा अभैसिंहजी सामने चले। विजयराज भंडारी के साथ मेड़तिये सरदार थे। तरांनखाँ युद्ध की विकटता देख हाथी से उतर घोड़े पर सवार हुआ और महाराजा के ऊपर साँग चलाई। वह महाराजा के दक्षिण चरण में लगी। महाराजा ने अतिशय क्रुद्ध होकर तलवार का प्रहार किया, जिससे वह विदीर्ण होकर मर गया। उसके मरने पर तुर्कों ने हमला किया, परंतु वे मार हटाए गए। ६० पठान मारे गए। तत्पश्चात् बख्शी कायम खाँ बढ़कर आया। इसके साथ ५,००० सवार थे। इसके मुकाबले में चाँपावत खड़े हुए जिनके साथ करनोत, भाटी, कूंपावत, जैतावत, मेड़तिया, जोधा, करमसोत, चौहान, बाला, ऊहड़, जैतमाल, पातावत, रूपावत, खीची, धाँधल पड़िहार और सोभावत थे। उधर सेरविलद खाँ के मीर ऐसे हैं कि जो रण में पैर पीछा न दें। इस घमासान युद्ध मे अबदलअली मारा गया, वक्षी कायम खाँ, एवज खाँ, अहमदअली, उमाँ, जुमां और मुहम्मद ये सब मारे गए। और पिछला प्रहर दिन रहा, तब यवन सेना में खलबली मची। तब अलियार खाँ बढ़कर आगे आया। इसके आक्रमण से राठोड़ सेना कुछ पीछे पड़ी, तब बखतसिंहजी ने उसके सामने चलाया। अलियार खाँ भाग गया। सेरविलद खाँ भी इसके भागने से हताश होकर पीछे लौटा। उसके लौट जाने पर समस्त सेना वापिस लौटने लगी। महाराजा के विजय के बाजे बजे, पश्चात् रणक्षेत्र देखा गया तो उसमें ये सरदार रणभूमि में पड़े पाए।

पहली अनी में चांपावत करणसिंह पाली का स्वामी, किसन जसावत, कल्याणसिंह गोरधनोत। कूंपावत रामसिंह सबलावत, सुरतांण सामंतसिघोत, दुरजो पदमावत। जोधा हठमल, उसका पुत्र गुमानसिंह, नाहर खाँ। मेड़तिया भोमसिंह कुसलसिंहोत, गुलाबसिह हठमालोत, वैरीसाल भैरूंदासोत। करणोत-चतुरसिंह फतावत। चौहान दुजणसाल, अखैसिंह। भाटी केसरीसिंह मानसिंहोत। सोनिगरा दला हरिसिंहोत। खीची केसरीसिंह फतैसिंहोत, भगवानदास और नरहरदास मुकनदासोत। गूजर मयाराम सामसिंहोत। पुरोहित केसरीसिंह अखैसिंहोत। रणछोड़ जैदेवोत। राठोड़ १००० घायल हुए। मुसलमानों के ६००० मरे। बखतसिंहजी के साथ विजय करके महाराजा डेरे पर आए। सेरविलंद बारह हजारी मन्सबदार था। यह विजय संवत् १७८७ आश्विन सुदि १० विजयादशमी को हुई थी।

इति चतुश्चत्वारिंश प्रकाश

नवाब हारकर अपने डेरे पर गया। युद्ध में सेरविलंदखाँ के ३ बड़े आफिसर मारे गए—१ अलियारखाँ, २ तरीनखाँ, ३ अबदल सैयद।

इति पंचचत्वारिंश प्रकाश

सरविलंदखाँ ने फिर ५,००० सेना लेकर युद्ध किया; परंतु महाराजा के सामने भागना पड़ा। वखतसिंहजी की इच्छा फिर युद्ध करने की थी; उसी अवसर में अमरसिंह ऊदावत अहमदाबाद पहुँचा और महाराजा के चरणों में उपस्थित हुआ। उसके साथ उसके दो भाई थे :—जगरामोत उदयसिंह और अनाड़सिंह। रतनसिंह जगरामोत, रामसिंह सुभावत (सुभरामोत), तेजसिंह सुरतावत। पदमसिंह और सावंतसिंह अखावत। सामसिंह वखतावत, कान्ह जैमलोत, लखधीर पुहकरोत, जीवण दौलावत, देवो बालकिसन का पुत्र। हिंदूसिंह, पेमसिंह। अखैसिंह-जोधावत, विसन अनावत, किरतो माधवसिंहोत, जैतो बीकावत। सिवो भावसिंहोत। सुभो कूंपावत। हिमतो सामावत। जालमसिंह भवानीदासोत। सामंतसिंह जगत्‌सिंहोत। दुरगो दोलावत, हिंदुसिंह भाणोत। चंद अमरसिंहोत। सागा गोपालदासोत। मुकनसिंह और मदनसिंह खानोत। अमरसिंह के साथ इतने ऊदावत थे।

इनको देखते ही महाराजा अत्यंत प्रसन्न हुए। यह खबर सरविलंद खाँ के पास पहुँची। अमरसिंह के साथ भाटी भी थे। हरदासोत भाटी मानसिंह और खींवकरण देवाउत, बखतसिंह चतुरभुजोत, पाँणो (पातो) किसनावत, हिंदुसिंह गिरवरदासोत। करणोत चैनो दुर्गदासोत, देवीसिंह जसावत, साँगो जगावत। चाँपावत जोरावरसिंह भोणोत। देवीसिंह भीमोत, पहाड़सिंह वदरावत, मेड़तिया हेमतसिंह सिंघोत। कुसलसिंह कुशलावत के शामिल। चाँदावत सबलसिंह प्रतापसिंहोत। जोधा इंद्रसिंह जैतसीयोत। नरूका माधवसिंह नाहरसिंहोत, सूजो मोहकमसिंहोत। सोढ़ा जगा रघुनाथोत। अमरसिंह के साथ दो हजार सुभट थे। वह युद्ध के लिये त्वरा करने लगा। उस समय संधि के लिए सरविलंद खाँ को मंत्रियों ने बाध्य किया तब उसको महाराजा के साथ संधि कर वहाँ से निकलना पड़ा। सरविलंद खाँ ने संधि के लिये अमरसिंह के पास अपना दूत भेजा। संधि का प्रस्ताव मिलने पर अमरसिंह महाराजा के पास गया। उसने कहा कि आपकी विजय हो गई है। आपने यश उपार्जन कर लिया है और उधर मुगल आप से संधि

करना चाहता है और गुजरात का देश अर्पण करता है। मेरी राय में संधि करना भला है; क्योंकि युद्ध में हार जीत दैव के हाथ है, जीता हुआ हार जाता है और हारा हुआ जीत जाता है। अमरसिंह ने यथार्थ बात कही। महाराजा ने अपने हित की बात समझकर उसकी प्रार्थना को स्वीकृत किया और कहा कि तुम्हीं जाकर संधि की बात करो जिससे मुगल मदहीन होकर चला जाय और गुजरात अपने हाथ आ जाय।

इति षट्चत्वारिंश प्रकाश

पंडित रामकर्ण आसोपा।

राजरूपक

अथ ग्रंथ राजरूपक महाराजाजी श्री १०८ श्री श्री श्री अभयसिंघजी करमध्वज*-कुलदिवाकर राजराजेश्वर के शुभचिंतक रतनू वीरभांण कृत लिख्यते

दुहा

कमल-नयन मंगळकरन. श्री राधा घनस्यांम ।
कवि-भ्रम-भमर म सोच कर, सिमरि नांम अभिरांम ॥ १ ॥

१—कवि-भ्रम-भमर० = हे कवि के भ्रम-रूप भ्रमर ! चिंता मत कर, सुंदर नाम का स्मरण कर ।

---

* करमध्वज = (कर्मध्वज) अपने कर्म से पहचाना जानेवाला। 'कर्मध्वज' के स्थान में सर्वत्र 'कमधज' लिखा मिलता है। कविराजा मुरारिदान ने 'जसवंतजसोभूषण' ग्रंथ में 'कमधज' को 'कवंधज' शब्द का अपभ्रंश माना है। उन्होंने लिखा है कि कन्नौज के सुप्रसिद्ध महाराज जयचंद्र राठौड़ ने सिर कट जाने पर कबंध (सिर कटा धड़) की दशा में युद्ध किया था, इससे उनकी 'कबंध' संज्ञा हुई उनके वंशज 'कबंधज' कहलाए।

छंद छप्पय

मोर मुकट वनमाल, माल तुलसी नव मंजर।
रुचि कुंडल कल रतन, तिलक मंजुल पीतांबर॥
मणि कंकण अंगद, अमूल्य पद हाटक नूपर।
नवला सी नवरंग, संग भुज बंसी सुंदर॥
बप रूप ओप नव घन वरण, हरण पाप-त्रय-ताप-हरि।
गुण मांन दांन चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यान औ ध्यान करि ॥२॥

सुंदर भाल विसाल, अलक सम माल अनोपम।
हित प्रकास म्रदु हास, अरुण वारिज मुख ओपम॥
कृपा-धाम नव कंज, नयण अभिराम सनेही।
रुचि कपोल ग्रीवा त्रिरेख, छुबि वेस अछेही॥
निरखंत संत सनमुख निजर, करण पुनीत सु प्रीत कर।
गुण मान दान चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यांन औ ध्यान कर ॥३॥

२—मोर मुकट = मयूर-पिच्छ का मुकुट। वनमाल = वन के पुष्पों और पल्लवों की गुँथी हुई कंठ से चरण पर्यंत लंबायमान माला। रुचि = कांतिवाले। कल = मनोहर। मंजुल = सुंदर। मणि कंकण = मणि-जटित हाथ के आभूषण। अंगद = भुजबंध। हाटक = सुवर्ण के। नवला सी नव० = नव वयवाली स्त्री के समान नौ (९) रंगों वाली सुंदर वंशी भुज में है। बप रूप० = शरीर का रूप नवीन मेघ के समान शोभा देता है। पाप-त्रय-ताप = तीन प्रकार के पाप कायिक, वाचिक और मानसिक। तीन प्रकार के ताप-आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक। ग्रहि = ग्रहण करके।

३—अलक = अलकावली माला के समान अनुपम है। म्रदु हार = मंद स्मित। अरुण वारिज = मुख लाल कमल के सदृश है। नव कंज = नवीन कमल के से नेत्र हैं। सनेही = स्नेहयुक्त। अछेही = असीम।

श्रीहरि नाम सँभारि, काम अभिराम कियारथ।
अरथ धरम अपवग्ग, दियण जग च्यार पदारथ॥
लियां नाम सुख लाभ, व्याधि दुख आधि न व्यापै।
कुळ सज्जण थिर करै, अरी बडपण ऊथापै॥
नरनाथ जांण राखै निजर, बाण बखांणां विसतरै।
व्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा करै॥ ४॥

छंद बेअक्खरी

प्रथम सुमर इण विध परमेस्वर।
पूरण ब्रह्म प्रताप अपंपर॥

४—कियारथ=(कृतार्थ) सुंदर कार्य करके कृतकृत्य होता है। अथवा मनोहर भोग भोग करके कृतार्थ होता है। आगे धर्म, अर्थ, मोक्ष इन तीन पुरुषार्थों की गणना है जिससे यहाँ काम शब्द से काम पुरुषार्थ जाना जाता है, क्योंकि आगे कंठरव से चार पदार्थ ऐसा कहता है। अपवरग=(अपवर्ग) मोक्ष। व्याधि=शरीर-संबंधी रोग। आधि=मन-संबंधी दुःख, चिंता आदि। कुळ सजण=कुल में सज्जनता स्थिर करता है। अरी०=शत्रु के महत्त्व को उड़ा देता है। नरनाथ जांण=राजा लोग भी भगवद्भक्त जानकर उसकी ओर दृष्टि रखते हैं। बाण=वाणी को प्रशंसा करने के लिये विस्तृत करता है। व्रजराज लाज०=हे व्रज के स्वामी! (कृष्ण!) मेरे वर्ण (वर्णन) की वड़ी लज्जा आपको है।

५—अपंपर=अपार। संभरि=स्मरण करके। अग्रेसुर=देवों में अग्रणी। महादेव के वरदान से गणपति की पूजा सब देवों से पूर्व होती है। यहाँ यह शंका होती है कि जब गणपति की पूजा सबसे प्रथम होती है तो कवि ने कृष्ण और परब्रह्म की स्तुति प्रथम क्यों की! समाधान—कृष्ण साक्षात्

संभरि तिण पाछै अग्रेसुर।
दया क्रपा कर श्री लंबोदर ॥ ५ ॥
अविनासी अविकार असीमा।
सुभ गुण दियण अनुग्रह सीमा॥
पूरण पुरस पुराण प्रमेसर।
सुकवि सधार वार अग्रेस्वर ॥ ६ ॥
जिण गुण साखि प्रमा (भा) कवि जांणै।
प्रगट ब्रह्मवैवर्त पुरांणै॥
लख पुरांण निसचै कर लीजै।
जिण थी परै न कौ जांणीजै ॥ ७ ॥
सिव संभव सिव रूप सुरेसुर।
सिव गुण दियण प्रणांम कथे सुर॥

सच्चिदानंद परब्रह्म हैं। उनकी देवों में गणना नहीं है, इसलिये उनकी स्तुति प्रथम की गई है। कृष्ण सच्चिदानंद हैं, इस विषय में गोपालतापिनी उपनिषद् में यह श्रुति है—

"कृषिर्भूवाचकः शब्दो णश्च निर्वृतिवाचकः।
तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते॥"

६—असीमा = सीमा-रहित, अनंत। पुराणों में सृष्टि की उत्पत्ति पंच देवों से मानी है—विष्णु, महादेव, शक्ति, गणेश और सूर्य। गणेश भी किसी कल्प में सृष्टि के कर्ता हुए हैं इसलिये उनका वर्णन परब्रह्मरूप से किया गया है। "अविनासी अविकार असीमा"। सुकवि सधार = सुकवियों का आधार। वार = (पारावार) अथाह अथवा समय पर। अग्रेस्वर = (अग्रेश्वर) ईश्वरों में अग्रणी।

७—जिण गुण० = जिस (गणपति) के गुणों की साक्षी कवि की प्रतिभा है।

८—सिव संभव = शिवजी का पुत्र। सिव रूप = कल्याण रूप। सुरेसुर = (सुरेश्वर) देवों का ईश्वर। प्रणंम० = देवता प्रणाम करके जिसका वर्णन

अति लघु तिकौ सरण तक आवै।
पात्र गुणे सुज बडपण पावै॥८॥
अंगज गवर गिरा गुण उज्जळ।
गम कविता दायक पग मंजुळ॥
समरौ प्रथम गुणेस सगत्तो।
पाछै गुण गावां छत्रपत्तो॥९॥

दुहा

सारद ससि सारद बदन, सारद कविता सुद्ध।
अदसारद पारद उकति, करण विसारद बुद्ध॥१०॥

छप्पै छंद

गुण सागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण।
वेळ निजर विदूदुसां, असह कवि भ्रमर अकारण॥

करते हैं। अति लघु० = जो बहुत तुच्छ है वह भी लक्ष्य करके शरण आता है, वह गुणों का पात्र होकर महत्ता पाता है।

९—गवर = (गौरी) पार्वती का पुत्र (गणेश) और गिरा = सरस्वती। गम० = कविता में बुद्धि देनेवाले हैं। मंजुल = सुंदर। सगत्ती = (शक्ति) सरस्वती देवी। छत्रपत्ती = (छत्रपति) राजा।

१०—सरस्वती का वर्णन है। सारद० = शरद् ऋतु के चंद्रमा के समान शारदा (सरस्वती) का मुख है। सारद कविता० = जो निर्दूषण कविता का सार देनेवाला है। अदसारद = दुर्दशा को रद (नाश) करनेवाला है। पारद उकति = उक्ति में पार देनेवाला। करण = बुद्धि को निपुण करनेवाला।

११—गुण-सागर = गुण रूप समुद्र दुस्तर और अगाध है। अति बाध = इसमें बाधाएँ बहुत हैं। अपारण = इसका पार नहीं है। वेळ० = विद्वानों की दृष्टि वेला (तरंग) है; जैसे तरंगों से पार होना कठिन है वैसे विद्वानों की दृष्टि से बचना कठिन है। असह कवि० = नहीं सहनेवाले कवि निष्कारण भँवर हैं (जल चक्कर खाता है उसे भँवर कहते हैं)। कला तिमंगल० =

कळा तिमंगळ किता वरण गुण दोस विचारक।
पबे सिखर इम गुपत किता गुण औगुण कारक ॥
उर भरम छेह लैणौ अगम असकत उद्यम उक्ती।
कर भाव पार गुण सर करण साची नांम सरस्वती ॥११॥

इति मंगलाचरण ॥

अथ प्रार्थना

छंद चौपाई

गणपति गिरा निवासी सुरगण,
मंगळ करण अमंगळ मेटण।
करौ दया मौ सीस दयाकर
आपौ सार चार गुण अर कर ॥१२॥
गढ जोधांण अभौ गजपत्ती
गुण गाऊँ दूजौ मढ़पत्ती।
लंबोदर सारद हित लीजै
दास जांण मोहि वाणी दीजै ॥१३॥

कला (मात्रा) और वर्ण का गुण-दोष विचारनेवाले कितने ही तिमिंगिल (बड़ा मत्स्य) हैं। पबे सिखर० = गुण को अवगुण बतलानेवाले कितने ही पर्वत के गुप्त शिखर हैं (जिनकी टक्कर से नौका टूट जाने से समुद्र पार नहीं हो सकता)। उर भरम० = मेरे मन में भ्रम है कि इस समुद्र का पार पाना दुर्गम है, और मैं उक्ति रूप उद्यम से अशक्त हूँ। कर भाव पार० = मैं भावना करता हूँ कि गुण रूप सर (समुद्र) से पार करने के लिये सरस्वती सच्ची है।

१२—गिरा = सरस्वती, निवासी० = और उनके समीप निवास करनेवाले देवगण। आपौ = देओ। चार गुण = धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। अर = शीघ्रता करके।

१३—गढ़० = जोधपुर गढ़। अभौ० = अभयसिंह गढ़ का स्वामी। गजपत्ती = गजसिंह।

अथ वंशोत्पत्ति

छप्पै

आदि अगम अविकार, एक ईस्वर अविणासी।
पछै प्रकति तत पंच, विविध सुर ईखजवासी॥
ईंडौ कनक अछेह, देह धरि हरि तिण द्वारे।
रचे नाभ नीरज्ज, रज्ज अज प्रज गुण सारे॥
मन तेण थियौ मारीच मुनि, उणथी कासिप ऊपनौ।
धर नूर प्रकासी प्रीत धर सूर तेण घर संपनौ॥१४॥

छंद बेअक्खरी

सूरज तेज पुंज सरवेस्वर
जोति सरूप नेत्र जगदीस्वर।
जग रखवाळ जगत चौ जांमी
सुर नर इष्ट सृष्ट चौ सांमी॥१५॥

१४—प्रथम एक ईश्वर, पश्चात् प्रकृति, तत्पश्चात् पंचतत्त्व, और इंद्रियों के अधिष्ठाता सूर्यादि देवता। ईंडौ० = हिरण्यगर्भ (ब्रह्मांड)। उसके द्वारा नारायण ने देह धारण की। उसकी नाभि में नीरज्ज (नीरज) कमल उत्पन्न हुआ। फिर रजोगुण से ब्रह्मा ने प्रजा और समस्त गुण उत्पन्न किए। उस (ब्रह्मा) के मन से मरीचि मुनि हुए। उससे कश्यप उत्पन्न हुआ। उसके घर सूर्य उत्पन्न हुआ, जो पृथ्वी के रूप को प्रकाशित करता है और सबकी प्रीति को धारण करता है।

१५—नेत्र जगदीस्वर = जो (सूर्य) परमेश्वर का नेत्ररूप है। चौ = का। जांमी = स्वामी।

च्यारूं आकर जंतु चराचर
एक अनेक सहायक ईस्वर।
कोक कमळ साचां दुख कप्पण
दया धाम अभिराम दरस्सण ॥१६॥
जिण रवि सूं रत्ता जग जांणै
पौरस अंस वंस प्रगटांणै।
जग मैं वंस उग्र गुण जोई
क्रत रवि वंस समौ नह कोई ॥१७॥
धर सिहाय ध्रम न्याय धुरंधर
कवि दुज गो प्रज तपी दया कर।
दियण डंड नव खंड दुसीळां
च्यारूं वरण वहावण चीलां ॥१८॥
जो महि असह मेछ कुळ जागै
भवि भवि जिण कुळ सूं भय भागै।

१६—च्यारूं आकर = चार खान (स्वेदज, अंडज, उद्भिज्ज और जरायुज)। कोक = चकवा। सूर्योदय होने से चकवा पक्षी का वियोग निवृत्त होकर संयोग होता है, कमल प्रफुल्लित होता है और सच्चे मनुष्यों का दुःख कट जाता है। रात्रि में चोरों का भय रहता है। दरस्सण = दर्शन मनोहर है।

१७—पौरस० = जिसके पुरुषार्थ के अंश से अनेक वंश प्रकट हुए हैं, और जगत् में उग्र गुणवाला वही वंश (सूर्य वंश ही) है, कार्य करने में सूर्यवंश के समान कोई वंश नहीं है।

१८—पृथ्वी की सहायता करने, धर्म को धारण करने, और न्याय करने में धुरंधर (मुख्य) है। कवि० = ज्ञानी, दुस० = (द्विज) ब्राह्मण, गौ, प्रजा और तपस्वियों पर दया करनेवाला; दुष्ट स्वभाववालों को नवखंड में दंड देनेवाला, और चारों वर्णों को मार्ग में चलानेवाला सूर्य वंश है।

१९—यदि पृथ्वी पर असह्य म्लेच्छ वंश जागृत हो तो जन्म जन्म में जिस (सूर्य) वंश से भय नष्ट होता है, जो धर्म की लज्जा (मर्यादा) रखने में

ततपर धरम सरम प्रज तारण
सुरां सिहायक असुर सँघारण ॥१९॥
प्रथी करण थिर वेद पुरांणां
करम जिकां बळ हीण कुरांणां।
यौं जग मैं रवि वंस उजागर
प्रगटे भूप रूप परमेस्वर ॥२०॥
अंस कळा गुण कै अय आवै
कै पूरण अवतार कहावै।
इण कुळ मैं श्रीराम उजागर
सरबेस्वर पूरण परमेस्वर ॥२१॥
धर कवि कोट जनम श्रम धावै
इण कुळ गुण पर पार न पावै।
धर हरि अंस हुवे धरपत्ती
सस्त्रबंध सामर्थ सकत्ती ॥२२॥

परायण है, प्रजा को तिरानेवाला, देवों का सहायक और असुरों का संहार करनेवाला है।

२०—वेद और पुराणों को पृथ्वी में स्थिर करनेवाला है, जिनका कर्म और बल कुरान ने हीन कर दिया है। इस प्रकार सूर्यवंश जगत् में प्रसिद्ध है जिसमें परमेश्वर राजा रूप से प्रकट हुए।

२१—या तो अवतार अंश से अर्थात् अंशावतार होते हैं, या कला अवतार या गुणावतार होते हैं या पूर्ण अवतार होता है। श्रीमद्भागवत में अंश कलावतार कहकर पूर्णावतार के विषय में कहा है :—

"एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान्स्वयम्।"

इस वंश में श्री रामावतार प्रसिद्ध है, जो सबका ईश पूर्ण परमेश्वर है।

२२—कवि कोटि जन्म धारण करके परिश्रम के साथ धावन करै तब भी इस कुल के गुणों का पार नहीं पा सकता। (इस वंश में) विष्णु

दुहा

कुळ महिमा वरणौ कवण, बुध बळ पीढी बंध ।
सारां सूरजवंसियां, कुळ रखवाळ कमंध ॥२३॥
क्रत पूरण वधियौ कळू, रीत दवापुर राज ।
वंस हंस अवतंस विध, अभैसाह महाराज ॥२४॥
साहां ऊथप थप्पणौ, पह नरनाहां पत्त ।
राह दुहूँ हद रक्खणौ, अभैसाह छत्रपत्त ॥२५॥

छंद गाथा

सप्त पुरी सिरताजं,
क्रत अपवर्ग हूँत समकारण ।
उत्तम धाम अजोध्या
ओपै नाम ग्राम पुर ऊपर ॥२६॥

अंश धरकर राजा हुए. जो शस्त्र धारण करनेवाले और शक्तिवाले और समर्थ थे।

२३—समस्त सूर्यवंशियों के कुल की महिमा को वंशक्रम से बुद्धि-बल के द्वारा कौन वर्णन कर सकता है, जिन सूर्यवंशियों में कुल के रक्षक राठौर हैं।

२४—कलियुग का पूर्ण कृत्य बढ़ गया तथापि सूर्यवंश के भूषण महाराज अभैसिंह के राज्य में द्वापर युग की सी रीति रही।

२५—छत्रपति अभैसिंह बादशाहों को थापने और उथापनेवाला है; यह प्रभु राजाओं का पति है; दोनों मार्गों (इस लोक और परलोक) की मर्यादा को रखनेवाला है।

२६—अयोध्यापुरी सप्तपुरियों की मुकुट है; क्योंकि सप्तपुरियों में इसका नाम प्रथम गिना गया है:—

> "अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका ।
> पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायकाः ॥"

थिर ते राजसथानं
महि इक छत्र भोम सामथ ।
एके आंण अखंडं
खंडण मांण प्राण नव खंडं ॥२७॥

छंद बेअक्खरी

आदू ऊतन धाम अजोध्या
जगचख वंस अंस हरि जोध्या ।
पेखौ त्यां माहै धरपत्ती
पूरण अंस हुवौ छत्रपत्ती ॥२८॥
विविध धाम पुर ग्राम बसा है
मांली राजस पूरब माहै ।
सेतराम सकबंध नरेसर
इळ (ण) लग राजस पूरब अंतर ॥२९॥

जिसका कृत्य मोक्ष की तुलना करता है, वह उत्तम धाम है, जिसका नाम ग्राम और नगरों के ऊपर शोभा देता है ।

२७—वह सूर्यवंशियों का स्थिर राजस्थान है जो पृथ्वी में एक छत्रवाला, चक्रवर्ती की सामर्थ्यवाला, अखंड एक आज्ञा प्रवृत्त करनेवाला और नवों खंडों के मान और बल का खंडन करनेवाला है ।

२८—सूर्यवंशियों का आदिम स्थान अयोध्या है, जहाँ जगत् के चक्षु (सूर्य) वंश में हरि के अंश कई योधा हुए हैं । देखो उनमें श्रीरामचंद्र पूर्ण अंशवाले राजा हुए हैं ।

२९—इस ग्रंथकर्ता ने कन्नौज के राजा जयचंद आदि का इतिहास न लिखकर मारवाड़ में आनेवाले सीहाजी के पिता सेतराम से वर्णन किया है । सीहाजी मारवाड़ में आए थे, और उनके पूर्वज सेतराम पर्यंत पूर्व में थे । इसलिये कवि सीहाजी के पिता सेतराम का पूर्व में निवास करना कहता हुआ वर्णन करता है कि जहाँ नाना प्रकार के घरोंवाले नगर और ग्राम

सेतराम घर प्रगटे सीहौ
अरि डंडण नव खंड अबीहौ।
धर पिच्छम निरखण मन धारे
परसण हरि द्वारका पधारे ॥३०॥
रिधू गोत कनवज्ज रहायौ
आप चमू सँग दरसण आयौ।
प्रसन करे जिण सारँग पांणी
एकण छत्र धरा घर आंणी ॥३१॥
पिच्छम धर सीहै वर पांमे
नर वस किया अनमियां नांमे।
पढ़ै सुकवि जो वंस प्रवाड़ा
हुऐ वतीत आव दीहाड़ा ॥३२॥
धरपत सीहै लयी मुरद्धर
आसथांन तिळ पाट उजागर।

आबाद हैं उस पूर्व में सकबंधी सेतराम राजा ने राज्य के भोग भोगे। यहाँ तक इनका पूर्व की पृथ्वी में राज्य रहा।

३०—सेतराम के घर में सीहा प्रकट हुआ, जो नव ही खंडों में शत्रुओं को दंड देनेवाला और भय-रहित था। उसने पश्चिम दिशा को देखने का मन किया और हरि का चरण-स्पर्श करने को द्वारका गया।

३१—ऋद्धिवाले इसके गोत्र के कन्नौज में रहे और आप सेना के साथ दर्शन को आया। जिसने विष्णु को प्रसन्न किया और जो पृथ्वी को एक छत्र के नीचे ले आया।

३२—पश्चिम की भूमि में सीहा ने वरदान पाया, लोकों को वश में किया और अनम्र को नमाया। कवि यदि इनके वंश का चरित्र पढ़े तो आयु के सब दिन व्यतीत हो जावें।

३३—राजा सीहा ने मरु की धरा (मारवाड़) ली, उसके पट्ट पर

नरपत आसथांन अनड़ां नड़
धुर तिण पाट प्रकासे धूहड़ ॥३३॥
धूहड़ तणै तखत छत्रधारी
रायपाळ प्रतपै रोसारी।
जल्हराय तिण रै सुत जायौ
कमँध वंस अवतंस कहायौ ॥३४॥
जिण ग्रह कन्हराव न्रप जैसौ
तेरैहि साख उजागर तैसौ।
छत्रपत जेण तणै घर छाडौ
अटक जिकौ सुरतांणां आडौ ॥३५॥
छाडा घर तीडौ छितनायक
सबळां घायक प्रजा सहायक।

प्रसिद्ध आसथान हुआ। राजा आसथान अनम्रों को नमानेवाला था। उसके मुख्य पट्ट पर धूहड़ प्रकाशमान हुआ।

३४—धूहड़ के सिंहासन पर रोस करनेवाला रायपाल तपने लगा। उसके पुत्र जाल्हणसी जन्मा, जो राठौड़ वंश का भूषण कहलाया।

३५—उस घर में कान्हड़ जैसा राजा हुआ, जो राठौड़ों की तेरहों शाखाओं में प्रसिद्ध हुआ।

राठौड़ों की तेरह शाखाएँ ये हैं—१ पुणवीर, २ करहा, ३ कपालिया, ४ देल, ५ बुगलाणा, ६ जलखेड़िया, ७ जैवंत, ८ सूरमो, ९ सूर, १० वायहंस, ११ अभैपुरा, १२ कमधज, १३ वैरिया। आधी शाख दहिया क्षेत्रज।

कन्हराय के पुत्र छाड़ा हुआ, जो बादशाहों को अटक पर रोक करनेवाला था।

३६—राव छाड़ा के घर में राव तीड़ा हुआ। घायक = (घातक) मारने-

तींडै पाट सलख कुळ तारग
महि मरजाद खत्रि ध्रम मारग ॥३६॥
वीरम सलख तणौ वरदायी
पिड़ जीपण धर लियण परायी ।
चूंडौ वीरम घर चक्रवत्ती
धार सार मुँह लयी धरत्ती ॥३७॥
गह धरती रिणमल जिण गादी
विग्रहिया खागे समवादी ।
रिड़मल पाट जोध रिववंसी
इळ रखवाळ थयौ प्रम अंसी ॥३८॥
राव सुजै तिण पाट नरेहण
प्रजा सहायक रिण गुण पूरण ।
सूजै घर वाघौ सकबंधी
बांधे पाय किया ऊबंधी ॥३९॥

वाला । पाट = (पट्ट) सिंहासन पर राव सलखा हुआ । तारग = (तारक) तिरानेवाला । खत्रिध्रम = क्षत्रिय धर्म का मार्ग दिखानेवाला ।

३७—राव सलखा के पुत्र वीरम हुआ । पिड़ जीपण = युद्ध में जीतनेवाला । धर = (धरा) पृथ्वी, राव वीरम के घर में चक्रवर्ती चूँडा जन्मा, जिसने तलवार की धारा से भूमि ली ।

३८—उस (चूँड़ा) की गद्दी बैठकर रणमल ने भूमि ली । विग्रहिया० = बराबरी करनेवालों को खड्ग से युद्ध करके हटाया । इळ = (इला) पृथ्वी । प्रमअंसी = परमेश्वर का अंशावतार ।

३९—नरेहण = (नरेश) उस राजा (जोधाजी) का पट्टाधिकारी राव सूजा हुआ । रिण = (रण) युद्ध । राव सूजा के घर में वाघा हुआ । सकबंधी = साका अर्थात् युद्ध करनेवाला । ऊबंधी = (उद्बंधी) मर्यादा तोड़नेवालों को बाँधकर पैरों तले किया ।

विवनै वाघ धरे मूंछां बळ
बैठौ गादी गंग महाबळ।
माल गंग गादी राव मारू
सबला किया आपरै सारू ॥४०॥

जिण घर उदैसिंघ छत जेहौ
अवर न को जोड़ै धर एहौ।
गढ़पत सूरसाह तिण गादी
एको छत्र धरा आराधी ॥४१॥

बैठो सूर तखत गजबंधी
सीम जितै सांमंद्रां संधी।
सार कियावर उरै सकोयी
क्रत सम विक्रम भोज न कोयी ॥४२॥

४०—कंवर बाघा मूंछाबल धारण करते ही अर्थात् युवा अवस्था में ही विवनै = (विपन्न:) मर गया। वाघा पिता की विद्यमानता में मर गया था इसलिये वह गद्दी नहीं बैठा, उसका पुत्र राव गांगा गद्दी बैठा। राव गांगा के मालदेव गद्दी पर बैठे, और मारवाड़ के राव कहलाए। सारू = वशवर्ती।

४१—छत = (छत्र) छत्र के जैसा। अवर = (अपर) दूसरा। एहौ = एतादृश। राजा उदयसिंह की गद्दी राजा सूरसिंह बैठा। एकोछत्र = एकछत्र। आराधी = वश की।

४२—राजा सूरसिंह जी के सिंहासन पर गजसिंह बैठा, जिसने समुद्रों पर्यंत अपने राज्य की सीमा जोड़ दी। सार० = उसकी तलवार के उत्तम कृत्य ऐसे थे कि सब कोई उससे उरली ओर रहते थे। उसके कृत्यों के बराबर कोई नहीं था। न तो विक्रम था और न भोज।

गुण गजबंध तणा कब गावै
दुरस परायण त्री दरसावै।
आसधरे विद्याधर आया
कवि सुज हसतीबंध कहाया ॥४३॥
जिण गजसिंघ पाट सिव जांमळ
बैठौ जसवँतसिंघ महाबळ।
वारां न्रपत जिवैं वरतायौ
सुरां धरम तहां लगै सवायौ ॥ ४४ ॥

दुहा

साहां उर असुहावतां, राजावां रखवाळ।
जां जसराज प्रतप्पियौ, तां सुर पूज त्रकाळ ॥ ४५ ॥

४३—कवि लोग महाराजा गजसिंह के गुण गाते हैं, उनको शत्रुओं की स्त्रियाँ दुरुस्त करके दिखलाती हैं। तात्पर्य यह है कि शत्रु-स्त्रियाँ अपने पतियों को शिक्षा करती हैं कि कवि जो गजसिंहजी का गुणगान करते हैं, वह यथार्थ है इसलिये तुम उनसे वैरभाव मत रखो। विद्या धारण करनेवाले जो आशा करके आते हैं वे कवि हस्तिबंध कहलाते हैं। हस्तीबंध = जिसके घर हस्ती बँधा हो वह हस्तीबंध कहलाता है।

४४—जिस गजसिंह की गद्दी महाबली जसवंतसिंह बैठा। सिव जामल = कल्याणकारी जिसका जन्म है। जब तक इस राजा का समय रहा तब तक देवों का धर्म सवाया रहा।

४५—साहां = बादशाहों के। असुहावतां = अप्रिय। जां = जब तक। तां = तब तक। सुर० = देवों की पूजा तीनों काल (प्रातः, मध्याह्न और संध्या) में होती रही।

प्राग अजोध्या मधुपुरी, ओखामंडळ आद ।
देखे सुख रहिया दुचित, विचित्र न पूगा वाद ॥ ४६ ॥
मेछां राह निभाह कज, दिल्ली औरँग साह ।
ज्यूं सामंद्र प्रजाद सूं, यूं रहियौ खम दाह ॥ ४७ ॥
मेक सपत संमत्त मैं, पैंतीसै जसराज ।
गौ हरि धाम जिहान तज, हिंदुसथांन जिहाज ॥ ४८ ॥

छंद द्वैअक्खरी

सतरै सँमत पोस पैंत्रीसै ।
दसमी वार ब्रहस्पत दीसै ॥
सुर धर छत्र जसौ महाराजा ।
सुर पुर गयौ लियां ब्रद साजा ॥४९॥
जळबा काज नरूकी जादम ।
धुर ऊठी पतिवरत तणै ध्रम ॥

४६—प्रयाग, अयोध्या, मथुरा, द्वारका आदि में सुख देखकर मुसलमान मन में उदास रहे । (महाराज जसवंतसिंह के) वाद को पहुँच नहीं सके ।

४७—मुसलमानों के मार्ग को निबाहने के लिये दिल्ली में बादशाह औरंगजेब मन में दाह को सहन करके इस प्रकार रहा कि जैसे समुद्र मर्यादा से रहता है ।

४८—संवत् १७३५ में महाराजा जसवंतसिंह संसार को त्यागकर विष्णुलोक को गया, जो हिंदुस्तान को तिरानेवाला नौकारूप था ।

४९—ब्रद साजा = अच्छा बिरुद लिए ।

५०—रानी नरूकी और जादम पातिव्रत्य धर्म के लिए जलने के लिये प्रथम उठीं । नरूका कछवाहों की एक शाखा है । अलवर के राजा

रट हरि मुख पति ध्यान रहायौ।
मंजण कर सिणगार मँगायौ ॥५०॥
आवी द्वार तजे ग्रह अंगण।
जद सोचे राठौड़ जणज्जण॥
जांण सगर्भ अवर दुख जांणे।
अटकण सकत न कूँ मन आंणे ॥५१॥
तरसि पधार हुआ तय्यारी।
धीर तणौ आयौ व्रतधारी॥
रांणी जळती ऊदै राखी।
सुख नव कोट किया जग साखी ॥५२॥
सव्रत जळी झळहळ न्रप संगे।
अष्ट निकट गायण उछरंगे॥
अम्हह खबर जोधांणै आयी।
सती महाव्रत लियां सुणायी ॥५३॥

नरूका रट = मुख से हरि का नाम उच्चारण करके। मंजण = (मज्जन) स्नान। सिणगार = (शृंगार) भूषण वसन आदि।

५१—घर के आँगन को छोड़कर द्वार पर आईं, तब हरेक राठौड़ मन में सोचने लगा। उनको गर्भसहित जानकर दूसरा दुःख जाना; परंतु सती के भय से उनको रोकने की शक्ति कोई मन में न ला सका।

५२—तरसि = (तरसा) शीघ्र आकर जलने को तैयार हुईं, उस समय धीरसिंह का पुत्र उदयसिंह आया, और उसने रानियों को जलने से रोका, और नौकोट (मारवाड़) को सुखी किया। साखी = (साक्षी)।

५३—राजा के साथ उत्साह-पूर्वक आठ गायनें नियमसहित जाज्वल्यमान अग्नि में भस्म हुईं। सहन न होनेवाली खबर जोधपुर में आई। वह महाव्रतवासी सतियों को सुनाई गई।

रीझी सुण चंद्रावत रांणी ।
सांम साथ कज श्रवण सुहांणी ॥
गायण वीस परम जस गावै ।
दूणै हित ऊठी दरसावै ॥५४॥
ठीक मँडोवर परम ठिकांणै ।
जळी महारांणी जग जांणै ॥

दुहा

राणां राजां रावळां, उर पड़ सोच अथाह ।
जग वाकौ जसराज रौ, सुणियौ औरँगसाह ॥५५॥

छप्पय

हरि चाहै सुज हुऐ, लेख साहै मुर लोयो ।
भूमंडळ भोगवै, करम प्राचीन सकोयी ॥
अटक हीण असपती, पाप छित औसर पायौ ।
रद करबा रज्जियां, दुरद जेहौ मद आयौ ॥
झांकिया राज रांणा सकळ, अकळ पांण छिलियौ असुर ।
लहरीस जांण वारी लहै, गरज निवारी सीम गुर ॥५६॥

५४—चंद्रावत रानी उस खबर को सुनकर रीझी । उसे स्वामी के साथ जाने के कारण कानों को अच्छी लगी । मंडोवर स्थान में जाकर महाराणी जली । इस बात को जगत् जानता है ।

५५—अथाह = जिसका थाह नहीं, अपार । वाकौ = वार्ता ।

५६—मुर = तीन, तीनों लोक दैव-लिपि के अधीन हैं । सकोयी = सब । अटक० = बादशाह की रोक मिट गई । पाप को पृथ्वी पर अवसर मिल गया । राजाओं को रद्द करने के लिये बादशाह ऐसा मत्त हो गया कि जैसा हाथी मद में आ जाता है ।

जसवँत विना जिहांन, पान चळ जांणै पवनै ।
कना केतु साकंप, थया मन हिंद सथांने ।
घटे क्रिया बांभणां, मिटे झालर परसादां ।
ईत प्रजा ऊपजे, निरख दुर रीत निसादां ।।
इक राह चाह लागौ असुर, निर सहाय प्राकार नव ।
अवरंग प्रथी पर उलटियौ, दंग प्रगट्टयौ जांण दव ।।५७।।
राम धाम जसराज, गयौ हिंदू भ्रम आगळ ।
मास सपत अजमाल, मात ग्रभ वास महाबळ ।।

सांकिया = शंकित हुए । अकल पांण० = अचित्य बलवाला असुर (बादशाह) मर्यादा त्यागकर उझलने लगा । मानों समुद्र समय (प्रलय-समय) पाकर गर्जना करके बड़ी मर्यादा को छोड़ देता है ।

५७—जसवंतसिंह के बिना जगत् ऐसा चंचल हो गया है मानों पवन से पत्र । किवा ध्वजा काँपती है, वैसे हिंदुस्तान का मन चंचल हुआ । बांभणां = ब्राह्मणों की । परसादा = (प्रासादों) मंदिरों में झालर बजनी बंद हो गई । प्रजा में ईति उत्पन्न हुई । ईति सात हैं—

"अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाः शलभाः शुकाः ।
स्वचक्रं परचक्रं च सप्तैता ईतयः स्मृताः ।।"

भा०—अतिवृष्टि, वृष्टि न होना, चूहे, टिड्डी, सुग्गा, अपनी सेना और शत्रु की सेना ये सात ईति हैं ।

निसादां = भीलों, यहाँ मुसलमानों से तात्पर्य है । असुर (बादशाह) सब एक धर्म करना चाहने लगा; क्योंकि नवकोट (मारवाड़) असहाय हो गया था । औरंग पृथ्वी पर क्या उलटा ? मानों दवानल के अग्निकण प्रकट हुए ।

५८—हिंदूधर्म की अर्गला-रूप जसवंतसिंह हरि के घर (वैकुंठ) को गया । उस समय अजीतसिंह माता के गर्भ में सात महीने का था । दश

पूरण दस प्रामियां, जनम होसी जोधाहर।
बधे बंस विसवास, आस ते ज्यास मुरद्धर॥
तौ पण प्रताप मेछां तणौ, अतस दाप बाधे अकस।
राव रांण कांण लेखै न रज, एक पांण थंभै अरस॥५८॥

इति श्री महाराजाजी श्री अभैसिंघजी जस राजरूपक मैं विक्रमी संवत् १७३५ मैं पातसाहजी अजमेर आया प्रथम प्रकास॥१॥

---

(१०) महीने पूर्ण होने पर जोधा के वंशज का जन्म होगा, और वंशवृद्धि होगी, इस विश्वास से मारवाड़ को आशा है और धैर्य है। अतस = अतिशयित, अत्यंत। दाप = (दर्प) घमंड। अकस = ईर्ष्या, आँट। राव और राणा का लिहाज रज के बराबर भी नहीं गिनता है। एक हाथ से आकाश को थाम रखा है।

इति श्री राजरूपकटीकायां प्रथमः प्रकाशः॥ १॥

छप्पय

हुए हिंदु बळ हीण, धरा पण खीण सुरां ध्रम ।
मिटे वेद मरजाद, भेद गुण आद पड़े भ्रम ॥
ठाम ठाम पुर ग्राम. काम हरि धाम अकाजां ।
पंडित मंदा पड़े, करै जिंदा आवाजां ॥
जग लोक वांण सीखै जवन. पढै ब्रहम मुख पारसी ।
हित देव सेव आघा हुआ, काई लग्गां आर सी ॥ १ ॥

आद छत्र आंबेर, दास कर जेर सदावां ।
राजावां उमराव. किया राजा उमरावां ॥

१—हिंदू निर्बल हुए, पृथ्वी पर देवताओं का धर्म (पूजा) क्षीण हो गया । वेद की मर्यादा लुप्त हो गई । भेद (मतमतांतर) होने से गुण आदि में भ्रम पड़ गया । नगर और ग्रामों में ठौर ठौर हरि के मंदिरों के कार्य में अकृत्य होने लगा । जिंदा = मुल्लाँ । जगत् में सब लोग मुसलमानी भाषा सीखने लगे । ब्राह्मण स्वयं मुख से पारसी भाषा पढ़ने लगे और हितकारी देवसेवा से अलग हो गए । और कोई देवसेवा लगी हुई है तो वह उनको आर के जैसी लगती है । बैलों को हाँकने की छोटी लकड़ी में एक ओर सूई की तरह तीखा कीला लगा रहता है, उसे आर कहते हैं । बैल नहीं चलता है तब वह आर बैल के चुभाई जाती है । वह उसको दुःख देती है, वैसे ब्राह्मणों को देवसेवा दुःखद दीखने लगी ।

२—आदि में आंबेर के छत्र अर्थात् राजा को दाव के साथ दास बनाकर जेर किया । राजा को उमराव और उमराव को राजा बना दिया । यवन

जवन जोस वरजोर, हेक सम तोर हजारां ।
हीण तवै हिंदवां, एक लेखवै अपारां ॥
अजमेर कूच कर आवियौ, आंण फेर धर ऊपरा ।
अवरंग अंग छिबतै उरस, हटे मग्ग हिँदवांणरा ॥२॥

कुळ हाडां कूरमां, किया विण आडा कारण ।
ज्यां आगै मृगराज, धरै गजराज न धारण ॥
मुरझ थांन मेवाड़, रांण राजांन सरीखा ।
महण देख ऊबंध, करै कुण बंध परीखा ॥
तद वार अंस पुरसां तणी, आय वणी जग ऊपरा ।
महाराज तणै छळ मारवां, धारी लाज मुरद्धरा ॥ ३ ॥

जोश के मारे जबर्दस्ती करते हैं, मुसलमान एक है, परंतु उसका तौर हजारों के बराबर है । हिंदुओं को हीन (काफिर) कहता है, और हिंदुओं की संख्या असंख्य होने पर भी वह उनको एक के बराबर समझता है । औरंगजेब कूच करके अजमेर आया, पृथ्वी पर अपनी आज्ञा प्रवृत्त की । उस समय औरंगजेब का शरीर मानों आकाश को जा लगा था; और हिंदुओं के धर्म के मार्ग सब रुक गए थे ।

३—हाड़ों (चहुवाणों की एक शाखा है; जो बूँदी और कोटे के राजा हैं) और कछवाहों को साधारण और निकम्मा कर दिया; जैसे सिंह के आगे हाथी धैर्य धारण नहीं कर सकता । मेवाड़ का स्थान मुरझा गया । राणा और राजा समान हो गए । मर्यादा-रहित समुद्र को देखकर उसको बाँधने का विचार कौन कर सकता है ? उस समय अंश अर्थात् बलवाले पुरुषों की जगत् के ऊपर आ बनी, अर्थात् बलशाली पुरुषों से जगत् दुःखित हो गया । परंतु मारवाड़ के वीरों नेम हाराज (अजीतसिंह जी) के वास्ते युद्ध करके मारवाड़ की लज्जा रखी ।

सुण वाकौ पतसाह, आस मंडी उर अंतर।
मूनदीन फिर मीर, पीर परसिया अजैपुर॥
जद रांणै राजान, पूत जैसिंघ पठाये।
कुँवर अनैं चहुवांण, पांण झळ लग्गा पाये॥
दिस कमँधां पैसौर, ज्यास मौकळे दिलासा।
आवौ मूझ हजूर, सूर साखेत सज्यासा॥
जोधपुर विभौ जोवाड़ियौ, मेल बहादर खान नूं।
हरि लखै अचंभा साह रा, दै थांभा असमांन नूं॥४॥

छंद बेअक्खरी

वह दग्गै सूं खांन बहादर।
आयौ गढ़ जोधांणै ऊपर।

४—इधर का वृत्तांत सुनकर बादशाह ने अपने मन में आशा की और उसी से अजमेर आकर पीर मूनदीन की फिर यात्रा की। (अजमेर में जिस पर खाजा जी की मसजिद बनी है उसका नाम मय्यूदीन था।) उस समय बादशाह के पास राणा और राजाओं ने अपने कवरों को भेजा। जैसिंघ=जयपुर के राजा का नाम है। और चौहानों के कंवर हाथों से पकड़कर बादशाह के पैरों लगे। बादशाह ने पिशावर की तरफ के राठौड़ों को दिलासा भेजकर धैर्य बँधवाया, और कहलाया कि जो खांपधारी हैं वे विश्वास रखकर मेरे दरबार में आवें। फिर बहादुरखान को भेजकर जोधपुर के वैभव का पता लगाया। विष्णु भगवान् बादशाह के आश्चर्यकारी कृत्यों को देखते हैं तो ऐसा समझते हैं कि बादशाह आकाश के खंभे लगा रहा है।

५—दग्गै सूं=धोखा विचारकर। पंजौ=बादशाही फरमान में मुहरें लगाई जाती थीं, परंतु खास फरमान में मुहरों के साथ पंजा भी हुआ करता था। बहादुरखान ने फरमान को खोलकर पंजा दिखलाया और उसमें

खोले पंजौ कोल दिखायौ।
भव नह मिटै तुमारौ भायौ ॥५॥
हाथी तुरँग सबै ले हालौ।
साह हिजूर सताबी चालौ॥
यूँ कह कूच कियौ जद आसुर।
साथ लिया राजा रा सिंधुर ॥६॥
भाटी रुघपत साथ भयंकर।
सँग कायथ केहर मत सद्धर॥
पातसाह अजमेर परस्से।
कूच कियौ तड़भड़ भड़ कस्से ॥७॥
इंद्रसिंघ दक्खण थी आयौ।
साथ लियौ कर तोल सवायौ॥
रांण सुतण विरदे समराथे।
संग थयौ पहुँचावण साथे ॥८॥

जो इकरार लिखा हुआ था, वह भी दिखलाया। बहादुरखान ने राठौड़ों से कहा कि तुम जो चाहते हो कभी नहीं मिटेगा, अवश्य होगा।

६—सताबी = जल्दी। आसुर = बहादुरखान। सिंधुर = हाथी।

७—भाटी रघुनाथसिंह और कायस्थ केसरीसिंह साथ थे। मत सद्धर = दृढ़ बुद्धिवाला। परस्से = स्पर्श करके, यात्रा करके। तड़भड़ = बहुत जल्दी। भड़ कस्से = भटों को तैयार करके।

८—इंद्रसिंह = राव मालदेव के पौत्र रायसिंह का पुत्र। कर तोल सवायो = अपने से सवाया समझकर। राणा का पुत्र, जिसका समर्थ ऐसा विरुद है। उस समय महाराणा राजसिंह थे; और उनके पुत्र जयसिंह थे। कंवर जयसिंह का बादशाह के साथ पहुँचाने को जाना पाया जाता है।

दिल्ली गयौ कूच मन दीधौ।
किण ही ठौड़ मुकांम न कीधौ॥
राव इंद्रसिँघ घण छळ राखे।
दिल्लीपत चाहै त्यां दाखै॥९॥

दुहा

पहला दळ पेशोर थी, खड़ आया लाहौर।
जनम हुवौ अगजीत रौ, सुप्रसन संकर गौर॥१०॥
पैंत्रीसै रा चैत वद, चउथ अनै बुधवार।
पुत्र हुवौ जसराज रै, भांजण दुख संसार॥११॥
मुरधर थया वधावणा, हरखे तेरह साख।
ज्यूं वनपाळै पीड़ियां, सिर आयौ वैसाख॥१२॥

९—बादशाह सीधा दिल्ली गया, कहीं मुकाम नहीं किया। बादशाह ने इंद्रसिंह को बड़े छल के लिये रखा, और बादशाह इंद्रसिंह ज्यों चाहता है त्यों कहता है।

१०—बादशाह का वृत्तांत कहकर अब पिशावरवाले राठौड़ों का वृत्तांत कहते हैं। अगजीत = अजीतसिंह। संकर गौर = महादेव और पार्वती के प्रसन्न होने से अजीतसिंह का जन्म हुआ।

११—भांजण० = संसार का दु:ख दूर करने के लिये सवत् १७३५ चैत्र वदि चतुर्थी बुधवार के दिन जसवंतसिंह के पुत्र हुआ।

१२—मरुधरा में बधाई बटी, तेरह शाखा के राठौड़ हर्षित हुए। ज्यूं वनपाळै० = जैसे पीड़ित बागवान को वैशाख मास का सिर अर्थात् चैत्र मास आने से हर्ष होता है। शीतकाल में वन-पालक को पीड़ा होती है; क्योंकि हिम के कारण उद्यान कुम्हला जाता है; और चैत्र मास में उसके प्रफुल्लित होने से हर्ष होता है। अथवा पाळै = हिम से पीड़ित वन के सिर पर वैशाख मास आया। वैशाख में हिम नष्ट हो जाता है।

साह दिलासा मोकळै, अब क्यूं राखौ दूर।
नरपत्ती जसराज रौ, लावौ पुत्र हजूर ॥१३॥
सुण आयौ लाहौर थी, राजा लीधां साथ।
मिळिया सारा साथ सूं, केहर नै रुघनाथ ॥१४॥
कर डेरा पण धारियां, जमण तणौ उपकंठ।
उवर तणी इंद्रसिंघ सूं, साह प्रकासी गंठ ॥१५॥
तूं सुत रायांसिंघ रा, रासा मेरौ प्रांण।
जो हूं चाहूं सो करै, तौ आपूं जोधांण ॥१६॥
औरँग ऐसै अक्खियौ, दूजै दिन राठौड़।
गया दरग्गह साह रै, मारूधर कुळ मौड़ ॥१७॥
बहुत दिलासा दाखतै, साह दिया सिरपाव।
सिर पर हुकुम चढ़ायलौ, कीधौ प्रथम कहाव ॥१८॥
दिन दूजै मिळ मारवां, हाथी रिद्ध तुरंग।
दरसाया दीवांण नूं, फिर जोया अवरंग ॥१९॥

१३—मोकळै = भेजता है।

१४—सुण = बादशाह का हुक्म सुनकर।

१५—पण धारियाँ = प्रतिज्ञा को धारण करते हुए। जमण = यमुना। तणौ = के। उपकंठ = समीप। उवर = हृदय की। गंठ = (ग्रंथि) कुटिल अभिलाषा।

१६—रायांसिघ रा = रायसिह का (यह चंद्रसेण का पुत्र रायसिह है)। रासा = रायसिंह। आपूं = देऊँ।

१७—अक्खियौ = कहा।

१८—दाखतै = कहते।

१९—मारवां = मारवाड़ के सरदारों ने। रिद्ध = (ऋद्धि) संपदा। तुरंग = घोड़े। जोया = दर्शन किया।

छंद बेअक्खरी

साहजहाँ रिध दीठी सारी
बची बहुत यूं चीत विचारी।
दाखै साह सबै धन देखा
लार रहै का कोउ न लेखा ॥ २० ॥
कायथ त्याग विचारे काया
केसरिसिंघ राम का जाया।
इण विध अरज दई लिख आगै
भाखब हूँ तिण थी भ्रम भागै ॥ २१ ॥
हित पत धरम कैद वस हूवौ
दियौ साह पूछण कौ दूवौ।
रिध नृप ग्रह चौ भरम रहायौ
पियौ जहर कर प्राण परायौ ॥ २२ ॥

२०—रिध = (ऋद्धि) संपदा। बची = शेष रही। दाखै = कहता है। लार = पीछे। लेखा = हिसाब।

२१—कायथ = (कायस्थ) केसरीसिंह ने। काया = शरीर। राम का जाया = मारवाड़ का सांकेतिक शब्द है। परमेश्वर का बेटा, परमेश्वर का लाडला। यह सांकेतिक शब्द सच्चे स्वामिभक्त के विषय में प्रयुक्त किया जाता है। इण विध० = केसरीसिंह ने इस प्रकार की लिखकर अर्जी दी कि महाराज के पास कितनी बचत रही इसका उत्तर मैं दूँगा, जिससे आपका भ्रम दूर हो जाय।

२१—हित पत० = स्वामिभक्ति के धर्म के हेतु केसरीसिंह कैद हुआ। दूवौ = हुक्म, आज्ञा। राजा के घर की संपदा का भेद छिपा लिया। उसके लिये यह उपाय किया कि अपने प्राणों को पर-प्राण समझकर विष पीकर मर गया।

केहर सांम धरम पण कीधौ
दियौ जीव पण भेद न दीधौ ।
बोले बोल वधंती बाजी
राव हुवौ उर इंदर राजी ॥ २३ ॥

दुहा

यां राठौड़ां अक्खियौ, सुण लै औरँग साह ।
उतन दियां अगजीत नूं, सुख धर लहौ सलाह ॥ २४ ॥

छंद हणूफाल

पूछियौ मुख धर प्यार, इंद्रसिंघ नै उण वार ।
सुण अरज अवरँग साह, उर पसर कोप अथाह ॥ २५ ॥
कर हुकम मूझ कबूल, इळ भुगत निज अणभूल ।
सुण वयण पति इँद्र साह, लिख दीध हुकम सलाह ॥ २६ ॥
सुख रीझियौ सुरतांण, जद दियौ गढ़ जोधांण ।
वद जेठ बारस वार, सुज सोम ते जन सार ॥ २७ ॥

२३—केसरीसिंह ने स्वामिभक्ति धर्म को धारण किया । पण = परंतु । भेद = रहस्य की बात नहीं कही । बोले बोल० = बोल ही बाल में बाजी बढ़ गई, जिससे इंद्रसिंह मन में राजी हुआ ।

२४—यां = इस भाँति । अक्खिया = कहा । उतन = (वतन) जन्मभूमि । अगजीत नूं = अजीतसिंह को । लहौ = पाओगे ।

२५—उण वार = उस समय । सुण = राठौड़ों की अर्जी सुनकर । उर = हृदय में । पसर = वृद्धिगत हुआ, फैला । अथाह = अपार ।

२६—बादशाह ने इंद्रसिंह को कहा कि मेरी आज्ञा को स्वीकृत कर । इळ = पृथ्वी । इंद्रसिंह ने बादशाह के वचन सुने कि सलाह करके हुक्म लिख दिया है ।

२७—सुरतांण = बादशाह ने । जोधांण = जोधपुर ।

पँथ लगौ मुरधर पाय, तज दिलो छळ तैं ताय।
सुण बात कमँध सुग्यांन, बळ मूँछ धर बळवान ॥ २८ ॥
धर काज मिसलत धार, चक्रवतिय जतन विचार।
दिस मरुस्थल पति देस, व्रत अलख चख पँडवेस ॥ २९ ॥
पधरावियौ सुभ प्रात, छळ हूंत मुरधर छात।
दळ कमँध साह दवार, अन रहे सांम उबार ॥ ३० ॥

दुहा

रांणी श्री जसराज री, कमँघ निबाहण कज्ज।
अत सोचे आलौजतां, वारे मात वरज्ज ॥ ३१ ॥
यां महारांणी उच्चरै, सुहड़ां तजौ सचींत।
परवाहौ खग धारदे, जमणा धार प्रवीत ॥ ३२ ॥

२८—मुरधर = (मरुधर) मारवाड़ का राज्य पाकर इंद्रसिह रवाना हुआ। छळ तैं = कपट से। ताय = तब। सुज्ञानी राठौड़ इस बात को सुनकर (कि इंद्रसिंह मारवाड़ का राज्य पाकर दिल्ली से मारवाड़ गया है)। बळ मूँछ धर = मूँछों के वट देकर।

२९—मिसलत धार = विचार करके। चक्रवतिय = चक्रवर्ती बादशाह का। दिस मरुस्थल० = मारवाड़ देश के पति (अजीतसिंह जी) को मारवाड़ की तर्फ। पँडवेस = बादशाह की आँख से बचाकर।

३०—पधरावियौ० = मरुधरा के छत्र (राजा अजीतसिंह) को छल से शुभ दिन में मारवाड़ में भेज दिया। दल० = दूसरी राठौड़ों की सेना स्वामी को बचाकर बादशाह के द्वार पर उपस्थित रही।

३१—राणी० = जसवंतसिंह जी की रानी और राठौड़ों ने कार्यसिद्धि के लिये अत्यंत चिंता की। फिर विचार करके माता (रानी) ने उनको चिंता करने से मना किया।

३२—याँ = महारानी ने इस तरह कहा कि हे सुभटो! चिंता त्याग दो; और तलवार की धार से काटकर हमें पवित्र यमुना की धारा में बहा दो।

धन्य कह्यौ सब ऊमरां, साहॅस देख प्रचंड।
हुवा सुरंगा बांण सुण, भुज लागा ब्रह्मंड ॥ ३३ ॥
दौळी चौकी साह री, विच दळ अकळ सभाग।
सोहै किर सामुद्र मैं, ज्वाळवती बड़वाग ॥ ३४ ॥
पिड़ जुड़वा भड़ पांच सौ, रहिया अडिग अरेस।
कमँध सजूझा कांम छळ, दूजा आया देस ॥ ३५ ॥
एती एक न आदरी, जेती अक्खी साह।
कमधज्जां नव कोट रां, औट लियौ व्रत चाह ॥ ३६ ॥
लोपै नियती ची म्रजा, कोपे अवरॅग साह।
पड़ी तुरंगे पक्खरां. अंगे जड़ी सनाह ॥ ३७ ॥

छंद अर्धभुजंगी

सनाहे असल्लां, हिलै फौज हल्लां।
लड़ंगे अलेखै, दिली ख्याल देखै ॥ ३८ ॥

३३—ऊमरां = उमरावो ने। मुरंगा = अच्छे रंगवाले, उत्साहयुक्त। बाण = वाणी।

३४—दौळी० = चारो ओर तो बादशाह की चौकी है और सभागे निष्कलंक अथवा दुरूह योधा सेना के बीच में हैं। किर = मानों। बड़वाग = बाड़वानल।

३५—पिड़० = युद्ध में जुटने के लिये पाँच सौ भट वहाँ रहे, जो डिगने और दबनेवाले नहीं थे। कांम छळ = युद्ध करने की कामनावाले।

३६—एती = इतनी। अक्खी = कहा। ओट = आश्रय या आड़ लिया।

३७—नियती ची = नीति की। म्रजा = मर्यादा। पक्खरां = पाखर। सनाह = बख्तर।

३८—सनाहे० = जो असल (अर्थात् कमसल नहीं) थे उन्होंने बख्तर धारण किए, हिलोले चढ़कर सेना चली। सेना की पंक्ति अनगिनती है, उस तमाशे को दिल्ली देखती है।

चढ़ै लोक चल्लै, मसीतां महल्लै ।
झरोखो सभायौ, उठी साह आयौ ।। ३९ ।।
चली फौज चावै, हुवौ लोक हावै ।
अठी अै अछाया, उठी खैंप आया ।। ४० ।।
नगारा निहस्सै, सनूरा तरस्सै ।
दुसेन्या द्रस्सी, कड़े कंठली सी ।। ४१ ।।

दुहा

धिन आजूणौ दीहड़ौ, यां कहियौ रघुनाथ ।
धरम निभाहां साँम छुळ, साहां सूं भाराथ ।।४२।।
फेरे वग्ग तुरंग री, तोले खग्ग करग्ग ।
रिण पण ऊमंगे लगे. रैणायर गयणंग ।।४३।।

३९—चढ़ै० = लोक चलकर मोहल्लों की मसजिदों पर चढ़ गए हैं ।

४०—चावै = उत्साह के साथ । हावै = भयभीत हो गया, हाहाकार करने लगा । अछाया = कटु वचन सहन न करनेवाले । खैंप आया = खांपा बाहर आ गए । तलवार का म्यान दो खाँपों से बनता है; तलवार का म्यान से बाहर निकालना खांपों से बाहर आना कहा जाता है ।

४१—निहस्सै = बजे । सनूरा = नूर सहित, तेजस्वी पुरुष युद्ध की तृष्णा करने लगे । दुसेन्या = दोनों तरफ की सेना कड़ा और कांठले के समान दीखने लगी ।

४२—आजूणौ = आज का । दीहड़ौ = दिन । यां = इस तरह । सांम छुळ = स्वामी के निमित्त युद्ध में । भाराथ = युद्ध ।

४३—करग्ग (कराग्र) = हाथ । रिण पण = युद्ध की प्रतिज्ञा में । ऊमंगे = उत्साह-युक्त होकर । रैणायर = राजा लोग । गयणंग = आकाश में लगे, अर्थात् अत्यंत अभिमान-युक्त हुए ।

महारांणी जसराज री, यां बोली तिण वार।
प्रथम अमां परवाहियै, खग धारा जळ धार ॥४४॥
खग्गां सीस निवेड़िया, साहँस परख अथाह।
जोधहरां मिळ जमण मैं, कीधौ मात प्रवाह ॥४५॥
आज गई चिंता भड़ां, घड़ां कठट्ठे जंग।
नांमा रक्खण देख खळ, सांम्हा किया तुरंग ॥४६॥
पत्र सुधारै जोगणी, माळ सुधारै रंभ।
थंभ चलेवौ सोम रवि, पेखे व्योम अचंभ ॥४७॥

छंद त्रोटक

घण माळ ज्युँही असुरांण घड़ा।
खित आवृत मेन किसेन खड़ा॥
रिण तूर न फेरिय भेर रुड़ै।
गहरै स्वर तांम दमांम गुड़ै ॥४८॥

४४—अमां = हमको। परवाहियै = बहा देना चाहिए। खग० = खड्ग की धारा से काटकर जल की धारा में।

४५—खग्गां = तलवारों से। निवेड़िया = निबटा दिया, समाप्त कर दिया। परख = परीक्षा करके। अथाह = बहुत। जोधहरां = जोधाजी के वंशजों ने। मिळ = एकमत होकर। मात प्रवाह = रानियों को जल में बहा दिया।

४६—घड़ां = सेना युद्ध के लिये रवाना हुई। नांमा० = नाम रखनेवाले राठौड़ो को देखकर। खळ = मुसलमानो ने।

४७—पत्र = पात्र। माळ = माला। रंभ = रंभा, अप्सरा। थंभ० = चद्रमा और सूर्य चलना रोककर आकाश से आश्चर्य-पूर्वक देखते हैं।

४८—घण माळ = मेघमाला के जैसी मुसलमानों की सेना है। पृथ्वी को घेरे हुए मनुष्य किसानों की तरह खड़े हैं। रिण = (रण) युद्ध में। तूर० = तूर, नफीरी और भेरी वाद्य विशेष हैं। रुड़ै = बजते हैं। तांम = वहाँ। दमांम = नक्कारे। गुड़ै = बजते हैं।

मिळ आवत लोढ कि बोढ मही ।
जमना दळ वेळ समुद्र जही ॥
उर माळ झणंझण ऊभरियं ।
पवँगां तुरियं रव पाखरियं ॥४६॥
झळकंत बगत्तर टोप झिखै ।
रस चाह निसा प्रतिब्यंब रखै ॥
वण छेह सु जेह कबांण वणी ।
फब ईस धकै किर सेस फणी ॥५०॥
धड़कै उर कातर सोर धुखै ।
मच हक्क किलक्क अनेक मुखै ॥
अतरै कमँधां दळ वाग उठी ।
छित काळ कि आळ्क ज्वाळ छुटी ॥५१॥

४९—मिळ० = इकट्ठा होकर आता हुआ समूह ऐसा मालूम होता है कि क्या यह पृथ्वी को उठा लेगा। परंतु उस दल (सेना) को रोकने के लिये यमुना ऐसी आ गई कि जैसे समुद्र की वेला।

उर = वक्षःस्थल में माला झनझनाहट करती उछलती है और घोड़ो के पाखरों का शब्द त्वरा करता है (युद्ध के लिये)।

५०—झिखै = टोप टिमटिमाता है। वह ऐसा मालूम होता है कि मानों वीररस को चाहकर रात्रि का प्रतिबिंब पड़ता है। वण० = धनुष का अग्र ऐसा बना है कि मानों महादेव के आगे शेषनाग शोभा दे रहा है।

५१—धड़कै० = कायरों के हृदय काँपते हैं, बारूद भभक रही है। वीर-हाँक और किलकारियाँ अनेक मुखों से होने लगीं। अतरै = इतने में राठौड़ों के घोड़ों की वाग उठी। वह ऐसी मालूम होती थी कि क्या यह पृथ्वी पर काले नाग को छेड़ने से ज्वाला प्रकट हुई है।

मच फाग छुटी रव खाग महा ।
कल सोर न प्रांण कबांण कहा ॥
वधि वेल धमाधम सेल वहै ।
गुणि खीज कि वीज सिळाव वहै ॥५२॥
खिंवि पार पखै झड़ धार खगै ।
ललकार उचार अपार लगै ॥
झड़ सुंड करी अस तुंड झड़ै ।
पिड़ रुंड गुड़ै इत मुंड पड़ै ॥५३॥
जुध वेळ खगे रिणछोड़ जठै ।
तन पाथ जिसौ रुघनाथ तठै ॥

५२—मच० = तलवारों का जो महान् शब्द होता है वह ऐसा दीख पड़ता है कि मानों फाग में डंडिये जुड़े हैं। (मारवाड़ में फाल्गुन मास में डंडियों की गहर होती है। उसमें खिलाड़ी एक साथ डंडिये जोड़ते हैं। उनका महान् शब्द होता है। वैसे ही तलवारों का शब्द होता है।) कल० = उस महान् कलकल शब्द में प्राणों का पता नहीं है वहाँ कबान क्या चीज है ! मर्यादा से आगे बढ़कर धमाधम भालों का प्रहार होता है। वह ऐसा प्रतीत होता है कि मानों गुणी पुरुषों का क्रोध अथवा बिजली की रेखा चमकती है। तात्पर्य क्षण भर चमकने से है।

५३—खिंवि० = तलवार की धार खिवती (चमकती) है जिससे असंख्य सैनिक झड़ते हैं। झड़० = हाथियों की सूँडें और घोड़ों के तुंड (मुख) गिरते हैं। पिड़० = युद्ध में धड़ गुड़ते हैं और इधर मुंड पड़ते हैं।

५४—जुध० = युद्ध के समय तलवार हाथ में लिए जहाँ रणछोड़ (जोधा) है, और पार्थ (अर्जुन) के समान शरीरवाला रघुनाथ भाटी है,

पँडवेस पड़ै जुड़ पार पखै ।
लख बाँह झड़ै पतसाह लखै ॥५४॥

खित हूर अपच्छर वोद खटै ।
किरमाळ वहै वरमाळ कटै ॥
निरखै सुख नारद वीर नचै ।
सिव चाल पगे सिर माळ सचै ॥५५॥

भव-नार फिरै रत पत्र भरै ।
जुड़ बाक गिरै काइ छाक जरै ॥
घट घाव बजै तठ आठ घड़ी ।
पर आरण ज्यां घण रीठ पड़ी ॥५६॥
थिर चूर हुवा कर सूर थकै ।
छळ पेख वृँदारक व्योम छकै ॥

वहाँ युद्ध में जुटकर मुसलमान असंख्य गिरते हैं, लाखो हाथ कटते हैं जिन्हें बादशाह देखते हैं ।

५५—खित० = पृथ्वो में हूरें मुसलमान वरों को, और अप्सराएँ हिंदू वरों को तलाश करती हैं । उनकी वरमालाएँ तलवार के चलने से कट जाती हैं । सिव० = शिवजी पैरों से चलकर सिरों की माला का सग्रह करते हैं ।

५६—भव-नार = पार्वती फिर-फिरकर रुधिर का पात्र भरती है, बाक = मुख । मुख जुटकर गिरे हैं कि कोई मक्खियों का छाता झड़ा है । घट० = शरीरों पर वहाँ आठ घटिका पर्यंत प्रहारों का शब्द होता रहा । अर्थात् यह युद्ध एक प्रहर पर्यंत हुआ । प्रहार कैसे पड़ते हैं कि मानो ऐरन पर घन की चोट पड़ी ।

थिर० = (स्थिरा) पृथ्वी । वृंदारक = देवता । छके = तृप्त हो गए ।

छंद छप्पय

रिण जोधौ रिणछोड़, पड़े खग दाख पराक्रम।
पीथल वीठलदास, धार चंद्रभांण मांम ध्रम॥
दीपौ कुंभकरन्न, पड़े माहव जगपत्ती।
रांमौ नांमौ राख, पांत वसियौ सुरपत्ती॥
जसराज मरण जोधाहरा, रूक सम्रौधा राजबळ।
छित लाज दिली महाराज छळ, इळ पड़िया राखे अचळ॥५७॥

रुघपत्ती सोढ रौ, विढे वढियौ व्रतधारी।
हीचविया हरदास, जगौ सगतौ गिरधारी॥
ऊदौ केहर तणौ. पड़े धारां मांनावत।
रूकहथौ धनराज, बाज पड़ियौ वीकावत॥
केसव सकाज रतनेस कौ, छळ जसराज अजीत छळ।
अड़ सार दिली अवरंग सूं, भाटी पड़ियौ भारभल॥५८॥

५७—जोधा खांप के राठौड़ इस युद्ध में काम आए। उनकी गणना करते हैं। दाख=दिखा कर। १ जोधा रणछोड़, २ पीथल=पृथ्वीराज, ३ वीठलदास. ४ चद्रभाण, ५ दीपसिंह, ६ कुंभकरण, ७ माधोसिंह, ८ जगत्‌सिंह, ९ रामसिंह। पांत = पक्ति में। जोधाहरा =जोधा के वशज। रूक सम्रौधा = तलवार सहित। छळ = युद्ध में।

५८—भाटी सरदार काम आए उनके नाम कहते हैं; सोढ का पुत्र १ रघुनाथसिंह। विढे=युद्ध करके कटा। हीचविया=युद्ध करके मरण को प्राप्त हुए। २ हरदास, ३ जगत्सिंह, ४ सगतसिंह, ५ गिरधारी। केसरीसिह का पुत्र, ६ उदैसिंह, ७ मानसिंह का पुत्र। नाम नहीं लिखा है। रूकहथौ =तलवार हाथ में लिए ८ वीका का पुत्र धनराज। बाज = युद्ध करके। रतनसिंह का पुत्र ९ केशव। छळ=वास्ते; छळ=युद्ध में। सार=तलवार। भारभळ=भार को धारण करके।

महासिंघ मधकरौ, पड़े मोहण पणधारी।
हिंदू नै जूंझार, इता कूंपा अहंकारी॥
रिण पड़िया भ्रम राख. अभँग अखियात उबारै।
कुंभकरण उजवाळ, आद मारग अवधारै॥
मेड़तै रूप भीमौ किसन, चांपै नाहरखांन चव।
केहरी पड़े पातावतां, राख नांम लग चंद रव॥५९॥

ऊदा जुध आधिया, वाध विढिया वरदाई।
मांझी भारमलोत, सार गोयंद सवाई॥
आसकरन द्रढ मन्न, जसू गोवर्धन जोड़े।
रूकहथौ रुघनाथ, अभॅग दूसासण ओड़े॥
विचत्रांण कोट जमणां विचै, गज भिड़जां कीधा गरा।
रजवट्ट साझ चडिया रथे. हिन्न पड़िया ऊदाहरा॥६०॥

५९—कूंपावत काम आए उनकी गणना करते हैं—१ महासिंह, २ माधोसिंह, ३ मोहनसिंह, ४ हिंदुसिंह, ५ जूंझारसिंह। अहंकारी = अभिमानवाले। अखियात उबारै = आश्चर्यजनक बात को रखकर। १० कुंभकरण। आद० = क्षत्रियो के आदिमार्ग का निश्चय करके। मेड़तियों की गणना करते हैं—१ रूपसिंह, २ भीमसिंह, ३ किसनसिंह। १ चांपावत नाहरखान। १ पातावत केसरीसिंह।

६०—ऊदावत काम आए उनकी गणना करते हैं:—ऊदा = ऊदावत। वाध = बढ़कर। विढिया = युद्ध किया। मांझी = मुखिया। भारमल का पुत्र १ गोविंदसिंह, २ सवाईसिंह, ३ आसकरण, ४ जसवंतसिंह, ५ गोवर्धन, ६ रघुनाथसिंह। ओड़े = सदृश। विचत्रांण = मुसलमानों के। भिड़जां = घोड़ों का। गरा = कीचड़ कर दिया। हिच पडिया = युद्ध करके रणांगण में गिरे। ऊदाहरा = ऊदा के वंशज।

दुहा

रिणमलौत रिण वज्रियौ, सुंदर हरी सुजाव।
सहसां ले पड़ियौ समर, घट सौ लग्गां घाव ॥६१॥
भोजे सुंदरदास पड़, मँडळे लखमीदास।
चहुवांणे अखवी पड़े, पोखे चंद्रप्रहास ॥६२॥
जैतमाल त्रण वाजिया. ऊदै जिसा अबोह।
पड़िया जुड़ पतसाह सूं, भैरव डूंगरसीह ॥६३॥
हेचै दळ सोभाहरो, जूटौ जोगीदास।
कुसळावत उजवाळ कुळ. वसियौ सुरपुर वास ॥६४॥
डूंगरौत मांनौ पड़े, रिण कायथ हरिराय।
विसनौ मुहतौ वाजियौ, दुयणां हाथ दिखाय ॥६५॥

६१—रिणमलोतों की गणना करते हैं। वज्रियौ = लड़कर मरा। हरिदास का पुत्र १ सुंदरदास शरीर में सौ १०० प्रहार लगने पर भी हजारों को लेकर युद्ध में गिरा।

६२—१ भोजावत राठौड सुंदरदास गिरा। १ मंडला राठौड़ लक्ष्मीदास। १ चौहान अखैराज। चंद्रप्रहास = खड्ग को तृप्त करके गिरा।

६३ जैतमाल राठौड़ तीन गिरे। १ उदैसिंह। अबीह = निर्भय। २ भैरूसिह। ३ डूंगरसी।

६४—हेचै = तलवारों से युद्ध करके। सोभाहरो = सोभा का वंशज, सोभावत राठौड़। जूटौ = जुटा। कुसलसिंह का पुत्र १ जोगीदास।

६५—डूंगरसी का पुत्र मानसिंह गिरा। १ कायस्थ हरिराय। १ मुहता विसनदास युद्ध करके मरा। दुयणां = शत्रुओं को।

निहसे खळां नवल्ल रौ, अग्गे दळां दुझाल ।
हिच पड़ियौ रज रज हुवे, सांदू सूरजमाल ॥६६॥
मीसण पड़िया मांमलै, सांमौ अनै रतन्न ।
दिल्ली खेत न छंडियौ, धारण चारण धिन्न ॥६७॥
सौ पड़िया दूजा सुहड़, अन ऊपड़िया खेत ।
अंग नत्रींठा वाजिया, आद दुरग्ग सचेत ॥६८॥
सेना अवरँग साह री, ज्यां मैं पड़े हजार ।
पूरै लोहै तीन सौ, ऊपड़िया असवार ॥६९॥
वरस छतीसै लागतै, सांवण आदू तीज ।
कीध लड़ाई कमधजां, साह निवाही खीज ॥७०॥

इति श्री महाराजाजी श्री अभैसिंघजी जस राजरूपक मैं
दिल्ली जुद्ध विगत दुतिय प्रकास ॥ २ ॥

६६—निहसे = हटाकर । नवलदान का पुत्र सांदूजाति का चारण सूरजमल शत्रुओं को हटाकर टुकड़े टुकड़े हो युद्ध करके गिरा । दुझाल = असह्य, अथवा दोनों हाथों से शस्त्र धारण करनेवाला ।

६७—मीसण = चारणों में एक शाखा है । मांमलै = युद्ध में । सामौ० = श्यामदान और रतनदान ।

६८—सुहड़ = सुभट । अन = अन्य । ऊपड़िया = रणांगण में गिरकर उठे । नत्रींठा = निःशंक । वाजिया = युद्ध किया । आद० = दुर्गादास आदि रणांगण में गिर गए थे परंतु पीछे सचेत हो गए ।

६९—औरंगजेब की सेना के एक हजार मरे और तीन सौ सवार घावों से पूर्ण हो पीछे उठ खड़े हुए ।

७०—संवत् १७३६ के श्रावण बदि ३ के दिन राठौड़ों ने युद्ध किया था । खीज = क्रोध ।

दुहा

जुध दिल्ली रहिया जुड़े, रैणायर रुघपत्त।
सिर रांणै दळ साजिभया, औरँगसा असपत्त ॥ १ ॥
सेना सितर हजार सूं, विचित्र अमित्र बळवांन।
कियौ विदा रवि चै उदै, मुदै तहव्वर खांन ॥ २ ॥
कोपे हिंदुसथांन पर, औ आयौ अजमेर।
पाछे अवरँग हल्लियौ. कड़ बांधे समसेर ॥ ३ ॥
ओपै आय अनंत बळ, सुतन चियारूँ साथ।
किर सिव ऊपर आवियौ, जालंधर भाराथ ॥ ४ ॥
राठौड़ां पण झल्लियौ, न्रप अगजीत निमत्त।
सुण तहव्वर उर छीजियौ, अत खीजियौ दुरत्त ॥ ५ ॥
मेड़तिया महाराज दळ, किया मुदै करतार।
दुंद अमंदी सल्लळै. ज्यौं हंदी तरवार ॥ ६ ॥

१—राजा रघुनाथसिंह (भाटी) दिल्ली के युद्ध में जुट रहे थे उस समय औरंगजेब बादशाह ने महाराणा के ऊपर सेना सजी।

२—विचित्र = मुसलमान। रवि चै उदै = सूर्योदय के समय। मुदै = मुख्य।

३—कड़ = (कटि) कमर में तलवार बाँधकर।

४—ओपै = शोभा देता है। चियारूँ = चारों। किर = मानों। जालंधर = जलंधर दैत्य। भाराथ = युद्ध में।

५—झल्लियौ = धारण किया। अगजीत = अजीतसिंह के। छीजियौ = क्षीण हुआ। खीजियौ = कुपित हुआ। दुरत्त = दुःसह।

६—महाराजा अजीतसिंहजी की सेना में मेड़तिये राठौड़ मुख्य कार्यकर्ता किए गए। दुंद = (द्वंद्व) युद्ध। अमंदी = मंद नहीं अर्थात् तीव्र। सल्लळै = चलती है। ज्यौं हंदी = जिनकी।

वार्ता

मेड़तिया मधकर हर मेड़तै सहायक।
सांहस के सादूळ वंस के नायक॥
जाकी रीत कौ प्रमांण द्वापुर दरसावै।
कहनै मैं विसमैसी देखे वन आवै॥
तहवर की फौजां अजमेर जब आई।
माधव के सिव अंस सुनके ठहराई॥
बोले यां राजांन जो आजांनबाह पूरा।
ऐसे परहंस वंस खमै सो अधूरा॥
रूपसिंघ गोकळ सुणत भौंह ताई।
पातळ के महाबाह राजड़ के भाई॥

दूहा

राजड़ कहै प्रताप रौ, भड़ क्यौं सहै अमग्ग।
मूछ उभारै हत्थ सूं, जो कर धारै खग्ग॥ ७॥

वार्ता—मधकर हर = माधोसिंह के वशज; माधोदासोत मेड़तिया। मेड़तै = मेड़ता नगर के। विसमैसी = आश्चर्यजनक। सिव अंस = महादेव के गण हों जैसे माधोदासोतों ने उस सेना को रोक दिया। या = इस तरह। आजांनबाह = जिसके हाथ घुटनों तक लंबे हों उसे आजानुबाहु कहते हैं। परहंस = पराजय। अथवा ऐसे परहंस वंस = हस वश सूर्यवंशी होकर ऐसे समय पर जो सहन करै वह। अधूरा = अपूर्ण है। उस समय रूपसिंह और गोकुलदास ने, जो प्रतापसिंह के पुत्र और राजसिंह के भाई थे, सुनते ही भौंह चढ़ाई।

७—अमग्ग = कुमार्ग को। मूछ० = हाथ से मूँछ तानते हैं।

छत्रपती छांनौ विखै, अनपत्ती हित जोड़।
दिये धरत्तो आप री, ते खत्री कुळ खोड़ ॥ ८ ॥
बोलै बंधव रूपसी, बोलै मोकमदास।
तज अवसांण विलास पद, को मांनै ध्रम जास ॥ ९ ॥
बेटौ गोकळदास रौ, यां बोल्यौ हटमल्ल।
जो अवसांणै नां मरै, सो जमरांण निकल्ल ॥१०॥
केहरियौ अचळेस रौ, देस म्रजाद कमंध।
प्रीत नरंदां देह पण, रीत समंदां बंध ॥११॥
यां खग तोले बोलियौ, अचळ तणौ कुळ थंभ।
जूटै खेटां मोख पद, माळ पळेटां रंभ ॥१२॥

८—राजसिंह कहता है कि इस समय छत्रपती = राजा अजीतसिंह विखै = विपत्ति के कारण गुप्त है। जो इस समय दूसरे स्वामी के हित में योग देकर अपनी पृथ्वी दे वह क्षत्रिय-कुल में खोटा (कपूत) है।

९—उस पर भाई रूपसिंह और मोहकमदास ने कहा कि अवसांण = अवसर को त्यागकर जो धर्म मानता है वह भोग-विलास के पद को कौन माने।

१०—यां = इस तरह। गोकलदास का पुत्र हटीमल बोला कि जो अवसर पर नहीं मरता है उसे यमराज के यहाँ निकालो।

११—अचलदास का पुत्र केसरीसिंह, देश और राठौड़ों की मर्यादा रखनेवाला, राजाओं को प्यारा और शरीर के पन से समुद्रों के तट तक रीति रखनेवाला है।

१२—खेटां = युद्ध में जुड़ने से मोक्षपद मिलता है और रंभा अप्सरा बरमाला पहनाती है।

केहर अचळ कमंध तण, उर पण लीधौ एम ।
वरण त्रिविद्धी साह घड़, मरण तणौ द्रढ़ नेम ॥१३॥
चुतर कहै रामंग रौ, अहूँ भुजा बळ आभ ।
मरण न पायौ धार मुँह, तिको गमायौ लाभ ॥१४॥

गाथा

यां अक्खै जगपत्ती, छत्री उद्धार धार तीरत्थे ।
सो लद्धौ अवसांणौ, सद्धो धीर वीर चतुरेस ॥१५॥

दुहा

यां बंधव्र आलौचियौ, जगपत्ती चतुरेस ।
बंस मद्धकर ऊधरा, दुजड़ उजागर देस ॥१६॥

वार्ता

चतुरेस जगतेस उच्छव उर थाए ।
रामबांण पण कीधौ रांमचंद जाए ॥

१३—अचलसिंह राठौड़ के पुत्र केसरीसिंह ने मन में इस प्रकार का प्रण धारण किया—बादशाह की त्रिविध (हाथी, घोड़े और पैदल रूप तीन प्रकार की) सेना को वरने और मरने के लिये दृढ़ नियम लिया ।

१४—रामचंद्र का पुत्र चतुरसिंह कहता है । आभ = अभ्र ।

१५—अक्खै = कहता है । जगपत्ती = जगत्सिंह । छत्री० = धारा-तीर्थ में अर्थात् तलवार से कटने से क्षत्रिय का उद्धार होता है । सो० = वह अवसर मिल गया है । हे चतुर धीर वीर पुरुषो ! उसे साधो ।

१६—यां = इस तरह । आलौचियौ = विचार किया । बंस० = माधोदास के वंश के । ऊधरा = ऊँचा । दुजड़ = तलवारों से देश को जागृत करनेवाले ।

हरि का सुदरसण, मांन का कुरुनाथ।
प्रतंग्या के भीसम से नेखम भाराथ।
असिवर के तेज पुंज मधकर के पोतै।
प्रांण तैं सरस पायौ अवसांण जोतै॥

दुहा

आया पौहकर नेम ले, मधकर हर कुळ मौड़।
देवळ श्री वाराह रै, मुगत सरौवर ठौड़॥१७॥
उण दिसिया अजमेर सूं, आयौ तहवरखांन।
इण दिसि वग्गा सिंधुवा, भुज लग्गा असमांन॥१८॥
माद्ळौ वाकारियै, त्यां वाजिया नत्रीठ।
लग्गो सूर परक्खणे, वग्गौ धारा रीठ॥१९॥
एक महूरत सार झड़, मातै ताती बांण।
लग्गा हस्थी भग्गणे, यां वग्गा आरांण॥२०॥

वार्ता—रामचंद्र के पुत्र चतुरसिंह और जगत्सिंह ने रामबांण = अचूक प्रण किया। प्रतंग्या = (प्रतिज्ञा) प्रण के भीष्म के सदृश। नेखम = दृढ। भाराथ = युद्ध में।

१७—पौहकर = पुष्कर तीर्थ पर। मधकर हर = माधोदासोत मेड़तिया। मौड़ = मुकुट। देवळ = देवालय, मंदिर को। मुगद = बचाने के लिये।

१८—उण दिसिया = उधर। इण दिसि = इधर वग्गा सिंधुवा = युद्ध के बाजे बजे।

१९—मानों सिंह को ललकारे उस प्रकार निःशंक बाजे बजे। सूर्य परीक्षा करने लगा। तलवार की धारा महा प्रबल चली।

२०—दा घड़ी तलवार की झड़ी तेज बाणी के साथ बहुत तीव्र लगी। हाथी भागने लगे। इस तरह युद्ध में वीर लड़े।

जिण सिर वाहै खग्ग बळ, देव सराहै जोय।
सिलह अटक्का मोम सम, हुवै बटक्का दोय ॥२१॥
हाथी तहवरखांन रौ, गौ सौ धानख भज्ज।
धकौ न साहै मीरजां, वाहे सार गरज्ज ॥२२॥
बाहां वाधे राठवड़, विगर सनाहां अंग।
वागा केसर झारिया, हुयगा श्रोण सुरंग ॥२३॥
आगै ग्रह वाराह रै, पुहकर सांम गरज्ज।
लड़िया पतसाही दळां, झड़ पड़िया कमधज्ज ॥२४॥
रिण आगै राजांन रै, खग वाहतौ विकट्ट।
कवि किसनौ लड़ केवियां, झड़ पड़ियौ खग झट्ट ॥२५॥

२१—वाहै = चलाता है। देव० = देवता उसे देखकर प्रशंसा करते हैं। सिलह० = बख्तर में। जैसे तलवार मोम में नहीं रुकती वैसे सिलह में नहीं रुकती है।

२२—धानख = धनुष, साढ़े तीन हाथ का एक धनुष होता है। धकौ = हमला। राठौड़ गर्जना करके तलवार चलाते हैं। उस हमले को मीरजा सहन नहीं कर सकता है।

२३—बाहा० = राठौड़ तलवार चलाने में बढ़ते हैं। शरीर पर कवच धारण किए बिना। वागा = वस्त्र। केसर से रँगे हुए वस्त्र शोणित से रँगकर लाल हो गए हैं।

२४—आगै० = वाराहजी के मंदिर के आगे पुष्करजी में स्वामी के लिये गर्जना करके बादशाही सेना से राठौड़ लड़े और कटकर पड़े।

२५—रण में राजाओं के आगे कवि (चारण) किसना शत्रुओं से लड़कर तलवार के प्रहार से कट पड़ा।

छत्रीसै सुद भादवै, एकादसी वरत्त।
राजोधर एतां लियां, गौ हरि धांम मुगत्त ॥२६॥
यां मधकर हर वज्जिया, आद विखै अण रेह।
ज्यां उलटै मेघा रवी, सिद्ध पलट्टै देह ॥२७॥

इति श्री राजरूपके पुसकर री लड़ाई संमत छतीसै ३६ रा
भाद्रवा सुदि ११ भाटी रांमौ कुंभावत कांम
आयौ तृतीय प्रकास ॥ ३ ॥

२६—संवत् १७३६ भाद्रपद सुदि ग्यारस का व्रत धारण किए राजोधर = भाटी रामा, जिसका इतिश्री में उल्लेख है. इतने सुभटों को लेकर हरि के धाम मोक्ष में गया।

२७—आद विखै = (विषम समय) विखै के आदि में। रेह = दबाव। ज्यां० = जैसे सूर्य मघा नक्षत्र पर आने से पलट जाता है वैसे सुभटों ने सिद्धों की देह पलट ली।

दुहा

जोड़े दुंद अनेक यां, दोड़े तहवरखांन।
मुरधर प्रजा भँगेळियां, किया गिरंदे थांन ॥ १ ॥
रूपौ कुंभकरन्न रौ, कुंडाद्रह कमधज्ज।
रहै गुढा कर सद्धरौ, ऊदाहरौ सकज्ज ॥ २ ॥
फौज तहव्वर खांन री, आवी ऊगे सूर।
वखत वणी रिण सद्धरां, नरां खरां मुख नूर ॥ ३ ॥

छंद सारसी

आवी अलेखं फौज ईखे रीत लेखं रूपसी।
ऊठियौ अग्गै आभ लग्गै अकस जंगे ऊपसी ॥
हुय रौद्र हक्कं ग्रेह लक्कं जै किलक्कं जोगणी।
वंका गरज्जे खड़्ग वज्जे सक्ति रज्जे सक्कणी ॥ ४ ॥

१—जोड़े० = इस तरह अनेक युद्ध युक्त किए गए। जब तहवरखान ने दौरा किया तो भागनेवाली मारवाड़ की प्रजा ने पहाड़ों में अपनी स्थिति की।

२—कुंडाद्रह = एक ग्राम का नाम। उस ग्राम का राठौड़ कुंभकर्ण का पुत्र रूपसिंह। गुढो = रक्षास्थल में समूह बनाकर। सद्धरौ = दृढ़। ऊदाहरौ = ऊदा का वंशज अर्थात् ऊदावत राठौड़। सकज्ज = काम करनेवाला।

३—सद्धरां = वीर पुरुषों की समय बनी और पक्के मनुष्यों के मुखपर कांति बढ़ी।

४—रूपसी असंख्य सेना को आई देखकर अपनी रीति को मानकर आगे उठ खड़ा हुआ। आभ = (अभ्र) आकाश। अकस = अकस्मात्. अथवा ईर्ष्या से युद्ध में। ऊपसी = शोभा देने लगा। रौद्र = भयंकर हाँक होती है। ग्रेह लक्कं = पूतना आदि ग्रहों की ललकार। किलक्कं = जोगिनी किलकारियाँ करती हैं। बंके वीर गर्जना करते हैं, तलवार बजती है, शक्ति और शाकिनी राजी होती हैं।

वीतां अधूरां वार पूरां वेध सूरां वच्छप।
सेले प्रहारं धार सारं मार मारं मच्छर॥
वग्गा खड़ग्गे दुहूँ वग्गे काळरंगे वीरयं।
अछरां उमंगे दूर अंगे चाव रंगे चीरयं॥ ५॥

उर कोप आंणे अप्रमांणे सिद्ध जांणे सद्दयं।
ओपै अखाड़ै गै उडाड़ै रूक झाड़ै रद्दयं॥
हरि गयण रत्थं ताण हत्थं वाधि कत्थं वेणियं।
वाजे सचाळौ कुंभवाळौ रक्खवाळौ रैणयं॥ ६॥

दुहा

घड़ उब्भै घड़ियाल ज्यूं, घट घट वग्गा घाव।
रज रज हुयगौ रूपसी, सुजड़ां कुंभ सुजाव॥ ७॥

५—वीता० = अधूरों के मरने पर, वेघ = युद्ध में पूरे शूरवीरों के वार होते हैं। सेले = भाला। सारं = तलवार। दुहूँ वग्गे = दोनों तरफ। काळ० = वीररस में रँगे हुए वीर काल के से दिखाई देते हैं। अछरां = अप्सरा। चाव = उत्साह।

६—सिद्ध० = जैसे सिद्ध का शब्द वृथा नहीं जाता वैसे उनका कोप वृथा नहीं जाता। ओपै = शोभा देते हैं। अखाड़ै = युद्ध में। गै = हाथियो को भगाते हैं। रूक = तलवार। रद्दयं = दाँतों पर झाड़ते हैं। हरि० = सूर्य आकाश में रथ को खींचकर हाथ बढ़ाकर वचन से कहता है कि कुंभकरणवाला (रूपसी) युद्ध में जो लड़ रहा है, राजा का रखवाला है।

७—घट० = दोनों शरीर घड़ियाल के जैसे हैं; अंग अंग पर प्रहार हो रहा है। अंत में कुंभकर्ण का पुत्र रूपसी तलवारों में कण कण हो गया।

आद विखै ऊदाहरौ, दळ आयां पतसाह ।
रिण लड़ पड़ियौ रूपसी, सुणियौ अवरँग साह ॥ ८ ॥
छत्री सौ आसोज सुद, सतरै सँमत वखांण ।
कूंडाद्रह लड़िया कमँध, असपत्तो सूँ आंण ॥ ९ ॥
असुर पड़े रिण आंगणै, आठ अनै अठत्रीस ।
धनै नरै केहर जिसा, पड़िया अठी पचीस ॥१०॥

इति श्री राजरूपक मैं रूपसी कुंभकरणोत कांम आयौ
संमत १७ से ३६ छतीस चतुर्थ प्रकास ॥ ४ ॥

८—आद० = पहले विखै में ऊदावत रूपसी बादशाही सेना आने पर रण में लड़कर गिरा ।

९—संवत् १७३६ आश्विन सुदी में राठौड़ कूंडाद्रह ग्राम में आकर बादशाह से लड़े ।

१०—असुर० = मुसलमान रणांगण में ४६ गिरे । इधर धना और नरा और केहर जैसे पचीस सैनिक गिरे ।

छंद चौसर

इण पर तहवर खांन अछायौ
विचित्र हुवौ लड़तां रस वायौ।
सिर हिँदवांण तणौ रीसायौ
औरँग पीठ लगेहिज आयौ ॥ १ ॥

दुहा

इंद्र धरा व्रज ऊपरै, ज्यां पेले जळ जाळ।
धर हिंदू सुर पीड़वा, आया चामर आळ ॥ २ ॥

छंद बेअक्खरी

औरँग साह छत्री सै आयौ
उर राव रांण लगौ असहायौ।
संख्या विण लीधां दळ साथै
मारग पड़ै पहाड़ां माथै ॥ ३ ॥

१—इण पर = इस प्रकार। अछायौ = कटुवचन न सहनेवाला। विचित्र = मुसलमान। रस वायौ = वीररस में बावला हो गया। तणौ = के। रीसायौ = क्रुद्ध हुआ।

२—इंद्र० = इंद्र ने व्रजभूमि पर जैसे जल-समूह पेल दिया था, वैसे पृथ्वी में हिंदू और देवों को पीड़ित करने के लिये। चामर आळ = मुसलमान आए।

३—छत्री सै = संवत् १७३६। असहायौ = बुरा। दळ = सेना।

रथ गज पायक अवर तुरंगां
अचळ सिखर थळ छीजै अंगां।
गज अस गहण नदी गुडळावै
जळ सर प्रबळ ओछ पळ(ण) जावै ॥ ४ ॥
मुहम प्रकोप उदैपुर माथै
सातैइ महण थया किर साथै।
लाधां जळ वेसांमौ लीजै
छीजै जंतु प्रजा पुर छीजै ॥५॥
धुर घण घटा जिही मग छायौ
औरँग वळे अजैगढ आयौ।
चाढे देग नेग चढ्ढाया
मोरां ख्वाजा पूज मनाया ॥६॥
मन भ्रमिया सुण कोप महाने
थयौ सोच सब हिंदुसथाने ॥

४—अचळ=पहाड़ों के शिखर टूटकर स्थल बन जाता है। छीजै=क्षीण होते हैं। अस=(अश्व) घोड़े। गहण=(गहन) ऊँडी नदियाँ गुदला जाती हैं। सर=बड़े तालाबों का। ओछ=ओछापन, अल्पता चली जाती है।

५—मुहम=सेना की चढ़ाई। सातैइ०=मानों सातो समुद्र साथ हुए। लाधां=मिलने पर। वेसांमौ=विश्राम।

६—धुर०=उत्तर दिशा की मेघ की घटा के समान। मग=मार्ग में। वळै=फिर। अजैगढ=अजमेर। नेग=सदा के रीत्यनुसार पदार्थ देना।

मन०=बादशाह के महान् कोप को सुनकर सबका मन भ्रम-युक्त हो गया।

दुहा

असपत्ती अजमेर गढ, रहियौ पांच दिवस्स ।
तूटौ मग चीतौड़ रै, छूटौ जांण अरस्स ॥ ७ ॥
वग्गा भड़ मेवाड़ रा, सीसौद्या ग्रह सार ।
आठूं दिस कळ मल्ळी, चळाचळी संसार ॥ ८ ॥
सीसोद्या सुरतांण सूं, दुजड़ प्रकासे हंद ।
धर कारंजां छोडियां, किम खूटै सामंद ॥ ९ ॥
उण वेळा बळ अग्गळा, दळ राठौड़ दुबाह ।
मेघ थमा सीसोदियां, लगी लाय अण थाह ॥१०॥

छंद छप्पय

अगसत विण आंग मै, कवण सामंद्र पयाळै
अण संका विण हणू, कवण लंका पर जाळै ।
कवण अखैवड़ विगर, प्रलै सागर सिर सोभै
कवण विनां सुखदेव, देव माया नह लोभै ।

७—असपत्ती = (अश्वपति) बादशाह । तूटौ = चला । जांण = मानों । अरस्स = आकाश ।

८—वग्गा = लड़े । सार = तलवार लेकर । कळ = (कलह) युद्ध । सल्ळी = शुरू हुआ ।

९—दुजड़ = तलवार । हंद = हद, निरवधि । कारंजां = जलयंत्र ।

१०—उण वेळा० = उस समय बल में अग्रणी समर्थ राठौड़ों की सेना सीसोदियों के जो अपार दावानल लगी थी उसके लिये मेघरूप हुई ।

११—अगसत = अगस्त्य मुनि । आंग मै = अधिकार कर सके, दबा सके । पयाळै = पाताल में पहुँचे हुए, अति गंभीर । अण संका = निःशंक । हणू = हनुमान् के बिना । पर जाळै = दग्ध करै । अखैवड़ = अक्षय वट के । विगर = बिना ।

सिसमार चक्र ध्रुव विण सु तो, भजै न कुण रिसि गण भ्रमण ।
अंगमै साह अवरंग सूं, कमँधां विण चाळौ कवण ॥११॥
जवन पेख सिर जोर, दियौ छत्रपती छिपाए
भसम जांण भारियौ, अगन कण जतन उपाए ।
सत्र बांध हरि सुमर, देह धर प्रीत अदावै
समै तेण साहंस, जेण मापियौ न जावै ।
आदर विरोध अवरंग सूं, थिरस बोध सुर थप्पियौ
ऊधरां भड़ां अजमाल रां, असुरां डर ऊथप्पियौ ॥१२॥
चित्त साह चिंतवै, भौम इक राह निभ्रम्मां
खुरासांण घमसांण, रांण प्रेरियौ मुहम्मां ।
दळ गहबर ऊलटा, खांन तहवर सारीखा
महा सोच मेवाड़, ईख मेछाड़ अणीखा ।

सिसमार चक्र = शिशुमार चक्र (खगोल) में ध्रुव के बिना सप्तर्षिगण किसके चारों ओर भ्रमण करे । अगमै = स्वीकार करे । चाळौ = युद्ध ।

१२—छत्रपती = राजा (अजीतसिंह) को । भसम = (भस्म) राख, मानों राख में दबी हुई अग्नि के कण का यत्न किया । देह० = पृथ्वी की प्रीति से देह का दावा छोड़ दिया । समै० = उस समय का, जिन (राठोड़ों) के साहस का माप नहीं किया जा सकता था । आदर० = औरंगजेब से आदर का विरोध और इष्टदेव में दृढ ज्ञान लगा दिया । ऊधरां = ऊँचे । ऊथप्पियौ = उठा दिया ।

१३—चित्त० = बादशाह पृथ्वी पर भ्रमरहित एक धर्म करने के लिये मन में विचार करते हैं । खुरासांण = बादशाह से । घमसांण = घोर युद्ध । मुहम्मा = युद्ध-यात्राओं से । गहबर = नाम है । खांन तहवर = तहवर खान नाम है । इनका कटक मेवाड़ पर उलट पड़ा । मेछाड़ = म्लेच्छों को । अणीखा = जिनके सामने देखा न जाय ।

पतसाह रहै गह पूरियौ, सुर निराहपण संधियो
खित गई ठौड़ ठौडां खबर, बळ राठौड़ां बंधियौ ॥१३॥
साह खबर सांभळी, रीस ऊछळी वारूते
सादूळै सुख ढांण, जांण बतलायौ सूते।
सोर आग सपरस्स, किना वड़वाग अकारी
माग हूँत सामंद्र, ध्याग वरतण उर धारी।
इम कोप लोप अवरंग रौ, विण सोनंग दुरंग विण
इळ करै कवण मंडै अड़ी, जग धड़धड़ी पयांण जिण ॥१४॥

दुहा

विकट विहारी, वंकडौ, जाळंधर गढराज।
सो राठौड़ां घेरियौ, जोड़े सेन सकाज ॥१५॥

गह पूरियौ = गर्व से भरा हुआ। निराहपण = निराशपन। संधियौ = साँध लिया, धारण कर लिया। खित = (क्षिति) पृथ्वी में।

१४—सांभळी = सुनी। रीस = क्रोध। ऊछळी = वृद्धिगत हुई। वारूते = उस समय। सादूळै० = मानों अपने ढांण = स्थान में सुख से सोए हुए सिंह को ललकारा, मानों बारूद को अग्नि का स्पर्श हुआ। मानों अकारी = तीक्ष्ण बड़वानल उठी। मानों समुद्र ने मार्ग से आगे बढ़ने का मन में विचार किया। इम० = औरंगजेब के कोप को लोप कर (चांपावत) सोनंग और (करणोत) दुर्गादास के बिना पृथ्वी में कौन है कि जो बादशाह से अड़ी करै = जुटै, कि जिसके प्रयाण में जगत् धड़धड़ी = कंपायमान हो जाता है।

१५—उस समय जालंधर = जालोरगढ़ का राजा विकट और बंका विहारी पठान था, (विहारी मुसलमानों की एक जाति है। विहार की तरफ से आए थे, इसलिये विहारी कहलाते हैं। अभी राधनपुर में हैं।) राठौड़ों ने अपनी अच्छी सेना को जोड़कर उसे घेरा।

छंद बेअक्खरी

पातसाह ग्रह राह तणी पर
प्रगटे हिंदु सुधाकर ऊपर।
आरंभे अति फौज अकारी
दिल्लीपत पूगौ दहबारी ॥ १६ ॥

कूंपौ उगर तठै म्रत कोड़े
उदियासिंघ जेही पिण ओडे।
रोदां कटक अटकिया राहे
सांवळ सुत जूटौ पतसाहे ॥ १७ ॥

कमँध घड़ा पूरे किलवांणी
पड़ियौ चाढ मुरद्धर पांणी।
इण पर साह उदैपुर आयौ
आजमसा चीतौड़ रहायौ ॥ १८ ॥

१६—ग्रह राह = बादशाह राहु ग्रह के समान है। हिंदु सुधाकर = जो हिंदू रूप चंद्रमा पर प्रकट हुआ है। अकारी = तीक्ष्ण। दहबारी = मेवाड़ में उदयपुर के समीप दहबारी नामक स्थान है, बादशाह वहाँ पहुँचा।

१७—कूंपौ० = कूंपावत उग्रसिंह वहाँ मृत्यु के उत्साह से बादशाह से जुटा और साँवळदास का पुत्र उदयसिंह भी उसी के सदृश है। इनको मुसलमानों की सेना ने मार्ग में रोका।

१८—कमँध घड़ा = राठौड़ों की सेना ने। पूरे = पूर्ण किया अर्थात् तृप्त किया। किलवांणी = मुसलमानों की सेना को। पड़ियौ = गिरा, मरा। पांणी = कांति। इण० = बादशाह उदयपुर आया और आजमशाह को चीतौड़ रखा।

आई खबर जरां अणचीती
विहारियां मैं करड़ी बीती।
अै राठौड़ प्रकोप अछाया
ऊपर गढ जालंधर आया ॥ १६ ॥
दिल्लीनाथ मदत इत दीजै
लड़तां वार फतैखां लीजै।
कूच कियौ सुण, छांड कमायौ
औरँग फेर अजैगढ आयौ ॥ २० ॥
करबा एक राह मन कीधौ
लेख प्रमांण धेख व्रत लीधौ ॥

दुहा

आप अजैगढ आवियौ, माप जके असमांन।
वेग सिहाय विहारियां, मेले मुकरब खांन ॥२१॥
डंड विहारी राठवड़, आया सोजत सीस।
थिर जोधांणो घेरियौ, किर त्रकुटाचळ कीस ॥२२॥

१९—जरां = जब । करड़ी बीती = कठिनता पड़ी । अछाया = आच्छादित, भरे हुए ।

२०—लड़तां० = लड़ते समय । फतैखां विहारी को सँभालना चाहिए। कमायौ = प्राप्त किए हुए (उदयपुर) को छोड़कर । अजैगढ = अजमेर ।

एक राह = सबको एक मुसलमान धर्म में करने का मन किया। लेख = फरमान के मुताबिक । धेख = द्वेष का व्रत धारण किया ।

२१—माप० = जो आकाश को माप सकता है । सिहाय = सहायता करने के लिये । मेले = भेजा ।

२२—डंड = राठौड़ विहारियों को दंडित कर । सीस = ऊपर । किर = मानों । त्रकुटाचल = लंका का पहाड़ । कीस = बंदरों ने ।

सौबायत इंद्र साह रै, राव दिसी तिण वार ।
गोयंददास पमार सँग, पूगी वेग पुकार ॥२३॥
आखी गोदै इंद्र सूं, विध सारी वधणौर ।
तुरत विचारी कूच री, सोच न धारी और ॥२४॥
त्रीज तणै दिन हल्लियौ, दसमी आयौ थेट ।
वरस छत्रीसै सुकळ पख, जेठ महीनै जेट ॥२५॥
सुणे दमंगळ देस रौ, कूच कियौ वस रात ।
मंडोवर डेरा किया, एकादसी प्रभात ॥२६॥
सुणी भड़ां अजमाल रां, आयौ राव चलाय ।
भड़ां सकाजां मारकां, वणी गरज्जां आय ॥२७॥
बोले भांण मुकन्न तण, जोधौ भड़ां समेत ।
सांमधरम्मी जूंझ मैं, कमी न राखी खेत ॥२८॥

२३—सौबायत० = राव इद्रसिंह के सूबेदार ने राव की तरफ पँवार गोयंददास को भेजा ।

२४—आखी = कहा । गोदै = गोयंददास ने । विध = हकीकत । सारी = सब । वधणौर = उस समय राव इंद्रसिंह वधनोर (मेवाड़) में था. वहाँ जाकर । धारी = विचार किया ।

२५—थेट = खास जोधपुर । जेठ = ज्येष्ठ मास । जेट = ज्येष्ठ, बड़ा (राव इंद्रसिंह) ।

२६—सुण = सुनकर । दमगळ = बखेड़ा, उपद्रव । वस रात = रात्रि में ठहरकर ।

२७—अजमाल रा = अजीतसिंह के । सकाजा = काम के, अच्छे । गरजा = गर्ज, चाह । अच्छे मार के सुभटों की चाह हुई ।

२८—भाण० = मुकन का बेटा, भांण । जोधौ = जोधा शाखा का राठौड़ । जूंझ मैं = जूझ में अर्थात् युद्ध करने में । खेत = रणक्षेत्र में ।

बोलै बंका राठवड़, सोनँग आद दुरंग।
खळ आयौ पूगे दिवस, सूरज ऊगै जंग ॥२९॥
खेतासर रवि ऊगतां, छायौ व्योम गरद्द।
वांना देठाळै भया, थया नगारे सद्द ॥३०॥
करण निवेधी बेघड़ा, सेधी सांम छळांह।
अस तौरे सांम्हा किया, फौरे सेल फळांह ॥३१॥

छंद नाराच

तुरंग वग्ग फौर तौर और वात रस्सए।
अड़े धड़े दुहूँ घड़े चड़े कड़े अरस्स ए॥
उचार मार मार वार वार सूर उच्चरे।
हुई किलक्क वीर हक्क पै उवक्क है मरे ॥३२॥

२९—खळ = शत्रु। पूगे दिवस = जिसके दिन पूरे हो गए हैं अर्थात् मृत्यु आ गई है।

३०—खेतासर = एक ग्राम का नाम है, जो जोधपुर से वायव्य कोण में १४ कोस है। व्योम = आकाश। वाना = वीर भटों के चिह्न। देठाळै = परस्पर दोनों सेनाओं की दृष्टि मिली। सद्द = शब्द।

३१—निवेधी = नैवेद्य करने अर्थात् खा जाने यानी मारने के लिये। सेधी = और स्वामी का युद्ध सिद्ध करने के लिये। अस = घोड़े। तौरे = चलाकर। फौरे = फिराया भालों के अग्र को।

३२—तुरंग० = घोड़ों की वागें फेर उनको चलाया। और वात रस्सए = दूसरी बात अर्थात् युद्ध के रसिक। अड़े धड़े = थोक बांधकर भिड़े। दुहूं घड़े = दोनों सेना के। चड़े कड़े = लगे हुए। अरस्स ए = आकाश में। वार वार = बारंबार। किलक्क = किलकारी। पै = पैर। हैहय = घोड़े।

मिले निम्रीठ बेग रीठ खाग रीठ मच्चए।
निरक्खि धीर खेत वीर प्रेत वीर नच्चए॥
वजंत घाव जूसणे निहाव उट्ठवेणियं।
सँग्राम पंड कैरवै कि खंड बांण सेणियं॥३३॥

प्रहार सेल पिंजरै उझेल खैंग पेलणी।
सिळाव वेग जांण मेघ दामणी सकेलणी॥
अजीत प्रीत काज बांण जीत जोत उच्चरै।
बिया उठी अणीक ढाव जैत राव बज्जरै॥३४॥

जुड़ै पड़ै लड़ै मुड़ै थुड़ै अनेक जंग मैं।
अनेक ऊकटै मिटै कटै तुटै सु अंग मैं॥

३३—नित्रीठ = नि:शंक। बेग रीठ = वेग से शस्त्र चले। खाग रीठ = तलवारों का घोर युद्ध हुआ। खेत = युद्धक्षेत्र में। वीर = धीर वीरों को देखकर। वीर = प्रेत और वीर नाचते हैं। वजंत घाव = डंके पड़ने से नक्कारे बजते हैं। जूसणे = युद्ध में। निहाव = युद्ध में। उट्ठवेणियं = वाणी होती है। पंड कैरवै कि = क्या पांडव-कौरवों का संग्राम है ? किंवा परशुराम और बाणासुर का युद्ध है ? (खंडपरशु परशुराम का नाम है उसके एक देश का कथन है)

३४—सेल = भाला। पिंजरै = शरीर में। उझेल = जोर से बढ़ाकर। खैंग = घोड़े को। सिळाव वेग = विद्युत् की रेखा के समान वेगवाली। जांण = मानों। दामणी = विद्युत्, बिजली। सकेलणी = तलवार। (सकेला जाति के लोहे से बनी हुई तलवार उत्तम होती है)। बांण = वाणी। बिया = दूसरे। अणीक = सेना को। ढाव = ठहराकर। जैत राव = राव इंद्रसिंह को जय। बज्जरै = बोलते हैं।

३५—थुड़ै = भिड़ते हैं। ऊकटै = उकटते हैं अर्थात् आगे बढ़ते हैं।

खड़ाखड़ी चरम्म तैं झड़ाझड़ी खड़ग्ग रा ।
गळे बळाबळी दळे करे बळी गरज्ज रा ॥३५॥

दुहा

खेतासर रिण खेत मैं, चांपो चाड अजीत ।
साहब मथुरादास तण, पड़ियौ दाख प्रतीत ॥३६॥
वागी खग्गां बे घड़ा, ज्यां वज्जै घड़ियाल ।
पाव न मंडे राव पिड़, गौ छंडे रिण ताल ॥३७॥
जीता भीच अजीत रा, इंदै पाई हार ।
आस परक्खे देस री, आस तजी तिण वार ॥३८॥
वरस छत्रासै जेठ सुद, तेरस सोम प्रभात ।
खेतासर तज हल्लियौ, राव मुरद्धर तात ॥३९॥

इति श्रीराजराजेश्वर महाराजा श्री अभयसिंघजी रौ जस राजरूपक मैं राव पतजे (ने) पातसाह मनोरथ भंग पंचम प्रकास ॥ ५ ॥

मिटै = मरते हैं । चरम्म तैं = ढालों से । गळे = गिल जाते हैं । बळाबळी = चारों ओर । दळे करे = चूर्ण करके ।

३६ = चांपो = चापावत । चाड = सहायता में । साहब = साहब सिह मथुरादास का पुत्र । पड़ियौ = मरा । दाख = दिखलाकर ।

३७—वागी = तलवार बजी । बे = दो । ज्यां = जिस तरह । मंडे = रोपे । राव = इंद्रसिंह । पिड़ = युद्ध में । ताल = समय में ।

३८—भीच = भट । इंदै = इंद्रसिह ने । परक्खे = देखकर । वार = समय ।

३९—संवत् १७३६ ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवार को प्रभात-समय में खेतासर को छोड़कर मारवाड़ का राव तात = जल्दी चला गया ।

छंद बेअक्खरी

खेतासर फिर राव खिसांणौ
वळ खड़िया देखवा सिवांणौ।
इण पर कमँध सिवांणे आवै
हसम साह दिस फेर हलावै ॥१॥
सुणी खबर जवनां पत सारी
वळ घेरे जाळोर विहारी।
लड़वा चाव कमधजां लागौ
भूप सवाळख चौड़ै भागौ ॥२॥
दिन दिन जोर वधै बळ दाखै
आंण अजीत तणो मुख आखै।
वादै सो हारै समवादी
सोबै सोबै वधै फिसादी ॥३॥

१—खिसांणौ = लज्जित हुआ। वळ = फिर। खड़िया = घोड़े चलाए। सिवांणौ = ग्राम और प्रांत का नाम है। यहाँ का किला अत्यंत विषम है। हसम = सेना। साह० = बादशाह की तरफ फिर चलाते हैं।

२—घेरे० = राठौड़ों ने जालोर के विहारियो को घेरा। चाव = उत्साह। कमधजां = राठौड़ों को। भूप सवाळख = सवाळख नागोर प्रांत को कहते हैं। संस्कृत शब्द सपादलक्ष है। सवाळख का राजा इंद्रसिंह।

३—दाखै = दिखाते हैं। आंण = आज्ञा। आखै = कहते हैं। वादै = जो वाद (युद्ध) करता है वह बराबर का हार जाता है। सोबै० = सूबे सूबे में फसाद बढ़ गया है।

औरँग सुण दाखी मुख ऐसी
जो अब करूँ सु देखौ जैसी।
औरँग सुण अत कोप उचारे
इंद्रसिंघ सूं निजर उतारे ॥४॥
सित्तर खांन बहौतर मीरां
आइस दाखै सास अधीरां।
द्रढ पण करख बाज लख दावै
देखौ लावौ आंख दिखावै ॥५॥
गढ फौड़ेवा चणौ गरब्बै
कुंजर कूं कीड़ी पग दब्बै।
ए विण खून हमारै आगै
जंगम तैं सुर के ध्रम जागै ॥६॥
मीरखांन चडौ रण मंडौ
खळ पकड़ौ मारौ बल खंडौ।

४—दाखी = कहा। निजर उतारे = दृष्टि फेर ली: कृपादृष्टि थी, वह जाती रही।

५—सित्तर० = सत्तर खान और बहत्तर अमीर बादशाह के मातहत हैं, उनको उतावला श्वास लेते हुए बादशाह यह आइस = आज्ञा दाखै = फरमाते हैं कि देखो, लवा (एक प्रकार की चिड़िया) दृढ़ता धरकर बाज को देखकर जोश की आँख दिखाता है।

६—गढ० = गढ़ को तोड़ने के लिये चना गर्व करता है और चींटी हाथी को पैर से दबाती हो, वैसे ये बिना अपराध हमारे आगे खड़े हुए हैं। जंगम = एक प्रकार के साधु जो देवों को नहीं मानते हैं। जंगमों से देवों का धर्म जागरित होता है।

७—हे अमीरो और खान लोगो! युद्ध-यात्रा की तैयारी करो, और

बोल पठायौ खांन तहव्वर
उठे पौरसी पूत अकब्बर ॥७॥

……………………………………

……………………………………

बोले साह सुणंते बेटै
खाटी बीच रांण चै खेटै ॥८॥

प्रथम करौ यां रै सुज पल्लै
झल्लौ बाज चिड़ी जिम झल्लै।
यांनै पकड़ निजर मौ आंणौ
रिण गुण पछै सँभाळूं रांणौ ॥६॥

हुई मुरद्धर ऊपर हल्लां
महा अप्रबळ जोर मुगल्लां।
पेख खड़ा सझ लक्खां खूरां
भीड़ बगत्तर अंगां भूरां ॥१०॥

युद्ध का आरंभ करो। खळ = शत्रु को। बोल = ऐसे कहकर। पौरसी = पौरुषवाला।

८—खाटी = विजय प्राप्त की। राण चै = राणा के। खेटै = युद्ध में।

६—यां रै सुज पल्लै = इन्हीं की तरफ। झल्लौ० = इन (राठौड़ों) को ऐसे पकड़ो कि जैसे बाज चिड़िया को पकड़ता है। निजर = दृष्टि में। मौ = मेरी। रिण० = पहले इस युद्ध को गिनो। सँभाळूं = राना को खबर लूँगा।

१०—हल्लां = सेना का प्रयाण। अप्रबल = अत्यंत बलवान्। खूरां = मुसलमान। भीड़ = पहनकर। भूरां = गौर वर्णवाले वीरों ने।

साजे सार छत्रीस सिपाई
त्यार हुआ रण मंडण ताई।
पाखर तुरां गयंदां पाखर
भूम परां सम जांणै भाखर ॥११॥

साहजादे निज अंग सनाहे
मांगे ग्राग दरग्गह माहे।
बोल खवास तास कट बंधे
कर डाढी धर सीस कमंधे ॥१२॥

तैसी झिलै झिलम मुख तट्टै
पूरण ससि कर ग्रहण प्रगट्टै ॥
कट धर तूण कबांण कसीसै
दुसह महा अंतक तक दीसै ॥१३॥

११—सार = तलवार। छत्रीस = छत्तीस, क्षत्रिय वंश। रण मंडण = युद्ध के भूषण। ताई = आततायी अर्थात् शस्त्र हाथों में लिए हुए। तुरां = घोड़ों के। गयंदां = गजेंद्रों पर पाखर डाले हुए हैं। भूम० = वे ऐसे मालूम होते हैं मानों पक्ष-सहित पर्वत हैं।

१२—सनाहे = बख्तर टोप धारण किया। दरग्गह = बादशाह के दरबार में। बोल खवास० = खवास को बुलाया, उसने उसकी कमर बँधाई। सीस कमंधे = राठौड़ों के ऊपर।

१३—झिलम = एक प्रकार का टोप जिससे शाहजादे का मुख ऐसा दीखता है कि मानों पूर्ण किरणवाले चंद्रमा के ग्रहण लगा है। कट = (कटि) कमर। तूण = भाथा। कसीसे = खींचता है। अंतक तक = काल के समान।

धांम सलांम पिता सूं धारे
आयौ बाहर गयण अधारे।
वस्र धर फील कियौ फिलवांणै
आरोह्यौ सीढी पग आंणै ॥१४॥
साथ निहाव थयौ नीसांणै
जग सामंद्र मथांणै जांणै।
मुग्गल तुंग चढे ससमाथां
सेन हडब्बड़ एकण साथां ॥१५॥
वाधे फौज अकब्बर वाळो
नीरध जांण पलट्टे नाळी।
प्रबळ रजी ऊठी चहुँ पासा
ऊडी भौम कि मिलण अकासां ॥१६॥
दिस मारू खुरसांण तणा दळ
वाधे जांण प्रलै चा बद्दळ।
त्रण तर थळां सिखर खुर तूटै
फौजां घसां परब्बत फूटै ॥१७॥

१४—गयण अधारे = आकाश को धारण करता हुआ। फील = हाथी। फिलवांणै = महावत। आरोह्यौ = चढ़ाया।

१५—निहाव = शब्द। नीसांणे = नक्कारे का। जग० = मानों जगत् रूप समुद्र को मंथन करना शुरू किया है। ससमाथां = सामर्थ्यवाले।

१६—वाधे = बढ़ी। नीरध० = मानों समुद्र की। नाळी = नहर चली। रजी = रज, धूलि। भौम = पृथ्वी। कि = क्या, मानो।

१७—दिस मारू = मारवाड़ की तरफ। खुरसांण = मुसलमानों का। प्रलै चा = प्रलय के। तर = (तरु) वृक्ष। थळां = स्थलों में। घसां = अविच्छिन्न चलने से।

आडै फट वट पड़ै अपारां
आगै पाछै पार न आरा।
म्रग मूझै सांभर सस माहे
सिंघ न जाय सकै बळ साहे ॥१८॥
कंक ककी मृ (भृ) त चील कुलंगां
अंबरचर सर छेदे अंगां।

………………………………

………………………………

प्रथी गगनचर जांण न पावै
खित लख जंतु अभख भख खावै ॥१६॥
अकबर पंथ सुणे ऊताळा
वळिया कटक तहव्वरवाळा।
धर · तज रांण तणी सुण धाया
ऊपर मेछ मुरद्धर आया ॥२०॥
चमू अकव्बर लोक सचेळौ
भिळियौ खांन तहव्वर भेळौ।

१८—आडैं फट = आड़े मार्ग फटकर। वट = मार्ग। पड़ै = हो जाते हैं। पार न आरा = वारापार नहीं है। म्रग० = (मृग) हरिण, साँभर और सस = खरगोश, ये सेना के अंदर फँस जाने से अमूझते हैं। सिघ० = सिह बल को धारण करके जा नहीं सकता है।

१९—कंक = काँक। ककी = कौआ। भृत = (परभृत) कोयल। कुलंगां = (कुलिंग) एक प्रकार की चिड़िया। अंबरचर = आकाश में फिरनेवाले पक्षियें के अंग बाणों से कट रहे हैं।

२०—वळिया = पीछे फिरे। रांण तणी = महाराणा की।

२१—चमू = सेना में। सचेळौ = बलवान्। भिळियौ = शामिल

ओपै जांण प्रलै अहनांणै
एकठ महण थया दोय आंणै ॥२१॥

दुहा

दव लग्गां वन अंतरै, छूटै पवन अछेह ।
धूम दिसा तिम धुंधळै, व्योम विरंगै खेह ॥२२॥
प्रज कंपै तारे छिपै, रन जंपै दिन रात ।
अंगां आगस केत ज्यों, झड़ लग्गौ वरसात ॥२३॥

छंद हणूफाल

जग आसवास अज्यास, दिस विदिस प्राण उदास ।
नर नार प्रेम अनेम, जळहीण जळचर जेम ॥२४॥
उर त्रास पार न वार, चित डरत करत विचार ।
जग धिनी पंखी जात, सुख पंख जेण सु गात ॥२५॥

हुआ । ओपै = शोभा देता है । जाण = मानो । अहनांणै = चिह्न-वाला । एकठ = (एकत्र) इकट्ठे । महण = समुद्र । आणै = आकर ।

२२—दव० = वन में दावानल लग जाय । अछेह = प्रबल । खेह = रज से ।

२३—जंपै = कहते हैं । अंगां = शरीरों पर । आगस० = (अग्नि) शस्त्रों की चोटों से बख्तर आदि मे जो अग्नि उत्पन्न होती है वह केतु के जैसी है और शस्त्रों की झड़ी लगी है वह वृष्टि की झड़ी सी है ।

२४—आसवास = रहना । अज्यास = विश्वासरहित हो गया है । नर० = स्त्री-पुरुष की प्रीति नियमरहित हो गई है ।

२५—त्रास = भय । धिनी = धन्य । पंखी जात = परिंद । जेण = जिसके । गात = (गात्र) शरीर पर ।

इक कहै चीटी एह, छित लखौ सुख अणछेह।
वस रहो सँग परवार, धर विवर बर निरधार ॥२६॥
इक कहत मोद अथाह, गिण मच्छ कच्छप ग्राह।
जळ गहर सागर जोर, तिण वीच थाह न तोर ॥२७॥
इक कहत गिरवर एह, दरसंत सब लघु देह।
अब वरण वांण सरीर, इम कहत दुरत अधीर ॥२८॥
उरदेव समरथ एक, उतपात पेख अनेक।
असहाय थांन अगार, विधि भरम क्रम विसतार ॥२९॥
कुळ सरब बळ बे कांम, रखवाळ सीताराम।

दुहा

मेछ उलट्टा मेदनी, फट्टा जांण समंद।
बळ छुट्टा भड़ कायरां, देख प्रगट्टा दुंद ॥३०॥

२६—एह = यह। छित =(क्षिति) पृथ्वी में। अणछेह = अपार। परवार =(परिवार) कुटुंब। धर विवर = पृथ्वी के बिल में। निरधार = निश्चय करके।

२७—अथाह = अपार। गहर = गंभीर। थाह न तोर = पता नहीं।

२८—गिरवर एह० = ये पर्वत सब छोटे शरीर के दिखाई देते हैं। तात्पर्य यह है कि सेना के पैरों से टूटकर पर्वत छोटे हो गए हैं। अब० = सबके अक्षर, वाणी और शरीर ऐसे कहते असह्य और धैर्यरहित हो गए हैं।

२९—उरदेव = हृदय में रहनेवाला एक अंतर्यामी समर्थ रहा है जो अनेक उत्पातों को देख रहा है। थांन = मंदिर सहायतारहित हो गए हैं। विधि० = ऐसे भ्रांति का विधान क्रम से विस्तार पा गया है। कुल और बल सब निकम्मे हो गए हैं।

३०—भड़ कायरां = कायर योद्धाओं का। दुंद =(द्वंद्व) युद्ध।

तिण वेळा तारण तरण, गिरधारी गोपाळ।
मिळियौ उर भ्रम मेटवा, हिंदू ध्रम रुखवाळ ॥३१॥
द्रढ बंधे सोनँग दुरँग, तेरह साख कमंध।
या मैं साहस अप्पियौ, ज्यां तट कुंभज सिद्ध ॥३२॥
साह विरत्तो मारवां, ग्राह जही गज वार।
जठै सुदरसण चक्र ज्यां, रिणमल्लां पण धार ॥३३॥
ज्यां रण लाखा सीहरै, सिर विण वीर सरीर।
त्यां वग्गा सुरतांण सूं, धारे प्रांण सधीर ॥३४॥
तुरक घड़ा नव तेरही, तेरह साख कमंध।
इळ धूंकळ कळि ऊपजे, ज्यां कपि दळ दसकंध ॥३५॥

३१—तिण वेळा = उस समय। गिरधारी गोपाळ = परमेश्वर है। उर भ्रम मेटवा = मन की भ्रांति मिटाने के लिये।

३२—तेरह० = राठौड़ों की १३ शाखाएं हैं, उनमें से सोनंग और दुर्गदास मजबूत बँधे। अप्पियौ = दिया। कुंभज = जैसे सिद्ध अगस्त्य ने समुद्र के तट को बल प्रदान किया था।

३३—विरत्तो = (विरक्त) अप्रसन्न। मारवा = मारवाड़ी लोगों पर। रिणमल्लां = राठोड़ों का। पण = प्रण, प्रतिज्ञा।

३४—ज्यां० = जैसे लाखा फूलांणी और सीहाजी का युद्ध हुआ था। त्यां = उसी तरह। वग्गा = लड़े।

३५—घड़ा = सेना। नव तेरही = नौ और तेरह, बाईस २२। बादशाह की सेना 'बाईसी' नाम से पुकारी जाती थी। और तेरह शाखा के राठौड़ हैं। इळ = पृथ्वी में। धूँकळ = उपद्रव। कळि = (कलह) युद्ध। दसकंध = रावण।

मिळ जोधा ऊदा कमँध, मेड़तिया ससमाथ।
करनौतां चांगां कनैं, भळ कूंपा भाराथ ॥३६॥

जैतमाल माला जठै, बाला साहस बंध।
पण जेता जुध प्रांधिया, भार धरा धर कंध ॥३७॥

देवराज गोगा दया, पातां रूपां पांण।
जूंझ तणा भर झल्लिया, उर सूरां ध्रम आंण ॥३८॥

धांरे ऊहड़ धांधलां, सांम तणौ छळ सार।
तेरह साखां सँभ मिले, लाखां गंजणहार ॥३९॥

३६—जोधा, ऊदा और मेड़तिया राठौड़ों की शाखाएँ हैं। करणोत, चांपा और कूंपा ये भी राठौड़ो की शाखाएँ हैं।

३७—जैतमाल, माला और बाला ये राठौड़ों की शाखाएँ हैं। जेता (जेतावत) राठौड़ों की शाखा है। जेतावत शाखा के राठौड़ों ने पृथ्वी का भार कंधे पर धारण करके युद्ध का प्रण किया।

३८—देवराज और गोगादे राठौड़ों की शाखाएँ हैं। दया = 'दहिया' राजपूतों के ३६ वंशों में से एक वंश है। ये 'दधीचि' मुनि के वंशज हैं। दहियों का शिलालेख संवत् १०५६ का परबतसर परगना मे, किणसरिया माता के मंदिर में मिला है। उसमें इनका पूर्वज दधीचि मुनि को लिखकर लिखा है 'कुलं दहियकं जातम्।' इनको राठौड़ों की आधी शाखा भी कहते हैं। पातां = पातावत। रूपां = रूपावत। ये राठौड़ों की शाखाएँ हैं। पांण = बल। जूंझ तणा = लड़ने का।

३९—ऊहड़ और धांधल राठौड़ों की शाखाएँ हैं। सांम तणौ = स्वामी के। छळ = युद्ध के लिये। सार = बल, तलवार। सँभ = (शंभु) सजकर। गंजणहार = नाश करनेवाला।

रिण राठोड़ां आधिआ, भाटी अंग अभंग ।
इळ छळ झल्ले ऊठिया, घल्ले बाथ निहंग ।४०॥
मच्छर और न संग्रहै, आ मछरी कां आद ।
अड़े कमंधां अग्गळी, विचत्रां हूँता वाद ॥४१॥
ईंदा आहव आगळां, पड़िहारां पण झल्ल ।
हरवल्लां आगै हुवा, चढे अवल्लां भल्ल ॥४२॥
खूमांणां सोनिगरां, कर ऊधरा सरीस ।
आद पमारां साम छळ, आया वंस छत्रीस ॥४३॥

छंद पद्धरी

खिलमांण हले सुरतांण कोप
उलटे समंद सम दुंद ओप ।
कमधजां अंग ऊतंग कस्स
रिण लग्गा जग्गा वीर रस्स ॥४४॥

४०—आधिआ = युद्ध में अर्द्धभाग लेनेवाले । अंग = शरीर । इळ = पृथ्वी में । झल्ले = धारण करके । बाथ = दोनों भुजा । निहंग = आकाश को ।

४१—मच्छर = जिस मत्सरता को दूसरा धारण नहीं कर सकता है । मछरी कां = चौहानों की आदि से प्रकृति है । अड़े॰ = राठौड़ों के आगे भिड़ते हैं । विचत्रां हूँता = मुसलमानों से । वाद = झगड़ा ।

४२—ईंदा = पड़िहारों की एक शाखा । आहव = युद्ध में । पण = नियम । हरवल्लां = हरोल में (सेना के आगे) होकर । अवल्लां = घोड़ों पर ।

४३—खूमांणां = सीसोदिया । सोनिगरां = चौहानों की शाखा । ऊधरा = ऊचा ।

४४—खिलमांण = मुसलमान । हले = चले । दुंद = (द्वंद्व) युद्ध में । ओप = शोभायमान । ऊतंग = (उत्तुंग) ऊँचे । कस्स = कसकर । जग्गा = जागरित हुआ ।

मच धांम धूम सर सेल मार
पड़ आस आस आठूँ पुकार।
दिन लाख घटे हैँवर दरक्क
जवनान पड़ै निस दिवस जक्क ॥४५॥
धाड़े पुकार पड़ लाखि धाड़
रवि उदय अस्त लग पंत्र राड़।
सालुळे विदळ कंदळ ससत्र
रँग सेल खगे न मिटै रगत्र ॥४६॥
राठोड जुड़ंतां पेख रांण
पेरियौ भीम अंगज प्रमांण।
विंध्याचल ओळै महावीर
सभ फौज आंण लग्गो सधीर ॥४७॥
जवनां राठोड़ां धुबे जंग
उण दिसा भीम आयौ अभंग।
सीसौद कमँध मिळिया सगाह
सादूळ जांण पहरी सनाह ॥४८॥

४५—मार = प्रहार। आस = आठों दिशाओं में। हैँवर = (हयवर) उत्तम घोड़े। दरक्क = ऊँट। जक्क = चैन।

४६—धाड़ = लुटेरों का समूह। राड = युद्ध। सालुळे = हमला किया। विदळ = शत्रुसेना ने। कंदळ = युद्ध में। ससत्र = (शस्त्र) आयुध। रँग = भालों और तलवारों का रगत्र (रक्त) रुधिर का रंग मिटता नहीं है।

४७—जुड़ंतां = लड़ते हुए। पेख = देखकर। रांण = महाराणा ने। पेरियौ = भेजा। ओळै = सदृश, आड़ में।

४८—धुबे = प्रबल वेग से युद्ध हो रहा था। सगाह = संबंधी, दृढ़ता के साथ। सनाह = बख्तर।

भड़ भिड़े कमँध अरजन्न भाय
इस दिसी भीम सीसोद आय ।
प्रतिदिवस अकस कंदळ अपार
संसार सुणे मेछां सँघार ॥४९॥
तन ग्रीध महासद मन त्रपत्त
पूरिया रहै नित सगत पत्र ।
जवनां समेळ दळ तुरँग जुंग
तिण वार मिळे नह टळै तुंग ॥५०॥
झड़िया सनाह तन तुरँग जीण
हुय गया मुगल दुख दहल हीण ।
पड़ झाट थाट छळ राट पाट
दिल्लीस जळे दळ वळे दाट ॥५१॥

दुहा

माच कमंधां मुग्गलां, यां जुद्धां खग आळ ।
अजक अपीधां अमल ज्यूं, विण कीधां रण ताळ ॥५२॥

४९—अरजन्न भाय = अर्जुन के समान। अकस = ईर्ष्या से। कंदळ = युद्ध।

५०—तन० = गृध्र पक्षियों के मन महासद = बहुत ताज़े शरीरों के मिलने से तृप्त हैं। सगत = शक्ति का। पत्र = पात्र। जुंग = ऊँट। तुंग = सेना का छोटा समूह।

५१—झड़िया = कट गए। सनाह = बख्तर। दहल = भय से। हीण = क्षीण हो गए हैं। झाट = शस्त्रों का प्रहार। थाट = समूह। छळ = युद्ध में। राट पाट = नष्ट भ्रष्ट हो गया। जळे = क्रुद्ध हुए। दळ वळे दाट = बादशाही सेनाएँ दट गईं।

५२—माच = घमासान युद्ध हुआ। यां = इस तरह। आळ = छेड़-छाड़ से। अजक = चैन नहीं पड़ता। अपीधां = बिना पिए। रण ताळ = रण में मैदान किए बिना।

इंद्रभांण मुकनेस रौ, ग्रह केवांण तरस्स।
आसमांन छिब आखियौ, भाई भांण सरस्स

तैं जोधां छळ झल्लियौ, धणी अजौ सिर धार।
कळ लग्गे जांणै कवण, विण वग्गी तरवार ॥५४॥
दिल्ली काल्हे साह सूँ, जोधारां कर झोड़।
आडे खंडै वज्जियौ, रिण मंड रिणछोड़ ॥५५॥
जोधा देखे सांम छळ, आ जोधां कुळवट्ट।
खग्ग न वग्गै पाधरौ, तां लग्गे ऊवट्ट ॥५६॥
हेक धकौ चौड़ै हुवां, असमर करां अदोस।
डेरां डेरां वत्तड़ी. डेरां डेरां जोस ॥५७॥

५३—केवांण = तलवार ले। तरस्स = युद्ध की तृष्णा से। आसमान छिब = आकाश को लगता हुआ। आखयौ = कहा। भांण = भांण इंद्रभांण का भाई था। उससे इंद्रभांण ने कहा। सरस्स = प्रीति सहित।

५४—योद्धाओं में तूने अजीतसिंह को शिर पर स्वामी मानकर युद्ध करना ठाना है; तलवार के बिना बजे युद्ध में लगा कौन जान सकता है ?

५५—जोधा रणछोड़ का स्मरण कराकर इद्रभाण भांण से कहता है कि कल दिल्ली में बादशाह के योद्धाओं से विवाद करके आड़ी तलवार युद्ध करता हुआ अर्थात् बेरोक-टोक तलवार चलाकर रणछोड़ लड़कर मरा है।

५६—सांम छळ = स्वामी का कार्य। कुळवट्ट = कुल का मार्ग है। पाधरौ = सीधी तलवार नहीं चले। तां लग्गे = तब तक। ऊवट्ट = उलटा मार्ग है, ऊजड़।

५७—धकौ = टक्कर, युद्ध। चौड़ै = प्रकट में। असमर = तलवार को। वत्तड़ी = वार्ता।

सूर धपाए सुजड़ां, तौ उर पावै तोस।
तोलै आभ भुजां बळी, बोलै सूर सरोस ॥५८॥

सार तरस्सै सूरमां, सारा साहसवंत।
सुजड़े लाधे सांम छळ, वाधे तेज अनंत ॥५९॥

छंद बेअक्खरी

यूं कँमधज्ज धरं धू अंबर
ज्यूं गंगा मेळे जोगेसर।
आदर जोध विरोध असंका
बंट रतन्नै ज्यां सुर बंका ॥६०॥

राजड़ रांण तणै हलकारै
अग्र कमंधां वात उचारै।
औ दीवांण तणा पत्र ईखो
समहर राखो मेळ सरीखौ ॥६१॥

५८—धपाए = तृप्त किए। सुजड़ां = कटारियों से। तोस = संतोष। आभ = (अभ्र) आकाश।

५९—सार = तलवार। तरस्सै = तरसती है। सारा = सब। सुजड़े = कटारियों से स्वामी संबंधी युद्ध मिलने से अनंत तेज बढ़ता है।

६०—यूँ = इस तरह। धू = मस्तक पर। अंबर = आकाश को। जैसे जोगेसर = महादेव गंगा को मस्तक पर धारण करते हैं। विरोध = युद्ध को योद्धा लोगों ने इस तरह निःशंक होकर आदरपूर्वक बाँट लिया है कि जैसे देवों ने चौदह रत्नों को बाँट लिया था।

६१—राजड़ = राजसिंह। ईखौ = देखो। समहर = युद्ध में।

खत्रवट सरम सदा थां खोळै
ओ हिंदवांण वचावौ ओलै।
समहर मौ दळ लियौ समेळा
भीम सहत खूमांणा भेळा ॥६२॥

एकठ बोल हुवै आपांणौ
जुध मेवाड़ जुदौ मत जांणौ।
सोनँग आद कमंधां सारां
वात सुणे मांनी सुविचारां ॥६३॥

कहियौ भीम हूंत कमधज्जे
सूर उदै आवौ दळ सज्जे।
दोनू तरफ लाज कुळ दाखौ
रूकां जार सरीखौ राखौ ॥६४॥

असुर न लेखौ जोस अफारै
हार जीत वस सिरजणहारै।
साच वाच द्रढ बंध सवाई
लेखब चौडै प्रात लड़ाई ॥६५॥

६२—खत्रवट = क्षात्रियपन की। खोळै = गोदी में है। ओलै = आड़ में। समहर = (समर) युद्ध। समेळा = शामिल होकर। खूमाणा = सीसोदिया।

६३—आपाणौ = अपना। सारां = सबों ने।

६४—भीम = महाराणा राजसिंह के पुत्र से। दाखौ = दिखाओ। रूकां = तलवारों का। सरीखौ = समान।

६५—लेखौ = गिनो मत, मत मानो। अफारै = जोश से भरे हुए। सिरजणहारै = सृष्टिकर्ता (विधाता) के। साच वाच० = सच्चे वचनों को सवाया दृढ़ करके। लेखब = देखो, गिनो, मानो।

उच्छव रूरां नूर अभीता
चाहि वधे किर भूखा चीता ।
सूर सधीर वीर तरसंते
आगम प्रात हुवौ निस अंते ॥६६॥
ऊठे बे दळ जोध अकारा
साझ सरीर तणा ध्रम सारा ।
कहि गंगा तन मंजन कीधा
दांन वितांन मांन करि दीधा ॥६७॥

दुहा

ब्रह्म कवच पंजर विसनु, रक्षा राम वचाय ।
ईस तणै बळ ऊठिया, अंबर सीस लगाय ॥६८॥
राठौड़ां उण वार रां, जोस पराक्रम जोर ।
की बड़वाग वज्राग की सिंघन आगन सोर ॥६९॥

६६—नूर = तेज, मुखकांति । चाहि = उत्साह । किर = मानों । तरसंते = तृष्णा करते हैं ।

६७—बे दळ = दोनों सेनाओं के । अकारा = तीव्र, तेज । साझ० = शरीर के सब धर्मों को साधकर । कहि गंगा = 'हरे गंगा, हरे गंगा' ऐसा कहकर । मंजन = स्नान किया । दांन वितांन = दान का विस्तार । मांन = आदर करके ।

६८—पंजर विसनु = विष्णुपंजर, रामरक्षा का पाठ करके । ईस तणै = परमेश्वर के । अंबर = आकाश में ।

६९—उण वार रां = उस समय के राठौड़ों के पराक्रम और बल का जोश ऐसा है कि क्या यह समुद्र का बड़वानल है, किंवा वज्र की अग्नि है, अथवा अग्नि और बारूद का संयोग हुआ है ।

अति खूंमाणां आरुहे, बेळच हिंदुसथांन ।
वीर सुरंगा ऊमगा, सिर लग्गा असमांन ॥७०॥
दळ मारू मेवाड़ दळ, ज्वाळा सेस सवाय ।
खबर तहव्वर खांन नूं, दी हलकारै जाय ॥७१॥

छंद त्रोटक

सुण मेछ खत्री जुध काज सजे
रस रुद्रस हासक वीर रजे ।
उर धीर अकब्बर पूठ इसौ,
जग मेघ प्रलै दध वेळ जिसौ ॥७२॥
अत कोप मुखां चख रोस अड़ै
झळ आग लगी किर दूंग झड़ै ।
जपते रसणा रुख वांण जुई
हित वादळ बीज सरोस हुई ॥७३॥

७०—खूमाणां = सीसोदिया । आरुहे = चढ़े । बेळच = सहायता के लिये । ऊमगा = उत्साहित हुए ।

७१—ज्वाळा० = शेषनाग से भी ज्वाला अधिक है ।

७२—रुद्रस = रौद्ररस और हास्यरस में वीर रँग गए । पूठ० = तहव्वरखान की पीठ पर शाहजादा अकबर ऐसा दीखता है जैसा प्रलय का मेघ, और समुद्र की वेला ।

७३ = अड़ै = युद्ध के सम्मुख उपस्थित हुए । झळ = ज्वाला । दूंग = स्फुलिंग, चिनगारियाँ । जपते = कहते हैं । रसणा = जीभ से । रुख = रूखी । वांण = वाणी । जुई = जुदी, अलग । बादल में बिजली कड़कती है वैसे वह वाणी प्रतीत होती है ।

हुइ साद नक़ीब सिताब हलां
इभ होदाय जीण वणे अललां।
मिळ अंग बगत्तर पक्खर मै
सज सार खड़ा लख इक्क समै ॥७४॥
उण वार तहव्वर जोर इसौ
जुध रांम दळां सिर कुंभ जिसौ।
घण मांण बधंतांय भीड़ घणौ
तनत्राण सहायक प्रांण तणौ ॥७५॥
घण टोप सिरै पग सार वटं
घट मेघ कि मेघ उच्चार घटं।
कड़ियां खग खंजर तूण कसै
तद पांण कबांण लई तरसै ॥७६॥
चव मेछ मुखामुख जोस चढै
पडवेस सभा निज मंत्र पढै।

७४—साद = शब्द । सिताब = जल्दी, शीघ्र । हलां = चलने के लिये। अललां = घोड़ों पर। बगतर० = सवारों और घोड़ों के अंग बख्तर और पाखरों में मिले हुए हैं। सार = तलवार को।

७५—कुंभ = कुंभकर्ण । घड़ = सेना । मांण वधंतांय = मान जिसका बढ़ाया जाता है। तनत्राण = कवच।

७६—वण टोप० = सिर पर टोप पहना हुआ है और पैरों में लोहे की सांकल है। वे ऐसे देखते हैं कि क्या यह मेघ की घटा है, किंवा मेघ की घटा गर्जना करती है। कड़िया = कमर में। पांण = हाथ में। तरसै = त्वरा से।

७७- चव = कहते हैं। मुखामुख = एक दूसरे के सामने। पँडवेस = बादशाह सभा में अपना मत्र पढ़ता है। आरुहबा = चढ़ने

इण तेज तुरंगम आरुहवा
चवियौ हुकमां तुर रोस चवा ॥७७॥
कर डौर उतंग हजूर कियौ
दुरवेसिय पाव रकाब दियौ ।
तुरही सुर भेर भणंकत ही (ई)
जद सद्द सनद्द दमांम जई ॥७८॥
अति सेन तहव्वर आरुहतै
मिळ लाख चले धुब एकमतै ।
तरणातप टोप बगत्तर यं
प्रतबंब चमंकत पक्खरियं ॥७९॥
रज भूधर व्योम आछाद रहै
वहते किर फूट समुद्र वहै ।
चर आतर प्रांण पगेस चले
दिख आया हिंदुसथांन दळे ॥८०॥

के लिये । चवियौ = कह्या । तुर = शीघ्र । रोस चवा = क्रोध चूता हुआ ।

७८—कर डौर = हाथ में लगाम ले । दुरवेसिय = मुसलमान (तहव्वर खान) ने । रकाब = पागड़ा । तुरही = वाद्यविशेष । भेर = वाद्यविशेष । भणंकत ही = उक्त वाद्य के शब्द का अनुकरण है । सद्द = शब्द । सनद्द = नाद के साथ । दमांम = नक्कारा । जई = विजय करनेवाला ।

७९—धुब = क्रोध से जलते हुए । तरणातप = सूर्य की धूप से । प्रतबंब = प्रतिबिंबित होकर ।

८०—भूधर = पहाड़ । चर = गुप्त दूत । आतर = (आतुर) जल्दी । पगेस = पैरों के स्वामी अर्थात् जल्दी चलनेवाले ।

दूहा

दूतां आखी बत्तड़ी, आयौ तहवरखांन।
नर हैंवर संख्या किसी, कोइ गैंवरां न ग्यांन ।।८१।।
सुणी कमंधां ऊधरां, उत मेवाड़ां वत्त।
साथे साहस झल्लियौ, घाते हात परत्त ।।८२।।
सार तरस्से झल्लिया, आभ परस्से बाह।
जीण तुरंगां बंकड़ां, भड़ां सनाह सनाह ।।८३।।
जमडड्ढां तरवारियां, सेल्ह बँदूकां सत्थ।
आगे धूप उखेविया, पाछे झाली हत्थ ।।८४।।
मारू जोधां रिणमलां भले सऔधां भार।
जांण हणू धावण मतै, द्रोण उठावण वार ।।८५।।
ऊपर लाखां आवतां, सुण साखां त्रयदस्स।
खोड़ खळां दळ अप्पवा, कोड़ जिसौ सांहस्स ।।८६।।

८१—आखी = कही। हैंवर = (हयवर) उत्तम घोड़े। गैंवरां = (गजवरों) हाथियों का। ग्यांन = (ज्ञान) गिनती है।

८२—ऊधरां = ऊँचे। झल्लियौ = धारण किया। घाते हात परत्त = प्रतिज्ञा लेकर।

८३—तरस्से = तृष्णातुर होकर। आभ = (अभ्र) आकाश को। बाह = (बाहु) भुजा। मनाह = स्वामी सहित। सनाह = कवच।

८४—जमडढ्ढां = कटारियाँ। उखेविया = धूप मे धूपित किया। पाछे० = पीछे शस्त्र हाथों में लिए।

८५—रिणमलां = राव रणमलजी के वंशज। सऔधां = अपने अपने ओहदों का भार लिया। जांण = मानों। हणू = हनुमान्। द्रोण = द्रोणाचल पर्वत। वार = समय।

८६—साखां त्रयदस्स = तेरह शाखा के राठौड़। खोड़० = शत्रुओं की सेना को। खोड़ = दोष देने के लिये जिनका साहस करोड़ जैसा है।

अंग सनाहां संग्रहे, साझ दुबाहां सार।
गज कूंभां रिण गंजवा, चढ ऊभा तिण वार ॥८७॥
विचत्रां रज धू धर विचै, ऊलां कीध प्रमांण।
बहरंगी चीधां लखी, अवरंगी नीसांण ॥८८॥
सद्द नगारां वज्जियां, मुख सारां हलकार।
किया करारां सांमुहा, जूंझारां तोखार ॥८९॥
पैलां वागां झल्लियां, ऊलां देख तुरंग।
वूठा बांण दुहूँ दळां, छूटा मूठ खतंग ॥९०॥

छंद अर्धनाराच

उभे द्ळे उचारयं, मचे सु मार मारयं।
विसक्ख पारवारये, भड़ां सनाह भारये ॥९१॥

८७—अंग० = शरीर पर कवच धारण करके। दुबाहां = घोड़ों को। सार = तलवारों को। गजवा = गंजन करने के लिये।

८८—विचत्रा० = मुसलमानों ने ध्रुव और पृथ्वी के मध्य में रज ही रज कर दिया। उसी के समान इस ओर की सेनावालों ने किया। बहरंगी = बहुत रंगोंवाली ध्वजा, झंडा। चीधाँ = राजपूतो ने।

८९—सद्द = शब्द। सारा = सबके। हलकार = ललकारना। करारां = सामर्थ्यवाले। जूंझारां = युद्ध करनेवालों ने। तोखार = घोड़े।

९०—पैलां० = उधर के लोगों को घोड़ों की बागें पकड़े देखकर इधर के लोगों ने घोड़ों की बाग उठाई। वूठा = बरसे। खतंग = अंग में क्षत करनेवाली तलवार मूठ से छूटी।

९१—मचे = मार मार ऐसा शब्द मच गया, चारों ओर फैल गया। विसक्ख = (विशिख) बाण। गारवारये = पार निकलते हैं।

थई सु ओप थेघए, मिले समुद्र मेघए।
उभै दिसा अणडुरं, तुरंग कीध आतुरं ॥९२॥
पमंग वेग उप्पड़े, वणे सनूर वंकड़े।
खुले अपार खग्गयं, अणी सकत्ति अग्रयं ॥९३॥
गुणी परक्खवा गमा, उचार बांण ओपमा।
प्रलै क ज्वाल पस्सरै, अनंत जीभ आतरै ॥९४॥
हुवै कि हाक हक्कयं, तवै क्रतंत तक्कियं।
घड़े अनंत धारयं, सजोर घाव सारियं ॥९५॥
वणे कवी विचारणे, स ओपमा उचारणे।
गिणे गिरंद गातयं, प्रहार वज्रपातयं ॥९६॥
अनेक हिंदु आसुरं, प्रकोप सेल पिंजरं।
वहै सहेत वारयं, मुणंत मार मारयं ॥९७॥

९२—ओप = शोभा। थेघ = जेट, ऊपर ऊपर चुना हुआ ढेर। कवचों पर बाणों का थाक लग गया है। वह ऐसी शोभा देता है मानों समुद्र से जाकर बादल मिले हैं। अणडुरं = निर्भय। आतुरं = तेज।

९३—पमंग = घोड़े। अणी = अग्र। सकत्ति = तलवार का।

९४—गुणी० = गुणी लोग परीक्षा करना जानकर। बांण = वाणी। ओपमा = उपमा। प्रलै० = क्या प्रलय की ज्वाला फैलती है। किंवा शेषनाग जीभ निकालता है।

९५—तवै = कहते हैं। क्रतंत = (कृतांत) काल। तक्कियं = ताकता है। घड़े = शरीर पर। धारयं = तलवारों की धारें। सारियं = तलवार के।

९६ = गिणे० = मानो पर्वतेंद्र के शरीर पर वज्रपात होता है।

९७—आसुरे = मुसलमान। सेल = भाला, कुंत। पिंजरे = शरीर पर। वहै० = वारसहित शस्त्र चलाते हैं। मुणंत = कहते हैं।

खणंकि खाग खग्गए, अकाळणी उमंगए।
सीसोद जीवणी दिसा, भिमेण सेन भीमसा ॥९८॥
कमंध स्यांम कांमयं, जुटे अरद्ध जामयं।
मुड़े घड़ा मळेछणी. विचार धार भज्जणी ॥९९॥

छप्पय

प्रथम जई पँडवेस, सुतन मुकनेस सँपेखे
वाजराज ऊधरे, लेख गज वाज अलेखे।
अत सतेज ओरियो, मधी अण जेज मुगल्लां
सेल्ह झोक सायक्क, तेग साबळ कर तँडलां।
वधिया कराग खग वाहते, रूक जाग चतुरंगिणी
विचत्राण जुवांणां वज्जियौ, इंद्रभांण पहले अणी ॥१००॥

९८—खग्गए = ख (आकाश) में गमन करनेवाली अर्थात् ऊँचे उठाई हुई तलवार। खणंक शब्द करती ऐसी प्रतीत होती है कि मानों काली सर्पिणी उत्साह-युक्त हो रही है। भीमेण = सीसोदिया भीम को सेना भीमसेन के समान दक्षिण की ओर है।

९९—कमंध० = राठौड़ स्वामी के कार्य के लिये अर्द्ध रात्रि में जुटे। मुड़े० = मुसलमानां की सेना ने भागना विचारकर पीछे मुँह फेर लिया।

१००—पँडवेस = बादशाह ने। मुकनदास के पुत्र इंद्रभाण को। सँपेखे = देखा। जिसने अपने वाजराज = घोड़ों के राजा को। ऊधरे = उठाया। अलेखे = असंख्य हाथियों और घोड़ों को। लेख = देखकर। ओरियो = सेना के मध्य में डाला। अण जेज = बिना देरी के। सेल्ह = भालों को। झोक = झुकाया। सायक्क = (सायक) बाण। तेग = तलवार। साबळ = बरछी। तंडलां = तोड़कर। कराग = (कराग्र) हाथ। रूक = तलवार से चतुरंगिणी सेना को जागरित करके। विचत्राण = मुसलमान सिपाहियों से सेना की अनी पर सबसे प्रथम लड़ा।

वार बार वावरे, सार ऊपरे सनाहां
वीज जांण वादळे, मिळे ऊछळे मजाहां।
उरड़ सेन असपती, पड़े झड़ सार अपारां
धड़ धारां ऊधड़े, सेल ह्वा वार प्रहारां।
जवनांण दळे वीजूझळे, देख भले कुळ देस रौ
इँद्रभांण खगे वढ ऊजळे, मिळे जोत मुकनेस रौ ॥१०१॥
सूरजमाल दुझाल, नेज गज ढाल निहारे
फळ साबळ फोरियो, विड़ंग ओरियौ वधारे।
भींव सुतण भाराथ, भिड़े दूसासण भत्ती
अणी धार ओझड़ां, सार वाबार सगत्ती।
अरि झाड़ खगे अगजीत छळ. पड़े क्रीत खाटे पटै
धर आध जकौ ऊदां धरा, आहव आध न औ हटै ॥१०२॥

१०१—वार० = बारंबार काम में लाते हैं। सार = तलवार को। वीज = विद्युत्। मजाहां = मध्य में (बादल के)। उरड़० = आगे बढ़कर। धड़ = तलवारों की धारों से शरीर खुल रहे हैं। सेल० = भालों के वार और प्रहार हो रहे हैं। दळे = नाश करके। वीजूझळे = तलवार से यवनों का। वढ = कटकर।

१०२—दुझाल = दानी और वीर। नेज = भाला। गज ढाल = बड़ी ढाल को देखकर। फल साबल = भाले का अग्र भाग। विड़ंग = घोड़े को। ओरियौ = सेना के बीच में चलाया। वधारे = बढ़कर। भींव सुतण = भीम का पुत्र (सूरजमल)। भाराथ = युद्ध में। दूसासण भत्ती = दु:शासन की नाईं। अणी = भाले की नोक। धार = तलवार की धार के। ओझड़ां = झटकों से। सगत्ती = बरछी को काम में लाकर। अरि० = शत्रुओं को तलवार से गिराकर। पड़े० = गिरकर। क्रीत = कीर्ति को। खाटे पटै = पट्टे में लिखा लिया। धर० = ऊदावतों की पृथ्वी का आधिया युद्ध में भी आध मे नहीं हटा।

दुहा

अजवसिंघ ऊदाहरौ, जोड़े सूरजमाल।
पड़ियौ घोड़ै मीरजां, आ मोड़े गजढाल ॥१०३॥
जैतहथा जैताहरा, सांम्हा जैत सजोड़।
पूगा हाथी खांन रै, देता कुंत धमोड़ ॥१०४॥
वेळा तिण दळ वज्जियौ, कूंपौ कान्ह तरस्स।
अंगां डोळे कुंजरां, लग्गां सीस अरस्स ॥१०५॥

छप्पय

रोहड़ भड़ वंकड़ै, सेल्ह पद्धर कर तोले
अस चीणौ ओरियौ, रुद्र जाडां धमरोळे।
वध मोहरै वाजियौ, कान्ह जजमान सकज्जां
मांम काज कुळ लाज, राज लख आज गरज्जां।

१०३—ऊदाहरौ = ऊदा का वंशज। जोड़े = सूरजमल के सदृश। पड़ियौ० = गिरा, मरा। मीरजां के घोड़े और उसकी बड़ी ढाल को नष्ट करके।

१०४—जैतहथा = जय जिनके हाथ में है। जैताहरा = जैता के वंशज, जैतावत। सजोड़ = जैता के सदृश। देता० = भाले का प्रहार करते हुए। तहवरखान के हाथी तक पहुँचे।

१०५—वेळा तिण = उस समय। कूंपौ = कूंपावत कान्हा। तरस्स = युद्ध की तृष्णा-युक्त होकर। अंगां० = हाथियो को भगाता हुआ।

१०६—रोहड़ = रोहड़िया बारहठ चारण। अस चीणौ = चीणे रंग का घोड़ा। ओरियौ = सेना के मध्य में डाला। रुद्र = मुसलमानो को। जाडां = खूब। धमरोळे = नष्ट करता हुआ। वध मोहरै = सबसे आगे बढ़कर। वाजियौ = लड़कर मरा। सकज्जां = यजमान का कार्य करने-

खळ प्रबळ पाड़ पड़ियौ खळे, जस प्रकास राखे जरू
तज छोत मरण उपजण तणी, भिळे जोत भी मंगरू ॥१०६॥

दुहा

खळ इतरा पड़िया खगे, रिण नाडूल तरस्स।
सैंतीसै सतरै सँमत, आसू सुद चवदस्स ॥१०७॥

छंद बेअक्खरी

सारां मार परक्खे संची
खांन तहव्वर वागां खंची।
हेकण दिस था सार हिलोळौ
आहाडां कीधौ दळ ओळौ ॥१०८॥
कळ रोद्रां बळ दाख कमंधां
कीधा खग्ग सुरंगा कंधां।
ऊभा पाय फतै असमांनी
सारे चूर घड़ा खुरसांणी ॥१०९॥

वाला। खळ=शत्रुओं को। पाड़=गिराकर। खळे=रणभूमि में। जरू=दृढ़। तज०=जन्म-मरण की छूत को त्यागकर ज्योति में मिल गया। भीमंगरू=भीम का पुत्र (कान्हसिंह)।

१०७—खळ=रणभूमि में। इतरा=इतने। खगे=तलवार से। रिण नाडूल=नाडूल के युद्ध में। तरस्स=युद्ध की तृष्णा से। संवत् १७३७ आश्विन सुदि १४ चतुर्दशी को।

१०८—सारां०=तलवारों की सची मार देखकर। हेकण दिस था=एक दिशा से। सार हिलोळौ=तलवार का चलाना। आहाड़ा=सीसोदियों ने। दळ ओळौ=फौज के चारों तरफ।

१०९—कळ=युद्ध में। दाख=दिखाकर। सुरंगां=रुधिर से रँगे हुए। असमांनी=अकस्मात्। सारे०=तलवारों से मुसलमानों की सेना को चूर्ण करके।

आखे भींव भडां आहाड़ां
मोटी सेध खटी मेवाड़ां।
सू जुध बंध कमंधां साथे
भिड़िया जोड़ भला भाराथे ॥११०॥

भई घात रण वात अभूती
रांण वडी गिणसी रजपूती।
पैलां दळां भीम जस पायौ
इण दिस जैत कमंधां आयौ ॥१११॥

सूं दळ हिंदू तुरकां सारा
आदर पाटा बंध अपारा।
वेखे हाथ कमंधां वाळा
चिंतव खांन तहव्वर चाळा ॥११२॥

आखी जंग तणी कथ एती
सारी विवर अकब्बर सेती।

११०—आखे = कहता है। आहाड़ां = सीसोदियों को। सेध = सिद्धि। खटी = उपार्जन की। मेवाड़ां = मेवाड़ के वीरों ने। सू जुध० = राठौड़ों के साथ तुमने युद्ध का बंध अच्छा बाँधा।

१११—अभूती = जो प्रथम नहीं हुई थी। पैलां दळां = दूसरी सेना में। जैत = जय।

११२—सारा = हिंदू और तुर्क सबने (घायलियों के) असंख्य पट्टे बाँधने का आदर किया। वेखे = देखकर। चिंतव = चिंता करने लगा। चाळा = उपद्रव के विषय में।

११३—आखी = कही। एती = इतनी। सारी = सब। विवर =

अै राठौड़ हुवै ज्यां आगै
भिड़तां ऊला पैला भागै ॥११३॥
सूर महा दीठा बळ साहे
मो नाडूल लड़ाई माहे ॥

दुहा

अकबर सूं मिलतां समौ, कहियौ तहवर खांन।
आज न को जग आरँभै, मोनँग दुरँग समांन ॥११४॥

इति श्रीमहाराज राजराजेश्वर श्री अभयसिंघजी रो परम जस
रूपक मैं रावळे साथ नाडूल लड़ाई कीवी सो
विगत षष्ठ प्रकास ॥ ६ ॥

विवरण करके, ब्यौरेवार। सेती = से। ऊला = इधरवाले। पैला = उधरवाले। बळ साहे = बल को धारण किए मो = मैंने।

११४—मिळतां समौ = मिलते ही। आरँभै = युद्ध कर सकता है।

छंद बेअक्खरी

बोले इण पर खांन तहव्वर
घांण मथांण हुवण दिल्ली घर।
पख हिंदू ध्रम थया प्रमेसर
आदरयो घर वेध अकब्बर॥ १॥
बोल नवाब सरस द्रढ बंधे
सुत पितु हूँत महा छळ संधे।
यूं रिम सूरत सूत प्रबंधे
नेम लियौ विधि जेम निमंधे॥ २॥

गाथा

आप विचार उपाए, होवणहार वात पर हत्थे।
आसा वार न पारं, विधि तिण ज्यास थयौ पर वस्से॥ ३॥
जो रचना जगपत्ती, लोतै आळ भ्रमे त्रयलोकं।
सोई सत्यं सद्रढं, रेखा सार अंक रजपत्ती॥ ४॥

१—इण पर = इस तरह। घाण मथांण = उथल-पुथल होनेवाला है। पख = पक्ष में। वेध = विरोध।

२—बोल नवाब = तहव्वर खान को बुलाकर। सरस० = दृढ़ प्रीति बाँधी। विधि = विधाता ने। जेम = जिस तरह। निमंधे = रचा है।

३—विधि तिण = (आशा का अंत नहीं है) उस विधान से। ज्यास = विश्वास।

४—जगपत्ती = (जगत्पति) परमेश्वर की जो रचना है, उसके। लोतै आळ = भ्रमण करते हुए जंजाळ (चक्र) में त्रिलोकी भ्रमण करती है। गीता में कहा है, 'भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया'। सोई० = वही सत्य और सद्रढं = दृढ़, अविचल है। रेखा० = राज्य की प्राप्ति में। रेखा = कर्म-रेखा ही सारभूत है। कहा है 'ललाटपट्टे लिखितं विधात्रा'।

दुहा

अकबर तहवर खांन इम, उर निज गुंज उपाय।
दळ सोनग्ग दुरग्ग रै, दीना दूत पठाय ॥ ५ ॥
पत्र लिखावै प्रीत सूं, आप धरम चौ आंण।
उर संसे यूं छेदियौ, कर कर वीच कुरांण । ६ ॥
अकबर तहवर बूझनैं, मेले ताजतखांन।
सैंत्रीसै रा माह वद, नमि रस थयौ निदांन ॥ ७ ॥
आवी खबर अचींतियां, विसमै जैसी वत्त।
तद राठौड़ै बूझियौ, दुरगै आसावत्त ॥ ८ ॥

छप्पय

एक कहै अवरंग, एह आलोच्च अकब्बर
एक कहै किम एक, एह ढिल्ली ठग आसुर।

५—गुंज = सलाह की। (यहाँ सलाह लिखी नहीं है, परंतु अन्य इतिहास-पुस्तकों में लिखा है कि अकबर और तहवरखान ने यह सलाह की कि शाहजादा अकबर बादशाह हो जावें और वजीर तहव्वरखान रहे। इस विचार से) सोनग और दुर्गदास की सेना में अपने दूत भेजे।

६—धरम ची = धर्म की। आंण = शपथ। उर० = मन का। संसे = संशय, इस तरह मिटाया।

७—अकबर० = अकबर ने तहव्वरखान को। बूझनैं = पूछकर। ताजतखान को राठौड़ों के पास भेजा। संवत् १७३७ माघ बदी ९ को। रस = प्रीति। निदांन = प्रथम।

८—अचींतियां = अकस्मात्। विसमै = आश्चर्य जैसी बात है। आसा-वत्त = आसकरण के पुत्र दुर्गदास से।

९—एक० = कितने ही राठौड़ कहते हैं कि औरंगजेब और अकबर ने यह विचार शामिल होकर किया है। कोई कहता है कि दोनों एक कैसे हो सकते हैं! क्योंकि दिल्ली का म्लेच्छ ठग है। कोई कहता है कि अपने

एक कहै आप रै, कियौ मत स्वारथ कज्जे
एक कहै अणगंम, रीत अण प्रीत सु रज्जे।
राठौड़ विचारें ता परम, आप आप मत उच्चरे
सोनंग दुरग अणसंक सो, संक न काँई संभरे ॥९॥

एम दुरग आखियो, सुणौ कमधां समरत्थां
हांण लाभ जै हार, हुई करतार सु हत्थां।
आध कोस अंतरें, कटक आपणौ चलावां
न को रहां अण सोज, न कूं आलोज उपावां।
सुत साह माल आपै सु तो, मिळ लीजै छळ मंत्रणे
कुण वाद छळे राठौड़ कुळ, आद परप्पण अप्पणे ॥१०॥

सूर सरम संग्रहे, भरम छंडे कमधज्जां
मेळ कियौ मेछ सूं, सूर सामंत सकज्जां।

स्वार्थ के लिये एकमत हो गये हैं। कोई कहता है कि यह रीति अणगंम = समझ में नहीं आती; क्योंकि इनमे परस्पर प्रीति नहीं है, राजी कैसे हो सकते हैं? ता = उस बात को। संभरे = किसी शंका को स्मरण नहीं करते हैं।

१०—एम = इस तरह। आखियौ = कहा। जै = जय। करतार = कर्ता, ईश्वर के। सोज = चिंता। निश्चित भी न रहना चाहिए, और मन में कोई विचार भी न लाना चाहिए। सुत० = बादशाह का पुत्र (शाहजादा अकबर) माल = धन देता है वह तो मिलकर ले लेना चाहिए। छळ० = कपट की सलाह से। वाद = युद्ध में। छळे = कुटिल नीति से जीत सकता है। परप्पण = सामर्थ्य।

११—सूर० = शूरवीरता की शर्म को धारण किया और भ्रम को त्याग दिया। कमधज्जां = राठौड़ों ने। सकज्जां = कार्य करनेवाले। तिण

मिळे दुरग सोनंग, हुवौ तिण कोल तहव्वर
विखमपणौ वारियौ, छत्र धारियौ अकब्बर।
विसतरी वात सारी विसव, अणकारी उतपात सी
अजमेर कांन अवरंग नैं, सुण लग्गी म्रत घात सी ॥११॥

दुहा

औरँग साह महाबळी, विसव तणै बडवाग।
रीस तरस्सी पूत सिर, सोर परस्सी आग ॥१२॥

छंद बेअक्खरी

इम पतसाह सुणे अकुळायौ
अहि जांणै जूवळ तळ आयौ।
भिळिया जांण सुरा विख भेळा
सोर अगन किर थया समेळा ॥१३॥
वाघ अचिंत किणहि वतळायौ
प्रलै समौ किर अंतक पायौ।
सिव चै नयण कि आग सिळग्गी
ज्वाळा सेस फणे किर जग्गी ॥१४॥

कोल = उस नियम पर पक्का हुआ। छत्र० = अकबर बादशाह बन बैठा। विसतरी – फैल गई। विसव = (विश्व) जगत् में। अणकारी = न की जावे जैसी, अनहोनी। म्रत घात सी = मृत्यु की चोट हो जैसी।

१२—विसव तणै = (विश्व का) जगत् का। बडवाग = वाड़वानल। रीस = क्रोध। तरस्सी = बढ़ी।

१३—जांणै = मानों। जूवळ तळ = पैर के नीचे। जांण = मानों। समेळा = शामिल।

१४—समौ = समय। अंतक = काल, मृत्यु। सिव चै = महादेव के। कि = क्या, मानों। सिळग्गी = प्रज्वलित हुई।

सू मध जेठ कळाधर सारी
आयौ रवि ज्यौं किरण अकारी।
पंड कोपियौ किनां धार पण
वीरभद्र दिख ज्याग विधूंसण ॥१५॥
बोले साह सगाह महाबळ
सेना तोछ तपस्या सब्बळ।
सुणे चलायौ पूत सप्रांणौ
अकबर गंजसि को आपांणौ ॥१६॥
साख अनंत लाख भड़ साथे
मग मेलांण दियौ सुण माथे।
छत्र दिली मन संभ्रम छायौ
ऊपर चाल अकब्बर आयौ ॥१७॥
आंणे खबर फिरे ओहट्टा
वाटां दूत थया नट-वट्टा।

१५—मध जेठ = ज्येष्ठ मास के मध्य में। कळाधर सारी = सब (सहस्र) कलाओं को धारण करके। अकारी = अतितीक्ष्ण। पंड = (पांडव) अर्जुन। किना = मानो। दिख ज्याग = दत्त प्रजापति का यज्ञ विध्वस्त करने के लिये।

१६—सगाह = गर्वसहित। तोछ = तुच्छ। सब्बळ = (सबल) प्रबल। सुणे = बादशाह ने सुना कि सप्रांणौ = बलवान् पुत्र ने चढ़ाई की है। गंजसि = दंड देवेगा। आपांणौ = अपना अथवा बलवान्।

१७—साख अनंत = असंख्य शाखाओं के। मेलांण = मुकाम। छत्र दिली = दिल्ली के छत्रधर औरंगजेब के।

१८—आंणे०—बादशाह के दूत खबर लाकर। ओहट्टा = पीछे लौटे। वाटां = रास्तों में। थया = हुए। नटवट्टा = नट के वट्टों के समान।

अति सोचे पतसाह अछांने
खिण सज्या खिण तारतखांने ॥१८॥
उड रहियौ मन लाग अलंगे
गुड्डी जांण भ्रमे गयणांगे ।
ऊभा दास खिजमती अग्गी
ताव विताव लखै टगटग्गी ॥१९॥
वाचा साच न दक्खै वांणी
पै वीसार मँगावै पांणी ।
घट सोचै डाढी कर घालै
सोनँग दुरँग तणौ छळ सालै ॥२०॥

दुहा

अकबर लक्खां ऊँबरां, कीधां साथ कमंध ।
साह सहंसां आठ सूं, नीम अथाह निमंध ॥२१॥

अछांने = प्रकट । खिण = (क्षण) क्षण भर में शय्या पर और क्षण भर में तहारत में जाता है ।

१९—उड़० = बादशाह का मन उड़ रहा है, अलंगे = बहुत दूर जा लगा है । गुड्डी = पतंग । गयणंगे = (गगन) आकाश में । अग्गी = आगे । ताव० = गर्म और ठंढे मिजाज को लखनेवाले । टगटग्गी = टकटकी लगाए ।

२०—वाचा० = वाणी में वचन साच न दिखलाता है । पै = (पयस्) दूध । वीसार = विस्मृत होकर । पांणी = (पानीय) जल । घट = मन में सोच करता है और दाढ़ी में हाथ डालता है । (यह अतिशय शोक की सूचक चेष्टा है) । छळ = कपट, काम । सालै = हृदय में शल्य सा लगता है ।

२१—ऊँबरां = उमराव । नीम० = ऊंडी नीव बांधी ।

सत्थ न को बळ हत्थ के, नां जीपै छळ मत्त।
जै पांमै रिप संग्रहै, तप हूंता छत्रपत्त ॥२२॥

वार्ता

औरंगसा पातसा आसुर अवतार,
तपस्या के तेजपुंज एक से विसतार।
माप का विहाई सा प्रताप का निदांन,
मारतंड आगे जिसी जोतसी जिहांन।
जाप का पेगंबर आप का दरियाव,
ताप का सेस ज्वाळ दाप का कुरराव।
सकसे का जैतवार अकसे का वाई,
अरिदळ समुद्र आप कुंभज के भाई।
रहणी मैं जोगेस्वर वहणी मैं जगदीस,
ग्रहणी मैं सिवनेत्र सहणी मैं अहीस।

२२—सत्थ० = कोई साथ नहीं है। बळ = हाथों के बल। नां जीपै = जय नहीं पाते हैं। छळ = युद्ध में। किंतु जै = जय पाते हैं। रिप = (रिपु) शत्रुओं को पकड़ते हैं। तप हूंता = तपस्या के प्रभाव से। छत्रपत्त = (छत्रपति) राजा की।

वार्ता—आसुर = दैत्य का अवतार। पुंज = समूह। माप का० = प्रमाण का। विहाई सा = आकाश के समान। निदांन = (निधान) भंडार। मारतंड = (मार्तंड) सूर्य। आप = पानी, वीरता का। सेस = शेषनाग। दाप = (दर्प) घमंड का। कुरराव = (कुरुराज) दुर्योधन। सकसे का० = शख्सों (वीर पुरुषों) का जीतनेवाला। अकसे का = आकाश का वायु। कुंभज = अगस्त्य। रहणी मैं = रहने में।

जाके जप तप आगे ईस्वर आधीन,
ताकूं छुल बांह बळ कुण करै हीन।

दुहा

औरँग साह महाबळी, ग्राह तणौ अवतार।
अकबर जूथ गयंद ज्यूं. आयौ फंद दुवार ॥२३॥

गाथा

अकबर लेख प्रमांणे, तहवर सहत राज लोभांणे।
आवी चिंत अचीती, विणसण गा(का)ळ बुद्धि विपरीती ॥२४॥

दुहा

औ दिल्ली घर ऊपनौ, दइवी अग्या दुंद।
हिंदू धरम उबेळवा, ग्रही सरम गोविंद ॥२५॥

छप्पय

दुरग साह सोनंग, अंग अणभंग अणंडर
ग्रहै आभ ऊँडळां, रहै भीड़ियां बगत्तर।

वहणी मैं = धारण करने में। ग्रहणी मै = ग्रहण करने में अर्थात् भस्म करने में। सहणी मैं = असह्यता में। अहीस = शेषनाग। छुळ = युद्ध में।

२३—ग्राह तणै = ग्राह का। जूथ = (यूथ) सेना। गयंद = गजेंद्र। ज्यूं = जैसा। यहाँ गज और ग्राह का रूपक है और रूपकोद्भावित उपमा अलंकार है।

२४—लेख प्रमांणे = विधि अंक के अनुसार। अचीती = अचिंत्य। विणसण काळ = विनाशकाल में।

२५—ऊपनौ = उत्पन्न हुआ। दइवी अग्या = दैव की आज्ञा से। दुंद = (द्वंद्व) युद्ध, विघ्न हुआ। उबेळवा = रक्षा करने के लिये।

२६—दुरग साह = दुर्गादास। अंग = शरीर से अखंडित। अणंडर = निर्भय। ग्रहै० = आकाश को गोदी में लेनेवाले। भीड़ियां = पहने हुए।

अवर वंस खट तीस, साख तेरै राठौड़ां
अगी हूँत आगळा, खाग कर पक्खर घोड़ां ।
चिगतां उखेल पखरे चरित, रक्खे मेळ अमेळ रुख ।
वध वेध बळे खळ वांस ज्यूं, दाह जळे उर साह दुख ॥२६॥

दुहा

अकबर अगम अगाध गह, ते रहिया अजतन्न ।
वाचे त्युँही विचारियौ, कमधे साचे मन्न ॥२७॥
महा डहोळौ मेदनी, विसतरियौ तिण वार ।
साह तपस्या अग्गळौ, अकबर सेन अपार ॥२८॥

छप्पय

सौ कैरव बल्लिष्ट, जिम्मा दव अरि त्रण जग्गे
पांच पुत्र पांडु रा, अभै पिण थोड़ा अंगे ।

अवर = (अपर) दूसरे । अगी हूँत = अग्नि से । चिगतां = मुसलमानों को । उखेल = उखाड़नेवाले । पखरे = (प्रखर) अति गाढ़े । रक्खे० = प्रीति के रुख बिना प्रीति रखनेवाले । वध वेध = बखेड़ा बढ़ा । बळे० = शत्रु ऐसे भस्म हुए जैसे बाँस से बाँस रगड़ खाकर जल जाते हैं ।

२७—अकबर० = अकबर का अगम और अथाह गर्व है; क्योंकि ते = राठौड़ उसके पक्ष में अजतन्न = विना यत्न किए रह गए । उन्होंने सच्चे मन से उसी तरह विचार किया जिस तरह अकबर ने कहा ।

२८—डहोळौ = आंदोलन, उपद्रव, भय । तिण वार = उस समय । अग्गळौ = अधिक, अग्रणी ।

२६—सौ० = एक सौ १०० कौरव बड़े बलवान् थे, परंतु शत्रुओं के आगे दावानल में तृण भस्म हों वैसे भस्म हो गए । पांडु के पुत्र पाँच

रांवण गुणे सुरार, हार सारखो बभीखण
अमी बंट आसुरां, जोर अत कमी सुरज्जण।
अकबर समुद्र पर आवियौ, साह सहंसां आठ सिर
जीपणौ पांण जगपत्तरै, और मांण सोई अथिर ॥२९॥

दुहा

उर होनूं पख आंणिया, सांई एकण सत्थ।
अवरँग नूं ऊबेलणौ, हिँदवांणौ ग्रह हत्थ ॥३०॥
यां दोळी अजमेर रै, अकबर चमू अपार।
औरँगसाह सनाह कर, थयौ अवाह प्रहार ॥३१॥
ज्यांरी रिच्छ्या देवता, सेवा पीर प्रधांन।
त्यां अणचीती संपजै, मुसकळ मैं आसांन ॥३२॥

थे, अंगों से अल्प थे परंतु अभय रहे। रावण को देवताओं का शत्रु कहते थे, और हारे जैसा विभीषण था। अमृत के बँटवारे के लिये असुरों का जोर था, और देवताओं में जोर की अत्यंत न्यूनता थी। बादशाह के आठ हजार कटक पर अकबर समुद्र के समान आया, परंतु जय होना ईश्वर के हाथ में है। दूसरा प्रमाण सब अस्थिर है।

३०—उर० = सांई = (स्वामी) ईश्वर ने एक साथ दोनों पक्षों को मन में लिया। जिनमें से औरंगजेब को ऊबेलड़ौ = बचाना हिंदुओं के हाथ पकड़े जाने से।

३१—यां = इस तरह। दोळी = अजमेर के चारों ओर। अवाह = जिस पर प्रहार नहीं हो सके।

३२—ज्यांरी = जिनकी। सेवा = इष्टदेव। त्यां = उनके। अणचीती = अचिंत्य, अकस्मात्। संपजै = संपन्न होती है।

हियै तहव्वर खांन रै, व्यापी यौं विपरीत।
दाह अकब्बर भोगयौ, नौरँग साह नचीत ॥३३॥

वार्ता

औरंगसा पातसाह आलम कूं चितारे,
अकबर के त्रास की चिंता नां विचारे।
साह अवरंग के पास या समै आवै,
सो तो मनसब रीझ इनांम मनवंछ्या पावै।
अकबरसाह गाफल गुमांन सूं भारयौ,
तहवरखांन हाथ सब राज बोझ धारयौ।
निबाव निदान पाप सुध बुध बिसराई,
और सूं और विचार बावळै की नांई।
कमँधज भगाऊं फेर साह पास जाऊँ,
तो अकबर कूं कैद किये मैं इनाम पाऊँ॥

दुहा

वस प्राणी सब कर मरै, करम सु प्रेरणहार।
नाच नचावै त्यां नचै, ज्यां पुतळी खेलार ॥३४॥

३३—हियै = (हृदये) तहव्वरखान के मन में इस तरह विपरीत विचार उत्पन्न हुआ कि अकबर तो दाह = दुःख भोगे और बादशाह औरंगजेब निश्चिंत रहे।

वार्ता—चितारे = स्मरण किया। त्रास = उद्वेग, दुःख। या समै = इस समय। निदान = उक्त कारण को समझकर। बिसराई = विस्मृत कर दी। कमँधज = राठौड़ों को भगा दूँ।

३४—वस = अधीन। त्यां = उसी तरह। ज्यां = जैसे। खेलार = खिलाड़ी के।

छांनौ नौरँगजेब सूं , मिलण विचार-विचार ।
पौहर निसा प्रगटी समै, तहवर हुवौ तयार ॥३५॥

मेछे वहतै मेलिया, दूत कमंधां पास ।
साहरै रहिया आज लग, थे म्हांरै वेसास ॥३६॥

पूत पिता एकै थया, थे चढ जावौ देस ।
बोलां कोलां बोलिया, वीतौ वयण विसेस ॥३७॥

यां मुख झूठी आखनैं, पूगौ साह दवार ।
अरज हुवंतां असपती. कीधी रत्ती रार ॥३८॥

अवरँग तहवर ऊपरै. फिर कोपे जगदीस ।
पबे भुरज्जां वज्र पर, पड़ी गुरज्जां सीस ॥३९॥

सेन अकब्बर तापड़े, आप गयौ खहमग्ग ।
ज्यों कस भंजे तन गळै, घण गोळक तन लग्ग ॥४०॥

३६—वहतै = चलते समय । साहरै = आश्रय । वेसास = विश्वास ।

३७—एकै = एकमत हुए । बोलां कोलां = जो शपथ की थी वह वचन विशेष बीत गया ।

३८—यां = इस तरह । आखनैं = कहकर । दवार = द्वार । असपती = (अश्वपति) बादशाह । रत्ती = लाल । रार = आँख ।

३९—पबे = पर्वत की बुर्जों पर । वज्र पर = वज्र की नाईं ।

४०—तापड़े = अकबर की सेना को संताप देकर । खहमग्ग = आकाशमार्ग (परलोक) को । कस = (कृषि) खेती का नाश करके । तन = (तनु) शरीर अपना गल जाता है । घण गोळक = मेघ के गोले अर्थात् ओले कृषि का नाश करते हैं, आप स्वयं नष्ट होते हैं ।

छंद त्रोटक

दुरवेस गयौ पतसाह दिसी
उड मूठिय भूठिय वात इसी।
सुणतां कमधां दळ मान सही
रस बाध थयौ निस आध रही ॥४१॥

हय जीण हड़व्वड़ हूँत हुवा
जवनां पण लीधा पंथ जुवा।
खग बांध चढे अस तूंग खड़ा
घण थाट कमंध अबीह घड़ा ॥४२॥

इत सेन अकब्बर साथ इता
जय हीण थया सुण लीण जिता।
किलबांइण चंचल पाय कळा
वध सोच खड़ब्भड़ आठ वळा ॥४३॥

४१—दुरवेस = मुसलमान (तहव्वरखान)। उड मूठिय = जैसे मुट्ठी खुलने से वस्तु उड़ती है वैसे भूठी बात उड़ी कि अकबर औरंगजेब से मिला हुआ है, उसको राठौड़ों ने सत्य मान लिया, और परस्पर की प्रीति में अर्ध-रात्रि के समय बाधा हुई।

४२—घोड़ों पर अत्यंत त्वरा के साथ जीन हुए। मुसलमानों ने भी जुवा = जुदा मार्ग लिया। अस = (अश्व) घोड़ों का। तूंग = समूह। घण थाट = बड़े समूह के साथ राठौड़ों की निर्भय। घड़ा = सेना।

४३—इता = इतने। सुण० = जितनों ने सुन लिया था। किलबांइण = मुसलमान इस कळा = गुप्त भेद से चंचल हो गए, और सोच की वृद्धि हुई। आठों तरफ खलबली मच गई।

बहलायण आतुर मेघ वळे
जिम चोटड़ियाळ समुद्र चले।
जवनां भड़ पुंज पलाल जही
मिळिया किर मारुत चक्र मही ॥४४॥

तड़ लाग गयौ सँग माग तणै
सुध हीण अकब्बर राग सुणै।
खड़ खैंग बिकोस कमंध खड़ा
तिण ताल भई दुघड़ा त्रिघड़ा ॥४५॥

पुर जेम मही थिर सेन पड़े
जिण वात तहब्बर लाय जुड़े।
अवरंग तणा तप तेज अगे
मिल सेन अकब्बर आठ मगे ॥४६॥

४४—बहलायण० = जैसे उत्तर की तेज पवन चलने से मेघ पीछे घिर जाते हैं, जैसे चोटीवाले तारों से समुद्र चलायमान होता है, वैसे यवनों के भटों का समूह चलायमान हो गया। उसकी ऐसी दशा हुई मानों पवन के चक्र में घास के पूले उड़ने लगे।

४५—तड़० = सेना सब मार्ग के संग लग गई। इस राग = स्वर को सुनकर अकबर की सुधि जाती रही और राठौड़ घोड़ों को चलाकर बिकोस = दो कोस पर जाकर खड़े हुए। उस ताल = समय दो की तीन सेनाएँ हो गईं। एक राठौड़ों की, एक तहव्वरखान के पक्षपातियों की और एक शाहजादा अकबर की।

४६—पुर० = जैसे नगर में सेना पड़ी रहती है, वैसे पृथ्वी पर तहव्वरखान के पक्ष की सेना स्थिर पड़ी है। और औरंगजेब के तप और तेज के आगे अकबर की सेना आठ मार्ग अर्थात् तितर-बितर हो गई।

दूहा

अकबर रत्ता राग सूं, रंग त्रिया रस लुद्ध ।
जो उतपात प्रगट्टियौ, सो सुणियौ निस अद्ध ॥४७॥
वीर महाबळ धीर उर, सूरम सूरत धार ।
आवी आदर ऊठियौ, भावी सीस विचार ॥४८॥
यां मुख हूँता ऊचरी, क्या गीदी अवरंग ।
मेरे राज निवाह कूं, सोनँग साह दुरंग ॥४९॥

वार्ता

यां विचार वैण बोले,
तेज सूं समसेर तोले ।
मूछ के रोम व्योम कूं उट्ठे,
रांन के आए जम रांन से रुट्ठे ।
एक हजार मुगल सूर तैं सूरे,
सहजादे की सनाह निरवाह के पूरे ।

४७—अकबर प्रीति से रँगा हुआ स्त्री के रंग से शृंगाररस में लुब्ध है इसलिये जो उत्पात प्रकट हुआ उसे अर्धरात्रि के समय सुना ।

४८—उर = हृदय में धैर्य को धारण करनेवाला; सूरम = शूर-वीर है । सूरत धार = सुरत को धारण करके । भावी = होनहार को सिर पर विचारकर आदर में आकर उठा ।

४९—यां = इस तरह । ऊचरी = उच्चारण किया । क्या गीदी = राजसिंहासन पर औरंगजेब ? मेरा राज्य निबाहने के लिये सोनंग और दुर्गदास हैं ।

वार्ता—वैण = वचन । समसेर = तलवार । रोम = बाल । रांन = रावण के आने से यमराज के समान रुष्ट हुआ । सूर तैं सूरे = अत्यंत शूरवीर । सनाह = कवच को निबाहने के लिये पूर्ण समर्थ । खुदा के० =

खुदा के घरम राते नेम व्रत लिये,
मेर के सिखर जैसे द्रढ रूप हिये।
दाढी कर घात मीर ऐसें कछु बोले,
प्रांण कै गुमांन भर आसमांन तोले।
साहजादा पाथ जैसे देख हाथ मेरे,
लाखूं बीच पातसाह पकड़ूं तो तेरे।
याही समै हलकारूं कही आंन ऐसी,
तहवरखां साह मारा जैसी की तैसी।

मीर अकब्बर साह सूं, बोले ग्यांन सजुत्त।
काफर साहां अवगुणी, गै आणी करतुत्त ॥५०॥
अपणी रिद्ध सँभाळ सब, करे दरक्कां पीठ।
आवध बंधे ऊठिया, आकारीठ गरीठ ॥५१॥
हुरम कबीला रिद्ध तर, साथे मीर प्रचंड।
इण वांसे कर चल्लियौ, आसा खंड विखंड ॥५२॥

परमेश्वर के परम अनुरागी। मेर के सिखर० = सुमेरु पर्वत के शिखर के समान हृदय में दृढ़। मीर = अमीर। साहजादा = हे शाहजादा ! पाथ = (पार्थ) अर्जुन के जैसे। जैसी की तैसी = यह गाली है।

५०—काफर = नास्तिक (तहव्वरखान)। साहां = बादशाह का गुण न माननेवाला। करतुत्त = (करतूत) करनी।

५१—रिद्ध = (ऋद्धि) संपदा। दरक्का = ऊँटों की पीठ पर लादकर। आवध = (आयुध) शस्त्र बाँधकर। आकारीठ = अत्यंत तीक्ष्ण स्वभाववाले, जबर्दस्त। गरीठ = (गरिष्ठ) बड़े गौरववाले।

५२—हुरम = (हरम) बादशाह की स्त्रियाँ। कबीला = अन्य स्त्रियाँ। रिद्धतर = बहुत बढ़ा हुआ। इण वांसे = इनको पीछे लेकर चला।

माग मुरद्धर देस रौ, लियौ उरद्धर ज्यास ।
घाट अनेकन संचरे, एक प्रभू री आस ॥५३॥

छंद बेअक्खरी

आरोही अत रोस अकब्बर
अंगे सिलह तुरंगे पक्खर ।
एक हजार मुगल मुख आगै
भिड़ते काळ निहाळ न भागै ॥५४॥

आए सिंघ न डोले अंगा
खग रख दो दो धनुख निखंगा ।
हेक बाण गज प्राण प्रहारै
मूठ अपूठी केहर मारै ॥५५॥

सांम धरम रत्ता पण साचै
वयण दूठ मुख झूठ न वाचै ।

५३—माग० = मारवाड़ का मार्ग लिया। हृदय में विश्वास धारण करके। मन में अनेक घाट = विचार आते हैं। एक प्रभु की आशा है।

५४—अंगे० = शरीर पर फौजी वेष है। घोड़े पर पाखर है। भिड़ते काळ = जो काल (मृत्यु) से भिड़ते हैं; और काल को निहाळ = देखकर नहीं भागते हैं।

५५—आए० = सिंह के आने पर भी जिनका अंग चलायमान नहीं होता है। जो दो दो तलवारें, धनुष और भाथे रखते हैं। जो एक तीर के प्रहार से हाथी के प्राण का संहार करते हैं। जो तलवार की उलटी मूठ से सिंह को मार देते हैं।

५६—रत्ता = (रक्त) अनुरागवाले। पण = प्रण, प्रतिज्ञा के सच्चे।

पड़तौ गयण ग्रहै निज पांणी
विसमै समै एक रस वांणी ॥५६॥
सहस इसा भड़ लीधा साथे
मेछ करार भार त्यां माथे।
पुत्रि पूत चढ़ हुरम तुरंगे
आवृति वसन मुकना अंगे ॥५७॥
भूम वहंतो को जण भाळै
वाडवाग निभ्र समँद विचाळै।
कमँध खडा आगे दस कोसां
दाखे कथ निरदोसां दोसां ॥५८॥

दुहा

इतरे अस खड़ आविया, सथ वावसू सताब।
अकबर कहियौ आवते, वहियौ साह निबाब ॥५९॥
दोढ पौहर चढियौ दिवस, रजी परक्खी व्योम।
अकबर संगी आवतां, वातां लग्गी धोम ॥६०॥

वयण दूढ = वचन के दृढ़। गयण = (गगन) आकाश को। विसमै समै = विषम समय में। एकरस = एक सी।

५७—करार = ताकत, सामर्थ्य। आवृति वसन = वस्त्र से ढकी हुई। मुकना अंगे = शरीर पर मुकना (श्वेत वस्त्र का 'खोल') पड़ा हुआ है।

५८—वहंतौ = चलते हुए को। भाळै = देख सकता है। वाड़वाग = वाड़वानल। दाखे॰ = निर्दोष अकबर के दोष की बातें कहते हैं।

५९—अस खड़ = घोड़ों को चलाकर। सथ वावसू = जासूसों का साथ। सताब = जल्दी। जासूसों ने राठौड़ों से कहा कि अकबर आता है। और निवाब = तहव्वरखान बादशाह के पास चला गया है।

६०—परक्खी = देखी। अकबर समीप में आते बातों की धूम लगी।

तेरैई साख कमंध मिल, मुख सोनंग दुरंग ।
मीर कमंधां धीर मिळ, थया सधीर सुरंग ॥६१॥
दाढ गरद्दां भारिया, अंग जरद्दां दूण ।
रूप मरद्दां मीर सब, लंक करद्दां तूंण ॥६२॥
निजर परक्खे राठवड़, अकबर तेज दिणंद ।
जांणे व्योम विमान सम, भोम प्रगट्टयौ इंद ॥६३॥
अत मिळतां आदर अदब, करे कमँध विण पार ।
सेव खड़ा गिण देव सम, गुरजदार पड़दार ॥६४॥
हुरमां राखे अंतरे, उड़दांबैंगण दुंद ।
हाजर खिजमत कारणे, मुख नाजर हुसमंद ॥६५॥
सांम्हा दोड़े वावसू, घोड़ो डाक प्रमांण ।
साह अकब्बर वयण सूं, खबर लियण सुरतांण ॥६६॥

६१—मुख = प्रभृति, वगैरह । सुरंग = अच्छे रंग वाले ।

६२—दाढ़ियाँ रज से भरी हैं, शरीर कवचों से दुगुने हो रहे हैं । सब अमीरों का रूप मर्दपन का है । लंक = कमर में तलवारें और भाथे कसे हुए हैं ।

६३—दिणंद = (दिनेंद्र) सूर्य के समान तेज । जांणे = मानों आकाश से विमान के साथ इंद = (इंद्र) पृथ्वी पर प्रकट हुआ ।

६४—विण पार = परावधि । सेव = सेवा में । देव सम = इष्टदेव के समान । पड़दार = सुनहरी छड़ीवाले ।

६५—अंतरे = दूर । उड़दांबैंगण = मर्दानी पोशाकवाली शस्त्रबंद स्त्रियाँ । दुंद = (द्वंद्व) दो दो । खिजमत = सेवा के लिये । और मुख = आगे नाजर हैं । हुसमंद = होशवाले ।

६६—वावसू = दूत । घोड़ो० = घोड़ों की डाक द्वारा । अकबरशाह के वचन से बादशाह औरंगजेब की खबर लाने के लिये ।

धर चौड़ै सरवर विपन, विंधाचळ दिस एक ।
च्यार महूरत उत्तरे, धारस मंत्र विवेक ॥६७॥

वार्ता

एते पर डाकदार वावसू आया,
पातसाह की ठीक कर तहकीकत लाया ।
हाजर बुलाए साह सुण दूत वांणी,
देखत ही फुरमाया कहौ सो विहांणी ॥
सेन के प्रमाण कोन कहा साह बोले,
सेनापत कोन मीर देखन महोले ।
एते पर दूत बोले साहब सुन लीजै,
पातस्याही सेन्या को प्रमांण कोण कीजै ॥
आलम के आगम तें तहवरखांन भागा,
साह के द्वार गए अंत राहि लागा ।
बावन हजार लिए आलम साह आए,
सरिता समुद्र ओर जैसैं आवै धाए ॥
आलम सौं बगलगीरी मिल आदर कीया,
असपत्ती सनाह खोल उर उसास लीया ।

वार्ता—डाकदार वावसू = डाकवाले दूत । तहकीकत = तहकीकात करके लाए । साह = अकबर ने अपने रूबरू बुलाकर दूतों की वाणी सुनी । उनको देखते ही कहा कि विहांणी = जो हुआ है वह कहो । साह = अकबर ने कहा कि उनकी सेना का प्रमाण क्या है ? महोले = सेना का मोहल्ला (संघ) देखने के लिये कौन सा अमीर सेनापति है ? आलम कै = औरंगजेब के आने से । अंत राहि लागा = अखीरी रास्ते लगा अर्थात् मारा गया । असपत्ती = (अश्वपति) बादशाह । उर उसास लीया = मन में आह भरी ।

अपनी कबांन आलमसा हाथ दीनी,
डाढी नोस हाथ दीनौ रार रोस भीनी ॥

दुहा

वात अकब्बर आगली, अक्खी हाथ मिलाय ।
दूत विदा करकै लियौ, मारू दुरग बुलाय ॥६८॥

एम अकब्बर अक्खियौ, सुण राठौड़ दुरंग ।
आलम मारै या मरै, कहौ विचारे जंग ॥६९॥

दाखी अरज दुरग्ग यां, सब खळ करां सँघार ।
साहब मन खुसियाळ सूं, जीवै साल हजार ॥७०॥

मेळ उखेळे मंडळी, अस गज ऊरवड़ांह ।
खूंद लखे भाराथ कर, पारख हाथ भड़ांह ॥७१॥

औरंगजेब ने अपनी कमान हाथ में ली. जोश के मारे डाढ़ी पर हाथ दिया और रार = आँखों में क्रोध भर गया ।

६८ = आगळी = अकबर के आगे । अक्खी = कही । मारू = मारवाड़ के सुभट दुर्गदास को बुलाया ।

६९—एम = इस प्रकार । अक्खियौ = कहा ।

७०—दाखी = कही । यां इस तरह । सँघार = (संहार) नाश । खुसियाल सूं = खुशी के साथ ।

७१—उखेळे = युद्ध के लिये । मंडळी = सेना एकत्र करके । ऊरवड़ांह युद्ध में ठेल देंगे । खूंद = स्वामी, मालिक । भाराथ कर = युद्ध करके । लखे = देखैं । पारख = परीक्षा सुभटों के हाथ की ।

अै राठौड़ महाबळी, करै दिलासा तेड़ ।
भेळण जंगां भारग्रह, वधे तुरंगां खेड़ ॥७२॥
तांम बुलाए साह तिण, आठूं मिसल अभंग ।
जोध रिणामल जोरवर, सोनँग आद दुरंग ॥७३॥

वार्ता

सब कूं बुलाय वैंण अकबर साह बोले,
मेरी निसां खातरी है तुमारे महोले ।
तुम पातसाहां के संवादी सूर तैं सूर,
तुमारी सिहाय आवै मेरे मुख नूर ।
पास आप की लाज कुळ काज विचारौ,
मेरा रण मरणा कै जीवणा सुधारौ ।
पातसाह नौरंगजेब खुदाय का अवतार,
अपनी सब ख्वारी करी तहवरखां गँवार ।
आलम की अवाज सुन तहवरखां त्रास पाई,
मेरे दरोगी गयौ आपकी कमाई ॥

७२—दिलासा = तसल्ली । तेड़ = बुलाकर । भेळण = युद्ध में शामिल होने के लिये । भारग्रह = युद्ध के भार को धारण करनेवाले । तुरंगां खेड़ = घोड़ों को चलाकर ।

७३—तांम = तब । आठूं० = आठों मिसल के सरदारों के जबर्दस्त जोधा और रिणमलोतों को ।

वार्ता—वैंण = वचन । निसां खातरी = विश्वास, दिलजमई । महोले = समुदाय पर । संवादी = बराबर के । नूर = तेज । ख्वारी = खराबी । त्रास = भय । दरोगी = समीप रहनेवाला ।

दुहा

यां साहिजादे आखियौ, सहित विनै हित संघ।
मेरे काज निवाह की, लाज कमंधां कंध ॥७४॥

छप्पय

कहे तांम कमधज्ज, सुणे साहिब छत्रपत्ती
विध विचार धारियौ, सको तिण आर सुमत्ती।
पिण औ वचन प्रमांण, पांण खग तोल धरां पण
आलम दळ आगळे, करां रण खळे कणक्कण।
जुध राज तणा धारे जतन, सारे वज्जां साह सूं
केवियां छेड़ संघर करां, औ निवेड़ निरवाह सूं ॥७५॥

दुहा

साहजादे पाराथियां, सको कमंधां साथ।
सूर तरस्से बोलिया, मूछ परस्से हाथ ॥७६॥

७४—आखियौ = कहा। विनै = विनय। हित संघ = हित को साधकर। कंध = (स्कंध) राठौड़ों की भुजा पर है।

७५—तांम = तब। विध = विधाता ने। सको = सब। तिण आर = उसके आधार पर है। सुमत्ती = सुबुद्धि रहनी। पण = प्रतिज्ञा। आगळे = आगे। खळे = शत्रुओं को। राज तणा = आपका। सारे = तलवार से। वज्जां = बादशाह से लड़ें। केवियां = शत्रुओं को। छेड़ = ललकारकर। संघर = (सगर) युद्ध। निवेड़ = तय करके निबाहेंगे।

७६—पाराथियां = प्रार्थना करने पर। सको = सब। कमंधां साथ = राठौड़ों का संघ। तरस्से = युद्ध की तृष्णा से, त्वरित। परस्से = छूकर, मूँछों पर हाथ धरकर।

वार्ता

सोनागिर चांपावत हाथ खग तोले,
विसमै मैं द्रढ देण कोप वैण बोले।
समै पाए सूर सोई वीरता विचारै,
समै के निदान आए आसमांन धारै॥
अकबर के जतन कूं तेग बँधे ऐसै,
साह कोप धूप नावै कूप छाँह जैसै।
अजबेस सामंत भगवांन बोले त्यांही,
सेस ज्वाला की सी पर सोनागिर ज्यांही॥
अवसांण आए छत्री पोरस सरसावै,
यह लोक जीप परलोक मोख पावै।
हरनाथ कान्ह गिरधारी के जाया,
कोप कीन्हो दाह से निजर साह आया॥
साहजादे बूझी वंस कान ए कहावै,
चांपावत मेरे भाई सोनंग यूँ बतावै॥

वार्ता—सोनागिर = सोनंग। विसमै मैं = विकट समय में। द्रढ देण = दृढ़ता देनेवाला। समै पाए = समय पाकर जो शूरवीर है वही वीरता विचारता है। समै० = समय का सबब आने पर। तेग = तलवार। साह कोप० = बादशाह कोप रूप धूप = आतप न आवै। जैसे कूएँ की छाया में धूप नहीं आती। अजबेस = अजसिंह, सामंतसिंह, भगवानदास। त्यांही = उसी तरह। सेस ज्वाला की सी पर = शेषनाग के मुख की ज्वाला के समान। सोनागिर = सोनंग। ज्यांही = जैसे। अवसाण आए = मौका आने पर क्षत्रियों का पौरुष बढ़ता है। जीप = जीतकर। मोख = मोक्ष। प्रथम जो तीन सुभटों के नाम कहे गए हैं, वे क्रम से हरनाथसिंह, कान्हसिंह और गिरधारी के पुत्र हैं। दाह से = अग्नि की ज्वाला के समान। बूझी = पूछा। यूँ = इस तरह बतलाता है।

दूहा

अकबर साह निरक्खिया, जेता चांपावत्त ।
मीढ सहस्सां मत्थणे, लक्ख गिणे त्रिण मत्त ॥७७॥
दीठौ जोड़ दुरग्ग री, बंधव खेम अरोड़ ।
भारथ मांहे भीमसी, जांणे पारथ जोड़ ॥७८॥

वार्ता

साहजादे देखे हिम्मत निवाह,
दुरंग का भाई पेसवाई दुरंग साह ।
हुरम कबीले के जतन साहिजादे जांनो,
खेम साह देखत ही सब चिंता भांनी ॥
साहिजादे देख दुरंग साह कूं फुरमाया,
भाई का भरोसा मेरी खातर जमा बीच आया ॥

दुहा

अब चतुरेस दयाल रै, यां बोले मछरीक ।
जग ज्यां री वातां रहै, जे सामँतां सरीक ॥७९॥

७७—निरक्खिया = देखे । जेता = जितने । मीढ सहस्सां = हजारों की बराबरी करनेवाले । मत्थणे = मथन करने में । लक्ख० = लाखों को तृणमात्र गिननेवाले ।

७८—दीठौ = देखा । जोड़ दुरग्ग री = दुर्गदास की जोड़ी का । खेम = भाई खेमकरण । अरोड़ = नहीं रुकनेवाला । भारथ मांहे भीमसी० = जैसे महाभारत के युद्ध में अर्जुन के साथ भीम था वैसे दुर्गदास के साथ खेमकरण था ।

वार्ता—दुरंग का भाई = खेमकरण । पेसवाई = मेरे आगे दुर्गदास ही है । भांनी = तोड़ दी ।

७९—चतुरेस = दयालदास का पुत्र चतुरसिंह । मछरीक = चौहान ।

वार्ता

छत्री कै धरम धार कौ मारग,
कवेसरां की साख निरवाह सूं पारग।
सूरवीर की रीत सूरवीर जांणै
एतो अवसांण आयां हिम्मत प्रमाणै।।
गोरीसाह का खूनी हुसेन नागोर आया,
मेरे दादे प्रथीराज प्रांण ज्यां रहाया।
सरणाई की सिहाय सुरतांणूं सूं वेर किया,
सात वार सीस आप खेत बांध लिया।।
मारू महाराजा के सरणै पातसाह साहजादा आया
कमी क्यूं विचारे जो है रजपूत का जाया।।

दुहौ प्राचीन

चहुवांणां कुळ चल्लणी, वियौ न चल्लै कोय।
चाड न घट्टै खूंद की, सीस पलट्टै तोय।।८०।।

वार्ता— धार को = तलवार का मार्ग। कवेसरां की० = कवीश्वरों की साक्षी। गोरीसाह का० = शहाबुद्दीन का अपराधी हुसेन नागोर में आया। चौहान चतुरसिंह कहता है कि मेरे दादे पृथ्वीराज ने उसको अपने प्राणों की तरह रखा। सरणाई = शरणागत की सहायता के लिये बादशाह से वैर किया। खेत = युद्धक्षेत्र में। बांध लिया = पकड़ लिया शहाबुद्दीन गोरी को। मारू० = मारवाड़ के महाराजा अजीतसिंह जी के शरण बादशाह का शाहजादा (अकबर) आया है।

८०— चल्लणी = चलन, मार्ग। वियौ = दूसरा। चाड = पुकार। खूंद की = मालिक की। पलट्टै = पड़ जाय। तोय = तौ भी।

वार्ता

चांपावत भगवानदास जुजठल का अवतार,
झूठ सूं परामुख साच सूं प्यार।
जिनके काका सोनागिर आसमांन का थंभ,
रण के आरंभ दिख ज्याग का सा सिंभ॥
तासूं भगवान कहै भार तुम कंधै,
पैं आलम सूं जंग काज तेग हम बंधै।
विखै के तुम नायक और सबके मुदायत,
सो जंग की ढील मैं वरस जैसी सायत॥
बात सुन मन रीझ सोनग साह बोले,
सिंघ का बालक सो तो सिंघ के ही तोले।
राजसिंह भाटी रावळ सबळ सींह का बेटा,
म्रत नेम लिया किया पाघ का लपेटा॥
ऐसें धीर वीर बोले जिण सूं सूरवीर रीझे,
कातर क्रपण प्राण आतुर ह्वै छीजे॥

वार्ता—जुजठल = युधिष्ठिर का। परामुख = (पराङ्मुख) विमुख। सोनागिर = सोनंग। दिख ज्याग का सा = दक्ष के यज्ञ में जैसे। सिंभ = (शंभु) वीरभद्र। विखै = विग्रह के समय के। मुदायत = प्रधान, मुखिया। ढील = देरी में। सायत = क्षण। तोले = तुल्य। म्रत = मरने का। किया पाघ का लपेटा = पगड़ी के बदले पोतिया (साफा) बाँध लिया। कातर० = कायर और कृपण = जो युद्ध में प्राणों को प्रिय समझते हैं। प्राणों के लोभ से दुखी होकर क्षीण हुए।

दुहा

तिण वेळा रिण अग्गळा, जेता सूर समत्थ ।
ताके नांम प्रमांण पण, कवि वरणे गुण कत्थ ॥८१॥

वार्ता

या समैं आजानबाह जेते सरदार,
कवि जेते जांने सो बखांने विगतवार ।
पहले सोनग साह विखै के सहायक,
जोड़ै दुरग साह हंस वंस का जो नायक ॥
प्रलै के समुद्र जैसे औरंग साह आयौ,
अगस्त सौ जोस जिण जगत कूँ दिखायौ ।
सोनग के भाईबंध भतीजे दळ आगळ,
सूरां तैं सूरा महापूरां से अदल ॥
दुरग के पुत्र भतीजे और भाई,
दावाअगन साह लागे मेघ तैं सवाई ।
जीवणी मिसल भड़ जंगू के अधाए,
खांडे वागे खंडीवन पावक तैं सवाए ॥

८१—तिण वेळा = उस समय । अग्गळा = अग्रणी । जेता = जितने । ताके० = उनके नामों के अनुसार । कत्थ = कथा ।

वार्ता—आजानबाह = जिनके हाथ घुटनों तक लंबे हैं । जेते = जितने । विगतवार = ब्यौरेवार । हंस वंस का = सूर्यवंश का मुखिया । प्रलै = प्रलय का । अगस्त सौ = अगस्त्य मुनि के समान । महापूरां से अदल = जो महापूर्ण हैं उनसे भी मुख्य । दावाअगन० = बादशाह रूप दावानल के लिये राठौड़ मेघ से सवाए हुए । जीवणी मिसल = जोधपुर महाराजा का दरबार होता है तब सरदार लोग महाराजा के आगे दोनों पार्श्व में पंक्ति लगाकर बैठते हैं । दाहिनी ओर की पंक्ति जीवणी मिसल,

रिणमलां के जोड़े जंगी महाबाह भाटी,
जाके वंस पढ़ें रूकचाळे ही की पाटी।
आगे रुघनाथ दिल्ली खेत कांम आया,
ऐसा अवसांण कोई पावै न पाया॥
पाछे ये ही नाहरूं का नाहर दरसावै,
भीमाजळ हाथूं रुघनाथ सा कहावै।
जादम किसोर महेसदास का जाया,
महेस के कंकण सा विरद जिण पाया॥
हरदास का पोता रामसिंघ सिंघ जैसा,
साम्हला न सूर न सामंत कोई ऐसा।
साह की बातैं सुणैं त्यौं त्यौं उमंग प्रकासै,
घिरत का कुंभ सींचै होम ज्यां उजासै॥

और बायें हाथ की पंक्ति डावी मिसल कहलाती है। जीवणी मिसल में जोधाजी के भाइयों के वंशज चांपावत, कूंपावत, जैतावत आदि बैठते हैं; और डावी मिसल में जोधाजी के पुत्रों के वंशज जोधा, मेड़तिया, ऊदा आदि बैठते हैं। जंगूं के अधाए = युद्धों से तृप्त नहीं होनेवाले। खाडे वागे = तलवार बजने पर खांडव वन की अग्नि से सवाए। रिणमलां के जोड़े = राठौड़ों के साथ। जंगी = जंग करनेवाले, जबर्दस्त। रूक० = तलवार के बर्ताव की। पाटी = रीति, पट्टी। कांम आया = स्वामी के वास्ते मरा। भीमाजळ = भीमसिंह। हाथूं = हाथ चलाने में। जादम = यदुवंशी, यादव, भाटी। जाया = पुत्र। महेस के कंकण सा = महादेव ने भस्मासुर को जो कड़ा दिया था, उसको महेश-कंकण कहते हैं। श्रीमद्भागवत में लिखा है कि महादेव ने प्रसन्न होकर वृकासुर को कंकण देकर कहा था कि तू जिसके सिर पर यह कड़ा फेरेगा वह भस्म हो जायगा; उसी प्रकार शत्रुओं को भस्म करनेवाला। विरद = (विरुद) यश। साम्हला = सामने का। उमंग = उत्साह प्रकट करते हैं। उजासै = प्रकाशित होता है।

दुरजणसाल नाम ही ज्यां दुरजन कूं सल्लै,
भाटी वीर आखाड़े मैं मुराड़े से भल्लै।
हरीसिंघ हरीरथ के जोर सी बड़ाई,
खळ नाग देखे खाग चंच तैं सवाई॥
सूरजमल जगनाथ के पाथ के से ओडे,
सिंघ तैं सवाई कांम रामसिंघ जोड़े।
सबळसिंघ प्राग का सो मेर व्रत धारी,
आसकरन भाई जंग काच की सी झारी॥
तेज मैं नाहरखां नाहर से हाथूं,
और अमरेस गहै आसमांन बाथूं।
प्राग के जे न्याती रोकै नाग की सी नांई,
सेल साहेटवाळेत वीटा देत बांई॥
उरजनोत उरजन से अरि दळ के आए,
सूरसिंघ महासूर सिंघ तें सवाए।

दुरजण = शत्रु को। सल्लै = सालता है। आखाड़े में = युद्धांगण में। मुराड़े से = अग्नि की ज्वाला जैसे। भल्लै = अच्छे। हरीरथ = गरुड़ के। खळ नाग = शत्रुरूप सर्प को देखकर खड्ग रूप चोंच उसकी सवाई हो जाती है। सूरजमल = जगन्नाथ का पुत्र सूरजमल। पाथ = (पार्थ) अर्जुन के। ओडे = सदृश। प्राग का = प्रयागदास का पुत्र सबळसिंह। मेर व्रत धारी = मेरु पर्वत के समान स्थिर रहने का व्रत धारण करनेवाला। काच की सी झारी = अपने शरीर को काच की शीशी के समान तोड़नेवाला। हाथूं = हाथों में। अमरेस = अमरसिंह। गहै = पकड़ै। बाथूं = बाथ में। प्राग के जे न्याती = प्रयागदास की जातिवाले शत्रुओं को नाग = हाथी अथवा सर्प के समान रोकते हैं। सेल० = भाले को लिए इस तरह चक्कर देते हैं कि जैसे सर्प बाँबी (सर्प का बिल) के इर्द-गिर्द चक्कर देता है। उरजनोत = अर्जुन भाटी के वंशज। उरजन से = अर्जुन के सदृश। लाखा = लाखा

लाखा एक लाख सा जो लाख मेछ देखे,
लाख जोड़ लीन्हे यातें कोड़ कूं न लेखे ॥
जादवूं की रीत के उजागर से भाई,
अैसा ही महेसदास रण मैं सवाई ।

दुहा

अै भाटी दळ आगळा, खळ गंजण दळ ढाल ।
मिसल सबोभा मेळ सूं, यां हूंता रिणमाल ॥८२॥

वार्ता

कूंपावत राज लाज सिंधु जैसै धारे
रूक के सजळ खळ आग कौं संघारे ।
रामसिंघ जैत का सो जैत ही निबाहै
कूंपावत जंग मैं मतंग सेल ढाहै ।
फतेसाह साह आए बांह गैण धारे
विजावत विजय रूक पराजय निवारे ।

नाम का भाटी । एक लाख सा = एक लक्ष सुभट हों जैसा । लाख जोड़ लीन्हे = उसने लाख मनुष्यों को इकट्ठा कर लिया, जिससे वह करोड़ को भी कुछ नहीं गिनता है । उजागर = प्रसिद्ध, प्रकाशमान । से = इसका ।

८२—अै = ये । खळ गंजण = शत्रुओं का नाश करने में। मिसल• = इन भाटियों के मिलने से राठौड़ मिसल में बड़े गौरव सहित हैं ।

वार्ता—कूंपावत = कूंपा का वंशज । राज = राजसिंह । रूक = तलवार के । सजळ = पानी से । खळ० = शत्रु-रूप अग्नि का संहार करता है। जैत का = जैतसिंह का पुत्र । जैत = जय । मतंग = हाथियों को भालों से गिराते हैं । फतेसाह = फतैसिंह बादशाह के आने पर गैण = आकाश को बाहु से धारण करता है । विजावत = विजैसिंह का पुत्र (फतेसिंह) तलवार

मधकर दयाल का सो साह भै न धारै
अंधकार जात जैसै भांण के उजारै ।।
केसरीसिंघ रांमसिंघ सबळसिंघ के जाए
रांम बांण से अचूक रोद्र छोभ पाए ।
भावसिंघ सबळ का मांडण सवाई
औछाह सी लागै जाकूं साह की लड़ाई ।
महावीर महासूर तेज सरसावै
मंडण ज्यां जोस वंस मंडण कहावै ।
रूपसिंघ केहर का केहर के कांटै
लड़ाई के पाए धन वधाई बांटै ।
उगरावत आसखांन आसमांन साहै
उदैसिंघ चित्रकोट कियौ सौ निवाहै ।।
अमरावत अजबसिंघ अमर बोल काजे
जुद्ध आए जुधिष्टिर बंधव सा राजै ।

से विजय करता है और पराजय को हटाता है । मधकर = दयालदास का पुत्र माधवसिंह । भांण = (भानु) सूर्य के । केसरीसिंह और रामसिंह सबलसिंह के पुत्र । अचूक = नहीं चूकनेवाले । रोद्र छोभ पाए = मुसलमान चलायमान हुए । मांडण सवाई = माडण से सवाया । औछाह = उत्साह के जैसी । सरसावै = अधिक शोभा देते हैं । मंडण ज्यां = मांडण के जैसे । वंस मंडण = कुल के भूषण । केहर के कांटै = केसरीसिंह के सदृश । उगरावत = उगरसिंह का पुत्र । साहै = धारण करता है । उदैसिघ० = चित्तौड़ में उदयसिंह ने किया था वैसे अपनी बात को निबाहनेवाला । (उदयसिंह ने बादशाह अकबर की आज्ञा को शिरोधार्य नहीं किया था) । अमरावत = अमरसिंह का पुत्र । जुधिष्टिर बंधव सा = अर्जुन के समान ।

गोयंद का सुंदर विकोदर सा बाहां
समर की मरजाद धरम के राहां ।।

दुहा

अण संकण जुध आरँभे, कूंपा कांकण हत्थ ।
बेर बणै बांकी जठै, मेर उतावै बत्थ ।।८३।।
जैता सांम सँग्राम की, जोवै वाट कमंध ।
ज्यां दधि दक्खै वेळ बळ, हीण परक्खे बंध ।।८४।।
गोवरधन आजान भुज, सांम सुजाव सगाह ।
रिणमालां छळ रक्खणा, जोधां करण निवाह ।।८५।।
जैतहथा जैताहरा, जैत खंभ जुध वार ।
तैसीह मंडण वीक तण, खळ खंडण खग धार ।।८६।।

राजै = शोभा देता है । विकोदर = (वृकोदर) भीमसेन के सदृश । बाहां = बाहुबल में ।

८३—अण संकण = निःशंक । कूंपा = कूंपावत शाखा के राठौड़ । कंकण हत्थ = हाथ में युद्ध का कंकण पहनकर । बेर = वेळा, समय ।

८४—जैता = जैतावत राठौड़ । जोवै = देखते हैं । वाट = राह (प्रतीक्षा करते हैं) । दधि = (उदधि) समुद्र । दक्खै = दिखाता है । वेळ = (वेळा) मर्यादा का बल । वैसे हीण० = कमीने कातर पुरुष । बंध = आड़ की प्रतीक्षा करते हैं ।

८५—आजान = (आजानु) घुटनों तक लंबे । सांम सुजाव = श्याम सिह का पुत्र । सगाह = गर्व सहित । छळ = युद्ध । जोधां = जोधा शाखा के राठौड़ों का निर्वाह करनेवाला ।

८६—जैतहथा = जय जिनके हाथ में है । जैताहरा = जैतावत राठौड़ । जैतखंभ = जय के स्तंभ । जुध वार = युद्ध के समय । वीक तण = वीका का पुत्र मांडल ।

अखई बालां आभरण, रिणमालां रिण ढल्ल ।
कीधा मेर प्रमांण चित, लीधां व्रत अजमल्ल ॥८७॥
अखई थंभ अकास कूं, माधवदास सुतन्न ।
कोड़ जवन्नां भंजणौ, बंधव जोड़ बिसन्न ॥८८॥
पबा समत्थां आगळा, हत्थां चंद सुजाव ।
भालां जैत निभाहणा, बालांहंदा राव ॥८९॥
बालो भालो झल्लियां, रिण कालौ रावत्त ।
जुध वालौ बेली जिहां, तेजा सूजावत्त ॥९०॥
अखौ परग्गह आगलौ, जरद नमावै जोम ।
वाद तरस्सै साह सूं, बांह परस्सै व्योम ॥९१॥
विजा मनोहरदास का, महेवैचा समरत्थ ।
बांहां पांण निभाहणा, साहां सूं भारत्थ ॥९२॥

८७=अखई=अखैसिंह । बालां=बाला राठौड़ों का । रिणमालां०= राठौड़ों के रण की ढाल । लीधां व्रत०=अपने स्वामी अजीतसिंह के लिये नियम धारण किया ।

८८—अखई०=जैसे अखैसिंह माधवदास का पुत्र आकाश का स्तंभ है वैसे उसका भाई बिसनसिंह उसकी जोड़ का है ।

८९—पबा=पर्वतसिंह । चंद सुजाव=चंद्रसिंह का पुत्र । जैत= जय । बालांहंदा=बालों का ।

९०—बालो=बाला राठौड़ । रिण कालौ=रण बाउला अर्थात् निडर । जुध वालौ=युद्धप्रिय । बेली=सहायता करनेवाला । तेजा सूजावत्त=सूजा का पुत्र तेजसिंह ।

९१—अखौ=अखैसिंह । जरद=बख्तर । जोम=जोश । वाद= युद्ध के लिये । तरस्सै=तृष्णा रखता है ।

९२—महेवैचा=राठौड़ों की एक शाखा है । ये रावल मल्लिनाथ जी के वंशज हैं । पांण=(प्राण) बल । भारत्थ=युद्ध में ।

आहव सूरां आगळा, सुरतांणौ हटमल्ल ।
महियव रीत उजाळणा, अमर तणा पीथल्ल ॥९३॥

धीर परप्पण धारियां; सूजा वीर सुजाव ।
आहव जीत उजाळणा, रीत धवेचां राव ॥९४॥

रिणवत्तां रत्ता रहै, सकता वीर सुतन्न ।
जोड़े साम्हा ईस तण, रिण जगदीस प्रसन्न ॥९५॥

सँग जैतावत साहिबौ, दूजौ जैत दुझल्ल ।
जैत कमंधां बेळ जे, भांजण देत मुगल्ल ॥९६॥

ऊहड़ वंका आद सूं, अणसंका आजांन ।
हरका नेत्र प्रमाण रिण, सुंदर का भगवांन ॥९७॥

९३—आहव=युद्ध में । सुरतांणौ०=सुरताणसिंह और हटीसिंह । महियव०=महेचों की रीति को उज्ज्वल करनेवाला । अमर०=अमरसिंह का पुत्र पृथ्वीसिंह ।

९४—परप्पण=सामर्थ्य । सूजा०=वीरमदेव का पुत्र सूजा । धवेचां=धवेचा राठौड़ों की शाखा है । ये रावल मल्लिनाथजी के वंशज हैं ।

९५—रिणवत्तां=युद्ध की वार्ताओं में । रत्ता=(रक्त) अनुरागयुक्त । सकता०=वीरमदेव का पुत्र सकतसिह । जोड़े=साथ । साम्हा०=ईश्वरीसिह का पुत्र सामसिह ।

९६—जैतावत=जैतसिंह का पुत्र साहिबसिंह । दूसरा जैतसिंह । दुझल्ल=खाग त्याग दोनों को धारण करनेवाला अर्थात् वीर और दानी । जैत=जय । बेळ=मदद देनेवाले । जे=जो ।

९७—ऊहड़=राठौड़ों की एक शाखा है । अणसंका=निःशंक । आजान=आजानुबाहु । सुंदर०=सुंदरदास का पुत्र भगवानदास ।

भोज भुजां बळ थंभणा, मुड़तां गयण समाथ।
सांम जग्गवत सीम बळ, जोड़े भीम कि पाथ ॥९८॥

खग रूपी भड़ दाहिणै, घणै पराक्रम जांण।
भुज ओढण भूपाळ रै, वांमे तिके वखांण ॥९९॥

वंस वखांणै झल्लणो, चहुवांणे चुतरेस।
रत्तो साहां जंग कज, जांण विरत्तो सेस ॥१००॥

फतमाला पीथल्ल का, पीथक पारथ अंग।
तत्ता ताए लोह सम, सदा अधाया जंग ॥१०१॥

चोज न चूके रीत की, भोज तणा हरनाथ।
जुध चिंता भुज ओडवण, करण निचिंता साथ ॥१०२॥

९८—भोज=भोजराज। मुड़तां०=भुजबल से गिरते हुए आकाश को थामने के लिये समर्थ। साम०=जगतसिह का पुत्र सामसिंह। जोड़े=सदृश।

९९—खग०=शत्रुओं का नाश करने के लिये खड्गरूप। खड्ग दाहिने हाथ रहता है इसलिये जीवणी मिसलवाले खड्ग रूप हैं। ओढण=ढाल रूप। ढाल बाये हाथ में रहती है इसलिये बाई मिसलवाले ढाल रूप हैं।

१००—वंस=वंश की प्रशंसा को धारण करनेवाला। चुतरेस=चतुरसिंह। विरत्तो=(विरक्त) क्रुद्ध।

१०१—फतमाला०=पीथल्ल=पृथ्वीराज का पुत्र फतैसिंह। पीथक=(पृथक्) जुदा। तत्ता=गम। ताए=तगए हुए। अधाया=अतृप्त।

१०२—मोजतणा=मोजराज का पुत्र हरनाथ। जुध०=युद्ध की चिंता को भुजा पर धारण करनेवाला।

रण केहर पण अग्गळा, केहर का सबळेस।
चक्खां कोड़ पलाल सम, की लक्खां पँडवेस ॥१०३॥
तेजो नेजां ऊपरा, ओरे तेज तुरंग।
कहर वणीयण चंद को, मुहर अणी रण जंग ॥१०४॥
सकत त्रभागे तोलियां, सकतीपुरा मुरार।
वीज झड़ंदी सारखा, के सिवहंदी रार ॥१०५॥
मछरीकां रा पाटवी, चुतर अनै फतमाल।
ढाल तणी पर लेखवै, रिण जोधा रिणमाल ॥१०६॥

वार्ता

करमसीहो खत्री करम का उजागर
काम काम अवसांण मांम का रतनागर।
हरनाथ भीमंग रु भीम का अवतार
जवन की सेन्या कुरु बंस ज्यों लिगार।

१०३—केहर का०=केसरीसिंह का सबलसिंह। चक्खा०=जो करोड़ों नेत्रों के खोखले (तुष) के समान समझता है उसके आगे पडवेस=बादशाह के लाखों मनुष्य क्या वस्तु हैं ?

१०४—तेजो=तेजसिंह। नेजा०=भालों के ऊपर। ओरे=चलता है। कहर वणायण=भय को बनानेवाला। चंद को=चद्रभाण का पुत्र (तेजसिंह)। मुहर=आगे। अणी=सेना की अनी के।

१०५—सकत०=बर्छी को तीनों तरफ तोलता हुआ। सकतीपुरा=चौहान। मुरार=मुरारदान। वीज०=विद्युत्, बिजली। झड़ंदी=गिरती हुई के सदृश। के=अथवा। शिवहंदी=महादेव का। रार=नेत्र।

१०६—मछरीकां रा=चौहानों का। पाटवी=पट्टाधिकारी। ढाल-तणी पर=ढाल की तरह। लेखवै=मानते हैं, देखते हैं।

वार्ता—करमसीहोत०=करमसी के पुत्र, जाति के खत्री हरनाथ और भीमसिंह, जो कर्म करने में प्रख्यात, हरेक कार्य में मौका देनेवाले और युद्ध के समुद्र हैं। उनमें भीमसिंह भीमसेन का अवतार है। लिगार=थोड़ी

महा जोध जोधवंसी महापांण पांण
आंगमणी अंगद सा हणू सा अवसांण।
जीमणी भुजा मैं जैसा सोनंग दुरंग
वांमे जोर सीम सो(सा)ई भीम का अभंग।
हीरा का जसकरन जस के उछाह
साहां सूं गुमांन ऊभौ असमांन साह।
लखमीदास पातल का उज्जल अरेह
सांम धरम कांम कोट मांम का सा देह।
चाळै मैं सवाई दूंण चौगणा सा खाग
पवन के जोर वन घोर को ज्यां आग।
गिरधारी आया चाव बलराव का पूत
साहे वेध चाह साह्यौ राज रजपूत।
कमा जेता सांमी कांमी कूंन जांणै
जम की सहाय वंके सभी पहचांणै।

सी, अल्प। महापांण=बड़े हाथोंवाले। पांण=(प्राण) बल में। आंगमणी=कार्य करने में प्रथम ही ऐसा निश्चय कि मैं कर लूँगा; उत्साह शक्ति। हणू सा=हनुमान् के जैसा। अवसांण=मौके पर, अवसर पर। जीमणी=दक्षिण बाहु को तरफ सोनंग और दुर्गदास जैसे और बांई तरफ बल की सीमा भीम का पुत्र सांईदास, हीरसिंह का पुत्र जसकरण। साह=आकाश को धारण करके। पातल का=प्रतापसिंह का लक्ष्मीदास। अरेह=नहीं दबनेवाला। कोट मांम का सा देह=करोड़ों सैनिकों का सा जिसका शरीर है। चाळै मैं=युद्ध में उसकी तलवार सवाई दुगुनी और चौगुनी ऐसी चलती है कि जैसे पवन के बल से वन की भयंकर अग्नि। चाव=उत्साह से। साहे वेध=बादशाह से विरोध करके। चाह०=राज्य और राजपूतों को प्रीति के साथ सहारा दिया। कमा जेता=करमसोत राठौड़ों के जितने स्वामी का काम करनेवाले कौन जान सकता है! वे ऐसे बाँके हैं कि यमराज की भी सहायता करें।

दुहा

ऊदा धरती आधिया, आहव आध सिवाय।
चाळे वाधे सांम छळ, ज्यां ऊन्हाळे लाय ॥१०७॥
राजोधर बलरांम रौ, कांधो धर कमधज्ज।
थळ आये बळ औढणौ, गढपत्ती छळ कज्ज ॥१०८॥
बळ दूंणे विजपाल रौ, जोड़ धमळ जगपत्त।
बोझ निभाहण मारवां, गाहण मेछ दुरत्त ॥१०९॥
जगपत्ती उण जोस मै, रत्ती आग समांण।
वनसपती खळ जाळवा, कर तत्ती केवांण ॥११०॥
सांमळ कुंभकरन्न का, जामळ कुंभज मन्न।
साह अथाह समुद्र ज्यूं, आयां दुंद प्रसन्न ॥१११॥

१०७—आधिया=ऊदावत पृथ्वी में आधा भाग लेनेवाले हैं, परंतु युद्ध में आधे से भी अधिक भाग लेते हैं। स्वामी के वास्ते वे युद्ध में ऐसे बढ़ते हैं कि जैसे उष्णकाल में दावानल।

१०८—राजोधर=राजसिंह बलराम का पुत्र। थळ=स्थल, स्थान (मौका) आने पर बल धारण करनेवाला। गढपत्ती०=(गढ़पति) राजा के युद्ध के लिये।

१०९—विजपाल रौ=विजयसिंह का पुत्र जगत्सिंह। जोड़ धमळ=श्वेत बैल के सदृश। श्वेत बैल बैलों में सर्वोत्तम समझा जाता है। गाहण=नाश करनेवाला। दुरत्त=पापी म्लेच्छों को।

११०—जगपत्ती=जगत्सिंह। रत्ती=लाल अग्नि के समान है। तत्ती=तीक्ष्ण। केवांण=(कृपाण) तलवार।

१११—सांमळ=साँवलदास। जामळ=जन्मा हुआ। कुंभज मन्न=मन का अगस्त्य। दुंद=(द्वंद्व) युद्ध।

सांमळ ग्रह बळ वार उण, डह गयणाग.करग्ग ।
वाघ क नाग क छेड़िया, आग वज्राग क खग्ग ॥११२॥
दीपो गोइँद देद गिण, रूक हता रिण ढांण ।
तैसा च्यारे कुंभ तण, जैसा पंडव जांण ॥११३॥
अै च्यारूं ऊदाहरा, विखौ निवाहण कज्ज ।
नेम धणी छळ झल्लियौ, ज्यां हरि प्रेम अनज्ज ॥११४॥
तेजसिहोत महाबळी, ते जम तेज अपार ।
तूटे ज्यां सूं तेजरौ, तेज इसौ तरवार ॥११५॥
कळ चाळौ कळ अग्गळौ, रूपो रांमचँदोत ।
अमी उबारण आपणां, मेछां कारण मोत ॥११६॥

११२—वार उण=उस समय । डह=डसता हुआ, निगलता हुआ । करग्ग=(कराग्र) हाथ । क=क्या ? छेड़िया=छेड़ने से । वज्राग=वज्र को ।

११३—दीपो०=दीपसिंह, गोविददास और दूदा । रूक हता=हाथ में तलवार लिए । रिण ढांण=युद्ध में तेज चलनेवाले । च्यारे=चारों । तीन तो दीपो आदि और चौथा सामसिंह । कुंभ तण=कुंभकर्ण के पुत्र ।

११४—अै=ये । ऊदाहरा=ऊदावत । नेम=नियम । अनज्ज=(अनुज) लक्ष्मण ने जैसे हरि=राम में प्रेम किया था ।

११५—तेजसिहोत=तेजसिंह का पुत्र । नाम नहीं लिखा है । ते=वह । जम तेज=यमराज के समान तीक्ष्ण । तेजरौ=तृतीयक ज्वर ।

११६—कळ चाळौ=युद्धप्रिय । कळ अग्गळौ=युद्ध में अग्रणी । अमी=(अमृत) अपने लोगों को बचाने के लिये अमृत-तुल्य । कारण मोत=मृत्यु का कारण ।

नाहर गोवरधन्न रौ, नाहर भाहर सद्द ।
धर बाहर भांजण खळां, जाहर दळां विरद्द ॥११७॥
भाऊ आणँदरांम तण, उर आणंद प्रचंड ।
दळ आणंद प्रकासणा, खळ आणंद विखंड ॥११८॥
वीको गाजीसाह तण, वाह अडोल कमंध ।
फट्टा साह समंद नूं, दियण अघट्टा बंध ॥११९॥
धरती हंदा वाहरू, छत्रपती व्रत रत्त ।
वागां खागां सांम छळ, आगे ऊदावत्त ॥१२०॥
छत्रपत जोधां छात रै, जोध महाभुज जांण ।
करण सबोधां सांम कज, खग जोधां वाखांण ॥१२१॥

गाथा

दिल्ला साह विरत्ते, रण अगाध जम्मण उपकंठे ।
रैणायर रण मंडे, गौ दीवांण रांम खळ खंडे ॥१२२॥

११७—नाहर=नाहरसिंह । नाहर भाहर=नरसिंह की कांति हरनेवाला । सद्द=(शब्द) गर्जना से । धर बाहर=पृथ्वी को पीछे लानेवाला । विरद्द=(विरुद) यश ।

११८—भाऊ=भावसिंह ।

११९—गाजीसाह=गजसिंह का पुत्र । वाह=धन्य । अघट्टा बंध=नहीं घटे अर्थात् क्षीण न हो ऐसा बंधा देनेवाला ।

१२०—धरती हदा=पृथ्वी को । वाहरू=पीछे लानेवाले । छत्रपती०=राजा की सेवा में अनुरक्त । वागां खागां=घोड़े और तलवार उठाने में, तलवार चलने के समय ।

१२१—जोधां छात रै=जोधा राठौड़ों के छत्र (अजीतसिंह) के । जोध=जोधा राठौड़ ।

१२२—दिल्ली०=दिल्ली में बादशाह ने कोप किया था तब जम्मण=यमुना के तट पर । रैणायर=रड़छोड़दास जोधा युद्ध करके । दीवांण=दरबार में गया था । (काम आया था ।) रांम=परमेश्वर के ।

दुहा

सांम धरम्मी सांम छुळ, दल गंजे सुरतांण।
गौ रैणायर जोत हर, कर दिल्ली घमसांण ॥१२३॥
पूत उभै रिणछोड़ रा, जोड़ भड़ां सिरदार।
सिवौ खँवां नभ थंभणौ, भीमौ भुजां उदार ॥१२४॥
भीमाजळ बळ आगलौ, भीम अरज्जण जेम।
करण न चिंता राठवड़, ओडी चिंता एम ॥१२५॥

छंद बेअक्खरी

सिवौ भीम बळ नीम सवाई
भीम अरज्जण जैसौ भाई।
मुकन सुजाव भांण कुळ मंडण
खळ निस रूप तिकां मळ खंडण ॥१२६॥
छांनौ अजन जितै छत्रपत्ती
धारै ऊभौ लाज धरत्ती।

१२३—रैणायर=रणछोड़दास जोधा। हर=महादेव की ज्योति में चला गया था। घमसांण०=भयंकर युद्ध दिल्ली में करके।

१२४—पूत=(पुत्र) उस रणछोड़दास के। उभै=दोनों पुत्र। एक तो सिवसिंह, कंधों पर आकाश को थामनेवाला, दूसरा भीम।

१२५—भीमाजळ=भीमसिंह। अरजण=(अर्जुन) के जैसा। ओडी=धारण की।

१२६=बळ नीम=पराक्रम की सवाई नींव अर्थात् आधार। मुकन सुजाव=मुकनसिंह का पुत्र भांण। खळ निस०=शत्रु रूप रात्रि के मळ=अंधकार का नाश करनेवाला।

१२७—छांनौ=गुप्त। अजन=अजीतसिंह। जोड़ै=सदृश।

जोड़ै करन मुकन चौ जायौ
ओ बळ करन करण कळ आयौ ॥१२७॥

ऊभै करन वणे दळ एहा
जेम करन सूं कैरव जेहा।
चंद्रभांण पण उभै चलावै
जणां अमी दुरजणां जळावै ॥१२८॥

हैबतसिंघ लखण सुत हाथां
अम लखमण वाळौ भाराथां।
गोयँद सुत सबळौ गुर गाढां
बैठे खड़ग दुअंगळ बाढां ॥१२९॥

अरजण बाण जिसौ आखाड़ै
गज खग झाड़ै गीत गवाड़ै।
अखौ रिदावत रावत एहौ
जोखम विरियाँ भीखम जेहौ ॥१३०॥

करन०=मुकनसिंह का पुत्र कर्णसिंह। ओ=यह। बळ करण=बल में कर्ण के समान। कळ=(कलह) युद्ध।

१२८—एहा=ऐसा। कैरव=कौरव। जेहा=जैसा। उभै=दोनों। जणां=स्वजनों के लिये। अमी=अमृत।

१२९—गुर गाढां=बहादुरों का भी गुरु। बैठे खड़ग०=जिसके खड्ग के दो अंगुल का बाढ़ (धार) है।

१३०—अरजण०=अर्जुन के बाण के समान। आखाड़ै=युद्ध में। झाड़ै=काटता है। अखौ=अखैसिंह रिधसिंह का पुत्र। भीखम=भीष्म।

अमर किसोर तणौ अतुळी बळ
अगन सोर पर जोर अप्रबळ।
भाण तणौ हरनाथ महाभड़
आयां परब उबारण अच्चड़ ॥१३१॥
सबळौ माधवदास समोभ्रम
आहव कर मझ सो जम आतम।
वैणावत सांमो वरदाई
सांमळ वळ किलियांण सवाई ॥१३२॥
जोधा जोध लंकपत जेहा
ए नवकोट तणा छळ एहा।

दुहा

जोध भयंकर जोधहर, अडर मुरद्धर आड।
सरण छत्रधर सांपनै, वणे अकब्बर चाड ॥१३३॥

१३१—अमर = अमरसिंह। अगन० = अग्नि और बारूद के समान। आयां परब = समय आने पर। अच्चड़ = आश्चर्य हो जैसे।

१३२—समोभ्रम = पुत्र। आहव० = युद्ध करने में वह यम की देह है। वैणावत = वेणीदास का पुत्र सामदास। सामळ = साँवलदास। वळ = फिर। किलियांण = कल्याणदास। जोधा = जोधा राठौड़। लंकपत जेहा = रावण के जैसे। ए = ये। नवकोट तणा = मारवाड़ के। मारवाड़ में नव कोट हैं इसलिये मारवाड़ को नवकोटी कहते हैं। छळ = युद्ध में। एहा = ऐसे।

१३३—जोधहर = राव जोधा जी के वंशज। आड = मारवाड़ को रोकनेवाले। सरण० = राजा अजीतसिंह के शरण आने से अकबर की पुकार पर वे तैयार हुए।

भीम भुजां रैणंगरू, सीम सकज्जां लज्ज।
अणी धणी अगजीत दळ, वणी सधित गरज्ज ॥१३४॥
भांण करन्न प्रमांण बळ, मांण दजोण क पत्थ।
रण जूंभै पण जीपणै, कुण पूजै समरत्थ ॥१३५॥
मेड़तिया महाराज दळ, किया मुदै करतार।
दुंद अमंदी साळुळे, त्यां हंदी तरवार ॥१३६॥
हैमत हिम्मत ऊधरौ, सगतावत उण वेर।
विखै वरज्जै हीणता, ऊठ गरज्जै फेर ॥१३७॥
वळ आणँद हरियंद रौ, साहँस सिंघ प्रमांण।
अर बोलेवा ऊठियौ, भुज तोलै केवांण ॥१३८॥

इति माधोत ॥

चंदहरा बिय चंद सम, दुंद वधारण कज्ज।
वाधे दिन दिन सांम छळ, आराधे कुळ लज्ज ॥१३९॥

१३४—भीम भुजां० = भुजबल में रणछोड़दास के सदृश भीमसिंह। गरज्ज = गर्जना करके।

१३५—भांण० = भांण बल में कर्ण के समान और मान में दुर्योधन अथवा अर्जुन के तुल्य। पण जीपणै = जीतने का जिसके प्रण है। पूजै = पहुँच सकता है।

१३६—मुदै = मुख्य, मुखिया। दुंद = (द्वंद्व) युद्ध। साळुळे = चलती है।

१३७—हैमत = हैमतसिंह। ऊधरौ = ऊँचा। सगतावत = सगतसिंह का पुत्र।

१३८—वळ = फिर। आणँद = आनंदसिंह। हरियंद रौ = हरिसिंह का। बोलेवा = बकारने के लिये। केवांण = तलवार।

१३९—चंदहरा = चांदावत मेड़तिया। बिय चंद सम = द्वितीया के चंद्र के समान।

विमुह करण रण साह दळ, मुहकम का हरियंद।
सोच निमेड़ण निय दळां, खळां उखेलण कंद ॥१४०॥
कांम धणी हरराम का, हांम धणी जूंझार।
पाछै कहिया वीर वर, यांसूं आगळियार ॥१४१॥

वार्ता

चंद्र के न्याती सूर के तेज,
हांम में न ल्यावै रण काम की जेज।
किसनसिंघ नाथावत पोकर की राड़,
राजड़ सूं आगै वग्गा नग्गो खाग झाड़।
चंद के गरब राखे सूर चंद साखी,
राजा छळ कांम आया साजा बोल साखी ॥

दूहा

मारू रायांमाल का आयां काम समत्थ।
सीम भड़ां पांणे सदा, जांणे भीम क पत्थ ॥१४२॥

१४०—विमुह = (विमुख, पराङ्मुख। हरियंद = हरिसिंह। निय दळां = (निज) अपनी सेना का। उखेलण = उखाड़नेवाला। कंद = जड़, मूल।

१४१—हरराम का = हरिराम का पुत्र जूंझारसिंह।

वार्ता—चंद्र के न्याती = चांदावतों की जाति के। हांम में = उत्साह। नाथावत = नाथूसिंह का पुत्र। पोकर की राड़ = पुष्कर की लड़ाई में। राजड़ सूं = राजसिंह के आगे। वग्गा = लड़कर काम आए। चंद के० = चांदाजी का गर्व रखनेवाले। साजा बोल = वचन के सच्चे।

१४२—रायांमाल का = रायमलोत। आयां = काम पड़ने पर। सीम भड़ां = बहादुरी की सीमा। पांणे = भुजबल में। जांणे० = मानों भीम अथवा अर्जुन।

अजब वणे दळ मारवां, अजबावत द(ब)ळराम ।
रूके आंटा रक्खणा, मोटां कामां मांम ॥१४३॥
करण विजै रिण किरमरां, चतुर विजावत चाह ।
रत्ता काम अजीत रै, रैण विरत्ते साह ॥१४४॥
जोध वळे राजान रौ, भळे खवां कुळ भार ।
आभ समाहे ऊंडले, दीठे दळे करार ॥१४५॥
देवीदास विसन्न तण, जांणे विसन भुजांन ।
भांजेवा तेढां भड़ां, वेढां तणौ विसन्न ॥१४६॥
देवा आहव आंगमे, माहव का मैवार ।
रायमलोतां नेम धर, केहर जेम करार ॥१४७॥

१४३—अजब = अनोखा । अजबावत = अजबसिंह का पुत्र दौलत सिंह (बलराम) । रूके = तलवार से । आंटा = बदला लेना । मोटां० = बड़े कोटों से । मांम = युद्ध करनेवाला ।

१४४—विजै = विजय । किरमरां = तलवारों से । चतुर० = चतुरसिंह विजैसिंहोत । रैण = रण में । विरत्ता = विरक्त ।

१४५—जोध = जोधसिंह राजसिंहोत । वळे = फिर । भळे = उठानेवाला । खवां = कंधों पर । आभ० = आकाश को गोदी में रखनेवाला । करार = सामर्थ्य, बल ।

१४६—विसन्न तण = विसनसिंह का पुत्र । विसन = विष्णु । भुजांन = भुजबल में । तेढां = टेढ़े, वक्र । वेढां तणौ = युद्धों का । विसन्न = व्यसन ।

१४७—देवा = देवीसिंह । आंगमे = अंगीकार करनेवाला । माहव का = माधवसिंह का पुत्र । मैवार = (मै = अहंकार) अहंकारवाला । करार = शक्ति, सामर्थ्य ।

मारू रायांमालहर, सारू खळां अगड्ड ।
मोटां चीत सँभावणा, जे नवकोटां चड्ड ॥१४८॥

अै रायमलोत
आगै विसनदासोत

दुहा

विसनहरा दळ ऊधरा, जळ चाढण कुळ मग्ग ।
मारू सूर प्रताप रौ, थांभै आभ करग्ग ॥१४९॥
मानसिंघ दळपत्त रौ, बळ हणवंत वखांण ।
जो आरंभै सो करै, राजस थंभै पांण ॥१५०॥

गाथा

अक्खै सूर कमंधो, सचांणे सोई सूर सापुरसौ ।
जो लद्धे अवसाणं, झल्लै खग्ग मग्ग रजवट्टं ॥१५१॥

१४८—रायांमालहर = रायमलोत । सारू खळां = शत्रुओं के वास्ते । अगड्ड = रोक । सँभावणा = सँभालनेवाला, धारण करनेवाला । चड्ड = पुकार पर ।

१४९—विसनहरा = विसनदासोत । ऊधरा = ऊँचे । जळ = पानी, आब, कांति । सूर = सूरसिंह प्रतापसिंह का पुत्र । करग्ग = (कराग्र) हाथ से ।

१५०—राजस = राज्य को । पांण = हाथ से ।

१५१—अक्खै = कहते हैं । कमंधो = राठौड़ । सचांणे = सच्चा । सापुरसौ = सुपुरुष । अवसाणं = मौका मिलने पर । रजवट्टं = रजपूती को ।

दुहा

मान कहै दळपत्त रौ, लाभ निदान सुणाय।
धाम न मूंकै सांम का, तिण मुख सरम सवाय ॥१५२॥

अै मेड़तिया

आगै पातावत

छंद बेअक्खरी

अै पाता ताता अवसांणे,
काज धणी वाजै केवांणे।
प्राझौ भूपत तणौ पिथल्लौ,
भूप अजीत तणौ अत भल्लौ ॥१५३॥
मुकन महाबळ आगळ मोटां,
कळहण राम तणौ नव कोटां।
पातौ जोध धणी छळ पायां,
भगवानोत मौहरी भायां ॥१५४॥

१५२—मूंकै = छोड़ता है।

१५३—अै = ये। पाता = पातावत। ताता = तीक्ष्ण। अवसांणे = मौके पर। वाजै = युद्ध करते हैं। केवांणे = तलवारों से। प्राझौ = प्रज्वलित (तेजस्वी)। भूपत तणौ = भूपतसिंह का। पिथल्लौ = पृथ्वीसिह।

१५४—मुकन = मुकनसिंह। आगळ = अग्रणी। कळहण = युद्ध में। राम तणौ = रामसिंह का पुत्र। पातौ = पातावत। जोध = जोधसिह। मौहरी = अग्रणी।

रूपा कुळवट रूप रहावै,
दुरगौ जगौ सिंघ दरसावै।
मँडळे भावसिंघ कुळ मंडण,
खग आगळौ सबळ खळ खंडण ॥१५५॥

मांगळियौ सुंदर मिणधारी,
धुर भगवान महाव्रत-धारी।
राजड़ सहत सजूंझा रावत,
जुध कमँधां छत्र एह जसावत ॥१५६॥

ऊदौ खेतल मधकर एहा,
पीथावत पत काम सप्रेहा।
खा गहथा माझी खूमांणा,
भेळा कमँध दळे मन भांणा ॥१५७॥

१५५—रूपा = रूपावत। रूप रहावै = स्वरूप रखनेवाले। दुरगौ जगौ = दुर्गदास, जगत्सिंह। मँडळे = मंडळा राठौड़ों की शाखा है। सबळ = सबळसिंह।

१५६—मांगळियौ = मांगळिया = गहलोतों की शाखा है। मिणधारी = मुख्य। धुर = प्रथम। राजड़० = राजसिंह सहित। सजूंझा = जूझनेवाले, युद्ध करनेवाले। रावत = पदवी है। एह = ये। जसावत = जसवंतसिंह के पुत्र।

१५७—ऊदौ० = उदयसिंह, खेतसिंह, माधवसिंह। एहा = ये। पीथावत = पृथ्वीसिंह के पुत्र। सप्रेहा = स्पृहा सहित। माझी = मुख्य, मुखिया, अग्रणी। खूमांणा = सीसोदियों में। मन भांणा = मन को रुचिकर।

इँदा आद लगे पण पहौ,
सांम धरम नित रहै सनेहौ।
भोज महाबळ आगळ भारथ,
परब परब जांणे जुध पारथ ॥१५८॥

बंधव जैत जोड़ बांहांळौ,
इँदां छज कुळवाट उजाळौ।
हरियँद तणा दळां हाताळां,
कमंधां दळ आगळ कळचाळा ॥१५९॥

अथ खीची

कुळ उजवाळौ मुकन कलावत
राठौड़े कहियौ मिळ रावत।
मोटी प्रीत जतन पत मंडे
खीची चरणां निजर न खंडे ॥१६०॥

१५८—इँदा = पड़िहारों की शाखा है। आद = आदि से। भोज = भोजराज। परब परब = समय समय पर। पारथ = अर्जुन।

१५९—जैत = जैतसिंह। बांहाळौ = लंबी भुजावाला। छज = छाजा, छात। कुळवाट = कुल के मार्ग। हरियँद तणा = हरिदास के वंशज। हाताळां = तलवार चलानेवाला। कळचाळा = युद्ध में छेड़छाड़ करनेवाला।

१६०—खीची = चौहानों की एक शाखा है। कलावत = कले का पुत्र। मंडे = करता है।

जोड़ सिवौ बंधव जेत्राई
भूप तणा जतनां बे भाई।
राठौड़े सिव धाम रहाया
भूप तणा अत जतन भळाया ॥१६१॥
अवर सकौ खीची मुह अग्गै
जुध कमँधां आगळ छळ जग्गै।
जोध सऔध वंस जोगावत
राजी देख हुवै मन रावत ॥१६२॥
राजा छळ खीची कुळ राहे
सांमधरम ऊभा व्रत साहे।
धांधल पालहरा पण धारी
अे अगजीत सुछळ अहँकारी ॥१६३॥
मनहर कौ गोयँद पूरै मत
जोड़ै कीरतसिंघ जसावत।
मांन सुजाव उदैक्रन माहे
सुंदर सुतन मुकन व्रत साहे ॥१६४॥

१६१—जोड़ = साथ में। सिवौ = शिवसिंह। जेत्राई = जय करनेवाला। बे = दो। राठौड़े = राठौड़ों के वास्ते। सिवधाम = सिरोही में रहे। भळाया = सुपुर्द किया।

१६२—अवर = (अपर) अन्य। सकौ = सब। जोध = जोधसिंह। सऔध = कुलीन।

१६३—साहे = धारण किए हुए। धांधल = राठौड़ों की एक शाखा है। पालहरा = पाबूजी के वंशज। अगजीत = अजीतसिंहजी के। सुछळ = युद्ध के निमित्त।

१६४—जोड़ै = साथ में। जसावत = जसवंतसिंह का पुत्र। मांन सुजाव = मानसिंह का पुत्र। उदैक्रन = उदयकरण। सुंदर = सुंदरदास का पुत्र मुकनसिंह। व्रत साहे = नियम को धारण किए।

अै धाधल रजवट उजवाळा
प्रब अजमाल भिड़ण प्राचाळा ।।

आगे पड़िहार

पड़ धारियौ वडौ पड़िहारां
अजन दळां छळ आगळयारां ।।१६५।।

सुजड़ा हथौ भदावत सांमळ
भीमहरौ छळ धणी भुजागळ ।
सांमळ जोड़ जोध सादावत
रिण पड़िहार सजूंझौ रावत ।।१६६।।

आणँद सुत माहेस अरेहौ
सांमधरम इण नाम सनेहौ ।
विजपाळौ चाळै वरदाई
जोगीदास तणौ जैत्राई ।।१६७।।

१६५—अै = ये । रजवट उजवाळा = रजपूती को उज्ज्वल करनेवाले । प्रब = (पर्व) समय । प्राचाळा = बड़े पौंचेवाले । आगळियारां = अग्रणी ।

१६६—सुजड़ा हथौ = कटारी हाथ में लिए । भदावत = भदा का पुत्र । सांमळ = श्यामलदास । भीमहरौ = भीम का वंशज । छळ = युद्ध में । धणी भुजागळ = स्वामी के लिये कपाट बंद करने की अर्गला हो जैसा । जोड़ = सदृश । जोध = जोधसिंह । सादावत = सादूलसिंह का पुत्र ।

१६७—माहेस = महेशदास । अरेहौ = नहीं दबनेवाला । विजपाळौ = विजयसिंह । चाळै = युद्ध में । जैत्राई = विजय करनेवाला ।

नरहर जोगीदास निभै नर
आणँदसुत कुळ रीत उजागर ।
बंधव त्रण आगळ वळवांणे
अखईहरा वधे अवसांणे ।।१६८।।

धरियां रतन तणा धुर धारण
दानौ बलू खेतसी दारण ।
सोभावतां तणो पण साचौ
कळ हण खरा न को रण काचौ ।।१६९।।

कुसलावत वीठल रण कोडे
ऊभौ गयण भुजाडँड ओडे ।
वैणावत दालौ वरदाई
स्यांम धरम व्रत प्रीत सवाई ।।१७०।।

जोगावत जीवण जुध जांमळ
बदरीदास पिराग महाबळ ।
सोभावत कुळ गुणां सवायां
दौढीदार सार दरसायां ।।१७१।।

१६८—निभै = निर्भयसिंह । आणादसुत = आनंदसिंह के पुत्र । अखईहरा = अखैसिह के वंशज ।

१६९—धुर धारण = धुरी को धारण करनेवाले, अग्रणी । दारण = विदारक ।

१७०—कोडे = उत्साह । गयण = (गगन) आकाश को । ओडे = धारण किए । दालौ = दयालदास ।

१७१—जुध जांमळ = युद्ध को जन्म देनेवाला । सार = तलवार ।

धांधू कुळ हरदास धुरंधर
वळे राम जोड़ै वीरंवर ।
उरजावत दोनूं भड़ आगळ
अधपत सुछळ लियां व्रत उज्जळ ॥१७२॥
वंस छत्रीस मुरद्धरवाळा
राजा जतन उतन रखवाळा ॥
साखां लाख छत्रि समरत्थां
साहँस बांधे बांधे सत्थां ॥१७३॥
वळ गहलोत वडा व्रतधारी
कमँधां धणी तणा हितकारी ।
वीरमदे पत धरम सवायौ
जोस भुजे दूणौ जांणायौ ॥१७४॥
देवराज धनराज अरेही
सांम काज कुळ लाज सनेही ।
चक्रवत चाड त्रिए चुतरावत
रिण रावतां सिहायक रावत ॥१७५॥

१७२—धांधू=पँवारों की एक शाखा है । वळे=फिर । राम=रामसिंह । जोड़ै=साथ । उरजावत=अर्जुन के पुत्र । आगळ=(अर्गला) कपाट को बंद करने का डडा ।

१७३—उतन=वतन, जन्मभूमि, अपना देश । साखां लाख=लाखों अर्थात् अनेक शाखाओं के क्षत्रिय बड़े समर्थ हैं । सत्थां=साथ को लिए हुए ।

१७४—वळ=फिर । गहलोत=सीसोदिया । तणा=का ।

१७५—अरेही=नहीं दबनेवाले । चक्रवत=(चक्रवर्ती) राजा की । चाड=सहायता के लिये । चुतरावत=चतुरसिंह के पुत्र । रावत=योद्धा ।

जोड़ दुहूँ बंधव जैतावत
कमँध दळे बळ घणै कलावत।
मनहर बलू उजागर मारू
सझियां सरम साँमध्रम सारू ॥१७६॥
नारण केसव तणै निभै नर
बन्नर नील जिसौ बळ वानर ॥१७७॥

दुहा

उण वेळा बळ आगला, दळ कमधज्ज दुबाह।
ऊकट्टां बळ ऊससै, सीस उलट्टां साह ॥१७८॥
कायथ कत्थ रहावणा, सांम कांम समराथ।
काया त्यागी केहरी, नह दी माया नाथ ॥१७९॥
साह दरगाह बूझिये, झळे सकळ भर भार।
केहर ज्यूं पत छळ करै, समरै तिकां संसार ॥१८०॥

१७६—जोड़ = तुल्य। जैतावत = जैतसिंह का पुत्र मनोहरसिंह। कलावत = कला का पुत्र बलू। सारू = वास्ते।

१७७—निभै = निर्भय। बन्नर = बंदर। वानर = राठौड़ों की एक शाखा है।

१७८—दुबाह = दोनों हाथो से प्रहार करनेवाले। ऊकट्टां = उकटने से, क्रोध के समावेश से। ऊससै = बढ़ता है। उलट्टां = हमला करके चलना।

१७९—कायथ = कायस्थ। काया = शरीर। केहरी = केसरीसिंह कायस्थ, जो महाराजा जसवंतसिंहजी का दीवान था। माया = धन। नाथ = मालिक का।

१८०—बूझिये = पूछने पर। झळे = धारण किया। केहर ज्यूं = केसरीसिंह कायस्थ के जैसे। छळ = कार्य। समरै = स्मरण करता है।

वार्ता

केसरी सिंघ रामचंदोत सांम व्रत सूरा
पातसाह के बूझे निरवाह किया पूरा।
महाराजा के खजाने पहले जतन किया
सुलतान के माँगत ही अपना प्राण दिया॥
सांम के धरम की सरम सिंघ साही
अैसी कोन करै जैसी कायथ निरभाई।
ताका भाई हरकिसन चंद (चित्त) का उदार
खूंद के विखै मै व्रत मेर के प्रकार॥
आठूंई मिसल के कमँध महाबाह
जाकी सुण मानी वानी विखै की सलाह।
चाळै मैं अग्रकारी अनेक सा एक
राम दळां मेळ जांणै नील कौ विवेक॥
भंडारी अखंड नेम आसकरन आगै
राजा दळ राज काज साजा छळ जागै।
वरधमान नंद इंद्र अगजीत का मंत्री
सर्व सावधान जैसे थान थान जंत्री।

वार्ता—बूझे = पूछने पर। सिंघ = केसरीसिंह। खूंद के = स्वामी के। विखै मै = विपत्ति के समय में। मेर = सुमेरु पर्वत के समान। आठूंई मिसल के = जोधपुर राज्य में आठ ठिकानों के सरदारों को सिरा इनायत है। वे अपनी पंक्ति में सबके प्रथम स्थान में बैठते हैं। इसलिये उनको सिरायत कहते हैं। चाळै मैं = बखेड़ा करने में, युद्ध करने में। अग्रकारी = अग्रणी। नील = रामचंद्र जी की सेना का सेनापति। साजा = पूर्ण। छळ = युद्ध में। वरधमान नंद = वृद्धिचंद्र का पुत्र इंद्रचंद्र। जंत्री = यंत्र मंत्र जाननेवाला। भूत आदि को निकालनेवाले मंत्रवादी को हर

रायांचंद दीपावत दीप सा उजाळा
जाकी बुध अरि पतंग जाळबे कूं ज्वाळा।
खींवसीह सीह सा सांवतसिंघ तैं सवाई
जाके मन साह फौजें गज समान आई।
जगनाथ का हेमराज राज काज पूरा
अजमाल के व्रत काज सूरां तैं सूरा।
अखैराज प्रोहित कौ हित मापै कूंण
दलपत का द्रोण गुर जैसै जोर दूंण।
सांम काम तेग बंधी सीस बंधे मोड़
लाख सम लेखै तेरै साख के राठौड़।
विखमी मैं सादूळ लिखमीचंद व्यास
मुरार का बाळकिसन साहँस निवास।
जहां जहां आप वणी बूझवे सरीखी
कमधां के साथ वात व्यास पास सीखी॥

दुहा

बारठ केसरिसिंघ सूं, अक्खी सोनग साह।
खत्रि सपूताचार रौ, थां हूंता निरवाह॥१८१॥

स्थान में सावधान रहना पड़ता है; नहीं तो भूत प्रेतादि उसे मार डालें। रायांचंद = रायचंद दीपावत भंडारी। अरि पतग = शत्रु रूप पतग को। खींवसीह = खींवसी भंडारी। सीह सा = सिह के तुल्य। अखैराज प्रोहित = पुष्करणा ब्राह्मण। द्रोण गुर = द्रोणाचारज दलपत का पुत्र पुष्करणा ब्राह्मण। तेग = तलवार। मोड़ = सेहरा। लेखै = गिने जाते हैं। विखमी मै = विषम समय में। बूझवे = पूछने के सदृश। साथ = समूह ने।

१८१—अक्खी = कही। खत्रि = क्षत्रियों के। सपूताचार रौ = सुपुत्रपन का। थां हूंता = तुमसे।

बाण अनै केवाण री, वेळ समप्पण काज ।
करण सनेहा सूर कुळ, तो जेहा कवराज ॥१८२॥

गाथा

खत्री धार खड्ग्गो, ते खुरसांण बाण कवि इंदो ।
थप्पे गाढ सद्रड्ढो, अप्पे बोध बाढ विसतारं ॥१८३॥

दूहा

कवि तद बोले केहरी, सकवी सूर सुभट्ट ।
बोध समप्पण धूहड़ां, कुळ रोहड़ां मुगट्ट ॥१८४॥

वार्ता

बारहट केसरी भीम का भीम
सूरां तैं सिरकस कविराजां की सीम ।
मूंछ पर हाथ दिया,
मन में उछाह किया ।
सूरां के प्रमाण तोले,
सभा सुणत वचन बोले ।
सुणो ठाकुरां सिरदारां,
आय वणी महासूरां की वारां ।

१८२—केवाण री = तलवार की । वेळ = (वेला) तरंग देने के लिये । तोजेहा = तेरे जैसे ।

१८३—खत्री० = क्षत्रिय तो खड्ग की धारा है, और कवींद्र की वाणी खुरसांण = सांण है । थप्पे० = थापलना दृढ़ गाढ है, और बोध देना बाढ है ।

१८४—केहरी = केसरीसिंह (मूंदियाड़ का रोहड़िया बारहठ) । बोध० = राठौड़ों को बोध देने के लिये ।

वार्ता—भीम का भीम = भीमसिंह का पुत्र । सिरकस = अधिक, प्रबल । वारां = समय । थळ = स्थान, समय । धमळ = धोरी, मुख्य । बोहळूं के =

औ तौ अप्रबळ थळ पायौ,
वंस के धमळ ताकौ समय आयौ।
बोहळूं के प्राण छीजै,
तद धमळ के कंध बोझ दीजै।
ऐसी अनेक वात कही,
और ही कवेसर बोल वाह वाह कही।
सौ बीस साख के कवेसर,
रूपगां के रतनागर
खत्री वंस के हितकारी,
और वीर रस के आचारी।
सस्त्र विद्या के आचारज,
जळ रूप क्षत्रियां के वारज।
आपणी आपणी वाणी राजवंसी राजावां के रूपक सुणाए
सूरवीर सामंत ताकूं अनंत सुहाए
एते कवि वीरता के अग्रकारी,
श्रीमहाराज के सुभचिंतक विद्या जस के व्योपारी।
इण समै सूरवीरां की ढाल,
प्रवाड़ा अमर करवे कां अम्रत से सवाळ।
बारहट भीम राजान का सूरां को सनाह
श्रीमहाराज कै काम चाहै प्रतंग्या के निवाह

बछुरों के। धमळ=श्वेत बैल, धोरी। और ही=अन्य कवीश्वरों ने। सौ बीस साख के=एक सौ बीस १२० शाखाओं के कवीश्वर। रूपगां के०=काव्य-रूपकों के समुद्र। आचारी=आचार्य। वारज=कमल। अग्रकारी=अग्रणी। प्रवाड़ा=चरित्र, युद्ध। सवाळ=वचन। सनाह=कवच,

ताके पुत्र कवींद्र केहरी आईदान
तीसरा नाडूल की लड़ाई काम आयां कान्ह
नाथावत वाघ आसकन कविराय
सांम के काम सादूळ के चाय।
चावंडदास का भैरूंदास भैरूं के रूप
चावंडसो चंद्रप्रहास अरी ग्रास की चूँप।
सौ वीसे साख का और ही चारण
जाकां राव रांण करे प्राण तुल कारण॥

दुहा

के डेरांधारी सुकव, सबळै तोल सहास।
समहर सारां आगली, के सिरदारां पास॥१८५॥

छप्पय

तेज पुंज कमधज्ज, सभा जम सज्झ भयंकर
अमर वंस आपांण जांण लंका छळ बंदर।

बख्तर। कवींद्र-केहरी=कवींद्रों में सिंह के समान। आईदान=नाम है। कान्ह=नाम है। नाथावत=नाथा का पुत्र वाघा। आसक्रन=कविराज आसकरण। सादूळ के चाय=सादूल का पुत्र। भैरूं के रूप=भैरव के सदृश। चावंडसी=चामुंडा देवी के जैसी। चंद्रप्रहास=तलवार। अरी ग्रास की चूँप=शत्रुओ को निगल जाने की साश्चर्य अभिलाषा। सौ बीसे साख का=एक सौ बीस १२० शाखाओं के। कारण=सम्मान, आदर।

१८५—के=कितने ही। डेराधारी=स्वतंत्र डेरोवाले। सबळै०=अधिक प्रतिष्ठावाले और साहसी हैं। समहर=युद्ध में सबके आगे रहनेवाले। के०=कितने ही उमरावों के समीप हैं।

१८६—सभा जम सज्झ=मानों यमराज की सभा सजी है। अमर वंस=देववशी। आपांण=पराक्रमवाले। छळ=युद्ध में। बूझ=पूछकर।

बूझ व्यास प्रोहितां समर सूरां गुर सिक्षा
सकत मंत्र सिव कवच विष्णुपंजर हरिरक्षा ।
ऊधरै जोस परसे अरस, कळा सूर दरसे कमळ
धुर जोत ग्रहे सोभा धरे, ज्यां सारंग सनेह बळ ॥१८६॥

दुहा

यौं वीरारस आगळा, भड़ नवकोट दुबाह ।
भेख अरज्जण भींव भड़, देख अकब्बर साह ॥१८७॥
पाछै काळी छेड़ियौ, दिल्ली खूंद रवद्द ।
दुवौ अकब्बर अप्पियौ, हुवौ नगारे सद्द ॥१८८॥
वाजत्रे सुर जैत रो, डावी चील किलक्क ।
आभ पड़ंतां थंभ पर, थई सलाह मुलक्क ॥१८९॥
औरँग कोप विलोप भू, गिणे अकब्बर साह ।
साम्हा चढिया वावसू, खड़िआ पिच्छम राह ॥१९०॥

सकत मंत्र=(शक्ति का मंत्र) नवार्णव, शिवकवच. विष्णुपंजर, रामरक्षा इनका पाठ कर। ऊधरै=ऊँचे। परसे=छूते हुए आकाश को। कळा०=सूर्य की कला (किरण) से जैसे कमल प्रफुल्लित दिखाई देता है। धुर=आदि में। सारंग=दीपक। सनेह०=(स्नेह) तेल के बल से।

१८७—भड़ नवकोट=नवकोटि मारवाड़ के वीर। दुबाह=घोड़े, खाग त्यागवाले।

१८८—काळी छेड़ियौ=छेड़ा हुआ कालिय नाग हो जैसा। खूंद=मालिक। रवद्द=मुसलमान। दुवौ=हुक्म, आज्ञा। सद्द=शब्द।

१८९—वाजत्रे=देवों के जय का वाद्य। डावी०=बाईं चील बोली। आभ०=गिरते हुए आकाश को थामने के लिये जैसे।

१९०—औरंग०=अकबर को पृथ्वी लोपनेवाला जानकर औरंगजेब ने क्रोध करके। वावसू=जासूस।

छप्पय

आरंभे अजमेर, सेन असपत्त सचेळा
खुरासांण खट खंड, मिले नव खंड समेळा।
सितर खांन सकबंध, कटक अनमंध छिले कर
असपत हद सामंद, कीध ऊबंध प्रमेसर।
उल्लसै वेळ परसै अरस, ग्यान न लोक विगत्त रौ
जग करण लोप अंतक जिसौ, इसौ कोप असपत्त रौ ॥१६१॥

निस वीती त्रय जांम, गजर वज्जी घड़ियाळे
कर आदर परजंक, जग्यौ बींभर तिँह काळे।
असपत्ती अविराम, साह आलम्म बुलायौ
दियौ हाथ धानंक, सेन अणसंख वतायौ।
बहरी अमंख हित पंख बळ, गहै कुलंक असंक गत
सोनंग दुरँग अकबर सहित, सझौ पम धर नेम सत ॥१६२॥

१९१—असपत्त =(अश्वपति) बादशाह की। सचेळा = बड़े चेलेवाली (भारी)। खुरासांण० = खुरासांण के योद्धा छः ६ खंड के। नव खंड = नौ कोटों के। सकबंध = युद्ध करनेवाले। अनमंध = अपार। छिले = आगे बढ़े। ऊबंध =(उद्बंध) मर्यादारहित। अरस = आकाश। विगत्त रौ = सख्या का। अंतक = काल के समान।

१६२—जांम =(याम) प्रहर। गजर = प्रभात की नौबत। घड़ियाले = घड़ियाल बजी। परजंक =(पर्यंक) पलंग। बींभर = विह्वल होकर। असपत्ती० = बादशाह औरंगजेब ने दुखी होकर शाहजादे आलम को बुलाया। धानंक = धनुष। बहरी = पक्षिविशेष। अमंख = (आमिष) मांस के लिये। कुलंक = पक्षि-विशेष को पकड़ै। सझौ = तैयार हो जाओ। धर० = सत्य नियम को धारण करके।

जो जावै खह समर, पंख धर पाछै जाऔ
चित पयाळ चिंतवै, खोद कड्ढौ ग्रह आऔ।
देसंतर ऊतरै, देसपत्ती सँग बंधौ
करै संध जो कोय साह तिण प्रीत असंधौ।
आकास रसातळ दिस असट, पारावार समंद्र पथ
जमजाळ दुसह जायै जहाँ, आंणौ ग्रह मेरै अरथ ॥१९३॥
कर सिलाम त्रय वार, तांम आलम्म महातप
ओप जोस असमांण, वधे किर रोस महावप।
अरस सीस ओडतौ, रीस रत्तौ रस वायौ
तजे दरग्गह वार, एम गहछायौ आयौ।
आरंभ काज गज आरुहे, अनमित सेन उलट्टियौ
सुणियौ प्रचंड वाजंत्र सुर, किर ब्रहमंड पलट्टियौ ॥१९४॥
हिले संप हैथाट, चले बांना बहुरंगी
इळ जळनिध उल्लटे, जांण वड़वानळ संगी।

१९३—वादशाह आलम से कहता है कि यदि अकबर खह=आकाश में जावे तो पाँखें लगाकर पीछे जाओ। सध=जो कोई अकबर से संधि करे उससे संधि तोड़ डालो। जमजाळ=जैसे यमराज का जाल जहाँ जाता है वहाँ से पकड़ लाता है वैसे पकड़ लाओ।

१९४—तांम=तब। ओप=शोभा देता है। रोस=महान् शरीरधारी क्रोध। अरस०=सिर को आकाश में लगाता हुआ। रस वायौ=वीररस से बावला। वार=(द्वार) दरवाजे को। गहछायौ=गर्व से आच्छादित। आरंभ=चढ़ाई के लिये। अनमित=असंख्य। उलट्टियौ=वेग से चला। सुर=(स्वर) शब्द। ब्रहमंड=(ब्रह्मांड) जगत्।

१९५—संप=(सर्प) शेषनाग। हैथाट=(हय) घोड़ों के समूह से। बांना वहरंगी=चित्र विचित्र वेपवाले, अथवा बहुत रंगोंवाले झंडे। इळ०=मानों पृथ्वी पर बड़वानल के साथ समुद्र उलटा। पहवि=पर्वतों

गिर छीजे खुरताळ, पहवि थळ सिखर पलट्टे
पड़े अपंथे पंथ, त्रणह तुट्टे सर खुट्टे।
गूदळे व्योम ढंके गरद, रवि लुक्के धूँआं रवण
आलम्म पयांणौ एण पर, कोप तेण झल्ले कवण ॥१६५॥

इसै कोप आलम्म, अगम दळ हूँत उलट्टौ
विखम धूम वाधियौ, जांण विध अंग पलट्टौ।
कना राम कट्टतैं, रसा रांमण सिर छाई
संभ सेन साळुळे, कना माथै महा माई।
अस सीस रसोड़ा आरँभे, भल कजाक घोड़ां भड़ां
अरि खांत अकब्बर ऊपरै, इसी भांत ऊरव्वड़ां ॥१६६॥

दुहा

तीन अणी फौजां त्रिप, जोम घणै जवनेस।
अति सालै आलम उवर, सोनंगिर दुरगेस ॥१६७॥

के शिखर चूर्ण होकर पृथ्वी पर स्थल हो गया है। त्रणह=तृण। सर=तालाब। लुक्के=सूर्य छिप गया है। धूँआं रवण=धुँधली रेणु से। एण पर=इस प्रकार। तेण=उसका। झल्ले=धारण करे। कवण=कौन।

१९६—अगम=असंख्य सेना से। विध अंग पलट्टौ=मानों विधाता के अंग का पलटना अर्थात् प्रलय। कना=या तो राम के काटने से। रसा=पृथ्वी। रांमण=रावण के मस्तकों से भर गई है। संभ=शुंभ की सेना पर। साळुळे=झुकी है। अस०=रसोई का सामान घोड़ों पर लिया। कजाक=मारनेवाले भटों को। खांत=विचार के। ऊरव्वड़ां=त्वरा के साथ चलाए।

१९७—जोम=जोश। उवर=हृदय में।

कूच विहांणे ऊगणे, सोच घणे गढ कोट।
उरै समंदां देस प्रस, जथा गिरंदां ओट ॥१९८॥
कहै कमंधां अग्गळी, यों जासूस विगत्त।
आयौ आलम कुंभ जिम, किर छूटे कपिपत्त ॥१९९॥
सुणी कमंधां सूरमां, सुणे अकब्बर साह।
धीरज अप्पण सूरमां, बोले वीर दुबाह ॥२००॥
अकबर रा जतनां रहौ, सोनंग साह दुरंग।
मौर न दब्बै साह दळ, और सँभारौ जंग ॥२०१॥

छप्पय

अजब साह सिवदान, अखौ भगवान असंकत
सांमँतसी जूँझार, मुकन तेजसी महाछत।
जसै फतै जेहड़ा, घड़ा थंभण पतसाही
जोड़ै गिरधार रा, हरी सम च्यारूं भाई।
सोनंग हूँत आखै सकत, इण विध चांपे अक्खियौ
ऊपड़ै वहै नह ऊगतै, आलम रहै अटक्कियौ ॥२०२॥

१९८—विहांणे = प्रातःकाल (सूर्योदय होते ही)। उरै॰ = समुद्रों के उस तरफ के देश का स्पर्श करके।

१९९—कमंधां अग्गळी = राठौड़ों के आगे। कुंभ जिम = कुंभ-कर्ण के समान। कपिपत्त = सुग्रीव।

२००—दुबाह = योद्धा।

२०१—मौर = पृष्ठ, पीठ। और = दूसरे।

२०२—अखौ = अखैसिंह। महाछत = बड़े क्षत्रिय। जेहड़ा = जैसे। घड़ा = सेना को रोकनेवाले। जोड़ै = साथ। हरी सम = सिंह के सदृश। आखै = कहता है। सकत = सकतसिंह। चांपे = सोनंग ने। अक्खियौ = कहा। ऊपड़ै॰ = वह (आलम) सूर्य उदय होते ही रवाना होवेगा, रुका नहीं रहेगा।

भीम भांण सारीख, करन सिवदान सरीसा
जोधा छळ जोधांण, बोल दळ वेळ वरीसा।
करनहरौ खेमकरन, बांध गरु वात न बोलै
वळे जगौ केहरी, त्युँहिज बोलै खग तोलै।
हरनाथ जसौ करमैत कुळ, वयण लखे वध बक्कियौ
ऊपड़ै वहै नह ऊगतै, आलम रहै अटक्कियां ॥२०३॥
जगपत्ती बळराम, रूप सांमळ रूपस्सी
ऊदां जुध ऊधरां, तेग ऊधरी तरस्सी।
मेड़तिया हरियंद, सूर दळ राम विकस्से
मानसिंघ जूंझार, वेळ बोलिया विहस्से।
जुध सूर धीर हैमंत जिसां, बोल सही मत बक्कियौ
ऊपड़ै वहै नह ऊगतां, आलमसाह अटक्कियौ ॥२०४॥
कूंपा रांम सकज्ज, जैतधारी जैतावत
वाघ फता वेढकां, वीर वीराध विजावत।

२०३—जोधा = ये जोधा शाखा के राठोड़ हैं। छळ जोधांण = जोधपुर के वास्ते। बोल = बुलाया। वेळ वरीसा = फौज में लहरें देनेवाले। करनहरौ = करण का वंशज। बांध गरु = गौरव को लेकर। वळे = फिर। करमैत कुळ = कुल में उत्कृष्ट कर्म करनेवाले। वयण० = इनके वचन पर वध अर्थात् मारो मारो ऐसा बकना हरदम लखा जाता है।

२०४—जगपत्ती = जगत्सिंह। रूप सामळ = सांवलदास के जैसा। ऊदा = ऊदावतों में। ऊधरा = ऊँचे। तेग = तलवार। ऊधरी = उठाई। तरस्सी = जल्दी। हरियंद = हरिसिंह। राम = रामसिंह। विकस्से = फूले, विकसित हुए। वेळ = समय पर। विहस्से = जोश में आकर। धीर = धीरसिंह। हैमंत = घोड़ा पानी में मुख रखकर नासिका से शब्द करता है, वैसे नासिका से शब्द करके। (यह इसका स्वभाव था।)

२०५—सकज = उत्तम कार्य करनेवाला। जैतधारी = जय करनेवाले। वेढकां = लड़ाकू। वीर वीराध = वीरों में वीर उनके अधिपति। विजावत =

कमँध राम केहरी, रूप बोले रज रक्खण
भावसिंघ दळसाह, अजन सुंदर अरि भक्खण ।
सुत द्याल मद्धकर सांम छ्ळ, तोले खाग तरक्कियौ
ऊपड़ै वहै नह ऊगतां, आलम साह अटक्कियौ ॥२०५॥

दुहा

जैत कळोधर जैतहथ, मंडण गोवरधन्न ।
.. ..॥२०६॥
बाला अखई बोलिया, परगह सहत प्रचंड ।
दूभर विरियां सांम छ्ळ, भुज थंभां ब्रहमंड ॥२०७॥
बोल धवेचा सूजड़ा, महवैचा विजपाल ।
रूधे राखां साह दळ, चौड़ै बंधे चाळ ॥२०८॥
ऊहड़ भूप अगाध पण, सांमधरम समरत्थ ।
भोज अनै सांमै जिसा, वांमै भीम क पत्थ ॥२०९॥

विजयसिंह के पुत्र । रज=(रजवट) रजपूती अथवा राज्य को रखनेवाले । द्याल=दयालदास का पुत्र, माधोसिंह । साम छ्ळ=स्वामी के वास्ते । तरक्कियौ=तड़का अर्थात् उच्च स्वर से बोला ।

२०६—जैत कळोधर=जैता के वश का । जैतहथ=जय जिसके हाथ मे है ।

२०७—बाला=बाला शाखा का राठौड़ । अखई=अखैसिंह । दूभर=दुःख भरे समय में ।

२०८—धवेचा=धवेचा शाखा के राठौड़ । सूजड़ा=तलवार रखनेवाले । विजपाल=विजय की रक्षा करनेवाले । रूधे राखां=रोक रखें । चाळ=उपद्रव ।

२०९—ऊहड़=राठौड़ों की शाखा है । अगाध पण=प्रतिज्ञा के गहरे ।

तन तूटौ तरवारियां, ऊहड़ बोले प्रम।
पिण पण तूटै सोहड़ां, त्यां कुळ छूटै नेम ॥२१०॥
पाता बोधस अग्गळा, बोले जोध मुकन्न।
स्यांम गरज्जां ओछुणा, तिके अकज्जां तन्न ॥२११॥
चुतरौ फतमल बोलिया, सकती पुरा सकज्ज।
लज्ज न धारै सांम छळ, त्यां रजवट्ट न लज्ज ॥२१२॥

छंद बेअक्खरी

भूप अजीत तणै छळ भाटी
पण पर वीर रीत ची पाटी।
बोल किसोर सूर अतुळी बळ
मौसर तणौ सांपनौ मंगळ ॥२१३॥
ईंदो इंद्र जिंही पण आदर
सुर सुर धरम रहावण संभर।

२१०—तूटौ तरवारियाँ = तलवारों से शरीर टूट जाओ। सोहड़ां = उन सुभटों के कुल का प्रण टूटता है जिनके कुल का नियम छूट जाता है। पाता = पातावत शाखा के राठौड़।

२११—बोधस अग्गळा = समझ में अग्रणी। स्याम० = स्वामी के लिये जो ओछापन (क्षुद्रता) करते हैं उनका शरीर किसी काम का नहीं है।

२१२—सकतीपुरा = चौहान।

२१३—छळ = कार्य के लिये। पण० = प्रण और वीरों की रीति की परिपाटी में। पर = उत्कृष्ट हैं। मौसर तणौ = अवसर का। सांपनौ = संपन्न हुआ।

२१४—ईंदो = पड़िहारों की शाखा है। सुर० = देवों के धर्म को रखने

सारो दळ भांजां पतसाही
नरां वखांण वाच निरवाही ॥२१४॥
सबळ बोलियौ प्राग समोभ्रम
अरियण विहर करां खग उत्तम ।
तेजल अमर खाग भुज तोले
बहसे खांन नरायण बोले ॥२१५॥
समहर कर दाखवां सवाया
जगतौ प्राग तणै कुळ जाया ।
मुकन तणौ जोड़ै अनमंधे
बोले राम मरण पण बंधे ॥२१६॥
सूजै दुरजणसाल सरीखा
समहर विमुहा पणै असीखा ।
बोले हरी सहित बांहाळा
कळ हरदास जिसा कळ चाळा ॥२१७॥

के लिये जैसे देवताओं में सभर = (शंभु) महादेव है । नरा० = वाणी को निवाहना यही मनुष्यों की प्रशंसा है ।

२१५—सबळ = सबळसिंह । प्राग समोभ्रम = प्रयागदास का पुत्र । अरियण = शत्रुओं का । विहर = सहार करके । बहसे = उत्साह-युक्त होकर । खांन नरायण = नारायण खान ।

२१६—समहर = युद्ध । दाखवां = कहलावैं । जगतौ० = प्रयागदास का पुत्र जगत्सिंह । अनमंधे = जिसको कोई बांध नहीं सकता अर्थात् समानता नहीं कर सकता । राम = रामसिंह, मुकनसिंह का पुत्र । समहर० = युद्ध में विमुख होना जिसने नहीं सीखा है ।

२१७—कळ = युद्ध में । कळ चाला = युद्ध करनेवाले ।

धणी तणै छुळ ओपण धारां
म्रत तिल मात गिणां अरि मारां ॥२१८॥
उरजनहरा धणी छुळ एहा
जुजठळ काज नकुल बळ जेहा ॥२१९॥
सूरां मुगट सूर पण साचै
वीर सधीर वयण यूं वाचै।
अगसत जेम नेम बळ ओडां
छात दिली दळ जळ विण छोडां ॥२२०॥
लखौ महेस कहै विध लाखां
रवद अबंध बंध जिम राखां ॥२२१॥

दुहा

सोढहरा मिण सूरमां, प्रागहरा तिम प्रांण।
हटै न खग हरदास रा, उरजन रा आरांण ॥२२२॥
धुर जादव च्यारूं धड़ै, सारू सांम वरत्त।
व्रध बोले कमँधां विचै. पण रण घाल परत्त ॥२२३॥

२१८—धणी तणै० = स्वामी के काम को तलवारों से शोभा देनेवाले। म्रत० = मृत्यु को तिलमात्र (तुच्छ) गिनें।

२१९—उरजन हरा = अर्जुन के वशज। एहा = ऐसे। जुजठळ० = युधिष्ठिर के लिये।

२२०—अगसत = अगस्त्य के जैसे। ओडां = धारण करें। छात० = दिल्ली के छत्र के सेना रूपी समुद्र को जल बिना कर देंगे।

२२१—लखौ = लखसिह। महेस = महेशदास। रवद = मुसलमानों को। अबंध० = जो बँधे हुए नहीं हैं उनको बँधे हुए के समान रखें।

२२२—सोढहरा = सोढ के वंशज। आराण = युद्ध में।

२२३— धुर० = चारों पक्ष के मुख्य यादव जो स्वामी के व्रत को सिद्ध करनेवाले हैं। पण० = रण के पण में प्रतिज्ञा लेकर।

राजोधर सबळेस रौ, सू जादवां सकज्ज।
बोले वांणी ऊधरी. आ आपांणो लज्ज ॥२२४॥
यां राजोधर अक्खियौ, सू जादवां सप्रांण।
सोठै नांणा जीवणौ, तो पूठै जेसांण ॥२२५॥
बोले भोज महाबळी, बंधव जैत सत्रेख।
ईंदां आदू राह रौ, करां निवाह विसेख ॥२२६॥

छप्पय

चांपा कूंपा करन, बोल जैता पण बंधे
ऊदां दूदां कमां, कीध जुध कोड़ कमंधे।
ओधहरा जिणवार, क्रोध पूरिया सकोपे
खंडी वन जाळवा. अजन जेही तन ओपे।
आखियौ जैतमालां सहित, मालां बालां ऊहड़ां
आवियौ सबळ वांटे अणी, धणी तणै छळ धूहड़ां ॥२२७॥

२२४—राजोधर = राजसिंह। ऊधरा = ऊँची। आ = यह। आपाणी = अपनी।

२२५—यां = इस तरह। अक्खियौ = बोला। सोठै = नष्ट हो जाय। नांणा = द्रव्य। पूठै = पीठ पर। जेसांण = जेसलमेर है।

२२६—सत्रेख = तीक्ष्णता के साथ। ईंदा = ईंदां पड़िहारों की एक शाखा। राह रौ = मार्ग का।

२२७—करन = करणोत राठौड़। जैता = जैतावत राठौड़। कमा = करमसोत राठौड़। कोड़ = उत्साह से। खंडी वन = खांडव वन को। अजन = अर्जुन। ओपे = शोभा देती है। आखियौ = कहा। जैतमालां = जैतमालोत राठौड़। मालां = मल्लिनाथजी के वंशज। सबळ = सबळसिंह। वांटे अणी = सेना के तुंगों के अग्र को विभक्त करके। धूहड़ां = धूहड़ के वंशज राठोड़ों के स्वामी के वास्ते।

दुरग साह सोनंग, बोल पतसाह न लट्टां
जैतहथां सांभळौ, सूर साखेत सुभट्टां।
आठ मिसल दिस आठ, धजां मुह कीजै धक्कै
राह वाह रूंधियै, साह ऊकसे न सक्कै।
उण वात विमाळै अक्खियां, चाळैं कज हल चल्लिया
भूपाळ भले मोटां भुजां, नवकोटै छळ झल्लिया ॥२२८॥

साम्हा अस साह सूं, चाह सझिया वण चूकां
सार ओप साबळां, धूप खेइयौ बँदूकां।
लाखी कां ऊपरा, चढे भड़ लक्ख सचेळे
जांण जटी चल्लिया, कुंभ सुरतटी समेळे।
रिणमाल जोध उण वाररां, बळ अणमाप भुअबळां
वाधियौ प्राण ब्रहमंड नूं, जांण क बावन जूअळां ॥२२९॥

२१८—न लट्टां = सिटेंगे नहीं। जैतहथां = जय जिनके हाथ में है ऐसे हे सुभटो! सांभळौ = सुनो। धजां मुह = ध्वजाओं के मुख। धक्कै = आगे करो अर्थात् बढ़ाओ। राह० = बाहिर के मार्ग रोक लो। ऊकसे न सक्कै = ऊँचा न हो सके। विमाळै = विचार कर। अक्खिया = कही। चाळैं कज = युद्ध के लिये। भूपाळ = पृथ्वीपति दुर्गादास आदि ने। झल्लिया = धारण किया।

२१९—अस = (अश्व) घोड़ों को। चाह = उत्साह से। वण चूकां = बिना चूके। सार = तलवार। आप = तैयार करके। साबळां = बरछी। खेइऔ = किया। लाखी कां = लाख लाख की कीमत के घोड़ों पर चढ़े हुए। सचेळे = गौरववाले। जांण० = मानों कुंभ के मेले में गंगा के तट पर तपस्वी चले। रिणमाल = राठौड़। जूअळां = जुदा जुदा राठौड़ों ने अपने प्राणां को ब्रह्मांड तक बढ़ाया, मानों कि वामन बढ़ा।

साह दळां सांमहा, राह तोरिया भिडज्जां
दळ रोहा साळुळे, करं ढोहा कमधज्जां।
विना खग्ग झेरियां, वहै कुण मग्ग विचाळै
जागी हक्कां जांण, लाय लागी ऊनाळै।
सामंद्र डहोळा ओद्रकां, जांण हिलोळां हल्लियौ
आलम्म भड़ां अजमल्ल रां, घांण मथांणे घल्लियौ ॥२३०॥
आगै जुध ऊगतां, कितांइ मध संभया कीजै
के बगलां बोट जै, कितांइ पाछै पाड़ीजै।
रसत वसत रोकजै, दरक झोकजै दिहाड़ी
साह ग्रहै मैल्हांण रहै निस फौजां चाडी।
विण त्रीठ रीठ उड्डै विखम, हमतम ऊधम हैमरां
सक फौज कीध संका सहित, जांण क लंका वन्नरां ॥२३१॥
एक देस औछाड़, इसा अन्नक अणंकळ
अंस रूप अम्मरां, जोध रिणमाल महाबळ।

२३०—भिडज्जां = घोड़ों को चलाया। दळ रोहा = सेना को रोकनेवाले। साळुळे = झुके, युद्ध में प्रवृत्त हुए। ढोहा = पराक्रम का कार्य। झेरियां = तलवार चलाए बिना। हक्कां = कोलाहल, वीरहाक। ऊनाळै = ग्रीष्म ऋतु में। डहोळा = क्षोभ। ओद्रकां = बढ़कर। घांण मथांणे = विलोवना हो जैसे होने लगा।

२३१—आगै० = कितने ही तो दिन उगते, कितने ही मध्याह्न में और कितने ही संध्या समय बारी से युद्ध करते हैं। बोट जै = टुकड़े करके डाले जाते हैं। दरक = ऊँटों को चलाया। दिहाड़ी = प्रतिदिन। मैल्हांण = मुकाम पकड़ता है। त्रीठ = दया। रीठ = घोर प्रहार। हमतम० = बड़े जलूस के साथ घोड़ों को उठाकर। सक = मुसल्मानों की। जांण क = मानों।

२३२—एक ही योद्धा देश का औछाड़ = आच्छादक अर्थात् रक्षक हो ऐसे अनेक निष्कलंक योद्धा हैं। वहै = चलते हैं। विदेहा = जो देह

आगै अकबर कियां, वहै घेरियां विदेहा
जुध जागर पूरियां, दुरग सोनंगर जेहा ।
कमधज्ज सकज्जां कारणां, कळा भुजा मापै कवण
विचित्रांण धणी इम विग्रहे, गहियौ किर पड़तौ गयण ॥२३२॥
ईंदा ऊदा नयर, मास पख त्रास विमाळे
गांम गांम मैल्हाण, वहै आपांण सँभाळे ।
असपत्ती ऊमरा, पोठ पूरै हलकारै
मेळै जांण समंद्र, नदी जळ आंण अफारै ।
आलम्म तणा डेरां अमिट, यां घेरौ पण अग्गळां
वीटियौ रवद कमँधां वणे, जांण अरब्बद बद्दळां ॥२३३॥
वीस कोस दिस वांम, वीस दाहणै तरक्के
जाळंधर सामहौ, करे बेमुहौ सरक्के ।

को कुछ नहीं समझते हैं। जुध० = युद्ध की जागर्ति को पूर्ण करनेवाले। सकज्जां = अच्छे कार्यों के करनेवाले। विचित्रांण = यवनों के स्वामी से इस प्रकार युद्ध करते हैं कि मानों गिरते हुए आकाश को धारण किया।

२३३—ईंदा ऊदा नयर = उदयपुर का (इंद्र) महाराणा (आलम के) जिनके त्रास के मारे मास और पक्ष का विचार करता है कि यह पक्ष तो निकला, यह महीना तो निकला। मैल्हाण = मुकाम। वहै० = अपने बल को सम्हालकर चलते हैं। असपत्ती० = उन बादशाह के उमरावों की पीठ को राठौड़ दबाए चले, वे ऐसे मालूम होते हैं कि मानों नदियों का उफनता हुआ जल समुद्र में आकर मिला। रवद = मुसल्मानों को घेर लिया। कमँधां = राठौड़ों ने। अरब्बद = आबू पहाड़ को।

२३४—तरक्के = गर्जना कर रहे हैं। जालंधर = जालोर को सामने किया अर्थात् जालोर की तरफ गए; फिर उसको विमुख करके वहाँ से हट गए।

होळी खंडाहळां, रहै दोळी दीहाड़ी
अरजण लग्गो आंण, जांण खंडी वन वाड़ी ।
आवरण कमंधां ऊधरां, जुड़ण साह जग्गे वजर
अणचित खाग रिण आसुरां, पड़े फाग खेलार पर ॥२३४॥

दुहा

आलम रूधौ मारवां, ठीक हुई सब ठौड़ ।
आलम आयौ साह पैं, छोड़ दियौ चीतौड़ ॥२३५॥
रांणे दाखे राजसी, राठौड़ां उपकार ।
यां कळ झल्ली आवगी, पल्ली मूंझ अँवार ॥२३६॥
दुंद विरूधां मंदचळ, रोहा लग्गा राह ।
यां जाळंधर आवियौ. आसुर आलमसाह ॥२३७॥
दुंद मिटावण कारणै, यां लिखियौ अवरंग ।
जो मांगै सोई दियौ, लागै हाथ दुरंग ॥२३८॥

होळी खंडाहळां – नंगी तलवारें चारों ओर रहती हैं । दीहाड़ी = प्रतिदिन । अरजण = अर्जुन । ऊधरां = ऊँचे । जुड़ण साह = अकबर से युद्ध करने के लिये । जग्गे वजर = मानों वज्र जागरित हुआ । अणचित० = अचिंतित युद्ध में मुसलमानों पर तलवार ऐसे पड़ी कि जैसे फाग में खिलाड़ी खेलते हैं ।

२३५—रूधौ० = मारवाड़ के राजपूतों ने आलम को रोक लिया है । ठीक = खबर । साह पैं = अकबर पर ।

२३६—दाखे = कहा । राजसी = राजसिंह ने । यां = इन्होंने । कळ = युद्ध । झल्ली = धारण किया । आवगी = पूरा । पल्ली० = रक्षित हो गई मेरी देरी ।

२३७—दुंद० = मंदराचल के समान जालोर की ओर राठौड़ों के रुक जाने पर । रोहा = रोहेले रस्ते लगे अर्थात् भाग गए । यां = इस तरह आलमशाह जालोर आया ।

२३८—दुंद० = उपद्रव । यां = इस तरह ।

तद आलम्म दुरंग सूं, बांधे संध विचार।
धार दिलासा मोकळी, मोहरां आठ हजार ॥२३९॥
आगै अकबर साह रै, मेले मारूराव।
आलम घातां ऊचरी, वातां दई वताय ॥२४०॥
लेख हितू राजी थयौ, देख अकब्बर साह।
दक्खी तांम दुरंग नूं, सोच तमांम सलाह ॥२४१॥
जो देसंतर ऊतरे, बांधीजै दळ संग।
हर संकोचै मीर जां. तौ सोचै अवरंग ॥२४२॥
आ सुणतां आलोचिया, सोनंगर दुरगेस।
अजन रहै सच्चै जतन, वच्चै मुरधर देस ॥२४३॥
एम दुरगै अक्खियौ, सुणतां कमँध सगाह।
धरती रा जतनां करूं, पर तीरां पतसाह ॥२४४॥

२३९—संध = (संधि) सुलह।

२४०—मारूराव = दुर्गादास ने वे मोहरें अकबरशाह के आगे रखकर। ऊचरी = कही।

२४१—लेख = दुर्गादास को अपना हितैषी समझकर। दक्खी = कहा। ताम = तब।

२४२—जो देसंतर = जो हम देशांतर में चले चलें। दळ = सेना संग में बाँध ली जावे। हर = अभिलाषा। मीरों की अभिलाषा संकुचित हो = अर्थात् उत्साह घटे तो।

२४३—आ = यह सुनकर सोनंग और दुर्गादास ने विचार किया। अजन = अजीतसिंह। वच्चै = रक्षित रहे।

२४४—अक्खियौ = बोला। सगाह = गर्वसहित। पर तीरां = बादशाह (अकबर) को परले तीर अर्थात् दूसरे देश को पहुँचा दूँ।

आखी सोनग साह सूं, थां सारू धर लाज ।
अकबर मनभायौ करण, आयौ मोसूं काज ॥२४५॥
जतन अजीत भळाय सब, उतन सचीत मिटाय ।
एम दुरग्गह मारवां, किया सुरंगे चाय ॥२४६॥
अकबर रै बेटा तणौ, हुरमां सहित जतन्न ।
भरम निवेड़े आपिया, तेड़े खींवकरन्न ॥२४७॥
तेजकरन महकरन सा, पुत्र अभै सारीख ।
भेळप ची भार्यां भया, सारां आखी सीख ॥२४८॥
जोध सबळ बळ अग्गळौ, महवेचौ विजपाल ।
भेळप राखण आपणी, दाखी प्रीत विसाल ॥२४९॥
लखौ कमौ आचागळौ, सूजौ जैतहरांह ।
चींत भळावी दुरगसी, लेखवे प्रीत धरांह ॥२५०॥

२४५—आखी = कहा । थां सारू = आपके आश्रय पर है । मनभायौ = मनोवांछित ।

२४६—अजीत = अजीतसिंह के यत्न करने की सब भला मन दे । उतन = जन्मभूमि की चिंता मिटाकर दुर्गदास ने मारवाड़ के वीरों को अच्छे उत्साह और चाह-युक्त किया ।

२४७—बेटा तणौ = बेटे का । हुरमां = स्त्रियों सहित । भरम निवेड़े = भ्रम को मिटाकर । तेड़े० = खींवकरण (दुर्गदास का भाई) को ।

२४८—अभै = भयरहित । ची = की । सारां = सबने । आखी = कही ।

२४९—सबळ = सबलसिंह । महवेचौ = राठौड़ों की एक शाखा का । दाखी = दिखलाई ।

२५०—जैतहरांह = जैतावत राठौड़ों में । लेखवि = समझकर ।

लघुवेसा देवौ दलौ, सुत जसकरण सकज्ज ।
आप भळावण खेमनै, नेम लियो धर कज्ज ॥२५१॥
रीत रुधै सुरतांण री, भाटी दुरजणसाल ।
विखै सजोड़व आवियौ, ज्यां खग जोड़ै ढाल ॥२५२॥
पुत्र भतीजां भाइयां, दे द्रढ सीख सुमत्त ।
देद तणा बोलाविया, केहर नै जगपत्त ॥२५३॥
दोनूं बोले देद रा, सुंदर वेस सकज्ज ।
सारौ आयां दीससी. काज भळावण लज्ज ॥२५४॥
रथ कुळ लज्जा धारियौ, थयौ पतसाह दुमत्त ।
भुज दूभर धुर ओडियौ, अइयौ आसावत्त ॥२५५॥

छप्पय

कर धूंकळ धर कज्ज. सकत दाखवे सवाई
मध मांणयड राड़द्रहि, करे छेहली लड़ाई ।
आलम द्रव्य आपियौ, सेध धर वेध गरज्जां
कियौ अकब्बर हुकम, दियौ वांटे कमधज्जां

२५१—लघुवेसा = छोटी उम्र में । सकज्ज = काम का ।

२५२—विखै = विपत्ति में । खग = खड्ग, तलवार ।

२५३— देद तणा = दूदा वंश के राठौड़ों को । मेड़तिया राठौड़ दूदा के वंशज हैं ।

२५४—देद रा = मेड़तिया राठौड़ । सारौ = सब ।

२५५—रथ० = कुल की लज्जारूप रथ को धारण किए । दुमत्त = दूसरे मतवाला, विरुद्ध । दूभर = दुर्भर । ओडियौ = धारण किया । आसावत्त = आसकर्ण का पुत्र (दुर्गदास) ।

२५६—धूंकळ = बखेड़ा । दाखवे = दिखलाकर । वेध = विरोध की

निस प्रथम जांम आलोझ नर, दारण सोनागिर दुरग
कर वाच वाद अकबर कुसळ, वीदहरे सझिया विड़ँग ॥२५६॥

दुहा

दिस दिक्खण खड़िया दुरग, सूर धरा छळ सज्झ ।
छोड़े संका ज्यों हणू, लंका सोझण कज्ज ॥२५७॥
आप अकब्बर साथ ले, गिण दुरपंथ सहल्ल ।
साथ लियां बळ आगळा, रूकहथा रिणमल्ल ॥२५८॥
मारू कांम अडोल मन, सारू सांम धरम्म ।
डही खडग्गां धूंप कर, पवां गही सरम्म ॥२५९॥
फतमल्लो विजपाळ रौ, रांमौ जैत सुजाव ।
कूंपौ मोटां आरँभां, छळ नवकोटां राव ॥२६०॥
मारू मांन महाबळो, मेड़तियौ ससमाथ ।
मौहकम नै रिणछोड़सा, ऊदा भीम क पाथ ॥२६१॥

गर्ज से । आलोझ = सोचकर । सोनागिर = जालोर का किला । वाच = वचन देकर, प्रतिज्ञा करके । विड़ँग = घोड़े ।

२५७—दुरग = दुर्गदास । छळ = युद्ध । हणू = हनुमान् । सोझण = सोधने के लिये ।

२५८—रूकहथा = हाथों में तलवार धारण किए हुए । रिणमल्ल = योद्धा ।

२५९—मारू = मारवाड़ के लोग । सारू = वास्ते, लिये । डही = धारण को ।

२६०—सुजाव = पुत्र । आरँभां = कार्यों के लिये । छळ = वास्ते, युद्ध में । नवकोटां राव = मारवाड़ के राजा के ।

२६१—ससमाथ = समर्थ । भीम क पाथ = भीम और अर्जुन सदृश ।

अमरै मदनै सारसा, हरी जिसा हणवंत ।
साथ सक्रोधा सांम छळ, अै जोधा बळवंत ॥२६२॥
आसथांन माहव अणँद, रेणा चाड सुरत्त ।
भार मुरद्धर चा भळे, चळै न चांपावत्त ॥२६३॥
साथे भाटी सूरमा, सबळे जिसा सहास ।
सबळै जोड़ भतीज सक, तेजौ नारणदास ॥२६४॥
देस मुरद्धर कांम लख, उगर सेन फतमाल ।
अै मछरीक महाबळी, साथ हुआ अरि साल ॥२६५॥
रावळोत परतापसी, उरजनौत अजबेस ।
जादव जंगां जीपवा, संगां थया नरेस ॥२६६॥
डूंगरसी रवि देवड़ा, भीमोतां विजपाल ।
साथे सोनगरौ सकज, दळां सनाह दयाल ॥२६७॥
माहवलाल हमीरसी, साथ भद्रावत सूर ।
ज्यां दीठां सँग ऊधरां, नरां प्रकासै नूर ॥२६८॥
राजड़ नै कुंभै जिसा, मांगळिया सुसमाथ ।
रूकहथा जसराज रा. पोरस भीम क पाथ ॥२६९॥

२६२—सारसा = सदृश ।

२६३—चाड = उत्साह, उत्साह से अत्यत रँगे हुए । भळे = धारण किए ।

२६४—सक = (शक्त) समर्थ ।

२६५—मछरीक = चहुवांण ।

२६६—जीपवा = जीतने के लिये ।

२६७—दळां सनाह = सेना का स्वामी ।

२६८—ज्यां दीठां = जिनको देखने पर । ऊधरां = उच्च कक्षा के ।

२६९—मांगळिया = गहलोतों की एक शाखा है । सुसमाथ = समर्थ ।

खीचि राव खग बंधियै, आसावत जैराम।
करवा नवकोटी कुसळ, मोटी धारै माम ॥२७०॥
दुरगै आसकरन्न रै, कुसळ मुरद्धर देस।
यां राखी दाखै जगत, ज्यां धर राखै सेस ॥२७१॥
दुरग तणै साथे दुझल, करनहरा कुळ थंभ।
कचरावत विजपाळ सा, आदरियौ आरंभ ॥२७२॥
फतमल्लौ रामेण रौ, नाथौ जोगावत्त।
घालौ जोगीदास रौ, उजवाळौ कुळ मत्त ॥२७३॥
अै करनोत अभंग चित, आरँभ ज्यौं ओछाह।
जतन घणे साथे हुवा, दुरगा तणा सनाह ॥२७४॥
कोटां मध्ये लाख गिण, लक्खां वीच हजार।
संग दुरग्गै चल्लिया, एता जंग वधार ॥
चारण कारण अग्गळा, सांदू जोगीदास।
मीसण सूरा भारमल, आसल धना सहास ॥२७५॥

२७०—आसावत=आसकर्ण का पुत्र। नवकोटी=मारवाड़ देश। मारवाड़ के राज्य में नवकोट (किले) होने से मारवाड़ देश नवकोटी कहलाता है। जो नव ही कोट परमार राजा धरणी वराह ने दस भाइयों में बाँटे थे। उस विषय का एक छप्पय प्रसिद्ध है। माम=सेना।

२७१—दाखै=कहता है।

२७२—दुझल=वीर। करनहरा=करण के पोते (करणोत राठौड़)। आरंभ=उपद्रव, युद्ध।

२७३—उजवाळौ=प्रकाश (कुल का दीपक)।

२७४—तणा=के। सनाह=बख्तर धारण किए हुए।

२७५—कारण अग्गळा=युद्ध में अग्रणी। सांदू, मीसण, आसल ये चारणों की शाखाएँ हैं।

वीठू कान्है सारखा, नेम अछांनें संध।
साथ हुवा देता छळां, पता साहस बंध॥

छप्पय

दिस दिक्खण खेडिया, पीठ उतराध विचारे
सकत वांम सुरराय, सोम दाहिणे सँभारे।
रवि भैरव जीवणी, घणे आणंद चहक्की
संग वेळ सूरमा, वास अगरेल महक्की।
जै जया सबद विंदण भणे, वयणे राजा वामहा।
लाखीक खड़े अकबर लियां, दुरगे दक्खण सामहा॥२७६॥

गाहा चोसर

घणो सकोप रहै कर घेरा
फौजां साह तणी चौफेरा।
आगम निस दिस विदिस अँधेरा
हालण सोध नकांम गहेरा॥२७७॥

२७६—खेड़िया = चलाया। सकत = योगिनी। वाम = बाएँ हाथ को। सुरराय = इंद्र (पूर्व दिशा में है)। सोम०—चंद्रमा दाहिने हाथ को हैं। वास अगरेल० = अगर की सुगंधि महकने लगी। विंदण = स्तुतिपाठक। वयणे = वचन से। वामहा = बाईं तरफ। लाखीक = लाख के मूल्य का घोड़ा। खड़े = चलाया।

२७७— आगम निस = रात्रि आने पर। हालण = चलने का। सोध० = पता लगाने में निकम्मे हुए।

साह तणा हेरा सगळाई,
ऊपर रयण जरां मिळ आई।
दिस दिक्खण दुरगौ वरदाई
कमँध खड़ंतां सोध न काई ॥२७८॥

दुरगदास आसकरणोत साहजादा नू लेने दिक्खण गया

दुहा

हलकारां सारां मिळे, दाखी संज सलाह।
रही कमंधां फौज धर, नही अकब्बर साह ॥२७९॥
निस बीती जीती फजर, बजी गजर परभात।
आलम दूत प्रचारिया, आत रहे कित रात ॥२८०॥

छंद पद्धरी

सुण दूत वत्त आलम्मसाह
उर थयौ तपत प्रजलत अवाह।
भ्रम भूरि पूरि तन मन भ्रमंत
अति मगन सोच चित रहत अंत ॥२८१॥
दौड़िया साह दिस डाकदार
संझयां सु बरस आडो सवार।
जिण जिण सथांन फौजां सजोस
सुण खबर थया पण विण सरोस ॥२८२॥

२७८—हेरा = ढूँढ़नेवाले लोगों का समूह। सगळाई = समस्त। रयण = रजनी, रात्रि। जरां = जब। वरदाई = वर जिसको प्राप्त है (श्रेष्ठ)। कमँध = राठौड़ों के। खड़ंतां = घोड़ों को चलाते।

२७९—दाखी = कही। संज = संध्या के समय।

२८०—प्रचारिया = बुलाए।

२८१—अवाह = भट्ठी की तरह।

दिस अष्ट खबर कज खबरदार
प्रेरिया सिद्ध गुटका प्रकार।
अण मिळत नयण नहि रयण अंत
वज्जे निसांण सुर कूचवंत ॥२८३॥
सथ ऊठ नकीबां सरल सद्द
रवि उदय आद सझिया रवद्द।
आयुद्ध बांध आलम्मसाह
नव क्रत किर पूनम सरतनाह ॥२८४॥

दुहा

आया हलकारा इतै, ठीक करे सब ठौड़
साह अकब्बर ले गयौ दुरग साह राठौड़।
खड़िया दिक्खण सांमुहा, चडिया सुहड़ हजार
सातां कोसां ऊपरा, जातां घंस तयार ॥२८५॥
आलम सूं मालम थई, विदिसां दिसां विगत्त।
असवारी कज आखियौ. आंणौ नाग उचित्त ॥२८६॥
हुई हड़ब्बड़ सेन मैं, भेर भणंके सद्द।
पड़ियौ डाको त्रंबके, चडियौ ब्याल रवद्द ॥२८७॥

२८३—गुटका प्रकार=गोली की तरह सीधे। अण०=नेत्र नहीं मिलते हैं (निद्रा नहीं लेते हैं)। रयण=रात्रि। सुर=देवता (राठौड़)।

२८४—रवद्द – मुसलमान। सरतनाह=समुद्र।

२८५—सुहड़=सुभट।

२८६—आखियौ=कहा। आंणौ=लाओ। नाग=हाथी।

२८७—भेर=भेरी, वाद्यविशेष। भणंके०=बजती है। डाको=डंका। त्रंबके=नक्कारों पर। ब्याल=हाथी। रवद्द=मुसलमान (बादशाह औरंगजेब)।

छंद नाराच

पड़े निहाव भेरि घाव उल्लटा पमंगयं
महा समुद्र लोप हद्द जांण लीध मग्गयं।
अनेक जाति जाति भांत भांत मेछ आरुहे
धुबे कि मेघमाळ गोप सीस कोप धारुहे ॥२८८॥
तुरां खुरां पुरांह भुम्मि सूर सोम तेजयं
न होय ग्यांन सेन तैं अनेक रंग भेजियं।
लड़ंग लाख तुंग तुंग संग जुंग हल्लये
चढे कि वेळ आकुळे समुद्र मेळ चल्लये ॥२८९॥
चलंत धाव वेग वाव धाव पाव चंचळे
अही कपाल नीठ धीर पीठ कोम आकुले।
पसु म्रजाद भूचराद होव घात प्राणयं
असंख जात पंखि बाण वेधजे उडाणयं ॥२९०॥
अभूत रीस पूत साह जूत दाह अंग मै
हले अभंग रूप माग धू लगै निहंगमै ॥

२८८—घाव = चोटें। पमंगयं = घोड़े। मेछ = (म्लेच्छ) मुसलमान। आरुहे = चढ़े। धुबे = बरसने लगो। कि = मानों।

२८९—तुरां = घोड़ों के। पुरांह = पूरी भूमि में। लड़ंग = पंक्ति। जुंग = ऊंट, उष्ट्र। हल्लये = चले।

२९०—वाव = पवन। अही = शेष का मस्तक। नीठ = कठिनता से। कोम = कूर्म (शेष के नीचे का कच्छप)। भूचराद = पृथ्वी पर रहनेवाले पशु। पंखि = पक्षी। उडाणयं = उड़ते हुए।

२९१—अभूत = जैसा पहले कभी नहीं हुआ था। रीस = क्रोध। पूत = पुत्र (अकब्बर पर)। जूत = युक्त। धू = ध्रुव। निहंगमैं =

पड़े भगांण देस देस अग्रवांण पीड़णी
सलाह पाछले पुरे मिटी तुरेस भीड़णी ॥२९१॥

दुहा

सारी औरँग साह सूँ, दाखे दूत विगत्त ।
दुरग अकब्बर जाम्य दिस, गा पँखराव जुगत्त ॥२९२॥
पूठै आलम हल्लियौ, गढ जालंधर हूँत ।
वात सुणंते एतली, दूजा आया दूत ॥२९३॥
दुरग खड़े दक्खिण दिसा, अकबर सूं हित आख ।
कर धर गुज्जर जीमणै, छप्पन वांमै राख ॥२९४॥
आयी ऊपर ऊपरा, सुणी खबर सुरतांण ।
उर अकुळाय पटक्कियौ, सीस खुदाय कुरांण ॥२९५॥

गाथा

मंडी आस मळेछं, खट्टण खंड द्रुग्ग चित्तंगो ।
कित्ती खंड विहंडं, जित्ती हार धार सुरतांणो ॥२९६॥

आकाश में । पाछले पुरे = पिछले प्रहर में । तुरेस० = घोड़ों के सजने की सलाह मिट गई ।

२९२—दाखे = कही । जाम्य दिस = यमराज की दिशा. दक्षिण । पँखराव = उत्तम घोड़ों सहित ।

२९३—पूठै = पीठ पर । जालंधर हूँत = जालोर के किले से । एतली = इतनी ।

२९४—खड़े = चले । आख = कहकर । गुजर० = गुजरात के दाहिनी तरफ और । छप्पन० = छप्पन के पहाड़ों के बाईं ओर रखकर । ये छप्पन के पहाड़ मेवाड़ में हैं ।

२९६—खट्टण = उपार्जन करने के लिए, जीतने के लिए । द्रुग = (दुर्ग) किला । चित्तंगो = चित्तौड़ का । कित्ती० = कीर्ति नष्ट हो गई । जित्ती = जय की ।

उर निस्वास प्रमुक्के, भग्गौ ज्यास चोत साभ्रंमं ।
यौं चिता उद्वेगौ, लग्गो अग्ग वंस घासाणं ॥२९७॥

दुहा

आखी आजमसाह सूं, साह विरत्ते वत्त ।
प्रथम अकब्बर बंधियां, पाछै औ समसत्त ॥२९८॥
औरँग बीड़ौ अप्पियौ, आजम हुवौ तयार ।
जांणक पंखां मंडकै, सू लक्खां असवार ॥२९९॥
भरे नफेरी त्रंबकों, डंकां सोर अपार ।
हुकम पिता चै हल्लियौ, नीर क नीर विहार ॥३००॥
आलम आथमणी दिसा, ऊगमणो आजम्म ।
वीच उदैपुर छोडनै, हाले दळ है जम्म ॥३०१॥
ज्यौं दव लग्गे जंगळे, रहै छंम कोइ घास ।
यौं मेवाड़ उबेळियौ, मेट कमंधां त्रास ॥३०२॥

२९७—प्रमुक्के = छोड़े । ज्यास = आशा, विश्वास । अग्ग = अग्नि । वंस घासाणं = बाँस घिसने से ।

२९८—आखी = कहा । आजमसाह = औरंगजेब का पुत्र आजमशाह ।

२९९—अप्पियौ = दिया । जांणक = मानों । पंखां मंडकै = पाँखें लगाकर ।

३००—चै = के । क = अथवा । तीर विहार = तीर की तरह ।

३०१—आलम = औरंगजेब । आथमणी = पश्चिम । ऊगमणी = पूर्व को । वीच = बीच में ही छोड़कर । उदैपुर = मेवाड़ की राजधानी । है० = (हय) घोड़ों की सेना । जम्म = यमराज के सदृश ।

३०२—दव = दावानल । छंम = (क्षम) बच जाती है । यौं = उसी तरह । उबेळियौ = मर्यादारहित कर दिया, घेर लिया । मेट० = राठौड़ों के त्रास को मिटाकर ।

ऑरँग पाछे हल्लियौ, दिन दस अंतर पाय।
पर दिखणाध उलट्टियौ, धर सोबा ठहराय ॥३०३॥
सहर अजैपुर जोधपुर, सोबै राख जवन्न।
पूठ अकब्बर वाहरां, थयौ विक्खधर मन्न ॥३०४॥
मंत्र सकत्ती मंत्र सूं, ज्यौं नीडी ले जाय।
अभँग दुबाह दुरंग यूं, लेगो साह अकाय ॥३०५॥

छप्पय

पातसाह अणथाह, कोप जळ थाह न काई
रतन रूप सुर धरम, गिळण हटियौ अन्याई।
इंद्र जही आरंभ, कीध प्रारंभ सकज्जां
सुर समाथ जिम हाथ, बाथ ओडी कमधज्जां।

३०३—औरँग० = औरंगजेब राठौड़ों को छोड़कर अकबर के पीछे चला। उलट्टियौ = दक्षिण दिशा की ओर चला। धर० = मारवाड़ की भूमि में सूबे रखकर।

३०४—अजैपुर = अजमेर। वाहरा = पीछा करने को। थयौ = हुआ। विक्खधर = (विषधर) सर्प। मन्न = मन में।

३०५—मंत्र सकत्ती = मंत्र के बल। अभँग = नहीं भागनेवाला। दुबाह = वीर। यूँ = उसी तरह।

३०६—इन दो छप्पयों में समुद्र-मंथन का रूपक है। पातसाह = बादशाह अगाध समुद्र है। देवता और धर्म रत्नरूप हैं। उन्हें अन्याय अधर्म मिलने का हठ करता है। इंद्र के समान मारवाड़ का इंद्र (राजा) अजीतसिंह है। राठौड़ देवों के समान हैं। अकबर को मेरु बनाया गया है, जो मथनदंड है। जोस रूप शेष है, जो मथन करने का नेता अर्थात्

कर मेर अकब्बर साह नूं, सेस जोस नेते सरू
सुरतांण महण हीलोळियौ, दुरगदास आसंगरू॥३०६॥
लछी रूप हरि भगति, धरम हिंदू धानंतर
वेद चंद्र मिण किया, भूम रंभा बल कुंजर।
धेन पूज सुर धेन, विमधु चरणाम्रत वंदां
धनुख मांण नृप कलप, संख जस मद विरद्दां।
विख वेध तुरी उद्यम तुमळ, महण मेछ उर मंडिया
दुरगेस मथे चित साह रौ, रतन चवद्दै कड्ढिया॥३०७॥

दुहा

आखी सोनग साह सूं, दुरग चढंतै वात।
तो ऊभै अगजीत सूं, साह न मंडै घात॥३०८॥
स्यांम धरम्मी कांम द्रढ, खींची सिवो मुकन्न।
सो रहिया साजा पणौ. राजा तणौ जतन्न॥३०९॥

रस्सी है। आ संगरू = समर्थ दुर्गदास ने सुरतान रूपी महण = समुद्र को हिलोले चढ़ा दिया अर्थात् मथा।

३०७—हरिभक्ति लक्ष्मीरूप है। हिंदू धर्म धन्वंतरि अवतार है। वेद चंद्रमा और कौस्तुभ मणि हैं। पृथ्वी रंभा अप्सरा है। बल ऐरावत हाथी है। पूजा कामधेनु है। चरणामृत अमृत है। मान रूप धनुष है। नरपति कल्पवृक्ष है। जस शंख है। विरुद मदिरा है। वेध = युद्ध विष है। उद्यम उच्चैःश्रवा घोड़ा है। म्लेच्छ = मुसलमान समुद्र है। दुर्गदास ने बादशाह के चित्त को मथन करके चौदह रत्न निकाले।

३०८—आखी० = दुर्गदास ने चढ़ते समय सोनग (चांपावत) से यह वार्ता कही। मंडै = कर सकता। घात = मारने का प्रयत्न।

३०९—सिवो = सिवराम। मुकन्न = मुकनदास। साजा पणौ = खरे, पक्के, साबित। तणौ = के।

पबै अरबद्द देव ग्रह, सिव री सेव प्रतीत।
बादळ सा काने दळां, छानै रहै अजीत ॥३१०॥
कै सोनागिर कै दुरँग, कै खीची मुकनेस।
ऐ जांणै छळ सांम रौ, जिण थळ रहै नरेस ॥३११॥
नव ही कोट मुरद्धरा, यां जांणै सब कोय।
राजा छांनै राखियौ, ग्रह दाखियौ न कोय ॥३१२॥
गढ जैसांणै वीकपुर, कै सीरोही पार।
जग मै भूपत थांन रौ, बुध अनुमान विचार ॥३१३॥
बेल सको राठौड़ हर, आठै मिसल उदार।
विखै तणा अहिया वधै, भुज कमधे भर भार ॥३१४॥
राव राय रांणै सहित, सको थया स्वाधीन।
यां छूटा जग जाळ ज्यौं, जाळ विछुट्टा मीन ॥३१५॥
नव सहँसां दस साहँसां, मेछ गया तज भोम।
ग्रहियै री अदसा गई, ज्यां उग्रहियै सोम ॥३१६॥

३१०—पबै = पर्वत। अरबद्द = अर्बुद में। काने = पास।

३११—कै० = या तो चांपावत सोनग, या दुर्गदास, या खीची मुकनदास, स्वामी के छळ = भेद को जानते हैं।

३१२—दाखियौ—दिखलाया।

३१३—जैसांणै = जेसलमेर।

३१४—बेल = सहायता। सको = सब। हर = की। विखैतणा = विपत्ति के।

३१५—यां = इस तरह से जगत् में जाल से छूटे कि जैसे मत्स्य जाल से छूटे।

३१६—नव सहँसां = राठौड़ों की। दस साहँसां = सीसोदियों की। नौ ९ हज़ार गाँवों के अधिपति होने से राठोड़ नवसहँसा और सीसोदिया दस हज़ार गाँवों के स्वामी होने से दससहँसा कहलाते हैं। इनकी भूमि को छोड़कर मुसलमान चले गए। ग्रहियै री० = पकड़े हुए छूट गए। उग्रहियै = उदय होने पर। सोम = चंद्रमा के।

खान इनायत जोधपुर, बैठौ रावण खंड।
प्रयुत पमंगे पाखरां, जंगे सेन प्रचंड ॥३१७॥

छंद पद्धरी

सोनंग आद चांपा समाथ
बळ प्रबळ ग्रहै किर मेर बाथ।
सिवदान अजन सामंतसीह
इळ भए भूप सरसा अबीह ॥३१८॥
ऊदलौ अखौ बाहर उतन्न
मुरधरा चाड तेजल मुकन्न।
जसराज फता नाहर सजोस
रिम दळां दळण अरजण कि रोस ॥३१९॥
यां आद विखै चांपा अनूप
भुज गयण धरै पण वयण भूप।
करनोत धरा छळ खीवकन्न
महाराज अजन छळ सुद्ध मन्न ॥३२०॥

३१७—रावणखंड = जिसका ऊपर का होठ कटा हुआ होता है उसे रावण-खंड कहते हैं। प्रयुत = दस लाख। पमंगे = घोड़ों पर। पाखरा = घोड़ों के बख्तर। (यह अतिशयोक्ति है।)

३१८—बाथ = भुजा से। इळ = (इला) पृथ्वी। सरसा = श्रेष्ठ। अबीह = निर्भय। चांपावतों में—सोनग, शिवदान, अर्जुन, सामंतसिंह, उदयसिंह, अखैसिंह, तेजसिंह, मुकनसिंह, जसराज, फतैसिंह, नाहरखां ये ११ मुख्य हैं।

३१९—बाहर = पीछे लानेवाले। उतन्न = (वतन) जन्मभूमि को। चाड = सहायता के लिये। रिम = शत्रुओं की। अरजण = अर्जुन। कि = मानों।

३२०—यां = इन, उक्त। अनूप = (अनुपम) जिनके तुल्य दूसरा नहीं है। गयण = (गगन) आकाश। पण = प्रतिज्ञा। वयण = (वचन) कथन। अजन = अजीतसिंह के। छळ = वास्ते।

पाखती सबळ जोधे प्रचंड
महवेच विजयमल जूंझ मंड।
सूजडै जैतमालै सकाज
लखधीर कमै तिण धोर लाज ॥३२१॥
केहरी जगौ करनोत वंस
घण वेध लगा असुरांण घंस।
सिवदान भीम जोधै त्रसिंघ
सक भांण करन हैबत्तसिंघ। ३२२॥
चँद्रभांण मुकन सुत प्राणचंड
पीथलौ वेस चडता प्रचंड।
हरनाथ भांण तण मांण हद्द
बळवंत जोध खाटण विरद्द ॥३२३॥
अखई अभंग जोधां उजाळ
जोधहर अवर रिण खळां ज्वाळ।

३२१—पाखती = पार्श्व में। करनोतों में– खींवकर्ण, सबळसिंह, जोधसिंह ३ मुख्य। महवेच = महेचों में। जूंझ मंड = युद्ध करनेवाला, योद्धाओं का भूषण। सूजडै = तलवार। जैतमालै = जैतमालोतों में लखधीर और कमा।

३२२—केहरी॰ = करनोतों में केसरीसिंह और जगत्सिंह। वेध = युद्ध में। असुरांण = (असुरों मुसलमानों का। घंस = नाश करनेवाले। जोधै = जोधा राठौड़ों में। त्रसिंघ = (त्रिसिंह) महावीर। सक = (शक्त) समर्थ।

३२३—वेस चड़ता = वय चढ़ते हुए, तरुण। तण = (तनय) पुत्र। मांण = मान। खाटण = उपार्जन करनेवाले। विरद्द = विरुद।

३२४—अखई = अखैसिंह। अवर = दूसरा। रिण = (रण) युद्ध। खळां = दुष्टों को जलानेवाला। जोधों में—शिवदान, भीम, भांण, करण,

क्रमसीहरा ध्रम सांम काज
हरनाथ जसो कुळ बळ जिहाज ॥३२४॥
केहरी राम कुळ कुंभकन्न
ऊधरा भुजे वाहर उतन्न ।
अधपती काम मधकर अबीह
सक भाऊ दौलौ रूपसीह ॥३२५॥
सुंदर धर वाहर अजबसाह
एतला आद मांझी अथाह ।
गढपती काज ऊदा सगाह
बळराम सुतण राजड़ दुबाह ॥३२६॥
जगराम विजावत काज जुद्ध
रोद्र सूं खड़ौ आदर विरुद्ध ।
सांमळ खळ भंजण महा सूर
आरंभ कुंभ सुत खित अडूर ॥३२७॥

हैबतसिंह, चंद्रभाण, पृथ्वीसिंह, हरनाथ, बलवंतसिंह, जोधसिंह, अखैसिंह ये ग्यारह मुख्य । क्रमसीहरा = करमसीहोतों में । ध्रम = धर्म ।

३२५—ऊधरा भुजे = भुजा उठाए हुए ।

३२६—एतला = इतने । मांझी = मुख्य, अग्रणी । करमसीहोतां में—हरनाथ, जसो, केसरीसिंह, रामसिंह, माधवसिंह, भावसिंह, दौलसिंह, रूपसिंह, अजबसिंह ये ९ मुख्य । गढ़पती काज = राजा के लिये । ऊदा = ऊदावत । सगाह = गर्व-सहित । दुबाह = वीर ।

३२७—रोद्र = (रौद्र) मुसलमान से । सांमळ = श्यामसिंह । खळ = दुष्ट, शत्रु । आरंभ = युद्ध करने के लिये । खित = (क्षिति) पृथ्वी में । अडूर = निडर ।

सुत राम रूप निज दळ सनाह
गोरधन तणौ नाहर दुगाह।
मुख एता ऊदा महाबाह
सांधिया वेध सूं पातसाह ॥३२८॥
चतुरेस महाबळ चाहुवांण
महाराज सुकुळ बळ अग्रमांण।
अखमाल कमंधे बळ अथाह
गंजवा खळां वालौ सगाह ॥३२९॥
भगवान भोज ऊहड़ अभंग
जोधपुर नाथ हित करण जंग।
... ...
... ... ॥३३०॥
जग्गो अवसांणे जोरवंत
सुत सांम खेत गाजी अरंत।

३२८—सुत० = रामसिंह का पुत्र रूपसिंह। सनाह = (सन्नद्ध) बख्तर शस्त्र आदि से सजा हुआ। दुगाह = जो जीता न जाय। एता = इतने। सांधिया = तैयार। वेध = युद्ध। सूं = से। ऊदावतों में—बलराम का पुत्र राजसिंह, जगराम, श्यामसिंह, रूपसिंह, नाहर खाँ ये पाँच।

३२९—चतुरेस = चतुर्भुज। चाहुवांण = चाहमानों में। गंजवा = नाश करने के लिये। वालौ = वाला शाखा का राठौड़। सगाह = गाढ सहित।

३३०—ऊहड़ शाखा के राठौड़।

३३१—जग्गो = जगन्नाथ सिंह। सुत० = श्यामसिंह का पुत्र खेता। गाजी = पदवी है। (जीते हुए शत्रु को पकड़ विजय करनेवाला)। अरंत = अड़नेवाला, युद्ध करनेवाला। पण = प्रतिज्ञा = पालन करने में।

मेड़तियौ सूरौ पण समत्थ
हेड़वण दुयण पारत्थ हत्थ ॥३३१॥
चंद्हर हरी पौरस प्रचंड
अगजीत नेम जूंझौ अखंड ।
रायमल जेम दळराम रूक
असपति दळ भंजण पण अचूक ॥३३२॥
मधकर हर हिम्मत महण मत्थ
मेड़तै रूप हिम्मत समत्थ ।
एतला आद दूहा अथाह
नवकोटां आगळ नरां नांह ॥३३३॥

दुहा

राजोधर सब ळेस रौ, नेत्र महेस प्रमाण ।
जादव लग्गो जंग नभ, यां जग्गो अवसांण ॥३३४॥

हेड़वण = हकालने के लिये । दुयण = (दुर्जन) शत्रु । पारत्थ = (पार्थ) अर्जुन ।

३३१—चंदहर = चांदावत मेड़तिया राठौड़ । अगजीत = अजीतसिंह के । नेम = निमित्त । रूक = तलवार से । असपति = (अश्वपति) बादशाह ।

३३२—मधकर हर = माधोसिंहोत मेड़तिया राठौड़ । महण० = (महार्णव) समुद्र को मथनेवाला । मेड़तै = मेड़तिया । रूप = रूपसिंह । मेड़तियों में—जगत्सिंह, खेतो, सूरसिंह, हरिसिंह, रायमल, दलराम, हिम्मतसिंह, रूपसिंह, ये आठ ।

३३४—नेत्र० = महादेव के तृतीय नेत्र के सदृश । नभ = आकाश में लगा । यां = इसी तरह । जग्गो = जगन्नाथ । अवसांण = समय पर ।

माडेचा माहेव का, देस किँवाड़ किसोर।
जोड़ै राम मुकंद का, आयां दुंद सजोर ॥३३५॥
प्रागहरा लघु वेस मैं, अमरौ नाहरखान।
आरंभ रण ऊधरा, भुज थंभे असमान ॥३३६॥
सूरा केसरिसिंघ का, भांण तणा माहेस।
भुज घर कारण ओडिया, ज्यां सिर मंडै सेस ॥३३७॥
हांम घणी हरदास रै, जोड़ै राम दुझल्ल।
हरी सजूंझा माड़ पह, सूजा दुरजणसल्ल ॥३३८॥
जोधां रणमालां विचै, माड़ेचां कुळमग्ग।
आध वधे जुध दूसरां, वाध सधे खळ खग्ग ॥३३९॥
ईंदा जैता भोजराज, चोज कमंधां काज।
हीण करण हेवै दळां, जीण भिड़ज्जां साज ॥३४०॥

३३५—माडेचा=चाहमानों की एक शाखा। माहेव का=माधवसिंह का (पुत्र) किशोरसिंह। जोड़ै=उसके सदृश। आया=आने पर। दुंद=(द्वंद्व) युद्ध।

३३६—प्रागहरा=प्रयागदास के पोते। लघु वेस मैं=छोटी उम्र में। ऊधरा=ऊँचे।

३३७—तणा=का। ओडिया=धारण किए।

३३८—हाम=उत्साह। दुझल्ल=वीर। सजूंझा=स्थिर होकर युद्ध करनेवाला। माड़=जेसलमेर का देश। पह=प्रभु।

३३९—जोधा०=जोधा और रिणमल राठौड़ों के मध्य में। माड़ेचां=चाहमान। कुळमग्ग=कुल के मार्ग में। वाध०=बढ़कर शत्रुओं के खड्ग को रोकते हैं।

३४०—चोज=प्रसन्नता प्रकट करते हैं। हेवै=स्वभाव से वशीकृत। भिड़ज्जां=घोड़ों के।

रूपां पातां धांधलां, छळ जोधांण नरिंद।
वंस छत्रीसां झल्लियां, घंस वधारण दुंद ।।३४१।।
दुरग अकब्बर ले गयो, धर छंडी खुरसांण।
कटक चलाया कमधजे, मेछ सुणे जोधांण ।।३४२।।
औरँग सा अजमेर सूं, कूच करंतां वार।
वणी अनायत खान सूं, कांने सुणी पुकार ।।३४३।।
गढ जोधाणौ घेरियौ, ग्रहियौ कोट नवाब।
सुण असपत तीन्ही घड़ा, दीन्हो मदत सिताब ।।३४४।।
खाग धुबंती मारवे, वीट लियौ जोधांण।
सज्झे कोट मळेछ दळ, वज्जे बाण कबाण ।।३४५।।
वळ चहुवे कळ साळुळी, चळ चळ पुर हलचल्ल।
आया वार निदान री, वीस हजार मुगल्ल ।।३४६।।
रवि ऊगै साहावदी, खान इनायत बेळ।
आसुर आयौ खेड़ियां, ज्यौं सागर ऊझेल ।।३४७।।

३४१—रूपावत, पातावत, धाधल ये तीनों राठौड़ों की शाखाएँ हैं। छळ=वास्ते। घंस=नाश, विध्वंस। दुंद=युद्ध में।

३४२—खुरसांण=मुसलमान (अकबर शाहजादा)। कटक=सेना चलाई। कमधजे=राठौड़ों ने। मेछ=(म्लेच्छ) बादशाह ने।

३४३—वणी=विरोध हुआ।

३४४—असपत=बादशाह ने। तीन्ही=तीनों। घड़ा=सेनाएँ। सिताब=जल्दी।

३४५—खाग=(खड्ग) तलवार। धुबंती=धूनती हुई, चलाती हुई।

३४६—चहुवे=चारों तरफ। कळ=(कलह) युद्ध। साळुळी=शुरू हुआ। वार=मदद। निदान री=अंत में।

३४७—बेळ=मदद, सहायता। खेड़ियां=चलाता हुआ। ऊझेल=तूफान का, मर्यादालंघन करके।

निजर पड़ंतां साह दळ, भड़ नवकोट अभंग।
सेल त्रभागा झल्लियां, साम्हा किया तुरंग ॥३४८॥

छंद भुजंगी

अठी सेन राठौड़ जंगां अधाया
उठी खानजादा विना ग्यांन आया।
बजे त्रंब जंगी गढे नाळ वग्गी
लजावंत जंगी दुहूँ दीठ लग्गी ॥३४९॥
मचे जंग बेसंग हिंदू मुगल्लं
त्रहक्के नफेरी टमंके तबल्लं।
अभाए सबद्दं बजे अप्रमाणं
कळा सोर प्राणं सबाणं कबाणं ॥३५०॥
विढे मल्ल पाणं जिँही जुंझवाणं
पठाणे कमंधं कमंधे पठाणं।
खळां ओण रंगे वहै खग्ग खग्गे
अकासे घटा जांण माळा उमंगे ॥३५१॥

३४८—सेल=भाले। त्रभागा=तीन भागवाले—एक ऊपर का, एक नीचे का और एक बीच का भाग।

३४९—अधाया=युद्ध से अतृप्त। त्रंब=नक्कारे। जंगी=युद्ध के। नाळ=तोपे। वग्गी=बजने लगीं, आवाजें करने लगीं। लजावंत=लज्जावाली। जंगी=युद्ध की। दीठ=दृष्टि।

३५०—मचे=खूब बढ़े। बेसंग=अपार, असंख्य। त्रहक्के=बजने लगी। नफेरी=एक प्रकार का वाद्य। टमंके=शब्द करने लगे। अभाए=असुहावना।

३५१—विढे=लड़ने लगे। ओण=रुधिर से। घटा=मेघ की घटा। जांण=मानों। माळा=मेघमाला। उमंगे=उमड़ी।

धुबे सार मारं धड़े धार धारं
हुवै वीरहक्कं हजारे हजारं ॥
छटा ज्यौं विछूटै भुजे सेल छूटै
खणे अंग तूटै अनोअन्न खूटै ॥३५२॥
प्रवाहै खडग्गं झड़ै हत्थ पग्गं
लहै जांण आरा धरं काठ लग्गं ।
मुड़े साळळे साळळै पै मुडक्कै
झड़ां ओझड़ां सांड ज्यौं मांड झुक्कै ॥३५३॥
किता अग्र पाछै किता चक्र कुंडे
तरक्के किता साहता वाह तुंडे ।
भिदे सार सेले कटारी भळक्के
हिलाळां कि सामुंद्र वेळा हळक्के ॥३५४॥

दुहा

बेटो रावळ सबळ रौ, राजोधर तिण वार ।
अस जाडां विच औरियौ, झल्ले खग्ग दुधार ॥३५५॥

३५२—धुबे=चलती है। सार=तलवार की। धड़े०=धार से धार मिलती है। छटा=विद्युत्, बिजली। अनोअन्न=(अन्योन्य) परस्पर।

३५३—प्रवाहै=चलते हैं। झड़ै=कट कटकर गिरते हैं। लहै=मालूम होता है। जाण—मानों। आरा धरं=करवत की धारा। मुड़े०=एक मुड़ा दूसरा चला, एक चला दूसरा मुड़ा। झड़ां०=अपार झड़ी के बीच सांड़ की तरह जबर्दस्ती झुकते हैं।

३५४—चक्र कुडे=चक्रव्यूह के कुंड में (मध्य में) हैं। तरक्के०=तर्क करके कितने ही वाहनों के मुखों को पकड़ते हैं। हिलोळां=लहरें। कि=मानों। वेळा हळक्के=मर्यादा को छोड़ती हैं।

३५५—अस०=बहुत घनी सेना के बीच अपना घोड़ा पटका।

साथ किसोर महेस का, हाथ सकज्जा सीम ।
जादव रण पण अग्गळा, जोर अरज्जण भीम ॥३५६॥
वग्गां खग्गां साह दळ, माड़ेचा पण मंड ।
वार विखम्मी झेलणा, आदू नेम प्रचंड ॥३५७॥

छंद अरध भुजंगी

जुटे जदुराणं, उभै अप्रमाणं ।
हुई वीरहक्कं, कमाळी किलक्कं ॥३५८॥
वहै खग्गवारी, करग्गे कटारी ।
तुटे मुंड तुंडं, फळा नाट कुंडं ॥३५९॥
खणंके खडग्गं, पड़े हत्थ पग्गं ।
कती धार कैसी, जरी दंत जैसी ॥३६०॥
घणा रोद्र घेरे, फिरे चक्र फेरे ।
मथांणे मटल्ले, मही जांण हल्ले ॥३६१॥

३५६—जोर० = अर्जुन और भीम के सदृश ।

३५७—वग्गां = चलने पर । माड़ेचा = इस शाखा के चाहमान । पण मंड = प्रतिज्ञा करके । वार० = विषम समय को झेलनेवाले ।

३५८—जुटे = भिड़े । कमाळी = (कपाली) महादेव की । वहै = चलती है ।

३५९—खग्गवारी = तलवार की तेज धारा । करग्गे = (कराग्रे) हाथ में ।

३६०—कती = कत्ती की ।

३६१—रोद्र = मुसलमान । चक्र फेरे = चक्र फिरता ही जैसे । मथांणे = मंथन की । मटल्ले = मटकी (मृत्पात्र) । मही = दही । जांण = मानों । हल्ले = हिलता है, चक्कर खाता है ।

अगे अप्रवांणी, वजे खग्गवांणी।
कबाड़ी सकट्टां, कटे जांण कट्टां ॥३६२॥
बडे घोक चावां, घड़ी दोय घावां।
.... ॥३६३॥

दूहा

भाटी जूटा भूप छळ, राजड़ अने किसोर।
दळ भग्गां रहिया पगां, दाखै डग्गां जोर ॥३६४॥
पाड़ खळां रण पौढियौ, चाड प्रवाड़ै लज्ज।
गढ जोधांणै गोर मैं, गढ जोधांणै कज्ज ॥३६५॥
म्रत जीतौ वीतौ समर, जादम पड़िया जोड़।
लड़ जुड़ खग्गां बोहळै, मुरड़ चले राठौड़ ॥३६६॥
वीर झटक्के वज्जिया, वे रणधीर दुबाह।
अंग वटक्के उडुतां, सेन अटक्के साह ॥३६७॥

३६२—अप्रवांणी = अप्रमाण। खग्गवांणी = तलवार का शब्द। कबाड़ी = काठ का व्यापारी। सकट्टां = गाड़ों की। कट्टां = काठ को।

३६३—घोक = (घोष) शब्द। चावां = प्रसिद्ध।

३६४—दाखै = दिखलाकर। डग्गां = पैरों का।

३६५—पाड़ = गिराकर। खळां = शत्रुओं को। पौढियौ = रणशय्या में सोया। चाड़ = चढ़ाकर। प्रवाड़ै = युद्ध में। गोर मैं = किनारे।

३६६—म्रत० = मर्त्यलोक को जीत लिया अर्थात् स्वर्ग में गए। वीतौ = समाप्त हुआ। बोहळै = तलवारों की धारा में स्नान करके। मुरड़ = पीछे हटकर।

३६७—झटक्के वजिया = तलवार के झटके से लड़े। दुबाह = (द्विबाहु) दो हाथवाले। वटक्के = टुकड़ों के उड़ते।

आसकरन्न पिराग तण, पड़ियौ खाग बजाड़।
सुतन सजीपै भोज सम, जळ भाटीपै चाड ॥३६८॥
जादम जाडा वज्जिया, रामो नै ऊदस्स।
विन्न सुरपुरां वसाड़िया, अच्छरां तणा महस्स ॥३६९॥
आहव्र चांपावत अखै, लड़ कूंपावत लाल।
कीधौ हार सुधारतां, सिव तिण वार खुसाल ॥३७०॥
धांधल धारां ऊतरे, मोटो राड़ मुकन्न।
जूटौ दळ जमनायणां, तूटौ खागां तन्न ॥३७१॥
ऊँची रीत उजाळगौ, खीचीं सुंदरदास।
खळ सोखे पड़ियौ खहे, पोखे चंद्र प्रहास ॥३७२॥
रोहड़ रूके ऊतरे, पाल तणौ जगनाथ।
आगै पड़ियौ सूरमां, झड़ियां खग्ग समाथ ॥३७३॥

३६८—पिराग तण = प्रयागदास का पुत्र। बजाड़ = चलाकर। सजीपै = जीतनेवाले। भोज सम = पुत्र भोज के साथ। जळ० = भाटी कुल को पानी चढ़ाकर अर्थात् भाटी कुल की कीर्ति बढ़ाकर।

३६९—जाडा वज्जिया = बहुत अच्छे लड़े। सुरपुरां० = स्वर्ग में वास कराया। अच्छरां० = अप्सराओं के महलों में।

३७०—आहव = युद्ध में। कीधौ० = उक्त दोनों वीरों के मस्तक हाथ लगने से महादेव अपने रुंडमाला के हार को सुधारते समय खुश हुए।

३७१—धांधल० = धांधल शाखा का राठौड़ मुकनदास बड़ी लड़ाई में तलवार की धार से कटा। जमनायणां = यवनों की सेना से जुटा हुआ।

३७२—खळ = शत्रुओं को सुखाकर। खहे = खेह अर्थात् रेत में गिरा। पोखे = पोषण करके। चंद्र प्रहास = खड्ग को।

३७३—रोहड़ = रोहड़िया शाखा का चारण। रूके ऊतरे = तलवार से कटा। पाल० = गोपाल का बेटा जगन्नाथ।

समहर हिंदू दोय सौ, मेछ पड़े सत च्यार ।
सकत गरज्जी रीझ सूं, यां वज्जी तरवार ॥३७४॥
आसाढाऊ सुद नवमि, गुण आगे रिख (१७३७) लेख ।
जिके समत्सर जोधपुर, समहर थयौ विसेख ॥३७५॥

इति श्री राजरूपक मै जोधपुर जाद्‌वादि जुधवर्नन नाम
सप्तम प्रकास ॥७॥

३७४—समहर = युद्ध में । सकत = शक्ति, चंडी ।

३७५—आषाढाऊ० = यह युद्ध संवत् १७३७ आषाढ़ सुदि ९ को जोधपुर में हुआ ।

दुहा

मातौ धूम मुरद्धरा, तातौ जोस कटक्क ।
सोनग रातो वेध लख, जातौ साह अटक्क ॥ १ ॥
च्यार मजल अजमेर सूं, दाझे अवरँग दुक्ख ।
ज्यौं विखधर छुच्छूंदरी, गिळै न त्यागै मुक्ख ॥ २ ॥
दुंद वधे आठूं दिसा, सोनँग साहां साल ।
साध सक्रोधा राठवड़, जोधा नै रिड़ माल ॥ ३ ॥
देसे पेसां लीजियै, नित कीजियै हमल्ल ।
मिटै न सोच दिलेस उर, घटै न धर हलचल्ल ॥ ४ ॥
चंपा चौरँग अग्गळा, कान्ह अनै हरनाथ ।
सोजत ऊपर हल्लिया, बांधे फौज समाथ ॥ ५ ॥

१—मातौ = पुष्ट । धूम = युद्ध । सोनग = इस नाम का चांपावत । वेध = युद्ध । जातौ = जाता हुआ ।

२—दाझे = जलने लगा । विखधर = साँप । छुच्छूंदरी = एक प्रकार का कीट । लोक-प्रवाद है कि उसे खाने से सर्प अंधा हो जाता है और भक्ष्य के लोभ से छोड़ भी नहीं सकता । जिस कार्य के करने में दुविधा होती है, वहाँ साँप छछुंदर का न्याय बतलाया जाता है ।

३—साल = शल्य । साध = (साधु) भले ।

४—पेसां = पेशकसी ली जाती है । हमल्ल = हमले ।

५—चंपा = चांपावत शाखा के राठौड़ । चौरँग = युद्ध में । समाथ = समर्थ ।

सैंतीसौ पूरौ थयौ, अड़तीसै वरसात।
असमर चाळौ ऊठियौ, समहर सांझ प्रभात ॥ ६ ॥
खूम हुकम सिरदारखां, सोजत नयर सिहाय।
किलम अमांमौ कमधजां, सांमौ वग्गौ आय ॥ ७ ॥

छंद त्रोटक

वित लीजत सांभळ आठवळां
दुरवेस चडे अस जोस दळां।
हलकार भड़ां ललकार हुवै
चगथां मुख तेज सरेज चुवै ॥ ८ ॥
रिण सूर तिकां मुख नूर रचै
मिळ दीठ दुहूँ दळ रीठ मचै।
मल दाय दुहूँ दिस घाय मिलै
निहसे किर नाग दुवाघ निलै ॥ ९ ॥

६—सैंतीसौ=संवत् १७३७ का वर्ष। पूरौ थयौ=समाप्त हुआ। असमर=तलवार का। चाळौ=उपद्रव।

७—खूम=यवन (बादशाह) के। नयर=नगर। सिहाय=सहायता के लिये। किलम=यवन। अमामौ=अप्रमाण बलवाला। वग्गौ=बजा, लड़ा।

८—वित=(वित्त) धन। साभळ=सुनकर। आठवळां=चारों तरफ। दुरवेस=यवन। अस=घोड़े। चगथां=यवनों के। सरेज=सिरै, श्रेष्ठ।

९—रीठ=घोर युद्ध। मचै=प्रबल होने लगा। मल दाय=मल्लों के दाँव के समान। घाय=घाव। निहसे=गर्जना करते हैं। किर=मानों। नाग=हाथी। दुवाघ=दुष्ट व्याघ्र। निलै=(निलय) स्थान में।

हुय हक्क किलक्क समुक्ख हलां
भयकार घड़ी वण वार भलां।
सिर ढाल कड़क्कड़ रूक सदै
जिम वाग डँडैहड़ फाग जदै ॥१०॥
तिण वार हरी गिरधार तणै
घण जोस संभरिय रोस घणै।
कर मूछ धरे खग केत करे
धजराज अपारांय वीच धरे ॥११॥
किरमाळ झड़े तनत्राण कपे
भळके किर दांमण मेघ वपे।
सरके जुड़ भांभर मेछ सही
जुध मैं धुजरेण पलाल जही ॥१२॥
उण चाचर बंधव कान्ह उठी
पिड़ झाल जसौ रखपाळ पुठी।

१०—समुक्ख=सम्मुख चलकर। वण=बनी, हुई। सिर०=ढाल पर तलवार का कड़क्कड़ शब्द ऐसा होता है कि जैसा फाल्गुन में डँडियों का शब्द होता है।

११—तिण=उस। वार=समय। तणै=पुत्र। संभरिय=चाहमान। कर०=मूछ पर हाथ रख। खग०=तलवार को। केत=(केतु) ध्वजा। धजराज=घोड़े को। अपारांय=अनेकों के बीच में रखा।

१२—किरमाळ=तलवार। तनत्राण=बख्तर। भळके=चमकती है। दांमण=(दामिनी) बिजली, विद्युत्। मेघ वपे=बादल के शरीर में। भांभर=जोश खाकर। धुजरेण=घोड़ों की रज। पलाल=भूसा, खाखला। जही=जैसे।

१३—उण चाचर=उस सेना के सिर पर। पिड़=युद्ध को। पुठी=

मिळियौ खळ मोगर सूर महा
सरके फिरग्ग अन बोल सहा ॥१३॥
पड़ झाट खगे द्रढ घाट पगे
जुध काट निसाट निराट जगे।
बहु रुंड उठै मुख मुंड बकै
धड़ खंड हुवै भड़ चंड धकै ॥१४॥
पग हाथ पड़ै नस माथ पखै
लग चाव सुरां रव दाव लखै।
अँग एक धफै तड़फै असुरां
सिर चीर नरां व्रण सेल सरां ॥१५॥

दुहा

धर वाहर गिरधार रा, इम बे बंध अभंग।
सांम छळां पड़िया समर, जवन दळां कर जंग ॥१६॥
पूरां घावां ऊपड़े, जुध सिरदार जवन्न।
कान्ह हरी साकौ कियौ, उजवाळियौ उतन्न ॥१७॥

पीठ में। खळ मोगर = मोगर के समान शत्रुओं को ठोकनेवाला। सरके = पीछे हटकर। फिरग्ग = लौटे। सहा = सब।

१४—निसाट = (निशा + अट = निशाट) राक्षस। निराट = अत्यंत। रुंड = धड़, कबंध। धकै = क्रुद्ध होते हैं, जलते हैं।

१५—नस० = गर्दन से मस्तक अलग होता है। चाव = उत्सुकता। सुरां रव = स्वरयुक्त शब्द सहित दाव देखते हैं। धफै = गिरता है। तड़फै = तड़पता है। असुरां = यवनों का। सरां = बाणों के।

१६—धर वाहर० = पृथ्वी को लौटा लानेवाले गिरधारीसिंह के पुत्र दोनों भाई (हरनाथ और कान्हसिंह) स्वामी के वास्ते युद्ध में पड़े।

१७—ऊपड़े = पीछा उठा। सिरदार = सिरदार खाँ। साकौ = युद्ध। उजवाळियौ = उज्ज्वल किया। उतन्न = वतन, जन्मभूमि को।

सोनग धोको संभरे, सुण जोखौ निज साथ।
दाह मिटी राजी थयौ, औरँगसाह समाथ ॥१८॥

इति हरनाथ कान्ह सोजत जंग कर कांम आया

अडतीस (१७३८) वरखा रितु

दुहा

सोनग वीठळदास रौ, रोद्रां लग्गौ राह।
जोत न धारे दुंद डर, चंद्र ज्युँही पतसाह ॥१६॥
सहर उग्राहे सार बळ, मार सहे असुरांण।
डरे दिली डर खाग रै, पुर आगरै भगांण ॥२०॥
सकळ दिली दळ संकिया, खळभळिया नव खंड।
जीपे जंगां सोनगिर, सिर लग्गां ब्रहमंड ॥२१॥
ओढी औरँग साह नूं, उर निस दिवस अधीर।
मन लग्गौ दक्खण मुलक, सरक न सकै सरीर ॥२२॥
उर पतसाह उचाट अत, वाट अटकी देख।
मिरच हुतासण होमिया. मंत्र कतेब विसेख ॥२३॥

१८– सभरे = सुनकर। समाथ = समर्थ।

१६—रोद्रां = यवनों के। राह = मार्ग। जोत० = जैसे चंद्रमा धुंध (कुहरा) के डर से ज्योति नहीं धारण करता है वैसे बादशाह दुंद (युद्ध) के डर से ज्योति नहीं धारण करता है।

२०—सहर० = सोनग तलवार के बल शहरों से दंड उगाहता है, यवन मार सहन करते हैं। भगांण = भगदड़ पड़ी है।

२१—जीपे = विजय करता है। सोनगिर = सोनंग।

२२—ओढी = आच्छादित किया, धारण की।

२३—वाट = मार्ग। मिरच० = बादशाह ने उचाट मिटाने के लिये किताबों के खास मंत्रों से अग्नि में मरिचों का होम किया। यह तंत्र है।

कोप मिरखां होम कर, धर फिर मेळ सलाह ।
दुंद मिटावण अक्खियौ, सोनँग हूँता साह ॥२४॥
सात हजारी सामँ तौ, जाकौ नाम अजीत ।
दाखौ फेर विरादरी, सह आदरी सप्रीत ॥२५॥
पत कमँधां गढ़ जोधपुर, तुम अजमेर सहाय ।
औ पंजौ औ कोल द्रढ़, विच पढ बोल खुदाय ॥२६॥
वात विचाळै आवियौ, आसत खान दिवांण ।
फिर अजमेर अजीमदो, तिण विच दयौ कुरांण ॥२७॥
किलमां पत द्रढ़ वात कर, प्रात हुवौ असवार ।
रही अकब्बर चीत चित, भूलै नहीं लिगार ॥२८॥
सोनँग दोलौ मेड़तै, आसतखां अजमेर ।
जैतारण साहब्बदी, बेल अजीम अफेर ॥२९॥
अठत्रीसै (१७३८) आसोज सुद, छठ चढियौ पतसाह ।
आसत खाँ अजमेर मध, रहियौ धार सलाह ॥३०॥

२४—अक्खियौ = कहा । हूँता = से ।

२५—सात० = तेरा स्वामी, जिसका नाम अजीत है, सात हजारी मनसबदार । और फिर बांधवों को कहो । इस बात को सह = सबने स्वीकार किया ।

२६—पत० = राठौड़ों के पति को गढ़ जोधपुर और तुमको अजमेर ।

२७—वात०—इस बात के बीच में आसतखान दीवान आया । अजीमदी = अजीमुद्दीन ।

२८—किलमां पत = यवनों का पति (औरंगजेब) । लिगार = जरा भी ।

२९—बेल = अजीम की सहायता के लिये । अफेर = नहीं फिरनेवाला ।

सोनँग साहां गंजणो, सोनँग साहां साल ।
परम तणां वसियौ पुरां, धरम सुरां ची ढाल ॥३१॥
अठतीसै आसोज मै, सित सातम सनवार ।
गौ सोनागिर धाम हरि, नाम करे संसार ॥३२॥

छप्पय

आसतखांन दिवांण, सुणे निज दूत सिताबी
साइ दिसा डाक सूं, जवन मेलिया जबाबी ।
सुणी खबर सुरतांण, सकौ सोचिया सिपाई
जवन पती कर जाय, आप जौबनां बजाई ।
आखियौ हुकम ऊखेळ रौ, असपत मेळ अटक्कियौ ।
धर दिखण सीस ओछाह धर, साह सगाह सळक्कियौ ॥३३॥

दुहा

धमळ विभन्नौ धुर तजे, देख दुमन्नौ साथ ।
उण वेळा तांडे अजौ, मूछां घाले हाथ ॥३४॥

३१—परम तणा० = परमेश्वर के पुर में जा बसा अर्थात् मर गया । ची = की ।

३२—अठतीसै० = संवत् १७३८ के आश्विन सुदि ७ को सोनग हरि के धाम को गया ।

३३—सिताबी = जल्दी जानेवाले । सकौ = सब । ऊखेळ रौ = युद्ध करने का । सगाह = गर्व सहित । सळक्कियौ = गया ।

३४—धमळ = घोरी, अग्रणी । विभन्नौ = मर गया । धुर = युद्ध के भार को । तजे = छोड़कर । दुमन्नौ = उदास । साथ = समूह । तांडे = शब्द किया । (बैल के शब्द को तांडना कहते हैं) । अजौ = अजबसिंह । घाले = डालकर ।

अजबै वीठलदास रै, देख विभन्नौ बंध।
भुज डंडे बळ झल्लियौ, तिण धुर ओडे कंध ॥३५॥
चांपा भुज बळ अग्गळा, कुळ अग्गळा सकाज।
छत्रपती छळ अग्गळा, लियां धरत्ती लाज ॥३६॥
अजब साह असपत्तियां, प्रगट दिखायौ पांण।
ऊगै दिन धौंकळ इळा, ऊगै दिन आरांण ॥३७॥
साह तणा सोबा सधर, जोधांणै अजमेर।
फौजां जोड़ै रात दिन, दौड़ै बेर अबेर ॥३८॥
मोहकमसिंह किल्याण तण, मेड़तियौ पणबंध।
तज मनसफ सुरतांण रौ, मिळियौ फौज कमंध ॥३९॥
उग्राहै धर मेड़तै, ईंदावड़ अजबेस।
दरसाई दिन ऊगतै, आई फौज असेस ॥४०॥

३५—विभन्नौ=टूटा हुआ। बंध=सेतु। तिण धुर=उस भार को। ओडे=धारण किया।

३६—अग्गळा=अग्रणी। सकाज=कार्यसाधक। छत्रपती=राजा। छळ=युद्ध।

३७—असपत्तियाँ=बादशाही लोगों को। पांण=बल। ऊगै दिन=प्रतिदिन। धौंकळ=उपद्रव। इळा=पृथ्वी में। आरांण=युद्ध।

३८—सधर=प्रबल। जोधांणै=जोधपुर में। जोड़ै=इकट्ठी करते हैं। बेर अबेर=वक्त बे वक्त।

३९—पणबंध=प्रतिज्ञावाला।

४०—उग्राहै=दंड लेता है। ईंदावड़=एक गाँव का नाम। दरसाई=दृष्टिगोचर हुई। असेस=समस्त।

खबर थई दळ मारवां, दरवेसां ची दौड़ ।
ऊभा जोड़ै घूमरां, चढ घोड़ै राठौड़ ॥४१॥
करे नगारे हल्लिया, न्यारे भार चलाय ।
आगै सरवर ऊतरे, च्यारे कोसे जाय ॥४२॥
रोद्र अछाया रोस मै, आया सीस अपार ।
कमधज्जे साम्हा किया, तिण वेळा तोखार ॥४३॥
सूरां नूर दरस्सिया, तोले सेल करग्ग ।
वायर ज्यौं लग्गा विमुह, कायर आठूं मग्ग ॥४४॥

छंद मोतियदाम

जवन्निय सेन प्रलै किर ज्वाळ
घमंघम पक्खर गुग्घर माळ ।
टमंकि तबल्ल नफेरिय टीप
जूंझाऊ त्रंबक वाज सजीप ॥४५॥
खिवै फळ सेल खुले दळ खग्ग
दिपै दव आग कि झाळ सदग्ग ।

४१—मारवां = मारवाड़ के लोगों को । दरवेसां ची = मुसलमानो की । जोड़ै = जोड़ते हैं, इकट्ठा करते हैं । घूमरा = घूमर देते हुए, चक्कर खाते हुए ।

४२—करे नगारे = नक्कारा बजाकर ।

४३—रोद्र = यवन । अछाया = व्याप्त, भरे हुए । तोखार = घोड़े ।

४४—करग्ग = हाथों से । वायर = वायु के समान । विमुह = विमुख ।

४५—प्रलै = प्रलय की । टमंकि = तबलों के शब्द का अनुकरण । नफेरिय = नफीरी—एक प्रकार के वाद्य—की । टीप = शब्द । जूँझाऊ = युद्ध के । त्रंबक = नक्कारे । सजीप = जय सहित ।

४६—खिवै० = भालों के फल (अग्रभाग) चमकते हैं और तलवारें खुली हैं । वे ऐसी दिखाई देती हैं, मानों दावानल की ज्वाला देदीप्यमान हो रही

हुवे रव हक्क किलकि हजार
धड़क्किय नाळ भळक्किय धार ॥४६॥
हुवे रथ चक्कित देव निहंग
खहा व्रत मेघ कि वेग खसंग ।
धड़द्धड़ बेघड़ वज्जहि धार
कड़क्कड़ आठकि काठ कुठार ॥४७॥
समासम पेल धमाधम सेल
अनातम आतम ठेल उठेल ।
अमाप तठै बळ खाग अजन्न
कनौज घणौ जु कळा जिम कन्न ॥४८॥
कियौ विच्च मोगर खँग गरक्क
जरद्दां वाजिय धार जरक्क ।

है । रव = शब्द । नाळ = तोपें और बंदूकें । भळक्किय = चमकती है । धार = शस्त्रों का तीक्ष्ण अग्रभाग ।

४७—हुवे रथ० = रथस्थित सूर्यदेव चकित हुए कि यह आकाश खेह (रज) से आवृत है किंवा मेघ का वेग है । बेघड़ = दोनों सेनाओं में । धार = तलवार चलती है, जिसका ऐसा कड़कड़ शब्द होता है कि मानो काठ पर कुल्हाड़ी चल रही है ।

४८—समासम० = बराबर के आपस में पिलते हैं, भाले धमाधम बजते हैं । अनातम० = दोनों ओर के वीर आपस में ऐसे ठेलते और फेंकते हैं कि जैसे अनात्मपदार्थ आत्मा को और आत्मा अनात्मा को । अमाप = अप्रमाण । अजन्न = अनवसिंह का । कनौज = कनौजिया राठौड़ । कळा = युद्ध की कला में । कन्न = कृष्ण, अथवा कर्ण ।

४९—मोगर = सेना के बीच में । खैंग = घोड़े को । जरद्दां = बख्तरों पर । धार = तलवार का प्रहार । पड़ै० = एक गिरता है और

पड़ै इक भाज धकै पँडवेस
मलै पग रुंड अकुंड महेस ॥४९॥

चुणै कर मुंड मृड़ा वर चाह।
सँपेख सँपेख सराह सराह।
सझे खग खान तणौ सबळेस
अयौ रिण धोर पतौ अजबेस ॥५०॥

सझे सबळेस अजौ रिण संग
उभै किर केहर पाखर अंग।
लहे किर दुंग सिळग्गिय लाय
वडे बळ बेळ गए लग बाह ॥५१॥

चांपावत राम हरी धर चोख
समोसर नाहरखान सरोख।
मिले व्रत दाखवतां रिणमाल
ठहे अरि झाल मुड़े गज ढाल ॥५२॥

अगाड़ी भागता है। पँडवेस=मुसलमान। मलै०=भृकुटी चढ़ाए हुए महादेव पैरों से रुंड=धड़ को मलते हैं।

५०—मृड़ा=शक्ति। (मृड़ महादेव का नाम है।) खग=खड्ग। खान तणौ=नाहरखाँ का पुत्र। सबळेस=सबलसिंह। अयौ=आया।

५१—उभै=दोनों। केहर=सिंह। दुंग=अग्नि की चिनगारी। सिळग्गिय=प्रज्वलित हुई। लाय=प्रबल अग्नि।

५२—समोसर=बराबर का। दाखवतां=कहते हुए। ठहे०=शत्रुओं की ज्वाला में ठहरे। मुड़े०=हाथियों के मस्तक मुड़े।

खणंकत धार झणंकत खाग
रणंकत मुंड दुखंड कराग ।
भिड़े भुज चंपहरा अणभंग
सत्रां निरलंग भुजां धड़ संग ॥५३॥

छप्पय

सांमौ जैत सहास, जोड़ जैतां विच जाडां
गा झंडां साहरां, उभै रिण खंडां आडां ।
गोपीनाथ अनोप कोप वाहै किरवाणो
घासी नै सादूळ, घड़ा चूरै चगथांणो ।
मेडतै रूप मेड़त्तिया, अै च्यारूं चौरँग अचळ
वाजिया खगे विचित्रा पणां, छित उजवाळण सांम छळ ॥५४॥
जोधो अजन वज्राग, प्रलै फिर आग परब्बे
.... ।
सुत आणंद महेस, खगे पँडवेस धड़च्छे
पिड़ बाजै पड़िहार, व्यूह चक्राकृत अच्छे ।

५३—दुखंड = दो टुकड़े । कराग = हाथ । चंपहरा = चांपावत राठौड़ । सत्रां॰ = शत्रुओं को भुजाओं से रहित कर दिया ।

५४—सांमौ = श्यामसिंह । जैत = जैतसिंह । जैतां विच = जैतावत शाखा में । किरवाणी = तलवार । घड़ा = सेना । चगथांणी = मुसलमानों की । चौरँग = युद्ध में । वाजिया = लड़कर काम आए । विचित्रा पणां = विचित्र भाव से । छित = (क्षिति) पृथ्वी ।

५५—जोधो = जोधा शाखा का । वज्राग = वज्र के सदृश । प्रलै = प्रलय । परब्बे = (पर्व) समय । धड़च्छे = धड़कता है, भय खाता है । पिड़ = युद्ध में । बाजै = लड़कर मरे ।

निरखे सँग्राम सिव नखियौ, प्रलय जांम संपेखियौ
वढ पड़े तुरंगम नाथ सम, हत्थां सात विसेखियौ ।।५५।।
रोहड़ आईदान, भड़ां आगै भीमावत
गजां सेल खेलतौ, बोल भगवान विजावत ।
आसकन्न द्रढ मन्न, रतन, जेही रिणवट्टां
परगट्टां दाखवे, बारहट्टां कुळवट्टां ।
इण भांत कमंधां अग्गळी, रूक वजायी रोहड़ै
वीरांण कि आरण वावरै, ज्यां घण तत्तै लोहड़ै ।।५६।।

दुहा

रुघपत्ती गुणपत्त रौ, प्रोहित धार परत्त ।
आगै वग्गौ सूरमां, अण भाजणै वरत्त ।।५७।।
अै वरियाम निहस्सिया, दोय घड़ी इक जांम ।
अजबौ वीठलदास रौ, पड़ियौ खेत दुगांम ।।५८।।

निरखे = देखकर । सिव = महादेव । वढ पड़े = कटकर पड़े । नाथ सम = मालिक के साथ ।

५६—रोहड़ = रोहड़िया शाखा का चारण । भीमावत = भीम का पुत्र । जेही = जैसा ही । रिणवट्टां = युद्ध के मार्ग में । रूक = तलवार । इन चारणों ने वीरों को इस तरह पीटा कि जैसे आरण (कूटस्थ = निहाई, जिस पर लोहा कूटा जाता है) पर तपाया लोहा घण (जिससे लोहा कूटा जाता है) से पीटा जाता है । वावरै = काम में लाना ।

५७—रुघपत्ती० = गणपत का पुत्र रघुनाथ । प्रोहित = सेवड़ प्रोहित । परत्त = प्रतिज्ञा । वग्गौ = लड़कर मरा । वरत्त = व्रत, नियम ।

५८—अै = ये । वरियाम = श्रेष्ठ अथवा जोरावर । निहस्सिया = जोश के साथ लड़े । पड़ियौ खेत = रणभूमि में गिरा । दुगांम = (दुर्गम) जिसके सामने कोई आ नहीं सकता ।

छप्पय

अजबसींघ, सबळेस, राम, हरियंद, खान, रिण
पड़ चांपावत पांच, उभै जैता पड़ आरण।
मेड़तिया रिण च्यार, एक जोधौ इक भाटी
पड़े एक पड़िहार, हार रिण मांहि न खाटी।
हिक सिवड़ पड़े त्रण बारहट, सौ पड़िया बंका सुहड़
वैकुंठ गयौ वीठल्ल रौ, अजबसाह राखे अचड़ ॥५९॥

दुहा

बीज उजाळी कारतिक, अड़तीसै कुज वार।
अचळ कथा राखी अजै, साखी कियौ सँसार ॥६०॥

इति श्री राजरूपक मै अजबसीह आदि साह जुद्ध अवसांण
मरण अष्टम प्रकास ॥८॥

५९—आरण = रण में । हार = पराजय । खाटी = उपार्जित की, हासिल की। हिक = एक । सिवड़ = सेवड़, प्राहित । सौ = १०० । अचड़ = अचल नाम रखकर ।

६०—बीज = द्वितीया। उजाळी = शुक्ल पक्ष की । कुज = मगलवार। साखी = साक्षी ।

दुहा

सुण नवकोटां सोत्रिया, असुरां कियौ उछाह।
खबर गई अजमेर नूं, सुणियौ अवरंग साह॥ १॥

वार्ता

साहजादा अजीम साअतखां संग
अजमेर मै सहायक राखे अवरंग।
इनायतखान जोधपुर दोड़े आ वीसार
असुरां की घोर कौ न जोर कौ न पार॥
चांपावत चंड बळबंड रखपाळ
मुरधर के मंड सिभू कोप रिणताळ।
सामंतसी अखैराज तेजसी भगवान
मुकनदास जूझा असराज नाहरखान॥
भांण विजा लाखा फतैसिंघ महासूर
सेनापति उदैसिंघ सागर सा पूर।
अैसाही सगाह सांगबाळा अखैराज
रण से समुद्र सूर पण की जिहाज॥

१—नवकोटां = राठौड़ों ने शोक किया। असुरां = यवनों ने।

वार्ता—आ = इस बात को। वीसार = भूलकर। असुरां की घोर० = यवनों की घोर का पार नहीं है; क्योंकि युद्ध में बहुत मरते हैं। और न जोर का पार है।

बळबंड = महाबली और टेढ़े। मुरधर के = मारवाड़ के। मंड = भूषण। रिणताळ = युद्ध के समय। जूंझा = जूंझारसिंह।

सगाह = गर्व सहित। सांगबाळा = सांग (लोहे का बना भाला) शस्त्र धारण करनेवाला। रण से समुद्र = रण-रूपी समुद्र में।

करन का पोता खेम नेम का सा सेस
दुरग का तेज तेज कंकण महेस।
देवा जसराज अरु केहर जगतेस
करन का पोता जाका काका दुरगेस॥
सबळसिंघ जोधौ महेवेचौ विजपाळ
जैतमाले सूजा कमे लक्खा सेस ज्वाळ।
एते खींवकरन साथ हाथ पाथ रूप
और सूं प्रतंग्या खूंद अजमाल भूप॥
चांपावत करनोत साहँस के सूर
एक ओर ऊदा जोर सागर हिलूर।
राजसिंघ जगराम सांमळ सकाज
रूपसिंघ नाहरखां वाहर की लाज॥
मेड़तिया मोहकमसिंघ हिम्मत सगाह
जोधा उदैभांण मांण सिंधु सा अथाह।
सिवदान भीमाजळ करनेस आद
राह खेती रखवाळे साह सेती वाद॥

करन का पोता = करणोत राठौड़। खेम = खेमकरण। नेम का॰ = नियम का शेष के सदृश। दुरग का॰ = दुर्गदास का पुत्र तेजसिंह। कंकण महेस = महादेव का कंकण। (महादेव ने भस्मासुर को कंकण दिया था, उसके सदृश)। जाका = जिसका।

५—कमे = करमसोतों में। पाथ = (पार्थ) अर्जुन। खूंद = यवन।

६—हिलूर = हिलोला, लहरों के सदृश। बाहर = शत्रु का पीछा करना।

७—सगाह = गाढ़ा, मजबूत। मांण॰ = मान रखने में समुद्र के समान अथाह। राह॰ = धर्म के मार्ग की खेती के रक्षक। सेती = से। वाद = लड़ाई।

कूंपावत महाबाह सबतैं सवाया
दक्खण सूं रामसिंघ फतैसिंघ आया।
मुरधर की चाड आंण पांण तेग साही
रामसिंघ केहरी से आद सब भाई ॥
जैतावत मंडणसी गोवरधन साथे
जबाबूं न लेखे आवै निबाबूं सौं बाथे।
करमसीहोत हरनाथ जसकरन बेली
केतीवार महाबाह साह फौज पैलो ॥

दुहा

व्रत रखवाळ दयाळ रौ, मछरी के चुतरेस।
रिण राठौड़ां अग्गळी, मांडण रूप अरेस ॥ २ ॥
दक्खण सूं आयौ फतौ, साहजादौ पहुँचाय।
काळै सार उभारियां, चाळै लग्गौ आय ॥ ३ ॥
सांमधरम्मी नीव द्रढ, और सको चहुवांण।
वाज झड़ंदी वीज पर, ज्यां हंदी केवांण ॥ ४ ॥

चाड = सहायता की मन में लाकर। पांण = हाथ में। तेग = तलवार। साही = धारण की।

जबाबूं० = जवाबों से गिनने में आनेवाले नहीं, किन्तु नवाबों से युद्ध करनेवाले। बेली = बेल करनेवाला, सहायता करनेवाला। पैली = हटाई।

२—मछरी के = चौहानो में। अग्गळी = अग्रणी। मांडण = नाम है। रूप = रूपसिंह। अरेस = हार नहीं माननेवाला।

३—काळै = कालसर्प के सदृश। सार = तलवार। उभारियां = उठाए। चाळै = उपद्रव में शामिल हुआ।

४—सको = सब। वाज० = जिनकी तलवार बिजली के समान झड़ती हुई बजी।

इण दिस चाळै अग्गळौ, भाटी राम अभंग।
दुरजणसल सूजौ हरी, जोड़ करण रण जंग॥ ५॥
खाग सजूंभा प्राग जो, अमरौ नाहरखान।
दिन दिन खंभै साह दळ, भुज थंभै असमान॥ ६॥
सूरौ केहरसिंघ रौ, सू लखधीर महेस।
भाटी आड विखायतां, चाड मुरद्धर देस॥ ७॥
एतां आद छतीस कुळ, सीस अजौ पत धार।
हलचल्ली मेछां धरा, यां झल्ली तरवार॥ ८॥
मिळ चांपां कीधौ मुदै, ऊदौ धीर सुतन्न।
बांधी फौज कमद्धजां, सांधी प्रीति अजन्न॥ ९॥
मास मिगस्सर वार गुर, बीज उजाळी पाय।
चढ घोड़े भड़ चल्लिया, चांपा कोप चढाय॥ १०॥
सारा चांपा जोध सँग, ऊदा भिळिया आय।
उल्लटिया अजमेर दिस, वेर प्रळै करवाय॥ ११॥

५—इण दिस = इसी तरह का। चाळै = युद्ध करने में अग्रणी।

६—खाग = खड्ग। सजूंभा = जूझनेवाले। खंभै = रोकते हैं। थंभै = थामते हैं।

७—आड = पाल, सेतु, सहायक। चाड = सहायता के लिये।

८—अजौ = अजीतसिंह को। पत = पति, स्वामी। धार = मानकर। यां = इन्होंने।

९—मुदै = मुदायत, मुख्य। ऊदौ० = धीरसिंह के पुत्र उदैसिंह को। कमद्धजां = राठौड़ों ने। सांधी = जोड़ी। अजन्न = अजीतसिंह से।

१०—बीज = द्वितीया। उजाळी = शुक्लपक्ष को। (मार्गशीर्ष सुदि २ गुरुवार को चांपावतों ने उदैसिंह को अग्रणी करके चढ़ाई की)।

११—जोध = जोधा राठौड़ों के साथ। भिळिया = शामिल हुए। वेर प्रळै = प्रलय का समय करवाकर।

छंद बेअक्खरी

इळ रखवाळौ खान इनायत
आसतखां अजमेर सिहायत।
मेछ अकारण आप मुरादौ
संग अजीम वळे साहिजादौ ॥१२॥
सुण थरहरिया मेछ सकोई
सोबै दिली आगरै सोई।
मिळिया दळ कमँधां अणमापै
अन सिरजोर गिणै नहि आपै ॥१३॥
दीजै पसर चहूँ दिस दौड़ां
रूक कतै प्रगटे राठौड़ां।
आठ दिसा वित हरे उताळा
तांता जांण तिमंगळ वाळा ॥१४॥
प्रगट गांम पुर धखे अप्रबळ
मार-लियौ वहतां पुर मंडळ।

११—इळ=मारवाड़ को भूमि का रक्षक इनायत खान है। सिहायत=सहायता में है। मेछ अकारण=म्लेच्छों को बुलाने के लिये। वळे=फिर, पुनः।

१३—थरहरिया=कंपायमान हुए। सकोई=सब। कमँधां=राठौड़ों के। अणमापै=असंख्य। अन=(अन्य) दूसरों पर। सिरजोर=प्रबल। आपै=अपने बल से किसी को कुछ नहीं गिनते हैं।

१४—पसर=फैलकर। रूक=तलवार से। वित=(वित्त) धन। उताळा=जल्दी से। तांता जांण=मानों तिमंगल=महामत्स्य के तांते ही फैले हैं।

१५—प्रगट०=चौड़े ग्राम और पुरों को। धखे=जला देते हैं। अप्रबळ=अपार बलवाले। वहतां०=चलते ही मांडलपुर को

ओपत साथां मिळे अलेखै
लूट तणी विगती कुण लेखै ॥१५॥
वणी फतैपुर मांडळवाळी
उण फागण री तीज उजाळी।
दिस दखणाद लियां जमदूतां
हाले दळ अजमेरा हूँतां ॥१६॥
कासमखां पतसाह बुलायौ
सुणियौ कमँधां साथ सबायौ।
असि तोले आडा खड़ आया
सूर उदै राठौड़ सवाया ॥१७॥
कासम परखे जोस कमंधां
एक धकै हुयगौ ऊबंधां।
भाजे आप गयौ मझ भीतां
वांसा लोक लखे सुख वीतां ॥१८॥

लूट लिया। ओपत=धन। साथां=साथवालो को। अलेखै=अनगिनत। लेखै=गिन सकता है।

१६—वणी०=माडल पुर की विजय हुई। यह विजय फाल्गुन सुदि ३ को हुई। दिस०=यमराज के दूतों के सदृश यवनों को लिये अजमेर से दक्षिण की तरफ सेना रवाना हुई।

१७—असि=तलवार को। खड़ आया=घोड़ो को चलाकर आए। सूर=शूरवीर। उदै=उदैसिंह।

१८—परखे=परीक्षा करके, देखकर। एक धकै=एक तरफ। ऊबंधां=मर्यादारहित राठौड़ों को। भाजे०=आप (कासमखाँ) भयभीतों के अंदर भाग गया। वांसा=पीछे। लखे—देखा। सुखवीतां=सुख-रहित, दुखी।

दुहा

मिळ पुर मांडळ मारियौ, लूटे कासमखान ।
आया भड़ अजमाल रा, भुज लाया असमान ।।१९।।
चैत अँधारी अष्टमी, सोझत घेरी आय ।
चिंता लागी साह दळ, जांण सिळगी लाय ।।२०।।
खान इनायत जोधपुर, जिण उर आस न ज्यास ।
तके थके दापे तुरक, सके न खाए सास ।।२१।।
आया वसियां आपणी, ग्रीषम थई वतीत ।
१७३९ गुण चाळौ लागौ वरस, चाळौ सरस सजीत ।।२२।।

छंद बेअक्खरी

सोबा आद जोधपुर सोजत
च्यारूं तरफ रहे चक्राकित ।
सेख रहै भड़ मेछ सनाहै
नूरअलो जैतारण मांहै ।।२३।।

१९—मिळ = इकट्ठा होकर । मारियौ = लूट लिया । लाया = लगाया ।

२०—चैत० = चैत्र वदि ८ को सोझत शहर को घेरा । जांण० = मानो । लाय = अग्नि लगी ।

२१—जिण० = जिसके मन में न आशा है और न विश्वास । तके = देखकर । दापे = दबे हुए ।

२२—वसियां = अपने स्थानों में । थई = हुई । चाळौ = उपद्रव ।

२३—सोबा = जोधपुर, सोझत आदि के सूबा । चक्राकित = चक्र की तरह चारों तरफ चक्कर खाते रहे । शेख = सेख जाति का नूरअली । सनाहे = सन्नद्ध ।

सो जगरांम विजावत सारे
मार लियौ पुर सहर मझारे ।
सांवण वद चवदस सिखराळे
गह अवनां भागौ गुणचाळे ॥२४॥
सोझत दुंद करे सबळावत
च्यारूं तरफ विजौ चांपावत ।
जोधांणे उत्तर दिस जेती
अह निस राम पजावै एती ॥२५॥
भिड़ पहलां कासमखां भागौ
लड़वा मुकन तणौ नभ लागौ ।
भाटी राव वहै मन भांणौ
थूरे जिण चेराई थांणे ॥२६॥
जोधै उदियाभांण सजोरो
तिजड़ां तणौ घणौ जग तोरो ।
मिरजो नूरमली बळ मंडे
आयौ भांण सिरै ऊमंडे ॥२७॥

२४—सो = उस (नूरअली) को । सारे = तलवार से । मझारे = मध्य में । सिखराळे = अग्रणी । गह = गर्व । गुणचाळे = उनचालीस (१७३६) के संवत् में ।

२५—दुंद = (द्वंद्व) युद्ध । सबळावत = सबलसिह का पुत्र । जोधांणे = जोधपुर से । जेती = जितनी । पजावै = दंड देकर वशीभूत करता है । एती = इतनी ।

२६—मुकन तणौ = मुकन का पुत्र । नभ = आकाश में । वहै = चलता है । मनभांणौ = मनचाहा, मनभाया । थूरे = विध्वस्त किया । चेराई = गांव का नाम है ।

२७—जोधै = जोधा कुल का । तिजड़ां तणौ = तलवारों का । ऊमंडे = उमड़कर, चलकर ।

जोधाहरां मिळे जोधारां
समहर रीठ बजायौ सारां ।
एक पोहर लड़ियो बळ ओडे
कमधां भोम विसावण कोडे ।।२८।।
ऊदै भड़ मेलिया अकारा
नीसरियौ खळ छोड नकारा ।
मिरजो नूरमली जुध मुड़ियौ
जोधां जैत प्रवाड़ौ जुड़ियौ ।।२९।।
दुस्सह भांण भला जुध देखे
पाली गौ थांणै गिर पेखे ।
विढवा नह को ताळ विमाळै
चाळौ खग मातौ गुण चाळै ।।३०।।

इति श्री राजरूपक मै भाद्राजण प्रथम राड़ संवत्
१७३९ नवम प्रकास ।। ९ ।।

२८—जोधाहरां=जोधा के वंशजों से। समहर=युद्ध में। रीठ=प्रबल, प्रहार। सारां=तलवारों का। ओडे=धारण किए। विसावण=उपार्जन करने के। कोडे=उत्सुकता से।

२९—ऊदै=उदयसिंह ने। मेलिया=भेजे। अकारा=तीक्ष्ण, तेज। मुड़ियौ=पीछे हट गया। जैत प्रवाड़ौ=विजय का युद्ध।

३०—भांण=(भानु) सूर्य। पाली गौ=नूरमली भागकर पाली के थाने पर गया। विढवा=लड़ने को। को=कोई। ताळ=देरी। विमाळै=लगाते हैं। चाळौ=व्यवहार, उपद्रव। मातौ=प्रबल।

दुहा

उदैसिंघ चांपाहरौ, करनहरौ खेमाळ।
राजोधर ऊदाहरौ, धर करबा धकचाळ ॥ १ ॥
मोकमसिँघ कलियांण रौ, मेड़तियौ मन मोट।
दिस गुज्जर अस खेड़ियौ, धर करवा सैँलोट ॥ २ ॥
सोजत हूँता हल्लिया, ग्रीषम मैं चड गात।
पुर खेराळू मारतां, सिर लग्गौ वरसात ॥ ३ ॥
गांमां दांम उग्राहजै, कै मारीजै ग्राम।
डेरा दीधा रांणपुर, निस कीधा विसराम ॥ ४ ॥
गुणचाळै वद भादवै, नवमी ऊगत भांण।
आवी फौज अचिंतियां, चोज परक्खण पांण ॥ ५ ॥
सैद महम्मद फौज मै, धर गुज्जर रखपाळ।
सो आयौ निस खेड़ियां अस छेड़ियां अचाळ ॥ ६ ॥

१—करनहरौ = करणोत । खेमाळ = खींवकरण । ऊदाहरौ = ऊदावत । धकचाळ = उपद्रव ।

२—दिस गुज्जर = गुजरात की तरफ । अस = घोड़ा । खेड़ियौ = चलाया । करवा = करने को । सैँलोट = सत्यानाश, चपट मैदान ।

३—मारतां = लूटते । सिर० = ऊपर वर्षा ऋतु आई ।

४—उग्राहजै = दंड लिया जाता है । कै = अथवा । मारीजै = लूटे जाते हैं । रांणपुर = गाँव का नाम है ।

५—भांण = सूर्य । अचितियां = अचानक । पांण = बल, जोर ।

६—खेड़ियां = चलाता हुआ । छेड़ियां = तेज किया हुआ ।

छंद त्रिभंगी

आया असुराणं अप्परमाणं, किंकर जाणं जमराणं
ऊगंता भाणं रैण विहाणं, सैद पठाणं घमसाणं।
राठौड़ अभंगां कारण जंगां, तांणे तंगां उत्तंगां
चढ ऊभा चंगां भीड़े अंगां, आचे खग्गां ऊनंगां ॥ ७ ॥
कर मूठ धनंखं छूट विसक्खं, लेखा पक्खं सर लक्खं
वध सूर हरक्खं और विलक्खं, चाव परक्खं रवि चक्खं।
अति सोर उमंगे अंबर लग्गे. गोळा मग्गे गयणंगे
ऊबाणे खग्गे अंगो अंगे, आया जंगे उछरंगे ॥ ८ ॥
वध वीर किलक्कं हक्कोहक्कं, धूप सवक्कं धमचक्कं
वण वार असंकं बाधा रंकं, रूक झटक्कं रह चक्कं।
वग्गी खग धारां वारूंवारां, वार करारां, वेहारां
धड़ तूटे सारां अंग अपारां, जोड़ करारां जूंझारां ॥ ९ ॥

७—असुराण = यवन। अप्परमाणं = अप्रमाण। जाण = मानों।
रैण = रात्रि। विहाणं = प्रभात। कारण जंगा = युद्ध करनेवाले। ताणे = खींचकर। उत्तंगां = ऊँचे, जोर से। चंगां = अच्छे। आचे = हाथों में। ऊनंगां = नंगी तलवारें।

८—कर० = हाथ की मुट्ठी में धनुष है। विसक्खं = (विशिख) बाण। लेखा पक्खं = जिनका हिसाब नहीं है। और विलक्खं = दूसरो को विस्मय होता है। चाव = औत्सुक्य। परक्खं = देखने का। चक्खं = (चक्षु) आँख। मग्गे = मार्ग में। गयणंगे = आकाश के अंगण में। ऊबाणे = उठाए हुए। उछरंगे = ऊँचा सिर किए।

९—वध = बढ़ रही है। धूप = तलवार। वण वार = उस समय। रूक = तलवार। वारूंवारां = बारंबार। वार० = नहीं हारनेवाले बलवान् वीर दाव करते हैं। जोड़ = समकक्ष।

दूहा

च्यार घड़ी वाजी सुजड़, झड़ मत्तो सर वांण।
पड़िया हिंदू धार मुँह, चडिया अछुर विमांण ॥१०॥
करनहरौ पड़ केहरी, नाटी गोकळदास।
भंडारी आयां परब, रायांचंद सहास ॥११॥
भारथ भंडारी उभै. जीवराज भगवान।
खागां वागा खेत मैं, भुज लागा असमान ॥१२॥
तीन भँडारी नीवड़े, मुहतौ पड़े सुजाण।
फौजदार वरियांम भड़, रामौ पड़ रिण ढाण ॥१३॥
मुरलीधर देरासरी, पंचोळी सिवदास।
अहमदखां पड़दार पड़, पायौ धार निवास ॥१४॥
सात पड़े रिण सैद रा, काठ कटांणा जेम।
रहिया वागां खंचियां, और आपागां नेम ॥१५॥

इति खेराळू री विगत

१०—सुजड़ = तलवार। झड़ = वृष्टि। मत्तो = बहुत अधिक। धार = तलवार। अछुर = अक्षर।

११—करनहरौ = करणोत शाखा का राठोड़। भंडारी = जैनियों में एक शाखा है। परब = उत्सव का समय।

१२—भारथ = युद्ध में। वागा = लड़कर मरे।

१३—नीवड़े = अच्छे निकले, समाप्त हुए। वरियाम = जबर्दस्त। ढाण = ढाणा. स्थान।

१४—देरासरी = व्यास, राज्य की देवपूजा करनेवाला।

१५—कटाणां = काष्ठ की तरह कटे। वागां = घोड़ों को लगामों को। आपागां = अपने नियम को अपनाए हुए।

छंद बेअक्खरी

खान अनात खसे जोधांणै
नूरमली पाली रै थांणै ।
विसनदास बालो वरदाई
मोकलसर उर खळां अमाई ॥१६॥
दोड़ै साह सरस धर दावै
ऊगै दिवस पुकारां आवै ।
पाली सुण मिरजै पुकारां
तंग कसे चढियौ तोखारां ॥१७॥
छिपा तणै बळि आश्रम छूटो
तारो जांण गयण सूं तूटो ।
दळ गज भिड़ज मेछ दरसाया
ऊगै हरि बालां सिर आया ॥१८॥
पमगां धमस नफेरी पांना
वाग तणी पर बैरक वांना ।
ऊडी गरद गैंण अब छायौ
ऊगमतौ रवि निजर न आयौ ॥१९॥

१६—खसे=युद्ध करता है। बालो=बाला शाखा का राठोड़ । वरदाई=विरुदवाला । मोकलसर=एक गाँव का नाम ।

१७—साह=शस्त्र धारण करके । सरस०=अच्छी जमीन के निमित्त । कसे=खींचकर । तोखारां=घोड़ों के ।

१८—छिपा=(क्षपा) रात्रि में । आश्रम०=अपने स्थान से ऐसा निकला कि । जांण=मानों । भिड़ज=घोड़े । हरि=सूर्य के निकलने पर ।

१९—पमगां=घोड़ों की डाट । पांना=हाथों में । बैरक=ध्वजा । गैण=(गगन) आकाश ।

दुरग अचीत घेरियौ दैतां
पमगां आठ सहस पखरैतां ।
वीरा रस जांगी गिर वागा
लोळा पुंज सिखर सिर लागा ।।२०।।
कमँधां थान हुवौ हलकारौ
उण दिस आयौ जवन अफारौ ।
अत वरसे गोळा असमांणां
कुहक बाण झड़ तीर कबांणां ।।२१।।
दुरवेसै मोरचौ दबायौ
इत्तरै अखौ मघावत आयौ ।
बळ धरतो धीरपतो बेली
हुई जवन दळ घड़ी दुहेली ।।२२।।
सहस उभै खुलियां खग साथे
मुड़िया मेछ दुरँग चै माथे ।
अनड़ तजे धरती अर आया
मिरजै फिर मोरचा मँडाया ।।२३।।

२०—दैतां = दैत्यों (यवनों) ने । वीरा० = वीररस के उद्दीपक जांगी स्वर का वाद्य बजने लगा । लोळा = बाणों का समूह ।

२१—कमँधां = राठौड़ों के । हलकारौ = दूत, सूचना । अफारौ = अफरा हुआ, क्रोध से भरा हुआ । कुहक = बाण भेद ।

२२—दुरवेसै = मुसलमान (मिरजा नूरमली) ने । दुहेली = दुःख देनेवाली ।

२३—खुलियां खग = नंगी तलवारें लिए हुए । मुड़िया = मुड़कर गए । दुरँगचै = किले के ऊपर । अनड़ = (अनत, अनम्र) सिर न झुकानेवाले वीर । तजे० = किले को छोड़कर । अर० = जल्दी जमीन पर आए ।

छप्पय

कभँध अखै ललकार, मुगल उर वार गमागम
मार मार ऊचार, धार हर नाम सांम भ्रम।
पड़े रीठ पाधरे, सकज विण त्रीठ सरीरां
जुटे फँटे फिर जुटे, तुरस फूटे मुख तीरां।
इक पहर काळ उछरंगियौ, प्रळै ज्वाळ वग्गी खड़ग
रिणछोड़ कुसळ मिळिया रवद, पमँग जितां बळ रोस(प) पग॥२४॥

दुहा

नूरमली अहली दसा, गौ गिर लग्गे हार।
झोळी डोळी घायलां, ले बेली बे पार॥२५॥
जीता माधवदास रा, जुध अखमाल विसन्न।
गुणचाळीसै भाद्रवै, तेरस उज्जळ दिन्न॥२६॥

इति श्री राजरूपक मै नूरमली री पराजय नै बालां री फतै॥

दसम प्रकास॥१०॥

२४—अखै = अखैसिंह राठोड़ ने मुगल को ललकारा। उर० = मन में सोचकर। वार = देरी की। धार = धारण करके, हरि का नाम लेकर। रीठ—शस्त्रों के बहुल प्रहार। पाधरे = सीधे। सकज = सफल। त्रीठ० = बचाना, अपने शरीर की बिना रक्षा किये। जुटे = भिड़े। फँटे = अलग हुए। तुरस = जल्दी, वेग से। उछरंगियौ = प्रबल पराक्रम किया; उच्छृंखल हो गया। प्रलै० = प्रलय की ज्वाला की तरह तलवार बजी। रिणछोड़ = एक नाम। कुसल = एक नाम। रवद = यवनों से। पमंग = घोड़ा।

२५—अहली = बुरी। गौ = चला गया। झोळी० = घायलों को झोलियों और डोलियों में डालकर। बेपार = असंख्य।

२६—विसन्न = विष्णुसिंह।

दुहा

चांपाहरा चलाविया, सोभत ऊपर फेर।
दिन दिन लीजै पेसकसि, सोबा लीजै घेर ॥ १ ॥
सीदौ उदियासिंघ सूं, कीधौ राम करार।
सोभत लौ वरसावरस, रुपिया सात हजार ॥ २ ॥
जैतारण सिर आवियौ, ऊदा ले जगराम।
काती कृष्ण दवादसी, पुर घेरियौ दुगाम ॥ ३ ॥
गई पुकारां जोधपुर, कूक गई अजमेर।
सुणी इनायत असतखां, वणी जमात जु फेर ॥ ४ ॥
सिर आयौ जगराम रौ (रै) नूरमलो बळबंध।
जवनां सूं तोड़ै जगौ, कमंध न जोड़ै संध ॥ ५ ॥
हुवा सको ऊदाहरा, जुध भेळा जगपत्त।
आया मेड़तिया इतै, मुहकम नै हीमत्त ॥ ६ ॥

१—चापाहरा=चापावत राठोड़।

२—सोदौ=बे रोकटोक, बे उज्र। राम=रामसिह ने। करार=कौल, प्रतिज्ञा। उस समय रामसिह सोजत में था। उसने उदयसिह से प्रतिज्ञा कर ली कि सोजत से सालो साल ७००० रुपए ले लिया करो।

३—ऊदा=ऊदावतों को लेकर। जगराम=यह ऊदावत शाखा का है। दुगाम=दुर्गम, विकट।

५—बळबंध=बलवान्। जगौ=जगराम ने यवनों से संबंध तोड़ा, संधि नहीं की।

६—सको=सब। ऊदाहरा=ऊदावत शाखा के राठोड़। जगपत्त=जगराम के। इतै=इतने में। मुहकम, हीमत्त=मोहकमसिंह और हिम्मतसिह।

मगरे जगौ महाबळी, लगौ खळां जुध चाय ।
मारू वांटे मोरचा, ऊभौ चौड़ै आय ॥ ७ ॥

छंद बेअक्खरी

आवी फौज लखां अनमित्ती
जोवंतो मारग जगपत्ती ।
रिदौ कुँवर भेळौ राजांणी
कळ चाळौ सांमळ कूंभांणी ॥ ८ ॥

ऊदाहरा सकौ जुध आया
दव जवनां ऊगे दरसाया ।
जोयां ग्यांन किसौ जरदेतां
पार न को तुरियां पखरेतां ॥ ९ ॥

वणिया गजां तणै सिर वांनां
मिळिया तुरळ रजी असमांनां ।

७—मगरे = पहाड़ी प्रदेश में । जगौ = जगरामसिह । खळां = मुसलमानों के साथ । चाय = चाह, उत्साह ।

८—अनमित्ती = अप्रमाण । जोवंतो = देखता है । जगपत्ती = जगरामसिह । रिदौ = रिदैराम । राजांणी = राजसिह का पुत्र । कळ = युद्ध । चाळौ = उपद्रव । सांमळ = श्यामसिह । कूंभांणी = कूंभा का पुत्र ।

९—ऊदाहरा = ऊदा के वंशज । सकौ = सब । दव = दावानल के समान । ऊगे = सूर्योदय होते । जरदेतां = बख्तरवाले । पखरेतां = पाखरवाले ।

१०—वांनां = चिह्न, ध्वजा । तुरळ = घोड़ों की । धुर = अगाड़ी ।

धुर नीसांण तब्बलां घाई
उतर असाढ घटा किर आई ॥१०॥
उठियौ जगड़ लाग असमांणे
उर अजमाल तणौ व्रत आंणे।
उण वेळा लालो मिळ आगां
वेळाइत खंचाणी वागां ॥११॥
घरखा छूर गोळियां वाळै
वणियौ मेघ जांण वरसाळै।
समड़ै मुड़ै मुड़ै समड़ावै
असुर सजोस रोस उफणावै ॥१२॥
किलम गयँद चढियौ हलकारै
अठी जगड़ भड़ धीर उचारै।
खागां डळे पड़े हुय खेड़ा
अकस धसै सहसां ऊरेड़ा ॥१३॥

तब्बलां = नक्कारों पर। घाई = चोट। किर० = मानों, आषाढ़ मास को उत्तर दिशा की घटा आई। सेना वर्णनीय है।

११—जगड़ = जगरामसिंह। अजमाल = महाराजा अजीतसिंहजी। लालो = लालसिंह। आगां = अगाड़ी।

१२—छूर० = छूट, गोलियों की वर्षा की छूट हुई। जांण = मानों। वरसाळै = चातुर्मास्य का, बरसनेवाला। समड़ै = एकदम बरसता है। असुर = यवन।

१३—किलम = यवन। हलकारै = चलाता है। खागां = तलवारों से कट कटकर। डळे = टुकड़े होकर पड़ते हैं। खेड़ा = खेरा अर्थात् कण कण होकर। अकस = ऐंठ, ईर्ष्या। धसै = घुसते हैं। सहसां = एक साथ। ऊरेड़ा = उरड़ी देकर, बड़े वेग से।

वीरां हाक नगारा वाजै
गिर गोळां पड़सादे गाजै।
अणी मिळै अरि मुडै अफूठा
झगड़ै कमँध तणा दळ झूठा ॥१४॥
तूटै कमळ वहै वळ तेगां
नेगी अपत करण रिण नेगां।
पहिलै धकै पांच सौ पड़िया
मुगलां प्राण चका से मुड़िया ॥१५॥
अनड़ धकौ तज पाधर आया
नूर सुणे जैतारण नाया ॥
एक पोहर जूटा भड़ ऐसा
जुध गजराज अगड़ विण जैसा ॥१६॥

दुहा

साह तणै दळ पांच सौ, पड़िया अठी पचास।
मेर नरौ सातां भड़ां, हुयगौ घड़ां ढिगास ॥१७॥

१४—गिर = पहाड़। पड़सादे = प्रतिशब्द से। अणी = सेना का अग्रभाग। अफूठा = पीठ दिखाकर। झगड़ै = लड़ाई में। झूठा = जुटे।

१५—कमळ = मस्तक। वळ = बाकी। तेगां = तलवारें। नेगी = रीत-रस्मवाले। रिण = (रण) युद्ध। नेगां = रीत-रस्म। पहिलै धकै = पहले हल्ले में। चका से = प्राणों की प्रतीक्षा करके, परवाह करके। मुड़िया = पीछे हटे।

१६—अनड़ = (अनत) गर्वोद्धत। धकौ = शत्रु का हल्ला छोड़कर। पाधर = चपट मैदान में आए। नूर = नूरअली। नाया = नहीं आया। अगड़ = शृंखला।

१७—साह तणै = बादशाह के। मेर = मेर जाति का। नरौ = नाम है। घड़ां = युद्ध में। ढिगास = ढेर हो गया, मर गया।

मास मिगस्सर द्वादसी, इळ पुड़ पख अँधियार।
जुड़ियौ गुणचाळै जगो, अजमल छळे उदार ॥१८॥

इति श्री महाराजा राजराजेश्वर अभैसिंघजीरौ परम जस
राजरूपक मैं ऊदावतां नूरमली जुध कमध-विजय
नाम एकादस प्रकास ॥११॥

१८—इळ पुड़ = पृथ्वी की सतह पर। जगो = जगरामसिह। छळे = वास्ते।

दुहा

भाटी राम मुकन्न तण, इण दिस लग्गौ आय ।
पाल पुळी पैठी पुरं, दी डोहळी जळाय ॥ १ ॥
पासरण्यौ पोळ्यां लगे, करणौ संझ प्रभात ।
अणडरणौ हरदास ज्यौं, मरणो सो तिल मात ॥ २ ॥
अति खीजे सुण सुण असुर, जण जण छीजे प्राण ।
अबदलखां चढियौ अकस, कस वडफर केवांण ॥ ३ ॥
पाखर हैबर पांच सौ, तुरियां दीठ तबल्ल ।
सीस फरां कट खंजरां, चढिया तरां मुगल्ल ॥ ४ ॥
असुर सुणे सिर आवता, राम अधायौ राड़ ।
साम्हौ फिरियौ बेल सूं, अत बळ सेल उपाड़ ॥ ५ ॥

१—तण = (तनय) पुत्र । पाल० = पाल नामक ग्राम में जाकर पुर में प्रवेश किया । डोहळी = ग्राम का नाम है ।

२ —पासरण्यौ = पसरना, फैलना, पहुँचना । पोळ्यां = दरवाजे तक । हरदास = ऊहड़ राठोड़ था । वह बड़ा निर्भय वीर पुरुष था । तिल मात = तिल के बराबर ।

३ —खीजे = क्रुद्ध होते हैं । अकस = ऐंठ के साथ । कस = बाँधकर । वडफर = ढाल । केवांण = (कृपाण) तलवार ।

४—हैबर० = घोड़ों पर पाखर डालकर । तबल्ल = नक्कारा बजाकर । फरा = ढालें । कट = कमर में । खंजर = एक प्रकार का शस्त्र । तरां = तब ।

५—सुणे = सुनकर । राम = रामसिंह भाटी । अधायौ = युद्ध से तृप्त नहीं हुआ । बेल सूं = सहायता के लिये । सेल० = भाला उठाकर ।

छप्पय

देख मुगल अबदल्ल, फौज अणचल्ल अफारी
हांम कांम पूरबा, राम वळियौ रोसारी।
सौ तुरंग सारखां, भड़ां अणभंग समेळां
मीट पड़ी मेळिया, घड़ी नह लग्गी वेळां।
ऊपाड़ सेल अबदल्ल पर, राम भुजां बळ रोपियौ
वीधियौ जांण तळियौ वड़ौ, ऊथलियौ तन ओपियौ ॥ ६ ॥

दुहा

एक धकै भागा असुर, पत जवनां पड़ियौह।
रत झरती झोळी रवद, डोळी ऊपड़ियौह ॥ ७ ॥
गाजू मग्गां पांच सौ, पिसण करग्गां पेख।
खांची वग्गां राम रिण, जंगां दाख विसेख ॥ ८ ॥

६—अबदल्ल० = अबदुल्लाखाँ को देखकर। अफारी = बहुत। हांम कांम पूरबा = मन की इच्छा पूर्ण करने के लिये। बळियौ = पीछे फिरा। रोसारी = क्रोधवाला। समेळां = इकमन्ने। मीट पड़ी = एक से एक आगे होकर। मेळिया = शत्रुओं से जा जुटे। रोपियौ = भाले का प्रहार किया। तळियौ = तैल में तला हुआ। ओपियौ = शोभित हुआ। तेल में बड़े को तलते हैं तब सूए से बड़े को बेधकर उथलते हैं. वैसे रामसिंह ने अबदुल्लाखां को भाले से बेधकर उथल दिया।

७—एक धके = एक तरफ। रवद० = यवन (अबदुल्लाखां) रुधिर झरती हुई झोली में लेकर डोली में रखकर रणभूमि से उठाया गया। (जो मर गया था)।

८—गाजू = गाँव का नाम है। पिसण = शत्रुओं के। करग्गां = हाथों को। वग्गां = घोड़ों की लगामें। दाख = दिखलाकर।

माड़ेचौ मुकनेस रौ, देस म्रजाद दुझल्ल।
झोळी वीस घताविया, पड़िया तीस मुगल्ल ॥ ९ ॥
लागंतै वैसाख री, बीज अणी बळबंड।
राम कियौ मिळ केहरी, करी जिही सतखंड ॥१०॥

इति श्री राजरूपक मै भाटी रामसिंह अबदुल्लखांनै मारियौ ॥

दुहा

मुहकम लग्गौ मेड़तै, ज्यां दणियर पर पेख।
आपड़ियौ धर लूटतां, वाहर गौहर सेख ॥११॥
धौळै दिन वागा धकै, तोले कूंत खडग्ग।
आम्हा साम्हा आहुड़े, विड़ंग उपाड़े वग्ग ॥१२॥
झूर झड़े तरवारियां, सेलां पड़े प्रहार।
एक घड़ी भग्गा नही, वग्गा सार दुधार ॥१३॥
सैद अली मुहकम्म रै, रहियौ हाथ समत्थ।
गौहर छूटां कोट सूं, त्रीसां तूटा मत्थ ॥१४॥

९—माड़ेचौ = भाटी, माड़ देश के संबंध से माड़ेचा। जेसलमेर प्रदेश को माड़ देश कहते हैं। मुकनेस रौ = मुकनसिंह का पुत्र। दुझल्ल = वीर।

१०—केहरी = सिंह। करी = हाथी। जिही = जैसे।

११—मुहकम = यह मेड़तिया मोहकमसिंह है। इसने मेड़ते को जा घेरा। दणियर = शत्रु को। गौहर = यवन सेनापति का नाम है।

१२—वागा = लड़े। कूंत = (कुंत) भाला। आहुड़े = भिड़े। विड़ंग = घोड़ों की बाग उठाकर।

१३—झूर = कटकर। झड़े = गिरते हैं। सार = तलवार। दुधार = खांडों से।

१४—सैद अली = नाम है। रहियौ हाथ = मारा गया। गौहर छूटां = गौहर कोट छोड़कर भाग गया और ३० मनुष्यों के मस्तक कटे।

लागौ अग कमंध रै, फोड़े ढाल खतंग।
छीप करं दळ दुज्जणां, जीप खड़ो रण जंग ॥१५॥
उजवाळी वैसाख री, छठ गुर सुक्कर वार।
मुहकमसिंघ कल्याण तण, रिण जीपौ वड वार ॥१६॥

इति श्री राजरूपक मैं मेड़तियौ मुहकमसिंघ सेदअली
मारियो सेख गौहर भागौ सो विगत आई।

छंद बेअक्खरी

मगरै राजड़ जगड़ समेळा
सांमळ नाहरखान सचेळा।
बेली जोधाहरा महाबळ
भीम सिवौ रिण थयां भुजागळ ॥१७॥
आसतखां सुण कमँध अमांमा
सुत सिर विदा कियौ धर सांमा।
हलिया जवन अजैगढ़ हूंता
दारुण सहस वीस जमदूता ॥१८॥

१५—कमंध रै=राठोड़ (मुहकमसिंह) के शरीर से शत्रु भिड़ा। छीप करे=(क्षिप्र संस्कृत) शीघ्रता से।

१६—उजवाळी=शुक्लपक्ष की। गुर=(गुरु) बृहस्पति और शुक्र दो बार लिखे हैं जिससे षष्ठी तिथि दो प्रतीत होती हैं। अथवा गुरु अर्थात् बड़ा यह मुहकमसिंह का विशेषण।

१७—मगरै=पहाड़ी प्रदेश। राजड़=राजसिंह। जगड़=जगरामसिंह। समेळा=शामिल। सांमळ=श्यामसिंह। सचेळा=बलवाले। जोधाहरा=जोधा शाखा के राठोड़।

१८—आसतखां=यवन का नाम है। उसने अपने पुत्र को राठोड़ों पर भेजा। अमांमा=अप्रमाण। अजैगढ़ हूंता=अजमेर से।

मगरै ऊदाहरा महा बळ
वीटे खळ लूंबिया चहूंबळ।
जवनां वीत चहूं दिस जावै
ऊंठ घटांण रसत नह आवै ॥१६॥
दळ छीजतौ लखे दुरवेसी,
वळियौ छोडे देस विदेसी।
विश्व लियै जस जगड़ वदीतौ
जवन गयौ पाछौ अणजीतौ ॥२०॥
असतखान मन धोखौ आयौ
लोभ विना दुख वाग लगायौ।
असुरां तरां उकत उपजाई
वातां लालच तणी वताई ॥२१॥
अै मनसफ कै लियौ इजारा
मिळ वरतौ सत वचन हमारा ॥
राजा जितै प्रकासै रैणा
लड़ण तणा वांना मत लैणा ॥२२॥

१९—वीटे = घेर लिया। खळ = शत्रु को। वीत = (वित्त) घन घोड़े ऊँट आदि।

२०—दुरवेसी = यवन। वळियौ = पीछा हटा। विश्व = जगत् में। वदीतौ = प्रसिद्ध, जिसका नाम सब जगत् कहता है।

२१—असतखान = असतखान ने राठोड़ों को धोका देने का मन में विचार किया। विना दुख = आसानी के लिये लोभ-रूपी बाग लगाया। तरा = तब। उकत = युक्ति की। लालच तणी = लोभ की।

२२—अै = ये। कै = कितने ही मन्सब इजारे ले लो। मिळ = प्रीति के साथ बरताव करो। राजा = अजीतसिंहजी। जितै = जब तक। रैणा = राज्य पर प्रकाशित हों। लड़ण तणा = युद्ध का। वांना = लड़ने का चिह्न।

बेग सिकंदर वचन सिवाई
जवन इनायत तणौ जमाई।
इणरै कौल मिलण के आया
लेखे रीत किता ललचाया ॥२३॥
वात हुई ग्रीषम बौळाई
ऊपर धुर वरखा रुत आई।
असतखान उर थयौ अचींतौ
विचित्रां तणौ सोच सुण वीतौ ॥२४॥

दुहा

असपत साम्हा ऊकटे, आसतखां गज अस्स।
चाळीसै मैं चालियौ, सांवण वद चवदस्स ॥२५॥
साथे लिया अजीमसा, दक्खण गयौ नवाब।
भळियौ दोनूं देस रौ, खान इनायत जाब ॥२६॥
यौ वरखा रित बौळवी, वीती सरद अदुंद।
हिम रुत आधी वीच त्यौं, फेर प्रगट्यौ फंद ॥२७॥

२३—बेग०=सिकंदर बेग इनायतखां का दामाद था। सिवाई=अधिक, विशेष। कौल=प्रतिज्ञा। के=कितने ही। लेखे=देखकर।

२४—बौळाई=समाप्त हुई। धुर=आगे। रुत=ऋतु। अचींतौ=निश्चित। विचित्रां तणौ=यवनों का।

२५—असपत=बादशाह के सामने। ऊकटे=चलाए। अस्स=घोड़े। चाळीसै=संवत् १७४० में।

२६—अजीमसा=सुलतान अजीम को साथ मे लिया। भळियौ=सौंपा। दोनूं देसरौ=मारवाड़ और गुजरात का। जाब=उत्तर, प्रबंध।

२७—बौळवी=व्यतीत की। अदुंद=बिना युद्ध। फंद=झगड़ा।

सामँत जोगीदास रौ, दाखे वैण दुझल्ल।
जवन नचींता को करै, ज्यां ऊभा रिणमल्ल ॥२८॥
यां सांवतसी अक्खियौ, त्यां कहियौ भगवान।
जोड़ अछायौ तेजसी, जायौ आईदान ॥२९॥
चाळै मुकन महाबळी, किर ऊन्हाळै आग।
चंपै मिळ अणचिंतिया, किया तुरंगां माग ॥३०॥
पाली थांणै ऊपरा, आया कमँध अचिंत।
मोळे बळ खुरसांण रौ, वळियौ टोळे वित्त ॥३१॥
महमदअली नवाब तण, कर घण थाट सगाह।
बूंब पडंती दौड़ियौ, तन भीड़ियां सनाह ॥३२॥
आगै भड़ अजमाल रा, वाहर हेरै बाट।
अतरै मिरजौ आवियौ, गह छावियौ निराट ॥३३॥

२८—सामँत = सामंतसिंह जोगीदास का पुत्र चांपावत, जिसके वंशज पोकरण ठाकुर हैं। दाखे = कहे। वैण = वचन। दुझल्ल = वीर। को = कौन। रिणमल्ल = योद्धा।

२९—अक्खियौ = कहा। भगवान = नाम है। जोड़ = समान का। अछायौ = गर्वयुक्त। तेजसी = नाम है। आई दान = आईदानोत चांपावत।

३०—चाळै = युद्ध में। मुकन = मुकनसिंह नाम है। चंपै = चांपावत। माग = मार्ग।

३१—मोळे = कमजोर। खुरसांण रै = यवनों का। वळियौ = पीछे लौटा। टोळे = अपने आगे करके। वित्त = गो आदि पशुओं को।

३२—तण = (तनय) बेटा। घण = बहुत। सगाह = गर्वसहित। बूंब पडंती = पुकार पड़ने पर। सनाह = बख्तर पहनकर।

३३—वाहर = अनुधावन करनेवालों को। हेरै बाट = प्रतीक्षा करते हैं। अतरै = इतने में। निराट = अत्यंत।

दुहूँ नगारा वज्जिया, करण करारा जंग ।
दिया न पूठा मारवां, साम्हा किया तुरंग ॥३४॥

छंद तिलका

दुहुँ ओर दळे, मुँह मेळ मिळे ।
कर खग्ग कियां, फळ फोर लियां ॥३५॥
सर सोर पड़े, हुय हक भड़े ।
कळ सोर किती, जुध बोल जिती ॥३६॥
घण घाय घुटे, जरदैत जुटे ।
रिण रीठ वगे, खिर धार खगे ॥३७॥
वध सेल वहै, सक मीर सहै ।
घट घाव घणै, बिकराळ वणै ॥३८॥

दुहा

एक घड़ी वग्गी सुजड़, धड़ धड़ लग्गी धार ।
पिसण थया विमुहां पगां, गहि वग्गां तोखार ॥३९॥

३४—करारा = प्रबल । मारवा = मरु देश के योद्धाओं ने । तुरंग = घोड़े ।

३५—दळे = सेना । कर = हाथ में । फळ = भाले । फोर लियां = चंचल करके, आगे करके ।

३६—सर सोर = बाणों का शब्द । कळ = युद्ध में ।

३७—जरदैत = बख्तर पहने हुए योद्धा । रीठ = शस्त्रों की तीक्ष्ण मार से । वगे = लड़े । खिर = पड़ते हैं ।

३८—सक = (शक्त) समर्थ । घट = शरीर ।

३९—वग्गो = बजी, चली । सुजड़ = तलवार । पिसण = शत्रु । विमुहां = विमुख हुए, भागे । तोखार = घोड़ों की ।

कमँधां छ्ळ केसव तणौ, भाटी वैणीदास।
हिच पड़ियौ विच इंढरां, रिण मीढरां निवास ॥४०॥
दस पड़िया भड़ हिंदवां, रिण पैंतीस मुगल्ल।
ऊपड़ियौ घायल हुवे, भायल देद दुभल्ल ॥४१॥
खागे वागा खारला, मांझी मेर मरन्न।
चांपा चाळीसै वरस, पोह उजाळी नम्म ॥४२॥
भाटी पोता प्रागरा, साथ सदा रण जंग।
ऊदै रूप महाबळी, बालौ अखई संग ॥४३॥
चतुर फता सकती पुरा, कूंपा केहर राम।
वुर तातौ जवनां थयौ, फिर मातौ संग्राम ॥४४॥

इति श्री राजरूपक मै चांपा आद रावळे साथ खारला लड़ाई कीवी।

४०—कमॅधा छ्ळ = राठोड़ों के वास्ते। तणौ = का, (केशव का पुत्र)। हिच = युद्ध करके। पड़ियौ = गिरा, मरा। ईढरा = ईढवालों के, अमर्षवालो के। मीढरा = मीढने योग्य, उपमा देने योग्य।

४१—ऊपड़ियौ = घायल होकर उठाया गया। भायल = राजपूतों का एक वंश है। देद = दूदा नाम का। दुभल्ल = वीर।

४२—खारला = गाँव का नाम है। यहाँ युद्ध हुआ। माझी = अग्रणी, मुखिया। मेर = सर्वोपरि मरने को। चाळीसै = यह युद्ध संवत् १७४० पौष सुदि ६ को हुआ था।

४३—पोता प्रागरा = प्रागदासोत। ऊदै = ऊदावत। रूप = रूपसिंह। बालौ = बालाराठोड़। अखई = अखैसिंह।

४४—चतुर = चतुरसिंह। फता = फतहसिंह। सकती पुरा = चौहान। कूंपा = कूंपावत। मातौ = प्रबल।

दुहा

ले परगह सह आप रौ, चढियौ खींवकरन्न ।
करनहरां पुर चांपिया, उर कांपिया जवन्न ॥४५॥
रूकहथां हरदासरां, साथे राम अभंग ।
जोधांणै उत्तर दिसा, दणियर ऊगै जंग ॥४६॥
ऊदै राजड़ जगपती, जोधहरै सिवदान ।
जोधांणै अजमेर विच, कीधौ जेर जिहान ॥४७॥
कूपा किरमर झालियां, फतमल विजपाळोत ।
हटै न जंगे सांमछळ, मिटै न मेछां मौत ॥४८॥
राम पदम जैता तणा, अति धर चाड अभंग ।
आगै जुटे उबांणियां, जठै प्रगट्टै जंग ॥४६॥
संगे केहर राम रै, मिळियौ जंगे भीम ।
सबळांणी सोबां तणी, सार विधूंसे सीम ॥५०॥

४५—सह = समस्त । खींवकरन्न = खींवकर्ण दुर्गदास का भाई । करनहरां = करणोत राठोड़ों में । पुर = अग्रणी । चांपिया = दबाया ।

४६—रूकहथां = तलवारें हाथों में लिए हुए । हरदासरां = हरदासोत भाटी । राम = रामसिंह । दणियर = (दिनकर) सूर्य के उगते, प्रतिदिन ।

४७—राजड़ = राजसिंह । जगपती = जगरामसिंह । जोधहरै = जोधा राठोड़ ।

४८—किरमर = तलवार । सांमछळ = मालिक के वास्ते ।

४६—जैता तणा = जैतावत राठोड़ । चाड = सहायता के लिये । उबांणियां = तलवार उठाए ।

५०—सबळांणी = सबलसिंह का पुत्र (भीम) । सोबां तणी = सूबों को (सीमा को) । सार = तलवार से ।

भाटी भूप अजीत छळ, सूरौ अनै महेस।
अणी कमंधां आगळी, वेढ वणी पँडवेस ।।५१।।

छंद वेअक्खरी

माड़ेचौ रामौ मुकनांणी
अर मारे तेगां ऊबांणी।
साथे जोधाहरौ सचाळौ
किरतावत सूजौ किरणाळौ ।।५२।।
तुरकां सूं हितकारी त्यांनूं
जम सूं असह लगै उर ज्यांनूं।
चांपौ सांवतसिंघ चलावै
इण दिस फौज लियां धर आवै ।।५३।।
घणा असुर भांजे गांगांणी
माड़ेचौ चढियौ मुकनांणी।
लाखां सूं बंधड़ै लड़ाई
सार प्रथम साभ्रिया सिपाई ।।५४।।
दोनूं तरफां हूँत लियां दळ
मिळिया सामँत राम महाबळ।

५१—भूप = भोपतसिह। अजीत छळ = अजीतसिंहजी के वास्ते। पँडवेस = मुसलमानों के मालिक से।

५२—माड़ेचौ = भाटी। मुकनांणी = मुकनसिंह का पुत्र। अर = (अरि) शत्रु। सचाळौ = युद्ध करनेवाला, समर्थ। किरणाळौ = तेजस्वी।

५४—गांगांणी = गाँव का नाम है। जोधपुर से ६ कोस उत्तर में। साभ्रिया = मार गिराए।

५५—सामँत = सामंतसिह चापावत। राम = रामसिह भाटी।

आवै धकै सुथांणौ ऊठै
पिसणां चमू चढै नह पूठै ॥५५॥
अन गांमां गिणती नह आई
पुर वाळे ज्यां खाग पजाई ।
ले ले पेस घणा पय लागा
अस फेरे जैतारण आया ॥५६॥
थरके कोट सहत पुर थांणा
भार सताड़े पड़े भगांणा ।
ऊदाहरा सकळ मिळ आया
आद जगड़ जुध वाद अछाया ॥५७॥
मारू छळ अगजीत समेळा
सोजत मिळिया कटक सचेळा ॥

दुहा

वात गरै विचित्रां तणै, मेड़तियौ सादूळ ।
आयौ दळ अजमाल रै, मन अणकळ कळ मूळ ॥५८॥

धकै = मुख के सामने । पिसणा० = शत्रुओ की सेना चलायमान होती है । ये पीठ नहीं देते हैं ।

५६—पुर = नगर, शहर । पेस = पेशकसी, दंड । पय = (पद) चरणों में लगे । अस = (अश्व) घोड़े । जैतारण = शहर का नाम है ।

५७—थरके = थहराते हैं । कोट = गढ़ । भार पड़े = जोर पड़ने पर । सताड़े = सताए हुए, ताड़ना किए हुए । ऊदाहरा = ऊदावत राठोड़ । जगड़ = जगरामसिंह आदि । अछाया = प्रसिद्ध ।

५८—सोजत = शहर का नाम है । सचेळा = समर्थ । वात गरै = वात रखने के लिये । विचित्रां तणै = मुसलमानों की । अजमाल रै = अजीतसिंहजी की सेना में आया । अणकळ = विना विचारे । कळ = युद्ध, कलह ।

जोर दिखायौ साह रौ, फोर घरं प्रसताव ।
घर घर हंदा मांझियां, कर कर वात द्रढाव ॥५६॥
उर लागी असुहांवणी, किर दांमणी सिळाव ।
सुण वाणी सारोखियौ, जोगांणी जमराव ॥६०॥
मेड़तियौ मुख ऊचरै, हैमतसिंघ वचन्न ।
मारौ दुरजण सांम रा, कुण भाई कुण तन्न ॥६१॥
मार लियौ कहतै मुहर, उर खीजियौ छड़ाळ ।
किर गजराज सँघारियौ, सिंघ करंतै आळ ॥६२॥
भड़ पड़िया सादूळ रा, वीस विखम्मी वार ।
चैत इग्यांरस चांनणी, असुरां सुणी पुकार ॥६३॥
अधकारी असुरां तणा, सुण धूजिया सरब्ब ।
नृप चौ मोच निवारियौ, उर धारियौ गरब्ब ॥६४॥

५६—फोर० = घर की बात को उलट दिया । हंदा = के । द्रढाव = दृढ़ता ।

६०—असुहांवणी = बुरी । दांमणी सिळाव = बिजली की शलाका । वाणी० = इस मेड़तिया सादूल की वाणी को—घर फोड़नेवाली वाणी को—सुनकर । सारोखियौ = रुष्ट हुआ । जोगांणी = जोगीदास का पुत्र (सामंतसिंह) । जमराव = यमराज के सदृश ।

६१—दुरजण = शत्रु को । सांम रा = स्वामी के । तन्न = निज का ।

६२—कहतै मुहर = कहते ही । खीजियौ = क्रुद्ध हुआ । छड़ाळ = भालावाला । मेड़तिया हेमतसिंह ने बादशाह के पक्षपाती सादूल को मार लिया । आळ = खेल करते हुए ।

६३—पड़िया = गिरे, मरे । विखम्मी वार = विषम समय में । चांनणी = शुक्लपक्ष । असुरां = तुरकों ने ।

६४—अधकारी = (अधिकारी) ओहदेदार । नृप चौ = राजा का ।

सांम तणै बळ सूरमा, रिमां गिणै तिल रज्ज ।
ऊथाळे अग्रमाल छळ, भाळे प्राण सकज्ज ।।६५।।

इति श्री राजरूपक मै सामंतसिंघ जोगीदासोत नै भाटी रामसिंघ मुकनदासोत फौजबंधी कीवी नै नबाब रौ मेळाऊ मारियौ सा विगत कही ।।

दुहा

दुंद सुणे मगरै दिसा, सैद तणौ म्रत सल्ल ।
नूरमली जोधांण सूं, चढियौ भीड़ कगल्ल ।।६६।।
पाली थांणै पाधरौ, आवंतां उर आंण ।
गौ मिणियारी ऊपरा, तंग तुरंगां तांण ।।६७।।
मँडियौ चांपां मोरचौ, दारुण नरहरदास ।
गाजै अंबर गोळियां, खग होळियां प्रकास ।।६८।।

६५—रिमां=शत्रुओ की । तिल रज=तिल मात्र और रज के समान । ऊथाळे=उलट दिया । छळ=वास्ते । भाळे=देखकर । सकज=समर्थ, कृतकृत्य ।

इतिश्री में—मेळाऊ=शत्रुपक्ष से मिलनेवाले ।

६६—दुंद=युद्ध । दिसा=तरफ । सैद तणौ=सैयद का । म्रत सल्ल=मरनेवालों के लिये शल्य रूप । भीड़=पहनकर । कगल्ल=कवच, बख्तर ।

६७—पाधरौ=सीधा । मिणियारी=एक गाँव का नाम । तांण=खींचकर ।

६८—गोळियां=बंदूकों की आवाजों से । खग०=तलवारों से होली खेल रहे हैं ।

वोम अराबै गाजियै, ढोल हुवा सब ठौड़ ।
आयौ रूपौ राम तण, हांम घणी राठौड़ ॥६९॥
उण वेळा ऊदाहरै, तोले चंद्र प्रहास ।
रजपूतां पोतारियां, भुज धारियां अकास ॥७०॥
गुढो सँभाए साहली, पहली जोई वाट ।
आयौ बारठ केहरी, पड़तां झाट निराट ॥७१॥
बेली बापूकारिया, पूरे बेल सवाय ।
धीर वधारी भीरियां, भीर सकज्जां पाय ॥७२॥
वागी नाळ बळावळी, भागी नहीं अटक्क ।
आसुर गांम अभेळियां, गौ मेळियां कटक्क ॥७३॥
नरहर डूंगरसी हरै, खळ भागा बळ दक्ख ।
चाळीसै वैसाख मै, पांचम सांवळ पक्ख ॥७४॥

इति श्री राजरूपक मै गांम मिणियारी मीरजां सूं
नरहरदास लड़ियौ सौ विगत लिखी छै ।

६९—वोम=(व्योम) आकाश । अराबै=छोटी तोप । रूपौ=रूपसिंह (ऊदावत) । राम तण=रामसिंह का पुत्र । हाम=युद्ध का उत्साह ।

७०—ऊदाहरै=ऊदावत राठौड़ । चंद्र प्रहास=खड्ग । पोतारियां=उत्साहित किए ।

७१—गुढो=रक्षास्थान । साहली=एक गाँव का नाम । झाट=तलवारों का प्रहार । निराट=अत्यंत ।

७२—बेली=राजपूतों को । बापूकारिया=प्रोत्साहित किया । बेल=सहायता । धीर=धैर्य । भीरियां=साथवालों की । भीर=सहायता । सकजां=समर्थों की । पाय=पाकर ।

७३—नाळ=बंदूक, तोप । अटक=मर्यादा । अभेळियां=न लूटकर । गौ=गया ।

७४—डूँगरसी हरै=डूंगरसी के वंशज । खळ=दुष्ट, शत्रु । दक्ख=दिखाकर । सांवल पक्ख=कृष्णपक्ष में ।

दुहा

माड़ेचां बल मंडियौ, लियौ मँडोवर मार।
खोजा साले दौड़ियौ, वाहर बळ विसतार ॥७५॥
वळिया जादम बीरवर, मिळिया सेल उपाड़।
भड़ वळिया सालै तणा, पुळिया पहली राड़। ७६॥
रूके निरदळिया रवद, विकट उभै कम वीस
आयौ जोधांणै असुर, सालै नीचै सीस ॥७७॥

छंद बेअक्खरी

आ सुणतां थांणै अकुळायौ
नूरमली जोधांणै आयौ।
मगरै पहलां अटक महाबळ
आद रांम सामंत अणांकळ। ७८।

७५—माड़ेचा = भाटी राजपूतों ने। बळ मंडियौ = बल किया। मंडोवर = मारवाड़ की पुरातन राजधानी। मार लियौ = लूट लिया। साले = खोजा का नाम है। दौड़ियौ = आक्रमण किया। वाहर = अनुधावन किया।

७६—वळिया = पीछे फिरे, सम्मुख आए। जादम = यादव, भाटी। सेल = भाला। पुळिया = भाग गए। राड़ = लड़ाई, युद्ध।

७७—रूके = तलवार से। निरदलिया = नष्ट किए। रवद = मुसलमानों को। उभै = दोनों पक्षों के। नीचै सीस = पराजय होने से मस्तक नीचा करके।

७८—आ = यह। अकुळायौ = घबराया। जोधांणैं = जोधपुर। अटक = रुक रहे थे, ठहरे हुए थे। आद रांम = रामसिंह आदि। अणांकल = स्वतंत्र, निभय।

सीदी थयौ तगीर असी भत
सेरांणी थांणै गा सोजत ।
खां बहलोल पठांण खडग्गे
आतुर रिण वाजे ऊनग्गे ॥७९॥
कळहण कज बहलोल करारौ
उण दिस मगरै कटक अफारौ ।
कमधज दहै चमू किलवांणी
सुण सुण दुख धिकियौ सेरांणी ॥८०॥
आसुर चढियौ कोप अफारै
अस पाखरियां सहस इग्यारै ।
अंगे भीड़ छत्रीसे आयुध
अस खड़िया लागी रज ऊरध ॥८१॥
कमँधां सरिस कही हलकारां
आया दळ मुगलां अणपारां ।

७९—सीदी=सीदी जाति का यवन । थयौ तगीर=थाने से हटा दिया गया । सेरांणी=मुसलमान ओहदेदार का नाम । खां बहलोल=बहलोल खां । आतुर=त्वरा करके । वाजे=लड़कर मरा । ऊनग्गे=नंगी तलवार लेकर ।

८०—कळहण=युद्ध । कज=लिए । करारौ=बलिष्ठ, समर्थ । अफारौ=बहुत । दहै=जलाते हैं, मारते हैं । चमू=सेना । किलवांणी=यवनों की । धिकियौ=जलता है ।

८१—अफारै=अत्यंत । अस=घोड़ों को । पाखरियां=पाखर पहनाया । भीड़=बांधकर ।

८२—कमँधां=राठौड़ों के । सरिस=समीप । रिम=शत्रुओं का ।

राठौड़ां सुणियौ रिम राहां
सिंधू वागा हुई सनाहां ॥८२॥

दुहा

चढ ऊभा भड़ चंचळां कड़ बंधे केवांण ।
हेवै दळ निजरां हुवा, अजरां नरां पठांण ॥८३॥

छंद पद्धरी

विचित्रांण निवड़ घड़ महण वेळ
मुरधरां नरां हुय निजर मेळ।
बळ दाख दुहूँ दिस सस्त्र बंध
किलवांण पेख वळिया कमंध ॥८४॥
रिण कोड़ उठी समना रवद्द
सूरमा अठी बड़ छड़ सबद्द ;
सामंत रूप सामंतसीह
अजमाल सुछळ चांपौ अबीह ॥८५॥

राहां = मार्ग । सिंधू = सिधुराग के वाद्य । वागा = बजे । सनाहा = कमरें कसीं, शस्त्र बांधे ।

८३—चंचळा = घोड़ों पर । कड़ = (कटि) कमर में । केवांण = (कृपाण) तलवार । हेवै = दोनों. अब । दळ = सेना । अजरा = अच्छे ।

८४—विचित्रांण = यवन । निवड़ = निपटना. होना । घड़ = सेना । महण = समुद्र । वेळ = (वेला) मर्यादा । मुरधरा = मारवाड़ के । दाख = दिखाकर । किलवांण = यवनों को । पेख = देखकर । वळिया = पीछे फिरे. सम्मुख हुए । कमंध = राठौड़ ।

८५—कोड़ = उत्साह । उठी = उधर । समना = उत्साहवाले । रवद्द = यवन । अठी = इधर । छड़ = भालों का । रूप = रूपसिंह । सुछळ = युद्ध के लिये । चांपौ = चांपावत । अबीह = निर्भय ।

भुज तोल खड्ग मन करन भाय
साळुळे अगन रन वन सवाय।
जुध अत सजोध नित करी जोस
सुण गरज सिंघ वधियौ सरोस ॥८६॥
रिण अचल जोड़ दळ ढल्ल राम
जादम सँग्राम कज गिणत जाम।
रिप जोर सोर प्रगटां दुहल्ल
कनवज्ज समर किर अडर कन्ह ॥८७॥
प्रगट्यौ कि आंण हरदास पांण
जुध हाथ दिल्ली रुघनाथ जांण।
उण वार राम जदु वंस इंद
सरदंत जांण राका समंद ॥८८॥

८६—मन भाय = मनचाहा करने के लिये। साळुळे = आगे बढ़े; चले। रन = (रण) युद्ध में। वन = वन में अग्नि बढ़ती है, उस से अधिक। अत = अत्यंत। सजोध = योद्धाओं सहित। गरज सिंघ = सिह की गर्जना के समान। सरोस = क्रोध सहित।

८७—रिण = (रण) युद्ध में। जोड़ = बराबरी का। ढल्ल = ढाल। राम = रामसिंह भाटी। जाम = (याम) प्रहर। रिप = (रिपु) शत्रु। कन्ह = कन्नौज के राजा जयचन्द का चचेरा भाई।

८८—कि = अथवा, किंवा। हरदास = हरदास ऊहड़ जो राठोड़ सेखा के साथ रहा था। पांण = (प्राण) बल। रुघनाथ = दिल्ली के युद्ध में भाटी रघुनाथ बड़ी बहादुरी से लड़कर काम आया था। उण वार = उस समय। इंद = (इंदु) चंद्रमा। सरदंत = शरद् ऋतु के अंत में। जाण = मानों। राका० = पूर्ण कलावाली पूर्णिमा के दिन समुद्र बढ़ता है वैसे बढ़ता हुआ।

नवकोट सुभट कुळवट निहार
संग्राम अड़प अप छुळ सँभार।
हुई धीर सधीरां वीरहक्क
हर सकति डंक डमरू डहक्क ॥८९॥
पळ आस उरध ढक गिरध पंख
सर तीर पूर रव नर असंख।
मिळ सगह उचारै मार मार
पिंजरां नरां सर सेल पार ॥९०॥
पिड़ सार धार सिलहां अपार
बाजंत अंत विण वार वार।
जुध लड़ै भिड़ै नह खड़ै जंग
सिर पड़ै झड़ै कर पाव संग ॥९१॥
सिलहैत ढहै इम वहै सार
ऊधड़ै कड़ी बगतर अपार।

८९—नवकोट = मारवाड़ के। कुळवट = अपने कुल को। निहार = देखकर। अड़र = जबर्दस्त। धीर = धैर्यवान् पुरुषों को। सधीरां = धैर्य सहित। हर० = मानों महादेव और शक्ति का डंका और डमरू ही बजा।

९०—पळ आस = मांस की आशा से। उरध = ऊपर का भाग, आकाश। रव = शब्द। सगह = गर्वसहित। पिंजरां = शरीरों में।

९१—पिड़ = युद्ध में। सार = तलवार। सिलहां = कवचों पर। बाजंत = बजती हैं। अंत विण = बिना अंत, जिसकी संख्या नहीं। कर = हाथ। पाव = (पाद) पैर।

९२—सिलहैत = कवच पहने हुए। ढहै = गिरते हैं। सार = तलवार। ऊधड़ै = खुल जाती है। सामंत = सामंतसिंह चांपावत।

सामंत लड़ैत खड़ै संग्राम
रिण गहण गयौ अस तोर राम ॥९२॥
उर सेल धमोड़ै वेळ एम
जरदैत ढहै तर सरत जेम।
ऊछळे खळे तज तुरंग एक
वासूळे पूळांसूं विसेख ॥९३॥
किलमां तन पोखे राम कूंत
हुय जाय धरण व्रण एक हूंत।
इत सीह पराक्रम सीह ओप
किलमांण धकै नह सहै कोप ॥९४॥
सामंत विछोहै अंग सार
दोय जेम करै करवत्त दार।

खड़ै=घोड़े को चलाता है। गहण=(गहन) विकट संग्राम में। अस तोर=घोड़े को चलाकर। राम=रामसिंह भाटी।

९३—धमोड़ै=लगाता है। वेळ=समय पर। एम=इस तरह। जरदैत=बख्तर पहने हुए। तर=(तरु) वृक्ष। सरत=(सरिता) नदी। खळे=शत्रु। वासूळे=वसोला, खाती (बढ़ई) का शस्त्र-विशेष। पूळांसूं=घास का पूला।

९४—किलमां=मुसलमानों के। तन=शरीरों से। पोखे=पोषण किया, पुष्ट किया। कूंत=(कुंत) भाला। धरण=जमीन में। व्रण=छेद। रामसिंह का भाला शत्रु के शरीर को छेदकर जमीन में जा घुसता है। इत=इधर। सीह पराक्रम=सिंह का सा उसका पराक्रम है। सीह ओप=सिंह के सदृश उसकी शोभा है। किलमाण=मुसलमान। धकै=सामने।

९५—सामंत=सामंतसिंह। विछोहै अंग=अंगों को अलग कर देता है। सार=तलवार से। करवत्त=करोत से। दार=चीरकर।

पड़ सीस विना लोटै पठांण
किर ज्वार सिरै तूका क्रसांण ॥९५॥
इक पड़ै मुड़ै मुड़ लड़ै आय
घड़ियाल गजर जिम जजर घाय।
सामंत अनै रामो समत्थ
रवि गयण निहारै थांभ रत्थ ॥९६॥

छप्पय

हैमत्त सत्र हेड़तौ, अठी मेड़तियौ आयौ
असुरां दळ ऊपर, सार वाजियौ सवायौ।
वागो खग वानैत, लाज ऊदा जग लेखै
रिण जोधै धनराज, वाज ऊरिया विसेखै।
आवरत मेघ सम ओवड़े, घड़ी पंच वग्गी खड़ग
सिरदार इता भिड़िया समर, नीवड़िया जिम घाय नग ॥९७॥

किर = मानों। ज्वार० = ज्वार के सिर पर किसान पड़ा (काटने के लिये)।

९६—मुड़ै = पीछे फिरता है। घड़ियाल = प्रात:काल की घड़ियाल (= घंटा) जैसे पिटती है। जजर घाय = शत्रु घावों से जर्जर हो गए हैं। रवि० = सूर्य आकाश में रथ को रोककर उस युद्ध को देखता है।

९७—हैमत्त = हैमतसिंह। सत्र = शत्रुओं को। हेड़तौ = चलाता हुआ। वागो = लड़ा। वानैत = नामी, अपना चिह्न रखनेवाला। लाज० = ऊदावतों की जगत् में लज्जा रखनेवाला (रूपसिंह)। जोधै = जोधा राठोड़ धनराज। वाज = घोड़ा। ऊरियो = शत्रुओं के बीच में चलाया। आवरत० = प्रलयकाल के मेघ के समान। ओवड़े = झड़ी लगाई; उमड़ आया। नीवड़िया = समाप्त हुए, मरे। घाय = घायल होकर। नग = पहाड़ जैसे।

रुंड रकत भारिया, मुंड झारिया खडग्गां
कितां अंग निरलंग, झडे भड़ पग्ग करग्गां।
दंतकुळी अंगुळी, करी कोपरी कपाळां
वीच खेत वित्थरी, फरी विहरी किरमाळां।
हुय धरा नरां नर हैमरां, उरध अचंभम अम्मरां
आदेस करां सुर उच्चरै, राम अनै सामंतरां ॥९८॥

पड़े सहस पठ्ठांण, समर ऊपड़े सहासां
तुरिय तुंड सतखंड, परी मग झुंड अरस्सां।
सुहड़ पड़े दोय सत्त, राम सामंत विहारी
हिम्मतसी धनराज, पांच माझी व्रतधारी।
मधुमास क्रसन पख द्वादसी, जुध प्रकास जग जाणियौ
म्रत जीप गया हरि थान मझ, व्रत जिहां न बाखांणियौ ॥९९॥

इति श्री महाराज राजराजेश्वर श्री अभयसिंघजी रा परम जस
राजरूपक मैं सामंतसीह रामसीह आद उमराव काम
आया त्यांरी विगत कही द्वादस प्रकास ॥ १२ ॥

९८—रुंड = धड़। मुंड = मस्तक। झारिया = कटे हुए। निरलंग = अलग किए हुए। पग्ग = चरण। करग्गां = हाथ। दंतकुळी = दाँतों की पंक्ति। कोपरी = (कूर्पर) कुहनियाँ। खेत = रणांगण में। वित्थरी = बिछ गईं। फरी = ढालें। विहरी = बिखरी। किरमाळां = तलवारें। हैमरां = घोड़ों से। उरध = ऊपर, आकाश में। अचंभम = आश्चर्य। अम्मरां = देवों को। आदेश = आज्ञा (स्वर्ग में आने के लिये)। करां = हाथों से।

९९—पड़े = गिरे, मरे। ऊपड़े = घायल होकर। सहासां = हजारों। तुरिय = घोड़ों के। तुंड = मुख। मग = मार्ग। अरस्सां = स्वर्ग के। सुहड़ = सुभट। पड़े = गिरे, मरे। दोय सत्त = दो सौ। विहारी = विहारीदास। माझी = मुखिया। व्रतधारी = नियम धारण करनेवाले। मधुमास = चैत्र मास। म्रत जीप = मर्त्यलोक को जीतकर।

दुहा

तुरकां सूं मिळिया तिके, जिके हुवा सिर जोर ।
आंनौ थांणै उसतरां, किण तिण चंपै कोर ।। १ ।।
साख तणौ मद साथ बळ, जवनां देख सजोस ।
कूंपौ कांठै राखियौ, रिम हर करण अरोस ।। २ ।।

छंद बेअक्खरी

मगरै थई लड़ाई मोटी,
किलबां हरख सुणी नवकोटी ।
भीम तणौ हरनाथ भयंकर
जसौ भतीज महा जोरावर ।
चौड़ै बांधे कटक चलाया
ऊगै दिन थांणै सिर आया ।। ३ ।।
कूंपावत आंनौ जुध कोडे
उठियौ गयण भुजा डंड ओडे ।

१—आंनौ=कूंपावत आना । उसतरा=एक गाँव का नाम । चंपै=दबा सकता है । कोर=किनारा, छोर ।

२—साख तणौ=कूंपावत शाखा होने का । कांठै=किनारे पर । रिम हर=शत्रुओं को ।

३—किलबां=तुरकों को । नवकोटी=मारवाड़ । भीम तणौ=(करमसोत) भीम का पुत्र । जसौ=हरनाथ का भतीजा जसवंतसिंह । चौड़ै=प्रकट ।

४—कोडे=उत्साह से । गयण=(गगन) आकाश को । ओडे=

हरी जसै सुहड़ां हलकारे
अंबर छायौ सोर अँगारे ॥ ४ ॥
वागां बि दळ बराबर वादे
पिड़ गाजियौ गयण पड़सादे ।
समहर तीरां पूर सचाळौ
बरसे किर मातौ वरसाळौ ॥ ५ ॥
दारण कमा लूंबिया दोळा
आंनै लिया दिवाळां ओळा ।
आंनै तणा सुहड़ रिण आया
पड़िया तेरह अवर पुळाया ॥ ६ ॥
सात अठी पड़िया साखेता
मारू जुध जींता नांमेता ॥
लूटे गांम वित्त धन लीधा
दिस च्यारूं पासरणा दीधा ॥ ७ ॥

धारण किए । हरी = हरनाथसिंह । जसै = जसवंतसिंह । हलकारे = प्रचारा । सोर = बारूद । अँगारे = अग्नि से ।

५—वागां = लड़े । बि दळ = दोनों सेना । वादे = वाद करके । पिड़ = युद्ध से । पड़सादे = प्रतिशब्द, गूँज उठी । समहर = युद्ध । सचाळौ = प्रबल, युद्ध । मातौ = बहुत जोर का । वरसाळौ = बरसनेवाला मेघ, चातुर्मास्य ।

६—दारण = (दारुण) भयंकर, महाप्रबल । कमा = करमसोत । लूंबिया = जा लपटे । दोळा = चारों तरफ । दिवाळां = भीतों की । ओळा = आड, रोक, शरण । सुहड़ = सुभट, योधा । पड़िया = गिरे, मरे । अवर = दूसरे । पुळाया = भागे ।

७—साखेता = शाखावाले । मारू = मारवाड़ के । नांमेता = नामी । वित्त = गौ आदि पशु । पासरणा = फैलाव ।

दुहा

थांणौ गांगांणी तणौ, भागौ ऊगै भांण।
मंडोवर वाळा मियां, नास गया जोधांण ॥ ८ ॥

इति करमसोतां डसतरां रौ थांणौ मारियौ ॥

दुहा

कर दमँगळ वळिया कमा, सुद बारस वैसाख।
आरुहियौ मुहमदअली, भली खुली जद भाख ॥ ९ ॥
कर दौड़ां दिस कमधजां, गौ मेड़तै सिताब।
मोहकम रौ मन मेळवां, मिळ पूछियौ जवाब ॥१०॥
आगै कहियौ आसुरां, मुहकम झूटौ मेळ।
आंपे जांणां आंपणौ, (पिण) आपां सूं ऊखेळ ॥११॥
भाटी सूर महेस सँग, कूंपा राम पदम्म।
दूजाई दौड़ै विखै, इणरै पखै अनम्म ॥१२॥

८—गांगांणी=गाँव का नाम है। भांण=(भानु) सूर्योदय होते ही। जोधांण=जोधपुर।

९—दमँगळ=युद्ध। वळिया=पीछे लौटे। कमा=करमसोत राठोड़। आरुहियौ=चढ़ा, रवाना हुआ। भाख=अरुणोदय का समय हुआ।

१०—दौड़ां=आक्रमण करके। दिस०=राठौड़ों की तरफ। गौ=गया। सिताब=जल्दी। मोहकम०=मेड़तिया मोहकम से प्रीति करने के लिये।

११—आसुरां=मुहम्मद अली ने यवनों के आगे कहा कि मोहकमसिंह जो प्रीति दिखाता है वह सच्ची नहीं है। आंपे०=आप अपना जानते हैं परंतु वह आपसे ऊखेळ=विरुद्ध है।

१२—इणरै पखै=इसके पक्ष से। अनम्म=अनम्र।

ओ मेळू अवरां तणौ, असुरां करण अकाम ।
सिवौ नचिंतौ एण सूं, राजड़ नै जगराम ॥१३॥
मुहकम रौ मुहमद अली, सुण मत असत सराह ।
तुरत घणै हित तेड़ियौ, मिरजौ मेहलां मांह ॥१४॥

छंद बेअक्खरी

मिरजौ रीस वधे मन मारै
उर अप्रीत मुख प्रीत उचारै ।
घेठां भड़ां इसारत धारै
वात करै उर घात विचारै ॥१५॥

सत्र सारत समधा सब कोई
जड़लग वह गई संग जिनोई ।
मुहकम रुख चख जांण कमाळी
सिर चलते केवांण सँभाळी ॥१६॥

१३—ओ=यह । मेळू=मिला हुआ है । अवरां तणौ=दूसरों से । अकाम=बुरा । सिवौ=सिवसिंह । एण सूं=इससे ।

१४—असत=झूठा, बुरा । सराह=उसकी प्रशंसा करके । तेड़ियौ=बुलाया ।

१५—रीस=क्रोध । मन मारे=परंतु मन में क्रोध को दबा लिया । घेठां भड़ां=ढीठ सिपाहियों को । इसारत धारै=इशारा (संकेत) कर दिया ।

१६—सत्र=शत्रु । सारत=इशारे को । समधा=समझ गए । जड़लग=तलवार । वह गई=पार निकल गई । जिनोई=यज्ञोपवीत के समान । रुख=आशय । चख=(चक्षु) नेत्र । कमाळी=मुसलमान । सिर चलते=मस्तक कटते । सँभाळी=हाथ में ली ।

साझ मुगल किर बीज सचाळी
वहगई धार थंभ विचाळी ॥

दुहा

मिरचै मुहकम मारियौ, कर छळ मिळ अप्रकास ।
वेढक डेरै वझिये, पड़िया सुहड़ पचास ॥१७॥
आसाढाऊ सूध नम, मंगळ महलां मांह ।
मुहकम चौ म्रत मेड़तै, सुणियौ दक्खण साह ॥१८॥

इति श्री राजरूपक में मुहकमसिंघ मेड़तै चूक सूं काम आयौ ॥

दुहा

इकताळौ लागौ वरस, चाळौ सरस गहीर ।
सोझत हुई सुजांण नूं, थई पठांण तगीर ॥१९॥
मुकन सुतन बळ मंड म्रत, पड़ी न खंड लिगार ।
रैणायर रामंग रू, सरू हुवौ गह सार ॥२०॥

१७—साझ = मुगल को मारने के लिये । बीज = बिजली । सचाळी = प्रबल । थंभ विचाळी = थंभे में जा लगी । छळ = कपट करके । अप्रकास = गुप्त रीति से । वेढक = लड़नेवाले, सुभट । वझिये = लड़कर ।

१८—आसाढाऊ = आषाढ़ मास की । सूध = सुदि । नम = नवमी । चौ = का । म्रत = मृत्यु ।

१९—इकताळौ = सबत् १७४१ । चाळौ = युद्ध । गहीर = (गंभीर) विकट । सोझत० = सोजत का थाना सुजाणसिंह को हुआ ।

२०—मुकन सुतन० = मुकनसिह का पुत्र रामसिह पराक्रम करके मर गया था, परंतु । खंड = कमी । लिगार = जरा भी, अल्प भी । रैणायर = रणछोड़दास भाटी । रामंग रू = रामसिह का पुत्र । गह = धारण करके ।

पूरौ हरी प्रवाड़ मल, सूरौ दुज्जणसल्ल ।
रूकहथा हरदास रा, अजरा खरा अचल्ल ॥२१॥
सूजौ कीरतसिंघ रौ, भेळौ दळां अभंग ।
रोज हुवै रिणछोड़ रा, जवनां थांणै जंग ॥२२॥
पोळ जड़े रवि पेखतां, धो(खो)खै चढियां दीह ।
मिटै न कंदल जोधपुर, बीबां घटै न बीह ॥२३॥

छंद बेअक्खरी

उर जळियौ सुण खान इनायत
सेख विदा कीधौ उण सायत ।
जवन सहस सभिया कज जंगां
ततखिण पाखर पड़ी तुरंगां ॥२४॥
फाजल सेख खुलंती फज्जर
असुर घसे लागौ अति आतुर ।
अस न खड़े रिणछोड़ उताळौ
चूरण खळां विचारै चाळौ ॥२५॥

२१—पूरौ=पूर्णमल । हरी=हरिसिंह । प्रवाड़ मल=युद्ध करने में मल्ल के सदृश । सूरौ=सूरसिह । रूकहथा=तलवारें हाथों में लिए । हरदास रा=हरदास के वंशज । अजरा=अच्छे ।

२३—पोळ जड़े=दरवाजा बंद कर लेते हैं । रवि पेखतां=सूर्य दीखते दीखते । दीह=दिन । कंदल=युद्ध । बीबां=दूसरों का । बीह=भय ।

२४—उण सायत=उसी वक्त । कज=लिये ।

२५—खुलती फजर=दिन निकलते ही । घसे लागौ=पीछे लगा । अति आतुर=बहुत शीघ्रता करके । अस=घोड़े को । उताळौ=जल्दी । खळां=शत्रुओं का । चाळौ=युद्ध में ।

चाहंतां जादम रिण चाळौ
दुयणां तणौ हुयौ देठाळौ।
असुर सरोख डांखिया आया
आगै जादम राड़ अघाया ॥२६॥

मिळतां निजर हुवौ खग मेळौ
सर गोळी किर मेघ सवेळौ।
ऊहड़ भड़ थांणै सुज आगै
भिड़तां सिंधी जके न भागै ॥२७॥

अै रिणछोड़ धके मुख आया
पेणै जांण नींद वस पाया ॥
घत सत्रां मुह आठूं घोड़े
धीब पाड़िया सेल घमोड़े ॥२८॥

२६—दुयणां = दुश्मनों का। हुयौ देठाळौ = दृष्टिगोचर हुए। डांखिया = उड़ते हुए। राड़ = युद्ध में। अघाया = अतृप्त।

२७—खग = (खड्ग) तलवार का मिलाप हुआ। सचेळौ = प्रबल। ऊहड़० = आगे थाने पर ऊहड़ जाति का योधा है। भिड़ता = लड़ते हुए। सिधी = सिंधी सिपाही।

२८—अै = ये। धके = आगे। मुख = मुँह के सामने आए। पेणै० = पीना साँप। आदमी नींद में होता है तब पीना साँप उसके पास आ उसका श्वास पीता है और अपना ज़हर उसके मुख में डालता है, जिससे वह मनुष्य मर जाता है। घत० = आठों घोड़ों को शत्रुओं के सामने डाला। धीब = शस्त्र चलाकर। पाड़िया = तिराए। सेल घमोड़े = भालों से मारा।

भड़ सतरै आसुर भाराथै
सिंधी पड़ियौ महमद साथै ।
जवनां हार थई रण जूटे
फिरियौ सेख नगारे फूटे ॥२९॥

दुहा

यूं कमँधां सुण अक्खियौ, माड़ेचौ अर मोड़ ।
राम विभन्नौ को कहै, जां ऊभौ रिणछोड़ ॥३०॥
सोजत फौज सुजांण री, न को उजाड़ै देस ।
दळ सुज आंगम दौड़ियौ, माड़ेचौ माहेस ॥३१॥
दिन दिन धाड़ै दौड़तां, दूजै सांवण मास ।
दौड़ी फौज सुजांण री, सूरज तणै प्रकास ॥३२॥
मेळ थयौ सैंधै मुहे, रैंणा देतां रेस ।
अर मिळियां दिन ऊजळै, क्यां नीकळै महेस ॥३३॥

२९—भाराथै = युद्ध में । जूटे = जुटने से, भिड़ने से । फिरियौ = वापस लौटा ।

३०—यूं = इस तरह । अक्खियौ = कहा । माड़ेचौ = भाटी । अर मोड़ = शत्रुओं को पीछे हटानेवाला । विभन्नौ = भरा हुआ । जां = जहाँ ।

३१—उजाड़ै = नष्ट करता है । दळ सुज = उसकी फौज को । आंगम = दबाने के लिये । माड़ेचौ = भाटी महेशदास ।

३२—धाड़ै = डाका मारने के लिये ।

३३—सैंधै = पहचाने हुए । रैंणा = रणछोड़दास । रेस = पराजय । अर = शत्रु । क्यां = कैसे, किस तरह । नीकळै = रणभूमि छोड़कर जाय ।

आहव भीच अजीत रौ, आदू रीत सँभार।
सगां असग्गां सांमुहौ, बग्गौ नग्गे सार ॥३४॥
भड़ पूंतारे आप रा, धारे सांमधरम्म।
भांण तणौ अस भेळियां, दळ सांघणौ दुगम्म ॥३५॥
रीठ पड़े धारू जळां, अर धड़ डळां उधेड़।
करे खळां चहुवे वळां, दळ वीजळां निवेड़ ॥३६॥
समहर भड़ां सुजांण रां, उर धारियौ कळेस।
माड़ेचौ मर मारियौ, मुहड़ सटै माहेस ॥३७॥
धड़चे खळ धारू जळां, पड़ियौ दाखे पांण।
मुँह आगै माहेस रै, जैत तणौ किलियांण ॥३८॥

३४—आहव = युद्ध में। भीच = सुभट। सँभार = स्मरण करके। सगां = संबंधियों के। असग्गां = आसंग करके, हिम्मत करके। बग्गौ = लड़ा। नग्गे सार = नंगी तलवार लेकर।

३५—पूंतारै = प्रोत्साहित करता है। भांण तणौ = भाण का पुत्र (महेशदास)। अस भेळिया = घोड़े को शत्रुओं पर डाला। सांघणौ = बहुत सघन। दुगम्म = दुर्गम।

३६—रीठ पड़ै = अत्यंत वेग से प्रहार होता है। धारू जळा = तलवारों के। डळां = मास के पिंड। उधेड़ = चीरकर, काटकर। खळां = शत्रुओं को। चहुवे वळा = चारों तरफ। वीजळां = तलवारों से। निवेड़ = निपटाकर, मारकर।

३७—समहर = युद्ध में। माड़ेचौ = भाटी (महेशदास)। माड़ेचौ० = भाटी महेशदास ने इंद्रसिह के पुत्र मोहकमसिह को मारा था उसके एवज में सुजाणसिंह ने महेशदास को मारा।

३८—धड़चे = भयभीत होते हैं। खळ = शत्रु। धारू जळां = तलवारों से। दाखे = दिखलाकर। पांण = पराक्रम। जैत तणौ = जैतसिह का पुत्र।

छठ अँधियारी वार रवि, दूजै सांवण मास।
पाळहरौ रिण पौढियौ, पैलां सूतां पास ॥३९॥

इति श्री उरजनोत महेसदास उदैभांणोत काम आयौ सो विगत।

दुहा

चांपावत लाखौ फतौ, कूंपौ केहर राम।
यां सूधां कळ जोधपुर, मिटै न आठूं जाम ॥४०॥

छंद बेअक्खरी

सामँत राज जिसा समरत्थां
भूप अरथ पड़तां भारत्थां।
मुहकमसिंघ वळे माराणौ
साह तणौ दळ थयौ सपांणौ ॥४१॥
वात वळे असुरां विसतारी
धर दिस असट दिलासा धारी।
कितराई सुण भ्रमिया काचा
सबळ विखायत रहिया साचा ॥४२॥

३९—अँधियारी = कृष्णपक्ष की। पाळहरौ = उरजनोत भाटी। पौढियौ = सोया। पैलां० = दूसरे पक्ष के सोए थे उनके पास।

४०—सूधां = विद्यमान रहते। कळ = युद्ध। जाम = (याम) प्रहर।

४१—सामँत राज = चांपावत सामंतसिंह। पड़तां = गिरने से। भारत्था = युद्ध में। वळे = फिर। साह तणौ = बादशाह का। सपांणौ = सबल।

४२—विसतारी = फैलाई। धर = (धरा) पृथ्वी में। दिस असट = आठों दिशाओं में। दिलासा धारी = दिलासा देना शुरू किया। कितराई = कितने ही। भ्रमिया = धोखे में आ गए। काचा = कच्चे। विखायत = विपत् को सहनेवाले। साचा = सच्चे, दृढ़।

सरू थया मारग सगळा ही
सोच दळां मिटियौ पतसाही।
चांपा करण मुदै चकचाळा
ऊदावाळा वंस उजाळा ॥४३॥

भाटी पिण आया दळ भेळा
मांण घणै चहुवांण समेळा।
सरसो जोर हुवौ पतसाहे
मंद विखौ पडियौ धर मांहे ॥४४॥

अजन प्रताप तेज अनमंधी
बाळ दसा तूजौ गजबंधी।
आलोझिया सको भड़ आवै
दाखी हिम्मत दाव विदावै ॥४५॥

४३—सरू थया० = उपद्रव मिटने से सब मार्ग चालू हो गए चांपा = चांपावत। करण मुदै = करने के लिये। चकचाळा = उपद्रव, युद्ध। उजाळा = उज्ज्वल।

४४— माण घणै = बड़े अभिमान के साथ। समेळा = प्रीतिवाले। सरसो जोर०—बादशाह का बल सरस यानी दृढ़ हुआ। मंद = धीमा। विखौ = उपद्रव।

४५—अजन = अजीतसिंहजी का। अनमंधी = अपार है। बाळ दसा = बालक अवस्था। तूजौ गजबंधी = दूसरा गजसिंह है। आलोझिया = विचार करके। सको = सब। दाखी = दिखलाई। दाव विदावै = दाव हो या न हो।

दुहा

चतुर कहै सकती पुरौ, सुधरै तो बळ स्याम।
ऊखेळौ वाधै इळा, भेळौ लियै सँग्राम ॥४६॥
औ पोतौ माहेस रौ, देस म्रजाद कमंध।
इण बांमै (है) बळ ओडियां, तो सह नामै कंध ॥४७॥
कहियौ बारठ केहरी, विध रचतां वरियांम।
पाऊं बोल पँचायती, हूं लाऊं सँगराम ॥४८॥
यां राजी हुय अक्खियौ, दळ अजमाल दुबाह।
सांमधरम्मी थां जिसा, सो इम दियै सलाह ॥४९॥
गौ बारठ सांगै कनैं, सांम तणौ छळ साह।
कीयौ काज नरेस रौ, तूं कुळ बोझ सँमाह ॥५०॥
दुमना थया विखायती, मरतां सामँतसीह।
थळ आयां वळ ओढणा, सोई धमळ अबीह ॥५१॥

४६—चतुर = चतुरसिंह। सकती पुरौ = चौहान। सुधरै० = सुधरना तो स्वामी के बल से है। ऊखेळौ० = परंतु संग्रामसिंह (चांपावत) शामिल कर लिया जाय तो पृथ्वी में उपद्रव बढ़ सकता है।

४७—इण = इसके। ओडियां = धारण करने पर। सह = समस्त।

४८—विध = विधि, रचना। वरियांम = जोरावर, श्रेष्ठ। पाऊं० = पंचायती का वचन मुझे मिल जाय तो।

४९—यां—इस प्रकार। अक्खियौ = कहा। दुबाह = वीर। थां जिसा = तुम्हारे जैसे।

५०—गौ = गया। सांगै कनैं = संग्रामसिंह के पास। छळ साह = कार्य धारण कर। सँमाह = उठा, धारण कर।

५१—दुमना थया = दुविधा में पड़ गए हैं। विखायती = विपत् सहन करनेवाले। थळ आयां = रेता आने पर। वळ ओढणा = बल को धारण करे। धमळ = धोरी बैल है। अबीह = निडर।

सांगै पूछे भाइयां, जेज न रक्खी काय ।
मनसफ छंडे साह रौ, आयौ मिलण चलाय ।।५२।।
भड़ मिळिया नवकोट रा, अजै तणां उमराव ।
हुवौ सुरंगौ साथ हव, दूणौ लग्गौ चाव ।।५३।।
इण विध सांगै आखियौ, सुणतां सगळै साथ ।
हुसिआरा मेऴ खळां, सौ मारौ भाराथ ।।५४।।
भड़ लीधां भाद्राजणौ, आयौ उदिया भांण ।
हुवा समेळा राठवड़, कर भेळा घमसांण ।।५५।।
किलबां सोबा कंपिया, मिटी सलाह सताब ।
ज्यास विना जोधांण मैं, ऊखे सास नवाब ।।५६।।
सांगौ मिळियौ साथ सूं, जग सह पायौ ज्यास ।
इकताळै नम चांदणी, काती हंदै मास ।।५७।।
संवत् १७४१ काती सुद ९ ।

५२—काय=कुछ भी । साह रौ=बादशाह का । चलाय=चलकर ।

५३—नवकोट रा=मारवाड़ के । अजै तणां=अजीतसिंहजी के । सुरंगौ=उत्साहवाला, प्रसन्न । साथ=समूह । हव=अब । चाव=उत्साह ।

५४—सगळ=सर्व । हुसिआरा=होशियार हो । मेऴ खळां=शत्रुओं के मेलवाले हैं । सौ=उनको । भाराथ=युद्ध करके ।

५५—भाद्राजणौ=भाद्राजण का ठाकुर । उदिया भांण=उदयभाण । हुवा समेळा=एकत्र हुए । भेळा=शामिल होकर । घमसांण=युद्ध किया ।

५६—किलबां=मुसलमान । सताब=जल्दी । ज्यास विना=धैर्य बिना । ऊखे=उखड़ गया । सास=श्वास ।

५७—इकताळै—संवत् १७४१ में । नम=नवमी । चांदणी=शुक्लपक्ष की । काती हंदै=कार्तिक मास की ।

छंद बेअक्खरी

सुहड़ां अजमल तणां सकज्जां
कीधा दोय अणी कमधज्जां।
उदैसिंघ चढियौ गुण आगळ
बीजौ संग खेमाल महाबळ ॥५८॥
रूकहथौ भाटी रैणायर
मांझी तीन साथ दळ मोगर।
वांरा भड़ मेळाऊ आया
चंचळ थळवट दिसा चलाया ॥५९॥
सो वीकांण धरा चै सांधै
बळ मेटियौ जु हूता बांधै।
केताई गांव थांणायत कोटां
लूटे देस किया सहलोटां ॥६०॥
अन आया जोधांणै ऊपर
बळ बाधौ सगराम बहादर।

५८—सकज्जां = समर्थ। अणी = विभाग। कमधज्जां = राठोड़ों ने। गुण आगळ = गुणों में अग्रणी। बीजो = दूसरा। खेमाल = खींवकरण करणोत।

५९—रैणायर = रणछोड़दास। मांझी = मुखिया। दळ मोगर = सेना को थामनेवाले। वांरा = इनके। मेळाऊ = मिले हुए, इकट्ठे हुए। चंचळ = घोड़ों के। थळवट = थली (रेते का मैदान) दिसा = तरफ।

६०—वीकांण धरा चै = बीकानेर की भूमि की। सांधै = सीमा पर बळ० = जो बांधै अर्थात् विरुद्ध थे उनका 'बल मिटा दिया। केताई = कितने ही। किया सहलोटां = विध्वस्त कर दिया।

६१—अन = (अन्य) दूसरे। जोधांणै = जोधपुर। बाधौ =

जोड़ै भूप कर्मौ जोगावत
रिण तेजसी मुकन बळ रावत ॥६१॥

उदयभांण जोध अतुळीबल
दुरग तणौ तेजौ आगळ दळ।
अखई बालौ जोस अफारौ
ऊदौ रूप खगे अणकारौ ॥६२॥

चतुर फतौ ओपम चहुवांणां
कूंपै छतौ फतौ केवांणां।
जोड़ै राम पदम जैतावत
रिण दूणा कूंपावत रावत ॥६३॥

केहरि राम सकळ कूंपावत
समहर वार अणी सबळावत।

बढ़ाया। जोड़ै = साथ में। भूप = भोपतसिंह। कर्मौ = करमसोत राठोड़। जोगावत = जोगीदास का पुत्र।

६२—दुरग तणौ = दुर्गदास का पुत्र। तेजौ = तेजसी। आगळ = अर्गला। अखई बालौ = बाला राठौड़ अखैसिंह। अफारौ = बहुत, भरा हुआ। ऊदौ रूप = ऊदावत रूपसिंह। खगे अणकारौ = खड्ग चलाने में तीक्ष्ण।

६३—चतुर = चतुरसिह। ओपम = उपमा देने योग्य। कूंपै = कूंपावतों में। छतौ = छत्रसिंह। केवांणां = तलवार चलाने में तीक्ष्ण। जोड़ै = साथ में।

६४—सकळ = सब, कलासहित, समथ। समहर वार = युद्ध के

प्रागहरा जादव खग प्राजा
अमरौ खान पूरवण आभा ।।६४।।
सूरां उरजणहरां सिघाळौ
पिड़ सूजो जादम प्रचाळौ
अै चड़िया दळ मेळ अफारा
सिर जोधांण मतौ कर सारा ।।६५।।

दुहा

सारां ही सिवियांणची, बालोतरा समेत ।
पँचपदरौ लूटे प्रसद, खांणांवाळौ खेत ।।६६।।
गांमां को गिणती करै, आया पाली चाय ।
कांण न राखी आसुरां, दीनी आंण जळाय ।।६७।।
रहियौ कोट सँभायनैं, पोळ जड़े पँडवेस ।
तूंगा दरवाजां लगे, पूगा पुरा प्रवेस ।।६८।।

समय । अणी = सेना के अग्रभाग पर । प्रागहरा = प्रयागदासोत । खग प्राजा = तलवार चलाने में पूज्य अर्थात् श्रेष्ठ । अमरौ खान = अमरसिंह और खानसिंह सबलसिंह के पुत्र । पूरवण आभा = मन की इच्छा पूर्ण करनेवाले ।

६५—सिघाळौ = श्रेष्ठ । पिड़ = युद्ध । प्रचाळौ = पहुँचवाला, समर्थ । अै = ये । अफारा = बहुत । मतौ कर = विचार करके ।

६६—सिवियांणची = सिवाना प्रांत । बालोतरा = नगर । पंचपदरौ = नगर । प्रसद = प्रसिद्ध । खांणांवाळौ खेत = नमक की खान ।

६७—को = कौन । चाय = इच्छा करके । कांण = शंका, अदब । आंण = आकर ।

६८—कोट सँभायनैं = किले का आश्रय लेकर । पोळ जड़े = दरवाजे बंद कर लिए । पंडवेस = यवन नेता । तूंगा = फौज के समूह ।

भड़ अजमाल कमंधरा, वळिया देस विगाड़ ।
खागे एतां खंडिया, जेतां मंडी राड़ ॥६९॥
पोस महीनै बीज दिन, देसे धूम मचाय ।
फेरे आंण अजीत री, आया रीत दिखाय ॥७०॥

इति श्री महाराजा श्री अभैसिंघजी रौ परम जस ग्रंथ राजरूपक
मैं राठौड़ सगरामसिंघ जूंझारसिंघोत मनसब छोड़
विखै दौड़ियौ त्रयोदस प्रकास ॥ १३ ॥

६९—वळिया=वापिस लौटे । राड़=लड़ाई ।

दुहा

जोधा उदियाभांण सूं, कोपे खान इनात।
विखौ न छंडे एक पळ, मोसूं मंडै वात ॥ १ ॥
कियौ विदा जोधां सिरै, नूरमली पूंतार।
प्रात नगारा वज्जिया, मसलत रात विचार ॥ २ ॥
हाथी चड खड़ हल्लियौ, सुर नौबते सनाय।
बांध पुरा मग्गां तुरक, मिळे लड़ंगां आय ॥ ३ ॥

छंद अर्धनाराच

अनंत मेछ उल्लटे, वहे सु वाट उब्बटे।
पमंग अंग पाखरां, परां गिरां कि पंजरां ॥ ४ ॥
सनाहवांन सांघणां, घटा कि ऊमडी घणां।
खिवंत सेल खेह मैं, मिटै छटान मेह मैं ॥ ५ ॥

१—पळ = घड़ी का साठवाँ अंश। मंडै = करै।

२—पूंतार = प्रोत्साहित करके।

३—खड़ = चलाकर। हल्लियौ = चला। सुर = स्वर। सनाय = शहनाई, वाद्यविशेष। बांध० = मार्ग में पुरे बाँधकर। लड़ंगां = दूर आकर।

४—वहे = चलते हैं वह। वाट = मार्ग। उब्बटे = बिगड़ जाता है। पमंग = घोड़े। परां = घोड़ों के पाखर ऐसे मालूम होते हैं कि पहाड़ों के पंख लगे हैं अथवा पिंजरे बने हैं।

५—सनाहवांन = बख्तरवाले। सांघणां = सघन। घटा० = मानों मेघ की घटा उमड़ आई है। खिवंत० = भाले आकाश में चमकते हैं, जिससे मेघ में बिजली की छटा मिट जाती है।

धसी अकास धूसरी, कि वात सेन वित्थुरी।
निसांण पांण नद्दयं, सुघोर जोर सद्दयं ॥ ६ ॥
नबाब पुत्र नूरली, अनेक मीर अस्सली।
सिताब सामरत्थयं, कियौ कि पार पत्थयं ॥ ७ ॥

दुहा

आयौ सुहद्रा गिर असुर, छायौ खेह निहंग।
आगै भांण तरस्सियौ, गह केवांण अभंग ॥ ८ ॥

छंद रसावळ

भांण मांण भुजै, ऊठियो अप्रजै।
गोम व्योम गजै, वाजित्रांण वजै ॥ ९ ॥
सूर वागा सझै, रौद्र हिंदू रजै।
सोभणी सकजै, अमेळां अकजै ॥१०॥

६—धसी॰—आकाश में धूसरता छा गई है। क्या यह वायु से, अथवा सेना फैली जिससे। निसांण=नक्कारा। पांण नद्दयं=हाथ से अर्थात् डंके से बजाया जाता है जिसका। सुघोर॰=बड़ा घोर जोर से शब्द होता है।

७—सामरत्थयं=समर्थ। पत्थयं=मार्ग को।

८—सुहद्रा गिर=सुहद्रा नामक पहाड़। खेह=रज। निहंग=आकाश में। भांण=उदयभाण जोधा। तरस्सियौ=कोप करके बढ़ा। गह केवांण=तलवार लेकर।

९—भांण=चंद्रभांण। मांण भुजै=अपनी भुजाओं का अभिमान रखनेवाला। अप्रजै=अपार बलवाला। गोम=पृथ्वी। व्योम=आकाश। गजै=गूँज उठे। वाजित्रांण=बाजे।

१०—वागा सझै=सनाह पहने। रौद्र=तुरक। रजै=प्रसन्न हुए। सोभणी=शोभा देते हैं। सकजै=समर्थ, काम के। अकजै=निकम्मे बिखर गए हैं।

धरा सार धजै, लोह होळीं लजै ।
ताप वीर तजै, ईस रस ऊपजै ॥११॥
भोग्य चिंत भजै, ग्रीधणी गरज्जै ।
नीर धार निजै, सोहड़े सलज्जै ॥१२॥
वीर रस अंस सिंधु वजै, सूर तिकां छ्ळ संपजै ।
पण क्रोध खेत रण नीपजै, महा कमँधे मीरजै ॥१३॥

दुहा

उर जळतां लागौ असुर, गिरँद दुहूं वळ आय ।
रिण जुड़िया भड़ राठवड़, त्रजड़ अमांमै ताय ॥१४॥
आयौ करन मुकन्न तण, भड़ मेळे चँद्रभांण ।
हैमत हीमत अग्गळो, पीथौ पत्थ प्रमांण ॥१५॥

११—धरा०=पृथ्वी पर तलवार ध्वजा बनी है। लोह०=शस्त्रों के आगे होली लज्जित होती है। ताप०=५२ वीरों ने संताप छोड़ दिया है, (रक्तपान मिलने से)। ईस०=महादेव को प्रीति हुई है (मुंडमाला मिलने से)।

१२—भोग्य०=गिद्ध पक्षी की भोग्य वस्तु संबंधी चिंता मिट गई है, जिससे गर्जना करता है। नीर०=सुभट लोग अपने पानी अर्थात् ओज को धारण करके लज्जित होते हैं। (ऐसा वीरता का काम न करने से।)

१३—सिधु=लड़ाई के समय का राग। छ्ळ=युद्ध। संपजै=मिला। पण०=बड़े राठोड़ और मीर जो हैं, उनके अथवा मिरजा के बीच में रणखेत में प्रतिज्ञा-पूर्वक क्रोध उत्पन्न होता है।

१४—गिरँद=(गिरींद्र) पहाड़। दुहूँ वळ=दोनों तरफ से। जुड़िया=आपस में भिड़े। त्रजड़=तलवार। अमांमै=अप्रमाण। ताय=ताप।

१५—करन=करणसिंह। मुकन्न तण=मुकनसिंह का पुत्र। मेळे=इकट्ठे करके। हैमत=हिम्मतसिंह। पीथौ=पृथ्वीराज। पत्थ प्रमांण=अर्जुन के समान।

केहर आयौ भीम तण, रोड़े धूहड़ सत्थ।
जूंझ अछाया सूरमा, हुवा सवाया हत्थ ॥१६॥
यां वग्गी तरवारियां, ज्यां डंडेहड़ फाग।
ऊढंगौ सर गोळियां, किर झड़ लग्गी आग ॥१७॥
दौढ पहर हिंदू तुरक, कहर लड़े रिण ढांण।
मुड़िया भड़ पतसाह रा, के पड़िया मुंह त्राण ॥१८॥
जोधौ मांन किल्याण तण, गौ तन धारां लग्ग।
भड़ सौ पड़िया भांण रा, अन ऊपड़िया वग्ग ॥१९॥
आराबौ असुरां तणौ, लूटाणौ मझ लूट।
तोप हजार पचीस री, भार तणा सौ ऊंठ ॥२०॥
पड़िया आसुर पांच सौ, घायल हुवा हजार।
माह उजाळी सपतमी, वेढ सनीसर वार ॥२१॥

१६—रोड़े=रोड़ा शाखा का। धूहड़ सत्थ=राठोड़ों के साथ। जूंझ=युद्ध करने में। अछाया=प्रसिद्ध।

१७—यां=इस तरह। ज्यां०=जैसे फाल्गुन मास में डंडियों का खेल होता है। ऊढंगौ=बेढंगा हो गया। आग=अग्नि की झड़ी लगी।

१८—कहर=महा भयंकर। रिण ढांण=रणस्थल में। मुड़िया=पीछे लौटे। के=कितने ही। पड़िया=गिरे। मुँह त्राण=कितने ही ने मुख में तृण लिया, अथवा मुख से रक्षा की प्रार्थना की।

१९—मांन=मानसिंह। गौ०=शरीर में तलवारें लगकर मारा गया। अन=(अन्य) दूसरे। ऊपड़िया=उठे। वग्ग=लड़कर।

२०—भार तणा०=बारबरदारी के १०० ऊँट लूट में आए।

२१—वेढ=युद्ध। यह युद्ध माघ सुदि ७ शनि को हुआ था।

मिरजै खबर निबाब नूं, पहुँचाई ततकाळ।
आयौ फिर महमदअली, सुण नह रह्यौ विमाळ ॥२२॥
भाई बे भेळा हुवा, असुर नदी सिर आय।
सिंधुर घोड़े सूकड़ी, मेल न मापी जाय ॥२३॥
नूरमली तिण नाळ रौ, कीधौ एम कहाव।
नाळ्यां नौरँगजेब री, लीधां लभ्भै साव ॥२४॥
जहर पियाले जेहड़ी, इण कुण मंडै आस।
अहि काळै मुख अंगुळी, वाळै किर विसवास ॥२५॥
जोधां नाकारी जरां, सिर आया खुरसांण।
गिर चहुँबळ कळ साळळी, फिर मातौ आरांण ॥२६॥
छेड़ हुई कांठायतां, आया खेड़ अपार।
झड़ लागौ सर गोळियां, हुय होळियां दुधार ॥२७॥

२२—मिरजै = नूरअली ने। विमाल = छिपा हुआ।

२३—भाई बे० = दोनों भाई शामिल हुए, मानों दो नदियाँ शामिल हुईं। सिंधुर = नदी। घोड़े सूकड़ी = घोड़ नदी और सूकड़ी नदी मारवाड़ में ये दो नदियाँ हैं जो शामिल हो जाती हैं। उसकी उत्प्रेक्षा की गई है। मापी जाय = प्रमाण किया जाय।

२४—तिण नाळ रौ = उस तोप का जो राठोड़ो ने लूटी थी। कहाव = कथन। नाळयां = तोपों के लेने से। लभ्भै साव = आनंद मिले।

२५—जहर० = यह बात विष के प्याले की जैसी है। मंडै = करै। अहि काळै = काले साँप के।

२६—नाकारी = इनकार किया। जरां = जब। खुरसांण = तुर्क। गिर = पहाड़ के। चहुँबळ = चारों तरफ। कळ = युद्ध। साळळी = शुरू हुआ। मातौ = प्रबल। आरांण = युद्ध।

२७—छेड़ हुई = छेड़े गए। कांठायतां = किनारे पर रहनेवाले। खेड़ = चलाकर। हुय होळियां = मरे। दुधार = दुधारे खाँडों से।

वेढ नत्रीठा वज्जिया, दोय पोहर दाढाळ।
भांण भले रिण भांजिया, चौड़ै चामरयाळ ।।२८।।

इति श्री महाराज राजराजेश्वर श्री अभयसिंघजी रौ परम जस
राजरूपक मैं भाद्राजण दूसरी तीसरी लड़ाई
चतुर्दस प्रकास ।। १४ ।।

२८—वेढ = युद्ध के। नत्रीठा = बाजे। दाढाळ = शूकर के सदृश शूरवीर सुभट। भांजिया = मारे। चौड़ = प्रकट में। चामरयाळ = तुर्क।

छंद बेअक्खरी

पड़दल खां आसुर गह पूरै
गयौ सिवांणै साथ गरूरै ।
और वळे नाहर उतपाती
महा सजोर खगे मेवाती ॥ १ ॥
अै थांणै कांणाणै आया
मेवासियां उवर अण माया ।
दिन दिन दौड़ गसत नित दीजै
कमँध धरा पासरणा कीजै ॥ २ ॥
मोकलसर अखई कुळ मंडण
खमैं नही असुरां खळ खंडण ।
चांपा सकळ फौज ले चढिया
पुर अजमेर भगांणां पड़िया ॥ ३ ॥
वांसा नूरमली तिण वाहर
थूरे दौड़ अरोड़ा थाहर ।

१—आसुर = यवन । गह = गर्व । गरूरे = गर्वयुक्त । वळे = फिर । नाहर = नाहरखां मेवाती ।

२—कांणाणै = काणाणा एक गाँव का नाम है । मेवासियां = लूट करनेवालों के । उवर = ऊपर । अण माया = अप्रमाण नहीं समानेवाले । पसरणा = विस्तार ।

३—मोकलसर = गाँव का नाम है । अखई = अखैराज । कुळमंडण = कुल का भूषण । खमैं = सहन करता है । खळ खंडण = शत्रुओं को मारनेवाला । भगांणां पड़िया = भागने लगे ।

४—वांसा = पीछे, पीठ पर । तिण वाहर = उनका अनुधावन । थूरे = ललकारा । अरोड़ा = नहीं रुकनेवाले । थाहर = बिल में ।

गांव महेव निकट नवगड्ढा
दुजड़ तणै छळ वणै सद्रड्ढा ॥ ४ ॥
ऊपर तुरक अचाणक आया
सबळै सुध मोरचा सँभाया ।
रिण कर तूर गोळियां रूके
हेक घड़ी लड़िया हाथूके ॥ ५ ॥
खट सरदार नत्रीठ खडग्गे
ऊतरिया धारां मुँह अग्गे ।
आसावत माहेस अणंकळ
मुहकम मनहर तणौ महाबळ ॥ ६ ॥
किसनावत रण कुंभ करारौ
राम सुजाव सुजांण अकारौ ।
मधकर तणौ मेघ खळ मोड़ै
जुड़तां भोज कुँवर पित जोड़ै ॥ ७ ॥

नवगड्ढा = नवकोट के अर्थात् मारवाड़ के राजपूत । दुजड़ तणै = तलवार के । छळ = युद्ध के बल । सद्रड्टा = दृढ़, मजबूत हुए ।

५—सबलै = सबलसिंह ने । सुध = शुद्ध । रिण० = युद्ध का वाद्य बजाकर । रूके = तलवारों से । हेक = एक । हाथूके = हाथों से ।

६—ऊतरिया० = तलवारो से मारे गए । आसावत = आसकरण का पुत्र । माहेस = महेशदास । अणंकल = वीर, स्वतंत्र । मनहर तणौ = मनोहरदास का पुत्र ।

७—करारौ = समर्थ । राम सुजाव = रामसिंह का पुत्र । सुजाण = सुजाणसिंह । अकारौ = तीक्ष्ण । मधकर तणौ = माधोसिंह का पुत्र मेघसिंह । खळ मोड़ै = शत्रुओं को हटानेवाला । जुड़ता = भिड़ते समय । भोज कुँवर = मेघसिंह का पुत्र । पित जोड़ै = पिता के सदृश ।

अै भाटी छिबता असमांणै
किलबां सूं जूटा केवांणै ॥
सबळौ लड़ै बकारे साथी
गिर गिर खागे झड़े सँगाथी ॥ ८ ॥
अत लड़तां प्रगटी असुहाई
दोय बेटी पकड़ी दरसाई ।
भाटी कहै कुणेनूं भाखूं
रहूं कुसळ तौ भेळी राखूं ॥ ९ ॥
अत विचार तज वेढ उखेळौ
भिळियौ सबळ बेटिया भेळौ ।
राम कहै मत खाग उभारौ
मिरजा सूं मेळौ मत मारौ ॥१०॥
सूधा वचन सुणे सगळाई
साथ वैरियां गया सिपाई ।
जतने सुता रहै इम जांणी
इण दुख कैद हुवौ आसांणी ॥११॥

८—अै = ये । छिबता = लगते हुए । असमांणै = आकाश में । किलबा सूं = मुसलमानो से । जूटा = भिड़े । केवांणै = तलवारों से । बकारे = ललकारकर । साथी = साथवालों को । गिर गिर = पहाड़ पहाड़ में । झड़े = गिरे । सँगाथी = साथ के ।

९—असुहाई = बुरी बात, मनचाहा से विपरीत । कुणेनूं = किसको । भाखूं = कहूँ । भेळी = शामिल रखूँ ।

१०—तज० = युद्ध का उपद्रव छोड़कर । भिळियौ = जा मिला । सबळ = सबलसिंह भाटी । उभारौ = उठाओ । मेलौ = मिलो ।

११—सूधा = सीधे । सगळाई = सब । जतने० = बेटियाँ यत्न से रहें ऐसा जानकर । आसाणी = आसकरण का पुत्र सबलसिंह कैद हुआ ।

वैंत करै नह और विचारूं
मार सुता मिरजा नूं मारूं ॥

दुहा

मिरजौ आयौ मेड़तै, मारे गांव महेव।
सबळौ भूखै सीह ज्यूं, असुरां लखे अवेव ॥१२॥
मिरजा दोनूं मेड़तै, मिळिया बंध समाथ।
उण दिस यां बालै अखै, समचै कीधौ साथ ॥१३॥
आयौ चांपावत अखौ, धीर तणौ पण धार।
आयौ सूजौ वीर तण. पाखरियौ परवार ॥१४॥
तरस लखौ पातल तणौ, आयौ कमे अरक्क।
भड़ां समेळा भाइयां, जवनां दिया जरक्क ॥१५॥
पौत्रा सगळा प्राग रा. अंग छिबता असमांण।
जादम तेजै जेहड़ा. अमरौ नाहरखान ॥१६॥

१२—वैंत करै = काट छांट, विचार। मारे = लूटकर। लखे = देखता है। अवेव = निर्बल।

१३—दोनूं = नूरअली और मुहम्मदअली। मिलिया = शामिल हुए। बंध = बंध पकड़। समाथ = समर्थ। उण दिस = उधर की तरफ। बालै अखै = बाला राठोड़ अखैराज ने। समचै = एक साथ। साथ = सुभट एकत्र किए।

१४—अखौ = चांपावत अखैराज। धीर तणौ = धीरसिह का पुत्र। पण धार = प्रतिज्ञा करके। वीर तण = वीरसिह का पुत्र। पाखरियौ० = परिवार सहित।

१५—तरस = कुपित होकर। लखौ = लखसिंह। कमे अरक = कर्मसोत वंश का सूर्य। समेळा = प्रीति शाले, एकत्र हुए। जरक = प्रहार।

१६—पौत्रा० = प्रागदासोत भाटी। तेजै जेहड़ा = तेजसिंह जैसे।

भीम पतावत आवियौ, चांपौ बांधे चाळ।
भांजण खळ लीधां भड़ां, तड़ां खड़ां रिणताल ॥१७॥
आया बाला ऊधरा, भाला झाल अभंग।
रण पब्बै तेजै जिसा, करण फतै रणजंग ॥१८॥
कीधौ छेड़ कमद्धजां, आया खेड़ अपार।
असुरां सिर बालै अखै, पाखरिया तोखार ॥१९॥
इकताळा रै चैत सुद, आद उदे नवरात।
असुरां सिर आयौ अखौ, पिड़वारै परभात ॥२०॥

छंद बेताल

दिस किरण पूरब अरक दरसे,
दिखण कमधज दरसिया।
असुरांण दळ सिर असँख अणगम
विसख घण जिम बरसिया॥
हुय हाक चहुँवळ कळळ हूकळ
असुर सुर दळ आहुड़े।

१७—बांधे चाळ = कमर बाँधकर। तड़ां = अपने पक्षवालों को। खड़ां = चलाकर। रिणताल = युद्ध के समय।

१८—ऊधरा = उत्कट, उन्नत। रण पब्बै = युद्ध में पर्वत के समान।

१९—खेड़ अपार = असंख्य सेना को चलाकर। पाखरिया तोखार = घोड़ों पर पाखर डाले।

२०—आद० = नवरात्रि के आदि अर्थात् प्रतिपदा के सूर्योदय के समय। पिड़वारै = प्रतिपदा के।

२१—दिस० = पूर्व दिशा में सूर्य की किरण दिखाई दी। अणगम = अचानक। विसख = बाण। घण = मेघ के जैसे। चहुंबळ = चारों ओर। कळळ = युद्ध। हूकळ = युद्ध। दो बार कथन विशेषता के लिये है। असुर = मुसलमान। सुर = हिंदू। आहुड़े = लड़े।

झिख सार झळहळ सोर कळभ (क)ळ
धरण खहदळ धड़हड़े ||२१||
ऊठियौ पड़दलखान अतिबळ, महम मुगले सूरमां
....
वाजिया वेढक महावेधक, सार साबळ सोहड़ां
.... ||२२||

छप्पय

अखैराज अखमल्ल, बिन्हें रणमल्ल महाबळ
भड़ भिड़तां भिळ गया, वंस खत्र (ट) त्रीस बळोबळ।
आरपार हुय जाय, सेल तरवार कटारी
गळबांहां गूंथणी, जांण मित्रां मनुहारी।
तिण वार रतन सुंदर तणौ, बधे जवन वाकारियां
अवसांण प्रबळ म्रत आदरे, मेछ महाबळ मारियौ ||२३||

झिख सार = तलवार का अविरत प्रहार। झळहळ = चमकती हुई। धरण = पृथ्वी। खहदळ = आकाश। धड़हड़े = गूँज उटे।

२२—वाजिया = लड़े। वेढक = योद्धा। महावेधक = महायुद्ध में। सार = तलवार। साबळ = भाला। सोहड़ा = सुभट।

२३—अखैराज दो—एक चांपावत, दूसरा बाला राठोड़। रणमल्ल = बहादुर। वंस खट त्रीस = छत्तीस वंश के राजपूत। बळोबल = महाबली। आर पार हुय = इधर से उधर निकल जाता है। गळबांहा = आपस में गले पकड़कर गुथ जाते हैं। जांण॰ = मानों मित्र परस्पर मनुहार करते हैं। तिण वार = उस समय। रतन = रतनसिंह ने। सुंदर तणौ = सुंदरदास का पुत्र। म्रत आदरे = मरना विचारकर। मेछ = म्लेच्छ पड़दलखान को।

दुहा

रतनै सुंदरदास रै, साझे पड़दलखान।
कर कर वाह कटारियां, हुवा दुहूँ खळ हान ॥२४॥
भड़ पड़िया सौ कमधजां, तुरक छसौ रिणताळ।
रिध गाड़ी घोड़ा दरक, सह लूटिया सँभाळ ॥२५॥
कांणांणै कंदल हुवौ, जांणै सकळ जिहांन।
ऊबरियौ मांझी अखौ, मारे पड़दलखान ॥२६॥

इति श्री राजराजेश्वर महाराज श्री अभयसिंघजी रौ परम जस
राजरूपक मैं पड़दलखान मारियौ राठौड़
जीता पञ्चदस प्रकास ॥ १५ ॥

२४—साझे = मार लिया। वाह = प्रहार करके। दुहूँ० = दोनों शत्रुओं का नाश हुआ।

२५—रिध = (ऋद्धि) धन। दरक = ऊँट।

२६—कंदल = युद्ध। मांझी = मुखिया, अग्रणी। अखौ = अखैराज।

दुहा

मिरजौ छोड़ै मेड़तौ, तोडे दिस तिण वार ।
सबळौ भाटी साथले, आप हुवौ असवार ॥ १ ॥
बंध थकौ बेटी लियां, घणो विचारै घात ।
माळी पाकै अंब पर, ताकै सांझ प्रभात ॥ २ ॥
मिरजै मारग चालतै, डेरा दिया कुचील ।
मत्तौ जरां विवाह रौ, तरां विचारी ढील ॥ ३ ॥
सबळै नूं सुसरो करण, मिरजै किया मुकाम ।
आसावत छळ ऊजळै, बळ भरियौ वरियांम ॥ ४ ॥
अमल मँगायौ अरज कर, मांग लई तरवार ।
मिरजौ ओमाहै करै, चाहे सो मनुहार ॥ ५ ॥

१—तोडे दिस = तोड़े की तरफ । सबळौ० = सबलसिह भाटी को साथ लेकर ।

२—बंध थकौ = कैद हुआ । घात = मारना । माळी० = मारने की ताक में कैसा लगा हुआ है जैसा माली पके हुए आम के फल पर ताक लगाए रहता है ।

३—कुचील = गाँव का नाम है । मत्तौ० = मिरजा ने भाटी की बेटियो के साथ विवाह करने का विचार किया । जरां = जब । तरा = तब । ढील = देरी ।

४—आसावत = आसा का पुत्र सबलसिह । छळ = युद्ध । ऊजळै = उज्ज्वल । वरियांम = जोरावर ।

५—अमल = अफीम । ओमाहै = उत्कंठावाला ।

आदर म्रत खित ऊठियौ, प्रथम सुता परवार ।
असवारी रा ऊधरा, अस वाढिया अपार ॥ ६ ॥
धड़च कनातां धार सूं, गौ रहवास मझार ।
नूरमली लख ल्हासतै, मौर झली तरवार ॥ ७ ॥
पड़ियौ तकिये सूं परा, आडौ दियौ प्रजंक ।
मसलत आया मीरज्यां, औ ऊठिया असंक ॥ ८ ॥
सबळै भूखै सीह ज्यूं, चढिया मुहि चुगळाल ।
गिलमां ऊपर गिळ गयौ, ज्यां म्रग आळ लंकाळ ॥ ९ ॥
धड़ धारां मुँह ऊतरै, अछरां करै उछाह ।
सबळौ आसकरन्न रौ, गौ जीपे गजगाह ॥१०॥

इति श्री भाटी सबळसिंघ आसकरनौत काम आयौ सो विगत ।

६—आदर म्रत = मरना विचारकर । खित = पृथ्वी से । प्रथम० = पहले बेटी पर वार करना चाहा । ऊधरा = अच्छे । अस = घोड़े । वाढिया = काट डाले ।

७—धड़ च = फाड़कर । धार सूं = तलवार से । ल्हासतै = भागते हुए नूरमली को देखकर । मौर = पीठ पर । झली = तलवार चलाई ।

८—पड़ियौ० = परंतु वह कूदकर तकिये से दूर जा पड़ा और उसने पलंग को आड़ में रख दिया । मसलत० = इतना अवसर मिल जाने से दोनों मिरजा मसलत करके आए । औ० = और ये निःशंक होकर उठे ।

९—सबळै० = सबलसिंह भूखे सिंह के समान है । चढिया० = उसके सामने तुर्क चढ़कर आए । उनको यह गिलमां० = नरम बिछौनों के ऊपर गिल गया अर्थात् इसने मार लिया । ज्यां० = जैसे सिंह लीला करता हुआ हरिण को गिल जाता है ।

१०—धड़० = सबलसिंह का धड़ तलवारों की धारों से कट गया । अछरां = अप्सराएँ । उछाह = उत्साह, उत्सव । गजगाह = हाथियों को मारनेवाला ।

छंद वेअक्खरी

दिन दिन गढ जोधांणै दोळा
रसतां झपट मिटै नह रोळा।
भड़ मेळे दुरजणसल भाटी
असुरां सेन्या रहै उचाटी ॥११॥
वडी मसीत ईदगावाळी
रत सूवरां तणै रुहराळी।
सारै असुरां पुरा सतावै
उरजण हरा फेरणै आवै ॥१२॥
वाहर काज खळां बळ वांणां
रैहै जीण पमँग जवनांणां।
भाटी सूर मेळियां भाई
सोबै आवै चाल सदाई ॥१३॥
पांच असुर सेल्हां पोढावै
ऊंठ लियां वीमलपुर आवै।
आसुर सुणे न रहिया ओटां
चड़ियौ मीर फतू चड चोटां ॥१४॥

११—दोळा = आसपास। रसतां = मार्गों में झपट होती है। रोळा = उपद्रव। उचाटी = उच्चाटवाली, मन में खेदवाली।

१२—रत सूवरां तणै = शूकरों के रुधिर से। रुहराळी = रुधिरवाली कर दी। सारै = तलवार से। पुरा = निवासस्थान। उरजण हरा = उरजनोत भाटी। फेरणै आवै = दौरे में आते हैं।

१३—वाहर काज = अनुधावन के लिये। खळां = शत्रुओं ने। बळवांणां = बलवान्। रैहै = तैयार किए, कसे। जीण = काठी। पमँग = घोड़ों पर। मेळियां = एकत्र किए। सोबै = सोबे पर।

१४—सेल्हां = भालों से। पोढावै = मारे। ओटां = आड़ में। फतू = मीर का नाम है। चड चोटां = तलवारों की चोटें खाकर।

दुयणां तणा सेन दरसाया
वळिया जादम तेज सवाया।
चोरँगवाळ गिळण चुग ळाळां
धोळै दिन वागा धाराळां ॥१५॥

दुहा

मांमौ पड़ियौ मीर रौ, आठां सूं अबदल्ल।
अठै सिवौ नरसींघ रौ, राजड़ रौ पातल्ल ॥१६॥
इगताळै रा जेठ सुद. तीज हुवौ रिण ताल।
जूटा भाटी जंग मैं, कमँधां छळ लंकाळ ॥१७॥

इति राजरूपक मैं भाटी सूरसिंघ केसरीसिंघोत, वीसलपुर फेरियां दोय सिरदार काम आया अबदल खां मारियौ सो विगत।

छंद बेअक्खरी

कळह जुड़े असुरे नवकोटां
मारू करे दमंगळ मोटां।
यां करतां वीतौ इगताळौ
बहसत लागौ वरस बँयाळौ ॥१८॥

१५—दुयण तणा० = शत्रुओ की सेना नजर आई। वळिया = तब यादव पीछे लौटे। चोरँगवाळ = चतुरंगिणी सेनावाले। गिळण = निगलने, मारने के लिये। चुग ळाळां = मुसलमानों को। धोळै दिन = प्रकट दिन में। वागा = लड़े। धाराळां = खड्ग धारण करनेवाले।

१६—अबदल्ल = अबदुल्ला खां मीर का मामा। इधर महाराजा की सेना में नरसिंह का पुत्र सिवसिंह और प्रतापसिंह का राजसिंह मारे गए।

१७—ताल = मैदान। जूटा = लड़े, भिड़े। छळ = वास्ते। लंकाळ = वीर।

१८—कळह = युद्ध में। जुड़े = भिड़े। असुरे = मुगलों से। नवकोटां = राठौड़। मारू = मारवाड़ी। दमंगळ = युद्ध। यां = इस तरह करते। वीतौ = व्यतीत हुआ।

तोडे नूरमली खग तोले
बहावदी सूं अकसै बोले।
सेख नत्रीठ वाजियौ सारे
मरतै नूरमली नूं मारे ॥१९॥
हेवै दळां अमंगळ हूवौ
मुवौ सेख मिरजौ पण मूवौ ॥
आसू वद बारस दिन आसुर
मौत अचिंत गया कर संमर ॥२०॥
आवी खबर लिखी अण चाहे
मगन नबाब सोच सरमाहे।
कीधी फौज वळे कमधज्जां
सूधर सोधण प्रांण सकज्जां ॥२१॥
मिळ दळ प्रबळ राड़द्रह मारे
सार असुर साचोर सँघारे।
मीर पचास सहर में मारे
पमँग दरक लूटे अण पारे ॥२२॥

१९—तोडे = तोडा शहर में। बहावदी सूं = शेख बहावदी से नूरमली। अकसै० = ईर्ष्या करके, अमर्ष करके बोला। सेख नत्रीठ = शेख ने नक्कारा किया। बाजियौ सारे = तलवार से लड़ा। मरतै० = मरते मरते शेख ने नूरमली को मार लिया।

२०—हेवै = दोनों सेनाओं में। मूवौ = मरा। आसू = आश्विन। कर संमर = युद्ध करके।

२१—मगन० = नवाब इनायतखां सुन शोकमग्न हुआ। सरमाहे = लज्जित हुआ। सूधर = अच्छी भूमि। सोधण = तलाश करने के लिये। प्रांण सकज्जां = बल से समर्थ।

२२—राड़द्रह—राड़दड़े का प्रदेश। मारे = लूटा। सार = तलवार से। असुर = मुगलों को। साचोर = साचोर परगने में। सँघारे = संहार किया। पमँग = घोड़े। दरक = ऊँट।

लड़ जीतौ अखमाल लखावत
एक दिसा खीमौ आसावत।
चांपा करण मुदै कळ चाळा
साथ वळे राठौड़ सिघाळा ॥२३॥
मांहे कँवर जैत महवेचौ
खग ऊधरे नरे खेड़ेचौ ॥

दूहा

दसमी मिगसर मास री, आद गिणां नह ओर।
आया भड़ अगजीतरा, जीत खळां साचोर ॥२४॥

इति साचोर रौ थांणौ मारियौ सो विगत लिखी छै॥

दूहा

जगौ विजावत आवियौ, ऊदौ धीर सुतन्न।
मिळ मारू दळ हल्लिया, उर दहलिया जवन्न ॥२५॥
गोढवाड़ धर गाहटे, पहला पाली मार।
लूटी महि अजमेर लग, फूटी देस पुकार ॥२६॥

२३—लखावत=लखधीर का पुत्र। एक दिसा=एक तरफ। खीमौ=खींवकरण करणोत। आसावत=आसकरण का पुत्र। करण मुदै=करने के लिये। कळ चाळा=युद्ध का उपद्रव। साथ=इकट्ठे होकर। वळे=वापिस लौटे। सिघाळा=श्रेष्ठ।

२४—खग ऊधरे=तलवार उठाकर। खेड़ेचौ=राठोड़। दसमी०=मार्गशीर्ष वदि दशमी। खळां=शत्रुओं को।

२५—जगौ=जगरामसिंह। विजावत=विजयसिंह का पुत्र। ऊदौ=ऊदावत। धीर सुतन=लखधीर का पुत्र। दहलिया=डरे।

२६—गोढवाड़=मारवाड़ का दक्षिणी परगना। गाहटे=नष्ट किया। पाली मार=पाली को लूटकर। महि=भूमि। लग=तक।

थांणौ मारे थांवळै, खाग सँधारे खंड।
मिरजौ गढ जोधांण सूं, आयौ रावणखंड ॥२७॥
साम्हा आया राठवड़, कोप अछाया वीर।
सँग मिळियौ जोधौ सिवौ, कळहण नवौ कँटीर ॥२८॥
मिरजै ग्रहियौ मेड़तौ, घेर लियौ दळ आय।
होळी ज्यूं पुर लूंबिया गोळी तीर चलाय ॥२९॥
यां रहियौ महमदअलो, ग्रहियौ पुर आरांण।
आया वसियां राठवड़, सिंघ सवाया पांण ॥३०॥

इति राजरूपक मैं मिरजा महमदअली नूं मेड़तै घेरियौ नै फतै पाई ॥

छंद बेअक्खरी

वीतां माह बॅयाळै वाळौ
चांपा कियौ धर फिर चाळौ।
अस पाखर सांगौ फिर आयौ
भाई भूप मिळे मन भायौ ॥३१॥
जूझावत सगरांम सजोरौ,
तिसड़ोई भगवांन सतोरौ।
तेजौ मुकन महाबल तैसा,
अरि दळ भांजण प्रांण अनैसा ॥३२॥

२७—थावळै=एक गांव का नाम। वह पुष्कर के समीप है। रावणखंड=जिसका ऊपर का होंठ खंडित होता है उसे रावणखंड कहते हैं।

२८—अछाया=भरे हुए। कळहण=युद्ध। कँटीर=सिह।

२९—ग्रहियौ=पकड़ा।

३०—आरांण=युद्ध। वसिया=अपने अपने घरों पर। पांण=बल में।

३१—चाळौ=युद्ध, उपद्रव। अस=घोड़े। मन भायौ=मनचाहा।

३२—जूझावत=जूंझारसिह का पुत्र। सजोरौ=बलवान्। सतोरौ=रोब वाला। अनैसा=परवा न करनेवाला।

मिळिया दळ राठौड़ समेळा,
भाटी विषै तिके सह भेळा।
चतुर फतौ माझी चहुवांणां,
आहवि लड़ण खगां ऊबांणा ॥३३॥
चांपे परतक कटक चलाया,
ऊपरि खांन तणै फिर आया।
दमगळ मचे निबाबां दोळा,
हुवा खळां फिर प्रांण हिलोळा ॥३४॥
वाहे सत्रां सिरि खाग विहंडे,
मार लियै थांणा बल मंडे।
पाल्हासणी असुर बळ पूरे,
साथ अमामें गात सनूरे ॥३५॥
ऊपर खान तणै दळ आया
अर निरदळता कमंध अछाया।

३३—विषै = विपत्तिकाल। माझी = मुख्य, अग्रणी। आहवि = युद्ध में। ऊबांणा = (उद्‌बाहु) ऊँचा हाथ उठाए।

३४—चांपे = चापावत राठौड़ (संग्रामसिंह और भगवानदास)। परतक = प्रत्यक्ष। दमगळ = युद्ध, उपद्रव। मचे = जोर से प्रवृत्त होना। हिलोळा = दोलायमान, चंचलता।

३५—सत्रां = शत्रुओं के। सिरि = मस्तक। विहंडे = नाश किया, मारे। बल मंडे = जोर से, बल करके। पाल्हासणी = एक गाँव का नाम, जो जोधपुर से दक्षिण में नौ कोस की दूरी पर है। अमामें = अप्रमाण, असंख्य। सनूरे = कांतिवाला, तेजस्वी।

३६—अर = (अरि) शत्रुओं को। निरदळता = नाश करते हुए। अछाया = गर्वयुक्त। ऊठी० = अलल्ले अर्थात् घोड़ों की बाग उठी। वह

ऊठो वाग द्वाग अलल्ले
हेवै मार लियौ हरवल्ले ॥३६॥
हुवौ खळां थांणौ खळहांणौ
लेखा पखे सु धन लूटाणौ ।
देस थळी प्रासरणौ दीधौ
लोड़े डंड फलोधी लीधौ ॥३७॥
वळ जोधांण तणी दिस वळिया,
भू लूटण टळिया सु ज भिळिया ।
नाहरखान नांदिया मांहे
वेढ कमळ लीधौ खग वाहे ॥३८॥
आगै कमौ वधे आभाळां
चौड़ै मार लियौ कळचाळां ।
सांमधरम लेखवे सगाई
भिळियौ खळां न लेखे भाई ॥३९॥

ऐसी थी कि मानों दावानल उठा। हेवै = सहज से। हरवल्ले = जो खान हरोल (सेना के अग्रभाग पर) था।

३७—खळहाँणौ = नष्ट हो गया। लेखा पखे = बिना हिसाब, असंख्य। देस थळी = रेतीले देश में। प्रासरणौ दीधौ = प्रयाण किया। लोड़े = विलोड़न किया।

३८—वळ = फिर। वळिया = लौटे। भू० = भूमि लूटने को अलग हुए थे वे भी आकर शामिल हो गए। नांदिया = गाँव का नाम है। वेढ = युद्ध में। कमळ लीधौ = मस्तक उतार लिया। खग वाहे = तलवार चलाकर।

३९—कमौ = करमसोत। कळचाळां = युद्ध में। सांमधरम = स्वामिधर्म के संबंध को मानकर। भिळियौ० = शत्रुओं से नहीं मिला। लेखे भाई = भाइयों को मानकर।

अजमल भड़ गांघांणी आया,
सुण सोबायत सहर समाया।
दळ फेरे जोधांणै दोळा,
गयां पहर निस वाजे गोळा ॥४०॥

दूहा

उर कांपियौ इनातखां, डर व्यापियौ सवाय।
कमँध अभाया आसुरां, आया पुरां जळाय ॥४१॥

इति श्री राजरूपक मैं सगरामसिंघ जूंझारसिंघोत नै भगवानदास
जोगोदासोत आद श्री रावळौ साथ देस गस्त दीवी
जोधपुर घेरियौ षोडस प्रकास ॥ १६ ॥

४०—गांघांणी = एक गाँव जो जोधपुर से ९ कोस उत्तर है। सहर समाया = जोधपुर में आ घुसे।

४१—अभाया = मन को बुरे लगे।

दुहा

रावणखंडौ दौड़ियौ, वळियौ बूसो मार ।
भाद्राजण फिर आवियौ, घण थट लियां सवार ॥ १ ॥
झड़ मातौ सर गोळियां, हुम बड़बड़ भड़हक्क ।
रीस जिवारी आसुरां, झड़िया तीस तुरक्क ॥ २ ॥
आयौ द्रुणाड़े असुर, पेखे राठ वड़ांह ।
जोधहरां मंडी जुड़ण, पाछै ऊर वड़ांह ॥ ३ ॥
जवन गयौ गढ जोधपुर, रहियौ रात विचार ।
प्रात समै पीपाड़ नूं, आप हुवौ असवार ॥ ४ ॥
लसकर सूं न्यारौ वहै, इक्को वेग खुसाल ।
हुवौ धकौ हरनाथ सूं, द्रढ पण हाथ दुभाल ॥ ५ ॥

१—रावणखंडौ = मुहम्मद अली । वळियौ = वापिस लौटा । बूसो = एक गाँव का नाम । भाद्राजण = एक गाँव का नाम । घण = बहुत । थट = समूह ।

२—मातौ = प्रबल । बड़बड़ = क्रोध में अव्यक्त शब्द का अनुकरण है । भड़हक्क = योधाओं का प्रबल शब्द । रीस = क्रोध । झड़िया = मरे ।

३—द्रूणाड़े = एक गाँव का नाम है । पेखे = देखा । जोधहरां = जोधा राठोड़ों ने । मंडी = रची । जुड़ण = युद्ध करने के लिये । ऊर = रणमध्य में डालकर । वड़ाह = घोड़ों को ।

४—पीपाड़ = एक शहर है ।

५—वहै = चलता है । वेग खुसाल = खुशालवेग इक्के का नाम है । धकौ = भेट । हरनाथ = करमसोत हरनाथ से । द्रढ पण = प्रतिज्ञा का दृढ़ । हाथ दुभाल = दोनों हाथों में शस्त्र रखनेवाला ।

दोय निखंग अभंग जुध, दोय कबांण खडग्ग।
अंग अप्रबळ जंग कज, संग न चल्लै मग्ग ।। ६ ।।
हरी बहादर चंद तण, इखे मेछ अभंग।
एकै सेल उथल्लियौ, ऊपर पेल पवंग ।। ७ ।।
मेछ महाबळ मारियौ, चौड़ै एकण चोट।
जवन अभायो जांणता, जो चावौ नवकोट ।। ८ ।।

इति श्री भाद्राजण मिरजौ भागो नै हरनाथ चंद्रभांणोत
इक्को मारियौ सो विगत कही।

छंद बेअक्खरी

चैत वतीत थयौ खग चाळै
आरँभ फेर कियौ ऊन्हाळै।
फतैखान अत फौज अफारी
वांकौ गढ जाळोर विहारी ।। ९ ।।

चांपावत ऊदा कळ चाळा
समहर कूंपा करण सिघाळा।
मिळ जोधा बाळा महवेचा
धर छळ ऊहड़ कमा धवेचा ।।१०।।

६—निखग = तीरों के भाथे। अप्रबळ = महाप्रबल। कज = वास्ते। संग० = मार्ग में साथ नहीं चलता है।

७—हरी० = चंद्रभाण का पुत्र हरनाथसिंह। मेछ = (म्लेच्छ) यवन। एकै० = एक भाले से उथल दिया। पेल = चलाकर। पवंग = घोड़ा।

८—अभायो = इक्का, ऐसा दूसरा नहीं। चावौ = प्रसिद्ध।

९—वतीत थयौ = व्यतीत हुआ। खग चाळै = तलवार चलते। आरँभ = युद्ध। ऊन्हाळै = गर्मी के मौसिम में। अत = अत्यंत। अफारी = तीक्ष्ण। वाकौ = टेढ़ा। विहारी = पठान।

१०—समहर = युद्ध। सिघाळा = श्रेष्ठ, अग्रणी। धर छळ = भूमि के वास्ते। कमा = करमसोत राठोड़।

मिळ भाटी चहुवांण समेळा
चढिया कमँधा कटक सचेळा।
आरँभिया जाळंधर ऊपर
पड़ियौ सोच नवाबां पिंजर ॥११॥
भड़ अजमाल तणा अणभाया
असुरां सिर जाळंधर आया।
दळ बळ अकळ कमंधां देखे
पड़िया खळां भगांणा पेखे ॥१२॥
आहव छोड फतैखां आसुर
धरम दुवार गयौ छोडै धर।
पुर लूटियौ वडी सिध पाई
सँभिया सुज मारिया सिपाई ॥१३॥

दुहा

चतुरदसी वैसाख वद, तज गा कोट तुरक्क।
पुर जाळंधर मारियौ, कमँधां बांध कटक्क ॥१४॥

इति श्री राजरूपक में रावळै साथ जाळोर मारियौ नै फतैखां
विहारी धरमदुवार नीसरिया सौ विगत कही छै।

११—समेळा = इकट्ठे, परस्पर, मेलवाले। सचेळा = समर्थ। आरँभिया = युद्ध किया। पिजर = शरीर पर।

१२—अणभाया = शत्रुओं के लिये बुरे। जाळंधर = जालोर। अकळ = पूर्ण। पड़िया = शत्रुओं में भागने की पड़ी। पेखे = देखा।

१३—आहव = युद्ध। धरम दुवार गयौ = शरण गया। सिध = (सिद्धि) विजय। सँभिया = लड़ने को तैयार हुए। सुज = वे।

१४—गा = गए। मारियौ = लूटा। कटक्क = सेना।

दुहा

जोधांणै लागा रहै, भाटो हरदासोत।
मिळ देवीजर मारियौ, मेछ गया लख मोत ॥१५॥
चांपावत लाखौ फतौ, कूंपा केहर राम।
ऊदावत बदरै तणा, नाहर हरी दुगाम ॥१६॥
यां दौड़ंतां जोधपुर, मिटै न पोळ पुकार।
मेछ ग्रहे छळ मारगे, निस दिन रहै तयार ॥१७॥
गयौ बँयाँळौ धूँकळां, लगौ तँयाँळौ आय।
मांडी कमधे मिसलतां, चक्रवत देखण चाय ॥१८॥
जोध केहरी मांन तण, लघु बंधव हरिराम।
जोड़ किसन जगनाथ रौ, साथ रहै वरियांम ॥१९॥
वरस तँयाँळौ दुंद धर, दौड़े कमँध दुझाल।
जोस अछायौ मेळ कज, आयौ दुरजणसाल ॥२०॥

१५—लागा रहै=समीप लगे रहते हैं। देवीजर=इस नाम का गाँव जो जोधपुर से ४ कोस उत्तर में है। लख=समझकर, देखकर।

१६—बदरै तणा=बदरीदास के। दुगाम=(दुर्गम) जोरावर।

१७—यां=इस तरह। पोळ=किले का दरवाजा। मेछ ग्रहे०=मुगलों ने युद्ध का मार्ग पकड़ा।

१८—बँयाळौ=सं० १७४२ का वर्ष। धूँकळा=लड़ाइयों से। तँयाळौ=संवत् १७४३ का वर्ष। मांडी०=राठोड़ों ने सलाह की। चक्रवत=(चक्रवर्ती) राजा को। चाव=उत्कंठा।

१९—जोध=जोधा राठोड़। लघु बंधव=छोटा भाई। जोड़=सदृश। वरियांम=जोरावर।

२०—दुंद धर=पृथ्वी में युद्ध हो रहा है। दौड़े=आक्रमण करते हैं। दुझाल=वीर। जोश अछायौ=जोश से भरे हुए। मेळ कज=मिलने के लिये, शामिल होने के लिये।

हाडौ आडौ हल्लणौ बूँदी हूँत अकस्स।
सो आयौ राठौड़ तक, घोड़ां जोड़ सहस्स ॥२१॥
मिळिया वंका राठवड़, चित हित दाख वचाव।
सुख जाडौ कीधौ सगै, रीधौ हाडौ राव ॥२२॥
परणायौ चांपावतां, हुय आवतां प्रसन्न।
पुत्री परम सुजांण री, मुकना तणी बहन्न ॥२३॥
मिळ तेजसी मुकंद सूं, आखै दुरजणसाल।
विकट पणौ ग्रह ऊधरौ, प्रगट करौ अजमाल ॥२४॥
सुण राठौड़ महाबळी, भेळा थया सकज्ज।
खीची मुकन बुलावियौ, दरसण सांम गरज्ज ॥२५॥

२१—हाडौ=चौहानों की हाडा एक शाखा है। दुर्जन साल बूँदी का हाडा था। आडौ हल्लणौ=टेढ़ा चलनेवाला। बूँदी हूँत=बूँदी से। अकस्स=ईर्ष्या करनेवाला। सो=वह। तक=ताककर, देखकर। जोड़=एकत्र करके। सहस्स=(सहस्र) हजार।

२२—वंका=टेढ़े। दाख=दिखलाकर, कहकर। वचाव=रक्षा। सुख=प्रीति। जाडौ=पूर्ण। सगै=संबंधी, रिश्तेदार। रीधौ=प्रसन्न हुआ। हाडौ राव=बूँदी के स्वामी हाडा रावराजा कहलाते हैं।

२३—परणायौ०=चांपावतों ने उसे अपनी बेटी ब्याह दी। आवतां=आते ही। सुजांण री=सुजाणसिंह की बेटी। मुकना०=मुकनसिंह की बहिन।

२४—आखै=कहता है। विकट पणौ०=इस विकटपन का और घर का उद्धार करो। अथवा विकट पन को धारण करके उद्धार करो। अजमाल=अजीतसिंहजी को।

२५—मेळा थया=एकत्र हुए। सकज्ज=समर्थ। खीची०=मुकनदास खीची को बुलाया। सांम गरज्ज=स्वामी के दर्शनों की गरज से।

मुकनै दाखो मारवां, लौ नवकोट नरेस ।
पिण मो नूं पत सूंपियौ, (सौ) दुरगौ दक्खण देस ॥२६॥
आगै कमँधै आखियौ, सुण मछरीक मुकन्न ।
अन पांणी मन भावियां, पधरावियां अजन्न ॥२७॥
तद मुकनै कल्याण रै, और न दक्खी बांण ।
तेड़ धरा आबू तणी, धणी दिखायौ आंण ॥२८॥
वरस तँयाळै चैत सुद, पूनम परम उजास ।
सांम कमंधां सांपनो, उर ऊपनौ जियास ॥२९॥

छप्पय

ज्यौं अंबुज रवि उदय, कुसम श्रम जुदे विकासै
सरद चंद विण दुंद, पेख कामोद प्रकासै ।

२६—दाखी = कहा । लौ० = मारवाड़ के राजा को लो । पिण = परंतु । पत = (पति) मालिक को । सो = वह ।

२७—आगै = आगे, उसके उत्तर में । आखियौ = कहा । मछरीक = चौहान । खीची चौहानों की शाखा है, जिस शाखा का मुकनदाम था । अन पांणी = अन्न जल । मन भावियां = मन को अच्छे तब लगेंगे । पधरावियां० = जब महाराजा अजीतसिंहजी को प्रकट करोगे ।

२८—तद = तब । कल्याण रै = कल्याणदास के पुत्र । दक्खी = कही । बांण = वाणी । तेड़ = बुलाकर । धरा० = आबू की भूमि से । धणी = मालिक को । आण = लाकर ।

२९—उजास = प्रकाश । सांम = स्वामी को । सांपनौ = प्राप्त कया । जियास = विश्वास, धैर्य ।

३०—अंबुज = कमल । कुसम = पुष्प । श्रम जुदे = बिना परिश्रम । ंकासै = प्रफुल्लित होता है । विण दुंद = दुःख बिना । पेख = देख-

रटत जेम सुर रोर, मीर घण घोर परक्खै
सरवर जळ पूरियै, भेख हरखै सुख लक्खै।
आसोज मेघ वरखा थयां, ज्यां चात्रग सुख संपजै
महाराज कँवळ लख मारवां, उर तिम मंगळ ऊपजै ॥३०॥
परम अंस रवि वंस, अवर दुरवंस अभायौ
हंस वंस अवतंस, पुंस परताप सवायौ।
तेज पुंज आजान-बाहु मुख कंज सकोमळ
मंजु काम सम रूप, अंज गजबंध महाबळ।
अण कोट कोट ऊथापणौ, आयां थापण ओटरां
पेखियौ सांम चढती प्रभा, सामंतां नवकोटरां ॥३१॥

कर। कामोद=कुमुदिनी; रात को खिलनेवाला कमल। रटत०=जैसे मेघ के शब्द की परीक्षा करके मयूर पक्षी जोर का स्वर उच्चारण करता है। सरवर०=जैसे जल से भरे हुए सरोवर में मेंढक सुख पाकर हर्षयुक्त होता है। आसोज०=जैसे आश्विन मास में मेघ बरसने से चातक (पपीहे) को सुख होता है। महाराज०=वैसे महाराजा के मुखकमल को देखकर मारवाड़वालों के हृदय में मंगल उत्पन्न हुआ।

३१—परम अंस=ईश्वर का अंश। अवर०=दूसरे दुर्वंश अर्थात् यवनों के लिये बुरा। हंस०=सूर्यवंश का भूषण। पुंस०=पुरुषों में सवाए प्रतापवाला। तेज पुंज=तेज का समूह। आजान-बाहु=घुटनों तक जिसके हाथ लबे हैं। अंज०=अंजस अर्थात् क्रोध में म० गजसिंह के समान। अण०=(अन्य) दूसरों के करोड़ों कोटों को उथापनेवाला। आयां०=शरण आए हुओं को स्थापित करनेवाला। पेखियौ=देखा। चढती प्रभा=कांति जिसकी बढ़ती हुई है। मारवाड़ में इस विषय में कहा जाता है "दिन दिन जोत सवाय।" सामंता=सरदारों ने। नवकोटरां=मारवाड़ के।

छंद बेअक्खरी

सुण नवकोट प्रगटियौ स्वामी
अै भेळा मोटी आसांमी ।
उदैसिंघ सगरांम अणंकळ
बियौ पाळ भूपाळ महाबळ ॥३२॥
तेज मुकन बोजौ जैत्राई
सुत हरियंद नाहरौ सवाई ।
अै चांपा जीपण अवसांणे
सांम दरसियौ जांम सुहांणे ॥३३॥
ऊदावत राजड़ अहँकारी
जगड़ विजाव जैत जुआरी ।
सांमळ रूप खान बळ साहे
ऊदां पति निरखे ओछाहे ॥३४॥

३२—सुण० = मारवाड़ के लोगों ने सुना कि स्वामी प्रकट हो गया है तो ये बड़े बड़े सरदार इकट्ठे हुए । चांपावतों में उदयसिंह, सगरामसिंह, गोपालदास, भोपालसिंह, तेजसिंह, मुकनसिंह, नाहरखां । अणंकळ = स्वतंत्र । बियौ = दूसरा ।

३३—जैत्राई = जीतनेवाला । सुत हरियँद = हरिसिंह का पुत्र । जीपण अवसांणे = जीतनेवाले । जाम सुहांणे = शुभ प्रहर में ।

३४—ऊदावत० = राजसिंह । अहँकारी = घमंड रखनेवाला । जगड़ = जगरामसिंह । विजाव = विजयसिंह का पुत्र । जैत जुआरी = जय करनेवाला । सांमळ० = सांवलदास, रूपसिंह, नाहरखाँ । बळ साहे = बल धारण किए । निरखे = निरीक्षण किया, दर्शन किया । ओछाहे = उत्साह से ।

जांमल कूंपा भूप जगावत
रामौ फतौ केहरी रावत ॥
सांम दरस कज तांम सिघाळा
भाटी आया साथ भुजाळा ॥३५॥
सूरजमल रैणायर सूरो,
सुत चत्रभुज हरनाथ सनूरो।
निडर तेजलौ अमरौ नाहर
सुतन किसोर किसन मत सद्धर ॥३६॥
सोहै खीची मुकन सिघाळौ
ऊहड़ कुळ भगवान उजाळौ।
अखई प्रोहित वंस उजाळौ
आयौ प्रिय दरसण आभाळौ ॥३७॥
जांम विजौ सांमळ छुळ जागै
श्रै पड़िहार धणी मुह आगै।
भणै जती नित जाप भवानी
ग्यान विजै मुनि परम गियानी ॥३८॥

३५—जांमल = जन्मे हुए कूंपा के वंश में। भूप = भूपतसिंह। जगावत = जोगीदास का पुत्र। रावत = वीर। कज = वास्ते। तांम = वहाँ। सिघाळा = श्रेष्ठ, अग्रणी। भुजाळा = लंबी भुजावाले भाटियों में।

३६—रैणायर = रणछोड़दास। सूरो = कांतिवाला। सुतन = पुत्र। मत सद्धर = दृढ़ बुद्धिवाला।

३७—सोहै = शोभा देता है। सिघाळौ = श्रेष्ठ। उजाळौ = उज्ज्वल। अखई = अखैराज। आभाळौ = तेजस्वी।

३८—जांम विजौ = विजयसिंह का पुत्र। छुळ जागै = युद्ध में जागृत। धणी = मालिक के आगे। जती = जैन साधु, ज्ञानविजय। गियानी = ज्ञानी।

पढ़ै सुकव केहर जस पावां
रोहड़ वाघ धुजा कविरावां ॥

दुहा

सुरँग महूरत सुभ घड़ी, इळ प्रगट्यौ अजमाल ।
आगम दरसण आवियौ, हाडौ दुरजणसाळ ॥३९॥
नर आया नवकोट रा, लख धर वार सुरंग ।
निजर हुवै निछरावळां, मोती रतन तुरंग ॥४०॥

छंद बेअक्खरी

मुरधर प्रगट थयौ महाराजा
वाजै सु सुर पंच सर वाजा ।
सुंदर वदन निरख सुख पावै
ईखण नाथ साथ दरियावै ॥४१॥
सिरै हूंत भड़ पंत सवाई
आदर अदब नीत अधिकाई ।

३९—सुकव=अच्छा कवि । पावां=पावों (चारणों) में । रोहड़=राहड़िया शाखा का । वाघ=कवि का नाम है । धुजा=ध्वजा, अग्रणी । सुरँग=शुभ । इळ=पृथ्वी पर । आगम दरसण=दर्शन करने के लिये ।

४०—धर=पृथ्वी । वार=समय ।

४१—मुरधर=मरुधरा में । मु सुर=अच्छे स्वरवाले । पंच सरवाजा=पाँच प्रकार के बाजे । वदन=मुख । ईखण=देखने के लिये । नाथ=मालिक को । साथ=समुदाय । दरियावै=दरियाव अर्थात् समुद्र की तरह बड़ा ।

४२—सिरै हूंत=सिरे से । पत=पंक्ति । अदब=मान । नीठ अधिकाई=भीड़ बहुत अधिक होने से आदर अदब की अधिकता मुश्किल से

इळ नवकोट तणा दळ आया
भूपति दरस थया मनभाया ॥४२॥
भोजन विविध चाव भूंजाई
सदा नवनवी गोठ सवाई ।
चावा सबद कहै नित चावां
अकसौ सिरै तणौ उमरावां ॥४३॥
सांगै तद रच गोठ सवाई
भूपत सहत तेड़ सह भाई ।
सांगै मांगी सीख सवारी
राखे सुत खिजमत राजा री ॥४४॥
सिरहर भायां वादि सिधायौ
उदियोभांण हजूर रहायौ ।
सुणे नबाब इनायत सारी
औरंग दिस लिख अरज अफारी ॥४५॥

होती है। इळनवकोट तणा = मारवाड़ की भूमि के। दळ = समूह। थया = हुआ। मनभाया = मनोवांछित।

४३—चाव = उत्सुकता। भूंजाई = भोज। नवनवी = नई नई। गोठ = मिहमानी। चावा = प्रकट। चावां = उत्सुकता के साथ। अकसौ = ईर्ष्या। सिरै तणौ = मुख्य स्थान पर बैठने का। इस समय आठ ठाकुरों को सिरै का कुरब है।

४४—सांगै = संग्रामसिंह चांपावत। भूपत सहत = राजा सहित। तेड़ = बुलाया। सह भाई = सब भाइयों को। सीख = घर जाने की इजाजत। सवारी = दूसरे दिन। खिजमत = सेवा में।

४५—सिरहर = शिखर, सिरा। वादि = कहकर। सिधायौ = रवाना हुआ। सारी = सब हकीकत। लिख = लिखी। अफारी = विस्तृत।

असुरायण चौ करण अकाजा
राठौड़ै प्रगटायौ राजा।
पूरी मदत नबाबां पाऊं
असपत चौ चाह्यौ कर आऊं ॥४६॥
रवद सुजातखान गुजराती
तई मुझे दौ आग्या ताती।
औरँग सुण उर सोच उपायौ
ईखण अपत दूत निज आयौ ॥४७॥

दुहा

राठौड़ां धर देखवा, अजन कियौ असवार।
आयौ राजा आउवै, उच्छव किया अपार ॥४८॥
भूप वधायौ मोतियां, कीधा निजर तुरंग।
भोजन भूंजाई विवध, विंजन पाक सुरंग ॥४९॥

४६—असुरायण चौ=मुगलों का। अकाजा=नाश। असपत चौ=ादशाह का। चाह्यौ=मनोवांछित।

४७—रवद=यवन। गुजराती=गुजरात का सूबहदार। तई=उसको। ताती=जल्दी। सोच उपायौ=सोच किया। ईखण=देखने के लिये।

४८—राठौड़ां०=राठोड़ों ने भूमि देखने के लिये। अजन=अजीतसिंह को सवार किया। आउवै=शहर का नाम है।

४९—वधायौ=स्वागत किया। निजर=भेट। भूंजाई=भोज। विंजन=(व्यंजन) शाक आदि। पाक=लड्डू आदि पक्वान्न। सुरंग=श्रेष्ठ।

पाछै बगड़ी रायपुर, बीलाड़ैं मनुहार।
अजौ बळूंदै आवियौ, धणी घणौं अवधार ॥५०॥
रीयां नै आसोप सूं, लीधो निजर मँगाय।
पछै लवेरै भाटियां, की मनुहार सवाय ॥५१॥
खेड़ धणी फिर खींवसर, पधरायौ घर प्रीत।
भड़ भेळा नवकोट रा, देखे धरा अजीत ॥५२॥
पाछै कोळू परसियौ, पाबू धांधल राव।
वरस चमाळै भाद्रवै, दसम उजाळी चाव ॥५३॥
राजा आयौ पोकरण, मन भायौ कर देस।
आयौ इतै उतावळौ, दिक्खण सूं दुरगेस ॥५४॥
साथ अखौ रतनेस रौ, जोधहरौ जोधार।
पहलै नागांणौ परस, देवी तणौ दवार ॥५५॥

५०—बगड़ी, रायपुर, बीलाड़ं=शहरों के नाम हैं। बळूंदे=नगर का नाम है। घणौ=बहुत। अवधार=निश्चय करके।

५१—रीयां०=शहरो के नाम हैं। लवेरे=भाटियो का ठिकाना है।

५२—खेड़ धणी=खेड़ नगर का मालिक। पहले खेड़ राठोड़ों की राजधानी थी। खींवसर करमसोतों का ठिकाना है। पधरायौ=ले गए।

५३—कोळू=एक गाँव का नाम है। परसियौ=चरण स्पर्श किया। पाबूजी धांधल के। पाबूजी देवों में पूजे जाते हैं। चमाळै=संवत् १७४४ के भादों सुदि १० को। चाव=उत्कंठा से।

५४—पोकरण=चांपावतों का ठिकाना है। मन भायौ=मन चाहा। इतै=इधर। उतावळौ=त्वरा सहित। दुरगेस=दुर्गदास दक्खिण से आया।

५५—साथ अखौ०=दुर्गदास के साथ रतन का पुत्र अखैसिंह और जोधा योधा थे। पहलै०=नागाणौ=एक गाँव का नाम है। जहाँ धूहड़जी की स्थापित की हुई कुलदेवी नागणेचियाँ की मूर्ति है। परस=उस कुलदेवी के चरणों का स्पर्श करके। देवी तणौ=देवी का। दवार=द्वार।

पाछै दुरग पधारियौ, भीमरलाई गांम ।
मिळियौ बंधव खींवसा, वरस केई विध सांम ॥५६॥
पौढी सूं जोधांपती, प्रात हुवौ असवार ।
दरसेवा सुभ देहरौ, रामौ पीर उदार ॥५७॥
इण विध दिगविजई अजन, कीधी कमँधां राव ।
नव नवगढ कोटां निजर, नव नव उच्छुव चाव ॥५८॥
दुरग धणी पधरावियौ, उच्छुव करे अनूप ।
सेन सवाई आवियौ, भीमरळाई भूप ॥५९॥
कीधी निछरावळ निजर, मिझमानी मनुहार ।
दरसण कीधौ सांम रौ, दुरगै मोती वार ॥६०॥
.... ।
.... ॥६१॥

५६—पधारियौ = गया । बंधव = भाई । खींवसा = खींवकरण । वरस = देकर । सांम = सांत्वना ।

५७—पौढी सूं = पोकरन नगर से । जोधांपती = जोधों का स्वामी (अजीतसिह जी) । देहरौ = मंदिर । रामौ पीर = रामसा पीर (जिनका स्थान रुणीजा गाँव में है) ।

५८—नव...कोटां = मारवाड़ के । नवगढ़ = नव गढ़ों में । निजर = भेंट । नव नव = नवीन नवीन । उच्छुव = उत्सव । चाव = उत्सुकता से ।

५९—दुरग = दुरगदास । धणी = मालिक को । पधरावियौ = ले गया । अनूप = अनुपम ।

६०—निछरावळ = न्यौछावर । मिझमानी = मिहमानी । सांम रौ = स्वामी का । वार = सिर पर भ्रमण कराकर ।

राजा आयौ गूघरट, इळ जीपे अजमाल ।
दळ जाडौ सँग सांवतां, हाडौ दुरजनसाळ ॥६२॥

इति श्री राजराजेश्वर महाराज श्री अभयसिंघजी रौ परम जस
राजरूपक मैं महाराज श्री अजीतसिंघजी प्रथम दिग्विजय
कीधौ सप्तदस प्रकास ॥१७॥

६२—गूघरट=एक गाँव का नाम । इळ जीपे=पृथ्वी को जीतकर । दळ जाडौ=सेना प्रबल । सँग=साथ में । सांवतां=शूरवीरों की ।

छंद बेअक्खरी

पातसाह निज दूत पठाया
ईखे चिरत गया फिर आया ।
देख देख सगळी गत दाखी
भूप अभूत रूप छत भाखी ॥१॥

अवरँगजेब सुणे अकुळांणौ
मेल नवाब दिसी फुरमांणौ ।
असुर अजैगढ खान इनायत
सुण गुण अरज लिखी तिण सायत ॥२॥

मांनौ वचन साह सत मेरौ
तुरत करां सब कारज तेरौ ।
जो राजा ऊपर खड़ जाऊँ
पड़पण खान सुजायत पाऊँ ॥३॥

जवनां सहित अठी हम जावैं
उण दिस दळ गुजराती आवै ।
सुणसौ पछै हकीकत सारी
ह्वै है पति बंदगी हमारी ॥४॥

१—ईखे चिरत = चरित्र देखकर । सगळी = सब । गत = (गति) ढंग । दाखी = कहा । अभूत रूप = अद्भुत रूप । छत = छटा । भाखी = कही ।

२—अजैगढ = अजमेर में । तिण सायत = उसी क्षण ।

३—खड़ जाऊँ = चलाकर जाऊँ । पड़पण = सहायता ।

४—अठी = इधर । सुणसौ = सुनोगे । ह्वै है = होगी ।

यां दाखे तरवार उठाई
मोरां प्रगटी पीड़ अमाई ।
वधियौ दरद, सु देह विपन्नी
प्रष्ठ दुष्ट चांदी ऊपन्नी ।।५।।
वडै कष्ट अजमेर विचाळै
मुअै नबाब वरस चौमाळै ।
पातसाह सुणतां दुख पायौ
एक हजूर तोत उपजायौ ।।६।।
सुत जसराज तणौ कर थापे
उणनुं तुरत जोधपुर आपे ।
वडे हेत औरँग वतळावै
नाम महम्मदराय कहावै ।।७।।
इण परवांणी साह उचारै
सुणतां सितर बहोतर सारै ।।
इण थी जो राखै भड़ यारी
हुवै कमँध सुज पंचहजारी ।।८।।

५—दाखे = कहकर । मोरां = पीठ मे । अमाई = अप्रमाण । देह विपन्नी = शरीर पड़ गया, मर गया । प्रष्ठ = पीठ में । दुष्ट चांदी = खराब फोड़ा, जिसे राजपूताना में अदीठ की बीमारी कहते हैं। ऊपन्नी = उत्पन्न हुई ।

६—विचाळै = मध्य में । वरस चौमाळै = संवत् १७४४ के वर्ष । हजूर = बादशाह । तोत = कपट । उपजायौ = खड़ा किया ।

७—जसराज तणौ = जसवंतसिंह जी का । आपे = दिया । हेत = प्रीति से । वतळावै = भाषण करता है ।

८—इण परवांणी = इस तरह, इस बमूजिब । साह उचारै = बादशाह कहता है । सुणतां = सुनते हुए । सारै = सब । यारी = मैत्री । कमँध = राठोड़ । सुज = वह । पंचहजारी = पाँच हजार का मन्सबदार ।

दुहा

सो राजा दिन सातमैं, मरगौ दक्खन माह।
कमँधां मिळ उच्छव कियौ, सोच कियौ पतसाह ॥९॥
साह सुजायतखांन नूं, हेवै पत कर हेत।
गढ जोधांणौ आपियौ, धर गुजरात सहेत ॥१०॥
बूंदी ऊपर हल्लियौ, हाडौ दुरजणसल्ल।
दुंद सजोड़ अरोड़ दळ, सँग राठौड़ दुझल्ल ॥११॥
देस उग्राहै रेस दे, आवै पेस दरब्ब।
मार लियौ खग मालपुर, आसुर पकड़ कुतब्ब ॥१२॥
धर वहतां पुर मारतां, मांडल लागा आय।
दूदौ साम्है पूरियौ, लड़ै अमांमै आय ॥१३॥
दुयणां कोट सँभावियौ, गोळां चोट निहाव।
भोट पड़ंतै गोळियां, ओट न रक्खै राव ॥१४॥

९—सो राजा = वह राजा (मुहम्मदराय)।

१०—हेवै = दोनों का। पत = (पति) मालिक। हेत = प्रीति से।

११—दुंद = उपद्रव, युद्ध। सजोड़ = प्रबल। अरोड़ = शूरवीर, जोरावर। दळ = सेना। दुझल्ल = वीर।

१२—उग्राहै = दंड लेते हैं। रेस = दबाकत। पेस = सामने, पेशकसी में। मालपुर = बूँदी के राज्य का एक शहर। कुतब्ब = कुतुबुद्दीन को।

१३—धर वहतां = मार्ग चलते। पुर मारतां = नगरों को लूटते। पुर एक शहर तथा प्रांत का नाम भी है। मांडल = शहर तथा प्रांत का नाम है। लागा आय = पहुँचे। दूदौ = बूँदी का स्वामी। साम्है पूरियौ = सामना किया। अमांमै = अप्रमाण।

१४—दुयणां = शत्रुओं ने। कोट = किला। सँभावियौ = शरण लिया। निहाव = युद्ध। भोट पड़ंतै = बहुत उत्कट ताप पड़ते। ओट = आड़।

यां पुर मांडल वींटियां, बळ भग्गौ पतसाह ।
जूंभ पड़े नह सीत जक, दूदौ लड़े दुबाह ॥१५॥
रात न सीत अभीत रिण, जीत विचार जमाव ।
चाळे मैं वेळां चडै, लड़ै बळां बँध राव ॥१६॥
जांण भळक्कौ जांमगी, पैले दग्गी नाळ ।
हाडै दुरजणसल्ल रै, तन लग्गी तिण काळ ॥१७॥
हाडौ सुरपुर हल्लियौ, आडौ हल्लणहार ।
द्रिढ बंधे राठौड़ हर. पुर वींटियौ सवार ॥१८॥
सोर अराबे वज्जियौ, अत गरजियौ अरस्स ।
पिसणे दीधी पेसकस, मुहरां दोय सहस्स ॥१९॥
पेस उग्राहे वाळिया, नेस खळां परजाळ ।
मारू देस पधारिया, हुकम नरेस सँभाळ ॥२०॥

१५—यां = इस तरह । वींटियाँ = घेरा देने पर । बळ = सेना । जूंभ पड़े = लड़कर मरे । सीत = युद्ध का बंद होना । जक = आराम । दुबाह = वीर ।

१६—जमाव = दृढ़ता । चाळे मैं = युद्ध में । वेळां चडै = सहायता को । बळां बँध = बल बाँधकर ।

१७—भळक्कौ = चमक, प्रकाश । जांमगी = बंदूक को लगाने का सूत्र का बना हुआ टुकड़ा । पैले = सामनेवाले ने । दग्गी = चलाई, जलाई । नाळ = बंदूक । तन = शरीर में । तिण काळ = उस समय ।

१८—हाडौ सुरपुर हल्लियौ = दुरजनमाल मर गया । आडौ हल्लणहार = टेढ़ा चलनेवाला । राठौड़ हर = राठौड़ों ने । पुर = पुर नाम के नगर को । वींटियौ = घेरा । सवार = प्रातःकाल में ।

१९—अरस्स = आकाश । पिसणे = शत्रु ने ।

२०—उग्राहे = दंड उगाहकर, लेकर । वाळिया = पीछे घेरे । नेस = निवासस्थान को । खळां = शत्रुओं के । परजाळ = जलाकर । पधारिया = आए ।

हाडै दुरजण साल री, वात हुई नव खंड।
भयौ महासुख साह उर, गयौ अडंडां डंड ॥२१॥

छंद बेअक्खरी

सू गुजरात गात सरसायौ
आतुर खान सुजायत आयौ।
आया कमँध हजूर अपारे
धणी तणां जतनां हित धारे ॥२२॥
ऊदौ भूप तेजसी अत बळ
अखई मुकन विजौ अतुळी बळ।
लाखौ फतैखान व्रत लेखै
पण जूंझार जसौ भुज पेखै ॥२३॥
उरजण भीम हठौ मत ऊजळ
एतां आद विखैची आगळ।
चक्रवति जतन इता चांपावत
राजा पास आविया रावत ॥२४॥

२१—गयौ अडंडां डंड=अदंड्यों का दंड मिटा।

२२—सू=वह, श्रेष्ठ। गात=(गात्र) शरीर; सरसायौ=सरस हुआ, अच्छा हुआ। हजूर=महाराजा के पास। धणी तणां=मालिक के। हित धारे=हित विचारकर।

२३—चांपावतों में उदैसिह, भूपतसिह, तेजसिह, अखैसिंह, मुकनसिंह, विजयसिह, लाखौ, फतैखान। व्रत लेखै=नियम को धारण करनेवाला। पण जूंझार=वीरता का प्रण रखनेवाला जसवंतसिंह।

२४—उरजनसिंह, भीमसिंह, हठीसिंह। मत ऊजळ=उज्ज्वल बुद्धिवाला। विखैची आगळ=विपत् के रोकनेवाले। चक्रवति=राजा के। रावत=वीर।

करनहरा दुरगेस खींवकरन
तेजल देवै आद निभै तन।
राम विजौ भगवानौ रामौ
अजन धणो छळ जोस अमांमौ ॥२५॥
आइ इता कूंपा सह आया
सांमधरम खित करम सवाया।
मांडण फतौ रूप बळ मंडे
आया जैतहरा ऊमंडे ॥२६॥
ईंदौ किसनौ वंस उजागर
रूक हथौ सूजौ रैणागर।
सूरौ लखौ महेस सिघाळा
अमरौ तेजल खांन उजाळा ॥२७॥
जादम आद इता छळ जागे
लियां सरम आया नभ लागे।

२५—करनहरा = करणोत राठोड़ो में दुर्गदास, खींवकरण, तेजकरण, देवकरण आदि। निभै तन = निर्भय शरीरवाले। कूंपावतो में—रामसिंह, बिजयसिंह, भगवानदास, रामसिंह दूसरा। जोस अमांमौ = अप्रमाण ओजवाला।

२६—आइ इता = इत्यादि। सह = सब। सांमधरम = स्वामिधर्म के हेतु। खित० = पृथ्वी में सवाया काम करनेवाले। बळ मंडे = बल धारण करके। जैतहरा = जैतावतों में माडण, फतैसिंह, रूपसिंह। ऊमडे = उमड़कर।

२७—ईंदौ = ईंदा वंश का किसनसिंह। उजागर = प्रसिद्ध। रूक हथौ = हाथ में तलवार लिए। सूजौ० = यादवों (भाटियों) में सूजा, रणछोड़दास, सूरसिंह, लाखा, महेशदास। सिघाळा = श्रेष्ठ। अमरसिंह, तेजसिंह, नाहरखान। उजाळा = उज्ज्वल।

२८—छळ = युद्ध में। जागे = जाग्रत रहनेवाले, सावधान। सरम = लज्जा। नभ लागे = आकाश में लगनेवाले, उन्नत। जोधां = जोधा

जोधां भांण भीम छळ जांणे
आया नाथ करण अवसांणे ॥२८॥

सबळौ हैबत सकत सवाया
आइ सिबै जोधा सह आया।
कुसळसिंघ कलियांण सकोडै
उर जूंझार विजौ पण ओडै ॥२९॥

सूरौ जोध दलौ खग साहे
मेड़तिया आया दळ माहे।
बडै तोल जगराम विजावत
राजड़ रिदौ रूपसी रावत ॥३०॥

सांवळ आद खान सकबंधी
अं ऊदा मिळिया अनमंधी।

राठोड़ों में—उदयभाण, भीमसिंह। नाथ=मालिक के। करण अवसांणे=सहायता करने के लिये।

२९—सबलसिंह, हैबतसिंह, सकतसिंह, सिवसिंह। सह=सब। कुसलसिंघ०=मेड़तियों में—कुसलसिंह, कल्याणसिंह। सकोडै=उत्साह सहित। उर०=हृदय में, मन में जूंझारसिंह, विजयसिंह। पण ओडै=प्रण को धारण किए।

३०—सूरसिंह, जोधसिंह, दलेलसिंह। खग साहे=खड्ग को धारण किए। बडै तोल०=बड़ा भार धारण करनेवाला, अनुपम। ऊदावतों में—विजैसिंह का पुत्र जगरामसिंह, राजसिंह, रिदैराम. रूपसिंह। रावत=वीर।

३१—सांवलसिंह आद=आदि। नाहरखान। सकबंधी=युद्ध करनेवाले। अनमंधी=अपार, असंख्य। आद०=चौहानों में—नाथूसिंह,

आद नाथ लखधीर अरेहा
अै मछरीक ढाळ दळ एहा ॥३१॥

सभ दळ बाळां हरा सवाया
अखई पबै प्राग सम आया ।
मिणियड़ दळ मेळे धर मंगळ
आयौ जैतमाल अतुळीबळ ॥३२॥

विजै आद सगळा महवेचा
धर छळ सूजै सहत धवेचा ।
ऊहड़ भूप भोज ओछाहे
सांम जतन राखे व्रत साहे ॥३३॥

भायल आसौ रतन भुजाळा
अजमल जतन वंस उजवाळा ।

लखधीरसिंह आदि । अरेहा = हार न माननेवाले । अै = ये । मछरीक = चौहान । ढाल दळ = सेना में ढाल रूप । एहा = ऐसे ।

३२—बालां हरा = बाला राठौड़ों में—अखैसिंह, पर्वतसिंह, प्रयागदास । सम = साथ, सदृश । मिणियड़ = शिरोमणि । दळ मेळे = सेना इकट्ठी करके । जैतमाल० = जैतमाल राठोड़ । अतुळीबळ = अतुल्य बलवाला । जैतमाल शायद नाम हो ।

३३—विजै आद० = महेचा राठोड़ों में विजयसिंह आदि । सगळा = सब । धवेचा० = धवेचा राठौड़ सूजा सहित । ऊहड़ = राठौड़ों में—भूपतसिंह, भोजराज । ओछाहे = उत्साहवाले । व्रत साहे = नियम को धारण किए ।

३४—भायल० = भायल वंश में—आसकरण, रतनसिंह । भुजाळा = पराक्रमी । उजवाळा = उज्ज्वल करनेवाले । राजा निकट० = राजा के

राजा निकट मुकन तन रावत
क्रत गुण खीची सिवौ कलावत ॥३४॥
धांधल उदैकरण हित धारै
किरतौ गोयँद मतै करारै ॥
सांमळ विजौ सांमपण सद्धर
नरहर आणँद तणौ निभै नर ॥३५॥
जोधां धणी तणा छळ जागै
अै पड़िहार वणे दळ आगै।
सुंदर नै माहेस सिघाळा
खूंमाणा सगळा सपखाळा ॥३६॥
द्याल पिराग सांम सुखदाई
सोभा ड्योढी प्रीत सवाई
भूप द्वार असकन्न भँडारी
हेमराज जांमल हितकारी ॥३७॥

पास मुकनदास खीची और सिवसिंह दोनों कल्याणसिंह के पुत्र। तन=तनु, खास। रावत=रावत पदवीवाला। क्रत गुण=गुण अर्थात् भला करनेवाला। 'क्रत गुण' यह शब्द 'कृतघ्न' के वैपरीत्य का बोधक है।

३५—धांधल० = धांधल राठोड़—उदैकरण, किरतसिंह, गोविंददास। मतै करारै=प्रबल विचारवाला। सामळ० = पड़िहारों में—साँमलदास, विजयसिंह। सांमपण सद्धर= स्वामी की प्रतिज्ञा को दृढ़ रखनेवाले। आनंदसिंह का पुत्र नरहरदास। निभै नर = निर्भय मनुष्य।

३६—जोधां धणी तणा = अजीतसिंह जी के। छळ=युद्ध के लिये। जागै=जागृत रहते हैं। वणे=तैयार हुए। सुंदर० = खूमाणा अर्थात् सीसोदियों में सुंदरदास और महेशदास। सपखाळा = पक्षवाले।

३७—द्याल० = सोभावतों में दयालदास, प्रयागदास, सांमदास। ड्योढ़ी० = ड्यौढ़ीदार। भूपद्वार० = ड्योढ़ी पर आसकरण भंडारी और हेमराज। जांमल=दोनों।

पंचोली हरिकिसन वडै पण
गोढै इंद्रभांण साचै गुण ।
ऊपर छाप जगत आरोपै
आरब मियां तणै कर ओपै ॥३८॥

व्यास सदा पोतै वरदाई
सोहै बालकिसन सुखदाई ।
अखई मुख प्रोहित आचारज
क्रत रिणछोड़ करे पत कारज ॥३९॥

केहर वाघ आद वडकारण
चक्रवत पगे एक सौ चारण ॥
पति ची प्रीत धारियां पूरी
हेमराज अबदार हजूरी ॥४०॥
आया राव हजूर उताळा
वरणौ वरण मुरधरा वाळा ।

३८—पंचोळी० = पंचोली हरकिसन । गोढै = उसके पास । इंद्रभाण । ऊपर० = जगत् पर छाप (मुहर) लगानेवाला आरब मियाँ । तणै० = उसके हाथ में (मुहर) शोभा देती है । (महाराजा की मुहर इसके पास थी) ।

३९—व्यास० = व्यास बालकिसन । पोतै = खुद । सोहै = शोभा देता है । अखई० = मुख्य पुरोहित अखैसिंह । आचारज० = वैदिक काम करानेवाला रणछोड़दास । क्रत = कृत्य, वैदिक कर्म ।

४०—केहर० = केसरीसिंह, वाघा आदि । वडकारण = बड़ाई करनेवाले, स्तुति करनेवाले । पगे = वास्ते । पति ची = मालिक की । अबदार हजूर = महाराजा के हजूर में ।

उताळा = त्वरा सहित । वरणौ वरण = समस्त वर्णों के ।

दुहा

चंमाळौ चाले गयौ, पैंताळौ इण भांत ।
खान सुजायत कागळां, लिखे सतो गुण स्वांत ॥४१॥
कमँधां चाळौ मत करौ, करौ इजारौ आय ।
राजा खाणयां भोगवौ, रसता चौथ सवाय ॥४२॥
बेटौ खान इनात रौ, गढ सूं थयौ तगीर ।
चाली महमद बेग री, दिल्ली दिसा वहीर ॥४३॥
बेधौ दुंद न वीसरै, चंद तणौ हरनाथ ।
पंथ अळग्गौ लंघतां, लारा लग्गौ साथ ॥४४॥
साथे मेड़तिया सकज, अखई गोकळदास ।
पूरांणौ हरनाथ पिड़, पूरे साथ प्रकास ॥४५॥
साथ पतावत सूर नर, सबळ अनै सगतेस ।
चंद हरा खळ चूरवा, छळ नवकोट नरेस ॥४६॥

४१—कागळां = कागजों में, पत्रों में । सतोगुण = सत्त्वगुण के । स्वांत = शांत वचन लिखे ।

४२—चाळौ = युद्ध, उपद्रव । करौ इजारौ = इजारा कर लो, गाँव ठीके ले लो । खाणयां = नमक आदि की खानें राजा भोगे । रसता चौथ = इसके अलावा वह तीवान की चाथ (चतुर्थांश) लिया करो ।

४३—बेटौ०—इनायत खान का पुत्र मुहम्मदअली मौकूफ किया गया । उसकी वहीर (परिजन) दिल्ली की तरफ गई ।

४४—बेधौ दुंद = युद्ध का उपद्रव । वीसरै = भूलता है, विस्मृत होता है । चंद तणौ = चंद्रभाण का पुत्र । पंथ० = दूर मार्ग के लंघन करने पर । लारा लग्गौ = पीछे लगा ।

४५—सकज = समर्थ । अखई = अखैसिंह । पूरांणौ = पूर्ण किया । पिड़ = युद्ध को ।

४६—पतावत = पातावत राठौड़ । अनै = और । चंदहरा = चंद के पुत्र । छळ = वास्ते ।

रणवाळ ढूंढाड़ री, जवन पहूँतौ जाय ।
जोधौ आपड़ियौ जठै, समहर चाव सवाय ॥४७॥
धमस विड़ंगां ऊधरां, रज छायौ ब्रहमंड ।
सेल्ह चमंका धुंध मैं, दीठा रावण खंड ॥४८॥
भागौ आगै कोट लख, छोड दरक्का द्रब्ब ।
रथ सुखपालां जोरवां, संपत मेल सरब्ब ॥४९॥
मिरजौ पैठौ कोट मैं, ओट थया कूरम्म ।
रिध ऊँठां बीबी रथां, कर परहत्थां ध्रम्म ॥५०॥
लेखा पाखे लूटिया, घोड़ा ऊँठ दरब्ब ।
रौद्र प्रचार सँघारिया, सारे मार सरब्ब ॥५१॥
घेर सबै रथ पालखी, फेर तुरंगां वग्ग ।
भंग थयौ गह मीर रौ, संग भयौ जू मग्ग ॥५२॥

४७—रैंणवाळ = एक गाँव का नाम है । पहूँतौ = पहुँचा । जोधौ = जोधा राठौड़ हरनाथ । आपड़ियौ = पहुँचा । समहर = युद्ध की । चाव = इच्छा, उत्कंठा ।

४८—धमस = दाट, आक्रमण । विड़ंगां = घोड़ों की । ऊधरां = उत्कट । ब्रहमंड = ब्रह्मांड । सेल्ह = भाले । धुंध मैं = धुँधले प्रकाश में । रावण खंड = मुहम्मदअली ।

४९—कोट लख = किला देखकर । दरक्कां = ऊँटों को । द्रब्ब = द्रव्य को । जोरवा = स्त्रियो को । मेल = छोड़कर ।

५०—ओट थया = आड़े आ गए । कूरम्म = कछवाहे । रिध = ऋद्धि, संपदा । बीबी = यवन स्त्रियाँ । ध्रम्म = धर्म ।

५१—लेखा पाखे = असंख्य । दरब्ब = (द्रव्य) धन । रौद्र = यवनों को । प्रचार = ललकारकर । सँघारिया = संहार किया । सारे = तलवार से ।

५२—वग्ग = बाग, लगाम । भंग थयौ = विध्वंस हुआ । गह = गर्व । संग भयौ = साथ हुआ । मग्ग = मार्ग ।

हरी बहादर चंद रौ, धरी खळां सिर धाव।
पूगौ पुर मंडल गयां, दुयण न लग्गौ दाव ।।५३।।

इति श्री राजराजेश्वर महाराजा श्री अभयसिंघजी रा परम
जस राजरूपक मैं राठौड़ां निबाब महमदअली
नै लूटियौ अष्टदस प्रकास ।।१८।।

* * *

५३—हरी = हरनाथ सिंह। बहादर = वीर। धाव = हल्ला। पूगौ = पहुँचा। दुयण = (दुर्जन) शत्रु का।

दुहा

पहलां सूं मिळ पकड़ियौ, सिंभू औरँगसाह।
चक्रवत दक्खण चालतौ, राजा भूंडे राह ॥ १ ॥

छंद बेअक्खरी

ऊपर वरस छयाँळौ आयौ
बाधे असुरां जोर सवायौ।
जवनां काजम वेग सजोड़ा
देस मुरद्धर मांडे दौड़ा ॥ २ ॥
भाई मुकन मेळ मनभाया
कमँध तुरंगां तंग कसाया।
चढिया देस उग्राहण चंपा
केवी सोबै थया सकंपा ॥ ३ ॥
जवन डरे सोबायत जोळा
दौड़ हुवै अजमेरे दोळा।

१—पहलां सूं = शत्रुओं से। मिळ = मिलकर। सिभू = शंभा (मरहठा शिवाजी के पुत्र) को। चक्रवत = राजा शंभा। भूंडे राह = बुरे रास्ते चलता था।

२—छयाँळौ = १७४६ का वर्ष। बाधे = बढ़ा। सजोड़ा = समर्थ, समान बलवाला। मांडे = किए। दौड़ा = आक्रमण।

३—भाई = भाइयों को। मुकन = मुकनसिंह। मेळ = एकत्र करके। मनभाया = मनचाहे। केवी = शत्रु।

४—जोळा = चलायमान। दौड़ हुवै = आक्रमण होता है। अजमेरे =

सुजावेग ऊठै सोबायत
सुण धीरियौ नही इक सायत ॥ ४ ॥
आसुर जेज न कीधी आतुर
आयौ चाल कमंधां ऊपर।
रूकहथां वांकां राठौड़ां
घेर लियौ साम्हौ चढ घोड़ां ॥ ५ ॥
वेग परक्खी तेग भळक्की
तुरी फेर न्हासण री तक्की।
भड़ लख निवड़ मियां तड़ भागौ
लागौ थाट लियां घस लागौ ॥ ६ ॥
सहर कोट गा ओट सिपाही
अवर वहीर लूट मैं आई।
ओट कोट पैठा सह आसुर
गंजवाळ वळियौ गाढां गुर ॥ ७ ॥

अजमेर प्रांत के। दोळा = चारों तरफ। धीरियै = धैर्य धारण किया। इक सायत = एक क्षण।

५—रूकहथा = तलवार हाथ में लिए।

६—वेग = शुजा बेग। परक्खी = देखी। तेग = तलवार। भळक्की = चमकती हुई। तुरी = घोड़े को। न्हासण री = भागने का। तक्की = विचार किया। निवड़ = निवृत्त होकर। तड़ = जल्दी। लागौ० = साथ लगे हुए समूह को लिए रस्ते लगा।

७—ओट = आड़ में। अवर = दूसरी, भागने से जो बची। ओट कोट = कोट (किले) की आड़ में, शरण में। सह = सब। गंजवाळ = मारनेवाला, नाश करनेवाला। वळियौ = पीछे फिरा। गाढां गुर = दृढ़तावालों का गुरु।

दुहा

मुकनौ सूरजमाल रौ, भुज थंभे असमांण।
चाळै भाळे मीरज्यां, जाळे आग समांण ॥ ८ ॥

इति श्री मुकनदास चांपावत सुजाबेग नै भगायौ सौ विगत ॥

छंद बेअक्खरी

सुहड़ लियां राजा बळ साजै
पीपळोद अजमाल विराजै।
नैड़ा कांठै लखे अनाड़ी
दौड़े काजमबेग दिहाड़ी ॥ ९ ॥
सूजाबेग उतारौ पायौ
इळ अजमेर सफी खां आयौ।
सैंताळै चाळौ सरसांणौ
सत्रां अमावो हियै सिवांणौ ॥१०॥
चांपा करन जैत नृप चाया
ऊदा दूदा खळां अभाया।

८—मुकनौ = मुकनसिंह। चाळै = युद्ध में। भाळे = देखकर। मीरज्या = मिरजा शुजा बेग। जाळे = जलता है।

९—सुहड़ = सुभटों को लिये। बळ साजै = सेना को तैयार करके। पीपलोद = एक गाँव का नाम है: सिवाणा परगने में है। नैड़ा = (निकट) समीप। कांठै = किनारे के। लखे = देखकर। अनाड़ी = मूर्ख। दौड़े = आक्रमण किया। दिहाड़ी = दिन में।

१०—उतारौ पायौ = शुजा बेग मौकूफ हुआ। इळ = भूमि में। सैंताळै = १७४७ के वर्ष। चाळौ = उपद्रव। सरसांणौ = बढ़ा। सत्रां = शुजा को। अमावो हियै = हृदय में समाया नहीं। सिवांणौ = परगना।

११—चांपा० = चांपावत, करणोत, जैतावत। नृप चाया = राजा के वांछित। ऊदा = ऊदावत। दूदा = मेड़तिया। खळां अभाया = शत्रुओं

जोधा जैत कमा नै जादव
इळ मछरीक करे धव (र) ओछव ॥११॥
आद इतां नवकोट उजाळा
राजा जतन उतन रखवाळा।
तुरकां असह थयौ सँताळौ
चढियौ दुरँग करण धर चाळौ ॥१२॥
सार खळां रिम मार सँघारे
सुहम अनै टोहांणो मारे।
आयौ दुरग धरा अजमेरे
कटक सँताप सफीखां केरे ॥१३॥
इम दुरगेस भड़सियै आयौ
दळ दुरवेस ऊठ दरसायौ।
क्यों मुहमेल कियौ नवकोटां
असुर गया भज घाटी ओटां ॥१४॥
गौ अजमेर मियां तज गुम्मर
आयौ दुरँग पजावे ऊपर ॥

के मन को अवांछित। जोधा० = जोधा, जैतमाल, करमसोत, जादव। इळ = भूमि में। मछरीक = चौहान। धर = पृथ्वी में। ओछव = उत्सव।

१२—आद इता = इत्यादि। नवकोट = मारवाड़ के। उजाळा = उज्ज्वल। उतन = वतन, जन्मभूमि के। असह = असह्य। करण० = पृथ्वी में उपद्रव करने के लिये।

१३—सार = तलवार से। खळां = दुष्ट। रिम = शत्रुओं को। सुहम० = सुहम और टोहाणा नगरों के नाम हैं। सफीखां केरे = सफी खाँ के।

१४—इम = ऐसे। भड़सियै = एक गाँव का नाम। दुरवेस = (दुर्वेष) शत्रु। क्यों = कुछ। मुहमेल कियौ = समीप गए। भज = भागकर। घाटी ओटा = घाटी की आड़ में। गौ = गया। गुम्मर = गर्व। पजावे = हराकर।

दुहा

सफीखान पतसाह सूं, अरज लिखी अणधीर।
दुरगा भग्गा जंग मैं, लग्गा लोह सरीर॥ १५॥
वाकौ झूठौ अक्खियौ, दक्खण गयौ सदूर।
आप वडाई आप री, आपी साह हजूर॥१६॥
साह दिलासा मोकळी, झूठो आसा धार।
तूं मेरै सबकै सिरै, अबकै आवै मार॥१७॥
जीपण जंग दुरंग सूं, जो तैं राखी जेज।
तो चूड़ी पहराय कैं, डारूं कैद अहेज॥१८॥
जवन सफीखां झूठ रौ, फळ पायौ तिण वार।
गजब जिसौ सुरतांण रौ, फुरमांण रौ विचार॥१९॥
तब निबाब उर तापियौ, फिर थापियौ विचार।
अरज लिखी अवरंग सूं, मोसूं पंथ अपार॥२०॥

१५—अणधीर = धैर्यरहित होकर। जंग मैं = लड़ाई में। लग्गा लोह = प्रहार लगे जिससे।

१६—वाकौ = समाचार। झूठा = असत्य। अक्खियौ = कहा। सदूर = दूर। आप = खुद। आपी = दी।

१७—मोकळी = भेजी। अबकै = दूसरे अवसर में।

१८—जीपण = जीतने में। जेज = देरी। चूड़ी पहराय कैं = चूड़ी पहनाकर। अहेज = उसी समय, स्नेह छोड़कर।

१९—तिण वार = उस समय। गजब जिसौ = वज्रपात के सदृश।

२०—तापियौ = संतप्त हुआ। थापियौ = रखा। पंथ = मार्ग। अपार = दूर है।

एतौ कारज सौ करै, हद सूं नैड़ो हाय।
देस सुजायतखान रै, वस आन रै न होय ।।२१।।
साहब लिखै सुजात सूं, करै सतावी काज।
हुकम धरूं सिर सांम रौ, मैं फिर करूं इलाज ।।२२।।
इतरी लिख अवरंग सूं, विचित्र विचारी वात।
मियां इसाक चलावियौ, जोवण जोधां छात ।।२३।।

छंद बेअक्खरी

पीपळोद राजै छत्रपत्तिय
आयौ मियां मेळ असपत्तिय।
राजरूप कानूंगौ लारां
रस मंत्री मिळिया राजा रा ।।२४।।
आगळ नृपती वात उचारी
समै पाय निज भ्रत सु विचारी।
मुकनदास कर अरज मिलाया
लेख हितू नृप पाय लगाया ।।२५।।

२१—एतौ कारज=इतना कार्य। सौ=वह। हद सूं नैड़ो=बहुत निकट। वस=अधीन। आन रै=दूसरे के।

२२—साहब=बादशाह। सुजात सूं=शुजायत खाँ को। काज=कार्य। इलाज=उपाय।

२३—विचित्र=यवन (शफी खाँ)। चलावियौ=भेजा। जोवण=देखने को। जोधां छात=जोधा वंश के छत्र (अजीतसिंह जी) को।

२४—छत्रपत्तिय=राजा। मेळ=मेल कराने को। असपत्तिय=बादशाह से। रसमंत्री=संधि करानेवाले मंत्रियों से।

२५—आगळ नृपती=राजा के आगे। समै=समय। भ्रत=(भृत्य) सेवकों ने। कर अरज=अर्ज करके। मिलाया=मुकनदास खीची से मिलाया। लेख हितू=हितकारी समझकर। नृप पाय लगाया=राजा के चरणों हाजिर किया।

आगळ धर खोलिया उताळा
वचिया पत्र सफीखां वाळा।
क्रत मनुहार सफीखां केरी
तिण मैं भांत लिखी बहुतेरी ॥२६॥
मेरे पास साह फुरमांणौ
जोधां पत हाजर जोधांणौ।
सब धर हुवै तुमारौ सारौ
एक बेर अजमेर सधारौ ॥२७॥

दुहा

मिगसर मास उजास पख, अजन थयौ असवार।
रूकहथा सब राठवड़, साथे वीस हजार ॥२८॥
प्रथम विदा कीधौ सुपह, चांपावत मुकनेस।
आसावत ग्रह आपरै, दुरग रहे निज देस ॥२९॥
मारूराव मुकन्न रै, खीचो साथ मुकन्न।
सु तौ अजैगढ खांन सूं, मिळ पूछिया प्रसन्न ॥३०॥

२६—आगळ धर=सामने रखकर। क्रत=की हुई। सफीखां केरी=शफीखां की। भांत=रीति।

२७—हाजर जोधांणौ=जोधपुर तैयार है। सारौ=आधिपत्य। सधारौ=चलो।

२८—उजास पख=शुक्लपक्ष। थयौ=हुआ। रूकहथा=तलवार हाथों में लिए।

२९—सुपह=मालिक (राजा) ने। मुकनेस=मुकनसिंह को। आसावत०=आसकरण का पुत्र दुर्गदास अपने देश में अपने घर में रहा (क्योंकि दुर्गदास इसमें सहमत नहीं था)।

३०—मारूराव=मारवाड़ का राजा। मुकन्नरै=मुकनसिंह चांपावत। मुकन्न=खीची मुकनदास। सु=उन्होंने। अजैगढ=अजमेर में। पूछिया प्रसन्न=कुशल-प्रश्न पूछा।

जतरी मुख आखी जवन, वात वणाय वणाय।
सह झूठा मीठा वयण, दीठा न आया दाय ॥३१॥
मुकन मिळे महाराज सूं, कही विगत ततकाळ।
तौ पिण राठौड़ां तवी, वळां अजैगढ भाळ ॥३२॥
जोधपुरौ चढियौ जरां, ईखण पुर अजमेर।
लागी मिळतां खान सूं, एक महूरत बेर ॥३३॥
आंगमियौ कमँधां असुर, लूटीजै अजमेर।
किलम सफी खां कांपियौ, जवन थया सह जेर ॥३४॥
कीधा अजन कमंध री, हाथी निजर तुरंग।
हीर जवाहर रोक रिध, भूखण वसण सुरंग ॥३५॥
नृपत समेळ पधारिया, विवरौ थयौ विख्यात।
आवी अरज उकील री, आ मत मांनौ वात ॥३६॥

३१—जतरी = जितनी। आखी = कही। वणाय वणाय = बना बनाकर (कपट की)। सह = सब। झूठा = असत्य। वयण = वचन। दीठा = देखे। दाय = पसंद।

३२—मुकन = खीची और चांपावत दोनों ने। मिळे = मिलकर। विगत = ब्यौरेवार। तौपिण = तथापि, तो भी। तवी = कहा। वळां = पीछे लौटेंगे। भाळ = देखकर।

३३—जोधपुरौ = जोधपुर का राजा। चढियौ = सवार हुआ। जरां = जब। ईखण = देखने के लिये। बेर = समय।

३४—आंगमियौ = दबाया, आक्रमण किया। कमधां = राठोड़ों ने। किलम = यवन।

३५—कीधा = किए। अजन कमंध री = अजीतसिंहजी राठौड़ के। हीर = हीरे। रोक = नकद। रिध = (ऋद्धि) संपदा। वसण = वस्त्र। सुरंग = अच्छे।

३६—समेळ = मिलकर। पधारिया = आए। विवरौ = विवरण। आ = यह।

लख दुरवेस दहल्लिया, आयौ देस नरेस।
अठताळौ चाळौ थयौ, रांणावाळौ देस ॥३७॥

इति श्री राजरूपक मैं महाराज श्री अजीतसिंघजी अजमेर
पधारिया सौ विगत कही ॥

दुहा

उदियापुर जैसिंघ रै, सुत सूं थई फिसाद।
सो घांणोरा आवियौ, रांण विचारे वाद ॥३८॥
अमर किया भड़ एकटा, लियौ उदैपुर लार।
रांणौ राठौड़ां कनैं, आयौ औढी वार ॥३९॥

छंद बेअक्खरी

आयां रांण कमंध ऊमंडे
मेड़तियौ गिरवर बळ मंडे।
एकण रात विचै अनमंधां
कीधी तेड़े खेड़ कमंधां ॥४०॥

३७—दुरवेस = यवन। दहल्लिया = घबराए। अठताळौ = १७४८ के वर्ष में। चाळौ = उपद्रव। रांणावाळौ = उदयपुर महाराणा के देश में।

३८—उदियापुर० = उदयपुर के महाराणा जयसिंहजी के पुत्र के साथ फसाद हुआ। सो = वह (महाराणा)। घांणोरा = गोड़वाड़ प्रांत में ठिकाने का गाँव है। वाद = विवाद।

३९—अमर = अमरसिंह (महाराणा के पुत्र) ने। लार = पीछे, महाराणा के परोक्ष में। कनैं = पास। औढ़ी वार = विकट समय में।

४०—आयां रांण = राणा के आने पर। ऊमंडे = उमड़े। मेड़तियौ = मेड़तिया = गिरधारीसिंह। बळ मंडे = बल बांधकर। अनमंधां = असंख्य। तेड़े = बुलाकर। खेड़ = सेना का संग्रह।

घण थट मेळ सोहड़े घोड़े
दिस महाराज ऊठिया दौड़े ।
राजा सुणे चाड रांणा री
तिजड़ हथा भड़ किया तयारी ॥४१॥
सुकज दुरग भगवान सरीसा
रिणमल जोधा दुयण करीसा ।
ऊदा अखा चहूं अहँकारी
राजा विदा किया रोसारी ॥४२॥
अजन हुकम कुळ चाड अछाया
आठुँई मिसल तणा भड़ आया ॥
जोधां पत मेलिया सजोरा
घणा कटक आया घाणेरा ॥४३॥
कटक थया अगिणत चहुँ कोदां
सोच हुवौ मोटो सीसोदां ॥
सहस त्रीस दळ देख सपांणे
रळी करे मन जैसिंघ रांणे ॥४४॥

४१—घण० = बहुत सा समूह एकत्र किया । सोहड़े = सुभट । दिस महाराज = महाराजा की तरफ । चाड = सहायता के लिये । तिजड़हथा = कटारीवाले ।

४२—सुकज = अच्छे काम का । दुरग० = दुरगदास । सरीसा = सदृश । दुयण = शत्रुओं का । करीसा = कारस करनेवाले, चूर्ण करनेवाले । ऊदा = ऊदावत । अखा = अखैराज के वंशज जैतावत । रोसारी = रोषवाले ।

४३—कुळ०—अपने कुल की सहायता करने के लिये प्रसिद्ध । आठुँई० = आठों मिसल के योधा आए ।

४४—चहुँ कोदां = चारों ओर । सपांणे = सबल । रळी करे = खुशी की, प्रसन्न हुआ ।

ऊकटिया उदियापुर ऊपर,
मेवाड़ा मिळिया तिण मौसर।
रांण कँवर थी गुंज रचायौ
प्रगट करै कांइ देस परायौ ॥४५॥
अमरा नूं कहियौ उमरावां
सकतां चूंडां आपस भावां।
वळ मेळे झाला चहुवांणां
राज अचळ राखण कुळ रांणां ॥४६॥
पिता पूत ग्रहचार सपूतां
हुई वात राठोड़ां हूँतां॥
महाराणा सूं कँवर मिळाया
दुझल मारवां राज दिरायौ ॥४७॥

दुहा

गुणपच्चासै कारतिक, ऊतरतै वरसात।
आयौ खेजड़लै असुर, मेछ परक्खण मात ॥४८॥

४५—ऊकटिया = उत्कटता से चले। मौसर = समय। गुंज रचायौ = सलाह की। प्रकट० = कँवर के पास जाहिर किया कि क्या यह दूसरा देश है? (जिससे तुमने सेना एकत्र की)।

४६—सकतां चूंडां = सकतावत और चूंडावतों से कहा। आपस भावां = तुम परस्पर भाई हो। वळ मेळे = सेना एकत्र की।

४७—पिता० = पिता और पुत्र से सपूतपन की घर संबंधी राठोड़ों से बातचीत हुई। दुझल = वीर।

४८—गुणपच्चासै = १७४९ के वर्ष के कार्तिक में। ऊतरतै वरसात = चौमासा व्यतीत होने पर। खेजड़लै = एक गाँव का नाम। परक्खण = देखने के लिये। मात = (मात्रा) परिमाण।

वीसलपुर थी हालियौ, इक्को बळ अप्रमांण।
च्यार निखंग तुरंग बे, असमर च्यार कवांण ॥४९॥
आयौ देवळ ईछियौ, वाग उठायौ हत्थ।
पापी भोम पछाड़ियौ, आसुर कीत अरत्थ ॥५०॥
कर हक्कां चडियौ किलम, मीर गयँद उनमान।
अतरै लखपत आवियौ, माताजी रै थांन ॥५१॥
मेछ गयौ तिलवासणी, लाखौ लागौ लार।
आगै सांड सँघारनै, मुगल खड़ौ मेवार ॥५२॥
अड़ताळौ पूरौ थयौ, गुणचासै वरसात।
रांणो थापे राठवड़, ग्रह आया वड गात ॥५३॥
वाकौ ग्यौ अजमेर सूं, साह हजूर सताब।
पत्र परखि(ठि)या साह डर, लिखिया विवर नबाब ॥५४॥
रैंणा आया राठवड. थापे रांण तखत्त।
दोळा त्रीस हजार दळ, अकळ अजौ नरपत्त ॥५५॥
साह सुणे अत सोचियौ, मन मोचियौ गरब्भ।
ईख प्रताप अजीत रौ, रीत विचारी अब्ब ॥५६॥

४९—वीसलपुर थी = इस नाम का गाँव जो जोधपुर से ९ कोस पूर्व में है। निखंग = तीरों के भाथे। बे = दो (२)। असमर = तलवार।

५४—वाकौ = समाचार, वृत्तांत। सताब = जल्दी। परठिया = भेजे। विवर = विवरण, हकीकत।

५५—रैंणा = राणपुर (मेवाड़ में)। थापे = स्थापित करके। अकळ = पूर्ण, समर्थ।

५६—मोचियौ = छोड़ा। गरब्भ = (गर्व) घमंड। ईख = देखकर। अब्ब = सर्व, सब।

चित मैं साह विचारियौ, राजा थयौ जवान ।
परवस मेरी पोतरी, अै सिरजोर निदान ॥५७॥
जो पकड़ाऊं दुरग कूं, तौ आवै सुख साथ ।
हुरम कबीले कै सबै, सरम नबी के हाथ ॥५८॥
नींद न आवै रात री, पावे भरम अपार ।
आखे साह नबाब सूं, राखौ दाव विचार ॥५९॥
तांम सफीखां मेलियौ, कळबी नारणदास ।
मिळ जावंतां दुरग सूं, वीता बारै मास ॥६०॥
सीस पचासौ आवियौ, वीतौ करतां वात ।
ग्रहै जवांनी चौगुणौ, रहै गिरंदां छात ॥६१॥
असमर भुज ग्रहियां अखौ, मांकलसर मेवास ।
सोबा आया तीन सिर, माह वहंतै मास ॥६२॥
जवन गयौ जोधांण सूं, काजमबेग सकोप ।
सिवियांणै संगी थयौ, जांणै दग्गी तोप ॥६३॥

५७—पोतरी=पौत्री । अै=ये । निदान=बहुत ।

५८—नबी के=ईश्वर के ।

५९—भरम=(भ्रम) शंका । आखे=कहा ।

६०—तांम=तब । कळबी=एक जाति है ।

६१—ग्रहै जवांनी=तरुण अवस्था पाकर । गिरंदां=पहाड़ों में रहता है । छात=राजा ।

६२—असमर=तलवार । मांकलसर=एक गाँव का नाम है । मेवास=रक्षास्थान । सोबा=सूबेदार । माह वहंतै=माघ मास चलते ।

६३—सिवियांणै=सिवाणा में । संगी थयौ=शामिल हुआ । जांणै=मानों ।

साझै दळ जाळोर सूं, आयौ खान कमाल ।
जवने ही कायर जुवा, आगै हुवा दुझाल ॥६४॥

अर ढूका रवि ऊगतां, चूका नहीं प्रभात ।
अकज अलूकां ज्यां थयौ, सूका वदन कुजात ॥६५॥

अखई माधोदास रौ, तिण वेळा तुड़तांण ।
यूं सौबाहां ऊठियौ, साहां गंजण मांण ॥६६॥

सूजौ काजमबेग सूं (यूं), तीजौ खान कमाल ।
खाग जरक्के ले गयौ, एक धके अखमाल ॥६७॥

माह मास पख चांनणौ, असुरां पाई हार ।
तीजा बाला जोरवर, भालाहथां उदार ॥६८॥

६४—साझै = तैयार करके । खान कमाल = कमालखाँ । जवने हो० = यवनों में भी कायर जुदा हो गए । आगै० = वीर आगे हुए ।

६५—अर = शत्रु । ढूका = पहुँचे । अकज = अकार्य । अलूकां ज्यां = उलूको की भाँति । सूका० = कुजात अर्थात् यवनों के मुख सूख गए ।

६६—अखई = अखैसिह । तिण वेळा = उस समय । तुड़तांण = शीघ्र । यूं = इस तरह । सौबाहां = सूबेदारों पर । साहां० = बादशाह का मान नष्ट करने के लिये ।

६७—सूजौ० = सूजा, काजमबेग और तीसरा कमाल खाँ । खाग जरक्के = तलवार के प्रहार से । एक धके = एक तरफ । अखमाल = अखैसिंह ।

६८—पख चांनणौ = शुक्लपक्ष । बाला = बाला राठोड़ ।

छंद बेअक्खरी

मीरां एक वहै मन मांणै
थिर रहियौ चांखां रै थांणै।
सौ असवार लियां नित साथे
मोटां त्रास न राखै माथे ।।६९।।
चढियौ माह लखे दळ चाळौ
आयौ लूणावास उताळौ ।।
इण दिस कमँध तेजसी आयौ
साथे मुकन भतीज सवायौ ।।७०।।
आवे मीर गाँव ऊतरियौ
धूजे लोक तुरक अत धरियौ।
इसड़ी ताल पाळहर आया
दुयणां निजर कुंत दरसाया ।।७१।।
वागां ली विचित्रां पगवाहां
वांसा हाक हुई खग वाहां।

६९—मीरां = मीरों में से। वहै० = मन की इच्छा के अनुसार चलनेवाला। चांखां रै = जोधपुर से २ कोस दूर एक गाँव का नाम। मोटां त्रास = बड़ों का भी भय।

७०—माह = माघ मास में। लखे० = सेना का बखेड़ा देखकर। लूणावास = एक गाँव का नाम है। उताळौ = त्वरा सहित। तेजसी = तेजसिंह चांपावत।

७१—आवे = आकर। ऊतरियौ = ठहरा। अत धरियौ = अत्यंत बल धारण किया। इसड़ी ताल = इसी अवसर पर। पाळहर = चांपावत। दुयणां = शत्रुओं की। कुंत = भाले।

७२—वागां ली = घोड़ों की लगामें हाथों में लीं (रण से निकलने के लिये)। विचित्रां = यवनों ने। पगवाहां = पैदल। वांसा = पीठ पर। हाक = वीर शब्द। खगवाहां = तलवार चलानेवाले राठोड़ों की।

मारग साथी पग पग मेले
पमगां पार हुवण पग पेले ॥७२॥

छळ मारू वाधे बळ छीजै
लीजै झड़प किता लूटीजै ॥
मीरां गयौ डोहळी मांहै
साकुर पगां तणौ बळ साहै ॥७३॥

अतरै मुकन कमँध आपड़ियौ
चंचळ महित निजर खळ चढियौ ।
आगे वधे महाभड़ आया
सांम जतन मन कांम सवाया ॥७४॥

कीधौ कांम वधे नवकोटां
चूंच पकड़ लीधौ चड़ चोटां ॥

मारग० = मार्ग में साथवालों में पैंड पैंड में छोड़ने गए । पमगां० = पार होने के लिये घोड़ों को पैरों से प्रेरित किया ।

७३—छळ = युद्ध में । बळ छीजै = शत्रु बल से क्षीण हुए । लीजै झड़प = कितनों को पकड़ लेते हैं । लूटीजै = लूटते हैं । मीरां = मीर । डोहळी मांहै = डोहली गाँव का नाम है । साकुर० = घोड़ों के पैरो का बल साधकर अर्थात् घोड़ों को दौड़ाकर ।

७४—अतरै० = इतने में मुकनसिंह राठौड़ ने उसे पकड़ा । चंचळ = घोड़ा । सांम जतन = स्वामी के यत्न की मन में कामनावाले । वधे = आगे बढ़कर । चूंच० = शत्रु की चोंच पकड़ ली । चड़ चोटां = प्रहार खाकर ।

दुहा

सहत नगारै मीरखां, सौ घोड़ां नीसांण।
मारु राव तेजल मुकन, वाधौ खळ बळवांण ।।७५।।

इति श्री महाराज राजराजेश्वर श्री अभैसिंघजी रौ राजरूपक मैं मांकलसर री लड़ाई नै चांपावतां मीरां आपड़ियौ सौ विगत आई ।।

दुहा

कीधौ चौथ विखायतां, कितां इजारौ कीध।
केतांइ झाली चाकरी, दूँण इजाफा दीध ।।७६।।
आयौ फेर इकावनौ, काजम लह्यौ निदान।
नायब हुवौ नबाब रै, खित पुड़ लसकर खान ।।७७।।
ज्यास वँधे उर सेवगां, ज्यां ज्यां वधे अजीत।
अकबर रां मिनखां तणी, साह न भूलै चीत ।।७८।।
एम सुजायत खान नूं, लिखियौ अवरँग साह।
झूठ सफीखां झालिया, सौ क्यां हुवै निवाह ।।७९।।

७५—सहत० = नक्कारा सहित मीरखां को मरुदेश के राव तेजसी और मुकनसिह ने पकड़कर बाँध लिया और उसके १०० घोड़े और नक्कारा ले लिया।

७६—चौथ = वहतीवान का चतुर्थांश। विपतवालों का। कितां = कितनों ही ने। इजारौ = ठीका। झाली = कबूल की। दूंण = द्विगुण।

७७—इकावनौ = १७५१ का वर्ष। काजम = काजम बेग। लह्यौ = पाया। निदान = प्रधानता। खित पुड़ = पृथ्वीतल पर।

७८—ज्यास = विश्वास। ज्यां ज्यां = ज्यों ज्यों। वधे = बढ़ते हैं। अकबर रा० = शाहजादा अकबर के मनुष्यों (स्त्री-पुत्रादि) की। चीत = स्मृति, चिंता।

७९—एम = इस तरह। झालिया = पकड़ा (दुर्गदास को)। सौ = यह। क्यां = कैसे। निवाह = निर्वाह।

मेरे चाकर तो जिसा, दुरग तुमारे देस ।
जतन हमारी सरम कौ, लिखियौ वेग सँदेस ॥८०॥
कै धारौ हुरमां जतन, मारौ दुरगादास ।
कै चूड़ी साहौ करां, आवौ मेरे पास ॥८१॥

छप्पय

सुण नबाब पत जाब, ताब नां सहे उरंतर
हुय बे आब सिताब, प्रांण विण आब मच्छ पर ।
वस चित चिंत विसेख, तरैं मुनसी तेड़ाया
तन बिहवळ दुख तलफ, कळप उपजे निज काया ।
लसकरी खान बळ हीन लख, अमरख परख उठावियौ
कायथ प्रवीण मन देव सां. बाळकिसन बोलावियौ ॥८२॥

८०—तो जिसा = तेरे जैसे । सरम कौ = लज्जा का ।

८१—कै = या तो । धारौ = रखो । हुरमा जतन = हुरमों को यत्नपूर्वक । कै = या । साहौ = धारण करो । करा = हाथों में ।

८२—नबाब = शुजायतखान । पत = (पति) बादशाह की । जाब = आज्ञा । ताब = ताप । सहे = सहन करता है । उरंतर = हृदय में । बे आब = तेजहीन । सिताब = शीघ्र । प्रांण विण = प्राणहीन । विण आब = जल बिना । यहाँ 'विण' शब्द उभयान्वयी है । मच्छ पर = मत्स्य के समान । वस चित = चित्त में बसती है, रहती है । तेड़ाया = बुलाया । तन = शरीर । दुख तलफ = दुःख से तड़पता है । कळप = संकल्प विकल्प । काया = (काय) शरीर में । लसकरी खान० = लश्करीखान को । अमरख = (अमर्ष) क्रोध करके । परख = परीक्षा करके । उठावियौ = पदच्युत किया । प्रवीण मन = नीतिवेत्ता, चतुर । देव सां = देवता के समान ।

दुहा

मुनसी कयौ नबाब सूं, जीव रहै सु जवाब।
जवनां पति कांपै जिसी, मेली अरज सिताब ॥८३॥
हजरत कौ आयौ हुकम, मैं सिर लियौ चडाय।
दौडूं दुरगादास पर, जोडूं सेन सवाय ॥८४॥
एक अरज मेरी अवर, सुणिये औरँगसाह।
उर मैं डर अत आपरौ, सो तिण कवण सलाह ॥८५॥
हुरम रहै वस हिंदवां, मैं जाऊं अणचींत।
कतल कबीला जो करै, तो वस नाहिं प्रतीत ॥८६॥
जेज न राखूं जंग की, अब औ पाऊं जाब।
चिंत लिखी सुरतांण नूं, हुवौ न चिंत नबाब ॥८७॥

छप्पय

सुण जबाब पतसाह, जाब भेजियौ सताबी,
भली अरज लिख दई, सबै मिट गई खराबी।

८३—जीव रहै = जिससे प्राण बचे। जवनां पति० = बादशाह कंपित हो जैसी अर्जी भेजी। अर्जी का मजमून।

८४—हजरत० = हजरत का हुक्म आया वह मैंने सिर पर चढ़ा लिया है।

८५—अवर = और। सो० = उसके लिये क्या सलाह देते हैं?

८६—हुरम० = हुरम हिंदुओं के अधीन है। अणचींत = अचानक। कतल कबीला = हुरमों को कतल कर दे तो वश की बात नहीं है।

८७—औ = यह। जाब = आज्ञा। चिंत = सोचकर। सुरतांण नूं = बादशाह को।

दुरंगदास राठौड़, द्रव्य चाहै सौ दीजै
हुरमां मूझ हजूर, कुसळ आवै सो कीजै।
आवियौ हुकम जोधांण इब, द्रढ सुरतांण दिलेस रौ
हित मूझ सवायौ होयबा, कर चाह्यौ दुरगेस रौ ॥८८॥

समाचार सुरतांण, सुणे हरखियौ सुजायत
धरी वात धांरवा, जेझ विसरी जिण सायत।
दुरग पास मेलिया, हेत लिख ज्यास निहोरौ
नागर ईसरदास, साथ गिरधर साचोरौ।
विप्र गया बिन्हैं कहिया वयण, अत आरत उनमांन रा
धर कांन दुरग चित धारिया, पत्र सुजायतखांन रा ॥८९॥

दुहा

द्रढ कर वात दुरंग सूं, विप्र आया तिण वार।
ऊपर आयौ बावनौ, सब वरसां सिणगार ॥९०॥

८८—मूझ हजूर = मेरी हजूर में। इब = अब। द्रढ = पक्का। मूझ = मेरा। होयबा = होने के लिये। चाह्यौ = मनचाहा।

८९—सुरतांण = बादशाह के। जेझ = देरी। जिण सायत = उसी क्षण। मेलिया = भेजे। हेत = प्रेम से। ज्यास = विश्वास। निहोरौ = दिलाकर। नागर = नागर जाति का ब्राह्मण। साचोरौ = साचोरा जाति का ब्राह्मण (साचोर देश के संबंध से साचोरा कहलाते हैं)। वयण = वचन। अत आरत = अत्यंत दुःख भरे। चित धारिया = चित्त मे रखे।

९०—तिण वार = उस समय। बावनौ = १७५२ का वर्ष। सब० = समस्त वर्षों का शृंगार-रूप।

उदैसिंघ लखधीर तण, रहियौ राणै पास।
बीजा साजा राठवड़, राजा पास निवास ॥९१॥
वेस वधंती सांमरी, वाधे बुद्ध विसेख।
रीत सबै नृप नीतरी, उर धारी अवरेख ॥९२॥
मारू फागण मास मैं, अजन हुवौ असवार।
वळ लीजै आडैवळै, आवै मिळे अपार ॥९३॥
गूजर खंड निबाब ग्यौ, लसकर खां जोधांण।
दळ राजा सिर दौड़ियौ, जवन भुजा बळ जांण ॥९४॥
नाळ ऋपत कुरमाळरी, आयौ भाळ जवन्न।
साभ्क तुरंगां भीड़ियां, श्री महाराज अजन्न ॥९५॥
राव न धीरै एक पळ, चाव लड़ेवा चीत।
फळ साहे दळ फोरिया, अस तोरिया अजीत ॥९६॥

९१—लखधीर तण = लखधीर का पुत्र चापावत उदयसिह। बीजा = दूसरे। साजा = अच्छे।

९२—वेस = वय, अवस्था। अवरेख = सोचकर।

९३—मारू = मारवाड़ का। अजन = अजीतसिहजी। वळ = सेना। आडैवळै = असंख्य, आबू के श्रेणी-पर्वतों को आडावळा कहते हैं। आवै = आकर। मिळे = शामिल हुए।

९४—गूजर खंड = गुजरात में। ग्यौ = गया। निवाब = नवाब शुजायतखाँ। दळ० = राजा की सेना के ऊपर। दौड़ियौ = आक्रमण किया। जवन = लश्करखान ने।

९५—नाळ = पहाड़ की घाटी। ऋपत० = राजा यवन को देखकर कुरमाल की घाटी में आया। साभ्क = तैयार करके। भीड़िया = कवच पहनकर।

९६—धीरै = देर करता है। एक पळ = एक क्षण। चाव = उत्सुकता, उत्साह। लड़ेवा = लड़ने का। चीत = चित्त में। फळ = भाले। साहे = धारण करके। फोरिया = पीछे हटाया। अस = घोड़ों को। तोरिया = चलाया।

खंची वागां खान दळ, मची कळ अप्रमांण।
वग्गी हक्क बहादुरां, नभ लग्गी केवांण ॥९७॥
राजा भड़ां हकारिया, तोले खग्ग करग्ग।
उर पैलां लग्गी तिकर जग्गी अग्ग सिळग्ग ॥९८॥

छप्पय

मही करन द्रुतमन्न, सुतन दुरगेस ईस छळ
वध बाजी ओरिया, काज नृप लाज धरे कळ।
जैतहरौ छळ अजण, कोप मंडण वीकावत
मेड़तियौ दलराम, हाम ऊधरी अजावत।
मुख इतां धणी छळ मारवां, मुहर अणी वध मेळिया
जुध करण जैत नांमौ जरू, भड़ां अमांमा भेळिया ॥९९॥

९७—खंची वागां = घोड़ों की लगामें खींची। मची = जोर से शुरू हुई। कळ = युद्ध, लड़ाई। वग्गी हक्क = वीर शब्द हुआ। नभ = आकाश में। केवांण = तलवार।

९८—हकारिया = चलाए। तोले = तोलकर। खग्ग = खड्ग को। करग्ग = हाथ में। उर पैलां = शत्रुओं के हृदय में। जग्गी = प्रबल, प्रज्वलित। अग्ग = अग्नि। सिळग्ग = प्रदीप्त होकर।

९९—मही करन० = महकरण दुर्गदास का पुत्र। द्रुतमन्न = तेज मनवाला। ईस छळ = स्वामी के वास्ते। वध = आगे बढ़कर। बाजी = घोड़ों को। आरिया = शत्रुसेना में चलाया। काज नृप = राजा के वास्ते। लाज धरे = कुल की लज्जा धारण करके। जैतहरौ = जैतावत राठोड़। छळ = युद्ध में। मंडण वीकावत = वीका का पुत्र मंडण। हाम ऊधरी = बड़े उत्साहवाला। अजावत = अजयसिंह का पुत्र मेड़तिया दलराम। मुख मारवां = मारवाड़ों में मुख्य। इतां = इन्होंने। मुहर अणी = सेना के आगे। वध = बढ़कर। मेळिया = घोड़ों को शत्रुओं से मिलाया। जुध = युद्ध में। करण जैत नांमौ = जय का नाम करने के लिये। जरू = जय। अमांमा = अप्रमाण। भेळिया = शत्रुओं में जा दाखिल हुए।

दुहा

करनहरै फिर देवक्रन, ऊदै रूप समाथ।
केहर कै सूरै कियौ, भाटी वध भाराथ ॥१००॥
मुख वांनेत महीपती, करन अनै चंद्रभांण।
कियौ सक्रोधां सांम कज, यां जोधां आरांण ॥१०१॥
कूंप भाव फत्तौ किसन, भांण रूप हरनाथ।
अजन तणौ छळ ईखतां, भल लीधौ भाराथ ॥१०२॥
सबळौ गोयँददास रौ, जोधो आग वज्राग।
अजन तणौ मुख अग्गळी, खळां हटाया खाग ॥१०३॥
वधियौ महवेचौ विजौ, सारां सूं अवसांण।
खैँग लसक्करखान रा, प्रोया सेल प्रमांण ॥१०४॥
ऊहड़ वागौ आसुरां, भोज अनै भगवान।
पण निरवहियौ पाट छळ, भुज ग्रहियौ असमांन ॥१०५॥

१००—करनहरै = करणोत राठोड़। देवक्रन = देवकरण। ऊदै रूप = ऊदावत रूपसिंह। समाथ = समर्थ। केहर० = केसरीसिंह के पुत्र सूरसिंह भाटी ने। भाराथ = युद्ध।

१०१—मुख महीपती = राजा के आगे। वानेत = वीरपन का चिह्न रखनेवाला। या = इन। आरांण = युद्ध।

१०२—कूंप = कूंपावत राठोड़। ईखतां = देखते। भल = अच्छा। लीधौ भाराथ = युद्ध किया।

१०३—जोधो = जोधा राठोड़। आग = अग्नि। वज्राग = बड़वानल के समान। मुख अग्गळी = मुख के आगे। खळां = शत्रुओं को।

१०४—वधियौ = आगे बढ़ा। सारां सूं अवसांण = तलवारों के दाव से। खैंग = घोड़ों को। प्रोया = वेधे। सेल प्रमांण = पहाड़ जैसे।

१०५—वागौ = लड़ा। पण = प्रण, प्रतिज्ञा को। निरवहियौ = निबाहा, पूर्ण किया। पाट छळ = राजगद्दी के वास्ते। ग्रहियौ = थाँभा।

खूमांणां ग्रहियां खड़ग, सुंदर नै माहेस।
आगळ दळ अगजीत रै, विढ भागा दुरवेस ॥१०६॥

छप्पय

मेळ थयां मृगराज, हूँत गजराज दहल्लै
गुरड़ पंख गज्जियां, झाट विख अंख न झल्लै।
जोत चंद्र ऊजळी, मिटै दुड़ियंद प्रगट्टां
ग्रीखम भाजे गात, अंब वरसात उलट्टां।
इण भांत अणी मिळतां असुर, गा किताई पड़िया गरै
दहवाट थया जुड़ खान दळ, एक धकै अजमल्ल रै ॥१०७॥

दुहा

आयौ वीजापुर अजौ, भांजे लसकरखान।
लग्गी धाक मळेछ दळ, वग्गी डाक जिहांन ॥१०८॥

इति श्री राजरूपक में महाराज श्री अजीतसिंघजी लसकर खान नूं भगायौ सो विगत आई।

१०६—खूमांणां = सीसोदियों ने। ग्रहियां खड़ग = तलवार लिए। आगळ दळ = सेना के आगे। विढ = लड़कर। दुरवेस = यवन।

१०७—मेळ० = सिंह से भेट होते गजराज भयभीत हो जाता है। गुरड़० = गरुड़ के पंख की गर्जना होने से सर्प उसके वेग अथवा प्रहार को सहन नहीं कर सकता। जोत० = चंद्रमा का उज्ज्वल प्रकाश होने पर तारे प्रकट में छिप जाते हैं। ग्रीखम० = ग्रीष्म ऋतु का अंग टूटने पर (ग्रीष्म जाने पर)। अंब = आकाश में। उलट्टां = उलटती है, उमड़ आती है। अणी मिळतां = सेना के मिलने पर। गा पड़िया गरै = मर गए। दहवाट थया = नष्ट हो गए। एक धकै = एक ही धक्के (हल्ले) से।

१०८—वीजापुर = एक गाँव का नाम। भांजे = हराकर। धाक = भय। डाक = डंका बजा।

गाथा चौसर

साह सुणे राजा सरसांणौ
वहै प्रताप आप बळवांणौ।
अकबर घर आंणण अकुळांणौ
भ्रम तिण तन मन मेछ भ्रमांणौ ॥१०६॥
वेगा दूत दिलीपतवाळा
आवै गूजर खंड उताळा।
चाहे दुरग तकूं तजि ताळा
समपे धन मणि मुकत विसाळा ॥११०॥

दुहा

महाराजा अजमाल रै, उर किम व्यापै एह।
पातसाह भ्रम पूरियौ, दाझै साजी देह ॥१११॥
तुरक सुजायतखान री, वात करां सूं वात।
दाखे लिखै दुरग्ग नूं, पड़वज संझ प्रभात ॥११२॥

१०६—साह० = बादशाह ने सुना कि राजा जोर पकड़ गया है। वहै० = प्रताप को धारण किए स्वयं बलवान् हो गया है। अकबर = अकबर को। आणण = लाने के लिये। अकुळांणौ = व्याकुल हुआ। भ्रम तिण० — उस भ्रम से शरीर और मन भ्रात हो गया।

११०—वेगा = जल्दी। गूजर खंड = गुजरात में। उताळा = त्वरा से। चाहे० = दुरगदास को देखना चाहा। तजि ताळा = देरी को त्याग कर, जल्दी। समपे = दिया। विसाळा = बहुत।

१११—महाराजा० = अजीतसिंहजी के मन में यह कैसे व्याप सकती है जिस भ्रम से बादशाह भर गया था। दाझै = जलती। साजी = जीवित।

तद दुरगै आसै तणै, आरत लख असपत्त।
आरत अकबर साह री, काढी देस विपत्त ॥११३॥
हाली दक्खण देस नूं, जोए गढ जोधांण।
रहियै पास दुरग्ग रै, सुत अकबर सुरतांण ॥११४॥
बीजापुर पाधारिया, महाराजा अजमाल।
साथे दळ बळ आगला, जोधा नै रिणमाल ॥११५॥
रांण अनै अमरेस रै, वळे प्रगट्यौ वेध।
मन फाटां खाटां चितां, खूंटे दाध न खेध ॥११६॥

छंद बेअक्खरी

वळे तांम दीवांण विचारी
अजमल बेळ जिसौ अवतारी।
जैसी तुरत अठी दिस जांणी
पायां ढाळ चलै जिम पांणी ॥११७॥

११३—तद = तब। आरत = (आर्ति) दुःख। असपत्त = बादशाह का। काढी = निकाल दी। देस विपत्त = जो देश के लिये विपत् रूप थी।

११४—हाली = चली। जोए = देखकर। सुत अकबर = अकबर का पुत्र दुर्गदास के पास रहा।

११५—बीजापुर = एक गांव का नाम। पाधारिया = गए। रिणमाल = रिणमलोत राठौड़।

११६—रांण० = राणा जयसिह जी और महाराजकुमार अमरसिंह जी के। वळे = फिर। वेध = झगड़ा। मन फाटौ = मन फटने। खाटां चितां = मन में खटाई अथात् द्वेष उत्पन्न होने पर। दाध = दाह। खेध = विरोध।

११७—तांम = तब। दीवाण = महाराणा ने (मेवाड़ के राजा एकलिंग महादेव माने जाते हैं इसलिये उदयपुर का राणा दीवांण कहलाता है।) बेळ जिसौ = सहायता करे जैसा। अठी दिस = इधर (अजीतसिह जी) की तरफ। पायां ढाळ = ढालूपन पाकर।

बंधव अनुज गजै री बेटी
लाज सील गुण प्रीत लपेटी।
वर दळ लख धर मेळ सवायौ
प्रकट तिकण रौ लगन पठायौ ॥११८॥
श्रीफळ रतन जड़ित सुखदाई
सैंधव दस दोय गयँद सवाई।
नरपत चढियौ हेत नवीनै
हुवौ व्याह सुज जेठ महीनै ॥११९॥
मिळतां रांण घरे महाराजा
ऊछव प्रगटे मिटे अकाजा।
जिती वस्त नित अम्रत जोड़ां
राजै नव नव भांत रसोड़ां ॥१२०॥

दुहा

आगै देवळियै तणौ, थो ग्रहियौ नाळेर।
परणेवां जोधांपती, मांगी सीख सवेर ॥१२१॥

११८—बंधव० = छोटे भाई गजसिंह की बेटी। लपेटी = युक्त। वर = दूलह। दळ = और सेना। तिकण रौ = उसका। लगन पठायौ = विवाह-लग्न भेजा।

११९—श्रीफळ = नारियल। सैंधव = घोड़े। गयँद = (गजेंद्र) हाथी। नरपत = अजीतसिंह जी। चढियौ = बरात सजाकर गए। हेत नवीनै = नवीन प्रेम के साथ। सुज = वह।

१२०—रांण घरे = महाराणा के घर में। ऊछव = उत्सव। अकाजा = अकार्य, खराबी। जिती वस्त = जितनी वस्तु है सब। अम्रत जोड़ा = अमृत के समान है। रसोड़ां = रसोइयों में।

१२१—आगै = प्रथम। देवळियै तणौ = देवलिया राज्य का। थो ग्रहियौ = लिया था। परणेवां = ब्याह करने के लिये। सवेर = प्रात:काल में।

वग्गौ राग खँमायची लग्गौ केसर बोह।
ब्रंदावन वैसाख पर, सोहे जांन ससोह ॥१२२॥
आसाढाऊ सुद नवमि, मंगळ धवळ सप्रीत।
फिर देवळियै परणिया, श्री महाराज अजीत ॥१२३॥
सूरै केहर सीह रै. माडेचै वड मन्न।
देवळियै गूंडौ कियौ, धणी थयौ सुप्रसन्न ॥१२४॥

इति श्री महाराज श्री अजीतसिंहजी प्रथम श्री उदैपुर देवळियै परणीजिया सो विगत कही ॥

दुहा

एकलिंग आयौ अजन, मिळे रांण जयसाह।
हुई रीत मनुहार री, सुर तिण करै सराह ॥१२५॥
दळ रहिया सुख पंच दिन, कीधौ कूच कमंध।
उदियासिंघ मनावियौ, मिळ आवियौ सबंध ॥१२६॥
सांधै सीरोही तणौ, नांमी लिखमावास।
राजा ऊतारौ कियौ, परगह सहित प्रकास ॥१२७॥

१२२—वग्गौ = बजा। बोह = सुगंध। ब्रंदावन वैसाख पर = वैशाख में (फुलवाइ के कारण) वृंदावन शोभा देता है। जांन = बरात। ससोह = शोभा सहित है।

१२३—आषाढाऊ = आषाढ मास की। धवळ = उज्ज्वल।

१२४—सूरै० = केसरीसिंह के पुत्र सूरसिंह ने। माडेचै = भाटी। वड मन्न = उदारचित्त। गूंडौ = आत्मरक्षा का स्थान।

१२५—तिण = उसकी। सराह = प्रशंसा।

१२६—उदियासिंघ = उदयसिंह सीरोही का राव।

१२७—सांधै० = सीरोही का संबंध किया। लिखमावास = महल का नाम। ऊतारौ कियौ = निवास किया। परगह = परिग्रह।

वरस तेपनै वीततां, अर खीजतां असेख।
अजन तणा पत ऊमरा, राखे जतन विसेख ॥१२८॥
रांणी ओ जसराज री, मात वधायौ मौड़।
दोनूं महल हजूर मैं, राज टहल राठौड़ ॥१२९॥
चक्रवत लागां चौपनै, अजन हुवौ असवार।
राजा आयौ राड़वड़, मन भायौ संसार ॥१३०॥
भंडारी धारी सरम, वीठल आसकरन्न।
मौहणौत सांगौ सुमत, पूछे न्रपत अजन्न ॥१३१॥
मांनीजै महाराज रै, खीची सिवौ हजूर।
जतन ग्रहै भड़ राठवड़ विघन रहै सब दूर ॥१३२॥
दिन दिन मुरधर देस मैं, वात वधै विसतार।
हुई सुपारस दुरग री, औरंगसाह दुवार ॥१३३॥

१२८—तेपनै = १७५३ का वर्ष। अर = (अरि) शत्रु। खीजता = क्रुद्ध होने से। असेख = (अशेष) समस्त। ऊमरा = उमरावों ने।

१२९—मात = माता ने, जो पीहर में थीं। वधायौ = स्वागत किया। मौड़ = सेहरा, जो विवाह के समय सिर पर बाँधा जाता है। दोनूं महल = दोनों रानियाँ (एक उदयपुर की दूसरी देवलिया की)। राज = राजा (सीरोही का)। टहल = सेवा में है। राठौड़ = अजीतसिंह जी के।

१३०—चक्रवत = (चक्रवर्ती) राजा। चौपनै = १७५४ के आरंभ में। राड़वड़ = एक गाँव का नाम। मन भायौ = मन में अच्छा लगा।

१३१—भंडारी० = भंडारी वीठल और आसकरण। धारी सरम = लज्जित हुए। मौहणौत० = तब महाराजा ने मौहणौत सांगा को पूछा।

१३२—मांनीजै = कृपापात्र है। जतन ग्रहै = यत्न से रखते हैं। राठवड़ = राठौड़।

१३३—वात वधै = वार्ता (शाहजादा अकबर की स्त्री-पुत्रों के विषय की) फैली। दुवार = द्वार पर।

पुत्री अकबर साह री, हुरमां नाजर दास।
पूछी औरँग प्रीत सूं, पूगी जिण दिन पास ॥१३४॥
पांन खुराकां चीज पै, आदर अदब प्रमांण।
दुरग किसी विध मोकळी, क्यां पाछे सुरतांण ॥१३५॥
यां सारी दाखी अरज, ज्यां राखो दुरगेस।
प्रीत तणै गुण भीजियौ, सुण रीझियौ दिलेस ॥१३६॥
पंचहजारी मैं करूं, खीज धरूं सब दूर।
जब लावै सुरतांण नूं, आवै दुरग हजूर ॥१३७॥
सौ वातां सुरतांण री, नित प्रत लिखै निबाब।
दीजै कागळ दुरँग नूं, लीजै रोज जवाब ॥१३८॥
राजा छोड़े राड़वड़, चढ आयौ हित चाह।
कुंडल हंदां वंकडां, वडां गिरंदां मांह ॥१३९॥
कमधज ऊदौ कोरटै, गौ पौंहचाय नरेस।
मिलण तणी दुरगेस थी, बंधी वात दिलेस ॥१४०॥

१३४—पूगी = पहुँची।

१३५—मोकळी = भेजी। क्या = क्यों। पाछे = पीछे।

१३६—या = इन्हों (स्त्री और कन्या) ने। सारी = सब। दाखी = कही। ज्यां = जिस तरह। प्रीत तणै० = प्रीति के रस में भीग गया। रीझियौ = प्रसन्न हुआ। दिलेस = दिल्ली का स्वामी।

१३७—खीज = क्रोध।

१३८—सौ वातां = यह वार्ता। कागळ = कागज, पत्र।

१३९—राजा० = राजा राड़वड़ को छोड़कर। कुडल हंदां = कुंडल के (कुडल सिवाणा के पास पहाड़ों से घिरा हुआ ग्राम है)। वंकड़ां = वक्र। गिरदा = पहाड़ों के।

१४०—कमधज० = राठौड़ उदयसिंह राजा को कुंडल में पहुँचाकर कोरटे चला गया। मिलण० = बादशाह ने दुर्गादास से मिलने की वार्ता की।

जो दुरगै द्रब मांगियौ, प्रथम न दीनौ साह ।
च्यार किसत कीधी चलू, दिक्खण हंदै राह ।।१४१।।
पड़ियौ भ्रम पतसाह नूं, औ दुरंगौ अप्रमांण ।
दळ बंधे जाये दिलो, संग करै सुरतांण ।।१४२।।
दुरगै सूं असपत डरै, नह वीसरै फिसाद ।
आवै औरँगसाह नूँ, अगली मुहरां याद ।।१४३।।
दुरग चलाया दखण नूं, संग लियां सुरतांण ।
साहि जादौ छायौ भरम, आयौ गढ जोधांण ।।१४४।।
लसकरखां हइयात खां, नौरँगखान पठांण ।
एता समुहा आविया, चिसती आद जवांण ।।१४५।।
श्री महाराज अजीत नूं, लिख मेलियौ नवाब ।
जोधांणे लीधे भड़े, आवौ चडे सिताब ।।१४६।।
आयौ तद राजा अजौ, मेळे दळ अणमंध ।
साथे भार निवाहणा, वीस हजार कमंध ।।१४७।।

१४१—दिक्खण हंदै = दक्षिण के । राह = मार्ग में ।

१४२—पड़ियौ० = बादशाह को शंका हुई कि कहीं ऐसा न हो जाय कि दुर्गदास सुरताण को संग ले, सेना इकट्ठी करके, दिल्ली पर न चला जाय ।

१४३—वीसरै = विस्मृत होता है, भूलता है ।

१४४—साहिजादौ० = शाहजादा को भ्रम हो गया इसलिये वह उसके साथ दक्षिण नहीं गया, जोधपुर आया ।

१४५—एता = इतने । समुहा = सामने आए । जवांण = वेग से सिपाही ।

१४६—नवाब = शुजायत खाँ ने । जोधांणे० = सुभटों को लेकर जोधपुर आओ ।

१४७—मेळे दळ = सेना एकत्र करके । अणमंध = असंख्य । भार निवाहणा = कार्य साधनेवाले ।

महाराजा अजमाल सूं, साहिजादौ सुरतांण।
मिळियौ वस हुय मुग्गलां, सलावास नँदवांण ॥१४८॥
आयौ जोधांणे अजौ, थोभंतौ असमांन।
साथे साहिजादो दुरग, संग सुजायत खान ॥१४९॥

छप्पय

महाराजा दळ मेळ, पौळ जोधांण पधारे
महिख पंच मैमत्त, सगत पोखी खग धारे।
पेखे पुर वासियां, धणी अगजीत धरा रौ
जादम गोयँद तणै, वाग कीधौ ओतारौ।
पेखियौ सहर जोधांण पत, सब जण धणी सँपेखियौ
वप आभ परख च्यारूं वरण, लाभ नयण पण लेखियौ ॥१५०॥
तळहट्टी सुरतांण, रहे जोधांण महल्ले
अजन प्रांण तप अकळ, देख खुरसांण दहल्ले।

१४८—सलावास-नँदवाण = दोनों गाँव हैं। जोधपुर से ४ कोस दक्षिण में हैं।

१४९—थोभतौ = थामता हुआ। साथे० = शाहजादा के साथ दुर्गादास और नवाब शुजायत खाँ थे।

१५०—दळ मेळ = सेना एकत्र करके। पौळ = दरवाजे पर। पधारे = आए। महिख = (महिष) भैंसों से। मैमत्त = मदमत्त। सगत = (शक्ति) देवी को। पोखी = पुष्ट किया, पूजा। खग धारे = तलवार से काटकर। पेखे = देखा। अगजीत = अजीतसिंह जी। धणी धरा रौ = भूमि का मालिक। जादम गोयँद तणै = गोविंददास भाटी के। वाग० = बाग में डेरा किया। पेखियौ = देखा। जण = जन। सँपेखियौ = देखा। वप० = शरीर की कांति को देखकर। लाभ० = नेत्र पाने का लाभ माना।

१५१—तळहट्टी० = शाहजादा जोधपुर के तलहटी के महलों में ठहरा। अजन० = अजीतसिंह जी के पूर्ण बल और तप को देखकर यवन भयभीत हो

हिंदुवांण असुरांण, मिळे जोधांण समेळा
नृप निबाब निरखियौ, जिसो मंडे ऊखेला।
भड़ आंण भांण ऊगै भिळे, फौज मिळे निस फज्जरां
जळ वेळ वधै सामुंद्र ज्यां, मेळ दळां कमधज्जरां ॥१५१॥

एक दिवस अगजीत चढे ढुळतां सिर चम्मर
देखण सहर सुदेस, वळे पेखण मंडोवर।
मुड़े लोक बाजार, नूर संसार निरक्खे
काळ रूप केवियां, प्रजा रखवाळ परक्खे।
देखे अमीर अणधीर द्रग, नरपत रूप अनंग रै
सब कहै न को अजमाल सम, उवर साल अवरंग रै ॥१५२॥

चौसर

द्रुम समूह सम सोभा सुंदर
मुरधर पत दीठौ मंडोवर।

गए। जिसो० = उपद्रव और बखेड़ा करे जैसा। आंण = आकर। भांण ऊगै = सूर्य के उगते, प्रतिदिन। भिळे = संयुक्त होते हैं। निस फज्जरां = रात-दिन। जळ० = जैसे समुद्र में जल की तरगें बढ़ती हैं। मेळ० = वैसे राठोड़ों की सेना शामिल होती है।

१५२—ढुळतां सिर चम्मर = सिर पर चमर होते। वळे = फिर। पेखण = देखने के लिये। मंडोवर = मारवाड़ की पुरातन राजधानी, जोधपुर से उत्तर में ३ कोस। मुड़े = वापिस लौटकर। नूर = कांति। निरक्खे = देखते हैं। केवियां = शत्रुओं का। परक्खे = देखा। अणधीर = धैर्य-रहित। द्रग = नेत्र। अनग रै = कामदेव के। को = कोई भी। उवर = दूसरा। साल = शल्य।

१५३—द्रुम० = महाराजा का वन के रूपक से वर्णन है। शोभा और

मवसर तिकां कुसम फळ मंजर
साख प्रसाख सरूप सुरंतर ॥१५३॥
अंब आद् वृख जात अपारां
आप रूप किर भार अठारां ।
सुपह समेत भडां मिळ सारां
राजविपन जोयौ राजारां ॥१५४॥

दूहा

आद् मँडोवर ईखियौ, उर प्रगट्यौ आणंद ।
ऊगै रवि जोयौ अजै, बीजौ बाळ समंद ॥१५५॥
रोज सिकारां खेलणौ, देखै बाग तड़ाग ।
हूँकळ दळ गज हैवरां, अमरख नरां अथाग ॥१५६॥
मिळे सुजायत मंत्रियां, उर मंडियौ विचार ।
ऊपर दिल्ली अजन री, फौजां हिलो अपार ॥१५७॥

सुंदरता द्रुम-समूह है । मवसर० = मौसर अर्थात् दर्शन का अवसर है वही पुष्पफल-मंजरी हैं । साख० = देवता के समान स्वरूप ही शाखा-प्रशाखा है ।

१५४—अंब० = आपका रूप अर्थात् सुंदरता ही आम्र आदि असंख्य अठारह भार वनस्पति है । सुपह० = राजाओं सहित समस्त भटों ने राजा-रूप वन को देखा ।

१५५—आद = प्रथम । ईखियौ = देखा । ऊगै रवि = प्रतिदिन । जोयौ = देखा । बीजौ = दूसरा । बाळ समंद = तालाब और उसका बाग ।

१५६—तड़ाग = तालाब । हूँकळ = शोर । हैवरां = (हयवर) हाथियों का । अमरख = अमर्ष, गुस्सा । अथाग = अपार ।

१५७—मिळे० = शुजायत खाँ ने अपने मंत्रियों से मिलकर विचार किया । ऊपर० = अजीतसिंह की अपार सेना दिल्ली पर चली ऐसा समझो ।

मिळवा खान अजन्न सूं, प्रात हुवौ असवार ।
रजवाइत मुनसफ तणी, मिळ दीनी तिण वार ॥१५८॥
खांण सिवांणा देस री, रसता चौथ सुरंग ।
धर साचोर थिराध सम, गढ जाळोर दुरंग ॥१५९॥
पोस मास पख चांनणै, कळा वधंती बीज ।
नृपत विचारी निरखवा, साह तिवारी खीज ॥१६०॥
जवन सुजायत जेर कर, अजन हुवौ असवार ।
उमरावां सूं अक्खियो, मन राखियौ विचार ॥१६१॥
वार वळी अवरंग री, जग पुड़ कळी न जाय ।
भली भली कहि भूप सूं, फौज चली ठहराय ॥१६२॥

इति श्री महाराज राजराजेश्वर श्री अभैसिंघजा रौ परम जस राजरूपक मैं श्री अजीतसिंघजी प्रथम जोधपुर पधारिया सो विगत एकोनविंश प्रकास ॥१९॥

१५८—रजवाइत = राजापन । मुनसफ तणी = मन्सब । तिण वार = उस समय ।

१५९—खांण = खानें । रसता चौथ = वहतीवान चुंगी का चतुर्थांश । सुरंग = अच्छी । धर० = साचोर और थिराद की भूमि और जालोर गढ़ दिया ।

१६०—पख = पक्ष । चानणै = शुक्ल । कळा वधंती = चंद्रमा की कला बढ़ती । बीज = द्वितीया । निरखवा = देखने का विचार किया । खीज = क्रोध ।

१६१—अक्खियौ = कहा ।

१६२—वार = समय । वळी = फिर गया । जग पुड़ = पृथ्वीतल में । कळी = कलह, उपद्रव ।

दुहा

साथ लियो दुरगेस नूं, गो दिक्खण सुरतांण ।
आयौ भड़ जोखै अजौ, देखे गढ जोधांण ॥ १ ॥
खित जाळोर कमाल खां, ततखिण हुवौ तगीर ।
अजन कणेगढ ईखवा, धरियौ गुंज सधीर ॥ २ ॥
सुभ वेळा आसाढ सुद, दिन पंचमी दुझल्ल ।
गढ जाळोर पधारिया, महाराज अजमल्ल ॥ ३ ॥
आयौ जाळंधर अजौ, सुख ऊपनौ सरस्स ।
सुज तिण ऊपर संपनौ, पंचावनौ वरस्स ॥ ४ ॥
भूपत सेवा भोमिया, आवै मिळे अपार ।
छात्र विजारौ सोनगिर, वात सुणे संसार ॥ ५ ॥
परणीजण पाधारियौ, जेसांणै अगजीत ।
छट्ट ऊजळी छावनै, पख आसाढ सप्रीत ॥ ६ ॥

१—गो = गया । भड़ जोखै = सुभटों को लिए ।

२—खित = (क्षिति) पृथ्वी । तगीर = जब्त । कणेगढ = (कनकगढ़) जालोर । ईखवा = देखने को । गुज = सलाह ।

३—वेळा = मुहूर्त, समय । दुझल्ल = वीर ।

४—जाळंधर = जालोर । सरस्स (सरस) = श्रेष्ठ । सुज = वह । संपनौ = शुरू हुआ ।

५—मिळे = एकत्र होकर । छात्र० = छत्र धारण करनेवाला, राजा । विजारौ = विजय करनेवाला । सोनगिर = (स्वर्णगिरि) जालोर ।

६—परणीजण = विवाह करने को । पाधारियौ = गया । जेसांणै = जेसलमेर । ऊजळी = शुक्ल । छावनै = १७५६ के वर्ष में ।

बेटी रावळ अमर री, लाल कँवर वड लाज।
वाधी रेल प्रवाह री, परणंतां महाराज ।। ७ ।।
अचळ तणै अगजीत छळ, दाखै च्यारूं देस।
गौरहरै गूंडौ कियौ, मेड़तियै कुसळेस ।। ८ ।।
जात्र धरे हळवद्द सूं, राज लोग समसत्त।
नाथद्वारे परसवा, आवी धार वरत्त ।। ९ ।।
त्यां डोळौ त्यारी कियौ, करे अगाऊ वात।
वींद स ओधां चींतियौ, जोधां हंदौ छात ।।१०।।
माधव रित वैसाख मैं, श्री अजमाल अभंग।
राणी झाली परणियौ, घणी खुसाली अंग ।।११।।
आसाढाऊ सूध नम, श्री नरपती अजन्न।
राजा आयौ रोहचै, परणीजण सुप्रसन्न ।।१२।।
फतमल्लौ पीथल्ल रौ, उच्छव धरे अपार।
जैं री पुत्री प्रांमियौ, भूप अजौ भरतार ।।१३।।

७—वाधी = बढ़ी। रेल = विस्तार। प्रवाह री = प्रीति के प्रवाह का।

८—अचळ तणै = अचलसिंह के पुत्र अमरसिंह रावल ने। छळ = लिए। दाखे = दिखलाए। गौरहरे = गाँव का नाम। गूंडौ = निवास। कुसळेस = कुसलसिंह।

९—जात्र धरे = यात्रा करके। राज लोग = रानियाँ। नाथदवारे = द्वारका। परसवा = चरण छूने के लिये। आवी० = नियम धारण करके आए।

१०—त्यां = वहाँ। डोळौ = विवाह के हेतु आई हुई कन्या। वींद = वर। स ओधां = कुलवान्। छात = छत्र।

११—माधव रित = वसंत ऋतु।

१२—रोहचै = गाँव का नाम है।

१३—फतमल्लौ० = पृथ्वीराज का पुत्र फतहसिंह। जैं री = जिसकी। प्रांमियौ = पाया।

सतरै सँमत सतावनै, मासे उत्तम माह।
लाल वडै हित होठलू, पधरायौ नरनाह ।।१४।।
राजकँवरि चतुरेस री, कौसल्या परकार।
आयौ परणी जण अजौ, अज सत चौ अवतार ।।१५।।

छंद हणूंफाल

सुभ दिवस समन ससोह
मिट रयण संध विमोह।
रवि किरण अनुक्रम रेख
वाधंत तेज विसेख ।।१६।।
पख कृष्ण माघ प्रवीत
रित सिसर वंध सुख रीत।
तिथि दसम सुभ दिन तोम
मिळ वार तस सुभ सोम ।।१७।।
नित सुक्रत वाजत नद्द
सुर सपत पंचम सद्द।
जिग बहनि लाल सजीत
रच होठलू सुभ रीत ।।१८।।

१४—माह = माघ। लाल = लालसिंह। वडै हित = अत्यंत प्रेम से। होठलू = शहर का नाम है। पधरायौ = बुलाया।

१५—राजकँवरि = चतुरसिंह की कन्या। कौसल्या परकार = रामचंद्र की माता कौसल्या के सदृश। सत चौ = सत्य का।

१६—समन० = पुष्पों से शोभायमान है। मिट० = रात्रि और संध्या का अंधकार मिट गया है। रवि० = सूर्य की किरणें क्रम से दिखाई देती हैं।

१७—प्रवीत = पवित्र। रित = ऋतु। तोम = (स्तोम) समूह। तस = उसका।

१८—सुक्रत = (सुकृत) पुण्य। नद्द = (नाद) शब्द। सुर सपत = सातों स्वर। पंचम = स्वर-विशेष। बहनि लाल = लालसिंह की बहिन।

रच सदन चित्र सरूप
अति रंग रंग अनूप।
जसवाणि वंदण जीह
उचरंत विरद सईह ॥१६॥
सुभ कंठ राग छत्रीस
सुख ओप जोप सुरीत।
जगमगत तोरण जोत
गण लाल नग ससि गोत ॥२०॥
वण तरणि गांन विसाल
मिळ दीपमाळ मुसाल ॥

छप्पय

आयौ तोरण अजौ, परम सोभा छत्रपत्ती
क्रत जीपक दुत कांम, ओप दीपक आरत्ती।
अतर गुलाल अबीर, सोभ जांनियां सरीकां
चन्नण केसर चरच, कियौ उच्छव मछरीकां।

१९—सदन=घर। जसवाणि=जस की वाणी। वंदण=वंदीजन, स्तुतिपाठक। जीह=जिह्वा से। सईह=यत्न के साथ।

२०—राग छत्रीस=छत्तीस ही राग गाए जाते हैं। सुख ओप=सुख शोभायमान है, छा रहा है। जोप सुरीत=अच्छी रीति के साथ। तोरण जोत=तोरण की कांति। गण०=जिस तोरण में लाल नग (माणिक) और हीरे मोती जड़े हुए हैं।

वण०=जो सूर्य के समान चमकदार बना है। गांन विसाल०=चारों ओर गान हो रहा है।

२१—क्रत जीपक०=कामदेव के कृत्य और कांति को जीतनेवाला। ओप०=दीपक की आरती की शोभा हो रही है। सरीकां=समान, सदृश। चरच=अग पर चर्च कर। मछरीकां=चौहानों ने।

नग हीर कनक निछरावळां, ओपै पग पग आरती
पायौ सज्यास सगतीपुरां, परणायौ जोधांपती ॥२१॥
केसर अगर कपूर, चोक (व) वेदोकत चग्गण
पाटंबर पग मंड, अजौ आयौ राय अंगण।
तरुणि गांन वाजत्र, विधी श्रुत मंत्र सु वांणी
चँवरी मंगळ चार, वार नवकोट वखांणी।
कर ग्रहण आद विध व्याह क्रत, अत समंत्र व्रत ऊधरी
प्रांमियौ सु वर कमँधी पती, राजमती चुतरेस री ॥२२॥

दुहा

जोड़ विराजै वर तरुणि, मोड़ विराजै सीस।
कव आसीसै लोड़ धन, जीवौ कोड़ वरीस ॥२३॥
दीधा अस गज डायजा, कीधा उच्छुव लाल।
परणीजे पाधारियो, जाळंधर महाराज ॥२४॥

इति श्री राजरूपक में श्री महाराजाजी श्री अजीतसिंघजी परणीजण पधारिया सो विगत।

नग=रत्न। पायौ सज्यास=विश्वास आया। सगतीपुरां=चौहानों को। परणायौ=विवाह किया।

२२—चोव=चोआ। पाटंबर=रेशमी वस्त्र। राय अंगण=राजगृह में। तरुणि=तरुण स्त्रियाँ। वाजत्र=बाजे। विधी०=वेद-विधि से। मंत्र सु वाणी=मंत्र उच्चारण करके। चँवरी=विवाह-मंडप। मंगळ चार=मांगलिक कार्य। वार=समय। नवकोट=मारवाड़। करग्रहण०=पाणिग्रहण, हथलेवा जोड़ना आदि विधि। व्याह क्रत=विवाह का कृत्य। ऊधरी=उत्तम। प्रांमियौ=पाया। राजमती=कन्या का नाम है।

२३—जोड़=जोड़ी। विराजै=शोभायमान है। वर=दूल्हा। तरुणि=दुलहन। मोड़=सेहरा। लोड़=पाकर। कोड़=करोड़। वरीस=वर्ष।

२४—अस=(अश्व) घोड़ा। डायजा=दहेज। लाल=लालसिंह।

दुहा

जातां वरस सतावनौ, नृप वाधतां प्रताप ।
अजन मनोरथ पुत्र रौ, करै सदा हरि जाप ।।२५।।
पातसाह दक्खण रहै, जाळंधर महाराज ।
विसव अवर जवनां वसू, करै सको मिळ काज ।।२६।।
अहमदपुर दुख ऊपनौ, मरगौ खान सुजात ।
साहजादौ आयौ सुणे, आजम सा गुजरात ।।२७।।
नायब आयौ जोधपुर, ईसप अली मुगल्ल ।
सोनागिर साजै दिवस, नृप राजै अजमल्ल ।।२८।।
आयौ वरस अठावनौ, नृपत सवायौ नूर ।
फिर परणायौ भाटियां, डोळौ मेळ हजूर ।।२९।।
सुता दलै रावळ तणी, पतवरता पत प्रीत ।
राणी राजा परणियौ, मिरघावती अजीत ।।३०।।
समरण नित कीजै सुरां, लागै पाय जिहांन ।
.... ।।३१।।
और मतौ निस ऊपजै, ऊगै अवर प्रकार ।
जग हूँता लीजै जमै, समै विचार विचार ।।३२।।

२६—विसव = (विश्व) जगत् । अवर = दूसरा । जवना वसू = यवनों के अधीन । सको = सब ।

२८—सोनागिर = जालोर में । साजै = अच्छे ।

२९—नूर = कांति । डोळौ = कन्या । मेळ = भेजकर ।

३०—दलै० = रावल दला की । पतवरता = पतिव्रता । मिरघावती = एक नाम है ।

३१—पाय = पैरों में ।

३२—मतौ = विचार । निस = रात्रि में । ऊपजै = उत्पन्न होता है । ऊगै = सूर्योदय होने पर । अवर = दूसरा । जग हूँता = जगत् से । जमै = द्रव्य । समै = समय ।

दक्खण दाबी जवन दळ, अवरँग प्रांण प्रचंड।
आजम वस कीधी इळा, मुरधर गुज्जर खंड ॥३३॥
उमरावां नित आपरां, आलोजे अगजीत।
गंगा वाणी ज्यौं करूं, कद आपांणी रीत ॥३४॥
महाराजा अजमाल सूं, अरज करै उमराव।
भुवण तजे रहियौ विखै, त्रभवण हंदौ राव ॥३५॥

छप्पय

तर तुसार दव जळै, सीस माधव रुत आवै
ग्रीखम रैणा गात, जळण वरसात मिटावै।
असह रात ओहटै, सूर परभात दरस्सै
दुख ऊपर सुख दियण, सदा पण राम सरस्सै।
असुरांण आंण मिटसी इळा, सुर वध पांण वसंधरा
नवकोट नाथ निसचौ निजर, उर धारौ हरि ऊपरा ॥३६॥

३३—प्राण प्रचंड = महाबली। वस कीधी = अधीन की। इळा = पृथ्वी।

३४—आलोजे = विचार करते हैं। गंगा० = कब अपनी रीति करूँ कि लोक वाणी से गंगा का नाम उच्चारण करे।

३५—महाराजा० = तब उमरावों ने महाराजा से अर्ज किया कि त्रिलोकी के मालिक (रामचंद्र) भी घर को छोड़कर विखा में रहे हैं।

३६—तर = (तरु) वृक्ष। तुसार० = हिम के दव से जल जाते हैं। माधव० = सिर पर वसंत ऋतु आता है। ग्रीखम = ग्रीष्म ऋतु की। रैणा० = रज और शरीर की जलन को वर्षा ऋतु मिटाती है। असह = असह्य। ओहटै = चली जाती है। सूर = सूरज, सूर्य। दियण = देने का। पण० = राम का प्रण सदा सर्वोपरि है। असुरांण = यवनों की। आंण = आज्ञा। इळा = पृथ्वी पर। सुर० = देवताओं का बल पृथ्वी पर बढ़ेगा। नवकोट नाथ० = हे मारवाड़ के स्वामी! यह निश्चय देखने में आता है।

चौसर

ऊपर वरस गुणसठौ आयौ
साह सुतन जोरै सरसायौ।
आजम जोध नयर अपणायौ
प्रथमी तरां सकळ भ्रम पायौ ॥३७॥

महाराजा श्री अभैसिंघजी रौ जनम उच्छव।

दुहा

औरँग तणौ प्रताप इम, धर प्रगट्यौ निरधार।
हिंदू धरम अपूरियौ, भ्रम पूरियौ संसार ॥३८॥
जाळंधर राजा अजौ, आखै कव आसीस।
छत्र धरौ जोधांण गढ, वेग करौ जगदीस ॥३९॥
सांमधरम्मी सेव मैं, के मेवासां प्राण।
केतां साजस साह सूं, राजस रांणो राण ॥४०॥
नरपत्ती आंबेर रौ, नांम कहै जैसाह।
सो घोड़ां सूं चाकरी, सेवै दिक्खण साह ॥४१॥

३७—तरां = तब। भ्रम पायौ = भ्रांत हुई।

३८—तणौ = का। निरधार = निश्चय। अपूरियौ = अपूर्ण हो गया, कम हो गया।

३९—आखै = कहते हैं।

४०—सेव मैं = नौकरी में हैं। के० = आत्मरक्षा के कई स्थानों में प्राण बचाए हैं। केतां = कितने ही बादशाह से मेल रखते हैं। राजस० = सब राजा और राणा।

४१—सौ = वह।

उदियापुर रांणौ रहै, एकलिंग री आस ।
राह तणी चिंता घणी, साह तणी सिर त्रास ॥४२॥
बुंदी कोटो वीकपुर, सारा भूप अबंक ।
राज दिखावै हीणता, ज्यां धन खावै रंक ॥४३॥

छंद बेअक्खरी

यौं पतसाह जोस अधिकांणै
पूज सुरां विण वेद प्रमांणै ।
मथुर अजोध्या ओखामंडळ
एतां आद धांम प्रम उज्जळ ॥४४॥

सेवक रिख मुनि भगत सँन्यासी
अरज करै हुय दीन उदासी ।
त्रिभवणनाथ जगत निसतारण
धरम वेद कीजै धू धारण ॥४५॥

४२—आस = आशा पर । राह तणी = हिंदू मुसलमान हो जाने की । घणी = बहुत । साह तणी = बादशाह की । त्रास = भय ।

४३—वीकपुर = बीकानेर । अबंक = सरल, सीधे । राज० = राज्य को हीनता दिखाते हैं । ज्यां = जैसे । रंक = गरीब ।

४४—पूज० = देवता पूजा-विहीन और वेद प्रमाण-रहित हो गए । न तो देवताओं की पूजा होती है, न कोई वेद का प्रमाण मानता है । ओखामंडळ = द्वारका । एतां आद = इत्यादि । धांम = तीर्थभूमि । प्रम = (परम) अत्यंत ।

४५—सेवक = पुजारी । रिख = ऋषि । अरज० = दीन और दुखी होकर प्रार्थना करते हैं । निसतारण = पार उतारनेवाले । धू = धुरी ।

थे ऊपर धर हिंदुसथांणां
प्रगट करौ हरि कथा पुरांणां ।।
मांई ! सुरां धरम सरसावौ
मेछ धरम दुरकरम मिटावौ ।।४६।।
अवणासी अवगत अविकारी
असरणसरण राम अवतारी ।
गुमर सकोप आसुरां गंजण
भव भव पीड़ सुरां ची भंजण ।।४७।।
नरहर डर प्रहलाद निवारे
हिरणकसप वप नखां प्रहारे ।
ईखे दुरयोधन अनियाई
सकळ पांडवां चींत सँभाई ।।४८।।
रीत अनीत फैलियौ रावण
खमियौ नही अभायां खामण ।
जळ गजराज डूबतौ जांणे
आया किसन पगे उरबांणे ।।४९।।

४६—थे = तुम । मांई = हे माता ! भगवती ! सुरां = देवों का । सरसावौ = उन्नत करो । दुरकरम = दुष्कर्म ।

४७—अवणासी = अविनाशी, नाशरहित । अवगत = ज्ञानस्वरूप । गुमर = गर्व । गंजण = नाश करनेवाले । भव भव = जन्म जन्म में ।

४८—वप = शरीर । ईखे = देखकर । अनियाई = (अन्यायी) जुल्मी । चींत = चिंता । सँभाई = की ।

४९—फैलियौ = विस्तार पाया । खमियौ नही = क्षमा नहीं की । अभाया = दुष्टों को । खामण = रोकनेवाला । उरबाणे = बिना जूते, नंगे पाँव ।

धू ग्रह आस बाळ पण धारे
सांई त्यां ततकाळ सँभारे।
औ पतसाह तिसौ अन्याई
विसव अनीत जीत वरताई ॥५०॥
अत जग बोध पसरियौ आसुर
कीजै मनै हमै करणाकर।
सकळ धांम रिख भगत मुनेसर
इण पर सुमर पुकारे आतुर ॥५१॥

दुहा

करणाकर पूरण किसन, सदा उधारण संत।
धरम मया विण धूजियै, आंणी दया अनंत ॥५२॥
आप कळा सम अवतरण, मतौ कियौ महाराज।
असुरां हद राखण इळा, सुरां सुधारण काज ॥५३॥

५०—धू=ध्रुव राजा। ग्रह आस=घर की आशा, राज्य की आशा। बाळ०=बचपन में धारण की। साई=स्वामी को। त्यां=वहाँ। सँभारे=स्मरण किया। औ=यह। तिसौ=वैसा। विसव०=(विश्व) जगत् को जीतकर अनीति का व्यवहार करता है।

५१—अत जग०=जगत् में यवन मत बहुत फैल गया है। मनै=निषेध, रोक। हमै=अब। इण पर=इस प्रकार। सुमर=स्मरण करके। आतुर=दुखी होकर।

५२—किसन=(कृष्ण) श्रीकृष्णचंद्र ने। धरम०=धर्म को कृपा बिना धूजता हुआ देखकर। आंणी. दया=दया की।

५३—आप=विष्णु ने। कळा सम=कला के साथ। अवतरण०=अवतार लेने का विचार किया।

देवां दुंदभि वज्जियां, हिंगळाज दरबार ।
माता सूं गुण भज लिया, सुण नभ वयण मुरार ॥५४॥
जाळंधर राजा अजन, पटरागणि चहुवांण ।
दसरथ कौसल्या तणी, जोड़ प्रकासी जांण ॥५५॥
अनँत हुकम सूं ईश्वरी, आवी अजन सहाय ।
तन मैं पौरस आपियौ, मन मैं सुख प्रगटाय ॥५६॥
प्रसन नवैग्रह सिव प्रसन, हरि आग्या सुर राय ।
आगम जनम कुमार रै, उच्छव प्रगट्या आय ॥५७॥
निस पौढी अगजीत ग्रह, पटरांणी चहुवांण ।
सुपनंतर सुख संभळे, जै जै वंदन वांण ॥५८॥

अथ स्वप्न—छंद वेताळ

म्रदु रयण सुपन सँपेख मंगळ ,
विमळ उर सुख विसतरे ।

५४—दुंदुभि = नकारे । हिंगळाज = देवी । (अजीतसिंहजी के हिंगलाज देवी का इष्ट था) । माता सूं = हिंगलाज देवी से । गुण० = भजकर गुण लिए । सुण० = आकाश में विष्णु के वचन सुनकर ।

५५—पटरागणि = पट्टरानी । चहुवांण = चौहान वंश की ।

५६—अनंत = विष्णु । ईश्वरी = हिंगलाज देवी । आपियौ = दिया ।

५७—प्रसन नवैग्रह = नौ ही ग्रह प्रसन्न हैं । (महाराजकुमार का गर्भाधान हुआ उस समय) । सिव = महादेव । सुरराय = देवों के राजा हरि । आगम जनम = जन्मसमय में ।

५८—निस० = पटरानी के गर्भ था । वह रात्रि में सोई थी तब उसने स्वप्न में जय जय और नमस्कार की वाणी सुनी ।

५९—म्रदुरयण—कोमल रात्रि में । सँपेख = देखकर । उर = हृदय में, मन में । (स्वप्न कहते हैं) । दिव रूप = दिव्य रूपवाली । आंगण =

दिव रूप आंगण तरुणि दरसी
अमळ दळ पट अंबरे ॥
सित चीर कंचु सुरंग सोभित
हार मुकता जळहळे ।
हित सरद पूनम चंद्र हूँता
ओप आनन ऊजळे ॥५९॥
नर हरख संजुत राज अंगण
चौक मोतिय चंदणे ।
पूर निज कर कँवळ पल्लव
वाणि वयण सुहावणे ।
इक अमर संग मतंग आनन
मंक सित रद मंडितं
प्रम नेत हेत सिँदूर पूरिन
पास श्रुति रव पंडितं ॥६०॥
कर कमळ माळ सुद्वार प्रतिक्रम
बांध रति भुज बंध है

आँगन में। तरुणि दरसी = स्त्री को देखा। अमळ० = जो निर्मल पट्टांबर पहने हैं। सित चीर = सुफेद ओढ़ना। कंचु सुरंग = लाल कंचुली। जळहळे = झलझलाहट करता है। ओप = शोभा, कांतिवाला। आनन ऊजळे = उज्ज्वल मुख है।

६०—नर० = राजांगण में मनुष्य हर्षयुक्त हैं। मोतियों से चोक पूरा गया है। चंदन छिड़का हुआ है। वयण = वचन। सुहावणे = शोभन। इक०—एक देवता (गणपति)। मतंग आनन = हाथी के मुखवाला। मेक = एक। सित रद = श्वेत दाँत। प्रम० = नित्य परम हित करनेवाला। पास० = समीप में पंडितों द्वारा वेद का शब्द हो रहा है।

६१—कर० = हाथ में कमलों की माला लिए। द्वार० = दरवाजे की प्रदक्षिणा कर रहा है। बांध० = प्रेम से भुजबंध बाँधा है। (यह सरस्वती है)।

क्रत जुगळ सुंदर चमर करि है
सोभ रुचिर प्रसंध है।
इक और अपछुर गान अदभुत
बाण सुरँग वधावणे
गावंत निरतति मधुर सुर गति
सुघट कंठ सुहावणे ॥६१॥
मुख सबद जै जै बोल मंगण
अनँत धन तिँह अप्पियौ
कर चित्र नव रँग कळस कंचन
थिर अजिर ग्रह थप्पियौ।
नर नार उच्छव सेव निरखे
देव दुंदभि वज्जए
वांटंत नव गुळ सहर वीठनि
राज अविचळ रज्जए ॥६२॥

दुहा

राजकँवर चुतरेस री, दीठौ सुपन उदार।
सारद गणपत प्रीत सम, आगम जनम कँवार ॥६३॥

क्रत० = दो स्त्रियाँ चमर डुला रही हैं। प्रसंध = शरीर की रचना। अपछुर = अप्सरा। बाण = वाणी। सुरँग = श्रेष्ठ। सुघट कंठ = अच्छा कंठ है। सुहावणे = शोभन।

६२—मंगण = याचक। अप्पियै = दिया जाता है। कर चित्र० = नौ रंग के चित्र करके। अजिर ग्रह = घर के आँगन में। देव दुंदभि = देवों के नक्कारे। वांटत = शहर के अंदर नवीन गुड़ बाँटा जाता है। राज० = राज्य अविचल शोभायमान है।

६३—सारद = सरस्वती। गणपत० = गणपति को स्वप्न में जन्म के प्रथम देखा।

महाराजा अजमाल रै, वधसी जगत प्रताप।
आयौ ग्रभ जिण निस अभौ, भागौ सुरां सँताप ॥६४॥
पूरण कळा अनंत री, पूरण वेद सहाय।
उदर वसंतै ऊपनी, उर आसुरां बलाय ॥६५॥

छंद बेअक्खरी

वसतां गरभ अभौ सुभ वेळा
असुरां सुख दिन थयौ अमेळां।
अवरँग आंण जिती प्रज आखै
प्रगट थई धन रक्खत पाखै ॥६६॥
धाराधर खंची जळधारा
सोबा रिजक विना हुय सारा।
असुरां मुलक मेघ ओछांणा
थया सचींत सहर पुर थांणा ॥६७॥
भोम कंप दिन खळां अभाया
कोट सिखर चळ गिरे कराया ॥
महल हेम तिण दिल्ली माथै
अवण रुहिर बूँदै मिळ साथै ॥६८॥

६४—ग्रभ = गर्भ में। अभौ = अभयसिंहजी।

६५—अनंत री = विष्णु की। उदर वसंतै = अभयसिंहजी के गर्भ में रहते। बलाय = भय।

६६—वसतां० = शुभ समय में अभयसिंहजी के गर्भ में वास करने पर। असुरां० = यवनों के सुख के दिन का वियोग हो गया। आंण = आज्ञा। आखै = कहती है। धन० = धन और रक्षा से रहित हो गई।

६७—धाराधर = मेघ। रिजक विना = आय बिना। सारा = सब। ओछांणा = कम हुआ।

६८—भोम कंप = भूकंप। खळां = यवनों को। अभाया = बुरे। कोट = प्राकार, किले। अवण० = रुधिर की बूँदें पड़ती हैं।

दिन दिन नखत्र गिरे दरसावै
अरिष्ट निरख आसुर अकुळावै ।
मेछां वदन जोस अणमिळिया
पाळै जांण कमळ परजळिया ।।६९।।

दूहा

सुरद्रोही जाग्रत सुपन, प्रगट लखे उतपात ।
वार सुरंगी वीच ते, करे विरंगी वात ।।७०।।
जाळंधर राजा अजन, राज करै छत्रबंध ।
अवतारी तिण ग्रह अभौ, वाधे गरभ कमंध ।।७१।।
निरखै मात प्रभात निस, निरमळ दिवस सनूर ।
ईखै छत्रधारी अजौ, सुभकारी ससि सूर ।।७२।।
ज्यां ज्यां ग्रभ जणणी तणौ, वधै कँवर गुणवंत ।
त्यां त्यां तेज अजीत रौ, नर उर लखै अनंत ।।७३।।

६९—दिन दिन = प्रतिदिन । नखत्र० = तारे टूटते दिखाई देते हैं । अरिष्ट = दुःख । अणमिळिया = रहित । पाळै = हिम, बर्फ । जांण = मानों । परजळिया = जल गए ।

७०—सुरद्रोही = देवों के वैरी, यवन । जाग्रत० = जागते और स्वप्न में । वार० = अच्छे समय में भी । ते = वे ।

७१—छत्रबंध = छत्रधारी । तिण ग्रह = उसके घर में ।

७२—निरखै०—माता रात दिन कांतियुक्त निर्मल दिन देखती है । ईखे = देखता है । ससि सूर = चंद्रमा और सूर्य को ।

७३—जणणी तणौ = माता के । अनंत = अपार ।

छप्पय

संमत मेक सपत्त, मिळे गुणसठौ छमच्छर
सरद पार हिम वार, सकळ रित हूँ रित सुंदर।
अरक दिखण मग अयन, मास अगहन गुण मंडत
क्रत मंगळ पख क्रस्न, उदय आणंद अखंडत।
तिथ चतुरदसी सनवार तव, रयण पहर वीतां अरध
अगजीत ग्रेह जनम्यौ अभौ, बांण वेद हरखे विबुध ॥७४॥

दुहा

केसर वूठी द्वारका, दिल्ली बूँद रगत्त।
थई पुरांणां उग्रता, मिटी कुरांणां वत्त ॥७५॥

छंद बेअक्खरी

नखत विसाखा तिथी चवद्दस
घड़ी च्यार पळ वीस गयां निस।
मिथुन लगन सोभन मिळ जोगे
सकुन करण दुख हरण सँजोगे ॥७६॥

७४—मेक = एक। सपत्त = सात। गुणसठौ = उनसठ (संवत् १७५६)। छमच्छर = (संवत्सर) वर्ष। सरद पार = शरद् ऋतु के अनंतर। हिम वार = हेमंत ऋतु के समय में। रित हूँ = ऋतुओं से। अरक = (अर्क) सूर्य। मग = मार्ग। (दक्षिणायन का सूर्य)। अगहन = मार्गशीर्ष। क्रत मंगळ = मंगल के कृत्य। उदय आणंद = आनंद का उदय। सनवार = शनैश्चर वार। तव = कहा जाता है। रयण० = (रात्रि) आधा प्रहर रात्रि गए। ग्रेह = (गेह) घर में। बांण = (वाणी) सरस्वती। विबुध = देवता।

७५—केसर० = द्वारका में केसर की वृष्टि हुई। दिल्ली० = दिल्ली में रक्त की बूँदें बरसीं। थई० = पुराणों की प्रबलता हुई।

७६—सकुन = ज्योतिष में एक करण का नाम शकुन है। उस शकुन करण में।

धरम सहायक परम कळा धरि,
हर गज बंध हरे प्रगट्यौ हरि।
दसरथ अजन ग्रेह हित दाखै
राम अभौ उदियौ हित राखै ॥७७॥
वागौ थाळ जनम ची वेळा
भागौ अदिन अमंगळ भेळा।
वाजत्र ससुर बधावा वाजै
नरपत मंगण जणां निवाजै ॥७८॥
अगिणत दान निजर पह आगै
लूंबां किर श्रावण झड़ लागै।
उर अगजीत हरख अधकायौ
सरद निसा किर उदधि सवायौ ॥७९॥
जपै जनम गुण पूरण जोसी
सुर पूजा हव थई समोसी।

७७—हर गज बध = गजराज के बंधन को छुड़ानेवाला। हरे = घर में। हरि = विष्णु। दसरथ० = दशरथ के घर में रामचंद्र हित दिखाकर प्रकट हुए थे वैसे अजीतसिंहजी के घर में अभयसिंहजी का उदय हुआ।

७८—वागौ० = जन्म के समय थाल बजा। भागौ० = कुदिन और अमंगल साथ ही नष्ट हुए। ससुर = स्वर सहित। बधावा = बधाई के। नरपत = राजा। मंगण जणां = याचक लोगों को। निवाजै = दान देता है।

७९—पह आगै = प्रभु (राजा) के आगे। लूंबां = मेघ की अविच्छिन्न छोटी छोटी बूँदें। श्रावण० = दान क्या दिया जाता है, मानों श्रावण मास की झड़ी लगी है। अधाकायो = बढ़ा। सरद० = मानों शरद् की रात्रि में समुद्र सवाया बढ़ा।

८०— जपै = कहते हैं। जनम = जन्म-समय में, जन्मपत्री देखकर।

सुरां धरम जग करण सवायौ
औ अवतार परम चौ आयौ ॥८०॥
दसरथ अजन घरे सुखदाई
रूप अभौ प्रगट्यौ रघुराई ।
दाखै विप्र नवै ग्रह देखौ
परम गुणे प्रत भवन सँपेखौ ॥८१॥
रवि रिपु भवन जकौ सुखरासी
अरि अण कुळ बळ करण उदासी ।
अरक छठै थांनक सुख आवै
क्रत उण रिपु निरमूळ करावै ॥८२॥
ससिसुत भवन पंचमै सोहै
महा सबुध लख जगत विमोहै ।
मंडळ धर मन मैं ग्रह मंडत
खाग जैत नित भाग अखंडत ॥८३॥

हव = अब । समोसी = समयवाली, बलवती । औ = यह । परम चौ = ईश्वर का ।

८१—रघुराई = रामचंद्र । दाखै = कहते हैं । परम गुणे = परम गुणवान्, शुभकारी । प्रत भवन = हर एक भवन में । (जन्मपत्री में लग्न आदि १२ भवन होते हैं ।) सँपेखौ = देखो ।

८२—रवि = सूर्य । रिपु भवन = छठे घर में है । जकौ = वह । अरि-अण० = (अरिजन) शत्रुकुल के बल को खेद करनेवाला । थांनक = स्थान में । क्रत = कृत्य । उण = उसके ।

८३—ससिसुत = बुध । सबुध = विद्वान् । मंडळ धर = धरामंडल में । खाग जैत = खड्ग से जय करनेवाला । भाग = भाग्य में अखंडित, महा भाग्यवान् ।

निरख छुठै रिपु ग्रह ससिनंदण
कुळ मातुळ सुख अरीनिकंदण।
राजभवन सुरगुर सुभ राजै
विसव एक छत्र आंण विराजै ॥८४॥
औ वृसपत दसमै ग्रह आयौ
विदुख तिकां दुण लाभ बतायौ।
कुळ नृप उग्र थयौ ह्वै कोई
सुतन प्रताप चौगुणौ सोई ॥८५॥
अन ग्रह भवन करूरे आवै
दसमै जो सुरगुर दरसावै।
दुसह तोइ ग्रह जोर न दाखै
रक्षा जीव परख डर राखै ॥८६॥
लीण हीण ज्यां सौं गज लागै
ए कोइ बळ सादूळै आगै।

८४—रिपु ग्रह = शत्रु भवन अर्थात् ६ठे स्थान में। ससिनंदण = बुध। मातुळ = मामा के कुल को सुखकारी। अरीनिकंदण = शत्रुओं को मारनेवाला। राजभवन = दसवें स्थान में। सुरगुर = बृहस्पति। विसव० = संसार में एकछत्र आज्ञा चले।

८५—औ = यह। ग्रह = स्थान में। विदुख = विद्वान्। दुण = दुगुना, द्विगुण। कुळ० = राजा के कुल में कोई जबर्दस्त हुआ हो वह। सुतन० = पुत्र के प्रभाव से वही चौगुना होवे।

८६—अन ग्रह = दूसरे ग्रह। करूरे० = क्रूर भवन में आवें। और बृहस्पति जो दशम भवन में आवे तो अन्य ग्रह दुःसह होने पर भी अपना बल नहीं दिखाते। जीव० = बृहस्पति की रक्षा को देखकर मन में भय रखते हैं।

८७—लीण० = जिस बृहस्पति के सामने अन्य सब ग्रह लीन और हीन हैं। हाथी क्रूर है परंतु वह सिंह के सामने कुछ बल कर सकता है?

सेवै छत्रपति छोड समीसर
ओपै धजा जगत चै ऊपर ॥८७॥
सोभत कनक रतन सत खंडे
मंडप नवा रचे हित मंडे।
असुर-पिरोहित सुत ग्रह आयौ
दिन चढते सुत लाभ दिखायौ ॥८८॥
रूप भाग गुण भजन नरायण
पुत्र हुवौ सुज भगत परायण।
सुक्र पंचम थानक सुभकारी
कँवर हुवै सुज आग्याकारी ॥८९॥
राजभवन दसमै सन राजै
छित इक छत्र करै सुख छाजै।
आव सुमत खग सकत अमांमी
सनि गुण हुवै जगत चौ सांमी ॥९०॥

छत्रपति = राजा लोग । समीसर = बराबरी छोड़कर । ओपै = शोभा देती है ।

८८—सोभत० = सात सात खंड के सोने और रत्नों के नए रचे हुए महल शोभा देते हैं । असुर-पिरोहित = दैत्यगुरु, शुक्र । सुत ग्रह = पाँचवें घर में आया ।

८९—रूप० = रूप, भाग्य और गुणों में तथा ईश्वर के भजन में । सुज = वह । भगत परायण = भक्ति में तत्पर ।

९०—राजभवन = दशम भवन में । सन = शनैश्चर । छाजै = शोभा देता है । आव = आयु । सुमत = बुद्धि । खग = तलवार । सकत = = शक्ति । अमांमी = अप्रमाण । चौ = का ।

राह भवन धन धन सुख राखै
दुनी कुबेर सरोतर दाखै।
केत अष्टमै थांन सकारण
नित प्रत ततपर कष्ट निवारण ॥६१॥
पख रवि तेज अरक सम पामै
नर नखत्र अनमी त्यां नांमै।
सनि गुण आव तणो सरसाई
थिति वस रहै लहै सरसाई ॥६२॥
सोभत (न) जोग मिळे सुखकारी
नरपति तिकण असोभा न्यारी।
रवि पख चतुरदसी सुखरासी
विद्या चतुरदस तणो विलासी ॥६३॥
यामैं सकुन करण मिळ आवै
मिळ सज्जन दुर सकुन मिटावै।

९१—राह = राहु। भवन धन = नवम स्थान में। दुनी = संसार, दुनिया। सरोतर = बराबर। दाखै = कहती है। केत = केतु ग्रह।

९२—पख रवि = कृष्णपक्ष में जन्म होने से। तेज० = सूर्य के समान तेज पाता है। नर नखत्र = विशाखा नक्षत्र नर नक्षत्र है; उसमें जन्म होने से। अनमी० = अनम्रों को नमावे। सनि० = शनिवार का जन्म। आव० = आयु की वृद्धि करता है।

९३—असोभा न्यारी = अपकीर्ति अलग रहती है। रवि० = कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी। सुखरासी = सुख का पुंज। विद्या० = चौदह विद्याओं का विलास करनेवाला। यामैं = इसमें।

दुहा

पूरण गुण नव ग्रह प्रसन, असपति हरण अनीत ।
मेछां भायौ मेटवा, आयौ पुत्र अजीत ॥९४॥

छप्पय

सुर जग्गे सुभ समय, भूम अन जुमे सुभावां
रैण सभाळे राव, मिटे अटकाव वधावां ।
नव उच्छव नर नार, नवल शृंगार वसन्ने
गीता मैं म्रग मास, कह्यौ मम रूप किसन्ने ।
अवतार अंस अगजीत ग्रह, वंस विखाद पलट्टियौ
रितु एण उदय चहुवांण रै, सुत अभमाल प्रगट्टियौ ॥९५॥

दुहा

महाराजा अजमाल रै, नगर वधाई आज ।
नरपति मन भायौ थयौ, जायौ पुत्र सकाज ॥९६॥

९४—पूरण गुण = गुणों से पूर्ण । असपति० = बादशाह के अन्याय का हरण करनेवाला । मेछा = यवनों के मनोरथ को नष्ट करने के लिये ।

९५—सुर जग्गे = देवता जगे । भूम अन जुमे = पृथ्वी में अन्न पैदा होने लगा । रैण० = राजा लोगों ने अपने राज्य सँभाले । मिटे० = उन्नति की रोक मिटी । नवल = नवीन, सुंदर । गीता मैं० = गीता शास्त्र में मगसर मास को कृष्ण भगवान् ने अपना स्वरूप बतलाया है—"मासानां मार्गशीर्षोऽस्मि ।" विखाद = (विषाद) दुःख । रितु एण = इस ऋतु में । चहुवांण रै = चौहान वंश की रानी के ।

९६—मन भायौ = मनचाहा । सकाज = समर्थ ।

छंद अर्धनाराच

सुरे थया नीसांणयं, उछाह अप्रमाणयं।
विसाल ताल वाजितं, उचार गान अम्रतं ॥६७॥
म्रदंग ढोल मंगळी, रबाब तार सार ली।
वजंति वेरिवेरियं, भणं कि झंकि भेरियं ॥६८॥
छतीस राग छाजती, निहाव घाव नोबती।
भजै विभास भैरवं, रळी कळी कळी रवं ॥६६॥
सरी सरी सपोसयं, सुताल मालकोसयं।
मिठास आस मंजरी, गरी गरी सगुज्जरी ॥१००॥
रजे मलार सारँगं, रितंग रंग मारगं।
रसाल ताल सोरठी, सगान तान सांमठी ॥१०१॥

६७—सुरे० = देवताओं के बाजे बजे। ताल = एक प्रकार का कास्य वाद्य। अम्रतं = अमृत।

६८—रबाब० = रबाब आदि वाद्य हैं। वेरिवेरियं = बारंबार। निहाव = निर्घोष। घाव = डंका पड़ना। नोबती = दुंदुभि, नौबत। भजै० = विभास और भैरूं राग गाया जाता है। रळी = खुशी। कळी कळी = मन की कली। रवं = शब्द से। अति आनंद होता है तब कहा जाता है कि मन की कली कली खिल रही है।

१००—सरी सरी = सात स्वरों के आलाप का अनुकरण है 'स रे ग म प ध नि'। सपोसयं = पुष्ट है। मालकोसयं = एक राग का नाम। मंजरी = मंजीरा; एक प्रकार का कांस्य वाद्य। गरी गरी = गली गली में। गुज्जरी = राग-विशेष।

१०१—मलार सारँगं = दोनों रागविशेष हैं। रितंग० = रंग का मार्ग ऋतु के अनुसार हो रहा है। रसाल = सुंदर। सोरठी = राग-विशेष। सांमठी = इकट्ठी।

भणंत श्री विनोदयं, कल्याण केक मोदयं ।
खँभायची पटंगयं, वगे सरी विहंगयं ॥१०२॥
कलंग पर्ज कन्हड़ां, सुरां सवाद सुग्घड़ां ।
निवास सात नाळियं, त्रिग्राम मूळ ताळियं ॥१०३॥

गाहा चौसर

सवद उग्र करनाळ सवाई
सुर वरघू तुरही सहनाई ।
द्वार सुरेस नरेस दिनाई
वाधै साजै दीह वधाई ॥१०४॥
कुळ देवी गृह पूज सकारण
विंजन नव नेवज विसतारण ।
धूप अगर दीपक सुभ धारण
अन देवां धन सेव अपारण ॥१०५॥

१०२—भणंत = गाते हैं। श्री विनोदयं कल्याण = दोनों राग-विशेष हैं। केक मोदयं = मयूर की वाणी के समान आनंद देनेवाली। खँभायची पटंगयं = दोनों राग-विशेष। वगे = बजते हैं। सरी = स्वर। विहंगयं = विहाग राग-विशेष।

१०३—कलंग० = तीनों राग-विशेष। सुरां = स्वरों का। सवाद = आनंद। सुग्घड़ां = सुघड़, चतुरों को। निवास = महलों में। सात नाळियं = सातों मूर्छना। त्रिग्राम = तीन ग्राम। मूळ ताळियं = मूल ताल।

१०४—उग्र = बहुत ऊँचा। करनाळ = वाद्य-विशेष। सुर = स्वर। वरघू० = वरघू, तुरही, सहनाई ये वाद्य-विशेष हैं। सुरेस = इंद्र। नरेस = राजा। दिनाई = सूर्य। साजै दीह = साधारण दिन में।

१०५—विंजन = (व्यंजन) खीर, शाक आदि। नेवज = नैवेद्य। अन देवां = दूसरे देवताओं की। धन० = धन से अपार सेवा की जाती है।

ओपै रूप घणौ राय अंगण
चौक मुकत कण केसर चंनण ।
तर मंजर फळ माळा तोरण
सोहै द्वार मेळ भ्रत सज्जण ॥१०६॥

दुहा

नव नव उच्छव नवल सुख, सब जण नवल सिँगार ।
नवल चित्रां मैं धवळहर, पायौ नवल कुमार ॥१०७॥

छंद बेअक्खरी

अंबा आदि तरण आमासे
परम कँवर लखि हरख प्रकासे ।
सुंदर चख मुख कर पद सोहै
मंजु रूप लख कंज विमोहै ॥१०८॥
अंग अंग महिमा अधिकावै
सैज अनंत तेज दरसावै ।
नार सँभारे जतन निहारै
ऊपर राई लूण उतारै ॥१०९॥

१०६—ओपै=शोभा देता है । रूप=सौंदर्य । चौक मुकत कण=मोतियों से चौक पूरा गया है। तर=(तरु) वृक्ष (केले के) । भ्रत=(भृत्य) नौकर । सज्जण=स्वजन, बंधु ।

१०७—जण=जन । धवळहर=धुरघर ।

१०८—अंबा=माता । तरण=(तरुणी) स्त्रियाँ । आमासे=(आवास) महलों में । चख=(चक्षु) नेत्र । मंजु=सुंदर । कंज=कमल ।

१०९—सैज=(सहज) स्वभाव से । नार=(नारी) स्त्रियाँ । निहारै=देखती है ।

नूर सूर सम वदन निहावै
आपै मात रतन धन आवै ।
सहर गळी प्रत गळी सुहावै
गुळ वांटे त्रिय मंगळ गावै ॥११०॥
संपज अजन सदन सुखसाजा
राम जनम जिम दसरथ राजा ।
गुणियण द्वार वधाई गावै
प्रत दिन अन सोव्रन धन पावै ॥१११॥
जगत सूत मागध बंदी जण
आसावंत किया नृप ऊरण ।
जोगी जगत सन्यासी जेता
अन व्रत अमित लहै पुर एता ॥११२॥
चक्रवत चित वाधै कुळ चावां
असहां खीज रीझ उमरावां ।
जाळंधर सुख कह्या न जावै
ईखण उदै अमर मिळ आवै ॥११३॥

११०—सूर सम = सूर्य के समान । वदन = मुख को । निहावै = देखकर । आपै = देती है । गुळ = गुड़ । वांटे = देती है । त्रिय = स्त्रियाँ ।

१११—संपज = सपन्न हुआ । सदन = घर में । सुखसाजा = सुख का सामान । गुणियण = गुणिजन । अन = अन्न ।

११२—ऊरण = अनृण । जोगी = योगी । लहै = पाया । एता = इतनों ने ।

११३—चक्रवत = (चक्रवर्ती) राजा । चावां = चाह, उत्साह । असहां = शत्रुओं पर, द्रोहवालों पर । खीज = क्रोध । रीझ = बखशिश, पुरस्कार । जाळंधर = जालोर का । ईखण = देखने को । उदै = उदय, समृद्धि । अमर = देवता ।

गाथा

सज्जण गुणांण पूरे, वयणे विछोह बांण अवगुण ए ।
ज्यां जळ तराणि लहियं, काळे अकाळ उच्छवं कर ए ॥११४॥

दुहा

यौं सज्जण सुख पूरिया, दूर गया सह दुक्ख ।
दळ नवपल्लव डहडहै, ज्यौं जळ पायां रुक्ख ॥११५॥

इति श्रीमहाराज राजराजेश्वर श्री अभैसिंघजी रै परम जस
राजरूपक मैं श्री जन्मउच्छवविंश प्रकास ॥२०॥

११४—सजण=सज्जन । वयणे०=जिनके वचन और वाणी में अवगुणों (दोषों) का वियोग है। अर्थात् जो वाणी से किसी का दोष प्रकट नहीं करते। ज्यां०=जैसे जल में नौका मिल जाय और उत्सव होता है वैसे वहां समय और बे समय उत्सव है।

११५—सह=सब । दळ=पत्ते। डहडहै=चिक्कण होकर शोभा देते हैं। रुक्ख=वृक्ष।

अथ वय अनुक्रम

छप्पय

निस दिन रूप अनंत, वधै विधु सुकळ जिँही विध
मकर आदि दिन मान, सोभ गरुवत्व वधै सिध।
कनक दान कुरखेत विरधि, गुणि वासुर वासुर
सुबुध वधै सतसंग, ग्यांन गुर वाणि उजागर।
प्रतिछांह वधै मधि दिन पछै, कृति सनीति ग्रह कंमळा
गुण रूप एम अगजीत ग्रह, कुँवर अभौ वाधै कळा॥ १॥

उदै अरक प्रति उदै, सुमत रति उभै सरोवरि
कमळ नयण मुख कमळ, तरणि गुण भाल सरोतरि।
भुज प्रलंब आजान, कमळ आकृति पद कोमळ
जव अंबुज ध्वज कळस, मीन अंकुस जंबूफळ।

१—वधै० = जैसे शुक्ल पक्ष में चंद्रमा वृद्धि पाता है, वैसे महाराजकुमार वृद्धि पाते हैं। मकर आदि० = मकर आदि संक्रांतियो में दिनमान बढ़ता है वैसे महाराजकुमार की शोभा और गौरव बढ़ता है। कनक० = कुरुक्षेत्र में सुवर्णदान का गुण प्रतिदिन बढ़ता है। सुबुध० = सत्संग से सुबुद्धि बढ़ती है। ग्यान० = गुरु की वाणी से ज्ञान प्रकट होता है। प्रतिछांह० = मध्याह्न के पश्चात् छाया बढ़ती है। कृति० = नीति सहित काम करने से लक्ष्मी बढ़ती है। गुण० = इसी प्रकार अभैसिंहजी के गुण, रूप और कला बढ़ती है।

२—उदै० = सूर्य के उदय के समान उदय है। सुमत० = बुद्धि और प्रीति दोनों बराबर है। नयण = नेत्र। तरणि० = सूर्य के समान ललाट की कांति है। आजान = घुटनों तक। जव० = यव आदि सुलक्षण

अदभूत रेख सोभा अमित, कलप तरोवर सेवकां
अँग अंग सोभ वाधै अभौ, असहै रूप असेवकां ॥ २ ॥
उर उच्छव अजमाल, पेख प्रांमै छत्रपत्तो
देस वंस ऊधरौ, नेस हूँता सुरपत्तो।
कळपवृक्ष संतान, पारिजाती हरिचंद्रण
तर मंदार दुवार, आण ऊगा सुख अप्पण।
चिंतामणि पारस पैर सौ, सुधा सरोवर कामगा
संपजै तांम सुत संपनै, गृह सुर धांम विरामगा ॥ ३ ॥
पखि प्रकासि फिरि मास, उभै गुण वेद अनुक्रम
पंच मास खट मास, तेज जस वास वधै तिम।
भूप छभा भूपाळ, वदन दस्सण औँमाहै
मिळ भेटे मुख राग, स तौ निज भाग सराहै।

हाथ में रेखाएँ हैं। अदभूत = (अद्भुत) अनोखी। कलप तरोवर = कल्पवृक्ष। असहै० = शत्रुओं के लिये असह्य रूपवाला है।

३—पेख = देखकर। प्रामै = पाता है। ऊधरौ = उन्नत। नेस० = इंद्र के निवास से। कलपवृक्ष० = कल्पवृक्ष आदि ५ देववृक्ष हैं। तर = (तरु) वृक्ष। दुवार = द्वार। आण ऊगा = आकर जमे। सुख अप्पण = सुख देने के लिये। चिंतामणि० = चिंतामणि रत्न आदि कामधेनु पर्यंत सब मनवांछित देनेवाले हैं। पौर सौ = पुतला। सुधा-सरोवर = अमृत का सरोवर। कामगा = कामधेनु। संपजै० = वहाँ पुत्र हुआ तब सब संपन्न हुए। सुर० = देवताओं के घरों से हट गए।

४—महाराज का अवस्थाक्रम दिखाता है—पखि० = पक्ष, मास। उभै = दो। गुण = तीन। वेद = चार। तेज० = जैसे जैसे उम्र बढ़ती है वैसे वैसे तेज, जस और सुवासना बढ़ती है। औमाहै = उत्सुक होता है। मिळ भेटे = मिलकर। मुख राग = प्रसन्न होते हैं। स तौ = वह।

नर नारि द्वार नरपत्त रै, ईख करै तन वारणै
उमराव परस्सण उल्लसै, कोड़ां दरसण कारणै ॥ ४ ॥
एक दिवस अजमाल, छभा मंडे छत्रपत्ती
पुत्र रूप गुण पेख, गोद लीधौ गढपत्ती ।
मनु संजुति लोकेस, कना रवि हूँत प्रजापति
कै रघुवीर कुँवार, लियां अवधेस प्रभा जुति ।
उमराव चाव लग्गौ दरस, रूप निहारै निजर भर
अनमेख दृष्ट पेखंत छवि, मीन चंद्र प्रतिबिंब पर ॥ ५ ॥
छभा रूप छवि परख, सरब चख वदन सुरंगे
यौं लग्गे रस रूप, अखिर किर कागद अग्गे ।
कै चकोर नभ ओर, सरद राका निसि सुंदर
हेत नेत्र हरखंत, रूप निरखंत सुधाकर ।

तन वारणै = शरीर पर वारणा करते हैं (रक्षा के लिये) । परस्सण = मिलने के लिये । उल्लसै = उत्कंठा करते हैं । कोड़ां = करोड़ों मनुष्य ।

५—छभा मंडे = सभा की, दरबार किया । पेख = देखकर । गढ़पत्ती = राजा । मनु० = महाराजा ने महाराजा को गोद में लिया, उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि मानों सूर्य के साथ वैवस्वत मनु है । कना = किवा । सूर्य से संयुक्त कश्यप प्रजापति हैं । कै = अथवा । अवधेस = दशरथ । प्रभा जुति = तेजयुक्त । चाव = चाह, उत्सुकता । निहारै = देखते हैं । अनमेख = (अनिमेष) आँख टिमटिमाए बिना । मीन० = मछली । आँख मछली के समान, और महाराजकुमार का मुख चंद्रमा के प्रतिबिंब के समान है ।

६—छभा = सभा । वदन = मुख । सुरंगे = सुंदर । यौं० = रस अर्थात् प्रीति और रूप का संयोग ऐसा असाधारण बना है कि मानों अक्षर कागज का संयोग । कै चकोर० = किंवा चकोर पक्षी आकाश में रात्रि में शरद् ऋतु के चंद्रमा को देखकर हर्षित होता है वैसे प्रेम के साथ

अधिपति उछंग सोभै अभौ, राजत ज्यौं कंचन रतन
उर दियण मोद किर ऊमरां, तात गोद प्रियवर त तन ॥ ६ ॥

दुहा

यौं नरपति अजमाल उर, ज्यास वधै मुख जोय ।
निरख निरख सुत रूप नित, हरख अमित चित होय ॥ ७ ॥

छंद बेअक्खरी

महाराजा अजमाल महाबळ
कुँवर अभौ हरि अंस अणंकळ ।
सदन मनोहर रूप सुहावै
पेख वदन नरपति सुख पावै ॥ ८ ॥

एम गुणसठै साठौ आयौ
राव सहँसमल व्याव रचायौ ।
धरपति अजै मौड़ सिर धारे
परणीजण साचोर पधारे ॥ ९ ॥

नेत्र महाराजकुमार के मुखचंद्र को देखकर हर्षित होते हैं। उछंग = उत्संग, गोदी। कचन रतन = सोना और रत्न का मेल होता है वैसे गोदी और महाराजकुमार का मेल है। ऊमरां = उमरावों को। तात = पिता। त = उस।

७—ज्यास = धैर्य, विश्वास। जोय = देखकर।

८—अणंकळ = निर्दोष। सदन = घर में। पेख = देखकर।

९—एम—इस प्रकार। गुणसठै = १७५९ का वर्ष गया। साठौ = १७६० का वर्ष आया। सहँसमल० = साचोर के स्वामी सहसमल ने विवाह की तैयारी की। मौड़ = सेहरा। पधारे = गए।

ईसप आजम साह बुलायौ
मुरसद कुळी मुरधरा आयौ।
आगै गढ जाळंधर आए
प्रथीनाथ रै लागौ पाए ॥१०॥

दुहा

आगा मिळ अजमाल सूं, प्रात हुवौ असवार।
महराजा री मेड़तौ, कियौ निजर कर प्यार ॥११॥
मेड़तियौ कुसळौ मुदै, धांधल गोयँददास।
मेल्हे राजा मेड़तै, जग न्याई विसवास ॥१२॥
उर मुहकम इँद्रसिंघ रौ, जळियौ परख सजोर।
अरज अमंदी मोकळी, औरँग हंदी ओर ॥१३॥
जोधांणै री नायबी. जो आपै पतसाह।
खिजमत खानाजाद री, तौ देखै दोइ राह ॥१४॥
जाळंधर अगजीत रै, पुत्र अभौ अवतार।
दुरमत व्यापै दुरजणां, सयणां सुमत अपार ॥१५॥

१०—ईसप० = आजमशाह ने ईसपअली को जोधपुर से बुला लिया और उसके स्थान में मुरशिदकुली को भेजा। आगौ = आगे।

११—महराजा री० = मेड़ता महाराजा को दिया।

१२—मेल्हे० = महाराजा ने मेड़तिया कुसलसिंह और धांधल गोयंददास को मेड़त भेजा। न्याई = इसाफी।

१३—उर० = इंद्रसिंह के पुत्र मोहकमसिंह का हृदंय महाराजा को मेड़ता देने से जला। अमंदी = बड़े जोर की। मोकळी = भेजी। हंदी = की।

१४—खिजमत = सेवा। खानाजाद री = सेवक की। दोइ राह = दोनों तरफ की।

१५—दुरमत = दुर्मति। सयणां = सज्जनों के।

बीतौ यौं साठौ बरस, श्री महाराज प्रसन्न ।
ऊपर आयौ इकसठौ, दुयणां फिरिया दिन्न ॥१६॥
मुरसद कुल्ली मुगल नूं, आजम लियौ बुलाय ।
जाफर आयौ जोधपुर, जासी सरब गमाय ॥१७॥
मुहकम चाळा मंडिया, उर ज्वाळा अप्रमांण ।
वस अरजण हूये भवस, अरि कर लग्गौ आंण ॥१८॥
मुहकम रहियौ मेड़तै, कहियौ जाफरबेग ।
बोढण बाजी आप री, तोलण लागौ तेग ॥१९॥

छंद बेअक्खरी

मुहकम नूं रूठी महमाई
कागळ लिखिया पड़ण कमाई ।
ऐ कागळ जाळंधर आवै
छळ सूं अरजण वांच छिपावै ॥२०॥
अरजन प्रछन मिळे उमरावां
दाव विदावत घण दरियावां ।

१६—दुयणां = (दुर्जनों) शत्रुओं के । फिरिया = उलटे हुए, प्रतिकूल हुए ।

१८—मुहकम = इंद्रसिंहजी के पुत्र मोहकमसिंह ने । चाळा = उपद्रव, युद्ध । ज्वाळा = दाह । वस० = अर्जुनसिंह दैव के वश होकर शत्रुओं के हाथ में चला गया ।

१९—मुहकम० = मोहकमसिंह मेड़ते था उस समय जाफर बेग ने उससे अपनी बाजी जीतने को कहा ।

२०—रूठी = रुष्ट हुई । कागळ = पत्र । पड़ण कमाई = लाभ के लिये । छळ सूं = कपट से ।

२१—प्रछन = गुप्त । मिळे उमरावां = उमरावों से मिला ।

वातां मुहकम तणी वणावै
साह दियौ अति कुरब सुणावै ॥२१॥
कितरां कांन मांडियौ काचां
सेवा तबै ग्रही भ्रत साचां।
इंद्रभांण भाटी मत उज्जळ
जोधौ भीम पखां चाढण जळ ॥२२॥
चक्रवत कन्है धरा लख चाळौ
टांणै तिँण न दियै पळ टाळौ।
तज साचोर पाळ हर तेजल
हित पति काज रिणमले हूँतल ॥२३॥
धणी तणां जतनां हित धारै
सावधान मन सांझ सवारै।
वरस बासठौ कातिक वीतां
मौकम बळ किया निज मीतां ॥२४॥

वातां० = मुहकमसिह की वातें बनाकर कहता है कि बादशाह ने मोहकमसिह को बहुत कुरब दिया है।

२२—कितरां० = कितनों ही ने उसकी बातें सुनीं जो कच्चे थे। और जो सच्चे भृत्य थे उन्होंने सेवा ग्रहण की। मत उज्जळ = बुद्धि से उज्ज्वल, साफ दिल का। पखां० = कुल को पानी चढ़ानेवाला।

२३—चक्रवत०—राजा के पास उपद्रव देखकर। टांणै तिँण = उस समय। दियै टाळौ = नहीं छोड़ा। पळ = क्षण भर। पाळ हर = चांपावत। तेजल = तेजसिंह। रिणमले हूँतल = रिणमलों के शामिल हुआ।

२४—धणी तणा = मालिक के। सांझ सवारै = संध्या और प्रभात, प्रतिदिन, प्रतिक्षण। बळू किया = अपने पक्ष में कर लिए; निज मीतां = अपने मित्र कर लिए।

आवी तेरस माह अँधारी
अरि दौड़ियौ करे असवारी।
सू मेड़तै असुभ पुळ साधे
आरुहियौ निज मित्र आराधे ॥२५॥
सोच घणै लीधां साखेतां
पवँगां तीन सहँस पखरैतां।
वात प्रताप अजनरै वैहली
पूगी खबर सोनगिर पैहली ॥२६॥
हुई सु ठीक धांधलां हूँता
जतरै निसचै थई जगूंता।
आयौ जगड़ पतावत आतुर
भुअपति तुरंत बुलायौ भीतर ॥२७॥

दुहा

विगत सुणी सारी विवर, आया हितू हजूर।
अरि भमरांणी आवियौ, दळां न वे था दूर ॥२८॥

२५—माह अँधारी = माघ वदि। अरि = शत्रु। दौड़ियौ = चला। सू मेड़तै० = उस मोहकमसिंह ने मेड़ते से रवाना होते अशुभ मुहूर्त लिया था। आरुहियौ = चढ़ा, सवार हुआ।

२६—साखेतां = शाखावाले, नामी, वीर। पवंगां = घोड़े। पखरैतां = पाखर डाले हुए। वात० = अजीतसिंहजी के प्रताप से वह वार्ता। वैहली = जल्दी। सोनगिर = जालोर। पैहली = मोहकमसिंह के पहुँचने से पहले।

२७—ठीक = खबर, पता। धांधलां हूँता = धांधल राठोड़ों से। थई = हुई। जगूंता = जगरामसिंह के सुभटों को। जगड़ = जगरामसिंह। आतुर = जल्दी। भुअपति = राजा।

२८—विवर = ब्योरे के साथ। हितू = हित चाहनेवाले। अरि = शत्रु (मोहकमसिंह)। भमरांणी = एक गाँव का नाम। वे = निश्चय।

लड़वा नृप अंबर लगौ, महाराजा अजमाल।
तेजल बोले वार तिण, दान सुजाव दुझाल ॥२९॥
राजा नीयत सांभळै, वहै विसोवा वीस।
असमै धारै बुद्धि बळ, समै विचारै रीस ॥३०॥
तेजल राखण राजग्रह, कहि नृप नीत विचार।
लियां निकट निज सेव लखि, अजन कियौ असवार ॥३१॥
कँवर विदा पैहला कियौ, सरब महिल्लां साथ।
अण संका आगै हुवा, भड़ बंका भाराथ ॥३२॥
कँवर जतन चुतरेस कौ, साथ पतौ चहुवांण।
हरी बहादर लाल तण, पण वरजांग प्रमांण ॥३३॥
सांम सुछळ खीची सिवौ. रावत गोकळदास।
उर उग्रांरौ अगजीत रै, नित साचौ विसवास ॥३४॥

२९—तेजल० = उस समय तेजसिह ने कहा। दान सुजाव = दानसिह का पुत्र। दुझाल = वीर।

३०—राजा० = हे राजा! नीति की बात सुनो। वहै० = बीस बिस्वा उसको धारण करो। असमै० = लड़ने का समय न हो तो बुद्धिबल को धारण करना चाहिए। समै० = समय हो तो क्रोध करना चाहिए।

३१—लियां० = अपनी सेवा का विचार कर अपने पास ले महाराजा को सवार किया।

३२—कँवर० = महाराजकुमार को उससे पहले रवाना किया। महिल्ला = रानियों के। अण संका = निर्भय। भाराथ = युद्ध में।

३३—कँवर जतन = कुँवर (अभैसिहजी) के यत्न (रक्षा) के लिये। चुतरेस कौ = चतुरसिंह चौहान का पुत्र। पतौ = प्रतापसिह। हरी = हरिसिह। बहादर = वीर। लाल तण = लालसिंह का पुत्र। पण = प्रतिज्ञा में। वरजांग = भीम का पुत्र वरजाग राठौड़, राव चूंडाजी का भतीजा।

३४—साम = स्वामी। सुछळ = युद्ध।

गोयँद भगवानौ फतौ. श्रै धांधल्ल उदार ।
रैणायर प्रोहित रिधू, धालदास सिकदार ।।३५।।
सक मांगळियौ तेजसी, अन साहबौ अबीह ।
सकळ निवड़ भड़ आठ सौ, धावड़ ठाकुर सीह ।।३६।।
वानर नारण वीर वर, केसवदास सुतन्न ।
साथ वळे हरनाथ सुत, मेर समोवड़ मन्न ।।३७।।
जग मंडे कँवरां जतन, अजन थयौ असवार ।
ज्यौं रामण सिर आवियां, जम धारियौ विचार ।।३८।।
तेजल आईदांन तण, राजड़ रै किसनेस ।
श्रै चांपावत ऊधरा, रिणमल जतन नरेस ।।३९।।
भीमाजळ रिणछोड़ रौ, जोधौ सांम जतन्न ।
भाटी इंदौ भीम तण, अरि त्रण काज अगन्न ।।४०।।
सांमळ कुंभकरन्न तण, ऊदाहरौ अभंग ।
देवौ गोयँददास रौ, तोरे तेज तुरंग ।।४१।।

३५—रैणायर = रणछोड़दास । रिधू = श्रेष्ठ । सिकदार = कोतवाल ।

३६—सक = (शक्त) समर्थ । अन = और । अबीह = निर्भय । निवड़ = बहादुर । धावड़ = पल्लीवाल ब्राह्मणों में एक जाति ।

३७—वानर = राठौड़ों में एक जाति । सुतन्न = पुत्र । मेर = सुमेरु पर्वत के । समोवड़ = बराबर, समान ।

३८—मंडे = करके । रामण = रावण । जम = यमराज ।

३९—ऊधरा = सर्वोच्च । रिणमल = योधा, बहादुर ।

४०—भीमाजळ = भीमसिंह । जोधौ = जोधा राठौड़ । इंदौ = इंद्रभाण । अरि० = शत्रुरूप तृण के लिये अग्निरूप ।

४१—ऊदाहरौ = ऊदावत राठौड़ । तोरे = चलावे ।

रामसिंघ सबळेस रौ, कूंपौ ग्रह केवांण ।
फौजां धज फतमाल रौ, साथ जगड़ चहुवांण ॥४२॥
.... ।
.... ॥४३॥
राजा छुळ जूंझार रौ, चंदहरै दळसाह ।
सार तरस्सै सांम छुळ, आभ परस्सै बांह ॥४४॥
भावसिंघ ऊदावते, रायमलोते जोध ।
अै उमराव अनंत बळ, पति छुळ अकळ प्रबोध ॥४५॥
गोपाळौ सिवराम रौ, साथे जोध सकज्ज ।
अै खीची ऊंची धरण, करण जतन कमधज्ज ॥४६॥
जिण भळियौ नृप चौज तन, मांग ळियौ माहेस ।
जोड़ै भतीज किसन्न जे, निस दिन जतन नरेस ॥४७॥

४२—कूंपौ = कूंपावत राठौड़ । ग्रह = धारण करके । केवांण = तलवार । फौजां धज = सेना में ध्वजारूप, अग्रणी । जगड़ = जगराम ।

४४—छुळ = युद्ध में । जूंझार रौ = जूंझारसिंह का पुत्र । चदहरै = चांदावत मेड़तिया राठौड़ । दळसाह = दलपतसिंह । सार = तलवार । तरस्सै = खींचता है । सांम छुल = मालिक के वास्ते । आभ = आकाश ।

४५—रायमलोते = रायमलोत राठौड़ । जोध = जोधसिंह । अै = ये । अकळ पूर्ण ।= प्रबोध = जागते हुए ।

४६—गोपाळौ = खीची वंश का गोपालदास । जोध = जोधसिंह । सकज्ज = समर्थ । कमधज्ज = राठौड़ों के ।

४७—जिण० = जो राजा की खिलवत में था । माहेस = महेशदास । जोड़ै = साथ ।

दीपौ बाळ किसन्न तण, पण ऊधरै विश्रास।
साथ लियां रिधि सांम री, नव ही रिद्ध निवास ॥४८॥

छन्द बेअक्खरी

भुजबळ सिंघ जिसा भाराथे
सौ त्रण निवड़ थया भड़ साथे।
चडिवा उदै निसा नृप चडियौ
प्रिसणां हितू जितां दृढ़ पड़ियौ ॥४९॥
नव ही कोट तणां भड़ तेसे
सारां पूगो खबर सँदेसे।
व्रत धारियां न जेझ विचारी
सुणतां पांण हुई असवारी ॥५०॥
रिम दौड़ियौ दिवस तिण रतियां
मौहर खबर पूगि मेड़तियां।
ऊदां तणौ तुरत गम आई
भेळा थया पौहर में भाई ॥५१॥

४८—दीपौ = दीपचंद। तण = पुत्र। पण = प्रतिज्ञा। ऊधरै = उच्च कोटि का। विश्रास = (व्यास) राजव्यास। रिधि = (ऋद्धि) सेवा का सामान।

४९—सिघ जिसा = सिंह के सदृश। भाराथे = युद्ध में। सौ त्रण = ३०० तीन सौ। निवड़ = भोजनादि से पहुँचकर। चडिवा उदै = उदय के लिये। निसा = रात्रि में। चडियौ = सवार हुआ। प्रिसणां = शत्रुओं के। हितू = लिये।

५०—नवहो कोट तणां = मारवाड़ के। तेसे = तब। व्रत = नियम, प्रतिज्ञा। जेझ = देरी। सुणतां पांण = सुनते ही।

५१—रिम = शत्रु। तिण रतियां = उसी रात्रि में। मौहर = पहले। ऊदां तणौ = ऊदावतों को। गम = खबर, सूचना।

अन वन वरत लियौ पति आरत
साथे पंथ हुवा धरि सारत।
छत्रपति तुंग गमागम छूटा
तिकरि गयण सूं नाखत्र तूटा ॥५२॥
अग्रवगरी राजा खड़ि आयौ
दणियर बीज उदै दरसायौ।
अजन साथि भड़ साहस ऐसा
तोलै आभ एक भुज जैसा ॥५३॥
सुर सुणँतां उर सत्रां सँकोड़ै
राजूखान नगारै रोड़ै।
सुख नृप करण धरा फिरि साजा
रूठै जम सारीखौ राजा ॥५४॥

दुहा

ऊतरियौ राजा अजन, कोपी राड़ करूर।
उवर हरक्खै आपरां, नरां परक्खै नूर ॥५५॥

५२—अन वन० = अन्न-जल का नियम लिया। पति आरत = स्वामी के सकट में। सारत = घोड़ों की तेज चाल। तुंग = घोड़े, समूह। गमागम = एक साथ। तिकरि = उससे। गयण सूं = आकाश से। नाखत्र = नक्षत्र।

५३—अग्रवगरी = सबके अगाड़ी। खड़ि = घोड़े को चलाकर। दणियर = दुनिया, संसार। बीज उदै = द्वितीया का चंद्र उदय हुआ हो वैसा। अजन = अजीतसिंहजी के। साहस = (सहस्र) हजार। आभ = आकाश।

५४—सुर = नक्कारे का शब्द। उर० = शत्रुओ के हृदय संकुचित हुए। रोड़ै = बजाया। साजा = अच्छे। रूठै = रुष्ट होने पर।

५५—ऊतरियौ = मुकाम किया। राड़ = युद्ध। उवर = मन में, हृदय में। आपरां = अपने।

आयौ दूत उतावळौ, विध दाखै तिण वार ।
पिसण छळे पूजै नही, कुसळै राजकँवार ॥५६॥
अमरक्खे हरखे अजौ, यौं दाखै महाराज ।
करूं सत्रां निरमूळ कुळ, तौ जायौ जसराज ॥५७॥
अतरै गरदां ऊपड़ी, चडो पुणां गयणग्ग ।
आया भड़ अजमाल रा, कर तालता खडग्ग ॥५८॥
नरपत्ती दीठौ निजर, अस छोडिया सडोर ।
सेव तणां फळ पांमिया, देव निहोर निहोर ॥५९॥
आयौ कुसळौ अचळ रौ, मेड़तियां सिर मौड़ ।
विजौ असंकौ चंदहर, रिण वंकौ राठौड़ ॥६०॥
पतौ परिग्गह आगलौ, मौहर गजां मरोड़ ।
.... ॥६१॥

५६—उतावळौ = जल्दी से । विध० = उस समय यह समाचार कहा । पिसण = शत्रु । छळे = युद्ध में । पूजै नहीं = पहुँच नहीं सकते । राजकँवार = महाराजकुमार प्रसन्न हैं ।

५७—अमरक्खे = क्रोध करके । अजौ = अजीतसिंहजी, दाखै = कहते हैं ।

५८—अतरै = इसी अवसर में । गरदां = रज, रेणु । ऊपड़ी = उठी । पुणां = कहते हैं । गयणग्ग = आकाश में । कर = हाथों से ।

५९—नरपत्ती० = राजा को नजर से देखा । अस = घोड़ों को । छोडिया सडोर = बागों सहित छोड़ दिया, बहुत वेग से चलाया । सेव तणां = सेवा का । देव० = राजा को । निहोर निहोर = देख देखकर ।

६०—मौड़ = सेहरा; मुकुट । विजौ = विजयसिंह । चंदहर = चांदावत ।

६१—पतौ = प्रतापसिंह । परिग्गह = (परिग्रह) सेना, साथ के लोग । मौहर = अगाड़ी ।

ऊदौ पौरस अग्गळौ, रूपौ रांमचँदौत।
नाहर गोवरधन्न रौ, महाखळां कर मौत ॥६२॥
कूपा राम पदम्म सम, जैत सुतन जम जाळ।
खळ भांजण आया खड़े, किर भूखा लंकाळ ॥६३॥
फतमल्लौ विजपाळ रौ, मधकर सुत फतमाल।
पाय लगौ भूपाळ रै, अै कूंपा कळ चाळ ॥६४॥
राजा पेखै राठवड़, देखै भाग विवार।
पियै पुरांणी सेव गिण, ऊपर पांणी वार ॥६५॥
केहरि कूंपौ दूसरौ. आयौ साम जतन्न।
मन भायौ महाराज रै, पायौ उच्छव तन्न ॥६६॥
मूरौ केसरिसिंघ, रौ, सूजौ जगड़ सुजाव।
आया भाटी अतुल बळ, छळ नवकोटी राव ॥६७॥

६२—ऊदौ = उदयसिंह। पौरस = पुरुषार्थ में।

६३—कूपा = कूंपावत। जैतसुतन = जैतसिंह के पुत्र। जमजाळ = यमराज के समान जाज्वल्यमान। खड़े = घोड़ों को चलाकर। लंकाळ = सिंह, शार्दूल।

६४—मधकर = माधोसिंह का। कळचाळ = युद्ध करनेवाले।

६५—पेखै = देखकर। पियै = पीता है। सरदारों की पुरानी सेवा को मानकर उन पर भ्रमण कराकर पानी पीता है। यह महान् आदर सम्मान और स्नेह की सूचक क्रिया है।

६६—साम जतन्न = स्वामी के लिये। भायौ = अच्छा लगा। पायौ० = शरीर में उत्सव बढ़ा।

६७—जगड़ सुजाव = जगन्नाथ का पुत्र भाटी। छळ = युद्ध में। नवकोटी राव = मारवाड़ के राजा के।

अरि जाळंधर आवियौ, मिळिया खळ अणदाद।
पखि गुण हीन निरास पण, हितू अरज्जण आद ।।६८।।
वयण सकंप असंप विध, दीठां नावै दाय।
किर पंखी वस पींजरै, छूटण करै उपाय ।।६९।।
मुहकम थयौ निरास मन, जीव न पावै ज्यास।
दुख पूरण जूटी दसा, अब सुख छूटी आस ।।७०।।
पत हूँता दिन पांचमै, मिळिया दळ अप्रमांण।
आयौ जोधा मेळि भड़, वनौ करन चँद्रभांण ।।७१।।
रीत अप्रौगी रूकहथ, मोहण जोगीदास।
सकतौ हैबतसिंघ सथ, सँग पीथलौ सहास ।।७२।।
अजन कहै दळ ऊगतां, आवै मिळै अपार।
मुहकम नूं चिंता महा, वीता सरब विचार ।।७३।।

६८—अरि = शत्रु (मोहकमसिह)। अणदाद = अपार, असंख्य। पखि० = परंतु उसका हित चाहनेवाले जो अर्जुन आदि उसके पक्ष में थे वे सब गुणहीन और प्रतिज्ञा के पूरे नहीं थे।

६९—वयण = वचन। असंप = (अ + संप मैत्री) विरोध। दाय = पसंद।

७०—ज्यास = विश्वास, धैर्य। जूटी दसा = दुःख से पूर्ण दशा हुई।

७१—पत हूँता = मालिक से, महाराजा से। जोधा = जोधा शाखा के राठौड़। वनौ० = वनैसिंह, करणसिंह और चंद्रभाण।

७२—अप्रौगी = (अप्रयोगी) जिसका पहले प्रयोग नहीं किया गया, अर्थात् नई। सहास = साहसी।

७३—ऊगतां = सूर्य के निकलते ही। बीता = नष्ट हो गए।

सत्र भागौ जाळोर सूं, सुहड़ सचिंता साथ।
किण बळ दळ जायै कुसळ, मग दमँगळ भाराथ ॥७४॥
सुणियौ अजन महाबळी, खळ नाठौ पुर छोड़।
मेळाऊ साथे हुवा, खाटी हाथे खोड़ ॥७५॥
अतु आतुर चढियौ अजन, रिम सुणि जातां राह।
वांण नगारां ऊधरी, सारां धरी सनाह ॥७६॥
अरि दूनाड़ै आवियौ, वणियौ जुद्ध निमंध।
दळ सझ भाद्राजण दिसा, आयौ अजण कमंध ॥७७॥

छंद मोतीदाम

अठी दिखणाद दिसा अजमाल
प्रलै किर सागर मील अपाळ।
उठी दिस उत्तर पुत्तर इंद
सझै दळ जेळ कि वेळ समंद ॥७८॥

७४—सत्र = (शत्रु) वैरी (मोहकमसिंह)। सचिंता = चिंता सहित। किण० = किस बल से मेरी सेना में कुशल हो, क्योंकि मार्ग मे युद्ध का उपद्रव अवश्य होगा।

७५—पुर = नगर (जालोर)। मेळाऊ = लड्डू खानेवाले। खाटी = संपादित की। खोड़ = दोष, खराबी।

७६—अतु = अत्यंत। आतुर = शीघ्र। रिम = शत्रु को। राह = मार्ग। वांण...ऊधरी = नक्कारे का हुक्म दिया। सारां = सबने। धरी सनाह = कवच पहने।

७७—दूनाड़ै = एक गाँव का नाम। निमंध = युद्ध का प्रबंध हुआ। भाद्राजण = एक गाँव का नाम। दिसा = तरफ। कमध = राठौड़।

७८—अठी = इधर। प्रलै = प्रलय का। अपाल = नहीं रुकनेवाला। उठी दिस = उधर की तरफ। पुत्तर इंद = इंद्रसिंह का पुत्र। जेळ = जाल बिछाया। वेळ = वेला, तट, समुद्र की तरंग।

दुहूँ दिस सद्द सन्हद्द दमांम
उडे कळ जंत्र अनंत अमांम।
हुए मुख हक्क किलक्क हजार
धजे पड़ रीठ वजे वपधार ॥७६॥
कटे असतुंड दुखंड कपाळ
रुकै ढक(ल) हूँत न कुंत कराळ।
भड़ां वप हांम दहूँ नृप भीर
वजै रिण धीर जिता वर वीर ॥८०॥
मुड़ै लख कातर आतर माग
करै भट भूर जु सूर कराग।
अरी अगजीत तणा पुर ओर
जुटे इक जांम घटे तद जोर ॥८१॥

छप्पय

महाराजा अजमाल, कीध हलकार कटक्कां
मिटी रूक झळ मचे, अरी मोरचै अटक्कां।

७६—दुहूँ० = दोनो तरफ नक्कारों के शब्द का घोष हुआ। कळ = युद्ध में। जंत्र = अग्नियंत्र। अमाम = अप्रमाण। धजे = अग्रभाग पर। रीठ = शस्त्रों का प्रबल प्रहार। वप = (वपु) शरीर पर। धार = तलवार की धारा।

८०—असतुंड = घोड़ों के मुख। ढल हूँत = ढाल से। कुंत = भाले। कराळ = भयंकर। वप = शरीर पर। हांम = हमगीरी।

८१—आतर = आतुर होकर। माग = रास्ता लेते हैं, भागते हैं। भूर = बहुत। कराग = हाथ दिखाते हैं, लड़ते हैं। पुर ओर = नगर की तरफ थे। जुटे = लड़े। इक जांम = एक प्रहर तक।

८२—हलकार = ललकारना। कटक्का = सेना में। मिटी० = शत्र के पराजित होने से तलवार की ज्वाला मिटी, शत्रु मोरचों में

गयौ कुमर तज गुमर, समर छोडे इक सस्से
लियौ प्रांण गुण सहरि, कियौ लसकर परवस्से।
नीसांण छोड़ धज प्रांण निज, गयँद फतै गज सारिखा
ऊगी सलाह कच्ची उवरि, पूगी सच्ची पारिखा ॥८२॥
तेजल दान सुजाव, अभँग चांपै दळ अग्गळ
कूंपै राम सकाज, समरि बाधे सुत सब्बळ।
जोधौ जोगीदास, विकट करना जळ वाळौ
मेड़तियौ जस रूप, सार चाळियौ सिघाळौ।
अजमाल तणौ बळ धार इम, नर दुझाल ध्रम नीमड़े
भाजियौ खेत मुहकम भिड़े, औ घायल हुय ऊपड़े ॥८३॥

दुहा

ओथै तेरस ऊजळी, माह उजाळै पक्ख।
ईंदावत ईजत सटै, गौ बासटै वरक्ख ॥८४॥

अटक रहे। गुमर = गर्व। इक सस्से = एक श्वास में, तुरन्त। प्रांण गुण = प्राणों को समझकर, प्राण बचाने के लिये। सहरि लियौ = शहर का आश्रय लिया, भाग गया। नीसांण = नक्कारा। धज = ध्वजा, झंडा। गयँद = गजेंद्र। ऊगी = लगी। उवरि = मन में।

८३—अभँग = नहीं भागनेवाला। सकाज = काम का। समरि = युद्ध में। करना जळ वाळौ = करन का पुत्र। सिघाळौ = श्रेष्ठ। दुझाल = वीर। ध्रम नीमड़े = अपने धर्म से उरिण हुए। भाजियौ = भागा। खेत = रणक्षेत्र से। भिड़े = मुकाबला करके। औ = ये, उक्त वीर।

८४—ओथै = उधर। ऊजळी = निर्दोष। ईंदावत = इंद्रसिंह का पुत्र मोहकमसिंह। ईजत सटै = प्रतिष्ठा के वास्ते। गौ = चला गया। बासटै = सं० १७६२ में। वरक्ख = वर्ष।

दिन जुध अत लग्गौ दुसह, अर भग्गौ निस अद्ध ।
ऊगै दिन चढियौ अजौ, अड़ियौ कोप उरद्ध ॥८५॥
भेळा वीस हजार भड़, रोस अपार सकज्ज ।
आयौ काकांणी अजन, धर खेदै कमधज्ज ॥८६॥
आडौ सोबौ आवियौ, मिरजै सहत मुकीम ।
बळ तज दक्खे वीनती, भूप परक्खे भीम ॥८७॥
लिखे सुपारस साह नूं, अत आरत उर जांण ।
थेली साठ हजार री, मेल्ही पाये आंण ॥८८॥
अरज करै अगजीत सूं, पेस धरै लख पाग ।
काकांणी आप किलंब, वळिया पाए लाग ॥८९॥
जेर करै जोधांण रौ, सोबौ मेछ समाज ।
आयौ जाळंधर अजौ, अरि करि प्रांण अकाज ॥९०॥

८५—अर = (अरि) शत्रु (मोहकमसिंह)। निस अद्ध = अर्द्धरात्रि में। ऊगै दिन = सूर्य निकलते ही। अड़ियौ = टूटा हुआ। उरद्ध = (ऊर्ध्व) बहुत, उन्नत।

८६—भेळा = इकट्ठे। रोस = क्रोध। सकज्ज = समर्थ। काकांणी = एक गाँव का नाम। धर खेदै = शत्रुता धारण करके।

८७—आडौ = मार्ग में। सोबौ = सूबेदार। दक्खे = दिखलाई। भूप० = राजा को भीम के सदृश भयंकर समझकर।

८८—लिखे० = मिरजा ने बादशाह को सिफारिश लिखी। आरत = (आर्ति) पीड़ा, दुःख। पाये आंण = पैरो में लाकर रखी।

८९—पेस धरै = पेशकसी रखी। लख पाग = चरणों के दर्शन करके। किलंब = यवन, मुसलमान। वळिया = पीछे लौटे।

९०—जेर करै = विजित करके। अरि करि० = शत्रु के प्राणों का नाश करके।

छंद हणूंफाल

सोचंत मोहकम साह, सुख छूट ऊठ सदाह।
अति हितू भड़ वड़ आगि, दिसि अष्ट जांणि दवागि ॥९१॥
जग वीच जाग्रत ज्यास, अति विघन सुपन उदास।
सब चीज रीझ असार, अत चीत मौत विचार ॥९२॥

दुहा

जाळंधर सिर आवतां, हुय जावतां फजीत।
मुहकम घटियौ जोस मद, अति जग वधी अकीत ॥९३॥

इति श्री राजराजेश्वर महाराज श्रीअभैसिंघजी री परम जस्म
राजरूपक मैं श्री जी री फतै नै सत्रु पराजय
एकविंश प्रकास ॥ २१ ॥

९१—ऊढ मदाह = जलन के साथ उठता है। अति हितू० = अत्यंत हितकारी सुभट, जो कि बड़े अग्नि के समान है। परंतु वे भी ऐसा समझने लगे कि मानों दावानल आठों दिशाओं में व्याप्त हो गया है।

९२—ज्यास = विश्वास। चीत = चित्त में।

दुहा

राजकँवर अजमाल रै, अभौ परम अवतार।
ज्यों ज्यों वाधै वेस गुण, अरि त्यों घटै अपार ॥ १ ॥
अँजसै उर राजा अजन, सुत गुण परखि सवाय।
उद्दम जो धारै अरी, सो निर उद्दम थाय ॥ २ ॥

छंद बेअक्खरी

अति सुख वरस त्रेसठौ आयौ
श्री अगजीत जोत सरसायौ।
दिल्ली हूँत रहै चित दावै
उर सुपनै ही भरम न आवै ॥ ३ ॥
केतां भड़ां निवाजस कीजै
दांन प्रसन मन पातां दीजै।
अतरै दूत खबर ले आया
समाचार सह विवह सुणाया ॥ ४ ॥

१—राजकँवर = राजकुमार। अभौ = अभयसिंह। वेस = उम्र, अवस्था। अरि = शत्रु।

२—अँजसै = गर्वयुक्त होता है। अजन = अजीतसिंह जी। उद्दम० = शत्रु जो उद्यम करना चाहता है वह निष्फल होता है।

३—अति सुख = अत्यंत सुख देनेवाला। त्रेसठौ = संवत् १७६३। जोत = तेज, प्रताप। सरसायौ = बढ़ा। दिल्ली हूँत = दिल्ली से। चित दावै = मन में दावा रखता है। उर० = स्वप्न में भी मन में भ्रांति नहीं लाता है।

४—केतां = कितने ही। पातां = चारणों को। अतरै = इतने में, इस अवसर पर। सह = सब। विवह = (विविध) नाना प्रकार के।

अहमदपुर इबराम लिखाई
आजम साह तगीरी पाई ।
सू लाहोर निबाब सचाळौ
आवै मगि इबरांम उताळौ ॥ ५ ॥
महाराजा अजमाल महाबळ
कांनै सुणत लिखाया कागळ ।
आगम जवन सुणे आकुळिया
मुरधर कटक सिताबी मिळिया ॥ ६ ॥
आठैइ मिसल तणा भड़ आया
सुत जसवँत चित परख सुहाया ।
कमधां धणी हुकम नवकोटां
मिळिया सुपह कन्है पह मोटां ॥ ७ ॥

दुहा

साम्हा लहसकर मेळि(ल्हि)या, जाळंधर अगजीत ।
खड़ आयौ इबराम खां, मिलण जवन सजमीत ॥ ८ ॥

५—सू लाहोर = लाहोर से । सचाळौ = युद्ध करनेवाला ।

६—आकुळिया = त्वरा की । मुरधर = मारवाड़ की ।

७—आठैइ मिसल = जोधपुर के राज्य में आठ उमराव प्रथम कक्षा के हैं । उन स्थानों (ठिकानों) के । तणा = का । सुत जसवँत = अजीतसिंहजी को । परख = देखकर । चित सुहाया = मन में अच्छे लगे । कमधां धणी = राठोड़ों के स्वामी (अजीतसिंहजी) ने । नवकोटां = समस्त मारवाड़ में । सुपह कन्है = मालिक के पास । पह = प्रभु । मोटां = बड़े दर्जे के ।

८—साम्हा० = इब्राहीम खाँ गुजरात जाता हुआ मारवाड़ में आया तब अजीतसिंहजी ने जालोर से उसके सामने अपनी सेना भेजी । तब इब्राहीम खाँ महाराज से मिलने को जालोर आया । सजमीत = सेना के साथ ।

समँधी औरँगसाह रौ, विनै मुगल विसतार।
महाराजा उण सूं मिले, आदर कियौ अपार ॥ ६ ॥
निधि गजराज तुरंग नग, मंछ करी मनुहार।
हित दीधौ राखी निजर, कीधौ विदा सवार ॥१०॥
मुगल महीनै माह रै, मिळ पूगौ गुजरात।
भूपत नांमण भोमियां, छिळियौ जोधां छात ॥११॥
पैहला देवळ पागड़ै, लाया त्रास लगाय।
राड़द्रहा महाराज रै, पाछै लागा पाय ॥१२॥
सूराचँद मरुधर सुपह, डेरा दिया दुझाल।
भोम नमाया भोमिया, महाराजा अजमाल ॥१३॥

छंद बेअक्खरी

सूराचंद अजन दळ साजे
वस धर करी निहसते वाजे।

९—विनै = दोनों तरफ से।

१०—निधि = खजाना। नग = जवाहिरात। हित = हित से दिया।

११—भूपत = राजा (अजीतसिंहजी)। नांमण भोमियां = छोटे जमींदारों को नमाने के लिये। छिळियौ = उच्छृंखल हुआ, आगे बढ़ा। जोधां छात = जोधा वंश का छत्र।

१२—देवळ = राजपूतों का एक वंश। आड़ावला में उनका भोमीचारा है। उनको। पागड़ै लाया = अधीन किया। त्रास लगाय = भयभीत करके। राड़द्रहा = राठौड़ों का कुल है। राड़द्रहा एक प्रांत भी है। उसके निवासी राड़द्रहा कहलाते हैं।

१३—सूराचँद = एक प्रांत। दुझाल = महावीर। भोम = भूमि के।

१४—दळ साजे = सेना को तैयार करके। निहसते = बजते हुए।

इतै चैत वद वीज अँधारी
आवी सुर ध्रम आणँदकारी ॥१४॥
आया दूत खुस्याली आई
साह मरण ची विगत सुणाई।
तातां घोड़ां हुई तयारी
अधपति सुणत कीध असवारी ॥१५॥
तुरँग खेड़िया भांत अतारी
गुरड़ जांण चढियौ गिरधारी।
अजन जोधपुर पांचम आयौ
असुरां मृत सूं इळगौ अभायौ ॥१६॥
प्रौल्यां थई सकत ची पूजा
दुयणां थया मित्र हित दूजा।
निरखे मियां थया पुर न्यारौ
अजन कियौ महले औतारौ ॥१७॥

इतै = इधर। वीज = द्वितीया। अँधारी = कृष्णपक्ष की। सुर ध्रम = देवता और धर्म के आनंद करनेवाली।

१५—खुस्याली = आनंद, हर्ष। मरण ची = मरने को। तातां = तेज। अधपति = राजा (अजीतसिंहजी)।

१६—खेड़िया = चलाए। भांत अतारी = इस तरह से। जांण = मानों। गिरधारी = विष्णु भगवान्। अजन = अजीतसिंहजी। असुरां = मुसलमानों को। मृत सूं = मृत्यु से। इळगौ = जुदा। अभायौ = बुरा।

१७—प्रौल्यां = दरवाजों पर। थई = हुई। सकत ची = शक्ति की। दुयणां = दुर्जनों के, शत्रुओं के। निरखे = देखकर। मियां० = अधिकारी यवननगर से अलग हो गया। महले औतारौ = महलों में डेरा किया।

सगळे असुरे भार सँभाया
अधपत सुहड़ ठिकांणै आया।
बाजो निसबळ किताइ पुळाणा
मेळाउवां वदन मुरझाणा ॥१८॥
मिरजौ पैठौ डेरां मांहे
सुज कर अरज घणां पग साहे।
वाधै तेज नौबतां वाजै
विसवनाथ निज तखत विराजै ॥१९॥
ऊगै दिवस बळे दळ आया
विचित्रां निरख प्रांण विसराया।
मुहकम तणा दूत निस मिळिया
वेग तणौ दुख देखे वळिया ॥२०॥

दुहा

मुहकम छोड़े मेड़तौ, नास गयौ नागोर।
पूछे जाफर जोधपुर, तूटै छूटै तोर ॥२१॥

१८—सगळे० = सब यवनों ने अपना सामान उठाया। अधपत० = राजा के सुभट स्थान पर आए। निसबळ = निर्बल, कायर। पुळाणा = भागे। मेळाउवां = एकत्र हुए लोगों का। वदन = मुख। मुरझाणा = म्लान हुआ।

१९—घणा पग साहे = बहुत लोगों ने पैर जमाए। विसवनाथ = जगत्पति (अजीतसिंह जी)।

२०—बळे = फिर। विचित्रां = मुसलमानों ने। विसराया = भूल गए। मुहकम तणा = मोहकमसिंह के। निस = रात्रि में। वेग तणौ = मिरजा का।

२१—नास गयौ = भाग गया। जाफर = नागोर के अधिकारी यवन ने मोहकमसिंह से पूछा। छूटै = जोधपुर छूट गया। तोर = गर्व।

छंद त्रिभंगी

मिळ थाट कमंधां दळ अनमंधां
बंधक संधां ऊबंधां।
अति वेध विरुद्धां परस उरद्धां
किलँब दगंधां अधुकंदां।
आसुर दळ माहे सोच अथाहे
दिन असुहाए दरसाए।
पळ पळ भ्रम पाए हाथ पराए
पड़िया आए थळ पाए ||२२||
अह छट्ठ विहायां सातम आयां
सूर अछायां दरसायां।
उर आसुर तायां सबद अभायां
उझकै पायां असुहायां।
सत्रु बारस बीतां उवरि सभीतां
वाचै गीतां दिन वीतां।
....
.... ||२३||

२२—थाट = समूह। कमंधां = राठोड़ों का। अनमंधां = असंख्य। बंधक = कैदी किए। संधां ऊबंधां = संधि न करनेवालों को। वेध = झगड़ा। विरुद्धां = दुश्मनों के साथ। परस उरद्धां = ऊपर आसमान को स्पर्श कर रहे हैं। किलॅब = यवनों को। दगंधां = भस्म कर दिया। जो अग्नि की तरह धुक रहे हैं. जल रहे हैं। अथाहे = अपार। असुहाए = बुरे। थळ पाए = जमीन पर।

२३—अह = दिन। छट्ठ = षष्ठी। विहायां = व्यतीत होने पर। अछायां = गर्वयुक्त। तायां = तप गए हैं। अभायां = बुरे। उझकै = चमकते हैं। पायां असुहायां = बुरी दशा को प्राप्त होकर। बारस बीतां = द्वादशी व्यतीत होने पर। उवरि = ऊपर। सभीतां = भयभीत होकर। वाचै० = दिन काटने को गीता का पाठ करते हैं।

अतरै चकचक्कां सबद उचक्कां
आसुर कुक्कां ओद्रक्कां ।
सुण वीर किलक्कां हाक असंकां
वाजि छणंकां खग वंकां ।
मिरजौ तिण वारां मीर करारां
साथि अतारां करि सारां ।
खग कड्ढै धारां चढि तोखारां
वग्गौ सारां विण पारां ॥२४॥
दळ भग्गौ जावै हाथ दिखावै
वीतां पावै विसरावै ।
जुधि जांण न पावै जावै जावै
सुणि उलटावै सरकावै ।
उर ऐसी धारै कमण उबारै
समै करारै परसारै ।
किरतेस सँभारै कांम अकारै
आज उबारै आधारै ॥२५॥

२४—अतरै० = इतने में चकचक होती है अर्थात् परस्पर कानाफूसी होती होती है। उचक्कां = उच्च (जोर से) शब्द होते हैं। किलक्कां = किलकारी। हाक असंकां = निःशंक वीर शब्द होते हैं। वाजि० = रणबंके घोड़े छणछणाहट करते हुए आकाश को ओर जाते है। तिण वारा = उस अवसर पर। करारां = बलवान्। अतारां = आततायी, शस्त्र लिए हुए। तोखारां = घोड़ों पर। वग्गौ = लड़ा। सारा = तलवारो से।

२५—वीतां पावै = पैर छूट गए। विसरावै = भूल गए। उलटावै = पीछे फिरते हैं। सरकावै = हटाते हैं। कमण = कौन? उबारै = बचा सकता है। समै करारै = कठिन समय में। परसारै = दूसरे अधीन। किरतेस = कीर्तिसिंह को। सँभारै = याद किया। कांम अकारै = कठिन काम में। उबारै = बचावै। आधारै = आश्रय देवे।

दुहा

किरतसिंघ कूंपाहरौ, सरणायां साधार।
कर आदर सरणै लियौ, नृभै कियौ तिण वार ॥२६॥
जर जवहर घर जोरवां, लूंटांणी सम लाज।
मेछां नीमड़ियौ विभौ, सुण चडियौ महाराज ॥२७॥
के भागा अजमेर नूं, रिम दळ राह विराह।
के छिपिया किरतेस रै, के पुर घर घर मांह ॥२८॥
कुसळ थयौ सारै कटक, मार उतारण मीर।
भड़ कूंपावत भीम रै, लागा लोह सरीर ॥२९॥
गोपाळौ तेजल्ल रौ, बालो भाला हत्थ।
साझ मुगल्लां सांमि छळ, आयौ कांम असत्थ ॥३०॥
कारण कीरतसिंघ रौ, श्री अगजीत निहाळ।
सरण अभै कीधौ मियां, लीधो वीत सँभाळ ॥३१॥

२६—कूपाहरौ = कूंपावत। साधार = आश्रय देनेवाला। नृभै कियौ = निर्भय किया।

२७—सम लाज = लज्जा के साथ। नीमड़ियौ = समाप्त हो गया। विभौ = ऐश्वर्य।

२८—रिम दळ = शत्रुसेना। राह विराह = रास्ते और बेरास्ते। किरतेस रै = कूंपावत कीर्तिसिंह के ठिकाने में। के = कितने ही। पुर = नगर में।

२९—सारै = समस्त। मार० = मीरों को मार उतारने से। लोह = प्रहार।

३०—तेजल्ल रौ = तेजसिंह का पुत्र। बालो = बाला वंश का राठौड़। साझ मुगल्लां = मुगलों से लड़कर। सामि छळ = मालिक के वास्ते। असत्थ = अकेला, बिना साथ।

३१—कारण = गौरव। निहाळ = देखकर। अभै = निर्भय। लीधौ०—धन सँभाल लिया।

आय छिपे पुर मैं असुर, निस उर धार विचार ।
छांना सैधां छेड़िया, सँगि तेड़िआ सुआर ॥३२॥
दूर कराई दाढियां, मौहरां दे दे हाथ ।
माळा कंठो मौळवी, समचै एकण साथ ॥३३॥

चौपाई

रुपिया मुहर लुटाई रात
भगत हुआ सगळा परभात ।
निरख निरख दळ सिमरै नाम
राधा गोविंद सीताराम ॥३४॥
गावै मुख हरजस गोपाळ
मुद्रा छाप तिलक गळ माळ ।
मांगै भीक फिरै दळ मांह
राति पड़ै नै लागै राह ॥३५॥

३२—असुर = यवन, तुरक । निस = रात्रि में । छांना = गुप्त, छिपे हुओं को । सैधां = सुरंगों में । छेड़िया = पकड़े । तेड़िआ = बुलाया । सुआर = नाइयों को ।

३३—मौहरां० = हाथों में मोहरें लगा दीं । माळा० = माला और कंठियाँ पहना दीं । समचै = सबकी ।

३४—भगत हुआ = भक्त हो गए । मुसलमानी छोड़कर हिंदू हो गए । सिमरै नाम = नाम स्मरण करते हैं ।

३५—मुद्रा = छापें; शंख, चक्र आदि । गळ माळ = गले में माला है । मांगै भीक = दिन में भिक्षा माँगते हैं । राति० = रात्रि होने पर रास्ता ले लेते हैं ।

दुहा

जोधांणै दळ वेळ जळ, मिळिया दळ अप्रमांण ।
चाव चडै दिन चक्रवत, घाव पड़ै नीसांण ॥३६॥

छंद बेअक्खरी

जवन वितीत थया जोधांणै
थया वळै सोभत रै थांणै ।
यौं मेवाती संग उताळा
वीता तुरक मेड़तैवाळा ॥३७॥
सोभै मुरधर देस सवायौ
सूर किरण जिम ग्रहण नसायौ ।
त्रिजड़ा हथा त्रिजड़ भड़ तोलै
बंदी जण दरगह गुण बोलै ॥३८॥
इतै कृष्ण पख तेरस आई
सरस वणी गढ तणी सफाई ।
अजिर मारजण गुण ओपाया
महले नवरँग चित्र मँडाया ॥३९॥

३६—वेळ जळ=जल अर्थात् समुद्र की तरंगों की तरह । चाव=उत्साह । चक्रवत=(चक्रवर्ती) महाराजा अजीतसिंहजी । घाव पड़ै=डंका पड़ा, बजा । नीसांण=नक्कारा ।

३७—वितीत थया=नष्ट हुए । मेवाती=मेवात के यवन । उताळा=जल्दी । वीता=नष्ट हुए ।

३८—त्रिजड़ा हथा=खड्गधारी । त्रिजड़=तलवार । बंदी=स्तुति-पाठक । दरगह=राजसभा में ।

३९—सफाई=तैयारी । अजिर=आँगन में । मारजण=(मार्जन) सफाई । ओपाया=शोभायमान हुए ।

जळ गंगा जमना पुहकर जळ
दळ ग्रह दरभ छिड़क तुळछी दळ।
लख बुध वेद मंत्र जपि लेवै
अगर धूप चंदन ऊखेवै ॥४०॥
ओपै गढ छबि गुणे अनोपे
आदि कांगुरां मंदिर ओपे।
सोभै तेरस दिवस सवायौ
अजन चमर ढुळतां गढ आयौ ॥४१॥

दुहा

आलम सा मुळतांण सूं, आजम दक्खण हूँत।
आवै दिल्ली जंग कज. औरँग हंदा पूत ॥४२॥
श्री महाराज अजीत सा, यौं कहियौ तिण वार।
महल बुलायौ जोधपुर, ल्यावौ राजकुँवार ॥४३॥
मासोत्तम वैसाख मैं, गढ़ जाळंधर हूँत।
रांणी पधरावी सहर, साथे कुँवर सपूत ॥४४॥

४०—पवित्रता के लिये गंगाजल आदि छिरकाए गए। पुहकर=पुष्कर का जल। ग्रह=(गृह) घर में। लख=लाखो। ऊखेवैं=धूप किए गए।

४१—अनोपे=अनुपम, सर्वोत्तम। ओपे=शोभा देता है। अजन=अजीतसिंह जी।

४२—आलम सा=शाहजादे का नाम। आजम=शाहजादे का नाम। हूँत=से। औरँग हंदा=औरंगजेब के।

४३—यौं=इस तरह। तिण वार=उस समय।

४४—जाळंधर हूँत=जालोर से। पधरावी=लाई गई।

परखै सोभा जोधपुर, ईख कळा इधकार।
आयौ सदन अजीत रै, अभौ विसन अवतार ॥४५॥
ओपै हाट ओछांड़िया, पाटंबर अण पार।
वांणक जांणक वद्दळां, इंद्रधनुख उणहार ॥४६॥
सुभ तिथ उज्जळ सपतमी, विमळ वणै बुधवार।
मिळियौ सुख महाराज सूं, श्री महाराज कुँवार ॥४७॥
कितरोइ पुर उच्छव कियौ, दूणौ सुख दरबार।
कथै महा गुण सूत कवि, चित हित मंत्र उचार ॥४८॥

छप्पय

सुकवि देख संभरै, कोड़ उच्चरै विरद्दां
रीत अजन राठौड़, जोड़ लखि हद्द समंदां।
वासिव धर मजलेस, नेस लखि ईस परक्खौ
अभै जिसौ नर अवर, राज घर कुँवर निरक्खौ।

४५—परखै = देखने के लिये। ईख = देखकर। कळा इधकार = कला की अधिकता। सदन = घर। अभौ = अभयसिंह (राजकुमार)। विसन = विष्णु का।

४६—ओछांड़िया = तबू तने हुए। पाटंबर = (पट्टांबर) रेशमी वस्त्र। अणपार = असंख्य। वाणक = बनावट, सूरत। जांणक = मानों। उणहार = सदृश।

४७—उज्जळ सपतमी = शुक्ल पक्ष की सप्तमी।

४८—सूत = पुराणवाचक, स्तुतिवाचक। कवि = चारण। मंत्र = सलाह।

४९—संभरै = स्मरण करते हैं। विरद्दां = विरुद। हद्द समंदां = समुद्र पर्यंत। वासिव धर = इंद्र की भूमि के समान उनकी मजलिस है। नेस = आवास, महल। ईस = महादेव के निवास कैलास के समान।

की लोक निकर सुर नर किसूं, पत उर धाम पवीतरौ
वाधियौ ताप दूजां विचै, आज प्रताप अजीत रौ ।४६।।

दुहा

अजन विराजै जोधपुर, दिन साजै कमधज्ज ।
अन राजा लाजै अकस, धू सम राजै धज्ज ।।५०।।

इति श्री राजरूपक मैं अजीतसिंघजी असुर उथाप सुर
धर्म सहाय करी परम उद्यम सूं जोधपुर
लीयौ द्वाविंश प्रकास ।।२२।।

* * *

परक्खै = दिखाई देते हैं। अवर = दूसरा। की = क्या। निकर = समूह। उर० = पवित्र हृदयवाला। वाधियौ = बढ़ा।

५०—साजै = अच्छे। अकस = ईर्ष्या से। धू सम = ध्रुव के समान। धज्ज = ध्वजा. झंडा।

छंद बेअक्खरी

आजम दक्खण हूंत उलट्टौ
विकट धनुख सर जांण विछुट्टौ ।
उत्तर धरा सु आलम आयौ
सौंज नैंज दळ तेज सवायौ ॥ १ ॥
आतुर दहूँ आगरै आया
दहुँ दिस काळ भड़ां दरसाया ।
पर मुहकम जिम लेख परातौ
महाप्रलै असुरां घर मातौ ॥ २ ॥
निहसि खेत वाजिया निताळा
विढै पूत जिम साहांवाळा ।
वडै पराक्रम आजम वीतौ
जुध गरीठ हठ आलम जीतौ ॥ ३ ॥
पायौ आलम तखत पिता रौ
सिर धर थयौ हुकम इक सारौ ।
प्रगट दिल्ली तद गई पुकारां
सू वति कही नबाबां सारां ॥ ४ ॥

१—उलट्टौ = वेग से चला । जाण = मानों । सौंज = वैभव, परिकर । नैंज = प्रबध ।

२—आतुर—शीघ्र, जल्दी से । दहूँ = दोनों । काळ = मृत्युरूप । पर मुहकम० = जैसे इंद्रसिह का पुत्र मोहकमसिंह दैववश होकर परास्त हुआ था वैसा ही इन असुरों के घर में प्रबल महाप्रलय मचा ।

३—निहसि खेत० = रणभूमि में बाजे और ताल बजे । विढै = लड़े । वीतौ = भाग गया । गरीठ = (गरिष्ठ) महाप्रबल युद्ध में ।

४—सिर धर = पृथ्वी पर । सारो = सब ठौर, अच्छा ।

अजमल नवकोटी अपणाई
सहि सोवै लूटिया सिपाई।
आलम सुणे ऊठ अकुळांणौ
वहै कमण नृप निज बलवाणौ ॥ ५ ॥
आलम कोप धरे अकुळायौ
जांणै पावक पवन धमायौ।
अति कळमळै प्रांण आपांणै
जळै अवाह छादियौ जांणै ॥ ६ ॥

दुहा

चित अत तपतां चौसठै, वीत गयौ बरसात।
जहनि पवन्नां अंत जिम, छिलियौ जवनां छात ॥ ७ ॥
जवनां दळ दिल्ली जिता, सगह इता दळ साथ।
मेछां भारी सोच मन, नींद बिसारी नाथ ॥ ८ ॥

५—अजमल = अजीतसिंह ने। नवकोटी = मारवाड़। अपणाई = स्वाधीन कर ली है। सहि = सब। अकुळांणौ = घबराया। वहै = धारण करता है। कमण = कौन। बलवाणौ = बल को।

६—जांणै = मानों। पावक = अग्नि। कळमळै = झुँझलाता है। प्राण आपांणै = बल के कारण। अवाह = भड़भूँजे की भट्टी (भाड़)। छादियौ = ढका हुआ।

७—चित० = चौंसठ (१७६४) के साल में बादशाह का चित्त अत्यत संतप्त होते रहते वर्षा ऋतु व्यतीत हो गई। जहनि = जहान में; जगत् में। छिलियौ = मर्यादा से बाहर हो गया। जवनां छात = बादशाह।

८—सगह = गर्व सहित। मेछां = यवनों के। बिसारी = भूल गया। नाथ = बादशाह।

सझ आयौ दर कूच सूं, असपत्ती अजमेर।
गज गाजै नौबत गहर, वाजै संझ सवेर ॥ ६ ॥
अजन विखौ आरंभियौ, पुर धरकिया अवस्स।
चढियौ गढ तरवार गहि, ऊहड़ धारि अकस्स ॥१०॥
हरीदास भगवान तण, गढ आयौ पण धार।
प्रिसणां कळहण पाधरै, गहि वंकी तरवार ॥११॥
ऊहड़ बळ दूणै अभौ, दळ भीमोत दुरंग।
मांगळिया ऊदौ रतन, सांमि कमंध अभंग ॥१२॥
आद इता भड़ आठ सौ, गढ़ आया गहवंत।
माप न को मांटी पणै, उर ज्यां ताप न अंत ॥१३॥
आयौ बीलाड़ै असुर, पै अस गज विण पार।
साम्हौ तिण दळ साजिनैं, अजन थयौ असवार ॥१४॥

६—असपत्ती = बादशाह । गाजै = गर्जना करते हैं । गहर = गंभीर । संझ सवेर = संध्या और प्रभात ।

१०—अजन = अजीतसिंहजी ने । विखौ = घर छोड़कर लूटपाट करना । अवस्स = (अवश) पराधीन कर दिये । गहि = ग्रहण करके, लेकर । ऊहड़ = ऊहड़ वंश का राठौड़ । अकस्स = अमर्ष धारण करके ।

११—हरीदास = ऊहड़ का नाम है । भगवान तण = भगवान्दास का बेटा । प्रिसणां = शत्रुओं से । कळहण = युद्ध करने के लिये । पाधरै = सीधा ।

१२—अभौ = ऊहड़ अभैसिंह । भीमोत = भीम का पुत्र । दुरंग = किले में । मांगळिया० = माँगलिया वंश का उदयसिंह और रत्नसिंह । अभग = नहीं भागनेवाले ।

१३—आद इता = इत्यादि । गहवत = गर्ववाले । माप० = जिनकी बहादुरी का माप नहीं है । उर० = जिनके हृदय में तेजो का अंत नहीं है ।

१४—पै = पैदल । अस = घोड़े । साजिनैं = सजकर ।

छंद हणूंफाल

सु ज विगत दूत सिताब, जवनेस पूछ जबाब ।
उवचरै दूत अरज्ज, सुण मेछनाथ सकज्ज ॥१५॥
आवियौ कमध अजीत, जुध काज साज जमीत ।
करि अवस देस कमंध. महि मेळ दळ अनिमंध ॥१६॥
तन गरुड़ जव अस ताक, क्रिति काळ सुभट कजाक ।
हित सुहड प्रति खग हूँत, कळ सोर धानुख कूंत ॥१७॥
वसती सु दळि वरताड़, अनि गांम धांम उजाड़ ।
पह रोस जोस अपार, लेखवै मेछ लिगार ॥१८॥
रस वीर मुरधर राव, दइवंत गति दरसाव ।
रिम काळ रूप नरेस, दळ अकळ निरजळ देस ॥१९॥

१५—विगत = महाराजा ने शीघ्र बादशाह के पास दूत भेजा । उवचरै = कहता है । सकज्ज = शक्ति सहित ।

१६—जमीत = सेना । अवस = पराधीन । महि = पृथ्वी में । मेळ = एकत्र करके । अनिमंध = असंख्य ।

१७—तन० = घोड़ो के शरीर का वेग गरुड़ जैसा है । ताक = देख । क्रिति काळ = काल के से आकारवाले । कजाक = मारनेवाले, हिंस्र । जिसके सुभट तलवार से प्रीति रखते हैं । जिनके धनुष और भालों का युद्ध में बड़ा शोर है ।

१८—बसती = आबादी का । दळि = नाश करके । बरताड़ = व्यवहार किया । अनि = दूसरे । पह = (प्रभु) मालिक । लेखवै = गिनते हैं । लिगार = तुच्छ ।

१९—दइवंत गति = दैवगति । दरसाव = दिखाई देती है । रिम = शत्रुओं के लिये । दळ = सेना । अकळ = अविचल है ।

दुहा

साह सुणे विध सोचियौ, गह मोचियौ सगाह ।
मन ठहराई मेळ री, साह अजीत सलाह ॥२०॥
मेळ तणै कज मेलियौ, व्रत रज गत बुधिवान ।
सरबंगी सेलौ सुमति, चेलौ नाहरखान ॥२१॥
दळ नीकै बळ ऊधरै, राईकै महराज ।
साह वसीठ सलाह कज, कमॅधां दीठ सकाज ॥२२॥
वात करै कीधौ विदा, नरपत नाहरखान ।
जोगावत पायौ दुवौ, साथ हुवौ भगवान ॥२३॥
चगथां दळि चांपाहरौ भूप हरै भर भार ।
पूगौ धारै राह पण, दीठौ साह दुवार ॥२४॥

२०—विध = उपाय, तजवीज । गह = गर्व । मोचियौ = छोड़ा । सगाह = गर्व सहित ।

२१—मेळ तणै कज = संधि के लिये । मेलियौ = भेजा । व्रत० = राज्यगति को निबाहनेवाला । सरबंगी = साम, दान, भेद आदि नीति के सब अगों को जाननेवाला । सेलौ = सीधा, सरल । चेलौ = राजा के खानदान का उपस्त्री-पुत्र । नाहरखान = एक नाम ।

२२—नीकै = अच्छा । ऊधरै = उच्च, अधिक । राईकै = राई का बाग; वहाँ महाराज का मुकाम था । साहवसीठ = बादशाह का दूत । दीठ = देखा । सकाज = समर्थ, काम का ।

२३—जोगावत० = महाराज ने जोगीदास के पुत्र भगवान्‌दास को साथ जाने की आज्ञा दी । दुवौ = आज्ञा ।

२४—चगथा = मुसलमानों का । दळि = सेना में । चाँपाहरौ = वह चाँपावत । भूप हरै = भोपतसिंह का पौत्र । भर भार = जिम्मेवारी उठाकर । पण = प्रतिज्ञा । दीठौ० = उसने बादशाह के द्वार को जाकर देखा ।

असपति वात अजीम सूं. फुरमाई निरधार।
कौल दिया फुरमांण दे, विदा किया तिण वार ॥२५॥
कर कारज नरनाथ रौ, भड़ आयौ भगवान।
मग हाथे फुरमांण सूं, साथे नाहरखान ॥२६॥
कमँधां पत अर छात री, सुणि सब वात विचार।
जवन तणौ दळ जोय वा, अजन थयौ असवार ॥२७॥
फागण वद एकादसी, चढियौ जोधां छात।
वीसलपुर डेरा किया, दळ घेरा अखियात ॥२८॥
मेछ प्रधानै मेलियौ, खान जुमै रस खांत।
खांनाखांन निबाब रौ, सुत पित जोड़ सुभांत ॥२९॥
राजा साथ भदोरियौ, बूंदीपति बुध साह।
दूजौ बीस हजार दळ, बळ छळ पार दुबाह ॥३०॥

२५—असपति = बादशाह ने। अजीम = शाहजादा अजीम से। फुरमाई = कहा। कौल = प्रतिज्ञापत्र। फुरमाण = आज्ञापत्र।

२६—भगवान = चांपावत भगवानदास। मग० = मार्ग में फरमान (आज्ञापत्र) उसके हाथ में है।

२७—कमँधा पत = अजीतसिंह। अर = अपने शत्रु। छात री = बादशाह की। जोय वा = देखने के लिये।

२८—अखियात = प्रसिद्ध।

२९—मेछ० = बादशाह ने अपने प्रधान जुमैखाँ को भेजा। रस खांत = प्रीति के लिये। पित जोड़ = पिता के सदृश। सुभांत = अच्छी रीतिवाला।

३०—भदोरियौ = चौहान। बळ छळ पार = बल से युद्ध को पार करनेवाली सेना। दुबाह = वीर।

साह तणा भड़ सांमहा, पुर आया पीपाड़।
गांम परीखे नेस गुण, ईखे देस उजाड़ ॥३१॥
इण दिस थी राजा अजन, सझ आवतां सिताब।
साम्हौ पाय सँपेखवा, मिळियौ आय नवाब ॥३२॥
जवनां नृप-दीठौ निजर, औडै सुकर अरस्स।
भड़ भाराथे आगळा, साथे बीस सहस्स ॥३३॥

छंद बेअक्खरी

मारूपति छिबतौ ब्रहमंडे
मिळियौ खान घणौ हित मंडे।
निस मसलत पींपाड़ निवारी
ऊगै रवि धारी असवारी ॥३४॥

राजा राव मिळे मन राखै
दाखै अजन वचन सुज दाखै।
अधपत साथ लियां दळ आया
दुरवेसी वांना दरसाया ॥३५॥

३१—साह तणा = बादशाह के। सामहा = सन्मुख। पीपाड़ = पीपाड़ नामक नगर में। गांम परीखे = गाँव को देखकर। नेस गुण = वास करने का निश्चय किया। ईखे = देखकर। उजाड़ = शून्य।

३२—पाय = चरण को। सँपेखवा = देखने के लिये।

३३—औडै = धारण करनेवाला। सुकर = अच्छी तरह, सुलभता से। अरस्स = आकाश को। भाराथे = युद्ध के लिये। आगळा = अग्रणी।

३४—छिबतौ = शोभा देता हुआ, लगता हुआ। ब्रह्ममंडे = ब्रह्मांड को। घणौ हित मंडे = बहुत प्रीति दिखाकर। निस = रात्रि को। मसलत = तजवीज सोचकर। पींपाड़ = एक शहर का नाम है जो जोधपुर से पूर्व में १८ कोस पर है। निवारी = गुजारी, व्यतीत किया। धारी = की।

३५—दाखै = कहे। अजन = अजीतसिंह जी ने। सुज = वे ही। दुरवेसी = यवनों का। वांना = वेष।

आणँदपुर अरि करण अकाजा
मिळियौ साह सरस महाराजा ।
नमि फागुण उज्जळ नरपत्ती
मेछां पति दीठौ महिपत्ती ॥३६॥
आदर कियौ मिळे असुरेसुर
दियौ नाम नृप तेग बहादुर ।
भावी विवस जोधपुर भायौ
चगथै खां महाराव चलायौ ॥३७॥
अरि जण सहित दियौ ऊताळौ
साथे मुहकमसिंघ सचाळौ ।
राजा अजन सुणे रीसायौ
ठीक अमेळ मिले ठहरायौ ॥३८॥
सुणी अजीम निबाबां सारां
वांसा पत्र पूगा तिण वारां ।
औ महराव जाड गढ आवै
पिण मुहकम क्रम जांण न पावै ॥३९॥

३६—आणँदपुर=एक गाँव का नाम । अरि०=शत्रुओं का नाश करनेवाला । सरस=प्रीति सहित । फागुण=फाल्गुन मास में ।

३७—भावी विवस=दैवयोग से । भायौ=अच्छा लगा, लेना चाहा । चगथै=मुसलमान । खां महाराव=महराबखाँ ।

३८—ऊताळौ=त्वरा सहित । मुहकमसिंघ=राव इंद्रसिह का पुत्र । सचाळौ=युद्ध करनेवाला । रीसायौ=क्रुद्ध हुआ । अमेळ=विरोध ।

३९—वांसा=पीछे से । तिण वारां=उसी समय । महराव=महराबखां । जाड=चाहे । क्रम=पैंड, कदम ।

पाप वधै तिण हीण प्रवाड़े
वळियौ मुहकम वदन विगाड़े ।
आलम खड़िया दक्खण ऊपर
कामबगस ऊपर चढ कुंजर ।।४०।।
अधपत काढण देसां अंतर
साथे अजन थयौ बळ संभर ।
आलम वहै, चमू अतुळीबळ
हद लोपी जांणे हीलोहळ ।।४१।।
भूप अवर ज्यांरै मन भांणौ
राजा अजन वहै रीसांणौ ।
यह आंबेर उवर भ्रम पाए
अजमल हूँत मिळै नित आए ।।४२।।
आलम सा आंबेर न आपी
थांणै फौज मळेछां थापी ।
रूठौ वहै अजौ महाराजा
विचित्रां तणा खमै नह वाजा ।।४३।।

४०—हीण = मंदभाग्य । प्रवाड़े = युद्ध । वळियौ = वापस लौट गया । वदन = मुख । आलम = बहादुरशाह । खड़ियौ = चला । चढ़ कुंजर = हाथी पर सवार होकर ।

४१—अधिपत = मालिक (बादशाह) को । देसां अंतर = देशांतर में निकालने के लिये । बळ संभर = सेना को भरती करके । जाणे = मानो । हीलोहळ = समुद्र ।

४२—अवर = दूसरे । भाणौ = अच्छा प्रतीत होनेवाला । रीसांणौ = क्रुद्ध । यह = प्रभु, मालिक । उवर = अंतःकरण में । भ्रम पाए = भ्रांति (शक) पाकर ।

४३—आपी = दी । रूठौ = रुष्ट, कुपित । वहै = चलता है । विचित्रां = यवनों के । खमै = सहन करता है ।

इम परखे राजा आंबेरौ
आवै हित धर वेर अवेरौ।
अजमळ तेड़ दुरँग आसांणी
कथ धारी मेटण तुरकांणी ॥४४॥
सुणतां आठ मिसल भड़ साथे
हित पत खड़ग तोलिया हाथे।
यों मग नदी नरबदा आयां
वळियौ अजन भड़ां रस वायां ॥४५॥
उर अण चिंत वेळ जद आई
संग थयौ जैसिंघ सवाई।
....
.... ॥४६॥

दुहा

महाराजा अजमाल रै, थयौ सवाई साथ।
आखै कूरम आबरू, हमैं कमंधां हाथ ॥४७॥

४४—परखे = जानकर। वेर अवेरौ = वक्त बेवक्त। तेड़ = बुलाकर। दुरँग = दुर्गदास को। आसाणी = आसकरण का पुत्र। कथ = बात। धारी = मन में दृढ़ की।

४५—हित पत = पति, मालिक के वास्ते। मग = मार्ग में। वळियौ = वापस लौटा। रस वायां = प्रीतिवाले।

४६—उर = अंतःकरण में। अण चिंत = अचानक। वेळ = समय। सवाई = सवाई राजा जयसिंह।

४७—आखै = कहता है। कूरम = कछवाहा जयसिंह। कमधां = राठौड़ों के।

उदयापुर आयौ अजन, अमर कियौ ओछाह ।
असुरां क्रम घटियौ इळा, सुण सुर धरम सलाह ॥४८॥
आयौ राजा आउवै, लीधां कूरम लार ।
उदिया भांण सँग्राम रै, उच्छव कियौ अपार ॥४९॥
आयौ ग्रह ऊदै तणै, आरोगण अगजीत ।
साथे मुरधर सांम रै, पह आंबेर सप्रीत ॥५०॥
खळहळियौ महराब खां, आयौ घर अजमाल ।
जतरा मत असुरां जुआ, हिंदू हुवा निहाल ॥५१॥
यों वहतां मग आवतां, ग्रीखम हुवी वितीत ।
मिटिया सुख महराब रा, आयौ धरा अजीत ॥५२॥
प्रगट जमानैं पैंसठै, लागौ सांवण मास ।
पत नवकोटी पेखतां, असुरां छूटी आस ॥५३॥

४८—अमर = अमरसिहजी महाराजा । ओछाह = उत्सव । असुरा = यवनों का । क्रम = पराक्रम । इळा = पृथ्वी पर । सुर = देवों की ।

४९—आउवै = मारवाड़ के सोजत प्रात में चांपावतों का ठिकाना है । लार = पीछे, साथ । उदिया भांण = उदयसिंह आउवे का मालिक । संग्राम रै = संग्रामसिंह का पुत्र ।

५०—ग्रह = घर । ऊदै तणै = उदयसिंह के । आरोगण = भोजन करने को । मुरधर सांम = मारवाड़ का मालिक । पह आबेर = आँबेर का राजा ।

५१—खळहळियौ = घबराया । महराब खाँ = जोधपुर का सूबेदार । जतरा = जितने । मत = राय, सिद्धान्त । जुआ = भिन्न ।

५३—पैंसठे = विक्रम संवत् १७६५ । लागौ = आरंभ हुआ । पत नवकोटी = मारवाड़ के राजा को । पेखता = देखने पर । आस = आशा, उम्मीद ।

छंद पद्धरी

सपतमी कृष्ण नवकोट सांम
गढ घेर दिया डेरा सँग्राम।
दिस वरण अकळ बळ दळ दुबाह
रिणमाल जोध क्रम धरम राह ॥५४॥
दुरगेस वेर तिण मेर द्रुंग
अण गंज तेज महकौ अभंग।
कहि अभौ खींवक्रन देवक्रंन
दळ साह जगड़ रजवट सदंन ॥५५॥
कळ मूळ करन हर खळां काळ
जवनां वन दाहण सेख ज्वाळ।
भगवान हरी चांपे सुभंग
ऊदलौ विजौ अचळौ अभंग ॥५६॥

५४—सपतमी = श्रावण बदी सप्तमी। नवकोट सांम = मारवाड़ के स्वामी ने। सँग्राम = युद्ध के लिये। दिस वरण = दिशाओं को वेष्टित किया। अकळ बळ दळ = पूर्ण बलवाली सेना ने। दुबाह = दोनों हाथों से प्रहार करनेवाले अर्थात् वीर। रिणमाल = रणमलोत राठौड़। जोध = जोधा राठौड़ों ने। क्रम = पराक्रम से।

५५—वेर = समय। मेर = सुमेरु के समान। द्रुंग = दुर्गम। अण गंज = अजेय। तेज महकौ अभंग = जिसके तेज और उत्साह का कभी भंग नहीं होता। अभौ = अभैकरण (करणोत राठौड़)। दळ साह = सेना को सजकर। जगड़ = जगरामसिंह। रजवट सदंन = राजपूती का घर।

५६—कळ = युद्ध में। मूलसिंह। करन हर = करण के पोते अर्थात् करणोत राठौड़। खळां = शत्रुओं के लिये। सेख ज्वाळ = शेषजी के मुख की ज्वाला के समान। भगवान = भगवानदास। चापे = चांपावत।

सकतेस मुकन राजड़ किसन्न
केहरी हरी घन कूंप (भ) क्रन्न ।
एतलां आदि चांपा अबीह
समहर फिर कूंपा निकर सीह ॥५७॥
विजपाल राम केहर विकट्ट
भोमेण राम फतमल सुभट्ट ।
हरिभांण नाथ भाराथ हांम
दृढवंत सांम पेखे दुगांम ॥५८॥
भाटीय भांण हरनाथ भाख
अमरेस खान रिणछोड़ आख ।
सूरजमल जीवण खेतसीह
अन सूर लखौ अखई अबीह ॥५९॥
फतमाल रूप जैता अफेर
जोधहर भीम अरि करण जेर ।
वांनैत चंद मोहण वखांण
जोगौ सकतौ पीथलौ जांण ॥६०॥

५७—कूंपक्रन्न = कूंपकर्ण । एतला = इतने । अबीह = निडर । समहर = युद्ध । कूंपा = कूंपावत राठौड़ । निकर = समूह ।

५८—भाराथ हाम = युद्ध को स्वीकार करनेवाला । साम = स्वामी । पेखे = देखकर । दुगाम = दुर्गम ।

५९—भाटीय = भाटी वंश के वीर । भाख = कहा । आख = कहा । अन = अन्य, दूसरा । लखौ = लखसिह । अखई = अखैराज ।

६०—जैता = जैतावत राठोड़ । अफेर = नहीं फिरनेवाला । जोधहर = जोधा के पोते, जोधा राठौड़ । अरि करण जेर = शत्रुओं को दबानेवाला । वांनैत = बाना (चिह्न) रखनेवाला ।

ऊदावत जगपत रिदै आद
पातळौ मांन पौरस पखाद।
सद माल सूर दूदे सगाह
विजपाल दळां जूंझौह वाह ॥६१॥
ओपमा कमां हरनाथ आद
वर वीर खळां मेटण विवाद।
मछरीक फतौ गज घड़ मरोड़
अजबेस लाल पातळ अनोड़ ॥६२॥

छंद हणूंफाल

महाराज तेज प्रमांण, भति प्रकृति द्वादस भांण।
विसतार बाजंत्र वज्जि, गुणवांण वाण गरज्जि ॥६३॥
सुभ दिवस महुरत सार, अजमांल हुय असवार।
रँग सुरँग वण गजराज, क्रिति अभूत होत अकाज ॥६४॥

६१—ऊदावत = ऊदावत राठोड़। जगपत = जगरामसिंह। रिदै = हिरदैराम। पौरस = पुरुषार्थ। पखाद = खानि। सद = सदैसिंह। माल = मालदेव। दूदे = मेड़तिया राठोड़। सगाह = गाढ़ (गर्व) सहित। वाह = खूब, अत्यंत।

६२—ओपमा = समान। कमा = करमसोत राठोड़ां मे। खळां = शत्रुओं का। विवाद = झगड़ा। मछरीक = चांहान। गज घड़ मरोड़ = हाथियों के समूह को भगानेवाला। अजबेस = अजबसिंह। अनाड़ = न रुकनेवाला।

६३—भति = भाँति, तरह। प्रकृति = स्वभाव। भाण = (भानु) सूर्य। विसतार = बड़ी दूर में। बाजत्र = बाजे। गुणवांण = गुणी जनों की। वाण = वाणी।

६४—महुरत = मुहूर्त। सार = श्रेष्ठ। रँग सुरँग = रगों से रँगे हुए। वण = बन ठनकर।

लखि फौज तुंग लड़ंग, ऊबंध किर दधि अंग।
वणि सुरथ पायक वृंद, जग जांण दळ जयचंद ॥६५॥
सिर चमर चौसर सोह, वृति सूरकिरण विमोह।
परिवेस सुभट सप्रीत, गढ़ आवियौ अगजीत ॥६६॥

छप्पय

संमत दह सपतमै, सरस पचसठै समंछर
श्रावण रित घण सुखद, अयन रवि दक्खण अंतर।
तिथ तेरस पख तरणि, वार सुभ करण चंद्र वर
एकादस ग्रह अरक, लगन कन्या लाभंकर।
सिव सकति विसन नवग्रह प्रसन, नृप महि विघन निवारियौ
अभनमौ माल गढ़ आपरै, पह अजमाल पधारियौ ॥६७॥
लाजवरद सील सुपेद जंगाल जुगत व्रत
रचे अमास नवरंग, करे मधि चित्र देव कृत

६५—तुंग=समूह। लड़ंग=बहुत लंबी। ऊबध=(उद्बंध) मर्यादा-रहित, असीम। दधि=(उदधि) समुद्र। सुरथ=अच्छे रथोंवाले। पायक=सेवक, सहायक। वृंद=समूह।

६६—चौसर=चार सरवाला। वृति=गोलाकार। सूरकिरण=किरणिया नामक उपकरण। परिवेस=कुंडाला। जैसे सूर्य के गोल कुंडाला होता है, वैसे महाराजा के सुभटों का कुंडाला है।

६७—दह सपतमै=सत्रह सौ। समंछर=संवत्सर, वर्ष। रित घण=वर्षा ऋतु। अयन रवि दक्खण=सूर्य दक्षिणायन का। पख तरणि=कृष्णपक्ष। एकादस ग्रह=ग्यारहवें भवन में। अरक=सूर्य। महि=पृथ्वी। अभनमौ माल=राव मालदेवजी के सदृश।

६८—लाजवरद आदि रंगों से। अमास=आमखास, सभाभवन,

सोरँभ मृगमद गंध, सार घणसार सनं वत
नित नव सार सँकेत, अगर नीसार उखेवत।
प्रति महल सोभा परम, सुरपति भृत आंपण सदन
निस दिवस अजन नवकोट पति, मदन रूप विलसै मदन ॥६८॥
सुर दादुर पिक सोर, सबद मृदु मोर सुहावैं
घण आवण घरहरै, सिखर दांमण दरसावै।
सर सरिता सुभ भरी, रसा सुभ करी हरीतन
तृण वल्ली विसतरी, वणै ग्रह वरी दिसा वन।
ऊधरी वार विलसै अजै, घणूं प्रजा उच्छव घणै
सत्र प्रांण सभौ कवि वाण सुण, रमै अभौ रायंगणै ॥६९॥

इति श्री राजरूपक मैं श्री अजीतसिंघजी फेर जोधपुर
लीयौ नै नबाव धरमद्वार गयौ सो विगत कही
त्रैविंश प्रकास ॥२३॥

आवास, निवासस्थान। मृगमद = कस्तूरी। घणसार = कपूर। सने = मिला हुआ। नीसार = धूप। प्रति महल = हर महल में। सुरपति = इंद्र। भृत = भृत्य, नौकर। सदन = घर। मदन रूप = कामदेव रूप। मदन = कामभोग।

६९—सुर = देवता। दादुर = मेंडक। पिक = कोयल। सोर = हल्ला गुल्ला। घण = मेघ। घरहरै = घरराट करता है। दामण = बिजली। सर = तालाब। रसा = पृथ्वी। तृण = घास। वल्ली = बेली। ग्रह = घर। दिसा वन = वन की ओर। ऊधरी = अच्छी, ऊपर के दर्जे की। वार = वक्त, समय। सत्र प्रांण सभौ = शत्रुओं के प्राणों को भय देनेवाला। अभै = अभयसिंह। रायंगणै = राजा के आँगन में।

दुहा

यौं गढ सिर राजै अजन, निज धर घर घर नूर।
औतारौ जैसिंघ रौ, दीनौ सागर सूर ॥ १ ॥
आंबेरौ उत्तन बिना, अति मन रहै उदास।
अरज करै अजमाळ सूं, उर सु गरज धर आस ॥ २ ॥
बरखा रित सुख बोळबी, आवी सरद अनोप।
नवकोटी नै पत निपट, ओपत संपत ओप ॥ ३ ॥
थांन सवाई थापिवा, मांन अरज महाराज।
चढ़ियौ कज सरणाइयां, सझि दळ प्रबळ समाज ॥ ४ ॥
कमँधां पत दर कूच कर, धरि मेड़तै मुकांम।
धर दिल्ली धूजै उरै, पुर आगरै विराम ॥ ५ ॥

१—अजन = महाराजा अजीतसिंह। धर = धरा, पृथ्वी। औतारौ = निवासस्थान, डेरा। सागर सूर = सूरसागर नामक स्थान में। (सूरसागर तालाब महाराजा सूरसिंह ने बनवाया और उसके तट पर महल बनवाए थे। यह जोधपुर नगर से पश्चिम में २ मील पर है)।

२—आंबेरौ = आँबेर के राजा जयसिंहजी। उत्तन = जन्मभूमि।

३—वोळबी = व्यतीत की। नवकोटी = मारवाड़। ओपत = शोभा देते हैं। ओप = शोभा।

४—सवाई = सवाई राजा जयसिंहजी को। थापिवा = स्थापित करने के लिये। सरणाइयां = शरणागतों को।

५—कमँधां पत = राठोड़ों का पत्ति महाराजा अजीतसिंहजी। मेड़तानगर जोधपुर से पूर्व दिशा में ३५ कोस है। धर दिल्ली = दिल्ली की भूमि। विराम = कष्ट, दुःख।

जोधपुरौ भड़ जोड़ियां, आयौ खड़ अजमेर।
सोबायत बळ जेर थ्यौ, घेर लियौ चौफेर ॥ ६ ॥
छूटा सरणै पीर रै, मीर सबै तिण वार।
मेल दियौ परचंड पण, डंड दियौ अणपार ॥ ७ ॥
अधिप डँडे अजमेर नूं, चढ़ियौ सँभर सीस।
सिर लंका किर सांम घण, राम विचारी रीस ॥ ८ ॥

छंद बेअक्खरी

सांभर दूते विगत सुणाई
अजन तणी फौजां सिर आई।
आगै डरपीड़ियां उताळै
विचित्र बुलाया सँभरवाळै ॥ ९ ॥
मुथरा आद सैद औमाहै
सोबा सात चढ़ै बळ साहै।
चारै सहस ऊपना बारै
आवै मारग कोप अफारै ॥१०॥

६—जोधपुरौ=जोधपुर का राजा। खड़=सेना को चलाकर, घोड़े को चलाकर। सोबायत=सूबेदार। जेर थ्यौ=दब गया, निर्बल हुआ।

७—मेल दियौ=रख दिया, छोड़ दिया। परचंड पण=प्रचडता, तीक्ष्णता। डंड=दंड, पेशकशी।

८—अधिप=मालिक (महाराजा अजीतसिहजी)। सांम घण=घनश्याम, रामचंद्रजी का विशेषण है। रीस=क्रोध, कोप।

९—सांभर दूते=सांभर नगर के दूतों ने। डरपीड़िया=डरकर। उताळै=जल्दी। विचित्र=मुसलमानों को।

१०—सैद=सैयद। औमाहै=उत्साहित होकर। सोबा=सूबेदार। बळ साहै=सेना को सजकर। चारै सहस=चार हजार। ऊपना बारै=बाहिर जन्मे हुए, बाहिर के। अफारै=बहुत।

इण दिस अजन लियां दल आयौ
सांभर वाळै कोट सँभायौ ।
क्यौं मुहमेळ प्रथम दिन कीधौ
लुड़ मुड़ गयौ कोट निठ लीधौ ॥११॥
साम्हा दूत अभूत सिधाया
उण दिस मेछ पेच धर आया ।
निस आया खेड़ियां नत्रीठां
दीठा पुर नैड़ा रवि दीठां ॥१२॥

दूहा

आपी खबर अजीत नूं, जासूसां जिण वार ।
सूरा तन रत्ता सुमन, आया जवन अपार ॥१३॥
सहि कूरम जैसाह सूं, मिळिया आय प्रथंम ।
ऊपर देख अजीत रै, आलम लेख नरंम ॥१४॥

११—इण दिस = इधर । कोट सँभायौ = किले की शरण ली । क्यौं = कुछ । मुंहमेळ = मुठभेड़ । मुड़ गयौ = पीछे चला गया । निठ = कठिनता से ।

१२—अभूत = अद्भुत । सिधाया = चले । उण दिस = उधर की तरफ । मेछ = (म्लेच्छ) मुसलमान । निस = रात्रि में । खेड़िया = चलाते हुए । नत्रीठां = निःशंक, बड़े वेग से । दीठा पुर नैड़ा = नगर के समीप देखा । रवि दीठा = सूर्य के देखने पर, सूर्योदय के समय ।

१३—आपी = दी । वार = समय । सूरा तन = शूरता से । रत्ता = अनुराग-युक्त । सुमन = अच्छे मनवाले ।

१४—सहि = सब । कूरम जैसाह सूं = कछावावंशी राजा जयसिंह से । ऊपर = सहायता । आलम लेख नरंम = बादशाह आलम को निर्बल समझकर ।

साथे कूरम सांमठा, पाए लागा आय ।
महाराजा अजमाल रै, सांभळ कोप सवाय ॥१५॥
हुवौ सवाई साबळौ, भूप अजीत पसाय ।
हिल आया ढूंढाहड़ा, विचित्रां रस विसराय ॥१६॥
उण दिस मेछ अगाध पण, आय रयण अवसांण ।
सुणतां राव मॅंडोवरै, घाव किया नीसांण ॥१७॥
जोस कमँधां ऊधरां, रास चढ़ै महाराज ।
सरवर लाज विधूंसवा, ज्यों रिखराज सकाज ॥१८॥
अरि आया रवि ऊगतां, सिंधुर तुरां सनाह ।
लूण तणौ पण लेखियां, लूण तणै रण मांह ॥१९॥

१५—सामठा=बहुत, इकट्ठे, समूहबद्ध । पाए=पैरों में । सांभळ=सुनकर ।

१६—साबळौ=सबल । पसाय=(प्रसाद) कृपा से । हिल आया=चले आए । ढूंढाहड़ा=ढूढाड़ देश के सुभट (जयपुर प्रांत का नाम ढूंढाड़ है)। विचित्रा=मुसलमानों से । रस=प्रीति । विसराय=छोड़कर ।

१७—अगाध पण=गंभीरता से । रयण=(रजनी) रात्रि के । अवसांण=समय । राव मॅंडोवरै=मडोर के राजा (अजीतसिंहजी) ने । घाव किया=डका दिया । नीसाण=नक्कारे पर ।

१८—ऊधरा=ऊँचे दर्जे के; उन्नत मस्तकवाले । सरवर लाज विधूंसवा=समुद्र की लज्जा नष्ट करने को । रिखराज=(ऋषिराज) अगस्त्य ऋषि । सकाज=समर्थ ।

१९—सिंधुर=हाथी । तुरा=घोड़े । सनाह=बक्तर पाखर से सजकर । लूण तणौ पण लेखियां=नमक की प्रतिज्ञा पालने को । लूण तणै रण मांह=सांभर के युद्ध में (सांभर में नमक की खान है, जिससे सांभर को लूण कहा है)।

आरंभ्यौ साम्हौ अजै, रौदां पेख गरद्द ।
दळां अफारां जूजुआं, हुवा नगारां सद्द ॥२०॥

छंद भुजंगी

उठी सैद्‌जादां तणा थाट आया
सँपेखे अठी जोस मारू सवाया ।
भणंके नफेरी सुरे तूर भेरी
सुणे कातुरां आतुरां लीध सेरी ॥२१॥
जठै कोप काळोप मारू जवाणं
महाराज थंभे भुजां आसमाणं ।
दहूँ थाट वेळा कुळा घाट दीपे
जिसै ताइ ओपै दहूँ जाय जीपे ॥२२॥
वधै अग्र दोनूं दळे खग्गवाळा
जिसी वायवाळै धकै लाय ज्वाळा ।

२०—आरंभ्यौ=युद्धार्थ तैयार हुआ । रौदा=मुसलमानों की । पेख=देखकर । गरद्द=गरदी, भीड़ को । दळां=सेना । अफारां=विस्तीर्ण । जूजुआं=जुदे जुदे । सद्द=(शब्द) आवाज ।

२१—उठी=उधर । सैद्‌जादां=सैयदों का । थाट=समूह । सँपेखे=देखकर । अठी=इधर । मारू=मारवाड़ के सुभटों को । भणंके=बजती है । नफेरी=वाद्यविशेष । सुरे=सुरणाई । तूर=वाद्यविशेष । भेरी=नक्कारा । सेरी=गुप्त मार्ग, छोटा मार्ग ।

२२—जठै=जहाँ । काळोप=काल के सदृश । दहूँ=दोनों । वेळा कुळा=तूफानवाला समुद्र । घाट=सदृश । दीपे=शोभा देते हैं । जिसै=जिस तरह । ताइ=(आततायी) शस्त्र धारण किए हुए । ओपै=शोभा देते हैं । जीपे=जीतते हैं ।

२३—जिसी=जैसी । वायवाळै=वायु के । धकै=अगाड़ी ।

गजां दांण सूकै इसा बाण गाजै
प्रळै काळ सद्दै गिसी नाळ बांजै ।।२३।।
छुटै तीर सा जोम त्यां व्योम छायौ
उडै चील कै हीड कै तीड आयौ ।
अणी फोरिया सेल बाधै असंका
वणै आग झाळां जिही खाग बंका ।।२४।।

छप्पय

काज भड़ां बंकड़ां, अजन महाराज उचारै
मीर थयां मुहमेल, वीर किम जेझ विचारै ।
सुण आवाज सूरमां, एम धजराज उठाया
मौर जीत सिरमौर, जांण पर जोर कि आया ।
तूटै सनाह फूटै तुरस, वाह सरस तरवारियाँ
सोहै निराट हिंदू असुर, बाहै वारोवारियाँ ।।२५।।

लाय ज्वाला = दावानल की ज्वाला । दाण = मद । इसा = ऐसे । सद्दै = (शब्द) आवाज हो जैसी । नाळ = तोप । बाजै = शब्द करती है ।

२४—तीर सा = बाणों के समान । जोम = जोर से । त्या = उनके । हीड = समूह । तीड = शलभ, टिड्डी । अणी फोरिया सेल = भालों की अनियों को फिराते हुए ।

२५—जेझ = देरी, विलम्ब । धजराज = घोड़ों को । मौर = प्रथम । सिरमौर = मस्तक के मुकुट । जांण = मानों । पर जोर = पंख लगाकर । सनाह = बख्तर । तुरस = मस्तक । वाह = प्रहार से । असुर = मुसलमान । बाहै = प्रहार करते हैं । वारोवारियां = एक दूसरे के पीछे, क्रम से ।

विचित्र खंड वप झड़ै, मुंड रड़वड़ै धरत्तो
चडै रुंड बेहड़ां, चंड गह अड़ै दुसत्ती।
तुंड पड़ै तेजियां, नृपति बळबंड निहट्टौ
प्रलै मंड कारणै, काळ परचंड कि जुट्टौ।
गज सुंडि निकर पड़ि झंड धर, भूज कुंड रत कुंड भरि
अरि दळ विखंड कीधां अजन, पण प्रचंड सुत·····परि ॥२६॥

दुहा

सैद महाबळ सूर कुळ, यों वग्गा रण ताळ।
जुड़े अछाया जोस ज्यौं, मद आया सुंडाळ ॥२७॥

कूंपावत पहिलै अणी, वावर खग्ग करग्ग।
भीमाजळ सारां मुहर, पड़ियौ धारां लग्ग ॥२८॥

२६—विचित्र = मुसलमान। वप = (वपु) शरीर। रड़वड़ै = लौटते हैं, इधर उधर जुड़ते हैं। वेहड़ा = (द्विघट) एक के ऊपर दूसरा। रुंड = मस्तक। तुंड = मुख। तेजियां = घोड़ों के। बळबंड = महाबली। निहट्टौ = न हटनेवाला। मंड = करना। झंड = झंडा, ध्वजा। रत = (रक्त) रुधिर। पण = प्रतिज्ञा, नियम। परि = तरह, समान।

२७—सूर कुळ = सूर्यवंशी राठौड़। ताळ = मैदान। अछाया = भरे हुए। मद आया = मस्त हुए। सुंडाळ = हाथी।

२८—वावर = काम में लाकर। करग्ग = हाथों से। भीमाजळ = भीमसिंह। मुहर = पहले। धारां लग्ग = तलवारो कटकर।

………………………………………………
……………………………………………… ॥२९॥
………………………………………………
……………………………………………… ॥३०॥
………………………………………………
……………………………………………… ॥३१॥
………………………………………………
……………………………………………… ॥३२॥

पंचहजारी च्यार सूं, खट हजार खळ हान।
सैद सेन पड़िया समर. आद हुसेन जवांन ॥३३॥
अरि दळ निरदळिया अजै, सोबा गिळिया सात।
दीवाळी बौळी उदै, पड़वा हंदै प्रात ॥३४॥
सोबायत सांभर तणौ, पकड़ लियौ पँडवेस।
उर दृढ़ पायौ कूरमां, अब घर आयौ देस ॥३५॥
घर छंडे आंबेर री, नास गया असुरांण।
कूरम निरबंधां किया, दाख कमंधां पांण ॥३६॥
मास मिगस्सर दळ गहर, अजन गयौ आंबेर।

२९-३२— × × × × ×

३३—पंचहजारी च्यार सूं० =पाँच हजारी मनसबवाले हुसेन आदि चार नवाब छः छः हजार मुसलमानों के साथ सैयदों की सेना में गिरे (मरे)।

३४—निरदळिया=नष्ट किया। बौळी=व्यतीत की। उदै=सूर्योदय होते समय। पड़वा हंदै=प्रतिपदा के।

३५—सांभर तणौ=साभर का। पँडवेस=गोलों का मालिक (सोबायत का विशेषण है)। उर दृढ़ पायौ कूरमां० =कछवाहों के मन में दृढ़ निश्चय हुआ कि अब देश अपने घर आया।

३६—निरबंधां=बंधनरहित। दाख=दिखलाकर। पांण=बल।

प्रीत सवाई सूं परा, जतरा कीधा जेर ।।३७।।
थांन सवाई थापनैं, अजन थयौ असवार ।
सोबो सांभर राखियौ, साखो कियौ सँसार ।।३८।।
नरपति आयौ देस नूं, कुँवर उजागर कोड ।
मुहकम बीकानेर नूं, गौ कूचेरौ छोड ।।३९।।
सीयाळे पाधारिया, गढ़ महाराज अजीत ।
अवतारी मिळियौ अभौ, सूरज तेज सप्रीत ।।४०।।

इति श्री राजरूपक मैं श्री महाराज अजीतसिंहजी सांभर
अणाई नै श्रीजो जैसिंघ नै आंबेर थापिया सो
विगत कही चतुर्विंश प्रकास ।।२४।।

३७—गहर = गह्वर, घना । परा = अति उत्कट । जतरा = जितना ।

३८—सवाई = सवाई राजा जयसिंहजी । थयौ = हुआ । साखो = साक्षी ।

३९—कोड = उत्साह । मुहकम = राव इंद्रसिंहजी का पुत्र मोहकमसिंह ।
कूचेरौ = मारवाड़ में कूचेरा नाम का ग्राम नागोर प्रांत में है ।

४०—सीयाळे = शीतकाल में । पाधारिया = गए ।

इति श्री श्री जी = महाराजा अजीतसिंह जी ।

गाहा

निज पुर अजन नरिंद्दा, सुंदर सुत अग्र अभौ सामरथौ ।
जांण क अवधी अरथी, राम रायंगण ………… ॥ १ ॥
नरपति पेखि गुणाणं, उच्छव इपजेण तेण कामित्तं ।
रयणी सारद महणौ, पूरण निसीत परखि चंद्रेण ॥ २ ॥
सिसु वै मिंत्तो विंत्ती, उदभौ पैागंड मंड सिंगारौ ।
ज्यों वृंदारक तरयं, प्रांमै डाळ संगि पत्तेणम् ॥ ३ ॥

दुहा

क्रत अभसाह कुँवार रा, परख अजन छत्रपत्ति ।
वंस उजागर रूप धर, कुँवर अपार सकत्ति ॥ ४ ॥
नृप सुख ग्रीखम निरखतां, वधि बरसात विलास ।
मातै कादॅब मेदनी, आयै भाद्रवॅ मास ॥ ५ ॥

१—नरिंदां = नरेंद्र, राजा । जाण क = मानों । अवधी = अयोध्या पुरी । रायंगण = (राजांगण) राजभवन ।

२—कामित्तं = कितना, अपरिमित । रयणी = (रजनी) रात्रि । सारद = शरद् ऋतु की । महणौ = समुद्र । निसीत = अतिशीतल ।

३—सिसु = बचपन की । वै = (वयस्) अवस्था । मिंत्ती = परिमित । विंत्ती = व्यतीत हुई । उदभौ = प्रकट हुई । पौगंड = पौगंड, पाँच वर्ष से दश (१०) वर्ष तक की अवस्था । वृंदारक तरयं = देववृक्ष, कल्पवृक्ष ।

४—क्रत = (कृत्य) कार्य । सकत्ति = (शक्ति) सामर्थ्य ।

५—ग्रीखम = ग्रीष्म ऋतु । मातौ = पुष्ट । कादंब = मेघ । मेदनी = पृथ्वी ।

छंद बेअक्खरी

आलम दक्खण गयौ उताळौ
बडौ सोच उर बंधववाळौ।
भोम गई सांभर सुण भूगौ
परहँस लीधां दक्खण पूगौ ॥ ६ ॥
मारे काम बगस मन आंणी
सांभर अजन लई न सुहांणी।
असपत दी चादर दिस उत्तर
धारे अमरख सीस मुरद्धर ॥ ७ ॥
आलम तणी खबर सुज आई
सुण सुण अरजां लिखै सवाई।
चक्रवत मन तद अजन विचारी
चिंतवियां मंत्री सु विचारी ॥ ८ ॥
सुणियौ नृपत खेम मति सागर
आद विखायत सुमत उजागर।
मोटी सकत सांमध्रम मांहे
सोच नही मिळतां पतसाहे ॥ ९ ॥

६—उताळौ = त्वरावाला, जल्दी। बंधववाळौ = भाई (कामबख्श) का। भोम = भूमि। भूगौ = भग्न हुआ। परहँस = पराजय, हार।

७—मारे = मारकर। मन आंणी = मन में विचार किया। सुहांणी = अच्छी लगी। असपत = बादशाह। अमरख = (अमर्ष) क्रोध। मुरद्धर = (मरुधरा) मारवाड़।

८—आलम तणी—बादशाह आलम की। चक्रवत = चक्रवर्ती। चितविया = याद किए। मंत्री = अमात्य, कार्यकर्ता।

९—खेम = खीमसी भंडारी। आद विखायत = शुरू से विपत्ति में रहनेवाला। सुमत = अच्छी सलाह देने में। उजागर = प्रसिद्ध। सकत = (शक्ति) सामर्थ्य।

मत छत सार धार अप्रमांणै
जिकौ सकळ नीयत व्रत जांणै ।
सरम सांमध्रम हूँत सपग्गौ
अधरम हूँता रहै अळग्गौ ॥१०॥

दुहा

अै गुण सुण राजा अजै, तेड़ा यौ तिणवार ।
देखे छत दीपाहरां, भुज दीन्हा भर भार ॥११॥
हुजदारौ रुघनाथ सूं, खेम कियौ दीवांण ।
धरपत अजन वधारियौ, दीपाहरां प्रमांण ॥१२॥
छठ उजवाळी छासठै, भाद्रव महिने भूप ।
थिर भंडारी थापिया, निरखे अकळ अनूप ॥१३॥

छंद बेअक्खरी

ऊपर सरद सुखद रित आई
सुख धर नै पत उदत सवाई ।
सरवर अचळ त्रिमळ जळ सोहै
मध पूरत विधु रसमि विमोहै ॥१४॥

१०—मत=(मति) बुद्धि से । छत=(क्षति) हानि, नुकसान । नीयत=(नीति) राजनीति के । सपग्गौ=दृढ़, स्थिर । अळग्गौ=अलग, दूर ।

११—तेड़ा यौ=बुलाया । तिण वार=उस समय । छत=(छत्र) राजा ने । दीपाहरां=दीपचंद भंडारी के वंशजों के ।

१२—हुजदारौ=ओहदा, काम । रुघनाथ भडारी से दीवान का ओहदा लेकर । प्रमांण=मान, इज्जत, प्रतिष्ठा ।

१३—उजवाळी=शुक्ल पक्ष की । छासठै=वि० सं० १७६६ । निरखे=देखकर । अकळ=पूर्ण, पूरा । अनूप=अनुपम ।

१४—धर नै=(धरा) पृथ्वी को । पत=पत्र, पान । उदत=प्रकट हुए । सरवर=सरोवर । मध=(मधु) मकरंद । विधु=चंद्रमा ।

कद्ळी चील सीप पिक केरी
नृपति प्रजादि आस बहुतेरी।
वणे धरा नव उच्छव वारा
प्रतिनिस रास विलास अपारा ॥१५॥
नव नव ग्रह ग्रह चित्र सनूरा
पुर सुर धाम जिसा सुख पूरा।
सुजळ सवाद सुधा सम सोहै
वसन पान सुख धनी विमोहै ॥१६॥

दुहा

सुखदायक वीती सरद, महि प्रगटै म्रग मास।
आरंभ थयौ अजीत रै, सिर नागोर प्रकास ॥१७॥
महाराजा दळ मेळिया, चरस वधे चड चोट।
अधपति पय आया इता, कमँध जिता नवकोट ॥१८॥

१५—कदळी = केले का वृक्ष। पिक केरी = कोयल की। वारा = समय। प्रतिनिस = हर रात्रि में। रास = क्रीड़ा।

१६—ग्रह ग्रह = घर घर में। धनी = धनवानो को।

१७—म्रग मास = अगहन का महीना। नागोर = नगर का नाम जो जोधपुर से उत्तर दिशा मे ८० मील की दूरी पर है।

१८—दळ = सेना। मेळिया = एकत्र की, जमा की। चरस = उत्साह, आनद। चोट = प्रहार, युद्ध। अधपति = महाराजा अजीतसिंह-जी के। पय = पद, चरणों में। इता = इतने। कमँध = राठौड़। जिता = जितने। नवकोट = मारवाड़ में।

असपति सांभळ आवतौ, जोधहरै धर जोर।
जेर कियौ इँद्रसिंघ नैं, घेर लियौ नागोर ॥१९॥
बळ भग्गै वग्गौ नही, इँदौ लग्गौ पाय।
सोचि विचारै साबळी, दूजी गळी न काय ॥२०॥
श्री आणँदघण आविया, दरसण कियौ अजीत।
दूधे वूठा मेहड़ा, हरि तूठौ धरि प्रीत ॥२१॥
आया भाग अजन्न रै, पाया फाग अनंत।
केसर मचियौ भाद्रवौ, रचियौ खेल वसंत ॥२२॥
भंग पड़ै आठूं दिसा, पंग हुवै खळ दाय।
दुयण न बैठौ लाडणू, पैठौ दिल्ली माय ॥२३॥

१९—असपति = बादशाह। सांभळ = सुना। जोधहरै = राव जोधाजी के वंशज (महाराजा अजीतसिंहजी का)। जेर कियौ = दबाया, पीड़ित किया। इँद्रसिंघ नैं = राव इंद्रसिंह को, जो नागोर का स्वामी था।

२०—वग्गौ नहीं = लड़ा नहीं। इँदौ = राव इंद्रसिंह। लग्गौ पाय = चरणों में आ पड़ा। साबळी = सबल। गळी = मार्ग, उपाय। काय = कोई भी।

२१—श्री आणँदघण = विष्णु भगवान् को मूर्ति का नाम है। यह मूर्ति नागोर में थी। म० अजीतसिंहजी ने उसे जोधपुर में ले जाकर स्थापित किया। वह मूर्ति इस समय जोधपुर के क़िले में विराजमान है। दूधे वूठा मेहड़ा = दूध का मेघ बरसा, परम आनद हुआ। हरि = विष्णु भगवान्। तूठौ = प्रसन्न हुए।

२२—भाग = भाग्य में। अजन्न रै = अजीतसिंहजी के। फाग = फाल्गुन मास का आनंद। केसर० = मानों भाद्रपद मास में केसर का रंग घुला।

२३—भंग = भग्गो, भागना। पंग = (पंगु) लूला-लँगड़ा। खळ दाय = शत्रु का उपाय। दुयण = शत्रु (राव इंद्रसिंह)। लाडणू = गाँव का नाम है। पैठौ = जा घुसा।

छंद बेअक्खरी

लिखमीवर आयां सुर लाधै
वेळां चढै अजो बळ बाधै।
नरवर प्रथी खबर सु जपायां
चगथौ आवै राह चलायां ॥२४॥
सुण पतसाह कोप सरसेरौ
अजन मिलण चढियौ आंबेरौ।
हूँत नगीनै अजमल हालै
चतुरंगी सैन्या सँग चालै ॥२५॥
सुणि आगम अगजीत सवायौ
उत जैसिंघ कोळियै आयौ।
धजवड़ बेळ राखवा धरती
प्रगट विहे मिळिया छत्रपत्ती ॥२६॥
सबळ उठी दुख विकळ सवायौ
आलमसाह अजैगढ़ आयौ।

२४—लिखमीवर = विष्णु भगवान्। वेळां चढै = समुद्र की लहरें चढ़ती हैं वैसे। चगथौ = मुसलमान (बादशाह)। राह = मार्ग।

२५—सरसेरौ = अधिक। चढियौ = रवाना हुआ। आंबेरौ = आंबेर का राजा (जयसिंह)। हूँत = से। नगीनै = नागोर। हालै = चले। चतुरंगी = चतुरंगिनी (हाथी, घोड़े, रथ और पैदल)।

२६—आगम = आना। सवायौ = सवाई पदवीवाला, यह जयसिंह का विशेषण है। कोळियै = एक ग्राम का नाम है, जो डीडवाणा नगर से तीन कोस की दूरी पर है। धजवड़ बेळ = तलवार की तरंगों से। विहे = दोनों। छत्रपत्ती = राजा।

२७—उठी = उधर। सवायौ = अधिक। अजैगढ़ = अजमेर।

साह तणै दळ दूत सपातां
विचित्र हुए मिळ वातोवातां ।।२७।।
अजन तणौ लख जोस अफारौ
सोच करै जवनां दळ सारौ ।
पातसाह उर मैं भ्रम पायौ
लेखिस पुत्र अजीम बुलायौ ।।२८।।
तांम अजीम अरज की तैसी
साह नचीत हुवै मन जैसी ।
पातसाह सुणतां सुख पायौ
चेलौ नाहरखान चलायौ ।।२९।।
असपत दूत कोळियै आयौ
दसकत पंजौ कौल दिखायौ ।
कौल अजीम तणा हित काजा
राजी थयौ अजन महाराजा ।।३०।।
कीधो नरपत जेज न काई
साथ लियौ जैसिंघ सवाई ।
पत दिल्ली देखण परवारै
प्रथीनाथ अजमेर पधारै ।।३१।।

साह तणै = बादशाह की । दळ = सेना में । सपातां = पत्रों द्वारा । विचित्र = मुसलमान । वातोवातां = कानाफूसी करने लगे ।

२८—अफारौ = बहुत अधिक । सारौ = समस्त । भ्रम पायौ = घबराया । लेखिस = लिखकर ।

२९—तांम = वहाँ । चेलौ = यह एक अवटंक है । चलायौ = रवाना किया ।

३०—असपत = बादशाह । दसकत पंजौ कौल = ये बादशाही फरमान के चिह्न हैं । कौल = प्रतिज्ञा । तणा = के ।

३१—जेज = देरी । काई = कुछ भी । पत दिल्ली = दिल्ली के स्वामी (बादशाह) को । परवारै = सीधे, ऊपरी रास्ते से ।

दुहा

दिन एकम आसाढ वद, साह दियौ सनमान ।
सूंपी नवकोटी सकळ, जस हुय सकळ जिहांन ।।३२।।
जसवँत सुत जैसिंघ नूं, दिवरायौ ढूंढाड़ ।
आलम सो अजमाल नूं, प्रगट मनायौ पाड़ ।।३३।।
जर जवहर सिंधुर तुरी, तोरा वसन सुपान ।
आलम समपे अजन नूं, सारै हिंदुस्थांन ।।३४।।
विदा हुए पाधारियौं, पुहकर मुरधर पत्त ।
दांन सिनांन विधांन दिन, पुनि मनि इंद्र प्रकत्त ।।३५।।
पुहकर थी आंबेर पत, विदा करे जैसाह ।
पह जोधांण पधारियौ, अजन साह नरनाह ।।३६।।
आवण आगम सतसठै, आयौ पुर अगजीत ।
मुरधर थया वधांमणा, सत्रहर थया सभीत ।।३७।।
कर दीवाळी जोधपुर, अजन हुवौ असवार ।
नृप बरफी सेवा लियण, परसेवा हरिद्वार ।।३८।।

३२—सूंपी = दे दी, सुपुर्द की । नवकोटी = मारवाड़ देश ।

३३—पाड़ = अहसान, उपकार ।

३४—जर = द्रव्य । जवहर = जौहर, रत्न । सिंधुर = हाथी । तुरी = घोड़ा । तोरा = बादशाही सम्मान-सूचक पदार्थ है । समपे = दिए ।

३५—पुहकर = पुष्कर तीर्थ । मनि = मन में । इंद्र प्रकत्त = इंद्र के समान स्वभाववाला ।

३६—जैसाह = जयसिंहजी ।

३७—सतसठै = वि० सं० १७६७ । पुर = नगर (जोधपुर) । अगजीत = अजीतसिंहजी । सत्रहर = शत्रुओं के मनुष्य । थया = हुए ।

३८—बरफी = बर्फ की, हिमालय के देश की । लियण = लेने को । परसेवा = स्पर्श करने को ।

हेम सिसर रित मेड़तै, रहियौ कमँधाँ राव ।
संझ विहांणै ऊगणै, दिन दिन दूणौ चाव ॥३९॥
विसव अमल राजस वणी, एकण छत्र प्रताप ।
चक्रवत तांम विचारियौ, ईख सुकळ दिन आप ॥४०॥
आखी मुख राजा अजन, साखी तिण संसार ।
अवतरियौ म्हारे अभौ, भौ भंजण अवतार ॥४१॥
....
.... ॥४२॥
....
.... ॥४३॥

छंद बेअक्खरी

ऊपर तिण वसंत रित आई
सीत वितीत हुई असुहाई ।

३९—हेम = हेमंत ऋतु, (मार्गशीर्ष और पौष) । सिसर = शिशिर ऋतु, (माघ और फाल्गुन) । संझ = सध्या । विहांणै = प्रात:काल । चाव = उत्सव, आनंद, प्रीति, उत्साह ।

४०—विसव = (विश्व) समस्त जगत् में । एकण = अकेले । छत्र = राजा के । चक्रवत = चक्रवर्ती । तांम = वहाँ । ईख = देखकर । सुकळ = शुभ ।

४१—आखी = कहा । साखी = साक्षी, गवाह । भौ भजण = भय को मिटानेवाला ।

४४—तिण = उसके (शिशिर ऋतु के) । रित = ऋतु । असुहाई = मन को अच्छी न लगनेवाली, दु:सह । अब = आम्र । तर = (तरु) वृक्ष ।

सौभै अंब आद तर सारा
वणै नीत जिम प्रज चा वारा ॥४४॥
चडियौ गजनहरौ चक्रवत्ती
संके देस जिता समजत्ती।
केहर गौड़ हरख उर कीधौ
दिन जिग लगन तणौ लिख दीधौ ॥४५॥
इळ मधु मास क्रिसन पख आयौ
भूपत कूच कियौ मन भायौ।
बाजै सुसरि राजगढ बाजा
रांणी गौड़ परणियौ राजा ॥४६॥
यौं पँथ बहत किताइ सुख पावै
जिता असह त्यांरौ सुख जावै।
अजमल महारोठ अपणाई
छत्रपत साहां सेव छुडाई ॥४७॥

सारा = समस्त। नीत = नित्य। प्रज चा = प्रजा का। वारा = समय, आनंद।

४५—गजनहरौ = म० गजसिंहजी का पौत्र (म० अजीतसिंहजी)। जिता = जितने। समजत्ती = समान के। केहर = केसरीसिंहजी। गौड़ = गौड़ वंश का क्षत्रिय। जिग = यज्ञ। लगन तणौ = विवाह होने का।

४६—इळ = पृथ्वी। मधु मास = चैत्र मास। क्रिसन पख = कृष्णपक्ष। सुसरि = अच्छे, उत्तम। राजगढ = नगर का नाम है; यह अजमेर प्रांत में है। परणियौ = पाणिग्रहण किया।

४७—यौं = इस तरह। किताइ = कितने ही। जिता = जितने। असह = शत्रु। त्यांरौ = उनका। महारोठ = एक नगर का नाम है, यह परबतसर परगने में है। अपणाई = अधीन की। छत्रपत = राजा ने। साहां सेव = बादशाहों की नौकरी।

पछै नृपत कुर खेत पधारे
प्रगट थया दिन जिगन अपारे ।
जोधां नाथ आप रै जोरै
सूं चौमासौ रहे सढौरै ॥४८॥
बीती सरद अड़सठै वाळी
इळ सझियां पूजे दीवाळी ।
नांहणि आद जिता नरपत्ती
जेर किया बरफी समजत्ती ॥४९॥
दूजै साल बरफ नृप देसां
पाई लग्ग उग्राही पेसां ।
ऊपर जरां सिसर रित आई
दुजड़ै जेर थया वरदाई ॥५०॥
धरपत अजै तरां हित धारे
परसण श्री गंगा पाधारे ।
आपै दांन दुजा अणपारे
विप्र अदळद कीधा दुख वारे ॥५१॥

४८—जिगन = यज्ञ । सढौरै = अपने साथ के साथ ।

४९—अड़सठै वाळी = अड़सठ की । सझियां = तैयार हुए । नांहणि = एक नगर का नाम है । बरफी = बर्फवाले देश के ।

५०—पाई लग्ग = पैरों पड़े हुए । उग्राही = जमा की, वसूल की । पेसां = पेशकसी । जरां = जब । दुजड़े = तलवार से । वरदाई = महाराजा अजीतसिंहजी के ।

५१—अजै = म० अजीतसिंहजी ने । तरां = तब । परसण = स्पर्श करने को, यात्रा को । आपै = दिए । दुजा = (द्विज) ब्राह्मणों को । अणपारे = अपार । अदळद = द्रारिद्रय-रहित, धनवान् । वारे = मिटाकर, वर्जकर ।

गंगा परस अजौ गढ़पत्ती
छित आयौ मारू छत्रपत्ती ।
म्हरे पुरे बधावा सारै
उछव थया सू कमण उचारै ॥५२॥
सोभै मुरधर वार सवोळी
हुवौ वसंत जोधपुर होळी ।
कळा अमाप प्रताप जिकेरौ
भूप निहारै बदन अभैंरा ॥५३॥
चोवा अंबर केसर चंदण
ख्याल गुलाल अबीरी खेलण ।
अजन प्रताप परख रस आयौ
छत्रपत दिली रहै भ्रम छायौ ॥५४॥

दुहा

आलम सा उत्तर धरा, भिसत गयौ निज भोम ।
सारे जाया साह रा, जुध आया जम जोम ॥५५॥

५२—छित = (क्षिति) पृथ्वी, अपनी जन्मभूमि में । मारू = मारवाड़ का । बधावा = अगोनी करके सत्कार किया । सारै = सबने । कमण = कौन । उचारै = कह सकता है ?

५३—वार = समय । सवोळी = बड़ा बलवान्, सबल । होळी = होलिका का उत्सव । कळा = अंश । अमाप = अपरिमाण । जिकेरौ = जिसका । निहारै = देखता है । बदन = मुख ।

५४—ख्याल = तमाशा । परख = देखकर । रस आयौ = सफल हुआ । छत्रपत दिली = दिल्ली का राजा (बादशाह) । भ्रम छायौ = घबराया हुआ ।

५५—भिसत गयौ = स्वर्ग गया, मर गया । सारे = समस्त । जाया = जन्मे हुए, पुत्र । जम जोम = यमराज के समान जोश से ।

असमर साभि अजीम नूं, थयौ कुहाड़ौ साह।
वाकौ आयौ जोधपुर, सुणियौ अजन सगाह ॥५६॥
खित भंडारी खेमसी, मंत्री मत अण माप।
रौद्र तणौ दळ राखियौ, अजन घणौ हित आप ॥५७॥
खेम तणौ सथ दूसरौ, कायथ चंद गुलाल।
वाकै पत्र लिखिया इता, साचा जिता सवाल ॥५८॥
आलम रा वाका तणी, सुणी खबर अजमाल।
दिल्ली पाई मौजदी, पिड़ लड़ भाई पाल ॥५९॥
दिल्ली राजै मौजदी, खेम भँडारी पास।
साह बुलाए पूछियौ, वाधी प्रीत प्रकास ॥६०॥
सांमधरम छळ खीमसी, साह कियौ सुप्रसन्न।
सो बौ गूजर खंड रौ, दीनौ खूंद जवन्न ॥६१॥

५६—असमर = तलवार। साभि = देकर, बँधाकर। वाकौ = खबर, वृत्तात। सगाह = गर्व के साथ।

५७—खित = (क्षिति) पृथ्वी, अपनी भूमि का। भंडारी = जैन ओसवाल जाति में अवटंक है। रौद्र तणौ = मुसलमानो को। दळ = सेना में। घणौ = बहुत।

५८—खेम तणौ = खेमसी के साथ। चंद गुलाल = गुलालचंद।

५९—मौजदी = मौजुद्दीन ने। पिड़ = युद्ध-भूमि में। पाल = रोककर, हटाकर।

६०—खेम = खेमसी।

६१—छळ = सबब से। साह = बादशाह को। गूजर खंड रौ = गुजरात का। खूंद = बादशाह।

भंडारी लिख भेजियौ, सुणियौ जोधां छात ।
सोबौ अहमद पुर सरस, सतर सहँस गुजरात ॥६२॥
गढ जोधांण गुणंतरै, वरखा सरद वितीत ।
कीधी सुख सूं कमधजां, महाराजा अगजीत ॥६३॥
मिगसर मैं दळ मेलिया, धर दक्खण गुजरात ।
चगथां ग्रह चाळै तणी, वळे लिखांणी वात ॥६४॥
सझ दळ आयौ फरकसा, साथे सैद सगाह ।
मार लियौ जुड़ मौजदी, आप थयौ पतसाह ॥६५॥
लिखिया आवै खेम रा, वाची जै केवाट ।
मुगलां अणभायौ फरक, पायौ दिल्ली पाट ॥६६॥

६२—जोधां छात = जोधा राठोड़ो के छत्र (म० अजीतसिंहजी) ने । अहमद पुर = अहमदाबाद । सतर सहँस = सत्रह हजार गाँवो का ।

६३—गुणंतरै = वि० सं० १७६६ । बरखा = वर्षा ऋतु । कमधजा = राठोड़ों ने ।

६४—धर दक्खण गुजरात = दक्षिण और गुजरात की भूमि के अधिकारी । चगथां ग्रह चाळै तणी = मुसलमानों के गृहकलह की । वळे = फिर । लिखांणी = लिखी ।

६५—फरकसा = फर्रुखसियर । साथे० = उसके साथ गर्वान्वित सैयद थे । जुड़ = भिड़कर, युद्ध करके ।

६६—केवाट = वृत्तात, समाचार । अणभायौ = अनिच्छित । फरक = फर्रुखसियर । पाट = (पट्ट) तख्त ।

जुलफकार खां मारियौ, मुगल थया निरजोर ।
माह महीनै जेठ ज्यौं, सैद वहै सिर जोर ।।६७।।

छंद बेअक्खरी

यों लिखिया रोजीना आवै
मरब दिली री विगत सुणावै ।
वाधी हर मुहकम री वाधै
सैदां द्वार फिरै हित साधै ।।६८।।

आ फिरि खबरि विगत सूं आई
अजन उवर लागी असुहाई ।
दोपैा व्यास हितू नृप पेखे
विगत कही भ्रत सही सु वेखे ।।६९।।

व्यास अरज कर कही विगत्ती
मोरी वात एक महपत्ती ।

६७—माह० = वह माघ मास था, जिसमें शीत अत्यंत प्रबल होता है, परंतु उस समय सैयद ज्येष्ठ मास के समान सिरजोर चलते थे ।

६८—रोजीना = हमेशा । वाधी० = मोहकमसिंह की हर अर्थात् आशा अधिक बँध गई जिससे वह सैयदों के दरवाजे पर अपना हित साधने के लिये फिरता है ।

६९—उवर = (उरस्) हृदय में । असुहाई = बुरी । हितू = हितैषी, हितेच्छु । पेखे = देखकर । विगत = ब्यौरेवार समाचार, वृत्तांत । भ्रत = (भृत्य) नौकर । वेखे = देखकर ।

७०—विगत्ती = विगत, ब्यौरेवार समाचार । महपत्ती = (महीपते !)

बेऊं नाहर अमर बुलावौ
भाटी तेड़े कांम भळावौ ॥७०॥
भूपति तणै वचन मन भाया
बेऊं प्रागहरा बोलाया ।
कुँवर सझण थित दिल्ली केरी
फुरमायौ सुज वात न फेरी ॥७१॥
विदा किया भाटी खगवाहा
बेली साथे कमँध दुबाहा ।
मारण दुयण करन महवेचे
वड़हथ नाथै अमर धवेचे ॥७२॥
चांपौ खेम भीम सुत चावौ
भाटी जगौ खळां अणभावौ ।
साथे डूंगर जिसा असंका
वीस पिरागहरा खग वंका ॥७३॥

हे राजा । बेऊं = दोनो, नाहरसिंह और अमरसिंह । तेड़े = बुलाकर । कांम भळावौ = काम सुपुर्द करो ।

७१—भूपति तणै = राजा के (मन में) । भाया = अच्छे लगे । बेऊं = दोनों । प्रागहरा = प्रयागदासोत भाटी । कुँवर सझण = कुँवर मोहकमसिंह को मारने के लिये । थित = स्थिति, मुकाम में । दिल्ली केरी = दिल्ली के ।

७२—खगवाहा = तलवार चलानेवाले । दुयण = (दुर्जन) शत्रु को । करन० = महेचा राठौड़ करणसिंह । वड़हथ = बहादुर । धवेचे = धवेचा राठौड़ ।

७३—चावौ = प्रसिद्ध, प्रख्यात । खळां = शत्रुओं को । अणभावौ = अनिच्छित । पिरागहरा = प्रयागदासोत भाटी । खग बंका = तलवार चलाने में बंके ।

दोळा लियां सात भड़ दूजा
पंथ खेड़िया सकत कर पूजा।
प्रथवीनाथ निरख सुख पायौ
ऊपर बरस सित्तरौ आयौ ॥७४॥

दुहा

अभंग भड़ां अजमाल रां, अमरै नाहर आद।
मुहकम दिल्ली मारियौ, साह सुणी फरियाद ॥७५॥
सुणतां दाधौ फरकसा, भाद्रव हंदै मास।
सैदां सूं राखी नही, आखी ऊखै सास ॥७६॥

इति श्री राजरूपक मैं मुहकमसिंघ नै दिल्ली मैं मारियौ सो विगत कही पंचविंश प्रकास ॥२५॥

७४—दोळा = साथ। पंथ = मार्ग में। खेड़िया = चलाया। सकत = (शक्ति) देवी की। सित्तरौ = वि० सं० १७७०।

७५—अभँग = नहीं भागनेवाले।

७६—दाधौ = (दग्ध) जल गया। भाद्रव हंदै = भाद्रपद के। सैदां सूं० = सैयदों से बात छिपी नहीं रखी। आखी = कही। ऊखै सास = ऊँचे श्वास लेकर, आह भरकर।

छंद बेअक्खरी

सत्रु साभ आविया सकाजा
राजी थयौ अजौ महाराजा।
जवनां धणी सुणे उर जळियौ
कमधे दिली अकळ पण कळियौ ॥ १ ॥

सैदे खान हसन रोसायौ
विदा हुवौ दळ मेळ सवायौ।
समहर सैद काच रो सीसी
साथे चतुरंगणि बावीसी ॥ २ ॥

पायक अस रथ पंथ अपारां
हाथी पाखरवंत हजारां।
वहतै सीतकाळ वोळायौ
ओ वैसाख अजैगढ़ आयौ ॥ ३ ॥

१—सत्रु साभ=शत्रु को मारकर। सकाजा=सफल, कामयाब। कमध०=राठौड़ों के दिल्ली में होने से बादशाह आकुलता में फँस गया। (घबरा गया)।

२—खान हसन=हसन खाँ सैयद। रीसायौ=क्रुद्ध हुआ। मेळ=एकत्र करके। सवायौ=अधिक। समहर=युद्ध में। काच री सीसी=जैसे काच की शीशी को टूटते देरी नहीं लगती, वैसे सैयद मरने में देरी नहीं करता। बावीसी=बाईस बेड़ों की सेना।

३—पायक=पैदल। अस=(अश्व) घोड़ा। पाखरवंत=पाखरवाले। वोळायौ=समाप्त किया। ओ=सैयद हसनखान। अजैगढ़=अजमेर।

आया दूत खबर सह आई
विचित्र फौज लख दोय वताई।
चडियौ अजन त्रेख मन चाडै
साम्हौ सुहड़े भड़े सचाडै ॥ ४ ॥

दुहा

सैद तणै दळ सामुहौ, रांहण श्रो महाराज।
सेन्या सात हजार सूं, वणै कजाकी वाज ॥ ५ ॥
राजलोक धर राड़वर, आदि कुँवर अभसाह।
वसिया देस सिवाणची, सहर तणा जण साह ॥ ६ ॥
मियां बुलाया वात नूं, त्यांसूं वणी न वात।
छळ करियौ असुरांण चौ, वळियौ मुरड़ अजीत ॥ ७ ॥
पाधारे नृप जोधपुर, गढ चाढिया कमंध।
आप विरस हुए चीतियौ, धरा चहूँ दिस धंध ॥ ८ ॥

४—सह = सब। विचित्र = मुसलमानों की। चडियौ = सवार हुआ, सेना लेकर चला। त्रेख = क्रोध। चाडै = चढ़ाकर, धारकर। सुहड़े = सुभटों से। भड़े = योधों से। सचाडै = सहायता लेकर।

५—तणै = के। राहण = कार्य सिद्ध करनेवाला अथवा रांहण ग्राम गए, जो मेड़ता नगर से चार कोस पर है। कजाकी = मारनेवाला। वाज = पक्षि-विशेष।

६—राजलोक = जनाना को। राड़वर = मारवाड़ के समीप एक प्रांत है। सिवाणची = सिवाना परगने में। सहर तणा = नगर के। जण = लोक। साह = साहूकार।

७—त्यांसूं = उनसे। छळ = कपट। असुरांण चौ = मुसलमानों का। वळियौ = वापिस लौट आया। मुरड़ = पीछे हटकर।

८—पाधारे = आए। विरस = चिंतातुर, उदास। चीतियौ = विचार किया। चहूँ दिस = चारों तरफ। धंध = उपद्रव है।

गढ़ बाधौ भूपाळ गळ, जोगावत जिम ताव।
चांपौ हरियँद खांन तण, उगरौ सबळ सुजाव ॥ ६ ॥
जोड़ सुभौ सगरांम तण, ऊदौ आगळियार।
किसनदास कूंपा हरां, तेजल मेघ सतार ॥१०॥
हाथा ळौ ऊहड़ हरी, गळ गढ हंदी लज्ज।
इंदौ भोज महाबळी, रांमौ देद सकज्ज ॥११॥
जोधौ हरियँद मान तण, साथे द्याल सकाज।
संधी प्रीत नरिंद कज, गढ ची बंधी लाज ॥१२॥

६—(इस विचार से) गढ़० = जोधपुर का किला राजा के गले में बँध गया, अर्थात् किले को छोड़ नहीं रुके, जैसे जोगावत राठोड़ों के गले ताव अर्थात् पश्चात्ताप लग गया। जोगा राव जोधाजी का ज्येष्ठ पुत्र था। राव जोधाजी ने उसे छापर द्रोणपुर का प्रबंध करने के लिये भेजा था। वह उसका प्रबंध नहीं कर सका, जिससे राव जोधाजी ने उसे राज्य के अयोग्य समझकर राज्य से वंचित रखा। यद्यपि सामंतों ने उसे गद्दी पर बिठाने के लिये बुलाया भी, परंतु अपनी अयोग्यता से वह राज्य से वंचित रहा। उसका पश्चात्ताप जोगावत राठोड़ो के गले बँधा हुआ है। महाराज के साथ ये किले में थे। चांपावत = हरिसिंह नाहरखान का पुत्र। उगरसिंह = सबलसिंह का पुत्र।

१०—जोड़ = उसके समान का। सुभराम = जगरामसिंह का पुत्र। ऊदौ = ऊदावत राठोड़। आगळियार = आगे रहनेवाला। कूंपा हरा = कूंपावतों में।

११—हाथा ळौ = जोरावर। ऊहड़ = ऊहड़ राठोड़। गढ हंदी = किले की। इंदौ = इंद्रसिंह। भोज = भोजावत राठोड़। देद = देदावत राठोड़। सकज = कार्य करनेवाला।

१२—जोधौ = जोधा राठौड़। तण = पुत्र। द्याल = दयालदास। संधी = जोड़ी, की। कज = वास्ते। गढ ची = किले की।

खूंमांणौ सबळौ रयण, बेऊं साहस बंध ।
सुहड़ां दोय हजार सूं, मुख भगवान कमंध ॥१३॥
आँठूँ दिस पुर ऊजड़े, चड़े तड़े सब लोग ।
सझियौ गढ बंके भड़े, प्रज ग्रामड़े विजोग ॥१४॥
यों नबाव मुख आखियौ, मुहम फिरै मो तांम ।
अजन मिळै पतसाह सूं, टळै दमंगळ जांम ॥१५॥

छप्पय

मिळ जोधा रिणमाल, मिळै मंत्री सगळाई
करवा जतन अजीत, खळां परतीत न काई ।
अकल तणौ अनुसार, वात मुख भणौ विखारी
तांम नेम ऊधरै, खेम बोलियौ भँडारी ।
महाराज तणी चिंता मिटै, विघ्न इण आज विचारियां
सुभ काज वार रहसी सिघर, राजकँवर पाधारियां ॥१६॥

१३—खूंमांणौ = सीसोदिया राजपूत। रयण = राजसिंह। बेऊ = दोनो। साहस बंध = हठीले। सुहड़ां = सुभटों। मुख = मुख्य। कमध = राठोड़।

१४—आँठूँ दिस = सब ओर से। ऊजड़े = निर्जन हो गया, शून्य हो गया। चड़े = चले गए। तड़े = बिखर गए। प्रज = प्रजा का। ग्रामड़े = ग्रामो से।

१५—यों = इस तरह। नबाब = हसनखाँ ने। मुख आखियौ = मुख से कहा। मुहम = सेना। मो = मेरी। तांम = तब। दमगळ = विघ्न, उपद्रव। जाम = जब।

१६—सगळाई = सब। खळां = शत्रुओं की। परतीत = (प्रतीति) भरोसा। काई = कुछ भी। अकल तणौ = बुद्धि के। भणौ = कहते हैं। विखारी = स्थान छोड़कर लूट मार करने की। नेम = नियम का। ऊधरै = ऊँचे दर्जे का। तणी = की। सिघर = (शीघ्र)।

दुहा

जनम हुवौ अभसाह रै, तिण दिन हूँत प्रताप ।
विसतरियौ सुहड़ां कुरब, भागा सरब सँताप ॥१७॥

वार्ता

बोले उमराव वाह वाह सुभ बांणी
खेम की सलाह नरनाह कूं सुहांणी,
और ही उमराव जूनी वारता के जांणणहार
विचारै उचारै पूछै समै को विचार ।
तिण समै बोलियौ केहरी बारठ कविराज
भीम को भीम सूरां की लाज ।
श्री महाराज सूं अरज गुजरांणी, सब कूं सुहांणी ।
श्री महाराजा अजमाल, सुभचिंतक की अरज का सुणीजै सवाल ॥
श्री ईश्वरावतार आगै ही विखम समै आयां और तौ लागा जुआ ।
तठै प्रतापीक पुत्रां सूं सिद्धि काज हुआ ॥
दौलतखान जवन सेखै की सहाय राव गांगै सीस आयौ
तद राव समै देख कँवर मालदे बुलायौ ।
कँवर को प्रताप लेखि सेनापति कियौ
सो सेखै कूं संघारि जूट जवन लूट लियौ ॥

१७—हूँत = से ।

वार्ता—सुहांणी = अच्छी लगी । जूनी = पुरातन । केहरी = केसरी सिंह नाम का बारठ (चारण) । भीम को = भीम का पुत्र । भीम = भीम के सदृश बलवान् । गुजरांणी = निवेदन की । विखम समै = विकट समय ; लागा जुआ = अलग हुए । तठै = वहाँ । सेखै की = सेखा

राजकुँवर बुलावण की जेज न कीजै।
अवतार सी क्रीत की प्रतीत क्यूं न लीजै॥

दुहा

अरज करी अजमाल सूँ केहर हाथ मिलाय।
सेम भँडारो हरखियौ, बेलच परख सवाय॥१८॥

अथ श्री महाराज श्री अभैसिंघजी कँवर पदै दिल्ली प्रथम पधारियो सो विगत

दुहा

अरज सुणी राजा अजै, वणी गरज रज वृत्त।
कँवर वडाई जैवहौ, मन भाई मसलत्त॥१९॥
वहत सिताबी राड़वर, दूत दरक्कां खेड़ि।
गया बुलावण जतन गढ, त्यां सूं बूझी तेड़॥२०॥
उर प्रगटै सुख ऊधरौ, सुणि विवरौ अभसाह।
ज्यों जिग काम तपोधनां, राम कियौ औछाह॥२१॥

राव सूजाजी का पुत्र था। उसे निर्वाह के लिये पीपाड़ नगर मिला था। गांगै=राव गांगा, जो जोधपुर की गद्दी पर बैठा था। लेखि=समझकर। संघारि=मारकर। जूट=समूह। सी=सदृश। क्रीत=कीर्ति।

१८—बेलच=मदद, सहायता। परख=देखकर।

१९—वणी गरज=आवश्यकता हुई। रज वृत्त=राज्य के व्यवहार में। वडाई=प्रशंसा। जैवहौ=जय करनेवाला; कँवर का विशेषण है। मसलत्त=सलाह।

२०—सिताबी=जल्दी, शीघ्र। राड़वर=प्रदेश का नाम है। दरक्का=ऊँटों को। खेड़ि=चलाकर। जतन गढ़=एक नगर का नाम है। तेड़=बुलाकर।

२१—ऊधरौ=बहुत अधिक। विवरौ=विवरण। जिग काम=यज्ञ के वास्ते। तपोधनां=ऋषियों के। औछाह=(उत्सव) हर्ष, खुशी।

नरपत दळ आरत निरख, करवा देस करोट ।
आयौ जोधांणै अभौ, मन भायौ नवकोट ॥२२॥

छप्पय

आवै सघण अचींत, जेम वनि अगनि सिळग्गां
सरप विक्ख सोखवा, मंत्र आवै सुखमंगां ।
वणै दुहेली वाट, अभै कोपि बेली आवै
गयँद सुंड ग्राहतां, जांण कोइ आंण छुडावै ।
हिँदुवांण तणी आरत हरण, सत्रां घणी करवा सभौ
महाराज दळां भायौ मने, इसी वार आयौ अभौ ॥२३॥
अत तपियै तन अवनि, दियै परजन सरदाई
सुधा पाय ससि करै, जेम वणराय सवाई ।
नदी पार संपजै, पोत द्रढ खेवट पायां
विपति विलै हुय जाय, जेम घर संपत आयां ।
हिंदुवै छात लायौ हियै, वडौ जतन पायौ विभै
नवकोट मोच मिटियौ नरां, इसी भांत मिळतां अभै ॥२४॥

२२—आरत = दुखी । करोट = सहायता । जोधांणै = जोधपुर ।

२३—सघण = मेघ । वनि अगनि = दावानल के । सिळग्गां = लगने पर, जलने पर । विक्ख = (विष) जहर । सोखवा = सुखाने के लिये, उतारने के लिये । सुखमंगां = सुगमता से । वणै० = दुर्गम रास्ता आने पर कोई भय मिटानेवाला योधा आ जावे । गयंद० = हाथी ने सूँड़ में पकड़ लिया हो उस समय । हिंदुवांण तणी = हिंदुओं की । सत्रा = शत्रुओं को । सभौ = भय । भायौ = अच्छा लगा । इसी वार = इसी तरह ।

२४—तन = शरीर । अवनि = पृथ्वी का । परजन = मेघ । सरदाई = शीतलता । सुधा = अमृत । पाय = पिलाकर । ससि = चंद्रमा । वणराय = वनराज को । संपजै = प्राप्त होता है, पाता है । पोत = नौका, नाव । खेवट = मल्लाह । विलै हुय जाय = नष्ट हो जाय । हिंदुवै छात = हिंदुओं का छत्र (म० अजीतसिंह) । विभै = वैभव के लिये ।

दुहा

अजै कँवर सूं आखियौ, मिळतां साचै मन्न ।
भीड़ न भाजै दूसरां, तो विण नीड़ जतन्न ॥२५॥

छप्पय

जांम अजन जांणियौ, महा मन सोच विचारै
दुसह जवन देखवा, सुतन करवा पर सारै ।
आ वृत्ती किम आदरूँ, कुँवर कोमळ आकृत्ती
पिण हर अरि पाळणी, कुसळ राखणी धरत्ती ॥
मन दुसह दुहूँ विध माहरै, असह वार लग्गै इसी
मुख लियां कठण नागेंद्र मनु, जग सदोख मूखक जिसी ॥२६॥

दुहा

कँवर तणी परखे कळा, उर हरवे अप्रमांण ।
भाटी भायौ भूप मन, तेड़ायौ इंद्रभांण ॥२७॥
अरि पालण राखण अवनि, विध सुण सरब विचार ।
भीम सुतण भर भार भळ, विदा हुऔ तिण वार ॥२८॥

२५—आखियौ = कहा । भीड़ = भय, कष्ट । नीड़ जतन्न = स्थान का यत्न कौन करे ?

२६—दुसह = दुःसह, असह्य । सुतन = पुत्र को । पर सारै = दूसरे के अधीन । आ = यह । वृत्ती = व्यवहार, काम । पिण = परंतु । हर अरि पाळणी = शत्रु की इच्छा को रोकना है । माहरै = मेरे । असह = असह्य । वार = पेच, प्रपंच । नागेंद्र = सर्प । सदोख = दोष सहित, बीमार । मूखक = (मूषक) चूहा ।

२७—कळा = अंश । भायौ = अच्छा लगा । तेड़ायौ = बुलाया ।

२८—अरि पालण = शत्रु को रोकना । भीम सुतण = भीमसिंह के पुत्र इंद्रभाण । भार भर भळ = बोझ भार लेकर, समस्त अधिकार पाकर । तिण वार = उस समय ।

ऊभौ छुभा अजीत रै, कँवर अभौ कर जोड़।
जांणे चंद्र सरद्द रौ, मज्झ नखत्रां कोड़ ॥२९॥
राजा बीड़ौ आपियौ, कांम सभीड़ौ पेख।
ज्वाळ गुवांळा क्रिसन ज्यूं, दीनौ आयौ देख ॥३०॥

छप्पय

अजै नृपत उण वार, नूर कौमार परक्खे
एम धकै दसरत्थ, जेम श्रीराम निरक्खे।
नंद इंद्र कोपियां, नंद नंदण गुण दीठौ
सेखै छळि गंग नूं, माल बळ लग्गौ मीठौ॥
छत्रपती सहित देखै छुभा, वणै तेज सोभा वसै
निरवात दीप जिम ग्रेह निसि, अंग नेह रस उल्लसै ॥३१॥

दुहा

पद वंदे भूपाळ रा, अभौ हुवौ असवार।
दुख पायौ उर दुरजणां, सुख पायो संसार ॥३२॥
सैदां हंदै सांमुहौ, यों चडतां अभसाह।
हसन अली उर हरखियौ, सब दळ पली सदाह ॥३३॥

२९—मज्झ=मध्य में।

३०—सभीड़ौ=महा कठिन। ज्वाळ०=वन में अग्नि की ज्वाला उठी, उसे देखकर गोप घबरा गए थे। उस समय श्रीकृष्ण ने उनकी रक्षा की थी।

३१—उण वार=उस समय। नूर=तेज। कौमार=राजकुमार का। एम=इसी तरह। धकै=आगे। नंद नंदण=श्रीकृष्णचंद्र का। सेखै छळि=सेखा के युद्ध में। नेह रस=स्नेह-सहित प्रेम।

३२—दुरजणां=शत्रुओं ने।

३३—पली=मिट गई। सदाह=परिताप।

सैद हसन अभसाह सूं, मिळ चालियौ निबाब।
छोड मुरद्धर देस नूं, सत्र हर गया सताब ॥३४॥
आसीसै अभसाह नूं, परजा नवै प्रकार।
राज करौ जुग कोड़ धर, श्री महाराज क्वार ॥३५॥
सांम धरम्मी सांम भुज, सांम सनाह सप्रांण।
साथी सुभटां सीम सुज, भीम तणौ इँद्रभांण ॥३६॥
भळिया जेसां भाटियां, कँवर तणा सुभ काज।
सेना च्यार हजार सँग, हुकम सुणे महाराज ॥३७॥
संग भँडारी खीमसी, कायथ चंद गुलाल।
मंत्री साथे मेलिया, महाराजा अजमाल ॥३८॥
वरस सितरियै वीततां, ऊतरतां आसाढ।
जोगणपुर लेगौ जवन, अजन तणौ औगाढ ॥३९॥
आयौ पुर दिल्ली अभौ, मद छायौ जग माह।
मन भायौ अत सुण मछर, तेड़ायौ पतसाह ॥४०॥

३४—सत्र हर=शत्रुओ का दल। सताब=जल्दी।

३५—नवै प्रकार=नई रीति से।

३६—सांम धरम्मी=स्वामिभक्त। साम भुज=लड़ने के लिये मालिक का भुजा रूप। सांम सनाह=रक्षा करने के लिये स्वामी का कवच रूप। सप्रांण=बलवान्, मालिक का प्राणरूप। साथी=साथ में।

३७—भळिया=सुपुर्द किए। जेसां=जेसा वंश के।

३८—चंद गुलाल=गुलाल चंद।

३९—जोगणपुर=दिल्ली। औगाढ=पुत्र।

४०—मछर=मत्सरता-युक्त होकर (दूसरे के उत्कर्ष को न सहना मत्सरता कहलाती है)। तेड़ायौ=बुलाया।

छप्पय

साह द्वार अभसाह, जाम नरनाह सपत्तौ
जुड़े लोक बाजार, न को पहड़ै निरखंतौ।
राम धनंख भंजवा, जनकपुर जांणै आयौ
कना कान्ह मधुपरी, सोभ सुंदर दरसायौ।
नर नारि दहूँ मग चा नयण, निरख रूप छोडै नही
किर वरण पती सिर कागदां, जिम वणंति अंगा जिही ॥४१॥

दुहा

उभै वरग पेखै अभौ, प्रगटै उर पारीख।
सुरां करण प्रतिपाळ सुख, असुरां काळ सरीख ॥४२॥

छप्पय

पातसाह पेखवा, गयौ दूजौ गजपत्ती
आप साह ईखियौ, साह लिखियौ समजत्ती।
हिंदू मुस्सलमांण, खड़ा दीवांण विचाळै
किया दीप सम क्रांत, कँवर नागेंदर काळै।

४१—जाम = (जन्मा हुआ) पुत्र। सुपत्तौ = पहुँचा। जुड़े = इकट्ठे हुए। को = कोई। पहड़ै = पीछे हटता है। धनख = धनुष। कना = किंवा। कान्ह = श्रीकृष्णचंद्र। दहूँ मग चा = दोनों मार्गों का। वरण पती० = मानों कागजों (पत्रों) के ऊपर श्रीकार हो जैसे जिसके अंग बने हैं।

४२—उभै वरग = दोनों समूहों (हिंदू और मुसलमानों) के। पारीख = परीक्षा। सुरा = देवताओं के। असुरा = मुसलमानों के।

४३—पेखवा = देखने को। दूजौ गजपत्ती = दूसरा महाराजा गजसिंह। साह = बादशाह। ईखियौ = देखा। लिखियौ = समझा। बिचाळै = बीच में। किया० = अपनी कांति से सबको दीपक के समान कर दिया। नागेंदर = (नागेंद्र)

सनमान प्रथम मिळतां समौ और गिणै कुण अप्पियो।
असपती गात परखे अभौ, सब गुजरात समप्पियौ ।।४३।।
सुवन सौन सादूळ, झूळ वनचरां विचाळै
जिसौ चंद जग वंद, बीज रख वृंद समाळै ।
वाज नंद बळबंड, झुंड लावां आभासै
कनां बीच बादळां, कळा सूरज परकासै ।
असपति निरख अचरज्जियौ, रूप परख कुळ राह मैं
आदीत जोत प्रतपै अभौ, दिपै एम दरगाह मैं ।।४४।।

दुहा

धर पट्टै गुज्जर धरा, प्रसन करै पतसाह ।
यों डेरां आयौ अभौ, साराह्यौ बेराह ।।४५।।
दूत सताबी दौड़िया, लियां बधाई हाथ ।
सुणियौ सुर वंदै जिसौ, मुरधर हंदै नाथ ।।४६।।

सर्पराज । मिळतां समौ = मिलते ही । और० = दूसरे के दिए सन्मान को कौन गिने (माने) । असपती = बादशाह । गात = (गात्र) शरीर को । समप्पियौ = दिया ।

४४—सुवन = पुत्र । सौन सादूळ = केसरीसिंह । झूळ = समूह । वनचरां = वनपशुओं के । बीज = द्वितीया का । रख वृंद = (ऋक्ष) नक्षत्र-समूह के । समाळै = माला में, बीच में । बाज नंद = बाज पक्षी का पुत्र । बळबंड = जोरावर । लावां = चिड़ियों के । आभासै = शोभा देता है । कनां = किंवा, मानों । कुळ राह मै = कुल के मार्ग में । आदीत = (आदित्य) सूर्य ।

४५—धर = रखकर । पट्टै = अधिकार में । साराह्यौ = प्रशंसा की । बेराह = दोनों मार्गवाले । (हिंदू मुसलमानों ने) ।

४६—सुर वंदै जिसौ = देवता प्रणाम करें जैसा, देवता का बंदा हो जैसा। मुरधर हंदै = मारवाड़ के

कुसळ थयौ नवकोट मैं, फिर आयौ गुजरात।
ऊबंधां सामंद ज्यों, छिलै कमंधां छात ॥४७॥
जस वाधै सारी धरा, जग लाधै जय वार।
आज उजागर वंस मैं, श्री महाराज कँवार ॥४८॥
बाजा दरगह वाजिया, अरि लाजिया प्रचंड।
उर भायौ नृप चै अजौ, ल्यायौ गुज्जर खंड ॥४९॥
अमल करण अहमंदपुर, अजै परख उमराव।
तेड़ायौ सनमान दे, सकतौ दान सुजाव ॥५०॥

छप्पय

सकत सेर मन मेर, वेर दुब्भर भर झल्लण
भुज आजांन प्रमाण, पांण असहां खग पल्लण।
सांम कांम समरत्थ, हत्थ दन वत्थ सवाई
अरि समत्थ गंजवा, पत्थ जैसौ वरदाई।

---

४७ – कुसळ = खुशी, आनंद। ऊबंधां = (उद्‌बंध) मर्यादा-रहित, लहराते हुए। सामंद = समुद्र। छिलै = बढ़ता है। कमंधां छात = राठौड़ों का छत्र (म० अजीतसिंह)।

४८—वाधै = बढ़ा। जय वार = जीत का समय। उजागर = प्रसिद्ध।

४९—चै = के। खंड = प्रदेश।

५०—अमल करण = अधिकार करने के लिये। परख = परीक्षा करके। तेड़ायौ = बुलाया। सकतौ = सकतसिंह। दान सुजाव = दानसिंह के पुत्र को।

५१—सकत सेर = सकतसिंह। मन मेर = मन का मेरु पर्वत के समान ऊँचा। वेर = बेला, समय। दुब्भर० = अति भारी भार को उठाने के लिये। आजांन = घुटने तक लंबे। पाण = हाथ, बल। असहां = शत्रुओं के। खग पल्लण = तलवार को रोकने के लिये। हत्थ० = हाथ दान देने और लड़ने में अन्य की अपेक्षा सवाया। गंजवा = मारने को।

परखियौ अजै जोधांण पत, हरि जिण रूप जिहांन रा
वस करण सतर कीधौ विदा, सकतौ आईदान रौ ॥५१॥

दुहा

विजैराज खेतल्ल रौ, भंडारी अणभंग।
विदा हुवौ गुजरात सिर, सकज दळां कर संग।५२॥
अजन विराजै जोधपुर, दिन साजै कमधज्ज।
गूजर धर सोवै गया, सकतै आद सकज्ज॥५३॥
अजौ (भौ) दिली वर ऊधरै, राजै राज कँवार।
सारां छत्रबंधां सिरै, वणै कमंधां वार॥५४॥
यों नवकोटी उद्धरै, सुजस करै संसार।
धर प्रगट्यौ राखण धरम, अभौ परम अवतार॥५५॥
ऊपर बरस इकोतरै, वण आयौ बरसात।
मन राखै अभमाल रौ, दिन दिन दिल्ली छात॥५६॥
मास वळे आसोज मैं, आपण मौज अथाह।
कँवर सगाह बुलावियौ, फरक साह पतसाह॥५७॥

पत्थ जैसौ=अर्जुन के समान। वरदाई=श्रेष्ठ। हरि=विष्णु भगवान्। सतर=शत्रुओं को। आईदान रौ=आईदान के पुत्र को।

५२—खेतल्ल रौ=खेतसी का पुत्र। सकज=समर्थ, सफलता करनेवाला।

५३—साजै=अच्छे। सकज=सफलता करनेवाले।

५४—दिली वर=दिल्ली के मालिक के पास। ऊधरै=ऊँचा। सारां= समस्त। छत्रबंधां=राजाओं के। सिरै=अग्रस्थान पर, श्रेष्ठ। वार=समय।

५५—धर=पृथ्वी पर।

५६—इकोतरै=वि० सं० १७७१। छात=छत्र।

५७—वळे=फिर। आपण=देने के लिये। मौज=आनंद। अथाह= अपार। सगाह=गर्वसहित।

छप्पय

रतन गज्ज सिरताज, सरब गजराज सिरोमण
पंचहजारी प्रगट, दियौ मनसप्प दरस्सण।
साहब नौबत सुद्रब, वसन जरकस्स जवाहर
रतन जड़त सिरपेच, माल मुगताहळ सुंदर।
पूजियौ एम जवनां पती, कमँध पेख चढती कळा
अभसाह वधै दिन दिन अधिक, इळा भणै गुण ऊजळा ॥५८॥

साह दरग्गह सैद, जिकां दुय राह वखांणै
फरकसाह थप्पियौ, बाहु बळ नाह ठिकांणै।
सरस प्रीत अभसाह, सु तो दिन दिन सरसावै
हसन खान अबदुल्ल, दरस आवै पधरावै।
तप तेज परख हिंदू तुरक, सदा हरक मन सज्जणां
कोमळ किसोर तौ ही कमँध. दुति कठोर उर दुज्जणां ॥५९॥

दुहा

एक वरस रहियौ अभौ, दिल्ली साह दुवार।
घटै अमंगळ मारुवां, सोभ वधै संसार ॥६०॥

५८—रतन = सबमें श्रेष्ठ रतन नाम का हाथी। सुद्रब = अच्छा द्रव्य। माल मुगताहळ = मोतियों की माला। इळा = पृथ्वी।

५९—सैद = सैयद। जिकां = जिनको। दुय राह = हिंदू और मुसलमान। वखाणै = प्रशंसा करते हैं। नाह = (नाथ) मालिक। सरसावै = अधिक शोभा देता है। दरस आवै = मिलने को आते हैं। पधरावै = (महाराजकुमार को) ले जाते हैं। हरक = हर्ष, आनंद। दुति = (द्युति) कांति, तेज। दुज्जणां = (दुर्जनों) शत्रुओं के लिये।

६०—दुवार = (द्वार) दरवाजे में, पास। मारुवां = मारवाड़वालों का।

कँवर पिता दरसण करण, पेखी साह परीख ।
अप्पी सरम बिराह री, साह समप्पी सीख ॥६१॥
सीख करे पतसाह थी, अभौ हुवौ असवार ।
जेठ महीनै जोधपुर, आयौ राजकुँवार ॥६२॥
हथणापुर धू आवियौ, परम तणौ वरपाय ।
आयौ तिण छाजै अभौ, सब धर करे सहाय ॥६३॥
मिळे वधायौ मोतियां, महाराजा अजमाल ।
मारू भड़ दिन पाधरां, चालै वंकी चाल ॥६४॥
अभौ उजागर अरक ज्यों, जस इम करै जिहांन ।
डरै सको अगजीत सूं, हिंदु मुस्सलमांन ॥६५॥

इति श्री महाराज राजराजेश्वर श्री अभैसिंघजी रौ परम
जस राजरूपक मैं कँवरपणै दिल्ली पधारिया नै
नवकोटां री सहाय कीवी सतर सहँस
गुजरात पाई षड्विंश प्रकास ॥२६॥

६१—पेखी = देखी । परीख = इच्छा । बिराह री = दोनों मार्गों (हिंदू मुसलमानों) का ।

६३—हथणापुर = (हस्तिनापुर) दिल्ली । हस्तिनापुर दिल्ली से ६० कोस की दूरी पर है, जो कौरवों की राजधानी थी । दिल्ली का पुरातन नाम इंद्रप्रस्थ है, जो पांडवों की राजधानी हुई । इसके खडहर गगा के तट पर अब तक विद्यमान हैं । कवि ने दिल्ली को राजधानी होने से हस्तिनापुर लिख दिया है । धू = प्रथम । परम तणौ० = ईश्वर का वरदान पाकर । तिण = उस ।

६४—पाधरां = सीधे, अच्छे ।

६५—उजागर = प्रसिद्ध, प्रकाशमान । अरक ज्यों = सूर्य के जैसे । सको = सब ।

दुहा

आयौ बरस बहुत्तरौ, मन भायौ संसार।
गजनहरौ गुजरात नूं, अजन हुवौ असवार ॥ १ ॥
अजौ चढे दळ ऊधरै, बळ नवकोट दुबाह।
हाथ सरम मुरधर जिकौ, साथ कँवर अभसाह ॥ २ ॥
जाळंधर डेरां थकां, बीतौ भाद्रव मास।
फुरमाया टळिया नहो, मिळिया सही मेवास ॥ ३ ॥
नीबज सकतौ निहहुरै, दूजां हूँत लिगार।
पांण परक्खण देवड़ां, अजन हुवौ असवार ॥ ४ ॥
गांम वड्डवज आवियौ, श्री नवकोट नरंद।
हीण थयौ द्रवि देवडौ, ज्यौं रवि ऊगां चंद ॥ ५ ॥
पेसकसी सिर आदरै, बंधे कर परवांण।
पाय लगौ अगजीत रै, वीत धरे चहुवांण ॥ ६ ॥

१—बहुत्तरौ = वि० सं० १५७२। गजनहरौ = म० गजसिहजी का पौत्र।

२—ऊधरै = ऊँचे, बहुत। दुबाह = दोनों हाथों से तलवार चलानेवाला, वीर। जिकौ = जो।

३—जाळंधर = जालोर नगर, जो जोधपुर से दक्षिण में ८० मील दूर है। फुरमाया = आज्ञा किए हुए वचन। टळिया नही = अन्यथा नहीं हुए, वचे नहीं। सही = सब। मेवास = लुटेरे।

४—नीबज० = ग्राम का नाम है। उसका मालिक सकतसिह। निहहुरै = निर्भीक था। दूजा हूँत = दूसरों से। लिगार = कुछ, थोड़ा। पांण = बल।

५—हीण थयौ = बलरहित हो गया। द्रवि = नर्म होकर। देवड़ौ = चाहमान वंश की एक शाखा है।

६—पेसकसी = दंड। बंधे० = हाथ जोड़कर। वीत धरे = (वित्त) धन अर्पण करके।

कूच कियौ मग पाधरै, वांकां पहां नमाय।
पालणपुर पेरीजखां, साम्हौ मिळियौ आय ॥ ७ ॥
रांण पँचायण ऊपरा, राजा आरँभ राम।
आरुहियौ अणकळ अजौ, दळ बळ साज दुगाम ॥ ८ ॥
पुर है थट्टां पीड़ियौ, उर भीड़ियौ उचाट।
रांण ढिलौ कर वंक पण, लीधी सूधी वाट ॥ ९ ॥
पय लागौ भूपाळ रै, रांणै पांण पळेट।
कीधा नजर पचास अस, लाख रुपइया भेट ॥१०॥
कीधौ विदा थिराद सूं, पुर पूगौ मछरीक।
कमध खगे चाकर किया, ठाकुर जिता सरीक ॥११॥
अजन कमौई ऊपरा, असहां जांण उतन्न।
पुर होळी जिम घेरियौ, कोळी खीम करन्न ॥१२॥

७—पाधरै = सीधे। पहां = प्रभुओं को।

८—राण० = राणा पचायण पर। आरँभ राम = श्रीरामचंद्रजी के समान युद्ध करने के लिये। आरुहियौ = चढ़ाई की। अणकळ = जिसके बल का पार नहीं। साज = सजकर। दुगाम = दुर्गम।

९—है थट्टां = घोड़ों के समूह से। उर = छाती से। भीड़ियौ = दबाया। उचाट = बहुत जोर से। ढिलौ कर = ढीला करके। सूधी = सीधी। वाट = मार्ग।

१०—पय लागौ = पैरों में आ पड़ा। पांण पळेट = हाथ बाँधकर। अस = घोड़े।

११—थिराद = मारवाड़ से पश्चिम में थिराद नाम का प्रांत है। मछरीक = चौहान। खगे = तलवार से। जिता = जितने।

१२—कमौई = थिराद के निकट एक छोटा राज्य; जिसका स्वामी कोली जाति का खीमकर्ण था। असहां = शत्रुओं का। उतन्न = जन्मभूमि।

नेस वचाया कोळियां, पेस धरे नृप पाय ।
पाटण अजन पधारिया, अरि पागड़े लगाय ॥१३॥
जेता वंका राह मैं, करि पद्धर मेवांस ।
साहीवाग पधारियौ, मारू फागुण मास ॥१४॥
आयौ भंडारी विजौ, चांपावत सकतेस ।
पाय लगा भूपाळ रै, वस कर गुज्जर देस ॥१५॥
जेठ महीनै कोट पुर, दाखल थयौ नरेस ।
किया विदा मारू कटक, अटक निवारण देस ॥१६॥
खेम समोभ्रम थांनसी, भंडारी विजराज ।
सकतसिंघ चांपाहरौ, कमधज मुदै सकाज ॥१७॥
राजपीपळै आद रिम, करवा सर धर काज ।
सहम दियण मेवासियां, मुहम हुकम महाराज ॥१८॥

इति श्री अजीतसिघजी गुजरात पधारिया धरती सहर वसी
हुवा सो विगत कही सर्गावंश प्रकास ॥२७॥

१३—नेस = (निवास) निवासस्थान । पागड़े लगाय = पैरों पटककर ।

१४—जेता = जितने । पद्धर = सीधे, सरल । मेवांस = लुटेरो के निवासस्थान । साहीवाग = अहमदाबाद के निकट शाहीबाग नामक स्थान है ।

१५—विजौ = विजयराज । सकतेस = सकतसिंह ।

१६ — अटक = रोक ।

१७—खेम = खीमसी भंडारी । समोभ्रम = सदृश । मुदै = मुख्य, प्रधान ।

१८—राजपीपळै = राजपीपला नामक स्थान । रिम = शत्रु । करवा = करने को । सर = वशवर्ती । सहम = दंड, सजा । मेवासिया = लुटेरों को । मुहम = युद्धयात्रा ।

छंद पद्धरी

राखिया देस भड़ महाराज
कमधजां अजन नागोर काज ।
नरनाह भीम जोधै नरंद
नृप गढां काज रिणछोड़ नंद ॥ १ ॥
ऊदावत अमरौ पथ अगोट
कुसळावत आगळ नवे कोट ।
चांपावत हरियँद किसन चाय
सुत जसवँत रिण वाधै सवाय ॥ २ ॥
सुत भीम भीम भुजबळ सप्रांण
भाटी दळ हरवल इंद्रभांण ।
सँग हरी निडर मधकर सुजाव
रिण पण हजार दोजग दुराव ॥ ३ ॥
कूंपावत कान्ह अजांन क्रग्ग
सुत एम मांम नृप छळ सुमग्ग ।
करमैव वंस अजबौ कमंध
कुळ लाज तणौ धुर धरण कंध ॥ ४ ॥

१—कमधजा = राठौड़ों को । काज = लिये, निमित्त ।

२—अमरौ = अमरसिंह (नीवाज ठाकुर) । अगोट = नहीं चूकनेवाला । कुसळावत = कुशलसिंह का पुत्र । आगळ = कपाट बंद करने का लोहे का डंडा, रोकनेवाला । चाय = युद्ध की इच्छा । वाधै = बढ़ता है ।

३—सप्रांण = बलवान् । मधकर = माधवसिंह । सुजाव = पुत्र । दोजग = नरक, दुःख । दुराव = मिटानेवाला, छिपानेवाला ।

४—अजान क्रग्ग = (आजानुकर) आजानुबाहु, घुटने तक जिसके हाथ लंबे हों वह पुरुष । नृप छळ = राजा के वास्ते । करमैव = करमसोत राठौड़ । अजबौ = अजबसिंह ।

मुहतौ बळ लीधां दळ समीप
जोधांण हूँत जीवण सजीप।
सुत चंद साथ साहब सकाज
कायथां रूप अगजीत काज ॥ ५ ॥
सक दळां भँडारी पोमसीह
मेड़ता हूँत चढियौ अबीह।
एतला आद दळ मिळ अथाह
बुधि अडर करण सिधि महाबाह ॥ ६ ॥
कमधजे वींट नागोर कोट
चळ दळ अरि कीधा एक चोट।
इँद्रसिंघ देख दळ बळ अपार
दे कोट जिण लियौ धरम द्वार ॥ ७ ॥

दुहा

सतरै सँमत त्रिहोतरै, उज्जळ त्रीज प्रकास ॥
तजियौ इंदै नागपुर, सांवण हंदै मास ॥ ८ ॥
वाकौ सुण राजा अजै, लख साजा दिन काज।
बाजा द्वार गरज्जिया, सत्र धूजिया सकाज ॥ ९ ॥

इति श्री राजरूपक मैं नागोर री फतै पाई सुणि गुजरात मैं श्री जी उच्छव कीयौ सो विगत कही अष्टाविंश प्रकास ॥२८॥

५—जीवण = जीवणदास मुहता। सजीप = जीतनेवाला।

६—सक = (शक्त) समर्थ, युद्ध। अबीह = निर्भय। एतला = इतने। अथाह = असंख्य।

७—वींट = घेरकर, वेष्टित करके। इँद्रसिंघ = नागोर के राव राठौड़ अमरसिंह का पोता। कोट = गढ़, किला। लियौ धरम द्वार = शरण में आ गया।

८—उजळ = शुक्लपक्ष। इंदै = राव इंद्रसिंह राठौड़। नागपुर = नागोर शहर। सांवण हंदै = श्रावण के।

९—वाकौ = वृत्तांत, वार्ता। साजा = अच्छे, शुभ। सत्र = शत्रु। सकाज = समर्थ।

दुहा

मारण अरजणसिंघ नूं, भूप निवारण भ्रम्म ।
भाटी नै चांपावतां, सिर धारियौ हुकम्म ॥ १ ॥
खग वाहौ रिण खेतसी, भाटी जीवणदास ।
दुजड़ा हथ हरदास ज्यों, साथे हुवा सहास ॥ २ ॥
मारहथा त्रेवे मुदै, सुत जसराज सकज्ज ।
हरियँद किसनौ केहरी, कुळ चांपा कमधज्ज ॥ ३ ॥
हरी मुहर हरियँद रा, सूजौ साहस माल ।
रासौ सांवळदास रौ, द्रढ व्रत सांमि दुभाल ॥ ४ ॥
मुदै हरी जसराज रौ, चांपै चाचर सूर ।
जोगड़रां जैसाह री, नरां सवायौ नूर ॥ ५ ॥
अरि पर देसां साझणौ, अंतर पणौ अपार ।
विण चांपां विण भाटियां, भुज्ज कुण झेलै भार ॥ ६ ॥

१—अरजणसिघ = जैतावत अर्जुनसिह, जो मोहकमसिंह को अजीतसिंह-जी पर जालोर चढ़ाकर ले गया था । भ्रम्म = भ्रम, संदेह, शक ।

२—खग वाहौ = तलवार चलानेवाला । दुजड़ा = तलवार । सहास = हँसकर, साहसी ।

३—त्रेवै = तीनों । मुदै = मुख्य । कमधज = राठौड़ ।

४—मुहर = आगे । माल = मालमसिंह । द्रढ = दृढ़ । दुभाल = वीर, बहादुर ।

५—चाचर = मस्तक । जोगड़रां = जोगीदास के पुत्र । नूर = काति ।

६—साझणौ = वश करनेवाला, जीतनेवाला । अंतर पणौ = घनिष्ठ संबंध । विण = विना । झेलै = धारण करे ।

गौ अरजण लोपे गढां, थापे हिंद समंद ।
मारू मूठि समंत्र ज्यों, पूठ लगौ हरियंद ॥ ७ ॥
अरजण दळथंभण गया, पांचां देसां पार ।
आपड़िया अगजीत रा, भड़ गिर धरा विहार ॥ ८ ॥
हितू सत्रां भूपाळ रां, अरजण जैतावत्त ।
दळथंभण भेळौ कियौ, गौ चूरे परवत्त ॥ ९ ॥
देसा अंतर डग सहर, सूरज साख पचार ।
हर लग्गी पूगी घड़ी, वग्गी हक्क निहार ॥१०॥
एक घड़ी धारां झड़ी, रीठ पड़ो रिण वार ।
दोनूं दुयण अजीत रा, समहर थया संघार ॥११॥
ज्यों सादूळ करग्ग बळ, चूरै गजां कपाळ ।
अरजण दळथंभण उभै, लड़ मारिया लँकाळ ॥१२॥

७ - गौ = चला गया । लोपे गढ़ां = किलों को छोड़कर । थापे० = हिंदुस्तान को समुद्र समझकर अर्थात् अपार समझकर ।

८—दळथंभण = दलथंभण अजीतसिंहजी का पुत्र था । वह मर गया था, परतु उक्त अर्जुनसिंह ने दलथंभण के नाम से नया बखेड़ा उठाया था कि दलथंभण जीवित है, यह आधे राज्य का हकदार है । आपड़िया = पकड़े । गिर = पहाड़ । विहार = पटना प्रांत का देश ।

९ — हितू = हितेच्छु । सत्रां = शत्रुओ के । चूरे = पार करके ।

१० — देसा अंतर = देशांतर, परदेश में । सूरज० = सूर्य को साक्षी करके । हर लग्गी = पता लगाया । वग्गी० = उन्हें देखकर हल्ला हुआ ।

११ —धारा झड़ी = तलवार चली । रीठ = महाघोर संग्राम । दुयण = शत्रु । समहर = (समर) युद्ध । संघार = नाश ।

१२ —करग्ग = हाथ । लँकाळ = वीर ।

अरि साझे आया कुसळ, मळ अन देसां मांण ।
भाट्यां ने चापा तणा, वधिया घणां वखांण ॥१३॥

छंद बेअक्खरी

अजमल तणौ नागपुर आयौ
इंद्र सिंघ तज कोट सिधायौ ।
रीस अजीत न क्यों विसराई
अरि निरमूळ करण मन आई ॥१४॥

सूरां सीम दुजो सबळावत
राजा घंसि लगायौ रावत ।
बंधव जोड़ फतौ बांहाळौ
साथे मुहकमसिंघ सचाळौ ॥१५॥

सूजौ कँवर संग खळ साझण
तिण जांमळ रूपसी नृभै तण ।
सझिया जोधा सार सबाहे
महवेचौ वैरौ जां माहे ॥१६॥

१३—साझे आया=मारकर आए । मळ=मलकर, नष्ट करके । अन देसां=दूसरे देशों के । मांण=मान, अभिमान को । वखांण=तारीफ ।

१४—तणौ=(तनय) पुत्र । नागपुर=नागोर शहर । सिधायौ=चला गया । रीस=क्रोध । बिसराई=विस्मृत की ।

१५—दुजो=दुर्जनसिंह । घसि लगायौ=पीछे लगाया । जोड़=सदृश । बांहाळौ=भुजबलवाला । सचाळौ=युद्धवीर ।

१६—खळ साझण=शत्रु को मारने के लिये । जांमळ=शामिल । नृभै=निर्भय । तण=(तनु) शरीर । अथवा निर्भयराम का पुत्र । सार=तलवार । सबाहे=धारण किये । मेहवेचौ=राठोड़ों की एक शाखा ।

राव तणै सिर राजा रूठै
पण धर दूजौ ध्यौ अरि पूठै।
जोगणपुर इंदौ पथ जावै
अजमल हुकम दुजौ घंस आवै ॥१७॥
प्रिसणां साथ कासळी पड़ियौ
आंगम लखां दुऔ आखड़ियौ।
निस गळती भूँबियौ नत्रीठौ
रूक तणौ मच आका रीठौ ॥१८॥
सबळ दळां विच भूरि समाथै
मोहण तणै खिवैं खग माथै।
विढ़तां सूजै कँवर बकारे
मोहण खेत राखियौ मारे ॥१९॥
ढाहै घणां घणां विच ढूकै
राव देखतां लियौ सुत रूकै।

१७—पूठै = पीठ पर। जोगणपुर = दिल्ली शहर। इदौ = इंद्रसिंह। दुजौ = दुर्जनसिंह। घंसि आवै = पीछे आता है।

१८—प्रिसणां = शत्रुओं के। कासळी = ग्राम का नाम। पड़ियौ = मरकर गिरा। आगम = आक्रमण। दुऔ = दूसरा। आखड़ियौ = स्खलित हुआ। निस गळती = पिछली रात्रि में। भूँबियौ = लड़ने को जा भिड़ा। नत्रीठौ = धीर। रूक = तलवार। आका रीठौ = महाघोर शस्त्रों का प्रहार।

१९—भूरि = बहुत। समाथै = समर्थ। मोहण तणै० = इंद्रसिंह का पुत्र मोहनसिंह उसके सिर पर तलवार चलती है। विढ़तां = लड़ते। खेत० = मारकर रणांगण में रख दिया।

२०—ढाहै घणां = बहुतों को गिरा दिया। घणां० = बहुतों के बीच

सत्र अतेज कर तेज सवाया
अजन तणा भड़ जीपे आया ॥२०॥

दुहा

अरि जण मारे आवियौ, दक्खण हरी अभंग।
दिस पूरब मोहण दुजौ, जीपे आयौ जंग ॥२१॥
दहूँ प्रवाड़ा एक दिन, गौ वाकौ गुजरात।
बिहूँ हजूर बोलावियौ, जोधां हंदै छात ॥२२॥

इति श्री दळथंभण अरजनसिंघ नै कँवर मोहणसिंघ नै मारिया
श्री अजीतसिंघजी प्रसन हुवा एकोनत्रिंश प्रकास ॥२६॥

में जा पहुँचे। राय० = इंद्रसिह के देखते उसके पुत्र को तलवारों से ले लिया अर्थात् मार डाला। जीपे आया = जीतकर आए।

२१—हरी = हरिसिंह।

२२—दहूँ = दोनों। प्रवाड़ा = युद्ध। गौ = गया। वाकौ = वार्ता, वृत्तांत। बिहूँ = दोनों। जोधा हंदै० = राव जोधाजी के वंशजो के छत्र।

दुहा

वहतां वरस तिहौतरौ, धर गुजरात नरिंद ।
दळ बंधे च्यारूं दिसा, दुयणां छूटै दुंद ॥ १ ॥
अमल हुवौ सारी इळा, सत्र निरकळा सकत्त ।
कियौ मतौ दरसण करण, परसण द्वारामत्त ॥ २ ॥
जात करण जगदीस री, ईस नवै परकार ।
चैत मास पख चांदणै, अजन थयौ असवार ॥ ३ ॥
मग वहतां मुरधर पती, हल चलियौ हलवद्द ।
जगपुर धर झालौ जसौ, मेल्ह गयौ निज मद्द ॥ ४ ॥
सबळ दळां कर थांनसी, आयौ फेर अवींत ।
फळ पायौ झालां धणी, थयौ विहाला चींत ॥ ५ ॥
खहर गमे व्रत दुज्जड़ां, सहर करे दहवाट ।
आया थांणा अजन रा, लूट विडांणा राट ॥ ६ ॥

१—दुयणां = शत्रुओं के । दुंद = (द्वंद्व) युद्ध ।

२—अमल = अधिकार । निरकळा = कलाहीन । सकत्त = शक्ति । मतौ = विचार । परसण = चरण-स्पर्श करने का । द्वारामत्त = द्वारका ।

३—जात = यात्रा । ईस = मालिक । नवै परकार = नवधा भक्ति । पख चादणै = शुक्ल पक्ष में ।

४—मग = मार्ग । हल चलियौ = विचलित हुआ । हलवद्द = एक शहर का नाम । झालौ = झाला नामक क्षत्रिय वंश का । जसौ = जसवंतसिंह ।

५—थांनसी = खींवसी भंडारी का पुत्र । चींत = चित्त में ।

६—खहर गमे = नाश करके । दुज्जड़ां = तलवारों से । दहवाट = (दशवाट) विध्वस्त । विडांणा = शत्रुओं के । राट = राज्य को ।

साथ भँडारी थांनसी, सकतै आद कमंध ।
आया मार हळोदपुर, पय लाया छत्रबंध ॥ ७ ॥
हळवद भेळे हालियौ, मेळे दळ अजमाल ।
तब डर जांम तमायची, हुइगौ नगर विहाल ॥ ८ ॥
नवौ नगर त्रप घेरियौ, जांम न कीधौ जंग ।
कर बांधे आयौ पगे, लायौ पेस तुरंग ॥ ९ ॥
तीन लक्ष द्रब रोकड़ा, चंचळ उच्च पचीस ।
निपट विनै धारी निजर, नृपति निवारी रीस ॥१०॥

छंद हणूंफाल

मिळि हरख जेसट मास, पख प्रथम धरम प्रकास ।
पुर सपत रूप प्रवीत, मुख धाम धारा मीत ॥११॥
महाराज दरस समंद, क्रित गोमती सुख कंद ।
वध चाव भाव विधान, सुभ ध्यान दान सिनान ॥१२॥
गोमती जळ करि गात, दिव चत्र वरण अवदात ।
गरजंत सागर गोड़, क्रित अगम उरमी क्रोड़ ॥१३॥

७—पय लाया = पैरों में पटके । छत्रबंध = राजाओं को ।

८—भेळे = जबर्दस्ती घुसकर अधिकार करके । मेळे = एकत्र करके । तमायचो = जामनगर के राजा का नाम ।

९—नगर = जामनगर । जाम = जाड़ेचों में एक पदवी है । पेस = नजर, भेंट ।

१०—चंचळ = घोड़े । निपट = अत्यंत । विनै = विनय । रीस = क्रोध ।

११—जेसट = ज्येष्ठ मास । पुर सपत = सप्त पुरी (अयोध्या, मथुरा, माया (हरद्वार), काशी, कांची, उज्जैन और द्वारका) । प्रवीत = पवित्र । मुख = मुख्य । मीत = मात्र ।

१२—क्रित = किया । कंद = कारण, मूल । वध = विधि । चाव = इच्छा, उत्साह । भाव = भक्ति ।

१३—गात = (गात्र) शरीर । चत्र वरण = चारों वर्ण । अवदात = उज्ज्वल । गोड़ = समीप में । उरमी = (ऊर्मि) लहरें । क्रोड़ = करोड़ ।

लहरीस सीस हिलोळ, के मच्छ कच्छ किलोळ।
क्रित अमित अंबु प्रकास, इळ जांण मिळ आकास ॥१४॥
जग पेख एक अजंप, केइ निरख चख मुख कंप।
सु ज चलत पुब्ब समाज, भय तेण पातक भाज ॥१५॥
मिट आग तप मिट जाय, साकंप सीत सवाय।
द्रढ पोत खेवट दांम, तट धरी गुदरी तांम ॥१६॥

दुहा

गजनहरै मझ गोमती, आपे दान अपार।
हुवा अमंगण पाय धन, दुज दिन मंगणहार ॥१७॥
इक धन भोजन वसन दन, सोवन रतन अपार।
आद मतंग तुरंग धर, क्रित खोड़स परकार ॥१८॥
करि विधान हरि दरस कज, राजा हुवौ तयार।
आयां तट सामंद रै, दीठौ अघट दुवार ॥१९॥

१४—हिलोळ = जल की चंचलता, जल का धक्का। किलोळ = क्रीड़ा। अंबु = जल।

१५—पेख = देखना। अजंप = जो कहने में न आवे। चख = (चक्षु) नेत्र। तेण = उससे।

१६—साकंप = धूजने के साथ। सीत = ठंढ। द्रढ = (दृढ़) मजबूत। पोत = नौका, नाव। तांम = वहाँ।

१७—गजनहरै = गजसिंह का पौत्र। आपे = दिए। अमंगण = याचना-रहित। दिन = (दीन) गरीब। मंगणहार = माँगनेवाले, याचक।

१८—वसन = वस्त्र। दन = दान। सोवन = सुवर्ण। मतंग = हाथी। खोड़स परकार = षोडश महादान।

१९—अघट = अद्भुत।

ओखा मंडळ विमळ थळ, जळ आव्रत जगवंद ।
धुज उज्जळ देवळ अमळ, निरख नमे नरयंद ॥२०॥
गंगा जमना सरसती, मति गोमती प्रमांण ।
राजरमणि महाराज रै, साथे प्रांण समांण ॥२१॥
महल खवास निवास मन, क्रिसन दरस्सण काज ।
आद अभै अवतार नर, संग कँवर महाराज ॥२२॥
सुपह अरोहे नाव सिर, चाव दरस्सण कज्ज ।
पाव परस्सण श्री परम, सँग उमराव सकज्ज ॥२३॥
पोत सकत ची गोद पर, पुहवि मोद धर पार ।
निरख धाम धर बिंट नर, करै हरख तन वार ॥२४॥
पंडे उच्छव धार उर, विध सम समै विचार ।
पधरायौ नवकोट पत, दरसण करण दुवार ॥२५॥

२०—ओखा मंडळ = द्वारका प्रदेश का नाम । आव्रत = (आवृत) घिरा हुआ । धुज = ध्वजा । देवळ = (देवालय) मंदिर । नरयंद = (नरेंद्र) राजा ।

२१—प्राण समांण = प्राणों के समान प्यारी ।

२२—महल = (महिला) रानियाँ । खवास = उपस्त्री । निवास मन = मन में बसनेवाली । आद अभै = महाराजकुमार अभयसिंहजी आदि ।

२३—सुपह = (प्रभु) महाराजा । अरोहे = चढ़े । चाव = उत्साह, अत्यंत अभिलाषा । श्री परम = श्री परमेश्वर के चरण छूने को ।

२४—पोत = नाव शक्ति की गोद के समान है । पुहवि० = और पार उतरने पर पृथ्वी आनंद देनेवाली है । बिट = उपद्वीप । तन वार = शरीर को वारकर अर्थात् बलैया लेकर ।

२५—पंडे = पुजारी, तीर्थगुरु । पधरायौ = प्रवेश कराया । नवकोट पत = नवकोटी मारवाड़ का राजा ।

पेख अजै रिणछोड़ पद, लियौ जनम क्रम लाभ ।
छवि निरखे रिणछोड़ री, अरक कोड़ सम आभ ॥२६॥

छंद भुजंगी

विराजै नगां ओप सूं रूप वीठौ
दळां नाथ श्रीनाथ रौ रूप दीठौ ।
वणै सामळौ गात झीणै वसन्ने
तिसी भूखणे जोत मोती रतन्ने ॥२७॥
सरी नौसरे हार मोती सँजोया
पड़े श्रेणता हीणता सुक्र पोया ।
परीखै सरीकंठ मैं हीर पूरौ
सुभै सूर आकास जांणै सनूरौ ॥२८॥
वणै चारु आभास वदनारविंदं
उरे ऊपजै वेख रेखा अणंदं ।
सदा हेत संतां इसा नेत सोहै
महा मैण रूपी तिकां नैण मोहै ॥२९॥

२६—क्रम=(कर्म) अपने कृत्य । अरक=(अर्क) सूर्य । आभ = काति ।

२७—नगां० =रत्नों की कांति से वह स्वरूप वेष्टित है । दळांनाथ= राजा । श्रीनाथ रौ = लक्ष्मीपति का । सांमळौ = (श्यामल) श्यामवर्ण । झीणे वसन्ने = बारीक वस्त्र । तिसी = वैसी ।

२८—सरी=सर, लड़े । सँजोया = सजाए । पडै० =शुक्र का तारा एक है, इसलिये उसकी पंक्ति नहीं बन सकती । और नौसरे हार में मोतियों की पंक्ति है, इसलिये वे उक्त हार में मानों पंक्ति-विशिष्ट शुक्र के तारे पिरोए गए हैं । परीखै=देखा जाता है । सरीकंठ मैं = श्रीकंठ में । हीर = हीरा । सनूरौ = ज्योतिसहित ।

२९—चारु = सुंदर । आभास=काति, लावण्य । वेख=(वीक्ष्य) देखकर । नेत = (नेत्र) नयन । मैण=(मदन) कामदेव ।

रमाकंत ची वंक बेभ्रूंह रंजी
लखे कांम सुर सांम ची चाप लज्जी।
त्रिहूँ लोक चा ग्वाळ रै भाळ टीकौ
नरां भूप सोभा लखै रूप नीकौ ॥३०॥
छिपै मेघ सोभा इसौ भाळ छाजै
रवी पंत द्वै कुंडळे क्रांति राजै।
भजै मुकुट सोभा सभा कूंण भाखै
रहै मांन तै ध्यान वैकुंठ राखै ॥३१॥
कपोळे मिळे रूप ओपै अलक्कां
प्रभू पेखतां मेख भूलै पलक्कां।
रसा भारहारी भुजा च्यार राजै
सरोजादि कंबू गदा चक्र साजै ॥३२॥
रमाराव रा वंदिया पाव राजा
वजे चाय दूँणै घणै घाय वाजा।
सुरे झल्लरी कंबु सा त्रंब सोहै
वजे झंझ भेरी नफेरी विमोहै ॥३३॥

३०—रमाकंत ची=विष्णु की। रंजी=रंजन करनेवाली। लखे=देखकर। सुर साम ची=इंद्र की। चाप=कमान, धनुष। नीकौ=अच्छा, सुंदर।

३१—भाळ=ललाट। रवी०=कुंडलों की कांति ऐसी शोभा देती है कि मानों दो सूर्यों की पंक्ति शोभित हो रही है। कूंण=कौन।

३२—पेखतां=देखते। मेख=(निमेष) पलक का गिरना। रसा भारहारी=पृथ्वी का भार उतारनेवाले। सरोजादि=कमल आदि। कंबू=शंख।

३३—रमाराव=लक्ष्मीनाथ के। चाय दूँणै=दुगुने उत्साह से। घणै०=बाजे जोर के डंके से बजते हैं। सुरे=स्वरवाला वाद्य। कंबु=शख। त्रंब=वाद्य, बाजा। भेरी=एक प्रकार का चमड़े से मढ़ा वाद्य। नफेरी=एक प्रकार का वाद्य।

तिसा वैण श्रीमंडलं जत्र तालं
सहंनाय वंसी अनै सीसढालं।
सुधा कुंडली खंजरी चंग सोहै
वजे चंग मिरद्दंग सोभा विमोहै ॥३४॥
सुराचार घंटारवं तार साजै
वणै नौबती सोभती रीत वाजै।
विराजै मुखाघाय तंती वितंती
वदै आरती राग वाणी वणांती ॥३५॥
भ्रमै चार दीपारती जोत भासै
प्रभा सूर वारंत सोभा प्रकासै।
वळे उच्छळे फेरियौ संख पांणी
पुळै पाप जे आप सूं हूँत प्राणी ॥३६॥

छप्पय

कियौ हरख कमधज्ज निरख नायक ब्रहमंडां
भेट ग्राम गज भिड़ज, पूज प्रम धांम घमंडां।

३४—वैण = वीणा। श्रीमंडल = एक प्रकार का वाद्य। सहंनाय = शहनाई। सीसढाल = एक प्रकार का वाद्य। सुधा कुंडली खंजरी चंग = वाद्यविशेष। चंग = मोरचंग।

३५—सुराचार = देवता की रीति के अनुसार। घंटारवं = घंटा का शब्द। तार = तारवाले बाजे, सितार आदि। मुखाघाय = मुँह से बजनेवाले अलगोजा आदि। तंती—ताँतवाला वाद्य, सारंगी आदि। वितंती = बिना ताँत के वाद्य। आरती = आरती करते समय बोले जानेवाले स्तोत्र।

३६—चार = (चारु) सुंदर। वारंत = ठाकुर के सम्मुख भ्रमण कराते। पुळै = भाग जाते हैं, चले जाते हैं।

३७—नायक = मालिक, स्वामी। भिड़ज = घोड़े। प्रम = (परम)

चमर धार परवार, करी भ्रामर परिक्रम्मा
भुज लंबत डंडोत, वयण व्रत पेख ब्रहम्मा ।
ऊपनौ चाव जण जण उवर, मापै कुण उदमाद रौ
सुख लियौ नृपत कँवरां सहित, चरणाम्रत परसाद रौ ।।३७।।
भड़ां प्रीत भारियौ, बिंट हरि क्रीत सचेळौ
गण मुकतेसर गंग, मिळे फिर कातिक मेळौ ।
फिर भामरि दे सात, करे डंडोत किताई
एक रूप अनमेख, पेख धारै प्रसनाई ।
सुख धाम नाम परखै सकळ, हित सुदाम विश्राम हरि
नवकोट नाथ नवकोट दळ, किया निरम्मळ जात्र करि ।।३८।।

दुहा

श्री रिणछोड़ निहार नृप, त्रीकम जोड़ कल्याण ।
श्री राधा श्री रुकमणी, सतभामा जुत प्रांण ।।३९।।
उत्तम धाम दुवारिका, महिमा सुहित सँभारि ।
लियौ महा सुख एक पख, नृप परसियौ मुरारि ।।४०।।

उत्तम । भ्रामर = फेरी, परिक्रमा । भुज० = लंबे हाथ करके दंडवत् प्रणाम किया । वयण = वचन । ऊपनौ = उत्पन्न हुआ । चाव = उत्साह, प्रेम । जण० = हरेक के मन में । उदमाद रौ = आनंद को । परसाद = (प्रसाद) भगवान् के भोग लगा हुआ भोज्य पदार्थ ।

३८—भारियौ = भरा हुआ, युक्त, सहित । बिंट = उपद्वीप । सचेळौ = अधिक, उत्तम, सर्वोत्तम । मुकतेसर = मुक्तेश्वरगण । भामरि = प्रदक्षिणा । किताई = कितने ही । अनमेख = (अनिमिष) पलक गिराए बिना । प्रसनाई = प्रसन्नता । सुदाम = सुदामापुरी । विश्राम० = जहाँ हरि का विश्राम है । जात्र = यात्रा ।

३९—त्रीकम = (त्रिविक्रम) टीकमनी ठाकुर जी ।

ध्रू कँवार नृप मोरधुज, अंबरीक हरिचंद ।
पद सेवा परि पंडवां, की नवकोट नरिंद ॥४१॥
दोळा साठ हजार दळ, पत करतार परस्स ।
कूच कियौ सुभ जात्र करि, दीनानाथ दरस्स ॥४२॥

इति श्री महाराजा अजीतसिंघजी नै महाराज अभयसिंघजी
कँवर पदै साथे श्री द्वारका पधारिया सो विगत कही
त्रिंश प्रकास ।३०॥

४१—धू=ध्रुव, उत्तानपाद राजा का पुत्र । मोरधुज=मयूरध्वज राजा । परि=समान ।

४२—दोळा=चारों तरफ, घेरे हुए । दोळा० =इस यात्रा में महाराजा के साथ साठ हजार सेना थी ।

दुहा

केवी घर सैंलोट कर, कर नवकोट पवित्ति ।
आयौ जोधांणै अजौ, परसे द्वारामत्ति ॥ १ ॥
आयां वरस चहोतरै, सांवण सांवळ पक्ख ।
आयौ धर मारू अजौ, गुज्जर थांणा रक्ख ॥ २ ॥

चौसर

साहां सोच दिली सरसांणौ, मुगलां सैदां वाद मँडाणौ ।
वाचत वीचै ऊग विहांणौ, फुरमांणां ऊपर फुरमांणौ ॥ ३ ॥

दुहा

हसनअली दक्खण गयौ, अबदुल्लौ दरगाह ।
त्यां हूँता मन फेरियौ, दिन फिरिये पतसाह ॥ ४ ॥
अबदुल्ला आरत हियै, पीड़ांणौ सइयद्द ।
महाराजा अजमाल नूं, दाखै वेध दरद्द ॥ ५ ॥
मोनूं भाई अक्खियौ, ते महाराज अजीत ।
पीड़ घणी की दक्खियौ, आय वणो सो चीत ॥ ६ ॥

१—केवी = शत्रुओं के । सैंलोट = नष्ट, विध्वस । पवित्ति = पवित्र ।

२—सॉंवळ पक्ख = कृष्ण पक्ष ।

३—साहा = बादशाहों के । सरसाणौ = बढ़ा । वाद मँडाणौ = विरोध हुआ । ऊग विहांणौ = दिन निकलते ही, सूर्योदय होते ही । फुरमांण = (फरमान) आज्ञापत्र ।

४—दरगाहा = राजसभा । दिन फिरिये = उलटे दिन आने पर ।

५ आरत = (आर्ति) पीड़ा, दुःख । पीड़ांणौ = पीड़ित हुआ । दाखै = कहता है । वेध = वैर का ।

६– अक्खियौ = कहा था । पीड० = अत्यंत अधिक पीड़ा देखो ना महाराजा अजीतसिहजी को कहना । चीत = चिंता ।

कागद अबदुल्ला तणा, साह तणा फुरमांण ।
सुण महाराज विचारियौ, उर धारियौ पयांण ॥ ७ ॥
बेटी राव [ज मान री], लज्जा सीळ निवास ।
डोळो लीधां देवड़ो, आयौ नारणदास ॥ ८ ॥
उच्छव सूं परणे अजन, मिळ सुख सजन समाज ।
पुर दिल्ली पाधारतां, रायी कै महाराज ॥ ९ ॥

छंद बेअक्खरी

वरसाळौ इण पर वौळायौ,
जोर न को वरसात जणायौ ।
ऊठी सरद सीत रित आई,
सकळ दळे वणि सोंझ सझाई ॥१०॥
मेळे सगह दळां पह मोटां,
कीधौ कूच धणी नवकोटां ।

७—साह तणा = बादशाह के । फुरमाण = आज्ञापत्र । पयांण = प्रयाण, जाने का विचार किया ।

८—मान री = मानसिंह की । डोळो = बेटी के ब्याहने के लिये वर के घर पर बेटी को ले जाना । देवड़ो = चौहानों की एक शाखा जिसका राज्य सीरोही में है । सीरोही का राव देवड़ा नारायणदास अपनी बेटी को लेकर महाराजा अजीतसिंह को ब्याहने के लिये महाराजा के पास आया ।

९—परणे = पाणिग्रहण किया । अजन = अजीतसिंहजी । पाधारता = जाते । रायी कै = राई का बाग नामक स्थान में । यह स्थान जोधपुर शहर के पास ही है । यहाँ इस समय वर्तमान महाराजा उमेदसिंहजी का निवास है ।

१०—वरसाळौ = चातुर्मास्य । वोळायौ = समाप्त किया । वरसात = वृष्टि ने । जणायौ = दिखाया । सीत रित = शीतकाल । सोंझ = सामग्री ।

११—मेळे = जमा किए । सगह = गर्व सहित । पह = (प्रभु) मालिक

असं गज रथ दळ प्रबळ अफारे,
प्रथम सहर नागोर पधारे ॥११॥
सुत जसवँत तप तेज सवायौ,
अजमल पछै मंड़तै आयौ।
पोहकर प्राग समांण प्रभत्ती,
परसण कियौ मतौ छत्रपत्ती ॥१२॥
नरां नाथ वाजतां नगारां.
आयौ पुहकर दळां अपारां।
विसननाथ आयां दिन वळिया,
पुहकर गुरां तणा दुख पुळिया ॥१३॥
अस गज रथ अथ दान उमंडे,
मास तीन रूपै झड़ मंडे।
रूपै कनक भुजां राजारां,
विप्र अणदरिद्र हुवा तिण वारां ॥१४॥

(अजीतसिंह जी) । मोटां = बड़े । धणी = मालिक । अस = (अश्व) घोड़ा । अफारे = बहुत अधिक ।

१२—सुत जसवॅत = जसवंतसिंह का पुत्र । पोहकर = पुष्कर तीर्थ । प्राग समांण = प्रयाग तीर्थ के सदृश । प्रभत्ती = प्रभाववाला । परसण = यात्रा, दर्शन । मतै = विचार । छत्रपत्ती = राजा ।

१३—पुहकर = पुष्कर तीर्थ । विसननाथ = विष्णु भगवान्, वाराह भगवान् । पुष्करजी प्राचीन मंदिर है । दिन वळिया = अच्छे दिन आए । पुळिया = गए ।

१४—अस = घोड़ा । अथ = (अर्थ) धन । उमंडे = खूब दिया । रूपै० = चाँदी की वर्षा हुई । कनक = सुवर्ण । अणदरिद्र = धनवान्, दारिद्र्य-रहित । तिण वारां = उस समय ।

कूच थयौ पाछै ततकाळे,
सांभर फिर मारोठ सँभाळे।
थांणा दहूँ ठिकाणां थापे,
सीख देस दिस वियां समापे ॥१५॥
अभौ कँवर तेड़े छत ईखे,
प्रबळ कळा तप तेज परीखे।
साथ हितू मेले व्रन साजा,
महल विदा कीधा महाराजा ॥१६॥
दीनी सीख घणौ हित दाखे,
भूप अजीत प्रीत मुख भाखे।
कर दर कूच अजन अहँकारी,
आयौ धरि दिल्ली अवतारी ॥१७॥

दुहा

अल्ला वरदी ऊँच थळ, साहां तणी सराय।
ऊतरियौ राजा अजौ, यों दस कोसां आय ॥१८॥

१५=ततकाळे=तत्काल, तुरंत। सांभर०=साँभर और मारोठ मारवाड़ के प्रांत हैं। सँभाळे=निगरानी की। दहूँ=दोनों। सीख=शिक्षा। दिस विया=दूसरों की तरफ। समापे=दी।

१६—तेड़े=बुलाकर। छत=महाराजा ने। ईखे=देखा। परीखे=परीक्षा की। हितू=हितेच्छु। व्रन०=(वर्ण) अच्छे वर्णवाले, खानदानवाले। महल=जोधपुर को।

१७—दाखे=कहकर। अवतारी=भगवान् का अवतार।

१८—अल्ला वरदी=दिल्ली से दस कोस के अंतर पर अलावर्दी नामक सराय है। वहाँ अजीतसिंह ने मुकाम किया।

सैदां उच्छव सांपना, मुगलां वदन मलीण ।
दिल्ली अति चाळौ दरस, पुर सोचिया प्रवीण ॥१९॥
सैदे साम्हे मेलियौ, खां तरबीन सुतन्न ।
असहौ लागौ साह उर, मुगलां झांखा मन्न ॥२०॥
मास एक मुरधर धणी, रहियौ तेण सराय ।
सैदां आदू बोल रा, कौल लिया ठहराय ॥२१॥
प्रगट्यौ वरस पँचोतरौ, सांवण सघण सराय ।
साह करंडव पंखि पर, दुमुखि रहे चख लाय ॥२२॥
मुगलां सूं मसलत करै, कछवाहौ जैसाह ।
सैद मिले अजमाल सूं, दोनूं पक्ख दुबाह ॥२३॥

छप्पय

आयौ भाद्रव मास, छात दिल्ली भ्रम छायौ
असपत ईरानियां, पूछ निज मंत्र पठायौ ।

१९—सांपना = संपन्न हुआ । चाळौ = उपद्रव । दरस = देखकर । पुर = (पुरा) पहले से ।

२०—सैदे = सैयद ने । असहौ = बुरा, असह्य । उर = अंतःकरण में । झांखा = म्लान, उदास ।

२१—तेण = उस । आदू बोल रा० = प्रथम कहे हुए वचनानुसार कौल ठहरा लिया ।

२२—सघण = वर्षा काल । करंडव० = (कारंडव) हंस विशेष पक्षी की भाँति । दुमुखि० = दुचित्ता रहता है । चख = (चक्षु) नेत्र लगाकर ।

२३—मसलत = सलाह । जैसाह = जैपुर का राजा जयसिंह । दुबाह = वीर ।

२४—छात = (छत्र) महाराजा अजीतसिंह । भ्रम छायौ = शक में पड़ गया । असपत = बादशाह । मंत्र = सलाह । उजळ सपतम्मी =

मिळियौ अजमाल सूं, आइ उज्जळ सपतम्मी
खां इतकाद निबाब, जाब विण ताव नरम्मी।
फरमांण कमर बुत कौफरी, रकम जवाहिर ऊँच रिध
महाराज वाग फुरमाण में, विचित्र संतोखे एण विध ।।२४।।
हितू जांण सुविहांण, खान इतकाद आद भ्रत
कियौ विदा आलोभ, सोभ सुख वात घात चित।
मिळ मंत्री परधान, सकळ छुळ गुंभ सुणायौ
तौ विरोध वाधसी, बोध जो लियौ परायौ।
राखवा राज पतसाह रौ, यों समाज भड़ उच्चरै
रस थयां बेळ महाराज री, सकळ काज चढसी सिरै ।।२५।।
करे कूच इतकाद, साह दरगाह सपत्तौ
गुदरायौ धर गुंभ, महासुख सुंभ सुमत्तौ।
पिण भावी अति प्रबळ, सकळ बस प्राण असेखा
हुअणहार सिध करै, वार न धरै विध रेखा।

शुक्लपक्ष की सप्तमी के दिन। विण ताव=तेजी बिना। रकम=नकद रुपया। रिध=द्रव्य। महाराज वाग० = महाराज के लिये वागा अर्थात् सिरोपाव। विचित्र=मुसलमान (इरादतखाँ) ने महाराज को संतुष्ट किया।

२५—सुविहांण=प्रातःकाल। भ्रत=(भृत्य) नौकर। आलोभ=विचार करके। सोभ=तलाश करके। घात चित=मन में घात रखकर। छुळ=कपट रखकर। गुभ=रहस्य की बात। वाधसी=बढ़ेगा। बोध०=यदि दूसरे का उपदेश लिया तो। रस=प्रीति। थयां=होने पर। वेळ=मदद, सहायता। महाराजा अजीतसिंहजी की मदद मिलेगी और सब काम सिद्ध हो जायँगे।

२६—सपत्तौ=पहुँचा। गुदरायौ=निवेदन किया। गुंभ=रहस्य की बात। महासुख०=यदि सुमति सूझे तो बड़ा सुख होवे। पिण०=परतु भावी अत्यंत प्रबल है। प्राण=प्राणी। असेखा=सब। हुअणहार=होनहार सिद्धि करता है। विध रेखा=विधाता की रेखा देरी

पतसाह सचिक्कण कुंभ पर, सघण बुंद वाणी सुजण
दुरबोध मान रहियौ सद्रढ, कांन न कीधौ वयण कण ॥२६॥
कहियौ श्री अगजीत, साह सुण नीत भलाई
सैदां खग्ग पसाय, वणी दिल्ली ठकुराई।
मौजदीन सुरतांण, जिकौ रिण ढांण सँघारे
जुलफकारखां जिसा, सार सत्र मूळ निवारे।
सुज सैद हितू गिण अप्पणा. अवर अहित्तू जांण उर
दिल्लेस काज ग्रह पाधरा, बंक न थायै राजपुर ॥२७॥

गाथा

दिन वंके वंकेणं, वाणी मंत्र तंत सा बुद्धी।
दुरजण सज्जण थांने, सज्जन होइ दुज्जणाकारे ॥२८॥

दुहा

उर लग्गै सुरतांण रै, तनि दिन वंकौ तेम।
सज्जण दुरजण सारखा, दुरजण सज्जण जेम ॥२९॥

नहीं लगाती। पातसाह० = बादशाह तो चिकने घड़े की नाईं हो गया। उस पर वर्षा हो तो क्या ! एक बूँद नहीं ठहरती। इसी तरह सुजनों के वचन कुछ काम न आए। वह तो दुर्बोध को मानकर मजबूत हो गया, किसी का कहना नहीं माना।

२७—साह = हे बादशाह !। सैदा = सैयदों की तलवार की कृपा से। रिण ढांण = रणांगण में। संघारे = मारा। सार = तलवार। सत्र = शत्रु। मूल निवारे = जड़ से उखेड़ दिया। सुज = वे। गिण = मानो, जानो। अवर = दूसरों को। अहित्तू = शत्रु। उर = मन में। दिल्लेस० = हे दिल्लीनाथ, सीधा काम करो। टेढ़ा रहने से राज्य और नगर कुछ नहीं रहेगा।

२८—दिन० = दिन वक्र होते हैं तब सब वक्र हो जाते हैं। जैसे वाणी-मंत्र-तंत्र और बुद्धि।

२९—सुरतांण रै = बादशाह के। तनि = शरीर में। सारखा = समान।

असपत्ती ईरानियां, वत्ती पूछ विचार ।
खां दौरां सॅग मेलियौ, हाडौ भीम सवार ॥३०॥
आयौ साथ निबाब रै, कोटै हंदौ राव ।
मिळिया श्री महाराज सूं, साह कियौ वतकाव ॥३१॥
अक्खी सकळ अजीत सूं, मोती बाग सुमज्झ ।
देखेवा दरगाह जरा, साह दरस्सरा कज्ज ॥३२॥
पेखेवा पतिसाह नूं, अजन थयौ असवार ।
गति वंकी दिन पाधरै, छुत देखै संसार ॥३३॥

छप्पय

है उमत्त गज मत्त, सुभट परा रत्त समेळा
देस देस देसोत, साथ कमधज्ज सचेळा ।
जेसलमेरौ विसन, परम देरावर पत्ती
फतमल उदयापुरौ, रांरा राजड़ हर खत्री ।
मानसिंघ कमधज्ज, मऊ सीतापति साथे
चंद्रावत गोपाळ, राव भड़ लिये समाथे ॥

३०—असपत्ती=बादशाह । ईरानिया=ईरान के निवासी । वत्ती=वार्ता । खा दौरां=दौराब खा । हाडौ=चौहानों की एक शाखा । भीम=कोटे का राव भीमसिंह ।

३१—कोटै हंदौ=कोटे का स्वामी । वतकाव=वार्तालाप, बातचीत ।

३२—अक्खी=कही । देखेवा=देखने के लिये । कज्ज=(कार्य) काम ।

३३—पेखेवा=देखने के लिये । गति=चाल ।

३४—है (हय)=घोड़े । उमत्त=उन्मत्त । मत्त=मस्त । रत्त=(रक्त) अनुरक्त । समेळा=मेलवाले । देस०=देश देश के राजा । सचेळा=बलवान्, समर्थ । जेसलमेरौ०=जेसलमेर का रावल विसनसिह । देरावर पत्ती=देरावर नगर का मालिक । फतमल=राणा राजसिह का पोता उदयपुर का फतहसिंह । मानसिघ=सीतामऊ का मालिक राठौड़ मानसिंह । समाथे=समर्थ ।

ऊदलौ खँडेला सँधणी, सकतसिंघ मनहर पुरौ
कूरम्म वळे तीजौ कन्है, किसनसिंघ आंनाहरौ ॥३४॥

दुहा

छोरू छत्रपतियां तणा, दोळा सेय दुबाह ।
नृप सगाह दीठौ अजै, साह तणौ दरगाह ॥३५॥
खास आंम इतमांम विण, तेड़ायौ अगजीत ।
साह मनैं अंतर तई, वचने देखी प्रीत ॥३६॥

छंद बेअक्खरी

मिळ सुलतांण अजीत मनायौ
प्रगट कुरब सब ऊपर पायौ ।
जिकौ आद लखपत्त हजारी
ऊपर तिण मुख रीझ उतारी ॥३७॥
क्रोड़ इनांम दांम फिर कीधा
दोय अस सहँस दोसपा दीधा ।
मत गजराज मुरातब माही
रीझ परख दोय राह सराही ॥३८॥

ऊदलौ=खडेले का मालिक उदयसिंह । आंनाहरौ=अणंदसिंह का वंशज ।

३५—छोरू=लड़के, बेटे । दोळा=पार्श्ववर्त्ती, साथ में । सगाह=गर्वसहित । दीठौ=देखा ।

३६—इतमांम=रोक-टोक के बिना । तेड़ायौ=बुलाया । साह मनैं०=बादशाह के मन में फर्क था तो भी ।

३७—मनायौ=सत्कार किया । जिकौ आद०=मनसबदारों में जो हजारी और लखपति आदि थे उन सब से अधिक इनाम महाराजा को दिया । क्रोड़ इनाम दाम=एक करोड़ दाम इनाम । दोय अस सहँस=दो हजार घोड़े । माही मुरातब में मस्त हाथी । इस बखशिश को देखकर हिंदू मुसलमान दोनों ने प्रशंसा की ।

सुभ खिल्लत पँव वसन सुरंगी
असि खंजर सरपेच कलंगी।
मुकतमाळ दुलड़ी उर मंडित
अती भार सबसत्त अखंडित ॥३९॥
साह मिले निज मगज सवायौ
अजन विदा हुय डेरां आयौ।
दोनूं राह गात छुत देखै
लखि गति सकळ सिरै दुति लेखै ॥४०॥
मोतीबाग हूँत सब मारू
सौंज नेज खड़ि रमणा सारू।
चक्रवत उण दिस अजन चलाया
इतरै दूत खबर ले आया ॥४१॥
अबदुल्ला उर मंडळ आयत
वणी मिलण कज सौंज विछायत।
सैदां मिलण लियां दळ साजा
रीझै गयौ अजौ महाराजा ॥४२॥

३९— सुभ खिल्लत० = अच्छी खिलअत; अच्छे रंग के पाँचों वस्त्र। असि = तलवार। मुकतमाळ = मोतियों की माला। सबसत्त = वस्तुमात्र।

४०—मगज = मस्तिष्क, गर्व। दोनूं राह = हिंदू मुसलमान। गात = (गात्र) शरीर। लखि गति = चाल को देखकर।

४१—मारू = मारवाड़ के सरदार। सौंज० = भालों की रमत रमने के लिये घोड़ों को चलाया। चक्रवत = (चक्रवर्ती) राजा। उण दिस = उधर की तरफ। इतरै = इतने में।

४२—उर मंडळ = वक्षःस्थल। आयत = विस्तृत। मिलण कज = मिलने के लिये। सौंज = सराजाम। साजा = अच्छा। रीझै = प्रसन्न होकर।

दुहा

अबदुल्लै उच्छत्र धरै, साम्हौ आय वधाय ।
मिळ अगजीत कमंध सूं, पधरायौ सुख पाय ॥४३॥
पुत्र भतीजा भ्रात लघु, सूर नबाब सवाय ।
मिळिया श्री महाराज सूं, धरती हाथ लगाय ॥४४॥
अजन कुरब मुख उच्चरै, तब यौं कह्यौ नबाब ।
अै सब फरजँद आप रा, आप निबाहक आब ॥४५॥
पंच हजारी तोल पर, सरदा कर सइयद्द ।
नमिया एम अजीत नूं, रीत सप्रीत रवद्द ॥४६॥

छप्पय

बाज राज ऊधरा, उभै गजराज अनोपम
तोरा सपत दकूळ, सपत जवहर वर रक्कम ।
मुकतमाळ सिरपेच, जड़त कलँगी नग खंजर
नृपति हूँत धरि निजर, करी मनुहार अपंपर ।
सुख कज अमीर अगजीत सूं, रस सधीर अप्पण रळी
वातां अथाह जाबां वधी, साह नबाबां सांभळी ॥४७॥

४३—वधाय = स्वागत करके । पधरायौ = प्रवेश कराया ।

४४—धरती हाथ लगाय = जमीन तक हाथ नीचे करके, अर्थात् प्रणाम करके ।

४५—निवाहक आब = आबरू के निबाहनेवाले आप हैं ।

४६—पंच हजारी तोल पर = जैसे पंच हजारी मनसबदार मिलते समय प्रणाम करता है, वैसे सैयदों ने महाराजा को प्रणाम किया । रवद्द = मुसलमान ।

४७—बाज राज = उत्तम घोड़े । ऊधरा = उच्च जाति के । तोरा = तुर्रा । दकूळ = (दुकूल) रेशमी वस्त्र । नग = रत्नजटित । अपंपर = अपार । रस = प्रीति । अप्पण रळी = मनवांछित देने के लिये । अथाह = असंख्य । जाबां वधी = परस्पर सवाल-जवाब होने से बातें बढ़ीं । सांभळी = सुनी ।

दूहा

यौं डेरां आयौ अजौ, रमणै रां महाराज ।
उर जळिया ईरानियां, सइयद परख सकाज ॥४८॥
खूंदालम मन खंचियौ, उर संचियौ विराम ।
हियै न मावै गजनहर, दुसहां अजन दुगाम ॥४९॥
नित दावां नित नीसरै, प्रारँभ धरै न प्रांण ।
आप सहर ईरानियां, ताप रहै सुरतांण ॥५०॥
असपतियां राजा अजौ, गिणै न जोस लिगार ।
ओपै डेरा ऊधरा, घर इंद रा समार ॥५१॥

छप्पय

अजन करायौ एक, जिकण डेरै वृत जैसी
रूप सोभ तारीक, ओप मुर चोभ अनैसी ।

४८—रमणै रां = रमणा नामक स्थान, जहां महाराजा अजीतसिंहजी का डेरा था । सइयद० = सैयदों को कृतकृत्य देखकर ।

४९—खूंदालम = बादशाह । विराम = दुःख । गजनहर = गजसिंह का पोता । दुसहां = शत्रुओं को । दुगाम = दुर्गम, असह्य ।

५०—दावां = (दाव) दावानल, अग्नि, मन की ज्वाला । नीसरै = निकलती है । प्रारंभ = कार्य्य, धैर्य । आप = देकर ।

५१—असपतियाँ = बादशाहों का । गिणै = मानता है । जोस = बल । लिगार = किंचिन्मात्र भी । ऊधरा = उच्च कक्षा के । इंदरा = इंद्र के समान । समार = सुधारे हुए ।

५२—अजन० = अजीतसिंह ने एक डेरा कराया, जिसका वृत्तात ऐसा है । रूप सोभ० = उस डेरे में तीन रूपे की चोभें हैं, जिनकी शोभा का

वण पड़दा दोवड़ा, वळे तह पंच विसाळा
सोभ कलंद्री ससी, सिखर फिर सांवण वाळा।
धरि सहस्र फरासां धारणा, खिति अनोप कीधौ खड़ौ
असपती सुणे अचज्जियौ, परम धाम फिर प्रग्गड़ौ ।।५२।।
अजन इंद्र अवतार, कियौ दरबार हरक्खे
हिंदू मुस्सलमांण, रहै अचरिज्ज निरक्खे।
दियै विरद कवि इंद्र, परख राजेंद्र प्रभावां
दूणी निजर दरब्ब, कीध सगळां उमरावां।
जैसिंघ आद राजा जिता, लाज रहै परिहँस लियै
अजमाल मेळ अबदुल्ल सूं, हुवौ साल मुगलां हियै ।।५३।।

दुहा

साह चढै सहलां सदा, उर धर दाव अनेक।
आंगमणी आवै नही, अजौ अनेकां एक ।।५४।।

तरीका और कांति अद्भुत है। सोभ कलंद्री ससी = उसमें यमुना का दृश्य और चद्रमा शोभायमान है। सांवण वाळा = श्रावण मास के बादल उसके शिखर पर ठहरते हैं, इतना ऊँचा है। धरि० = एक हजार फरास इकट्ठे हों तब उसे खड़ा कर सकते हैं। अचजियौ = आश्चर्ययुक्त हुआ। परम० = मानों परम धाम अर्थात् वैकुंठ ही प्रकट हुआ है।

५३—अचरिज्ज = आश्चर्य। निरक्खे = देखकर। विरद = (विरुद) पदवी, श्रुति। परख = देखकर। दरब्ब = (द्रव्य) धन। सगळां = (सकल) समस्त। जैसिंघ = जयपुर का राजा जयसिंह। जिता = जितने। परिहँस = पराजय, हार। साल = शल्य, शूल।

५४—सहलां = सहल, हवाखोरी, आनंद की यात्रा। दाव = पेच, कपट। आंगमणी० = हमला नहीं कर सकते। आगमण = आक्रमण। अजौ० = अनेक आदमी मिलकर एक अजीतसिंह पर।

साह अमीरां सोचतां, जग विसतरै जबाब।
रहै एकठा रूक हथ, नरपत अनै निबाब ॥५५॥
पोस मास पख चांदणै, त्रीज तणौ दिन प्रात।
डेरै जोधां नाथ रै, आयौ दिल्ली छात ॥५६॥
जतन कियौ सहि जाबतौ, अबदुल्ला खां आय।
हेवै पत आयां हुवै, तै मनुहार सवाय ॥५७॥
चौकी रुपियां लाख री, हाथी निजर तुरंग।
रकम जवाहर उंच रुचि, पद तळ वसन सुरंग ॥५८॥
मारू फागुण मास मैं, आप गयौ दरगाह।
दिल्लीनाथ दरस्सिवा, नाथ नबाब सगाह ॥५९॥
आयौ फिर डेरां अजौ, नरपत सहत निबाब।
दक्खण दूत चलाविया, तेड़ण वेल सिताब ॥६०॥

५५—साह = बादशाह। जबाब = वार्ता, वृत्तात। रूक हथ = तलवारें हाथों में लिए।

५६—पख चांदणै = शुक्लपक्ष। जोधां नाथ रै = महाराजा अजीतसिंहजी के। दिल्ली छात = बादशाह।

५७—जतन = यत्न। सहि = सब। हेवै = अब। पत = (पति) मालिक। तै = उसकी।

५८—उंच रुचि = बहुत बढ़िया कांतिवाले रत्न। पद तळ = पैरों के नीचे। वसन = वस्त्र।

५९—दरस्सिवा = दर्शन करने को। नबाब = (अबदुल्ला खाँ) नवाब। सगाह = गर्व-सहित।

६०—नरपत = राजा। तेड़ण = बुलाने को। वेल = मदद के लिये। सिताब = जल्दी।

छंद बेअक्खरी

दक्खण हसनअली दुरपारौ
आगळ सूरां सैद अफारौ ।
चगथां पुरथी दूत चलाया
अबदुल्लै रा दक्खण आया ॥६१॥

सो वाचिया सुणी विध सारी
भाई लिखी अवस्था भारी ।
साह मुगल पूछै सरसावै
अवर सवाई वेध उठावै ॥६२॥

मारण मतै दिलीपत मोनूं
तिण सूं वाध लिखूं की तोनूं ।
भूप अजीत रहै मो भेळौ
इण बळ टळै खळां ऊखेलौ ॥६३॥

६१—दुरपारौ = जिसको कोई पार न कर सके, अर्थात् दुर्लंघ्य । आगळ० = वीर पुरुषों में अग्रणी । अफारौ = बहुत जबर्दस्त । चगथां = मुसलमानों ने ।

६२—सो = जो पत्र अबदुल्ला ने भेजे थे, वे पढ़े । विध = (विधि) वृत्तान्त, हकीकत । अवस्था = दशा । भारी = कठिन । (पत्रों के समाचार)। साह० = बादशाह मुगलों से पूछता है और उसी को अच्छा मानता है । अवर = दूसरे । वेध० = विरोध बढ़ाते हैं ।

६३—मारण मतै = मारने के विचार में । वाध = बढ़कर । की = क्या । तोनूं = तुझको । मो भेळौ = मेरे शामिल । इण बळ० = इस बल से शत्रुओं का उपद्रव टल रहा है ।

इम सुण पाछा दूत उडाया
वे जिम दिखण गया तिम आया।
इण लिखियौ जतरै हूँ आऊं
सत्रु दळ साह सहित समझाऊं ॥६४॥
अबदुल्ला सुण बंधु अवाजा
रीत कही सुणतां महाराजा।
पत्र दिया हित हूँत पठाया
समाचार सहि विवर सुणाया ॥६५॥
उठै हसन दळ लियां अभूता
हिलियौ महण क दक्खण हूँता।
औ वीसमै दिवस खड़ि आयौ
लेखवतां मग मास न लायौ ॥६६॥

छप्पय

दिली लखै दिगदाह, विगत हित साह विचारी
खर भूकै रव खैंग, स्वान कूकै सुखहारी।

६४—उडाया = जल्दी भेजे। जतरै = जब तक।

६५—सहि = सब। विवर = ब्यौरेवार, विगतवार।

६६—उठै = वहाँ (दक्षिण में)। अभूता = अद्भुत। हिलियौ = चलायमान हुआ। महण = समुद्र। क = मानों। औ = यह (हसनअली)। खड़ि आयौ = वाहनों को चलाकर आया। लेखवतां = हिसाब करते, गिनते। लायौ = लगाया।

६७— दिली० = दिल्ली में दिशाएँ जलती दिखाई देती हैं। विगत० = बादशाह के हित से उलटी बात हुई। खर० = गधे जोर से बोलते हैं। रव खैंग = घोड़े हिनहिनाते हैं। स्वान कूकै = कुत्ते रोते हैं।

चडै स्वास सज्जणां, नास विपरीत उपज्जै
नह राजै दीवांण, सबद बाजै न गरज्जै।
वड चौक लोक संकत वहै, खांति रहै नह खट्टणै
दीपै न नूर दरगाह मैं, आगम साह पलट्टणै ॥६७॥
इम दिल्ली उतपात, वात विपरीत प्रगट्टै
आई खबर अचींत, सैद दळ प्रबळ सहट्टै।
आयो दक्खण हूँत, जिसौ जायौ अजरायल
दळ बे लख वांनैत, करण खळ दळ बळ कायल।
भड़ हसनखान बलवान भुज, गढ अभिमान गुमान रौ
सालियौ तांम सुण साह उर, दळ दुगाम दइवांण रौ ॥६८॥
उभै लक्ख उत्तंग, हिलै गज तुंग हजारां
वांनैतां पायकां, पार नावै खंधारां।
दिल्ली दिस सूं वरण, हुए उत्तर खड़ आयौ
मेटी साह म्रजाद, वाद नीसांण वजायौ।

चडै० = सजन आह भरते हैं। खांति० = किसी वस्तु को संपादन करने में चित्त की वृत्ति नहीं रहती है। दीपै० = राजसभा में लावण्य नहीं प्रकाशता है। आगम० = बादशाह के बदलने का भविष्य दिखाई देता है।

६८—अचींत = अचानक। सहट्टै = सहित। हूंत = से। जायौ = जन्मा, हुआ। अजरायल = जबर्दस्त। बे लख = दो लाख। वांनैत = बाणोंवाले, बाना रखनेवाला। कायल = कातर। गढ० = अभिमान और गर्व का किला। यह हसनअली का विशेषण है। सालियौ = शल्ययुक्त हुआ। दुगाम = दुर्गम, असह्य। दइवांण रौ = मालिक का।

६९—उभै = दो। उत्तंग = घोड़े। हिलै = चले। तुंग = ऊँचे। वानैतां = बाणधारी। पायकां = पैदल। नावै = नहीं आवे। खंधारां = कंधार के सुभट। दिल्ली० = दिल्ली की तरफ वरण करने को उत्तर की ओर चलकर आया। म्रजाद = मर्यादा। वाद = युद्ध का। नीसांण = नगारा,

दळ गरद हूँत छाई दिली, उर भाई उच्छव कियौ
मिळियौ अजीत महाराज सूं, दाखै बंध समप्पियौ ॥६९॥
पातसाह कंपियौ, विविध मनुहार पठाई
विना तेल दीपक्क, हुवौ इण ताक सवाई।
मुगल सभै निज ग्रेह, न को दरि देह दिखावै
बाज पंख वज्जियां, जेम लाई छिप जावै।
सब मिलै वात अजमाल सूं, आद सवाई छात पति
पतसाह दाह उर पीड़ियां, आवै थाह न एण गति ॥७०॥

दुहा

दिल्ली सूं उत्तर दिसा, जमण तणै उपकंठ।
ऊतरियौ मिळ आपरां, गुंझ प्रकासण गंठ ॥७१॥
दिन दूजै अजमाल सूं, धरि मसलत निरधार।
चढियौ नृपत सगाह सम, देखण साह दुवार ॥७२॥

नक्कारा। गरद हूँत=धूलि से। उर=मन में। दाखै=कहकर। बंध=(बंधु) भाई को। समप्पियौ=अर्पण किया, दिया।

७०—पठाई=भेजी। दीपक्क=दीपक। इण ताक=इस तरह, तत्सदृश। निज=अपने। ग्रेह=घरों को। को=कोई भी। दरि=डरकर। लाई=लावा पक्षी। वात०=अजीतसिंह से बात की। आद=प्रथम। उर=मन में। आवै०=इस तरह कि जिसकी थाह नहीं।

७१—जमण=यमुना नदी के। उपकंठ=किनारे। आपरां=अपने लोगों से। गुंझ=गुप्त वार्ता। प्रकासण=जाहिर करने के लिये। गंठ=(ग्रंथि) गाँठ, मन की बात।

७२—मसलत=सलाह। निरधार=निश्चय करके। सगाह सम=गर्व के साथ।दुवार=(द्वार) दरवाजा, दरगाह।

चौकी पग पग चौक मैं, आपांणी ठहराय।
आया घर पतसाह रै, जांणि प्रलै ची लाय ॥७३॥

छंद बेअक्खरी

रवि चै उदय रात मिट जावै
खूटै तेल मुसाल बुझावै।
यों नीयति व्रत वेद बतावै
तप तीखै नृप राज गमावै ॥७४॥
घात छात सब दिल्ली जांणी
संपत औपत थई विहांणी।
पुर चळ चळ मुख अन्न न पांणी
रिधी सोध लीधी रजधांणी ॥७५॥

दुहा

पूछै श्री अगजीत नूं, और कियौ पतसाह।
पुर रफील दर जात री, आण वणै दरगाह ॥७६॥

७३—आपाणी = अपनी। ठहराय = नियत करके। जांणि = मानों; प्रलै ची = प्रलय की। लाय = दावानल।

७४—रवि चै उदय = सूर्य के उदय होने पर। मुसाल = मशाल, दीवट; बुझावै = बुत जाती है। नीयति व्रत = नीति का नियम। तप तीखै = अत्यंत तेजी करने से।

७५—घात छात = बादशाह की घात। संपत = संपत्ति। औपत = आय, लाभ। थई = हुई। विहांणी = नष्ट, हीन। रिधी = ऋद्धि। सोध लीधी = ढूँढ़ ली। रजधांणी = राजधानी।

७६—पुर = नगर में। आण वणै = आज्ञा प्रवृत्त हुई।

छंद बेअक्खरी

छळ न वळै सौ अकसौ छोडै
ईरांनी नह को बळ ओडै।
अरज अजीत हूँत गुदराई
सळक गयौ जैसिंघ सवाई ॥७७॥
के नृप मिलै करण सुभ काजां
राजा द्वार भीड़ गजराजां।
अजन जिका हूँता हित आंणै
वखत तिकण रै जगत वखांणै ॥७८॥
सेद बिहूँ बंधव सिर जोरै
त्रीजौ अजौ आप रै तोरै।
भूपत हूँत सैद बे भाई
सदा मिळै कर प्रीत सवाई ॥७९॥
बंचिया कहि मोतियै वधावै
गुण अजमाल तणा मुख गावै।
वणियौ साह मास चत्र वीतां
ऊपज तन मन रोग अचीतां ॥८०॥

७७—छळ = कपट। वळै = फिर, तो भी। सौ = वह। अकसौ = ईर्ष्या, गस। को = कोई भी। ओडै = धारण करता है। सळक गयौ = छांने चला गया।

७८—के = कई। करण = करने के लिये। जिका हूँता = जिससे। हित आंणै = हित चाहता है। तिकण रौ = उसका।

७९—सेद = सैयद। बिहूँ = दोनों। सिर जोरै = उद्धत। त्रीजौ = तीसरा। आप रै तोरै = अपने तौर से। बे = दोनों।

८०— बंचिया० = हम बचे, ऐसा कहकर महाराजा का मोतियों से स्वागत करते हैं। तणा = के। चत्र = चार। वीतां = व्यतीत होने पर। ऊपज० = शरीर और मन में अचानक रोग उत्पन्न हुआ।

सो मर गयौ अचींत सँपेखे
दौला तखत थापियौ देखे।
प्रगट दिली छत्र दोलै पायौ
अतरै मुगलां दुंद उठायौ ॥८१॥
मिळ ईरान आगरा माहे
बांह अनेहि······बै साहै।
इण छत्र हुए तुरत पत्र आयौ
मुगलै दूजै साह मनायौ ॥८२॥

दुहा

हसनअली सुण हालियौ, राखण दौलै राज ।
दिल्ली अबदुल्ला जतन, रहे अजन महाराज ॥८३॥
हसनअली हरवल हुओ, गौ आगरै सगाह ।
दिल्ली हूँता हालियौ, पाछै दौला साह ॥८४॥
आयौ वरस छिहोतरौ, साह थयौ असवार ।
अबदुल्ला राजा अजन, भुज ग्रहियां भर भार ॥८५॥

८१—अचींत=अचानक । सँपेखे=देखकर । दौला०=रफीउद्दौला को तख्त पर बिठाया । अतरै=इतने में । दुंद उठायौ=उपद्रव खड़ा किया ।

८२—ईरान=ईरानियों ने । बांह०=बाँह पकड़कर दूसरे को आगरे में तख्त पर बिठा दिया । इण०=इसके बादशाह होने पर ।

८३—हालियौ=चला । राखण०=रफीउद्दौला का राज्य रखने के लिये । जतन=दिल्ली की रक्षा के लिये ।

८४—हरवल=सेना के मुख पर हुआ । गौ=गया । सगाह=गर्वसहित । हूँता=से । हालियौ=चला ।

८५—भुज ग्रहियां=बाँह पकड़ी । भर भार=सब बोझा अपने पर लिया ।

ऊलटिया सिर आगरै, अबदुल्ला अजमाल ।
आगै पैाहतै आगलौ, वारण खान दुझाल ॥८६॥
मिळिया भुज बांधे मुगल, सइयद परख सगाह ।
हेक दिवस मैं हसन खां, साहे नेकूं साह ॥८७॥
नेकूं पुत्र भतीज सम, जग अहि मंत्री जेम ।
पुर दिल्ली कीधा पकड़, दाखल कोट सलेम ॥८८॥
आयां लसकर आगरै, मरिगैा दैाला साह ।
सैदा मिळ अगजीत सूं, फिर कीधैा पतसाह ॥८९॥
उंच महूरत उंच दिन, ऊँच तखत प्रब दाल ।
पधरायौ पतसाह नूं, महाराजा अजमाल ॥९०॥

इति श्री राजरूपक मैं महाराज श्री अजीतसिंघजी फरकसाह
नूं मारनैं महमदसाहजी नैं तखत बैठाया
एकत्रिंश प्रकास ॥३१॥

८६—ऊलटिया = वेग से आगरे पर चढ़ाई की । आगै० = आगलो अर्थात् आगे जानेवाला पहले पहुँचा । वारण० = बहादुर खान को रोकने के लिये ।

८७—मिळिया० = मुगल हाथ बाँधकर आ मिले । सगाह = गर्व-सहित, गाढ सहित । हेक = एक । साहे = जीत लिया ।

८८—नेकूं = बादशाह का नाम । सम = साथ, संग । जग० = जैसे जगत् में मंत्रवादी (गारुड़ी) सर्प को वश में कर लेता है । कोट सलेम = सलेम कोट में, जहाँ बादशाह और उसके बंधु कैद किए जाते हैं ।

९०—प्रब = (पर्व) समय । दाल = देखकर । पधरायौ = विराज-मान किया ।

दुहा

एकां मूळ ऊखेड़िया, हेकां किया निहाल।
असपत्ती नह ऊथपै, जे थप्पै अजमाल ॥ १ ॥
साह फरक संघारतां, नास गयौ जैसाह।
औ कांपै आंबेर मैं, सालै सैद सगाह ॥ २ ॥

छप्पय

नेक साह भाद्रवें, पकड़ दिल्ली पहुँचायौ
पातसाह महमंद, सरद रित टीकौ पायौ।
कोपे खान हसन्न, दई जिण बारे चादर
कूरम तणा उकील, फिरै विण मेळ निरादर।
जैसिंघ हितू जळ थाळ ज्यों, थया चळच्चळ काळ लखि
आंबेर हाल विण गण इसौ, सेख ज्वाळ सैदां परखि ॥ ३ ॥

१—मूळ = जड़। हेकां = एक को। निहाल = वैभववंत। असपत्ती = बादशाह। ऊथपै = पदच्युत कर दे। जे = जिसको। थप्पै = राजसिहासन पर बिठा दे।

२—साह फरक = बादशाह फरुर्खसियर को। संघारतां = मारते। नास गयौ = भाग गया। औ = यह। सालै = शल्य के समान दुःख देता है।

३—नेक साह = नेकूं नामक बादशाह। सरद रित = शरद् ऋतु में। टीकौ पायौ = राज्याभिषिक्त हुआ। कूरम तणा = कछवाहे जैसिह को। हितू = हितेच्छु। जळ थाळ० = थाल में के जल की भांति चल। विण = उसने। ज्वाळ = क्रोध।

कूरम्मां जांणियै, मौत गुड़ पक्खर आई
सैदां हूँता कुसळ, रहै वळ केण सवाई।
हसनअली कोपियौ, चली आवाज समंदां
एक धणी नवकोट, ओट राखवा नरंदां।
दुजराज त्रास काळी डरै, सोभर धाम सँभारियौ
कूरमां तेम कमधज्ज रै, ध्यान नेम कर धारियौ ॥ ४ ॥

दुहा

साह फतैपुर सीकरो, किर आयौ दरियाव।
अजन सरण जैसिंघ रा, आये खट उमराव ॥ ५ ॥
वरणै को मुख वीनती, जो दाखीजै साय।
अति औढी विरियां अजौ, राजा थयौ सहाय ॥ ६ ॥

४—गुड़=पाखर धारण करके। वळ=फिर। केण=किस तरह। धणी नवकोट=मारवाड़ का मालिक। ओट=रक्षा, शरण। दुजराज=गरुड़। काळी=कालिय सर्प। सोभर०=सौभरि ऋषि का घर याद किया अर्थात् यमुना नदी के ह्रद का स्मरण किया। सौभरि ऋषि यमुना के तट पर तप कर रहा था, गरुड़ वहाँ आकर मत्स्यराज को खा गया, जिससे मछलियाँ दुखी हुईं। उन्हें देखकर सौभरि मुनि ने कहा कि यदि गरुड़ यहाँ आवेगा तो मर जायगा। कालिय सर्प गरुड़ के निमित्त की हुई बलि को खा गया, जिससे कुपित होकर गरुड़ ने कालिय पर पक्ष का प्रहार किया। इससे भयभीत होकर कालिय सर्प उक्त यमुना के ह्रद में आ बसा; क्योंकि वह सौभरि ऋषि के दिए हुए शाप को जानता था। श्रीकृष्ण ने उसे उस स्थान से निकाल दिया।

५—किर=मानों।

६—दाखीजै=कहा जाय। साय=सहायता के लिये। औढी विरियां=समय का विचार किया।

कियौ अभै नृप कूरमां, पावां लियौ वचाय ।
प्रभू परीखत रक्खियौ, जेम जळंतौ लाय ॥ ७ ॥
मुहम मिटावै साह री, कूरम किया सनाथ ।
क्रिपा उबारे कष्ट में, ज्यों भाराथे पाथ ॥ ८ ॥

छप्पय

महाराजा अजमाल, मेल कूरमां दिलासा
थया दाह मेटियां, आदि जैसाह सज्यासा ।
चांपावत हरनाथ, साथ थांनसी भँडारी
मिळे सवाई हूँत, वडी चिंता निरवारी ।
कूरमां समै कलपंत ज्यौं, प्राण दैण परवारिया
मृत वार जेम अम्रत मिलै, अजै तेम ऊबारिया ॥ ९ ॥

दुहा

थाप महम्मद साह नूं, ऊबेले जैसाह ।
असपत सूं राजा अजै, मांगी सीख सगाह ॥१०॥
अहमदपुर अजमेर दुहुँ, करे पटै कमधज्ज ।
विदा हुवौ कर काज वर, सुत जसराज सकज्ज ॥११॥

७—अभै = निर्भय । परीखत = परीक्षित राजा की भाँति । लाय = ब्रह्मास्त्र की अग्नि से ।

८—मुहम = युद्धयात्रा, चढ़ाई । भाराथे = महाभारत के युद्ध में । पाथ = (पार्थ) अर्जुन ।

९—सज्यासा = विश्वास, भरोसा । निरवारी = निवृत्त की । कलपंत = (कल्पात) प्रलय के समय । परवारिया = तैयार थे ।

१०—ऊबेले = बचाया । असपत = बादशाह से ।

११—करे पटै = पटे में लिखाकर । वर = श्रेष्ठ । जसराज = महाराजा जसवंतसिंह । सकज्ज = कृतकृत्य ।

साथ सवाई सेव मैं, भूप लियै धर भाव।
बीजौ सँग हाडौ बुधौ, बूंदी हंदौ राव ॥१२॥
इण विध मुरधर आवतां, उर प्रगटै आणंद।
पुर मनहर फिर परणियौ, श्री नवकोट नरंद ॥१३॥
आयौ जोधांणै अजन, आयां अघहण मास।
पति बुंदी आंबेर पत, पावां सेव प्रकास ॥१४॥
चौकी सांगा रांण री, मेड़तियौ अभमाल।
सेव करै अगजीत री, सैद हियै नटसाल ॥१५॥

छप्पय

आंबेरौ जैसाह, सूरसागर आश्रम्मे
वरण दिसा वाग सूं, धणी बूंदी वड ध्रम्मे।
अभा आदि उमराव, रांणवाळा मन रक्खै
वरण इंद्र धनवंत, इसौ अगजीत निरक्खै।
देसौत देस देसाधिपति, एम छत्रपति ओळगै
पावै न माग दरबार पह, ईढदार भूपां अगै ॥१६॥

१२—सवाई = सवाई राजा जयसिंह। भाव = भक्ति। हंदौ = का।

१३—परणियौ = पाणिग्रहण किया।

१४—अघहण = मार्गशीर्ष। पावां = पैरों की।

१५—चौकी० = सांगा राणा की चौकी का रक्षक। सैद = सैयदों के। हियै = हृदय में। नटसाल = शल्य के समान है।

१६—सूरसागर = जोधपुर से वायव्य कोण में एक तालाब है जिसे महाराजा सूरसिंहजी ने बनवाया था। उस तालाब के तट पर राजाओं के निवास योग्य महल बने हुए हैं और बाग भी है। वरण दिसा = पश्चिम दिशा में। वरण = वरुण देवता। धनवंत = कुबेर। देसौत = देश का मालिक, राजा। ओळगै = प्रशंसा करते हैं। माग = मार्ग। पह = (प्रभु) मालिक। ईढदार = ईर्ष्यावाले। अगै = आगे।

सीत काळ ऊत्तरे, अंब मवरे रित आगम
रस आयौ तरवरे, भयौ भमरे सुर संगम।
द्रुम्म चरम मधु भरे, पत्र अंकुरे विपुल वन
फाग राग माधुरे, सुरे नर नारि हरे मन।
मृगसार सार घण अत्तरे, गंधसार सोभै करे
नृप द्वार खेल सिरखे नरे, वणे वसन्ने केसरे ॥१७॥

दुहा

नव नव खेल वसंत नित, सिर आयौ मधुमास।
परणावण जैसाह नूं, आगम व्याह प्रकास ॥१८॥
कन्या कमँधां राव री, सूरज कँवर सलज्ज।
सेवा तौ इसरी करौ, कीजै आदर कज्ज ॥१९॥
माहव मुख चांपावते, पूछे आदि प्रधान।
पूछ भँडारी खींचमी, वळि रुघपत दीवांण ॥२०॥
बियै गजन फिर बूझिया, अजन वडा उमराव।
प्रोहित व्यासां बारठां, पूछे रीत प्रभाव ॥२१॥

१७—अंब मवरे० = आमों के मोर (बौर) आने की ऋतु अर्थात् वसत। वरे = वृक्षों के। भमरे = (भ्रमर) भौंरों के। सुर = गान का स्वर। द्रुम्म = (द्रुम) वृक्ष। चरम = (चर्म) छाल। मधु = शहद, पुष्परस। मृगसार = कस्तूरी। सार घण = कपूर। अत्तरे = इत्र। सिरखे = सदृश। वसन्ने = (वसन) वस्त्र।

१८—मधुमास = चैत्र मास। परणावण = व्याहने को। व्याह = विवाह।

१९—इसरी = ऐसी।

२०—माहव मुख = माधोसिंह प्रभृति। आदि प्रधान = प्रथम के प्रधानामात्य। वळि = फिर।

२१—बियै गजन = दूसरा गजसिंह, अर्थात् गजसिंह के सदृश।

छप्पय

कँवरी सूरजकँवर, अजन ध्रम रचे अपंपर
जै नांनौ अमरेस, धरा जेसांण छतर धर।
परणावण जैसाह, व्याह रचियौ जोधांणै
पूछ आदि पंडितां, वेद मरजाद प्रमाणै।
कमधजां छात जिग वात कृत, लख विख्यात सँकळप लियौ
रिखि वयण आद वासिष्ट ग्रग, कहिया तिम उद्यम कियौ ।।२२।।

दुहा

रचना कहतां ज्याग री, वाधै ग्रंथ अपार।
ज्यौं व्रत दाखै वेद मैं, त्यौं आखै विस्तार ।।२३।।
जेठ मास पख आद नम, विमल रचे वीमाह।
उच्छव सूं राजा अजै, परणायौ जैसाह ।।२४।।

इति श्री राजरूपक मैं महाराजा श्री अजीतसिंघजी बाई
श्री सूरजकँवर रौ व्याव कीयौ सो विगत
द्वित्रिंश प्रकास ।। ३२ ।।

२२—ध्रम = धर्म। अपंपर = अपार। जै = जिसका। जैसांण = जेसलमेर। जोधांणै = जोधपुर में। छात = (छत्र) मालिक। जिग = यज्ञ। सँकळप = कन्यादान का संकल्प। रिखि वयण = ऋषियों के वचन। ग्रग = गर्ग मुनि।

२३—ज्याग री = यज्ञ की। व्रत = नियम। दाखै = कहे हैं। आखै = कहने हैं।

२४—वीमाह = विवाह।

दुहा

तिण सिर वरस सितंतरौ, सुख आयौ वरसात ।
पत बूंदी आंबेर पत, छत्रपत मरबे छात ॥ १ ॥

छप्पय

हसलअली सइयद्द, छत्र थापे मद छायौ
इण दुख ईरानियां, तपत तन मन मुख तायौ ।
वात घात वेखतां, दाव देखतां सपत्तौ
सैद चूक कर समर, मार लीधौ गहमत्तौ ।
विसतरी वात दिस दिस विदिस, क्रित अभूत पंखां किया
जोधपुर दूत जैसिंघ रां, आंणी खबर अचिंतियां ॥ २ ॥

दुहा

आवी ऊपर ऊपरा, बात धरा विसतार ।
कमँध अजै पत कूरमां, विदा कियौ तिण वार ॥ ३ ॥
धूण खड़ग जोधां धणी, व्रत लीधौ तिण बेर ।
कळा दिखावण केवियां, अपणावण अजमेर ॥ ४ ॥

१—तिण सिर = उसके बाद । मरबे छात = मरबे का राजा ।

२—छत्र = बादशाह को । मद छायौ = मद से छक गया । तायौ = गर्म, तप्त । वेखतां = देखते । सपत्तौ = संपन्न हुआ, कामयाब हुआ । सैद चूक कर = सैयदों को धोके से मारकर । गहमत्तौ = गर्व से मदोन्मत्त । विदिस = कोण । क्रित = कृत्य । अभूत = अद्भुत । पंखां = पक्षवालों ने । आंणी = लाई गई । अचिंतियां = अचानक ।

३—ऊपर ऊपरा = बहुत जल्दी । पत कूरमां = कछवाहों के मालिक जयसिंह को ।

४—धूण = धूनकर, कँपाकर । केविया = शत्रुओं को । अपणावण = अपनाने को ।

चडियौ पाछै चक्रवति, मारू कातिक मास।
महि पख द्वादसि मेड़तै, नरपति कियौ निवास॥ ५॥
ऊपर ग्रीखम आवियौ, उर नह धरी अवेर।
चडियां घोड़ां चापड़ै, अजै लियौ अजमेर॥ ६॥

छंद बेअक्खरी

अजन अजैगढ चढि अपणायौ
दोय राहां अचरज दरसायौ।
तज गढ कोट गया सह ताई
वाधै हिंदुसथान सवाई॥ ७॥
सुर झालर घंटा सरसाया
मह जीतां सुरबांग मिटाया।
सिव हरि सकत सेव सरसाई
मीर पीर त्यां पूज मिटाई॥ ८॥
सुणिया जाब नवाबां सारां
पूगी साह घरै पोकारां।
महा सोक पड़ि सैद मुगल्लां
मुरझांणा सुण काजी मुल्लां॥ ९॥

५—चक्रवति = (चक्रवर्ती) राजा। मारू = मारवाड़ का।

६—अवेर = देरी। चडियां घोड़ां = बहुत जल्दी। चापड़ै = दबाकर।

७—अजैगढ = अजमेर। दोय राहा = दोनों मार्ग, हिंदू मुसलमानों ने। सह = सब। ताई = लड़नेवाले। वाधै = बढ़ने लगा।

८—सुर = देवता। सरसाया = अच्छी तरह बजने लगे। मह = (महीपति) राजा के। सुरबांग = मुल्ला की बाँग की आवाज। पूज = पूजा।

९—पोकारां = पुकार।

जवन पखी राजा उर जळिया
किलबां अनम सुणे बिळकुळिया ।
इळ ईरान मकै लग वाकौ
जवनां सुण उर पड़े जराकौ ||१०||

दुहा

खुरासांण खट खंड मैं, सुणिया सै असवाल ।
अपणायौ अजमेर नूं, माल जिँही अजमाल ||११||
आयौ वरस अठंतरौ, वणि आयौ वरसात ।
इळा अजैगढ उग्रहै, रहै कमंधां छात ||१२||
कीरत अजन कमंध री, पसरी प्रथी प्रमाण ।
दहल खमे रहिया दिली, हिंदू मूसलमाण ||१३|

इति श्री अजमेर लीयौ सो विध तेत्रिंस प्रकास || ३३ ||

१०—जवन पखी = यवनों के पक्ष के । किलबां = मुसलमानों ने । अनम = नहीं नमनेवाला । बिळकुळिया = व्याकुल हो गए । मको = मुसलमानों का महान् तीर्थ । लग = तक, पर्यंत । वाकौ = वार्ता । जराकै = चोट ।

११—सै = यह । असवाल = सवाल, प्रश्न । माल = रावळ मल्लिनाथजी । जिँही = वैसा ही ।

१२—अजैगढ = अजमेर । उग्रहै = उगाही करता है ।

१३—प्रथी = पृथ्वी । दहल = भय ।

दुहा

सोच महंमद साह नूं, मोच थयौ मन मद्द।
प्रात ससोकित ज्यूं दिपह, राति अनंद रवद्द॥ १॥
सोक निवारण साह रौ, दिल्लो चै दरगाह।
खान मुदप्फर बोलियौ, खूसै बाह सगाह॥ २॥
असपत बीड़ौ अप्पियौ, उर थप्पियौ समास।
विदा कियौ वरसात मै, प्रगटी वात प्रकास॥ ३॥

छंद जात हणूफाल

अति जोम छिब असमांन, खग तोल मुदफर खांन।
द्रढ वचन दाख दुगाम, सभि वार तीन सलाम॥ ४॥
उमराव खान अनेक, इण तौर और न एक।
सुणि खूंद वदन सराह, ग्रहि गयौ खान सगाह॥ ५॥
जस प्रगट अति बळ जांण, विसतार पुरजण वांण।
.. .. ॥ ६॥

१—मोच थयौ = मिट गया, नष्ट हो गया। ससोकित = शोक-सहित। दिपह = दीपक।

२—खूसै बाह = हाथ बढ़ाकर।

३—अप्पियौ = दिया। समास = शांति।

४—जोम = बल, जोश। छिब = शोभा देता हुआ, छूता हुआ। खग = तलवार। दाख = कहकर। दुगाम = दुर्गम, महावीर। वार तीन = तीन बार।

५—खूंद = बादशाह ने। वदन सराह = मुख से प्रशंसा की। ग्रहि = घर।

६—पुरजण = नगर के लोग। वांण = वाणी।

दुहा

निस वसियौ सुख ग्रेह निज, वाधे रमणि विलास ।
अरज करै मुख औरतां, हित रिति गरम हुलास ।। ७ ।।
जुध हिंदू सब जीपकै, उरि जिन धरौ अवेर ।
तब तुम वेग बुलाइयौ, हम परखैं अजमेर ।। ८ ।।
राति विहांणी एण रसि, प्रात हुवौ असवार ।
मेछ अभंग महाबळी, आरुहि संग अपार ।। ९ ।।
सेन सगाह सनाह सूं, पाखरिया धजराज ।
वहै गुराबा लादिया, आरावा गजराज ।।१०।।
आया दूत उतावळा, सुणी अजै समरत्थ ।
भ्रम पडियौ मोटां भड़ां, कोटां पूगी कत्थ ।।११।।

छप्पय

आवी खबर अचिंत प्रगट चिंता भूपाळां
दळ असेस दुरवेस सुणे विगती अड़साळां ।

७—ग्रेह=(गेह) घर । वाधे=बढ़ा । रमणि=स्त्री । रिति=(रीति) तजवीज । गरम=अधिक ।

८—जीपकै=जीतकर । जिन=मत ।

९—विहाणी=गई, समाप्त हुई । एण रसि=इस प्रीति से । आरुहि=सवार ।

१०—सनाह=कवच आदि धारण करना । पाखरिया=पाखर डाले हुए । घोड़े के कवच को पाखर कहते हैं । धजराज=उत्तम घोड़े । वहै=चलते हैं । गुराबा=घोड़े पर की छोटी तोप । आराबा=गुराबा से बड़ी तोप ।

११—अजै=महाराजा अजीतसिंह । कोटां=किलों में । कत्थ=(कथा) वार्ता ।

१२—असेस=समस्त । दुरवेस=मुसलमान । विगती=विमत, वृत्तांत ।

पवँग जूथ पक्खरां अंग बगतरां असल्ली
मगि दुझाल हल्लिया ढाल जेहा पुर दिल्ली ।
वीणार पांण खुरसांण विच रस कुरांण रत्ता रहै
सुरतांण सोच भंजण सग्रह कमध पांण परखण कहै ॥१२॥
उभै दुंब आचरै एक करि कंब कबाबे
चंपे चंगुल ग्रीव तजै दुरजीव सिताबे ।
करि खंचे धानंख चिलै बँधि टंक अढारै
ग्रहि मूंठी आछटै दंत गजराज उखारै ।
विसतरी कत्थ जण जण वदन अरि मति घणां अभावियौ
एसा जवान लीधां अडर खान मुदफ्फर आवियौ ॥१३॥

दुहा

नरपत्ती नव साहसां, कोट धरत्तो कज्ज ।
अवतारी अभसाह नूं, लेख विचारी लज्ज ॥१४॥

अड़साळां = ईर्ष्यावालों का । पवँग = घोड़ों का । पक्खरां = घोड़े का कवच । दुझाल = वीर, बहादुर । ढाल जेहा = ढाल के जैसे रक्षा करनेवाले । वीणार = धारण करनेवाले । पांण = बल । खुरसांण = मुसलमान । रत्ता रहै = अनुरक्त रहते हैं । सग्रह = दृढ़ । परखण = परीक्षा करने को ।

१३—उभै = दो । दुंब = थुईवाला मेष । आचरै = खा जाते हैं । एक करि० = एक का तो कंब और कवाव करके । चपे = दबाते हैं । ग्रीव० = गर्दन । दुरजीव = जिंदगी, जीवन । सिताबे = जल्दी । करि = हाथ से । चिलै = धनुष की डोरी, प्रत्यंचा । ग्रहि० = पकड़कर मुष्टि का प्रहार करते हैं । अभावियौ = अच्छा नहीं लगा, मन में अच्छा न लगनेवाला ।

१४—नव साहसां = राठोड़ों का । अवतारी० = अवतार-रूप अभयसिंह को देखकर यह विचार किया कि यह लज्जा रखनेवाला है ।

मन भायौ अजमल्ल रै, तेड़ायौ अभसाह ।
नृपति सभा आयौ निजर, पायौ ज्यास अग्राह ॥१५॥
अभौ निरक्खै ऊमरा, परखै भूप प्रकास ।
जांणि पलट्टां थंभवै, एकण पाणि अकास ॥१६॥

छप्पय

अभौ छभा ईखियौ ज्यास लेखियौ जणोजण
कांण मळण केवियां जांण ध्रम कांम अरज्जण ।
वय किसोर ऊतरै जोर जोबन परगट्टै
अणमायौ अंब मैं ति किरि रतनाकर तट्टै ।
वृति आदि सस्त्र विद्या वरण उच्छव वादि अघट्टियां
परकास उरध रवि पेखियां किरि मधु मास पलट्टियां ॥१७॥

१५—मन भायौ = मन में अच्छा लगा । तेड़ायौ = बुलाया । ज्यास = धैर्य । अग्राह = पूर्ण ।

१६—निरक्खै = देखा । ऊमरा = उमरावों को । परखै = परीक्षा की । जांणि = मानो । पलट्टां = एक हाथ से आकाश को पलट भी दें, और थांभ भी लें ।

१७—छभा = सभा में । ईखियौ = देखा । ज्यास = धैर्य । लेखियौ = आ गया । जणोजण = प्रत्येक को । कांण० = शत्रुओं का मान नष्ट करने के लिये । ध्रम काम = युधिष्ठिर के लिये । वय = अवस्था । किसोर = १० साल से १५ वर्ष की उम्र । अणमायौ० = महाराजकुमार अभयसिंहजी के यौवन का वेग ऐसे बढ़ा कि मानों समुद्र के तट पर अमाप पानी का वेग बढ़े । वृति = मन की वृत्ति । अघट्टियां = अद्भुत । परकास० = महाराजकुमार का ऐसा प्रकाश था, मानों चैत्र मास के पलटने पर सूर्य का प्रकाश होता है ।

इळाकंत उध्वरै पुत्र बळवंत परक्खे
कृति दुगांम रिण कांम नूर मुख माम निरक्खे ।
तूं सकाज तप तेज प्रगट जुध काज प्रगट्टां
कमधराज थिरकरण आज ग्रहि लाज अघट्टां ।
कुळ तूझ विना जायै कुणै मेछ महण रण मत्थियौ
ईखे समाथ अभसाह नूं प्रथीनाथ पारत्थियौ ॥१८॥
श्रवण वयण संभळे नयण विळकुळे निरंमळ
जोत वदन झळहळे लाज भुजि भळे स उज्जळ ।
सूर विरत सल्लळे ज्वाळ भळहळे फुणंधर
कनां प्रलैकृति करण किरण परजळे दिणंकर ।
हरनेत्र जळे ज्वाळा विहद श्रीकजि अमरष संमिळे
अजमल्ल वळे दीठौ अभौ देस ढाळ मारू दळे ॥१९॥
जिसौ मेरु कंपवे फेरि सायर गिर बंधै
एकछत्र करि भोम भार धारै निज कंधै ।

१८—इळाकत=पृथ्वी का पति (महाराजा अजीतसिंह)। परक्खे=देखकर। कृति=काम। दुगाम=दुर्गम। नूर=लावण्य। माम=उदारता। ग्रहि लाज=लज्जा रखो। अघट्टां=अद्‌भुत, अघटित। कुळ०=तेरे बिना कुल में कौन जनमा है जो युद्ध करके म्लेच्छ-समुद्र का मथन करे। ईखे=देखकर। पारत्थियौ=प्रार्थना की।

१९—श्रवण=कानों से। वयण=वचनों को। संभळे=सुनकर। विळकुळे=व्याकुल हुए। झळहळे=चमकने लगी। भळे=फिर। सूर विरत सल्लळे=वीरता की वृत्ति इस तरह बढ़ी कि मानों सर्प की ज्वाला प्रज्वलित हो। कनां=किंवा। प्रलैकृति करण=प्रलय का काम करने के लिये। परजळे=प्रज्वलित हो। दिणंकर=सूर्य की। श्रीकजि=लक्ष्मी के वास्ते। अमरष=(अमर्ष) क्रोध। वळे=फिर।

२०—सायर=(सागर) समुद्र को। खंड=नव खंड। डंड=(दंड)

खंड डंड वसि करै जिसौ ब्रहमंड अधारै
खुरासांण पालटै जिसौ हिँदवांण उबारै।
ईखियौ छुभा अजमाल री अजै छुभा सम अक्खियौ
जवनां गुमांन भाजै जिसौ पूरै ग्यांन परक्खियौ ॥२०॥

दुहा

अजै विदा कीधौ अभौ, परखि कळा अणपार।
आठ मसल बळ आगळा, सझि दल हुवा तयार ॥२१॥
उण विरियां अभसाह रौ, नरपति पेखै नूर।
सर सोखिम करिवा सत्रां, ग्रीखम सूर करूर ॥२२॥
भड़ां दुबाहां वंकड़ां, हुई सनाहां सत्थि।
सेध निवाहां सूरमां, राहां वेध अरत्थि ॥२३॥
मेछ करारां ऊपरां, हुवा नगारां सद्द।
दळ हळवळ झाका दियां, राकां जांण समंद ॥२४॥
मांगी सीख नरिंद सूं, दीन्ही वीख कुँवार।
जांणै बंध पलट्टियौ, सिंध प्रलै ची वार ॥२५॥

दंड देकर। खुरासाण पालट = बादशाह को बदल दे। ईखियौ = देखा। सम = समक्ष में। अक्खियौ = कहा।

२१—आठ मसल = आठों मिसलों के सरदार।

२२—नूर = तेज। सर सोखिम० = शत्रुरूपी सरोवर को सुखाने के लिये मानों ग्रीष्म ऋतु का क्रूर सूर्य।

२३—दुबाहां = वीर, बहादुर। सनाह = कवच आदि युद्ध का वेष। सेध निवाहा = कार्य सिद्ध करनेवाले। युद्ध के मार्ग के लिये।

२४—करारां = बलवानों पर। सद्द = (शब्द) आवाज। हळवळ = ताकीद, त्वरा। झाका दिया = दिखाई दिया। राका = पूर्ण चंद्रवाली पूर्णिमा।

२५—वीख = (वीक्ष्य) देखकर। बंध पलट्टियौ = बंध टूट गया। सिंध = (सिंधु) समुद्र। वार = समय।

छप्पय

हुवा नगारां सद्द हुए तड़भड़ नर इंदां
अभौ हुवौ असवार हुवौ जैकार कविंदां।
परा हुए दहु पंति हुए मुजरा सामंतां
हुवौ व्योम धूंधळौ हुवौ कमि जोर असंतां।
हिंदुवौ छात राजी हुवौ ईख हुई निरभै इळा
उतपात हुवौ पुर आसुरां वात हुई आठूं वळा ॥२६॥

दुहा

ऐराकी मागां किया, सुभट कजाकी सत्थ।
ऐवाकी साहां अभौ, नाकी हिंदु समत्थ ॥२७॥
त्रीस हजार तुरंग नर, मारू धर वीणार।
धड़हड़ियौ मंडळ धरणि, चडियौ राज कुँवार ॥२८॥

छंद भुजंगी

अभौ चालियौ आसुरां सीस अैसौ
जळंनिद्ध उच्छेदियां बंध जैसौ।
तुरंगां वणै तेज अंगां अतारौ
नहीं जागियां सोर सूं जोर न्यारौ ॥२९॥

२६—तड़भड़=ताकीद। दहुपंत्ति=दोनों पंक्तियों में। सामंतां=सरदारों का। व्योम=आकाश। धूंधळौ=धुंधला। असंतां=दुष्टों का, शत्रुओं का। ईख=देखकर। आठूं वळा=आठों तरफ।

२७—ऐराकी=घोड़ों को। मागां किया=मार्ग पर चलाया। कजाकी=मारनेवाले। ऐवाकी०=बादशाहों को भयभीत करनेवाला। नाकी हिंदु=हिंदुओं की नाक रखनेवाला।

२८—वीणार=धारण करनेवाले, रखनेवाले। धड़हड़िया=उत्साहपूर्वक चले।

२९—आसुरां=मुसलमानों के। जळंनिद्ध=(जलनिधि) समुद्र। अतारौ=अत्यधिक। जागियां सोर सूं=बारूद से चमकने पर। न्यारौ=जुदा।

अड़ाभीड़ वंकां भड़ां कोप ओपै
कळा जांणि त्यांरी न को प्राण कोपै।
भुजा जीमणै ओपि चांपा भुजाळा
जिसा मौत मेछ्ढां करन्नोत ज्वाळा ॥३०॥
जिकां भीड़ कूंपा तिकां कौण जीपै
दळां ढाळ ज्यौं जादमां वेळ दीपै।
अणी रूप जैता वणै भूप आगै
वधै अग्गि जोधाहरा खग्ग वागै ॥३१॥
महा जोस दूदा चलै रीस मत्ता
रसा काजि ऊदा वडी लाज रत्ता।
सदा जोतधारी करम्मोत संगे
अणी रूप सकतीपुरा भूप अंगे ॥३२॥
मिळे जैतमाला मुदी वेळ माला
वरापूर सूरां धजा संगि वाला।

३०—अड़ाभीड़ = सजे हुए। ओपै = शोभा देता है। कळा० = उनकी सामर्थ्य के। जानकर किसका जी कोपयुक्त नहीं होता है। चांपा = चांपावत राठोड़। भुजाळा = बलपूर्ण भुजावाले। करन्नौत = करणोत राठोड़।

३१—जिकां = जिनके। भीड़ = सहायक। कूंपा = कूंपा के वंशज राठोड़। जींपै = जीत सकता है। जादमा = यादववंशी। वेळ = सहायता। अणी = (अनीक) सेना, अथवा अणि अर्थात् अग्रभाग। जैता = जैतावत राठोड़। जोधाहरा = राव जोधा के वंशज। खग्ग = तलवार। वागै = लड़ते हैं।

३२—दूदा = मेड़तिया राठोड़। रीस = क्रोध से। रसा = पृथ्वी। ऊदा = ऊदावत राठोड़। करम्मोत = करमसोत राठोड़। सकतीपुरा = चौहान क्षत्रिय।

३३—जैतमाला = जैतमालोत राठोड़। मुदी = मुख्य, प्रधान। माला = रावळ मल्लिनाथजी के वंशज। वरापूर = बलपूर्ण।

अणी सांमि आगै इसै कांम ईंदा
वणे ऊहड़े वकडा क्रीत विंदा ।।३३।।
भड़ां सार खूमांण पंमार भेळा
सिधा सूर सोनिंगरा त्यौं समेळा ।
खगे वंकड़ा देवड़ा और खीची
अणी धांधले आदि सूं रीत ऊँची ।।३४।।
करेवा दळां आगळी सांमि काजा
दिपै जोड़ गोगा दियां देवराजा ।
फबै मंडळा खेतसी पाडिहारं
वधै चाड राजा तणै वार वारं ।।३५।।
रिधू लाज पाता भदा काजि रूपा
इकां एक वाधू अनूपे अनूपा ।
इसी भांति छत्रीस वंसां उजाळा
सदा सांमि चै कांमि सोभा सिघाळा ।।३६।।

सूरा धजा = शूरवीरों में ध्वजा-रूप। बाला = बाला राठोड़। सांमि आगै = मालिक के आगे। ईंदा = पड़िहार राजपूतों की एक शाखा। ऊहड़े = ऊहड़ राठोड़। क्रीत = कीर्ति। विदा = दूलह, वर।

३४—खूमांण = सीसोदिया राजपूत। पंमार = परमार राजपूत। सिधा = सिद्धहस्त। सोनिगरा = चौहानों की एक शाखा। समेळा = शामिल। देवड़ा = चौहानों की एक शाखा। खीची = चौहानों की एक शाखा। धांधले = धांधल राठोड़ों की एक शाखा।

३५—गोगा = गोगादे राठोड़। देवराजा = देवराजोत राठोड़। फबै = शोभा देते हैं। मंडळा = राठोड़ों की एक शाखा। खेतसी = खेतसीयोत राठोड़। पाडिहारं = पड़िहार राजपूत। चाड = सहायता।

३६—रिधू = ऋद्धिवाला। पाता = पातावत राठोड़। भदा = भदावत राठोड़। रूपा = रूपावत राठोड़। इकां एक वाधू = एक से एक बढ़कर। अनूपे = अनुपम। सिघाळा = श्रेष्ठ।

इसा व्यास प्रोहित्त मंत्री अघट्टं
भुजां भार धारै अणी बारहट्टं।
अड़ाभीड़ रावत्त चेला अबीहा
सिधी अब्ब आरब्ब सो ग्रब्ब सीहा ॥३७॥
वणै फौज राजा तणै काजवाळी
कवी क्रत्त जैसी फुणां पत्ति काळी।
कजाकां भड़ां दौड़ियौ रूप कैसौ
अभौ नक्र वीछोड़वा चक्र अैसौ ॥३८॥

दुहा

आ हलकारां ऊचरी, असुरां धरी न आंन।
पैसि गयौ आंबेर मै, नासि मुदप्फर खांन ॥३९॥
मेल गई दुसमारगे, रात्यां दिल्ली राह।
.. .. सोच कियौ जैसाह ॥४०॥

३७—अघट्टं = अद्भुत। अड़ाभीड़ = सजे हुए। रावत्त = भीलों का मुखिया। चेला = राजाओं के दासीपुत्र। अबीहा = भय-रहित। सिधी = सिद्धि। अब्ब = सर्व। आरब्ब = युद्ध में। ग्रब्ब = गर्व। सीहा = सिंह के समान गर्ववाले।

३८—तणै = (तनय) पुत्र। कवि क्रत्त = कवि का कृत्य। फुणां पत्ति काळी = काले सर्पों के फनों की पक्ति हो जैसी। कजाकां = मारनेवाले। नक्र० = (मकर) मगर को अलग करने के लिये विष्णु का चक्र हो वैसा।

३९—आ = यह। आंन = प्रतिष्ठा, इज्जत, मान। पैसि गयो = घुस गया।

४०—दुसमारगे = निर्जन मार्ग से, बुरे रास्ते से। रात्यां = रात्रि में ही। राह = मार्ग।

छप्पय

आसुर दिल्लो राह गया पगवाहि सिपाई
आब जनम उतराय लियौ नब्बाब सवाई।
सुणी विगत अभसाह थयौ ओछाह दुबाहां
पाड़ै पुर बुलबाक डाक पूगी पतिसाहां।
ससमाथ साथ भागौ सुणे दिल्लीनाथ दहल्लियौ
करि एम फतै पहली कुँवर हेवै पुर सिर हल्लियौ ॥४१॥

दुहा

अभौ प्रवाड़ां ऊधरै, कमँध अखाड़ां काज।
वणी फतै बाजा वजै, सुणी अजै महाराज ॥४२॥
अभौ कमंधां ऊचरै, कीजै दौड़ सवाय।
ल्यूं धर दिल्ली आगरै, बळि खागरै धकाय ॥४३॥
हुकम सुणे रिणमाल हर, जोध अडर जणिवार।
रण जंगां कारण हुवा, उत्तंगां असवार ॥४४॥

छप्पय

हुई दौड़ हैमरां नरां ऊधरां करारां
सेख ज्वाळ सल्लळी कनां सिव चक्ख विकारां।

४१—पगवाहि = पैदल, पैरों चलनेवाले। आब = पानी, यश। सवाई = सवाई जयसिंह, जयपुर का राजा। ओछाह = उत्सव। दुबाहां = वीर पुरुषों को। पाड़ै पुर बुलवाक = बुलानेवालों (हरकारों) को दिल्ली भेजा। ससमाथ = समथ। दहल्लियौ = भयभीत हुआ। हेवै = अब। पुर = नगर (दिल्ली) पर।

४२—प्रवाड़ां = युद्धों में। ऊधरै = ऊँचा। कमॅध = राठोड़।

४३—बळि खागरै धकाय = तलवार के बल हटाकर।

४४—रिणमाल हर = रणमल के वंशज (अजीतसिंह) का। जणिवार = जिस समय। उत्तंगां = घोड़ों पर सवार हुए।

४५—हैमरां = घोड़ों की। ऊधरां = उच्च श्रेणी के। करारां = बल-शाली, बलवान्। सेख = शेषनाग। सल्लळी = प्रवृत्त हुई।

पवन चक्क बळ पाइ लाय पावक ऊलट्टै
कना सीम ढव चूंक फूंक महणारथ फट्टै।
ऊजड़ै देस असपत्ति रा सहर नेस प्रगटै सभौ
पिसुणां अचीत पायौ प्रळै इसी रीत आयौ अभौ ॥४५॥
साहिजहां पुर प्रथम सहर उर धकै सँघारे
नारनौळ सामूळ जांणि मिलि तूळ अँगारे।
सहँस ग्राम सल्लळै जळै परजळै प्रलै जिम
धूम व्योम धूंधळौ तरिण भ्रम तोम सोम तिम।
लूटवा वधै फौजां लगस धमस तुरां भाजै धरा
मिळ चली प्रजा भंगेळ मग लग दिल्ली लग आगरा ॥४६॥
लाख नेस लूटिजै देस कीजै पुड़ ऊंधै
जितौ भूक हुय जाय सूक साहे पथ रूंधै।
एक मार चूरियां भार परवार न भाळै
करै एक पौकार दिली बाजार विचाळै।

चक्ख = (चक्षु) नेत्र। लाय = दावानल। पावक = अग्नि की। नेस = निवास-स्थानों में। सभौ = भय। पिसुणां = शत्रुओ ने।

४६—साहिजहांपुर = दिल्ली से पहले। धकै = आगे। सँघारे = नष्ट किए। सामूळ = (समूल) जड़ से। जाणि = मानो। दूल = रुई। अँगारे = निर्धूम अग्नि। सल्लळै = छोड़कर भाग गए। परजळै = प्रज्वलित हुए। प्रलै जिम = प्रलय में जलै जैसे। व्योम = आकाश। धूँधळौ = धुँधला। तरिण = (तरणि) सूर्य। तोम = (तमस्) अंधकार के कारण। लगस = कुछ, पक्ति। धमस = घोड़ों के सुमों का प्रहार। तुरां = घोड़ों के। भंगेळ मग = भागने के मार्ग।

४७—नेस = निवास। पुड़ ऊंधै = उथल-पुथल। भूक = चूर्ण। सूक साहे = तलवार उठानेवालों ने। रूंधै = रोक लिया। एक० = एक को मारकर चूर्ण करने पर। परवार = कुटुंब को। न भाळै =

आवता लखै नर नार इम भार कतार भँगेलियां
मिळि जाय महणि पावस समै जांण नदीरस जेळियां ॥४७॥
जळे सहर पुर जास निसा ओजास निहारे
साह प्रळै संपेखि सोच मद मोच सँभारे।
खंडी वन समरत्थ पत्थ निज हत्थ जळायौ
कनां लंक विण संक हणू वैसंनर लायौ।
दीपियौ एम मंडळ दिली देख भ्रमै दुरमत्ति नूं
तन दहै अगनि ज्वाळा तणा ओझाळा असपत्ति नूं ॥४८॥

छंद रोमकंद

पिड़ चूर दिली धर साहजहांपुर, चीत लगे हर प्रात चड़े।
इळ मूळ जड़ां नारनौळ उखेड़े, पौळि दिली दुख रौळ पड़े ॥४९॥
भजि जात प्रजा मय वात भॅगेळां, पाटण तूंअर कंप पुरे।
वडगूजर जाट अहीर तजे नळ, दाट लगा पुर राट दुरे ॥५०॥

नहीं देखता है। पाकार=पुकार। भँगेलियां=भागनेवालों की। महणि=समुद्र में। नदीरस=नदियों का जल।

४८—जास=जिसका। निसा=रात्रि में। ओजास=उजाला, प्रकाश। निहारे=देखा जाता है। मोच=छोड़कर। सँभारे=याद करता है। खडी वन=खाडव वन, यह इंद्र के अधिकार में था। अग्नि की प्रार्थना से अर्जुन ने इसे जलाया था। पत्थ=(पार्थ) अर्जुन ने। हणू=हनुमान् ने। वैसंनर=अग्नि। दुरमत्ति नूं=दुर्बुद्धि, शत्रु को। ओझाळा=ऊर्ध्व ज्वाला, फटकारा।

४९—पिड़=युद्ध से। साहजहाँपुर=दिल्ली। चीत=चित्त लगा। हर=उसी इच्छा से, मन की प्रेरणा से। पौलि=दरवाजा। रोळ=उपद्रव हुआ।

५०=मय=साथ, संग। भॅगेलां=भागनेवालों की। पाटण तूंअर=तुंवरों की पाटण। दाट लगा=फौजों का समूह जा पहुँचा। राट=राजा। दुरे=छिप गए।

वधि चाडिय खैंग उरे रयवाड़िय, जोखम झंड सराय जदी ।
पुर साह फरक्क तणौ दस पैडां, वीखरि चक्क अलावरदी ॥५१॥
धुबि झाळ वराळ पुरा धूंवाड़े, ज्वाळ कराळ विसाळ जळै ।
इक सूर लड़ै रिण चूर हुवै, अरि पूर धकै इक दूर पुळै ॥५२॥
कळ वीछुड़ि एक वसै गिरि कंदरि, मंदिर भाळक एक मरै ।
ग्रहि त्याग झुरै धन एक गमाय रु, के रिध आदरि संधि करै ॥५३॥
चखि पेखै साह धरा खगचाळौ, जिंद विना कळ नींद जुई ।
मचि दुंद अपार दिली पुर मंडळ, हाहाकार पुकार हुई ॥५४॥

छप्पय

औद्रकै आगरौ हुई दिल्ली हलचल्ले
जाट वाट जूजुवा देस वैराट दहल्ले ।
मुगल दलतां (त) मैवात, वात अपी (प्पी) चहुवाणां
रेस खमे छंडिया देस आहीर पठांणां ।

५१—वधि चाडिय० = रेवाड़ी शहर के उरली तरफ घोड़ों पर चढ़कर आगे बढ़े। पुर साह फरक्क तणौ = फर्रुखाबाद। वीखरि = इधर-उधर हो गई, तितर-बितर हो गई। चक्क = फौज। अलावरदी = अलावर्दी नामक नवाब की।

५२—धुबि झाळ = ज्वाला बढ़ने से। वराळ = दरारें पड़ गईं। धूंवाड़े = धूम से। धकै = आगे। पुळै = भागता है।

५३—कळ = (कलह) युद्ध। वीछुड़ि = विमुक्त होकर। भाळक = रीछों के घरों में। ग्रहि त्याग = संन्यास लेकर, भिखारी होकर। झुरै = लालायित होते हैं। के = कई। रिध आदरि० = धन अर्पण करके सुलह करते हैं।

५४—खगचाळौ = युद्ध, तलवार का चलना। दुंद = (द्वंद्व) उपद्रव, युद्ध।

५५—औद्रकै = भयभीत हुआ। जाट० = जाटों के मार्ग अलग अलग हो गए। वैराट देस = जयपुर राज्य का एक प्रांत। दलतां = नाश

धूंसतै नारनौळां धरा जवन गया अण जूटिया
ऊकळै पेखि पतिसाह उर साहिजहांपुर लूटिया ॥५५॥

दुहा

दिल्ली पौळि पचीस दिन, प्रगटो भै अणपार ।
कटक सँभाया यूं कहै, आया राजकुँवार ॥५६॥
अति कंदळ करतां इळा, मचि धूंकळ अनिमंध ।
कुळ दोनूं दिल्ली कहै, धूंकळसिंघ कमंध ॥५७॥
अभौ त्रिवेणी आवियौ, दिल्लीवाळे दाट ।
नेस प्रजाळै दुज्जणां, देस करै दहवाट ॥५८॥
गांज मगज पतसाह रौ, भांज मुदप्फर खांन ।
अभौ त्रिवेणी आवियौ, जांणी वात जिहांन ॥५९॥
धनि आखै सारी धरा, मनि कांपै महमंद ।
साकाबंध कमंध रा, वाका हद्दि समंद ॥६०॥

इति श्री महाराज अभैसिंघजी रा परम जस राजरूपक मैं
मुदप्फरखान भागो नै दिल्ली ताईं देस मारिया
चतुस्त्रिंस प्रकास ॥ ३४ ॥

* * *

करते । मैवात = मैवाती । रेस खमे = पराजय, हारकर । धूंसतै = विध्वंस करते । अण जूटिया = बिना लड़े । ऊकळै = तप्त हुआ ।

५६—पौळि = दरवाजा । भै = भय । कटक सँभाया = फौज के द्वारा पकड़े हुए । यूं = ऐसे ।

५७—कदळ = नाश । अनिमंध = अपार ।

५८—त्रिवेणी = प्रयागराज, जहाँ गंगा यमुना और सरस्वती का संगम होता है । दाट = दबाकर । नेस = घर । दहवाट = नष्ट किया ।

५९—गांज = नष्ट करके ।

६०—साका बंध = युद्ध करनेवाले राठोड़ का ।

छंद बेअक्खरी

मन सुणि सोच थयौ अरि मोटां
कथ प्रगटै देसां गढ कोटां ।
ईखे कमधां जोर अनोखौ
धूजै साह विचारै धोखौ ॥ १ ॥
अभौ प्रगटियौ गुणां अभंगां
मंडळ दिली कियौ दहमंगां ।
अजै तखत राजा अपणायौ
अभौ मुजफ्फर ऊपर आयौ ॥ २ ॥
यौं पतिसाह विचार उचारै
सुणतै जवन तणै दळ सारै ।
महि सुण सगह प्रवाड़ां मोटां
कीधौ हरख धणी नवकोटां ॥ ३ ॥
इण परि अभौ त्रिवेणी आयौ
जोस खळां दळि रोस जणायौ ॥
देखे सैद समथ पथ दोई
सुणि सुणि अचरज थया सकोई ॥ ४ ॥

१—ईखे = देखकर ।

२—दहमंगां = नष्ट किया । अपणायौ = अधीन किया ।

३— प्रवाड़ां = युद्धों को । धणी नवकोटां = मारवाड़ का राजा ।

४—इण परि = इस तरह । सैद० = दोनों सैयद भाइयों ने इस समर्थ मार्गवाले महाराजकुमार को देखा । सकोई = सब ।

दुहा

धरि उच्छव पाटण धणी, तूंवर बगसीरांम।
अधिपति परणावण अभौ, तुरत मतौ धरि तांम ॥ ५ ॥
विवध उतारे वीनती, धारे निजर तुरंग।
लगन वँदायौ तूंवरां, पायौ समै सुरंग ॥ ६ ॥
बेटी बगसीरांम री, काम प्रिया अवतार।
राज रमणि वर प्रांमियौ, श्री महाराजकँवार ॥ ७ ॥
परणीजै खाटू प्रथम, उच्छव सूं अभसाह।
विदा किया फिर तूंवरां, दाखे प्रीत अथाह ॥ ८ ॥
तूंवर पाटण मेलिया, अभै करे अभसाह।
सांभरि सिर आयौ सगह, नरपति विरुद निवाह ॥ ९ ॥
अब आयौ सांभर अभौ, जवन किया खग जेर।
सकबंधी वाजा सुणै, महाराजा अजमेर ॥१०॥
कीरत राजकँवार री, प्रगटी प्रथी प्रमांण।
लीण थया कूरम लखे, खीण थया खुरसांण ॥११॥

५—परणावण = ब्याहने के लिये। मतौ धरि = विचार किया। तांम = तब।

६—विवध० = अनेक प्रकार से विनती करके मुकाम करवाया। लगन वँदायौ = विवाह का दिन लिखकर दिया।

७—काम प्रिया अवतार = कामदेव की स्त्री (रति) का अवतार थी। प्रांमियौ = पाया।

८—खाटू = ग्राम का नाम। पाटण का स्वामी तुंवर बगसीराम खाटू में अपनी कन्या को लेकर आया और वहीं विवाह हुआ। दाखे = दिखलाकर।

९—मेलिया = पहुँचा दिया। अभै = निर्भय करके। सांभरि = नगर का नाम, जहाँ पर जोधपुर और जयपुर दोनों का अधिकार है।

१०—सकबंधी = सदा संग्राम करनेवाला।

११—लीण थया = लीन हुए, छिप गए। कूरम = कछवाहे।

छंद बेअक्खरी

सांभर पुर नौबत निहसंतां
वड सुख हिम रित सिमरि वहंतां ।
अभो दळे मेळियां अथाहां
सोभै मांण मळण पतसाहां ॥१२॥
सहर लदांणै सिंघ सुरोतरि
कुळ सिणगार नरूकै केहरि ।
सुज तिण पुत्री परम सुसीळा
चित पतिवरत निवाहक चीला ॥१३॥
विध जुत कूरमराज विचारे
श्रीफळ कंचन रतन सिंगारे ।
सुभ दिन लगन घड़ी ले सुंदर
वर मालियौ अभो प्रथमो वर ॥१४॥
विप्र विमळ मिळि लगन वँदायो
उच्छव उरि दूलह चै आयौ ।
सोभ सरस वणि जांन सवाई
सुर नौबत वाजै सैहनाई ॥१५॥

१२—नीहसता = बजते । हिम रित = हेमंत ऋतु । सिमरि = स्मरण करके । वहंतां = चलते । मांण मळण = मान भंग करने को ।

१३—सिंघ = केसरीसिंह नरूका वंश का क्षत्रिय । सुरोतरि = कल्पवृक्ष । चीला = मार्ग ।

१४—श्रीफळ कंचन = सोने से मढ़ा हुआ नारियल । राजाओं की शादी का नारियल सुवर्ण से मँढ़ा हुआ दिया जाता है । वर मालियौ = वर को स्वीकृत किया ।

१५—लगन वँदायौ = वैवाहिक दिन का लेखपत्र दिया । चै = के । जान = बरात । सुर = स्वर के साथ । सैहनाई = वाद्य-विशेष ।

मन हरखे तन उच्छव मोटै
कियौ वणाव अभै नवकोटै।
सुरँग वसन सुंदर तन सोहै
वेखि रूप रति भूप विमोहै ॥१६॥
केसरि अतर गुलाब कपूरै
प्रगट सुगंध रही घट पूरै।
कड़ि सोहै तरवार कटारी
झलकि रहे मणि कुंदण भारी ॥१७॥
सुंदर पाघ मौड़ सिर सोहै
मुगति पंति लख जगत विमोहै।
वचन सहास हुलास विहारै
नयण हरख जुत भिरत निहारै ॥१८॥
असि आरुहियौ वंस उजागर
किरि रजनी प्रगटौ भासंकर।
सोभै दूलह रूप सचोपै
इम स्रब जान परम छबि ओपै ॥१६॥

१६—वणाव = तैयारी। वेखि = देखकर। रति भूप = कामदेव।

१७—घट = शरीर पर। कड़ि = कमर में। झलकि० = रत्न और सुवर्ण से मढ़ी हुई तलवार और कटारी चमक रही है।

१८—मुगति पंति = मोतियों की माला को। लख = देखकर। हुलास = आनद। भिरत = मिलने पर।

१९—असि = घोड़े पर। आरुहियौ = सवार हुआ। भासंकर = (भास्कर) सूर्य। सचोपै = विस्मय-रहित। स्रब = (सर्व) सब। ओपै = शोभा देती है।

आगम आवण हरख उमंडे
मांडहि कोड नरूकां मंडे।
छत्रपति हित मारग छड़काया
विवधि राज मगि फूल विछाया ॥२०॥
सूंधै दासि महल सुख सेवै
अगर धूप लोबान उखेवै।
चौक मुकत कस्तूरी चंदण
आरोपे वेदोकति अंगण ॥२१॥
प्राची सोध धरे दिव पंडित
अष्ट दिसा पढि मंत्र अखंडित।
कनक रतन तोरण सुभकारी
सुंदर चित्र पौळि सिणगारी ॥२२॥
सुभ छवि मांडह नयर सचेळौ
सुर वृति मिलण थयौ सांम्हेळौ।
... .
... . ॥२३॥

२०—आगम० = आने के समय। उमंडे = उमड़ा, बढ़ा। मांडहि = ब्याही जानेवाली कन्या के पिता का घर। कोड० = नरूको ने मन में उत्साह किया।

२१—सूंधै = (सुगंधि) पानड़ी आदि की सुगंध। उखेवै = अग्नि पर रखकर जलाते हैं। मुकत = (मुक्ता) मोती। आरोपे = खड़े किए। वेदोकति = (वेदोक्ति) वैदिक विधि से।

२२—प्राची सोधि = गणित-विद्या से पूर्व दिशा का शोध करके। दिव = (दिव्य) अच्छे।

२३—छवि = कांति, शोभा। मांडह नयर = कन्या के पिता का नगर। सचेळौ = सपन्न, वैभवशाली। सुर वृति मिलण = देवव्रत अर्थात् गणेश-पूजा होकर। सांम्हेळौ = दोनों संबंधियो का सम्मुख आकर मिलना, स्वागत हुआ।

छप्पय

मिळ कूरम सांमुहे पेख सुख लहे अपंपर
पधरायौ तोरण सप्रेख दुति जेम दिनंकर।
ओप दीप आरती रूप देखे रायपुत्रिय
जिसौ रांम पुर जनक दरसि अभिरांम अद्वितिय।
बिळकुळे राजरमणी वदन निरखे रूप नरच्यंद रौ
जांणे विकास प्रांमे जळज देखि प्रकास दुडिंद रौ ॥२४॥
श्रुति वायक सुभ मंत्र तवे फल दायक तोरण
पधरायी परणवा अभौ आयौ राय अंगण।
नइरत मारुत निरखि कूंण ईसान अगन कसि
वंस हरित जुत वेह दीप रस नेह असट दिस।

२४—पेख=(प्रेक्ष्य) देखकर। लहे=पाया। अपंपर=अपार। पधरायौ=प्रवेश कराया। सप्रेख=(संप्रेक्ष्य) देखकर। दिनंकर=सूर्य। ओप०=सात बत्तियोंवाली आरती की शोभा। रायपुत्रिय=राजपुत्री। राम०=जैसा जनक राजा के पुर में राम को देखा था वैसा। अभिराम=सुंदर। बिळकुळे=प्रफुल्लित हुआ। राजरमणी=रानियों का मुख। नरच्यंद रौ=(नरेंद्र) राजा का। विकास प्रांमे=प्रफुल्लित हो। जलज=कमल। दुडिंद रौ=(दिनेंद्र) सूर्य का।

२५—श्रुति०=वेदवाक्य। तवे=कहे गए, पढ़े गए। पधरायी=प्रवेश कराकर। परणवा=पाणिग्रहण किया। नइरत=(नैर्ऋत्य) दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा। कूंण ईसान=ईशान कोण (पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा) में। अगन=(अग्नि) होम की वेदी से। वेह=हरे बांसों के बीच में उपर्युपरि स्थापित, कलश। दीप०=आठों दिशाओं में स्नेह-पूर्ण दीपक रखे गए। इंद०=इंद्र दिशा

वणि जोड़ इंद सनमुख वदन दीप धरम भुज दाहिणै
जळ भूप प्रिष्ठ धारे जुगळ वामै धू अविचल वणै ।।२५।।
ऊंच लगन ग्रह उच्च वेर अब विघन निवारण
प्रसन विसन विधि प्रसन गवरि वर इंद्र ईस गण ।
धरम वरण धनपती सकति मन प्रसन सहायक
सेव पाइ सुभ मंत्र देव सगळा फळ दायक ।
जुग पांणिग्रहण हुइ वार जिण सोम महूरत सक्कवै
दुलही सजोड़ लीधा दुलह च्यारूं फेरा चक्कवै ।।२६।।

दुहा

पुत्रवती सोहागवति, पतिवरता पिण सोय ।
श्रीरांणी चूड़ौ सथिर, वाणी भणै सकोय ।।२७।।

अर्थात् पूर्व दिशा के सम्मुख मुख करके। दीप धरम = धर्म का दीपक (महाराजकुमार अभयसिंह)। भुज दाहिणै = दाहिनी तरफ बैठे। जल० = राजा की पीठ में दो जल के कलश रखे गए। धू० = दुलहिन वाम अंग में बैठाई गई।

२६—वेर = समय। प्रसन = प्रसन्न। विसन = विष्णु। विधि = ब्रह्मा। गवरि वर = महादेव। ईसगण = महादेव के गण। धरम = धर्मराज। वरण = वरुण। धनपती = कुबेर। सकति = (शक्ति) पार्वती। जुग० = वर-वधू दोनों के हाथ जोड़े गए, अर्थात् हथलेवा जुड़ा। वर का दाहिना हाथ और वधू का वाम हस्त जोड़े गए। सोम महूरत = सौम्य मुहूर्त में। सक्कवै = (शक्रपति) समर्थ राजा का। च्यारूं फेरा = अग्नि की चार परिक्रमाएँ दी गईं। चक्कवै = (चक्रवर्तीपति) चक्रवर्ती राजा ने। अथवा भामरी।

२७—सोहागवति = सौभाग्यवती। सोय = वह। चूड़ौ सथिर = विवाह के समय हाथीदाँत का चूड़ा पहनाया जाता है, जो सौभाग्य का मुख्य चिह्न है वह स्थिर रहे। सकोय = सब।

खट काष्टें निरदूख खित, आहुत घिरत कपूर।
दिव पंडित वेदी सद्रढ, सोभत अगनि सनूर ॥२८॥
संसकार श्रुतिवाण सुणि, कूरम के सक्कार।
परणावै पधरावियौ, महले राजकँवार ॥२९॥
दीपै मजलस निस दिवस, हित चित नित मनुहार।
विंद अभौ वूठौ विभै, इंद तणै आचार ॥३०॥
आस धरे आसामुखी, जेता आया ज्याग।
अभरी हुइ वळिया इता, भांणूं दूणै भाग ॥३१॥
वाजा चौसर वाजिया, जस प्रगटै जैकार।
दोन्हौ कूरम्मां दुओ, अभौ हुवौ असवार ॥३२॥
परणीजे पाधारियौ, सांभर अजन सुजाव।
जस सांभळि खीजै जवन, रीझै मुरधर राव ॥३३॥

इति श्री राजराजेश्वर महाराजा श्री अभैसिंहजी कँवर पणै
परणिया सो विगत कहो पञ्चत्रिंश प्रकास ॥३५॥

२८—खट काष्टें = छः प्रकार की समिधियाँ। निरदूख = निदूषण। खित = पृथ्वी। दिव = दिव्य। वेदी = होम करने का स्थंडिल। सनूर = प्रकाशमान।

२९—संसकार० = इस प्रकार विवाह-संस्कार हुआ। श्रुतिवाण = वेद की वाणी सुनी। कूरम के सक्कार = कछवाहे राजा का सत्कार पाया। परणावै = पाणि-ग्रहण कराकर।

३० विंद = दुलहा। वूठौ विभै = वैभव की वर्षा की अर्थात् बहुत द्रव्य दिया (चारण भाटों आदि को)। इद तणै आचार = इंद्र की तरह।

३१—आस = आशा। आसामुखी = उम्मेदवार। जेता = जितने। ज्याग = विवाह-रूप यज्ञ में। अभरी० = तृप्त होकर पीछे लौटे। भांणूं० = सूर्य से भी द्विगुण भाग्यवाला राजा था।

३२—चौसर = चारों तरफ। जैकार = जयकार, जय जय ध्वनि। दुऔ = आशा।

३३—पाधारियौ = आया। अजन सुजाव = अजीतसिंह का पुत्र। खीजै = क्रुद्ध हुए। रीझै = प्रसन्न हुआ। मुरधर राव = मारवाड़ का राजा।

दुहा

यौं वेळां वाधै अभौ, दळ भेळां दरियाव ।
ऊखेळां रीझै अजौ, मेळां मारू राव ॥ १ ॥
वीती ग्रीखम पण विध, सिर लग्गै वरसात ।
सरस वरस गुणियासियौ, सोहै संझ प्रभात ॥ २ ॥
अपणाई सांभरि अभै, अजन वणै अजमेर ।
उर झंखाणा आसुरां, जांण दवांणा मेर ॥ ३ ॥
चिंता चगथां नाथ नूं, मिटतां साथ गुमांन ।
वात करण कीधौ विदा, चेलौ नाहरखान ॥ ४ ॥
खितपति आ सुणतां खबरि, अजन हुवौ असवार ।
सांभरि आयौ सूरहर, ईखण नूर कुँवार ॥ ५ ॥
लागौ दळ साजा लियां, पूत पिता चै पाय ।
कासिप सूं मिळियौ ति किरि, सूरज तेज सवाय ॥ ६ ॥

१—यौं = इस तरह । वेळां दरियाव = समुद्र की लहरों के समान बढ़ा । ऊखेळां = युद्धों से । मेळां = त्यौहारों के मेलों से ।

२—वीती = व्यतीत हुई । सरस = अच्छा । संझ = संध्या ।

३—अपणाई = अपने अधीन की । उर = हृदय में । झांखाणा = लज्जित हुए । जाण० = मानों मेरु पर्वत से दब गए ।

४—चगथां नाथ नूं = मुसलमानों के स्वामी (बादशाह) को । चेलौ = बादशाह का दासीपुत्र ।

५—खितपति = पृथ्वीपति । सूरहर = महाराजा सूरसिंहजी का वंशज । ईखण = देखने को । नूर = तेज, प्रताप । कुँवार = महाराजकुमार का ।

६—दळ साजा = अच्छी सेना लिए । कासिप सूं० = मानों सूर्य कश्यप से मिला ।

अति उच्छव कीधौ अजन, निरखे सुतन सनीम ।
गजन जिहो सूतां सगह, सरब सपूतां सीम ॥ ७ ॥
कुळ देवां जात्रा करण, मात दरस्सण कज्जि ।
अरज हुई अजमाल सूं, मानी भूप समज्जि ॥ ८ ॥
रित सारिद वारिद रहित, आगम अग्घहण मास ।
अजन विदा कीधौ अभौ, निरखण ग्रेह निवास ॥ ९ ॥
अभौ अजैगढ आवियौ, मात मिले उर लाय ।
महारांणी चहुवांण रै, रांणी लागी पाय ॥१०॥
मात वधायौ मोतिये, पायौ हरख अपार ।
करगि सवायौ वंस करि, आयौ कुसळ कुँवार ॥११॥

छप्पय

आयौ ग्रह अभसाह अटकि फौजां उजबंकी
अवधि जेम आवियौ रांम परणे जानंकी ।
गांजि फरसि असपती भांजि धानंख मुदप्फर
मखवाळा मंडळी करे सगळा राजिंद्र ।

७—सनीम = नियम-सहित । गजन जिहो = गजसिंहजी के जैसा । सूतां = पुत्रों में ।

८—मात = माता का । समज्जि = समझकर ।

९—रित सारिद = शरद् ऋतु । वारिद = मेघ, बादल । अघहण = मार्गशीर्ष । ग्रेह = (गेह) घर का । निवास = स्थान ।

१०—अजैगढ़ = अजमेर । पाय = पैरों में ।

११—करगि = हाथ से ।

१२—ग्रह = (गृह) घर में आया । अटकि = रोककर । उजबंकी = उद्धत । अवधि = अयोध्या में । परणे = ब्याहकर । गांजि०—बादशाह-रूपी परशुराम को हराकर और मुदप्फर-रूपी धनुष को तोड़कर । मखवाळा

राजा अजीत दसरत्थ ज्यौं सुत सजीत परखे सही
वारणा लिए अभसाह रा जणणी कौसल्या जिही ॥१२॥

दुहा

कुळ देवां पूजा करै, उवरि धरै वड आस।
विवध करै रमणी वरे, निज मंदिरे विलास ॥१३॥
इळ सांभरि राजै अजौ, धूजै धाक जिहांन।
साह पठायौ मेळसूं, आयौ नाहरखान ॥१४॥
पाय लगौ भूपाळ रै, आय लगौ फिर कांन।
अरज करी नृप आसँगै, नृप सूं नाहरखान ॥१५॥
आसंगो अविचार रौ, सबळा धारै सोय।
मौत अखूटी सो मरै, करै न रक्षा कोय ॥१६॥

गाथा

राज्येंद्रो जोग्येंद्रो, संगो सांमरथ नेह एकंगो।
लेखै सेव सुहित्तं, आसंगौ नइव लेखंती ॥१७॥

मंडळी = अपनी मंडली है वही यज्ञ करनेवाले हैं। राजिदर = राजेंद्र। वारणा लिए = बलैया ली। जणणी = माता।

१३—उवरि = मन में। विवध० = स्त्री को ब्याहकर अपने घर में नाना प्रकार के भोग-विलास किए।

१४—राजै = शोभा देता है। धाक = रोब से।

१५—कान लगौ = कानाफूसी करने लगा। नृप आसँगै = साधारण राजा समझकर।

१६—आसंगो = समीप में रहने से स्वामी को साधारण समझना। सबळा० = जो सबल पुरुषों को विचार न रखकर साधारण समझ लेता है, वह आयु के न खूटने पर भी मौत से मर जाता है। कोय = कोई भी।

१७—राजेंद्रो = राजेंद्र। जोग्येंद्रो = जोगेंद्र। संगो० = इनकी सामर्थ्य बराबर है। नेह एकंगो = इनका स्नेह एक सा होता है। आसंगौ० = ये आसंगा को कभी सहन नहीं करते।

दुहा

नाहरखान गुमान सूं, साहां जोम सुणाय ।
अरज करे डेरां गयौ, सूतौ काळ जगाय ॥१८॥
आग्या पाय अजीत री, लग्गा सूर धियागि ।
सिरि डेरां दळ सल्लळे, जळे प्रलै किरि आगि ॥१९॥
वग्गी हाक बहादरां, वीछुड़ि पड़ै विसाल ।
नाराजां ऊबाणियां, खुरसाणियां कपाळ ॥२०॥
कोप अजै भूपाळ रै, जांणि प्रलै ची ज्वाळ ।
च्यार सहँस पळ च्यारि में, चूरे चामरियाळ ॥२१॥
खेड़धणी सिरि खीजियां, हुई मुगल्लां हेल ।
ज्यों गज वारि विहारतां, वीचै वारिज वेल ॥२२॥
सांभरि थाहर साझियौ, खागे नाहरखांन ।
विण वाहर वीचे गयौ, जाहर थयौ जिहांन ॥२३॥
पोस मास मुरधर पती, दोस लखै दुरवेस ।
जोस जवन्नां भंजियौ, निग्रहि रोस नरेस ॥२४॥

इति श्री महाराज अजीतसिंह जी नाहरखान मुगल नूं सांभर में मारियौ सो विगत षट्त्रिंश प्रकास ॥३६॥

१८—जोम = जोश, बल । काळ = मौत को ।

१९—धियागि = क्रोध से जलने लगे । सिरि डेरां = डेरों पर । सल्लळे = चले । जळे० = मानों प्रलय की अग्नि जलने लगी ।

२०—वग्गी = बजी । वीछुड़ि पड़ै = अलग अलग हो गए । नाराजां० = बाणों के चलाने से मुसलमानों के कपाल टूटने लगे ।

२१—प्रलै ची = प्रलय की । चामरियाळ = मुसलमान ।

२२—खेड़धणी = राठोड़ । सिरि = मस्तक पर । हेल = अनादर । गज० = जैसे हाथी जल में क्रीड़ा करते कमल की बेल को नष्ट कर देता है ।

२३—सांभरि थाहर = सांभर-रूपी थाहर (सिंह की गुफा) में । साझियौ = मार लिया । खागे = तलवार से । विण वाहर = पीछा किये बिना । वीचे गयौ = मारा गया ।

२४—दोस लखै = नाराजगी देखी । दुरवेस = मुसलमानों को । निग्रहि० = राजा ने क्रोध से दंड देकर, हराकर ।

दुहा

यों सांभरि साहां अजन, कांण न रक्खै काय ।
बेटौ चूड़ामणि तणौ, आयौ सरणि चलाय ॥ १ ॥
हिंदू लागै पागड़ै, असुरां पड़ै दहल्ल ।
हेवै पण नाकी हरण, ऐबाकी अजमल्ल ॥ २ ॥

छप्पय

सुणी वात सुविहांण पूछ खुरसांण अप्रबळ
दरद जीव मो दहै करद जिम सहै विना कळ ।
असपत्ती ऊचरै वेध छत्री विसरावो
छंडि द्वेष महि छोड भेख ग्रहि मक्कै जावो ।
अजमेर गयौ जाहर इळा, विण वाहर नाहर गयौ
गह मूझ गयौ सैंभरि गयां, ग्रेह किसूं जो नह गयौ ॥ ३ ॥
जिसौ लाय जाळियौ, फजर मिल जाय फकीरां
साह दहण सेकियौ, इसौ पेखियौ अमीरां ।

१—कांण = लिहाज । काय = किसी का । चूड़ामणि तणौ = भरतपुर के राजा चूड़ामणि का ।

२—पागड़ै लागै = पैरों पड़ गए । दहल्ल = भय । हेवै पण = अब भी । नाकी हरण = नाक लेनेवाला । ऐबाकी = जबर्दस्त ।

३—सुविहांण = प्रातःकाल में । पूछ० = महाबली मुसलमानों से पूछता है । दरद० = यह पीड़ा मेरे जीव को जलाती है । करद० = जैसे कर देनेवाला चैन के बिना पीड़ा को सहन करता है वैसे मैं पीड़ा को सहन करता हूँ । वेध = विरोध को । विसरावो = भुला दो, मिटा दो । महि = पृथ्वी को । भेख ग्रहि = फकीर होकर । विण वाहर = पीछा किए बिना । नाहर = नाहरखान । गयौ = मर गया । गह = गर्व । मूझ = मेरा । ग्रेह = घर । किसूं = कौनसा ।

४—जिसौ० = जैसा प्रातःकाल के समय फकीर मिलकर अग्नि जलाते हैं । साह० = वैसे बादशाह को अग्नि ने सेंक डाला है अर्थात् बादशाह का

मुर नवाब दर मज्झि, जाब बोलिया अतारा
कळा प्राण काबली, जांणि सजळा अंगारा।
पतिसाह पान करि अप्पियौ, करि बंगस हैदरकुली
खग प्रबल इरादिति बंद खां किया विदा पति काबली ॥ ४ ॥

दुहा

कूरमनाथ नवाब कै, साथ हुवौ जैसाह।
बावीसी बेली दिया, विदा किया पतिसाह ॥ ५ ॥
है गै दळ हळबळ हुए, दिल्ली चै दरबार।
सदी नकीबां बूबडी, लदी कतारां भार ॥ ६ ॥

छप्पय

हुई हळबळ हैमरां वणी सिंधुरां सवाहां
दसतांनां बगतरां अंग आसुरां दुबाहां।
सरळी वाण नकीब करै किरळी श्रम कायक
चड़ौ मीर चड़ चोट खड़ौ अजमेर सहायक।

भुरता कर दिया है। पेखियौ=देखा। मुर=तीन। दर मज्झि=दरगाह में। अतारा=उस समय। कळा प्राण=युद्ध के प्राण-रूप। जांणि०=मानों भभकते हुए अंगारे। करि=हाथ में। अप्पियौ=दिया। करि बंगस=बंगस जाति के मुसलमानों में हाथी रूप। काबली=काबुल का रहनेवाला।

५—कूरमनाथ=कछवाहों का मालिक। जैसाह=जयसिंह। बावीसी=बाईस सूबों की सेना। बेली=सिपाही।

६—है=घोड़े। गै=हाथी। सदी=(शब्द) आवाज। नकीबां=चोबदारों की। बूबडी=जोर से हुई।

७—हैमरां=घोड़ों की। सिंधुरां=हाथियों की। सवाहां=बलवान्। दुबाहां=वीरों के। सरळी=सरल, सीधी। करै किरळी=चिल्लाकर, जोर से। श्रम कायक=किसी को शर्म (लज्जा) हो तो। चड़ौ=चढ़ाई करो। चड़ चोट=लड़ाई के लिये चढ़कर। खड़ौ=घोड़ों को चलाओ।

चुँगलाळ प्रबल भड चंचळां लाख उभै चढि चल्लिया
मिटि जांणि लीक सातों महण हेक समुच्चै हल्लिया ॥ ७ ॥

दुहा

बावीसी जैसाह ले, चले नबाब सिताब।
सुणिया राव मँडोवरै, जोधा हरै जबाब ॥ ८ ॥
सुणे जवन दळ सांमुहो. अजन थयौ असवार।
कोस असट डेरा किया, प्रगट त्रिवेणी पार ॥ ९ ॥
इण दिस गौ सांम्हौ अजौ, छिले मुरद्धर छात।
उण दिस दळ आया असुर, किर बद्दल वरसात ॥१०॥
यौं दाखै राजा अजौ, पण बंधे भूपाळ।
हूर वरां उम्मीरजां भूं(चू)र करे चुँगलाळ ॥११॥

छप्पय

दहू दळे ऊधरा वेध निज घरां सवाया
जोस अखंडा जुड़ण दहूं झंडा दरसाया।

चुँगलाळ = मुसलमान। चंचळां = घोड़ों पर चढ़कर। लाख उभै = दो लाख। लीक = मर्यादा। सातों महण = सातों समुद्रों की। हेक समुच्चै = एक साथ। हल्लिया = चले।

८—बावीसी = बाईस सूबों की सेना। सिताब = जल्दी। मँडोवरै = मँडोवर के मालिक ने। जोधा हरै = राव जोधा के वंशज।

९—सुणे = सुनकर। साँमुहो = सामने, मुकाबले में। त्रिवेणी पार = प्रयाग के परली तरफ।

१०—इण दिस = इस तरफ। गौ = गया। छिले = जोश में आकर। मुरद्धर छात = मारवाड़ का राजा। उण दिस = उधर।

११—दाखै = कहता है। पण बंधे = प्रतिज्ञा करके। हूर = अप्सरा। उम्मीरजां = अमीर। चुँगलाळ = मुसलमान।

१२—दुहूँ दळे = दोनों सेनाओं में। ऊधरा = उच्च कोटि के। वेध = विरोध। जुड़ण = लड़ने को। दहूं = दोनों। खेम = खीमसी भंडारी।

खेम आद मंत्रियां आद माहव कमधज्जां
महाराजा तेड़िया काज पूछवा सकज्जां।
मद मोद मुदै आठै मिसल पण नव कोट परक्खियौ
अरि चूर करौ रवि चै उदै दुऐ सूर इम दक्खियौ ॥१२॥
एम तांम उच्चरै सुमत पूरण गण सायर
मौड़ खेम मंत्रियां जोड़ प्रोहत रैणायर।
चाळ बंद चक्कवै परत न लड़ै पडवेसां
धर लूटै चौफेर दाय(प) जूटै दुरवेसां।
रांणै प्रताप राव मालदे सत्र जीतां चाळां सटै॥
पण बांध विखौ भांजौ पिसण विखा वडप्पण नह घटै ॥१३॥
महाराजा जसराज साह देखे रीसायौ
ऑरँग सूँ धर अकस विखौ आधंतर लायौ।

माहव = माधोसिह आदि राठोड़। तेड़िया = बुलाया। सकज्जा = समर्थ। मद० = घमंड और हर्ष के साथ। मुदै आठै मिसल = आठों मिसलों में मुख्य। पण = प्रतिज्ञा। रवि चै उदै = सूर्योदय होते ही। दुऐ सूर = दोनों शूरवीरों ने। दक्खियौ = कहा।

१३—सुमत पूरण = सुबुद्धि से पूर्ण। गण सायर = गुणों के समुद्र। मौड़ खेम मंत्रियां = मंत्रियों का मुकुट खीमसी भँडारी। जोड़० = राजा का पुरोहित उसके सदृश। चाळ बंद = कमर बाँधकर। चकवै = हे चक्रवर्ती राजा! परत = बिलकुल। पडवेसां = मुसलमान नहीं लड़ेंगे। दाय = (दर्प) गर्व। जूटै = बढ़ता है। दुरवेसां = मुसलमानों का। सत्र = शत्रुओं को। चाळां सटै = युद्ध से। पण० = विखा की प्रतिज्ञा करो। भांजो पिसण = शत्रुओं को मारो। विखा० = विखा करने से बड़प्पन नहीं घटता।

१४—जसराज = जसवतसिंहजी को। रीसायौ = क्रुद्ध हुआ। अकस = ईर्ष्या। विखौ = घर छोड़कर वन-पर्वतों में रहना, विपत्ति का समय। आधंतर लायौ = आधा समय विखा में निकाला।

ईख दळां ऊधरां नरां हैमरां सगाहां
खुरासांण कंपियौ पांण छूटौ पतसाहां।
आपरा भडां अवरंग सूं काल्ह जिकूं दीठौ कियौ
वड छात हूँत मंत्री वडां इसी वात मत अप्पियौ ॥१४॥

दुहा

विखौ कियौ राव मालदे, राजा श्री जसराज।
आप विखौ कर आज लग, असुरां किया अकाज ॥१५॥
भौमीचारौ मांडियौ, वारौ वदै जिहांन।
जस हूंता न करै जुदा, दई सदा परधांन ॥१६॥

छप्पय

अरज मांन अजमाल स्वाल सुण कान सबंधां
धरौ विखौ ऊधरौ करौ जिन ढील कमंधां।
कियौ हुकम सो कोप ओप असुरांण मिटायौ
धर लूंटौ चौफेर सूर अजमेर सझायौ।

ईख = देखकर। दळा = सेना को। ऊधरा = उच्च श्रेणी के। हैमरां = घोड़ों को। सगाहां = दृढ़। खुरासांण = बादशाह। पांण = (प्राण) बल, सामर्थ्य। काल्ह = कल, थोड़े दिनों पहले। जिकूं = जो। दीठौ = देखा। छात = राजा से। वात० = सलाह दी।

१५—अकाज = खराबी।

१६—भौमीचारौ मांडियौ = जमीन में दौड़ते फिरे। वारौ० = जिसको सब संसार अच्छा कहता है। जस हूंता = यश से। दई = दैव।

१७—स्वाल = (सवाल) वचन, जवाब। कान सबंधां = कानों में धारण किया। ऊधरौ = उच्च कक्षा का। जिन = मत। कमंधां = हे राठोड़ो! ओप = प्रकाश, शोभा। पण बांध = प्रतिज्ञा करके। नेम = नियम।

पण बांध एम कमँधां पती विखै नेम विसनारियौ
अरि जेम करण पण ऊधरै पह अजमेर पधारियौ ॥१७॥
हुवौ सोच आसुरां हुवौ मद मोच दिलेसर
हुवा देस भैचक्क हुवा अवनेस भयंकर।
हावै हुए जिहांन हुए सामांन दुरंगां
सादर गढ साहवा हुवौ आदर अणभंगां।
जम रूप हुवौ मारण जवन धार अजन पण छातधर
अमरेस अजैगढ आदरे हुवौ मुदै जगरांम हर ॥१८॥

छंद बेअक्खरी

अमरै आद वडा भड़ एता
जुध आदर वढिया जुग जेता।
राजड़ प्रगड़ जोध दो राहां
सूजाहर मालम पतिसाहां ॥१९॥

अरि = शत्रु। जेम = जिस तरह। पण = प्रतिज्ञा। ऊधरै = उच्च कोटि का। पह = (प्रभु) मालिक।

१८—आसुरां = मुसलमानों को। मद मोच = गर्व का त्याग। दिलेसर = (दिल्लीश्वर) बादशाह का। भैचक्क = भयभीत। अवनेस = (अवनीश) राजा लोग। हावै हुए = अब क्या होगा? ऐसा विचार हुआ। दुरंगां = किलों में। साहवा = सजने के लिये। अणभंगां = अखंड, निरंतर। मारण जवन = मुसलमानों को मारने के लिये। धार = धारण करके। अमरेस॰ = जगरामसिह के वंशज अमरसिह ने अजमेर में रहना आदर लिया और वहाँ प्रधान हुआ।

१९—अमरै आद॰ = अमरसिंह आदि। एता = इतने। जुग जेता = जुग को जीतनेवाले। राजड़ = राजसिंह। प्रगड़ = प्रयागदास। जोध = जोधा राठोड़। सूजाहर = सूजा के वंशज।

जोधे बलदेवो जैत्राई
सुत नाहर अजमाल सवाई।
वाघ दळां चांपौ खगवाहौ
दांन तणौ जगनाथ दुबाहौ ॥२०॥
धरियौ भूप सुतन धूधारण
कूंपावत हरभांण सकारण ॥
मेड़तियौ रांमौ दळ मांहे
सुतन कल्यांण भार जुध साहे ॥२१॥
जोड़ अरोड़ वळे भीमाजळ
सुत रुघनाथ पाथ जिम सब्बळ।
ईसरौत रांमौ अतुळीबळ
करवा गढां विजावत कंदल ॥२२॥
चांदे ईसरदास सचाळौ
विसन सुजाव गढां रखवाळौ।
चाड धणी तेजल चहुवांणे
वाधै चंद तणौ वीरांणे ॥२३॥

२०—जोधे = जोधा राठोड़ । जैत्राई = जीतनेवाला । चापौ = चापावत । खगवाहै = तलवार चलानेवाला । दुबाहो = वीर ।

२१—धरियौ = रखा । भूप सुतन = भोपालसिंह का बेटा । धूधारण = ध्रुव को धारण करनेवाला । सकारण = काम करनेवाला । भार जुध साहे = युद्ध का भार उठानेवाला ।

२२—अरोड़ = नहीं रुकनेवाला । वळे = फिर । भीमाजळ = भीमसिंह । पाथ जिम = अर्जुन के जैसा । ईसरोत = ईसरौत मेड़तिया । अतुळीबळ = अतुल्य बलवाला । विजावत = विजयसिंह का पुत्र । कंदल = युद्ध, नाश ।

२३—चांदे = चांदावत मेड़तिया । सचाळौ = युद्ध करनेवाला । सुजाव = पुत्र । चाड धणी = मालिक की सहायता के लिये । वीराणे = युद्ध ।

जैत सुजाव पखां चाडण जळ
भाटी उदियाभांण भुजागळ ।
भुजळग हथ विजपाल भँडारी
मुहणोते सांगो मिणधारी ॥२४॥
मांन दळे कायत्थ मुदाई
सांदू भड़ धोरियो सवाई ॥

दुहा

एतां आद अभंग भड़, चढ गढ बंधी चाळ ।
जग राखण दोळा जितां, पाळ जिही भूपाळ ॥२५॥
असियै आवण आवियौ, दळ आया दुरवेस ।
दोळा दृढ नवकोट दळ, ऊपर गढ अमरेस ॥२६॥
घण थट्टां गढ घेरियां, वणि रिण ऊग विहांण ।
निस जाऐ चख जग्गणै, दिन पायै घमसांण ॥२७॥

२४—पखां चाडण जळ = अपने पक्षवालों का बल बढ़ानेवाला । भुजागळ = भुजागल के समान रोकनेवाला । भुजळग = तलवार । हथ = हाथ । मिणधारी = मुख्य । मांन = मानो कायस्थ । मुदाई = मुख्य । सांदू = सादू चारण ।

२५—एतां आद = इत्यादि । बधी चाळ = कमर बाँधी । दोळा = इर्द-गिर्द । जिता = जितने । पाळ० = जिनकी सेतु राजा अजीतसिंह है ।

२६—असियै = संवत् १७८० में । दुरवेस = मुसलमानों का । दोळा = चारों तरफ । ऊपर गढ० = किले पर अमरसिंह था ।

२७—घण थट्टां = बहुत बड़े समुदाय से । ऊग विहांण = सूर्योदय होते ही । निस० = रात्रि तो नेत्रों से जागते जाती है । दिन० = और दिन युद्ध करते जाता है ।

तारागढ छायौ रहै, सोर तणै नीसार ।
आबू जांणक ओपियौ, वाणक बद्दळ धार ॥२८॥
यों परखे रीझै अजौ, दिन छीजै खुरसांण ।
निसचै गढ लीजै नहीं, सुणि खीजै सुरतांण ॥२९॥
असुर न जीता अजन सूं, वीता च्यारूं मास ।
अमर लड़ै गढ ऊपरा, रिम दळ पड़ै निरास ॥३०॥

छप्पय

आद नबाबां असुर समर कंपिया सिपाई
कळा हीण कूरम्म थयौ जैसिंघ सवाई ।
दिल्ली चै दरबार मीर मसलति ऊचारै
करि सलाह सुख करै दुंद पतिसाह निवारै ।
सुविहांण अमीरां बोध सुण निपट क्रोध छंडी निजर
अब तोल बोल पंजै सहत कौल पठाया हेत कर ॥३१॥

२८—तारागढ = अजमेर के किले का नाम है । छायौ रहै = ढका रहता है । नीसार = निकलते । आबू० = मानों आबू पर्वत शोभा देता है । वाणक = स्वरूप ।

२९—परखे = देखकर । छीजै = क्षीण होता है । खुरसांण = मुसलमान । खीजै = क्रुद्ध हुआ ।

३०—वीता = व्यतीत हुए । रिम = शत्रु ।

३१—असुर = मुसलमान । कला हीण = क्षीण । कूरम्म = कछवाहा । मसलति = सलाह । दुंद = युद्ध । सुविहांण = प्रातःकाल में । अमीरां बोध = अमीरों की सलाह । निपट = अत्यंत । छंडी = छोड़ी । अब = सर्व । बोल तोल = वचन कचन । पंजा = बादशाह के हाथ का चिह्न । सहत = सहित । हेत कर = प्रीति करके ।

दुहा

आया पासि अजीत रै, साह तणां फरमांण ।
पह जोधां प्रासन्न मन, दीयौ वीच कुरांण ॥३२॥
बंद इरादित बोल मैं, हैंदुरकुली नवाब ।
संधी प्रीत अजीत सूं, बंधी नीत सिताब ॥३३॥
पति होसी ऊथल पथल, सुण गुण भणै सकोय ।
अनि राई तन उब्बरै, कमँधां जिसौ न कोय ॥३४॥

छप्पय

हो रांणां रज्जियां राव रावळां नरिंदां
सीसोदां कूरमां जोड़ चहुवांणां जद्दां ।
आदि वैर कर याद कोइ सांभरि घरि लट्टौ
कोइ साह संघरौ, कोय अजमेर पलट्टौ ।
मांडियै मेर सिरिखे मतै हुवै फतै दुरमत्ति सूं
ड़(रू)धिजै वेध मोटां पहां अजन जेम असपत्ति सूं ॥३५॥

३२—पह जोधा=जोधा राठोड़ों के मालिक ने । प्रासन्न मन=प्रसन्नचित्त होकर ।

३३—बंद=नमस्कार करके । संधी प्रीत=प्रीति कर ली । नीत=नीति । सिताब=जल्दी ।

३४—पति=मालिक, बादशाह । ऊथल पथल=परिवर्तित, उलटा सीधा । सकोय=सब । अनि=दूसरे । राई तन=राजपुत्र (राजपूत) । कोय=कोई भी ।

३५—हो रांणां०=क्या कोई राणा, राजा राव रावल नरेंद्र सीसोदियों, कछवाहों, चौहानों और यादवों में था जिसने शुरू से वैर करके साँभर को लाटा हो । कोइ…कोय०=किसी ने बादशाह का संहार किया हो । मांडियै०=मेरु पर्वत के समान निश्चय करके बादशाह से विजय पाई । रूधिजै=छोड़ देना चाहिए । वेध=विरोध । मोटां पहां—बड़े मालिकों से ।

दुहा

कीरत अजन कमंध री, अति विसतरी अवन्नि।
कवि भणतां अटकै न को, सुणतां राय रतन्नि ॥३६॥
यों नबाब मुख उच्चरै, जवन थया अब जेर।
प्रीत न खंडो खूंद सूं, अज छुंडौ अजमेर ॥३७॥
कर मन भायौ आप रौ, पायौ कोल नरेस।
गढ हूंता छायौ गुमर, तेड़ायौ अमरेस ॥३८॥
आयौ गढ हूंता अमर, सत्र हर करे सिंघार।
सात हजार समेटिया, घायल आठ हजार ॥३९॥
महाराजा अजमाल नूं, दे दे वीच कुरांण।
दाखै मुख आवौ दिली, साह लिखै फुरमांण ॥४०॥

इति श्री महाराजाजी अजीतसिंहजी अजमेर अपणाय
पातिसाह जेरि कीयौ वडी फतै पाई सो विगत
सप्तत्रिंश प्रकास ॥३७॥

३६—अवन्नि=पृथ्वी में। भणतां=कहते। को=कोई भी। रतन्नि=रत्न।

३७—थया=हुए। अब=सब। जेर=अधीन। खंडो=तोड़ो। खूंद सूं=बादशाह से। अज=हे अजीतसिंह।

३८—मन भायौ=मनचाहा। छायौ=बढ़ा। गुमर=गर्व। तेड़ायौ अमरेस=अमरसिंह को बुला लिया।

३९—सत्र हर=शत्रुओं का। सिंघार=संहार। समेटिया=मारे।
४०—दाखै=कहते हैं।

दुहा

अजन मिलण असपत्ति सूं, मतियो मारू राव ।
सरै गरज अभसाह सूं, अरज करै उमराव ॥ १ ॥

वार्ता

श्री महाराजा अजमाल पातिसाहूं के नाटसाल,
रावळै प्रताप की जोत जागी ।
अजमेर पीरों की म्रजाद भागी,
मकै तैं सवाय ख्वाजै के थांन बे पूजै दाह लागी ।
ईरान तूरान यह तौबत ज्वाळसी ताती,
सो तो वसि रही पतिसाह की छाती ।
श्री महाराज तखत पधारै,
पतिसाह सूं मिलणो श्री (कं)वर कौ विचारै ।
श्री राजकँवार अवतार धरि आयौ,
आपणो प्रताप जिण जगत कूं दिखायौ ।
प्रवाड़ै अगंजी राज-कँवार,
पातिसाहां अभैसाह जैत जूआर ।
जनम सूं विचारौ प्रतापीक वारौ,
तखत पधारौ चिंता निवारौ ॥

१—असपत्ति सूं = बादशाह से । मतियो = विचार किया । मारू राव = मारवाड़ देश का राजा । सरै गरज = काम निकल सकता है ।

वार्ता—नाटसाल = हृदय का शूल । रावळै = महाराजा के । जोत जागी = ज्योति बढ़ी । म्रजाद = मर्यादा । ख्वाजै के = अजमेर में ख्वाजा पीर प्रसिद्ध हैं । बे पूजै = न पूजे जाने से । तौबत = अपमान । ज्वालसी ताती = अग्नि-ज्वाला के समान गरम । कंवर को = महाराजकुमार का । प्रवाड़ै अगंजी = युद्धों में न हारनेवाले । जैत जूआर = जय का पाशा चलानेवाला । प्रतापीक = प्रतापवाला । वारौ = समय ।

दुहा

उमरावां दाखी अरज, कुसळि करण रज काज।
जगत अछांनी जांणरौ, सो मांनी महाराज ॥ २ ॥
देखेवा दिल्ली नगर, पेखेवा पतिसाह।
सदा सहायक वंस सो, विदा कियौ अभसाह ॥ ३ ॥

छंद बेअक्खरी

ततखिण अजण अभौ तेड़ायौ
बीजै गजण हजूर बुलायौ।
विकट समै वीड़ो नृप वेखे
दीन्हौ काज सभीड़ौ देखे ॥ ४ ॥
अभौ परखि नृप तेज अमापै
इण विध कमँध वडाई आपै।
राखण खळां मनोरथ रीतौ
तोसूं हिंदुसथांन नचीतौ ॥ ५ ॥
समग्रि भार धर गुणां सवायां
ओडै कंध धमळ थळ आयां।

२—दाखी = कही। रज काज = राज्य का कार्य। अछांनी = प्रकट।

३—पेखेवा = देखने के लिये।

४—ततखिण = उसी क्षण, तुरंत। अजण = अजीतसिंह ने। तेड़ायौ = बुलाया। बीजै गजण = दूसरा गजसिंह। वेखे = देखा। सभीड़ौ = कठिन।

५—परखि = देखकर। अमापै = अप्रमाण। आपै = देकर। खळां = शत्रुओं का। रीतौ = खाली। तोसूं = तुझसे।

६—समग्रि = सारा, सब। गुणां सवाया = गुणों में सवाया। ओडै = धारण किया। धमळ = धोरी बैल। थळ आयां = रेता आने पर, काम पड़ने पर।

भुजै ऐम कहि भार भळायौ
लेखि प्रीत सुत हियै लगायौ ।। ६ ।।
विदा कियां नृप तखत विराजै
सँगि उमराव दिया व्रत साजै ।
चक्रवति काज हरी चांपावत
तोलै गयण भुजां तेजावत ।। ७ ।।
सकतो दांन तणौ दळ साथे
भुज पाराथ जिसौ भाराथे ।
भांण तणौ जोरो दळ भेळौ
माल विजावत भड़ां समेळौ ।। ८ ।।
सुत जसराज किसन व्रत साजै
किरि अरिजण यण कांमि समाजै ।
सूजौ साहसमाल समेळा
अंगज हरि वरणै ऊखेळा ।।९।।
वढ हथ रासौ सांमळ वाळौ
भैरव नाहर तणौ भुजाळौ ।।
....
.... ।।१०।।

ऐम कहि = ऐसे कहकर । भळायौ = बतलाया, सम्हलायौ । लेखि = दिखाकर । हियै लगायौ = छाती से लगाया ।

७—व्रत साजै = अच्छी प्रतिज्ञावाले । चक्रवति काज = राजा के वास्ते । गयण = (गगन) आकाश । तेजावत = तेजसिंह का पुत्र ।

८—दांन तणौ = दानसिंह का पुत्र । पाराथ = अर्जुन । भाराथे = युद्ध में । समेळौ = शामिल ।

९—अरिजण = शत्रुवर्ग । यण कांमि = इस काम के लिये । समाजै = समर्थ । समेळा = शामिल । अंगज = पुत्र । ऊखेला = युद्ध ।

१०—सांमळ वाळौ = श्यामसिंह का पुत्र । भुजाळौ = बड़ी भुजावाला, वीर ।

अधिपति काज करण चित उज्जळ
अै चांपा ओपै दळ आगळ।
चैनो करनहरौ कळ चाळौ
सुतन दुरग खग करग सिघाळौ ॥११॥
खित नृप काज सिवौ खीमावत
तिण जामळ किसनौ तेजावत।
वित रज करम धरम ततवेता
ओपै करनहरा दल एता ॥१२॥
साहिब सुतन जादवे सूजौ
दळ रखपाळ रघूपति दूजौ।
सुत इँद्रभांण पतौ धुजसूरौ
सरद करण खळ विरुद सनूरौ ॥१३॥
सूरौ डूंगर भड़ां सहायक
नाहर तणा जादवे नायक।
अमरनाथ तण हठौ सूरावत
रिण रावंत सवायौ रावत ॥१४॥

११—अै = ये। चांपा = चांपावत। ओपै = शोभा देते हैं। आगळ = आगे, रोकनेवाले। करनहरौ = करणोत राठोड़। कळचाळौ = युद्ध करनेवाला। सुतन दुरग = दुर्गदास राठौड़ का बेटा। करग = हाथ। सिघाळौ = वीर।

१२—खित = (क्षिति) पृथ्वी में। जामळ = बेटा। वित = (वित्त) धन। रज करम धरम ततवेता = राज्य के धर्म-कर्म के तत्त्व को जाननेवाले। ओपै = शोभा देते हैं। करनहरा = करणोत राठोड़। एता = इतने।

१३—जादवे = यदुवंशी। रघूपति दूजौ = दूसरा रामचद्र। धुजसूरौ = सेना के भीतर शूरवीर। सरद करण खळ = शत्रुओं को सीधा करनेवाला। विरद सनूरौ = यश से सुंदर।

१४—तण = (तनय) पुत्र। हठौ = हठीसिंह। रिण रावंत = युद्ध में अग्रणी। सवायौ = बढ़कर।

सुत रिणछोड़ भांण पण साचै
वप ध्रम सांम मांम जग वाचै।
जीवणदास दूजावत जोड़ै
मुरधर कजां गजां घड़ मोड़ै ॥१५॥
सुजड़ा हथौ हठौ सूरावत
रिण रावतां सवायौ रावत।
सामँत सूर तणौ गुर सूरां
पिड़ जीपणौ प्रवाड़ां पूरां ॥१६॥
जेसावत सुरतौ जैताई
सांम तणै छळि रांम सवाई।
भांण तणौ साहिबौ भुजाळौ
चक्रवति दळां खळां कळि चाळौ ॥१७॥
अै जादव जदुवंस उजाळा
साथ धणी जुध अणी सिघाळा।

१५— पण साचै = सच्ची प्रतिज्ञावाला। वप = शरीर। ध्रम = धर्म। साम मांम = स्वामी के काम के लिये। जग = संसार। वाचै = कहता है। जोड़ै = सदृश। मुरधर कजां = मारवाड़ के वास्ते। गजां घड़ मोड़ै = हाथियो की सेना को वापस लौटाता है।

१६—सुजड़ा हथौ = तलवार हाथ में लिए। रिण रावतां = युद्ध के वीर पुरुषों में। गुर = (गुरु) बड़ा। पिड़जीपणौ = रणविजयी। प्रवाड़ां = युद्धों में। पूरां = पूर्ण।

१७—जैताई = जय करनेवाला। सांम तणै छळि = मालिक के काम के लिये। भुजाळौ = बड़ी भुजावाला, वीर। चक्रवति = राजा। खळां = शत्रुओं के साथ। कळि चाळौ = युद्ध करनेवाला।

१८— अै = ये। जुध अणी = युद्ध के अग्रभाग पर। सिघाळा =

ऊदावत अमरेस अकारौ
गिणै साह तिण चाळागारौ ॥१८॥
पातल तणौ जसो पूंचाळौ
भाखर रिदै तणौ भुरजाळौ ।
मांन सुजाव सवाई मारू
सकतिहथौ जवनां पति सारू ॥१९॥
अै ऊदा जीपण अवसांणां
साथे कँवर लियां घमसांणां ।
जोधां साथ नाथ छळ जोवण
हरवल दळां खळां सिर होवण ॥२०॥
सुतन भीम पातल पति साथे
भीम अजन जांमल भाराथे ।
राजड़ किसन तणौ सँग राजै
साभण सबळ लियै दळ साजै ॥२१॥

वीर । अकारौ=बहुत तेज । तिण=तृण । चाळागारौ=युद्ध करनेवाला ।

१९—पूंचाळौ=पहुँचवाला, समर्थ । भुरजाळौ=तलवार रखनेवाला । सकतिहथौ=हाथ में साँग रखनेवाला । सारू=वास्ते ।

२०—जीपण=जीतनेवाले । अवसांणां=युद्ध में, समय पर । घमसांणां=भयंकर । जोधां साथ=सुभटों के साथ । नाथ छळ जोवण=मालिक के लिये युद्ध को तलाश करनेवाले । हरवल=सेना का अग्रभाग ।

२१—पति साथे=मालिक के साथ । अजन जांमळ=अजीतसिंह का पुत्र । भाराथे=युद्ध में । राजै=शोभित है । साझड़ सबळ=बलवानों को मारने के लिये । लियै दळ साजै=अच्छी सेना लिए ।

अमर दलावत गुमर अमांमै
सँगि असि धरै ऊधरै सांमै।
सूरां ढाल दुजौ सबळावत
रूकहथौ मैहको सँग रावत ॥२२॥
मेघराज पातौ गुण मोटां
किसन तणौ आगळ नवकोटां।
जोधाहरा प्रबौ प्रब जागै
अै अभसाह तणा मुँह आगै ॥२३॥
वांकिम वींद मेड़तावाळा
चक्रवति जतनि चढै कळि चाळा।
पदम किलांण तणौ ध्रम पूरै
सगह पाट छळि थाट सनूरै ॥२४॥
अभौ विजावत चांदा ओपम
ध्रू धारण उर सांमि तणौ ध्रम।
जुध रखपाळ दलौ जूंझावत
वाधि निवाहण धणी तणौ व्रत ॥२५॥

२२—गुमर=गर्व। अमामै=अप्रमाण। असि=घोड़ा। ऊधरै सांमै=अच्छे सामान से। दुजौ=दुर्जनसिंह। रूकहथौ=तलवार हाथ में लिए।

२३—पातौ=पातावत राठोड़। जोधाहरा=जोधा राठोड़। प्रबौ=पर्वतसिंह। प्रब जागै=युद्ध के छिड़ने पर।

२४—वांकिम=वक्रता में। वींद=दुलहा, मुख्य। मेड़तावाळा=मेड़तिया राठोड़। चक्रवति जतनि=राजा के वास्ते। कलिचाळा=युद्धकार्य के लिये। ध्रम=धर्म। सगह=गर्वसहित, दृढ़। पाट छलि=राज्य के लिये। थाट=समूह। सनूरै=सुंदर।

२५—चांदा ओपम=चंद्रमा के सदृश। ध्रू धारण०=दृढ़ धारण करनेवाला। वाधि=बढ़कर। व्रत=प्रतिज्ञा।

जैतौ सूर तणौ जैत्राई
भुज तिण जोड़ समेळौ भाई।
पीथौ मुकन बिन्हे व्रत पूरा
साथे दळरांमोत सनूरा ॥२६॥
सँगि अभसाह अथग पण सागर
औ मेड़तिया वंस उजागर।
कूंपे कान्ह अजान करग्गे
अणी समांनि धणी छळि अग्गे ॥२७॥
चावौ भांण खत्रीपण चौजां
फतमालोत मुदायत फौजां।
देवौ सामँत सुतन दुबाहौ
वाघ तणौ सबळौ खगवाहौ ॥२८॥
केहरि तण पण लड़ण अकूंणौ
लीधां वरत जगपती लूंणौ।
औ कूंपा साथे अहँकारो
धणी तणा जतनां व्रतधारी ॥२९॥

२६—जैत्राई=जय करनेवाला। भुज=भुजा में। तिण जोड़=उसके सदृश। समेळौ=सुमेलसिंह, शामिल। पीथौ=पृथ्वीसिंह। बिन्हे=दोनों। व्रत पूरा=प्रतिज्ञा के पूरे।

२७—अथग=दृढ़, गंभीर, अथाह। पण सागर=प्रतिज्ञा के समुद्र। कूंपे=कूंपावत राठोड़। अजानकरग्गे=आजानुबाहु अर्थात् घुटनों तक जिसके हाथ लंबे हैं। करग्गे=हाथ। धणी छळि=मालिक के वास्ते।

२८—चावौ=प्रसिद्ध। चौजां=गम्मत, मन को प्रसन्न करनेवाली बात। मुदायत=मुख्य। दुबाहौ=वीर। खगवाहौ=तलवार चलानेवाला।

२९—अकूंणौ=अन्यून, पूर्ण। वरत=व्रत, नियम। लूंणौ=नमक का। अहँकारी=अभिमानी। धणी०=मालिक के लिये प्रतिज्ञा रखनेवाली। जतनां=लिए।

मुहिअड़ सोनिगरे फतमल्लौ
दुजड़ाहथौ जोड़ तिण दल्लौ ।
कमा सदा आगळ नवकोटां
चडियां पति आरति चड़ चौटां ॥३०॥
कळ छळि रायांसींग कलावत
मौहरियाळ सिवौ माहावत ।
ऊदौ हरी तणौ दळ आगळ
करमसीयोत जीपवा काकळ ॥३१॥
अजबौ ऊदौ हठी उताळा
पातल रा आया प्रांचाळा ।
सांवत माहव तणौ सवाई
वीठल रौ सकतौ वरदाई ॥३२॥
जैतावत अचळौ जैताई
वळै फतौ वीरति वरदाई ।
रूप तणौ जोड़ै रुघपत्ती
समहरि भीरी जेण सकत्ती ॥३३॥

३०—मुहिअड़ = (मुख्यतर) प्रधान । सोनिगरे = चौहानों की एक शाखा । दुजड़ाहथौ = तलवार हाथ में लिए । जोड़ तिण = उसके सदृश । कमा = करमसोत राठौड़ । पति आरति = मालिक के दुःख में । चड़ चौटां = प्रहार खाकर ।

३१—कळ छळि = युद्ध के लिये । मौहरियाळ = अग्रणी । जीपवा = जीतने के लिये । काकळ = युद्ध में ।

३२—उताळा = उतावले, त्वरावाले । पातल रा = प्रतापसिंह के पुत्र । प्रांचाळा = अग्रणी, पहुँचवाले, समर्थ । वरदाई = वर पाया हुआ ।

३३—जैतावत = जैतावत राठोड़ । जैताई = जीतनेवाला । वळै = फिर । वीरति = वीरता में । रुघपत्ती = रघुनाथसिंह । समहरि = युद्ध में । भीरी = धारण की । जेण = जिसने । सकत्ती = सांग, सर्वांग लोहे का भाला ।

जैता जैतहथा रण जीपै
दळां हरौल ढाल सम दीपै।
मारू करन साथि महवेचौ
धजवड़हथ अमरेस धवेचौ ॥३४॥
बळ ऊधरै ऊदलौ बालै
भांजण कळह खळां बळ भाळै।
प्रगट्यौ ऊहड चंद प्रवाड़ां
आगळ दळ खाटण आखाड़ां ॥३५॥
ईंदो सांमसिंघ आभाळौ
सुतन जैत कजि जैत सिघाळौ।
सुंदर तणौ साहिबौ साथे
मांगळियौ आगळ ससमाथे ॥३६॥

३४—जैता = जैतावत राठोड़। जैतहथा = जय जिनके हाथ में है। जीपै = जीतते हैं। हरौल = अग्रणी। दीपै = शोभा देते हैं। महवेचौ = महेचा राठोड़। धजवड़हथ = तलवार हाथ में लिए। धवेचौ = धवेचा राठोड़।

३५—बळ ऊधरै = अधिक बलवाला। बालै = बाला राठोड़। कळह = युद्ध में। खळां = शत्रुओं को। भाळै = देखता रहा। ऊहड = ऊहड़ राठोड़। चंद = चंद्रमा के सदृश। प्रवाड़ां = युद्धों में। खाटण = संपादन करने के लिये, जीतने के लिये। आखाड़ां = युद्धभूमि।

३६—ईंदो = पड़िहार राजपूतों की एक शाखा। आभाळौ = देदीप्यमान। सुतन जैत = जैता का बेटा। जैत कजि = जय के लिये। सिघाळौ = श्रेष्ठ, वीर। मांगळियौ = सीसोदिया राजपूतों की एक शाखा। ससमाथे = समर्थ।

माहेसौत हरी मन भांणौ
खेड़पती साथे खूंमाणौ ।
मुखि हरनाथ खीचियां माहे
साथे सांमि धरम छुळ साहे ।।३७।।
धांधल नित केहर व्रतधारी
जोगावत छुति जैत जुआरी ।
प्राभ्फौ जांम सुतन जग पेखै
लाडू सांमि धरमि उरि लेखै ।।३८।।
सोभै तुलछीदास सवायौ
प्राग तणै दौढी व्रत पायौ ।
जुगराजौत ऊदलौ जामळ
अधिपति जतन करण मन उज्जळ ।।३९।।
धजवड़ हथ ठाकुरसी धावड़
मयारांम सुत सांम महाभड़ ।

३७—मन भांणौ=मन को अच्छा लगे ऐसा । खेड़पती=मारवाड़ का राजा । खेड़ एक ग्राम का नाम है जिसे राव आस्थान ने गुहिलों को मारकर लिया था, इससे राठोड़ खेड़ेचा कहलाते हैं । खूंमाणो=सीसोदिया राजपूत । खीचियां मांहे=खीची चौहानों की एक शाखा । छुल=युद्ध । साहे=धारण किए ।

३८—धाधल=धांधल राठोड़ । नित=नित्य । व्रतधारी=पन रखनेवाला । छुति=युद्ध में । जैत जुआरी=जय का खेल खेलनेवाला । प्राभ्फौ=प्रबल । जग=जगत् । पेखै देखता है । लाडू नाम है ।

३९—दौढ़ी=राजद्वार । व्रत=नियम । जामल=बेटा । जतन=(यत्न) उपाय करने को ।

४०—धजवड़ हथ=तलवार हाथ में लिए । धावड़=पल्लीवाल

सांमि जतन्नां हूंत सवाई
वाघ जिसा गुज्जर वरदाई ॥४०॥
रायांराय साथि रुघपत्ती
भंडारी मति सागर भत्ती।
मुँहतां मैं गोपाळ मुदायत
सुत कल्यांण सब भड़ां सहायत ॥४१॥
सुत जीवराज काज कजि साथे
मुहतौ गिरधर गुणेस माथे।
बोलै गुणां रुघपती बारठ
वणैं खग्ग दिनि वाघ तणी वट ॥४२॥
सूरिजमाल प्रोहितां सूरज
कन्है अखावत धणी जतन कज।
द्रढ रावत जीवण दीपावत
अचल गुणे सुरतौ अणदावत ॥४३॥
राजकँवर जतनी महाराजा
साथे दिया इता व्रत साजा।

ब्राह्मणों की एक शाखा। मयाराम सुत० = मयाराम का बेटा सामदास। वाघजिसा = व्याघ्र के सदृश। गुज्जर = गूजर जाति का।

४१—रायांराय = रायाराव पदवीवाला (रायों में प्रधान राय)। साथि = साथ। रुघपत्ती = रघुनाथ भंडारी। भत्ता = स्वामिभक्त। मुदायत = मुख्य।

४२—काज कजि = काम के लिये। बोलै गुणां = गुण कहनेवाला। खग्ग = तलवार। दिनि = दान। वाघ० = व्याघ्र के मार्ग चलनेवाला, अर्थात् वीर।

४३—कन्है = पास। धणी० = मालिक के यत्न के लिये। रावत = रावत जाति का।

४४—राजकंवर० = राजकँवर नामक माता। व्रत साजा = नियम

लागा वंस छत्री सूं लारै
चक्रवति सेवा वरण चियारै ॥४४॥

छप्पय

सुदि मृगसर सप्तमी वार मंगळ वरदाई
अंस परम अभसाह विमळ ग्रहि वंस वडाई।
आरुहियौ ईखवा साह दरगह सकबंधी
है गै दळ हल्लिया मिलै अणकळ अनिमंधी।
धर गयण रेण कण धूधरै खुर प्रहार खिति खंडरै
नरपती साथ वंके नरं पवँग किया मग पद्धरं ॥४५॥
जिसौ नूर नरपती इसौ सांमंत सूर नर
जव जैसोइ जंगमां सोभि तैसैइ मद सिंधुर।
समण वरद संपजै सबद तैसा वाजंतां
मुख विरद्द मंगिणां इसा जै सद्द कवित्तां।

के पूरे। वरण चियारै = चारों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र)।

४५—वरदाई = वर वेनेवाला, श्रेष्ठ। अंस परम = परब्रह्म का अंशावतार। ग्रहि० = वंश के बड़प्पन को धारण करके। आरुहियौ = चढ़ा। ईखवा = देखने को। सकबंधी = युद्ध करनेवाला। है = (हय) घोड़े। गै = (गज) हाथी। अणकल = निष्कलंक। अनिमंधी = न रुकनेवाला। धर = पृथ्वी। गयण = (गगन) आकाश। रेण = (रेणु) रज, धूलि। धू धरै = मस्तक पर धारण करते हैं। पवंग = घोड़े। मग पद्धरे = सीधे मार्ग।

४६—नूर = तेज, कांति। जव = वेग। जंगमां = घोड़ों का। सोभि = शोभा देते हैं। मद सिंधुर = मद झरते हुए हाथी। समण = उत्साह। वरद = वर देनेवाला। संपजै = उत्पन्न होवै। सबद = (शब्द) बाजे। मंगिणां = याचक, चारण। जै सद्द = जय शब्द।

सुभ जोग सकळ नव ग्रह सुहित इसैइ महूरत ऊधरै
असपती मिलण खड़िया अभै जैत हथा जोधाहरै ॥४६॥

दुहा

गौ दिल्ली दूजौ गजन, अजन हुकम अभसाह।
उच्छव मुरधर ऊपजै, स्रब पुर हुए सलाह ॥४७॥
पुर दिल्ली पाधारियौ, मारू अमली मांण।
जोवै बाजारां जुड़ै, हिंदू मुस्सलमांण ॥४८॥
इण परि घरि घरि उच्चरै, सुण आयौ सकबंध।
मंडळ दिल्ली मारियौ, धूंकळसिंह कमंध ॥४९॥

छप्पय

सगह पेख सुरतांण प्रांण उर आणि परक्खै
जवन जांणि बळ जेम रखे वामण गुण दक्खै।
भुजां मेर ऊभारि रखे दिसि दक्खण धारै
मो गुमांन मलवट्ट रखे ईरांन संघारै।

सुहित = हित करनेवाले। इसैइ = ऐसे ही। ऊधरै = अच्छे। खड़िया = घोड़ों को चलाया। जैतहथा = जय को हाथ में रखनेवाला। जोधा हरै = राव जोधा के वंशज।

४७—गो = गया। दूजौ गजन = दूसरा गजसिंह। ऊपजै = उत्पन्न होता है। स्रब = (सर्व) सब।

४८—पाधारियौ = गया। अमली मांण = मान रखनेवाला। जोवै = देखते हैं। बाजारां जुड़ै = बाजारों में जमा होते हैं।

४९—इण परि = इस तरह। सकबंध = युद्ध करनेवाला, राजा। मारियौ = नष्ट किया। धूंकळसिंह = अभैसिंह। शत्रुओं पर अधिक जोर-जबर्दस्ती करने से इनका दूसरा नाम धूंकलसिंह कहलाया। कमंध = राठोड़।

५०—जवन० = यवन (बादशाह) बलि राजा के समान है। रखे = शायद, कदाचित्। वामण० = वामनावतार का गुण दिखावे। भुजा = वामन ने बाहु से मेरु पर्वत को उठाया था, वैसे यह शायद

दळ प्रबळ मेळि भुजबळ दखै वळै रखे लूंटै विभौ
इण भांति अतागौ साह उर अति सगाह लागौ अभौ ॥५०॥

दुहा

राहां तळ दाई करे, साहां गिणे सहल्ल ।
आयौ डेरां आपरां, इण तोरै अभसल्ल ॥५१॥
सिरकस अभौ जिहांन सूं, हिंदुसथान सहाय ।
ईरांनी जस आखतां, मिलै खवांनी आय ।५२॥
प्रीत घणी आंबेरपति, कोटा धणी सवाय ।
मिलै सवाई आदि नृप, दियै बडाई आय ॥५३॥

इति श्री महाराजा अभैसिंहजी फेर दिल्ली पधारिया
नवकोट री सहाय कीवी सो विगत
अष्टत्रिंश प्रकास ॥३८॥

उठाया था, वैसे यह शायद दक्षिण दिशा को धारण करे। मो० = मेरे गर्व को नष्ट करके कदाचित् ईरानियों का संहार करे। दखै = दिखावे। वळै = फिर। अतागौ = भय।

५१—राहा = हिंदू-मुसलमानों को। तळ दाई = जेर, नीचा।

५२—सिरकस = पूज्य, मुकुटमणि। आखता = कहते। खवांनी = अपने लोग।

५३—आंबेरपति = आँबेर का राजा। कोटा धणी = कोटा का राजा।

दुहा

असपति सूं मिळियौ अभौ, मारू दूजौ माल ।
हुआं खबर राजी हुवौ, महाराजा अजमाल ।। १ ।।

छप्पय

अै संसार अनित्य आदि सविकार उचारै
काळ अंत वस करै धीर बळवंत न धारै ।
की राजा पतसाह टळै मृत राह न कोई
जितौ भोग अप्पियौ इतौ भोगवै सकोई ।
विध कलम रेख समरथ वचै दूर लेख न हुवै दुवै
ना मिटै वार वाधै न क्यों हुवणहार सोई हुवै ।। २ ।।

दुहा

हुवै हुकम गोविंद रै, अजन इंद अवतार ।
परम तणै वसियौ पुरै, नाम करै संसार ।। ३ ।।

छप्पय

महाराजा अजमाल वडौ अरिसाल विवन्नौ
गयौ रांम सुर लोक इसौ इक जोग उपन्नौ ।

१—असपति सूं = बादशाह से । दूजौ माल = दूसरा राव मालदेव ।

२—अै = यह । सविकार = विकार-सहित । काळ० = मृत्यु सबका अंत कर देता है । धीर० = धीर और बलवान् किसी को कुछ नहीं धारता । की = क्या । मृत राह = मृत्यु के मार्ग से । अप्पियौ = दिया है । सकोई = सब । विध० = विधाता की कलम की रेखा से कोई नहीं बचता, चाहे कैसा ही समर्थ क्यों न हो । विधाता का लेख दूर नहीं होता । लेख के सिवा दूसरा नहीं होता ।

३—इंद = इंद्र । परम० = परमेश्वर के पुर में जा बसा ।

४—अरिसाल = शत्रुओं का शल्य । विवन्नौ = मर गया । इसौ० =

हिंदू धरम निबाह सरम गंजे मेछांणां
चक्रवती चालियौ प्रगट वैकुंठ पयांणां।
विण जोर सोर पुर विस्तरै भड़ दरबार निहार भ्रत
ऊगतै भांण आथम्मियौ पूगै दिन जोधांण पत ॥ ४ ॥
दिन आयां जमराव सुतौ निज दाव सँभाळै
तिकौ दीह नह टळै गळे पंडव हेमाळै।
दिन आयां चक्कवै गया सक्कवै समाए
दिन आयां हरिचंद गयौ वारौ बरताए।
नर नाग देव छूटा नही के खूटा विक्रम करन
गिरवांण सदन हालै गयौ आये दिन राजा अजन ॥ ५ ॥
सतरै सै सामंत आंक आठै सुभ अग्गळ
सुकळ पक्ष आसाढ उतर रवि तेरस मंगळ।
रुत घ्रति चँदण कपूर सझे समसांण सझाई
विविध अमित सुचि वसत चेहग्नि निमति चलाई।

ऐसा एक योग उत्पन्न हुआ। निबाह = निबाहनेवाला। सरम० = म्लेच्छों की लज्जा गँवानेवाला। पयांणां = प्रयाण, मार्ग। विण = बिना। सोर = शोर-गुल, चिल्लाहट। भड़० = सुभटों और नौकरों ने दरबार में देखा। ऊगतै भांण = सूर्योदय होते। आथम्मियौ = अस्त हुआ, मर गया। पूगै० आयु समाप्त होने पर। जोधाण पत = जोधपुर का मालिक।

५—दिन आया = आयु समाप्त होने पर। दीह = दिवस। गळे० = पाडव हिमालय में गले। चक्कवै = चक्रवर्ती। सक्कवै समाए = इंद्र के सदृश। के = कई। खूटा = मर गए। गिरवाण सदन = देवलोक, स्वर्ग।

६—सामंत = संवत्। आक० = आठ के आगे शुभ (बिंदी) अर्थात् ८० (वि०स०१७८०)। रुत = रुई (कपासिया)। घ्रति = घृत। समसांण = (श्मशान) मरघट में। सुचि = पवित्र। वसत = वस्तु। चेहग्नि० = चिता की अग्नि के निमित्त

विसतार समै लागै विसम आगै मंजण आंणियां
कुळ वाव ग्रहौ नाजर कहै राव सिधावै रांणियां ॥ ६ ॥
वाणी सुण चहुवांण आंण ऊभी राय अंगण
सखी हूंत नव सपत मांगि सुख आदि समंजण।
आज मिरति मंगळी आज पति वरत सँभाळै
ऊपन्नौ जग अंस आज सुज वंस उजाळै।
अवसांण तरणि पण ईखतां ऊंच तिकोइज आज रौ
सुज साथ केम छोडे सती राजमती महाराज रौ ॥ ७ ॥
वडै वंस ऊपनी वडी रांणी भटियांणी
बोली राजा हूंत जिका पूरै व्रत जांणी।
तो पूठै वरजांग साख जैसांण सुभत्ती
पह चौंरी परणतां चढै नह को चक्रवत्ती।

रवाना की। विसतार समै = मरण का समय। आगै० = स्नान करने का सामान आगे लाया गया। कुळ वाव ग्रहौ = अपनी कुलीनता को धारण करो। राव० = हे रानियो! राव (परलोक को) रवाना हो गए हैं।

७—चहुवांण० = चौहान वंश की रानी। आंण ऊभी = आ खड़ी हुई। राय अंगण = राजांगण में। सखी० = सोलह सखियों के साथ। समंजण = स्नान करके। आज० = आज हमारी मृत्यु मंगलकारी है। सँभाळै = पातिव्रत्य का स्मरण करे। ऊपन्नौ० = जो जगत् में अंशावतार उत्पन्न हुआ है। अवसांण = मौका। तरणि = (तरुणी) स्त्री। पण = प्रतिज्ञा। ईखतां = देखते। तिकोइज = वही। सुज = उस। राजमती = चौहान रानी का नाम।

८—पूरै व्रत जांणी = पतिव्रता के धर्म को पूर्ण जाननेवाली। तो पूठै० = हे राजा! तेरे पीछे जेसलमेर की वरजांग नाम की शाखा अच्छी लगती है। पह० = (प्रभु) अजीतसिंहजी ने चौंरी में जाकर पाणिग्रहण किया, उस समय

तिण वंस थई अवतार तूं प्रीत नही जुग पाप रै
महाराजा साथ मंगळ मिलां आज तिकूं सत आपरै ॥ ८ ॥
चक्रपाणि उर चिंत पम चहुवांण उचारै
वडम बोल विसतरै बोल सोई कुळ सा(ता)रै ।
राजि पिता अमरेस राजि पूठै जैसांणौ
वाई वड पण बियां दियां वाधै आपांणौ ।
सुख वीच पड़ै महाराज सूं समरौ लाज सुबत्तियां
कुळ तणै नही वांटै किणी वांटै सत पण खत्तियां ॥ ९ ॥
पट रांणी दहुँ पास अवर रांणी वहि आई
जिकां आज अवसांण सदा कुळ लाज सवाई ।
रांणी मिरघावती जिकण पूठै देरावर
राजां मिण रांणियां तेण कुळ मोटौ तूंवर ।
सुज कंत अंत अमरां सुपुरि चौओड़ी हरि उच्चरै
छत्रपती सनेह चंदू छडी सेखावत व्रत संभरै ॥१०॥

किसी राजा को हिम्मत नहीं हुई कि कोई चढ़कर आवे । इससे जाना जाता है कि इस कन्या का वाग्दान पहले किसी दूसरे राजा के साथ हुआ होगा । रानी कहती है कि मैं उस वंश में उत्पन्न हुई हूँ । आप अवतार हैं; पाप में मेरी प्रीति नहीं है । मैं मंगल रूप महाराजा से मिलूँ । तिकूं = वह ।

९—चक्रपाणि = विष्णु । चहुवाण = चौहान वंश की रानी । वडम बोल = बड़ा बोल । पूठै जैसाणौ = पीठ पर जैसलमेर । बियां = दूसरों को । आपांणौ = बल, शक्ति । वीच पड़ै = अंतर पड़े । समरौ = याद करो । वांटै = भाग लेना । खत्तिया = क्षत्रिय स्त्रियाँ ।

१०—अवर = दूसरी । वहि आई = चलकर आई । मिरघावती = रानी का नाम । पूठै देरावर = पीठ पर देरावर का राज्य । मिण = मणि, रत्न । तूंबर = एक क्षत्रिय-वंश । कंत अंत = पति का अंतकाल । चौओड़ी = देवलोक में चढ़ने के लिये । सेखावत = शेखावत वंश की । व्रत संभरै = पतिव्रता के नियम का स्मरण करती है ।

मुदै एह खट महल सहल मृत गिणै सुपावन
पड़दायत हित प्रिया अघट सति मिळी अठावन।
तिण समयै तिण बेर उभै नाजर व्रत आदर
पावक करण प्रवेस तरण पति चरण निरंतर।
ऊपणै दूध जळतां अगनि अंग तेम सत ऊफणै
श्रीवर सहाय धारै सती आय खड़ी राय अंगणै ॥११॥
इम धायां उच्चरै सुणौ बायां सतवंती
उभै बंस ऊजळी सीळ निरमळी सकत्ती।
कोई जण इम कहै लवल चंदण सम लग्गै
परसै सती सरीर वणै तद नीर वरग्गै।
ताय सुरँग वात कहिवै तणी दोंग विरंगी दहन रौ
उर जेज धरौ म करौ उरड़ ऊनौ तेज अगन्न रौ ॥१२॥
चित धूंनै चहुवांण भाळ धूंनै भटियांणी
तूंवरि सेखावत्त रीझ चावोड़ी रांणी।

११—मुदै=मुख्य। एह=ये। महल=(महिला) रानियाँ। मृत=मृत्यु को। पड़दायत=उपपत्नी। उभै=दो। पावक=अग्नि में। तरण=(तरुणी) रानियाँ। पति=मालिक म० अजीतसिंह। अंग=शरीर में। सत=मालिक के साथ जलना, सतीत्व। ऊफणै=दूध की तरह उफनता है। श्रीवर=लक्ष्मीपति, विष्णु को।

१२—धायां=(धात्री) पयपान करानेवाली। बायां=बहिनों!। सतवंती=सती होनेवाली। सीळ=पातिव्रत्य, स्वभाव से। सकत्ती=शक्ति। लवल=अग्नि की ज्वाला। ताय=उनको। कहिवै तणी=कहने की। विरंगी=विकट। म करौ उरड़=त्वरा मत करो। ऊनौ=(उष्ण) गर्म।

१३—चित०=चौहान रानी प्रसन्नता से चित्त को धूनती है अर्थात् मन में प्रफुल्लित होती है। भटियांणी=भाटी वंश की दोनों रानियाँ।

सीळ सत्त साहंस अंस निज वंस उजाळी
उर विहसी उल्लसी हसी सू हत्थो ताळी।
गरजियां पवन धूजै न गिर विड़चै घायन वज्ज मैं
संभाय सीह चित सत्तियां सीह अबीह सहज्ज मैं ॥१३॥
वडै बोल सति वाणि एम चहुवांण उचारै
आज चाड आपणी धणी सुरलोक सिधारै।
महल रोग मर जाय व्याधि अवजोग विचाई
मरण इसौ प्रब मिळै जिके जीवियै भलाई ॥
जोवतां न को मौसर जुड़ै औसर चूकां आज रौ
जम हाथ मरां किम जांणियै मेल्ह साथ महाराज रौ ॥१४॥
घणै सीळ सत घणै भणै लालां भटियांणी
किसूं दाव बळ कोप आव जम हत्थ विकांणी।
अथिर आदि मंडाण न को दीसै थिरताई
काळ ग्रास संसार आस जीवणै न काई।
पति संग जळां ग्रहि लाज पण तजां पास कुळ जुग तणौ
व्रत भंग हुए वर वीछड़े जिकां अजीवत जीवणौ ॥१५॥

उल्लसी = उल्लास को प्राप्त हुई। हत्थो ताळी = हाथ पर ताली देकर। विड़चै = पीछे हटना। संभाय सीह = सीहा के वंशज अजीतसिंह को धारण करके। सीह = सिंह की भाँति। अबीह = निडर।

१४—चाड = सहायता के लिये। सिधारै = गए हैं। महल = (महिला) रानी। प्रब = (पर्व) पुण्य दिन। जिके० = जिससे जीवन की भलाई प्रकट हो। जोवतां० = आँखों से देखते, विचार करते ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा। किम = कैसे। जाणियै = जानती-बूझती।

१५—लालां = भटियानी रानी का नाम है। आव = आयु। विकांणी = विक चुकी है। मंडाण = रचना आदि। आस = आशा। तजा० = दोनों कुलों (पीहर और ससुराल) का पाश काट दें। व्रत भंग हुए = नियम का भंग होने पर। वर० = पति से वियुक्त रहे उसका जीना न जीना है।

जेसलमेरी जोड़ अवर भटियांणी आखै
उर अचेत इण कांम रांम त्यां हेत न राखै ।
मोताहळ ऊतारि माळ तुळछी गळ धारै
करै तिलक मृत्यका तिलक कूंकम वीसारै ।
पणि मूळ एह कायर पणै सांग धरै हरि वीसरै
कुळ तरुणि तेण सोभै किसी कंत मरण जीवण करै ॥१६॥
यौं तूंवर उचरै आज अवसांण सु उज्जळ
सुपह साथि गण सती महा कौतूहल मंगळ ।
जिके आज जीवसी तिकां वा घडी दुहेली
आतम दम आळूझि पड़ै जम हत्थ अकेली ।
लीधां सु नाथ परलोक मैं साथ इसौ किम संपजै
तजि नेह ग्रेह जीवण तणी आंगमणी किम ऊपजै ॥१७॥
चंद्र हूंत चंद्रका दृष्ट वीछुड़ी न देखी
घण निवास वीजळी पासि तजि टळी न पेखी ।

१६—आखै = कहती है। उर० = इस काम (सती होने) में जिसके चित्त में ज्ञान नहीं है। रांम० = उससे राम (परमेश्वर) प्रीति नहीं रखता। मोताहळ = (मुक्ताफल) मोती। मृत्यका = (मृत्तिका) गोपीचंदन का। वीसारै = छोड़कर। पणि० = मुख्य नियम यह है। कायर पणै० = कायरपन से स्वाँग धारण करे और परमात्मा को भूले।

१७—सुपह साथि = मालिक के साथ। गण = गिनो, जानो। दुहेली = दुर्लभ है। आतम० = मन को दमन करने में फँसकर। संपजै = मिलै। आंगमणी० = चिता पर चढ़ना कैसे हो सके?

१८—चंद्रका = चाँदनी। दृष्ट = (दृष्टि) नेत्र से। वीछुड़ी = वियुक्त। पासि तजि = मेघ के सामीप्य को छोड़कर। टळी = अलग। पेखी = देखी।

हेत किरण हरि हंस अंग अवतंस उजासै
अस्त हुवां सँगि अस्त उदै सँग उदै प्रकासै।
तिम पीव जीव जीवै तरणि मरण देख साथे मरै
तन छांह केम जोड़ी तजै इम चाओड़ी उच्चरै ॥१८॥
लाज सीळ सन्नेह लाज पतिवरत न मूकै
लाज मांण रक्खणी लाज अवसांण न चूकै।
लाज सोभ संग्रहै लाज धन लोभ न लग्गै
प्रीत मरण दृढ़ पांमि लाज इण कांम उमंगै।
कूरमां लाज उज्जळ करूं सूर करूं व्रत साखियौ
सुजि लाज न भूलूं आज सति इम सेखाव्रत आखियौ ॥१९॥
नाजर आखै नथू प्रगट सपनंतर पायौ
नारद इँद कुँबेर हेत दाखवै सवायौ।
मिळै हूंत महाराज राज उच्चरि राजेश्वर
रुद्रांणी रांणियां करै इंद्राणी आदर।

हेत किरण० = सूर्य की किरणों की प्रीति शरीर का शिरोभूषण होकर प्रकाशित होती हैं। अस्त० = सूर्य के अस्त होने पर अस्त होती हैं और उदय होने पर उदित होकर प्रकाशती हैं। तिम पीव० = वैमे प्रिय के जीवित रहते स्त्री जीवित रहै। तन छांह० = शरीर की छाया संयोग को कैसे छोड़े। चाओड़ी = चावड़ा वंश की रानी।

१९—पतिवरत = पतिव्रता स्त्री। मूकै = छोड़े। अवसांण = अवसर। लाज इण कांम उमंगै = लज्जा इस वास्ते बढ़ती है। सूर = सूरज को। व्रत साखियौ = पातिव्रत्य का साक्षी। आखियौ = कहा।

२०—नाजर० = नथू नामक नाजर कहता है। सपनंतर = मुझे स्वप्न आया। नारद० = जिसमें नारद, इंद्र और कुबेर ने अधिक प्रीति दिखलाई। मिळै हूंत० = महाराजा से मिलकर नारद आदि ने उनको राजराजेश्वर कहा। रुद्रांणी० = रुद्रपत्नी और इंद्राणी ने रानियों का आदर किया।

पह सेव देव हळवळ प्रबळ अति मंगळ अमरावती
निस अगनि चरित दीठौ निजर पड़ै न झूठौ संप्रती ।।२०।।
गायण दास खवास भणै अवसर मन भांणौ
घट वाल्हौ आप रौ तिके पट घूंघट तांणौ ।
उण वणावि आंमासि प्रभू दरसाव न पासे
सुख छूटौ संभारि दोह कट्टौ ते सासे ।
दाखियौ एम पड़दायतां करे नेम मृतकां मरौ
पण एह अम्हां पाराथ परि साथ न छोडां सांम रौ ।।२१।।
ओ ओंकार अनंत आदि अविकार अपंपर
अगम अगोचर अलख अचळ अविणासी ईस्वर ।
परमेस्वर अणपार परम पूरण परमातम
श्रीपति असरणसरण तरणतारण त्रिगुणातम ।
राधा सनेह कारण रहित गउ चारण पति गुज्जरी
चहुवांण नेम ऊठी चितवि भणै एम चत्रभुज्ज री ।।२२।।

पह० = प्रभु (अजीतसिंह) की सेवा करने के लिये देवों में बड़ी हलचल मच गई। अति० = अमरावती (देवपुरी) में अत्यंत मंगल हुआ। निस० = रात्रि में अग्नि का चरित्र दृष्टि से देखा। संप्रती = अभी, प्रत्यक्ष।

२१—गायण = गान-नृत्य आदि करनेवाली प्रीतिपात्र स्त्रियाँ। भणै = कहते हैं। मन भांणौ = मनचाहा। घट० = शरीर जिनको प्यारा है वे वस्त्र का घूँघट निकाल लें। उण० = उस रचना में हमको मालिक का दर्शन समीप में नहीं, अर्थात् दुर्लभ है। सुख० = जो ऐसा समझते हैं कि हमारा सुख नष्ट हुआ वे आह भरते हुए दिन काटें। दाखियौ = कहा। करे० = जो नियम करके मौत से मरते हैं वे मरें। पण० = हमारा तो यह प्रण है कि अर्जुन के जैसे हम स्वामी का साथ नहीं छोड़ें।

२२—ओ = यह। अपंपर = अपार। त्रिगुणातम = त्रिगुणात्मक। राधा सनेह = राधिका से स्नेह रखनेवाला। चहुवाण = चौहान वंश की। चितवि = स्मरण करके। चत्रभुज री = चतुर्भुज की कन्या।

पटरांणी खट प्रवित अवर पड़दायत आंगण
करि मंजण सिणगार नाम उच्चरि नारायण।
जुई गई जोड़ री हुई तिण वार तयारी
ईख दरस अगजीत सरस कुळ रीत सँभारी।
हरि हरि उचार नर पुर हुए हेर वार विसमी हुई
उण वार रथी नृप ऊपड़े आप सुखासण आरुही ॥२३॥

कवि प्रोहित मंत्री प्रधान विध मंत्र विचारै
रहौ मात चहुवांण अरज हित वात उचारै।
ऊंच धांम अड़सट्ठ सद्रव्य नृप नांम समापौ
विप्र जोगी रिख वरन अन्न मन भोजन आपौ।
आपरै सुतन राजा अभौ सकज जोड़ बखतौ सही
देखौ सकाज सुत देखनै राज जतन कुंता रही ॥२४॥

२३—पटरांणी = (पट्टराज्ञी) पट्टाधिकारिणी रानी। खट = छः, ६। प्रवित = पवित्र। करि मंजण = स्नान करके। सिणगार = शृंगार करके। जुई० = बराबर की जोड़ी चली गई, उस समय ये सतियाँ तैयार हुईं। नर पुर = नगर के लोग। हेर हुए = व्याकुल हुए। वार० = समय बड़ा विकट हुआ। रथी = शव को ले जाने के लिये बाँसों की बनी सीढ़ी। ऊपड़े = उठाए गए। आप = रानियाँ। सुखासण = सुखपाल पर। आरुही = चढ़ीं।

२४—विध मंत्र = सलाह। रहौ० = चौहानवंशी माता जीवित रहे। ऊंच धांम अड़सट्ठ० = अड़सठ तीर्थों में जाकर द्रव्य दो। राजा का नाम दो। मन भोजन = मनोवांछित भोजन दो। सकज = समर्थ। बखतौ = बख्तसिंह। राज जतन = राज्य के वास्ते। कुंता रही = पांडु राजा की स्त्री कुंती जीवित रही।

विहित सुणै भ्रत वांणि एम चहुवांण उचारै
सकौ काळ संघरै न को रहियौ वीसारै।
प्रगट मात पांडवां सु तौ न गई वर सत्थे
औ मृत हथ आपरौ हरी दीनौ पर हत्थे।
सुत नेह पंडु पुँहते सरगि पिंड राखै लालच पणै
रिध काज साथ कूंता रहिय जिण हूंता ध्रिक जीवणै ॥२५॥
हीण राव विण न्याव न्याव ध्रिक् पक्ष उपज्जै
पक्ष हीण धन सटै हीण धन धरम न पुज्जै।
धरम हीण सादंभ दंभ ध्रिक् झूठ दिखावै
झूठ ध्रिक्क विणकाज काज ध्रिक सांम न भावै।
ध्रिक सांमि किया गुण वीसरै गुणधिकार विण हरि तरणि
सुजि ध्रिक तरणि पिय अंत सुणि घर तक्कै मोटां धरणि ॥२६॥

२५—विहित = उचित। भ्रत = (भृत्य) सेवकों की। सकौ = सबको। संघरै = संहार किया है। वीसारै = भूलकर भी। वर सत्थे = पति के साथ। औ मृत० = यह अपनी मृत्यु अपने हाथ है, जिसको परमात्मा ने दूसरे के हाथ में दे दिया है। सरगि = स्वर्ग में। पिंड राखै = शरीर लालच के वश होकर रखा। रिध काज = संपदा के वास्ते।

२६—हीण० = राजा के बिना न्याय हीन है। न्याव० = उस न्याय को धिक्कार है जहाँ पक्ष किया जाय। वह पक्ष तुच्छ है जो धन के लिये हो। वह धन वृथा है, जिससे धर्म न किया जाय। वह धर्म तुच्छ है जो दंभ (कपट) से किया जाय। उस दंभ को धिक्कार है जिसमें झूठ दीख पड़े। उस झूठ को धिक्कार है जो बिना काम के बोला जाय। उस काम को धिक्कार है जो स्वामी को पसंद न हो। उस स्वामी को धिक्कार है जो किए हुए गुणों (उपकार) को भूल जाय। उन गुणों को धिक्कार है जो हरि और स्त्री के न हों। उस स्त्री को धिक्कार है जो स्वामी का अंतकाल सुनकर घर और बड़े राज्य की ओर देखे।

एम वयण उच्चारि नयण नृप वदन निहारे
तजि सुंदर घर तांम चाह मिंदर चीतारे।
असवारी दिस अगम प्रगट नक्कीब पुकारे
पड़े संक पर लोक हुए टामंक नगारे।
हरि नांम प्रेम धारे हियै सांमि लियै मगि संचरै
छत्रपती साथ रांणी छहूं आज त्रिहूं कुळ उद्धरै ।।२७।।
चालेवौ चक्रवती निजर सुरपती निहारे
भाग धन्य भूपती एम सोभाग उचारे।
पणवंती पारणी सीळवंती सतवंती
अति मुगती हालियौ कियां साथे कुळवंती।
निरखंति अछर नीची निजर गौ मद मच्छर गाइणी
इण वयण सची विलखी उवरि इंद्र लखी इंद्रायणी ।।२८।।
करे दांन हित कंत तरे दुज दीन निरंतर
कितां चीर मंजीर हीर मांणक जव्वाहर।

२७—वयण=वचन। मिंदर=हरिमंदिर वैकुंठ को। चीतारे=याद किया। दिस अगम=जिसको जान नहीं सकते ऐसी दिशा को सवारी हुई। पड़े०=परलोक में शंका उत्पन्न हुई। टामंक=टकोरे। संचरै=चले।

२८—चालेवौ=मुर्दे की सवारी। चक्रवती=राजा का। एम=इस तरह। सोभाग=सौभाग्य के वचन कहे। पणवंती=प्रणवाली। पारणी=ब्याही हुई। सीळवंती=उत्तम स्वभाववाली। सतवंती=सतीत्व को निबाहनेवाली। मुगती=(मुक्ति) मोक्ष को। कुळवंती=कुलवती रानियों को। गौ=चला गया। मच्छर=डाह। गाइणी=गाने बजानेवाली स्त्रियाँ। इण वयण=इस वचन से। विलखी=मन में मुरझाई हुई, उदास। उवरि=मन में। इंद्रायणी=इंद्र की स्त्री को।

२९—हित कंत=पति के हित के लिये। तरे०=ब्राह्मणों और गरीबों को सदा के लिये तिरा दिया। कितां=कितनों ही को। चीर=वस्त्र। मंजीर=घुँघुरूवाला पाँव का गहना। हीर=हीरा।

सती तेज समरत्थ वहै इम पंथ विचाळै
परिखा धन आपतां जांणि वरखा वरसाळै।
ईखवा अचळ साहस उवरि सुर दळ विमळ तरस्सिया
विसतार नूर सतियां वदन द्वादस सूर दरस्सिया ॥२९॥
सीह किसी साराह सरभ रव सुणे सळकै
एकळ की ओपमा लड़ै भागै थह लुकै।
सूर खाग संग्रहै सुवपि संनाह सुधारे
अग्र ढाल ओडवै पीठ बेलियां पचारे।
त्यां हूंत अती वाधू तरणि अगन कंत हित आंगमै
साराह तेज दीठां सती सीह वराह न सूरमै ॥३०॥
आतुर चित आगळो धांम विसरांम सुधारे
वन चंदण बावना अगर घणसार अपारे।

पंथ विचाळै=मार्ग के बीच में। परिखा=अपार। वरसाळै=वर्षा ऋतु में। ईखवा=देखने को। उवरि=मन में। तरस्सिया=तृष्णावश होकर उत्कठित हुए। सूर=सूर्य। दरस्सिया=दिखाई दिए।

३०—सीह०=सिंह की क्या तारीफ की जाय, वह शरभ के शब्द को सुनकर चला जाता है। एकळ०=बड़े सूअर की क्या उपमा दी जाय, वह लड़ता हुआ भाग जाता है और थह में छिप जाता है। सूर०=शूरवीर मनुष्य। खाग=तलवार। सुवपि=शरीर पर। संनाह=बक्तर आदि। ओडवै=धारण करता है। पीठ०=पीठ पर अपने सिपाहियों को रखता है। वाधू=बढ़कर। तरणि=स्त्री। अगन=अग्नि को। आंगमै=आक्रमण करती है, दबाती है, प्रवेश करती है। साराह=प्रशंसा।

३१—आतुर=त्वरावाली। चित आगळी=मन से सबके आगे रहनेवाली। धांम=घर, लोक। वन=लकड़ी। चंदण बावना=उत्तम चंदन। अगर=(अगुरु) सुगंधि, काष्ठविशेष। घणसार=कपूर।

महल काठ चुणि विमळ पहल रूई घृत पूरित
ओप सदळ औछाड़ अमळ परिमळ आकूंरित।
उण भवण वसण राजा अजन आप सुखासण ऊतरी
लखि वरत सुरी अचरज लगी नार पन्नगी किन्नरी ॥३१॥
राय देह पधराय वार तण चेह विचंमा
झळ अग्गी झूलिवा करण लग्गी परकम्मा।
भूप हेत सत भाय रूप सोहै पटरांणी
वीख वीख जग विमळ ईख लाजै इंद्राणी।
ग्रह चेह द्वार पूजे गवरि मंत्र उचार विचार मन
ईसवर उमा वर अप्पियौ जुग जुग वर राजा अजन ॥३२॥
मुखि आखे हरि मंत्र वदन कजि अंत विकस्से
कियौ ग्रेह परवेस रँजी पुरखेस दरस्से।
खमा खमा उच्चरै करे पारस रस कुंडळ
प्रगट जांण परवेख मेघ आगम रवि मंडळ।

महल = (महिला) स्त्री, भार्या। काठ चुणि = चिता चुनकर। पहल रूई = रुई के पहल। औछाड़ = आच्छादन-वस्त्र। परिमळ = सुगंधि। उण भवण० = उस भवन में बसने के लिये जहाँ राजा अजीतसिंह गया। लखि वरत = पतिव्रतापन को देखकर। सुरी = देवांगना। पन्नगी = नागवधू।

३२—राय = राजा के। चेह = चिता के। विचंमा = बीच में। झळ = ज्वाला। सत भाय = सच्चे भाव से। वीख = देखकर। ईख = देखकर। ग्रह = घर। ईसवर = महादेव। उमा = पार्वती।

३३—मुखि आखे = मुख से हरि का मंत्र कहकर। अंत विकस्से = अत्यंत प्रफुल्लित है। रँजी = प्रसन्न हुई। पुरखेस = पुरुषों के मालिक (राजा) को। दरस्से = देखकर। खमा खमा = स्वागत का आदर-बोधक वाक्य। करे पारस० = प्रीति से राजा के चारों ओर कुंडलाकार रानियाँ बैठीं। प्रगट जांण० = मानों वर्षा ऋतु में सूर्य मंडल के कुंडली हुई।

चंदण सुवास पंखा चमर कृत गंगाजळ दास करि
छिड़कंत कंत रांणी छहूं पांणी खेल वसंत परि ॥३३॥
दी आग्या दूसरां मेळ कीजै ग्रह मंगळ
उण समयै दिस आठ काठ जग्गे दावानळ।
भेळि झाळ तण भुवण करे मंजण दोनूं कर
परि झूले जळ पांणि सकत किर मांण सरोवर।
रव अगनि व्याळ धूंवारवण सौर ज्वाळ इळ संमिळै
सुज सती होम करतां सुवणि मिळे धोम नभ मंडळै ॥३४॥
ग्रह झाळां गरजंत वधै लोळां वैसानर
नर पुर जन हरि नांम उचरि समरंत अगोचर।
सती अंग पति संग उलसि रँग पावक अंकित
रोम अस्त पळ चरम होम वपु नाड़ि सांमि-हित।

दास करि = दासियों के हाथों से लेकर। कंत = पति को। पांणी खेल० = जैसे वसंत ऋतु में पानी से फाग खेलते हैं।

३४—दी आग्या० = रानियों ने आज्ञा दी कि अग्नि का संयोग किया जाय। ग्रह मंगळ = अग्नि। दावानळ = अग्नि। भेळि० = ज्वाला मिल जाने पर रानियाँ दोनों हाथो से ज्वाला से स्नान करती हैं। परि० = सब रानियाँ जल में झूलती हों वैसे ज्वाला में झूल रही हैं, मानों सरोवर में झूलती हैं। रव० = अग्नि का भयंकर शब्द। धूवांरवण = धूम। सौर = बारूद। इळ = पृथ्वी। सती० = सतियों के शरीर का होम करते समय। धोम = धूम, धुआँ।

३५—ग्रह = अग्नि की। लोळां = अग्नि की जिह्वा। वैसानर = अग्नि। अगोचर = जो दृष्टि में न आवे। उलसि = उल्लसित होकर। रंग० = अग्नि के वर्ण के समान हो गई। अस्त = (अस्थि) हड्डी। पळ = मांस। चरम = चमड़ा। नाड़ि = नाड़ियाँ। सांमि-हित = मालिक के हेतु।

रिध नेह बैस पटरांणियां देह न गाळी दुक्ख मैं
सुर थांन काजि महाराज सँगि मिळी एम सुर मुक्ख मैं ॥३५॥
राजलोक रिख दूंण वीस पड़दायत प्यारी
संग सहेली च्यार अगन सिन्नान उचारी।
बारै गायण वळे वळे नव पड़दा बेगण
हाथळ चेरी उभै उभै दो जणी हजूरण।
पातरां पांच नाजर उभै भळ बाई मृत भावियौ
जसवंत सुतन सतियां सहित यौं स्वरलोक सिधावियौ ॥३६॥
जाळ देह पावक्क पाळ पतिव्रत महापण
कुळ लज्या उजवाळ रीत रखवाळ नरेहण।
नाम राख नव खंड प्रसिध चाडे दहुँ पक्खे
साथि सांमि समरत्थ रथे बैठी कथ रक्खे।
सुर करै हरख वरखै सुमन अमर तरणि धिन उच्चरै
नर भुवण हूँत सतियां नृपति सुरपुर मारग संचरै ॥३७॥
वरण इंद सिव ब्रह्म धरम नारद धनपत्ती
अजन धिन्न उच्चारि करै इण पर कीरत्ती।

रिध०=अधिक स्नेह के वश होने से। गाळी=नष्ट की। सुर थांन काजि=स्वर्ग के लिये। सुरमुक्ख=अग्नि में।

३६—राजलोक=रानियाँ। रिख दूंण=छः, ६। सहेली=दासियाँ। पड़दा बेगण=उड़दा बैंगनियाँ। उभै=दो। भल=भला। बाई=स्त्रियों ने। मृत=मृत्यु की। भावियौ=भावना की। स्वरलोक=स्वर्ग को। सिधावियौ=गया।

३७—पावक्क=अग्नि में। नरेहण=राजाओं की, उत्तम। चाडे०=दोनों कुलों को उन्नति पर पहुँचाया। अमर तरणि=देवताओं की स्त्रियाँ। नर०=मनुष्यलोक से। संचरै=गए।

३८—वरण=वरुण। धनपत्ती=कुबेर। इण पर=इस तरह।

तै थप्पै सुर धरम धरम उसरां ऊथप्पै
देवळ तीरथ देव सुरहि इधकार समप्पै।
धरकियौ अचळ हिंदू धरम ऊएले पह आजरा
नर हुवौ आज पहली न को राजि समौ जसराज रा ॥३८॥
सावत्री सरसती गवरि गंगा गोमत्ती
मिळ सतियां धरि महरि करै इण परि कीरत्ती।
त्रिहुए पख तारणी सोभ जुग च्यार सुवांणी
पाँच तत्त होमणी रीत मोटी खट रांणी।
धिन मात पिता कुळ जात धिन सत अवदात महासती
साहाय थकी निज सांमि सँग वसी आय अमरावती ॥३९॥

दुहा

मास तीन बावीस दिन, पैंताळीस वरस्स।
अमरापुर वसियौ अजौ, राजा कर राजस्स ॥४०॥
धांम गयौ जोधां धणी, नांम करे संसार।
वाकौ सुज सुणियौ अभै, दिल्ली साह दुवार ॥४१॥

तै = तूने। उसरां = (असुरों) मुसलमानों का। देवळ = देवालय। सुरहि = (सुरभि) गौ। इधकार = अधिकार दिया। ऊएले = इधर के। पह = प्रभु ने। राजि समौ = आपके सदृश।

३९—सावत्री = ब्रह्मा की स्त्री। महरि = कृपा। पख = कुल। पाँच० = पाँचों तत्त्वों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु आकाश) से शरीर बनता है। खट = छः, ६। अवदात = उज्ज्वल। अमरावती = देवपुरी।

४०—अमरापुर = स्वर्ग में। राजस्स = राज्य, राज्यभोग भोगकर।

४१—जोधा धणी = जोधा राठोड़ों का मालिक। साह दुवार = बादशाह के द्वार पर।

खिति हूँता आयां खबरि, आया दरि उमराव।
संभारै धोखौ सकळ, धारै लेख प्रभाव ॥४२॥

छप्पय

सुण वांणी अभसाह ग्यांन अणथाह विचारै
औ संसार असार समझि करतां संभारै।
मन अडोल दृढ बोल मेर सम तोल अमापै
अत सग्यांन ऊधरां सुमति ऊँबरां समापै।
परखियौ नरे पूरण पुरस परम तेज समरथ पणौ
कुळ भार निवाहण धमळ कळि थळ आये बळ झल्लणौ ॥४३॥

छंद बेअक्खरी

सूर हरौ अवतार सुभावां
अति द्रढ मन लखियौ उमरावां।
अजन तणौ सुणियौ सुत वाकौ
सतियां सहित दिली पुर साकौ ॥४४॥

४२—खिति हूँता = जन्मभूमि से। दरि = दरगाह, राजसभा। संभारै = स्मरण करके। लेख प्रभाव = विधाता के लेख का प्रभाव।

४३—अणथाह = गंभीर। औ = यह। करतां = परमेश्वर को। मेर० = सुमेरु के समान। तोल० = भार, सहिष्णुता में। अमापै = परिमाण-रहित। अत० = ज्ञान में अत्यंत ऊँचा। सुमति० = उमरावों को अच्छी बुद्धि दी, अर्थात् उपदेश किया। परखियौ = समझा। पूरण पुरुष = पूर्ण पुरुषोत्तम। पणौ = पन, सामर्थ्य। धमळ = (धवल) धोरी बैल। कळि = कलियुग में। थळ = रेतीला मैदान। झल्लणौ = धारण करनेवाला।

४४—सूर हरौ = सूरसिंह का वंशज। अवतार = अवतारी पुरुष। सुभावां = अच्छे विचारवाला। लखियौ = समझा। वाकौ = वृत्तांत। साकौ = (संख्य) युद्ध।

कजि उदकंजळि सुंज कराए
जमण सिनांन कियौ नृप जाए।
वेदोकत मंत्रां सुण वांणी
जळ अंजळि आपी जग जांणी ॥४५॥
पित हित दांन करे अण पारां
श्रुति संमृति वयणां तत सारां।
अरथ मात पित धरम अपारे
पार गिणै कुँण तिण प्राकारे ॥४६॥
गुण खोड़स खोले द्रव गंठे
कीधौ धरम जमण उपकंठे।
असि गज रथ धर सुरभि अपारां
विप्र निहाल किया तिण वारां ॥४७॥
परम धरम कर जमण अप्रंपर
आयौ थांन जिहांन उजागर।
लोकाचार जेज नह लाई
सुण आयौ जैसिंघ सवाई ॥४८॥
साथे कोटा धणी सवायौ
औरौं धर भदौर नृप आयौ।

४५—उदकंजळि = जलांजलि। सुंज = तैयारी। आपी = दी।

४६—वयणां = वचन। तत सारां = यथार्थ। अरथ = लिये। प्राकारे = प्रकार।

४७—गुण खोड़स = सोलह गुणोंवाला। खोले = उद्घाटित किया। गंठे = (ग्रंथि) गाँठ। उपकंठे = सामीप्य में। असि = घोड़ा। धर = पृथ्वी। सुरभि = गौ। निहाल किया = सर्व-संपत्ति-युक्त किया। तिण वारां = उस समय।

४८—अप्रंपर = अपार। थांन = स्थान पर। लोकाचार = मृतक के स्नानार्थ जाना।

४९—औरौं = और। भदौर = भदौर का राजा। अमीरळ =

आया मिलण अमीरळ एता
जवनां दळे मुदायत जेता ।।४९।।
आखै साह वयण मुख ऐसा
जग कुँण अवर अभा तो जैसा ।
दिल्ली द्वार जिता वरदाई
तोसूं राह बिन्है तळदाई ।।५०।।
दाखे वार वार दिल्लेसुर
श्री महाराज राजराजेश्वर ।
और उमीर सकौ नृप आवै
जोधां नाथ हूँत मिळ जावै ।।५१।।

दुहा

सिर आयौ इकयासियो, वरसे मुकट विचार ।
असपति बोलायौ अभौ, दिल्ली राज दुवार ।।५२।।
ईख प्रभा अभसाह री, जांणी मन जैसाह ।
पुत्री निज नव कोट पह, वर दळ चौ वीमाह ।।५३।।

अमीर । एता = इतना । मुदायत = मुख्य । जेता = जितने ।

५०—आखै = कहते हैं । वयण = वचन । अवर = दूसरा । जिता = जितने । वरदाई = राजा । राह बिन्हैं = दोनों मार्गवाले (हिंदू और मुसलमान) । तळदाई = तले रहनेवाले हैं ।

५१—दाखे = कहता है । सकौ = सब । जोधां नाथ = जोधावंशियों का मालिक ।

५२—सिर आयौ = ऊपर आया । मुकट = शिरोभूषण ।

५३—प्रभा = कांति । जैसाह० = जयपुर के राजा जयसिंह ने अपने मन में विचार किया कि बेटी का विवाह मारवाड़ के राजा के साथ करूँ । वर दळ चौ० = यह सेना का मालिक है ।

करि औछाव कहाव करि, ऊहवि पति आंबेर ।
उर भायौ दूलह अभौ, पधरायौ नारेळ ॥५४॥
अति हरखे सब ऊँबरा, कछवाहा कमधज्ज ।
दरि दोनूं राजा दिपै, वाजा वाणिज रज्ज ॥५५॥
मरि ढूंढाड़ां मारुवां, प्रभा वणी बे पाट ।
सुख पायौ सेवक सुरां, असुरां थयौ उचाट ॥५६॥
पधरावण परणायबा, श्री दूलह अभसाह ।
मथुरां मांडह मंडियौ, जिमि कूरम जैसाह ॥५७॥

छप्पय

आदि पक्ख अष्टमी मास नभ सुभ गुण मंडित
सपतिपुरी मणि मुकट खेत्र मधुपुरी अखंडित ।
जगत प्रसिध जैसाह रचे वीमाह सुरंगम
श्रुति संमृति व्रत सार ग्रंथ पूछे निगमागम ।
राजाधिराज उच्छव सरस करे जिगन जस कारणै
कुंदण जड़ाव आगम कमध बंधे तोरण बारणै ॥५८॥

५४—औछाव = उत्सव । कहाव = कहना-सुनना । ऊहवि = विचार करके । उर भायौ = मन में अच्छा लगा । पधरायौ नारेळ = नारियल भेजा ।

५५—ऊँबरा = उमराव । कमधज्ज = राठोड़ । दरि = दरीखाने में । दिपै = प्रकाशते हैं । वाजा = नक्कारे आदि । वाणिज = व्यापार । रज्ज = राज्य में ।

५७—परणायबा = पाणिग्रहण करने को । मांडह = दुलहिन के पिता का घर, विवाह-मंडप ।

५८—आदि पक्ख = कृष्णपक्ष । नभ = भाद्रपद । खेत्र = क्षेत्र । मधुपुरी = मथुरा । सुरंगम = अच्छे रंग (प्रीति) के साथ । निगमागम = निगम, वेद । आगम = शास्त्र । राजाधिराज = बखतसिंहजी । जिगन = (यज्ञ) विवाहयज्ञ । कुंदण० = राठौड़ अभयसिंहजी के आने पर रत्नों से जड़ा हुआ सुवर्ण का तोरण बाँधा गया । कुंदण = शुद्ध सुवर्ण ।

त्रिकालग्य तत जांण वांणि जोतिस ततवेता
आचारिज रिख उग्र जिके इक्खज गुण जेता।
रुचि मंडित खट करम तिके पंडित तेड़ाया
ज्यां पूछै जैसाह किया ओछाह सवाया।
नरनाथ कोडि मथुरा नयर वाजै सुसर वधामणा
वाजंत्र सुतांन खट त्रीस वगि सोभै ग्यांन सुहामणा ॥५९॥
सू दिल्ली अभसाह चित्त ओछाह विचारै
कमधज्जां नव कोट सुभट मन मोट सृंगारै।
पड़े घाव नीसांण चढे सिर ढुळतां चंमर
जांणि इंद्र औपियौ वृंद लीधां देवासुर।
सोभंति राग वाजिंत्र सुर आचिरजे गंध्रब अछर
करि रूप दुवादस सूर किर नूर परक्खे नार नर ॥६०॥
रथ मातंग तुरंग अंग प्रति अंग सिँगारे
जगमगाति नव जाति साजि माणंक सुधारे।

५९—तत = (तत्त्व) को। ततवेता = (तत्त्ववेत्ता) असली बात को जाननेवाला। रिख = ऋषि। इक्खज = देखा। रुचि० = षट्कर्म में रुचि होने से शोभायमान। तेड़ाया = बुलाए। ओछाह = उत्सव, उत्साह। कोडि = मन का उत्साह से। सुसर = अच्छे स्वरवाले। वधामणा = स्वागत। वाजंत्र = वाद्य। सुतांन = अच्छी तानवाले। सुहामणा = मन को प्रिय।

६०—मन मोट = उदारचित्त। सृंगारै = शृंगार-युक्त किए। घाव = डंका। नीसांण = नक्कारों पर। ढुळतां चंमर = चमरों के झपट्टे लगते। जांणि = मानों। वृंद = समूह। देवासुर = देवता और दैत्य। सुर = स्वर। आचिरजे = आश्चर्य करते हैं। गंध्रब = गंधर्व। अछर = अप्सरा। सूर = सूर्य।

६१—मातंग = हाथी। जगमगाति = जगमग करते हैं, चमकते हैं। नव जाति = नौ प्रकार के रत्न। साजि = तैयार करके।

सोभि जांन सिरदार रूप अणपार विराजै
रतन निकरि किरि रुचिर भौमि वैरागर भ्राजै।
दूलह सधीर विच दीपियौ हीर जिहा गुण उज्जळां
रिख वृंद सते किर वेधियौ बीज चंद्र बाधै कळां ॥६१॥

छंद भुजंगी

वणौ जांन सोभा छभा देववाळी
सुरांनाथ चै साथिवाळै सिघाळी।
थया वृंद नाखत्र कै चंद्र साथै
कना सोभियौ सिंभु जीखेस माथै ॥६२॥
भड़ां बाधि सोभा सुरां हूँत भ्राजै
रहे इंद हावै जिसौ वींद राजै।
अनेके अनोपे गजे रूप ऐसौ
करै एक ऐरापती दाप कैसौ ॥६३॥
महा तेज मै राजि वाजी समत्थं
रहै वेव पेखे खड़ा देव रत्थं ॥

जांन = बरात। निकरि = समूह। भौमि० = भौमासुर की स्त्रियों का समुदाय। हीर जिहा = हीरे के जैसा। रिख वृंद० = मानों सप्तर्षियो के तारों को बढ़ती कलावाले चंद्रमा ने बेधा है। अर्थात् सप्तर्षियों के बीच में द्वितीया के चंद्र के समान बरातियों में महाराजा शोभा देते हैं।

६२—छभा = सभा। सुरांनाथ चै = इंद्र के। सिघाळी = श्रेष्ठ। वृंद = समूह। नाखत्र = नक्षत्र। कै = क्या। कना = किंवा। सिंभु = (शंभु) महादेव। जीखेस = नंदिकेश्वर।

६३—हावै = आश्चर्यान्वित। वींद = दुलहा। अनोपे = अनुपम। गजे = हाथी। ऐरापती = ऐरावत इंद्र का हाथी। दाप = (दर्प) गर्व।

६४—तेज मै = तेजोमय। राजि = पंक्ति। वाजी = घोड़ों की। वेव =

दुनी मग्ग राजांन री सोभ देखै
लखै कांम रै नांम सो बाधि लेखै ॥६४॥
वणै केसरां अत्तरां बोह वागां
प्रभा चंद्र मोहै भड़ां वृंद पागां।
हुए संग मारूत्त सौरंभ हालै
परस्सै तिणां पोख सूं दूख पालै ॥६५॥
कमाळा लदे सब्ब त्यां द्रब्ब कोड़ी
सकट्टां लठां भार ज्यौ टांस जोड़ी।
विभारंभ आचंभ राठौड़वाळा
मही छेलिवा ऊमड़े मेघमाळा ॥६६॥
वड़ै कोड़ि खेड़ै गजां वाजि राजां
सुरंगां सुभट्टां गरट्टां समाजां।
अभैसाह जैसाह रै गेह आयौ
वणै इंद्र सामंद्र हूँता सवायौ ॥६७॥

वेग, तेजो। दुनी = दुनिया, संसार। लखै = देखकर। कांम = कामदेव। लेखै = मानते हैं।

६५—बोह = सुगंधि। वागां = पोशाक। प्रभा = कांति। पागां = पगड़ियो की। मारूत्त = (मरुत्) पवन। सौरंभ = सुगंधि। हालै = चलती है। तिणां = तृणों को। पोख सूं = प्यार से। दूख पालै = दुःख को रोकती है।

६६—कमाळा = पर्याप्त, काफी। सब्ब = (सर्व) सब। कोड़ी = (कोटि) करोड़। सकट्टां = गाड़ियों में। लठां = छकड़े। टांस = दबा दबा कर भरना। विभारभ = वैभव का आरंभ। आचंभ = आश्चर्य करानेवाला। छेलिया = प्लावित कर दिया। ऊमड़े = ऊपर की तरफ आकर।

६७—वड़ै० = बड़े उत्साह से चलाए। गरट्टां = समूह। सामंद्र = समुद्र से।

दूहा

मारू आयौ मधुपुरी, श्री दूलह अभसाह ।
परमोछव परणायवा, सुख मंठै जैसाह ॥६८॥
ज्यौं रचना नृप ज्याग री, को वरणै कविराव ।
वेदोकत सासत्र वचन, पगि पगि लगन प्रभाव ॥६९॥
सांम्हेळै जोधांण सूं, आया भड़ आंबेर ।
पख दोनूं सोहै प्रभा, मोहै इंद्र कुबेर ॥७०॥
पह तोरण पधरावियौ, नृपति मुरद्धरनाथ ।
मिथला नयर विदेह घर, वर सुंदर रघुनाथ ॥७१॥
उग्र लगन कर आरती, रायंगण पधराय ।
पधराई परणायवा, कन्या कूरम राय ॥७२॥
कूरंमी कमधज्ज सूं, ओपै वामै अंग ।
रवि रांना ससि रोहिणी, सुरपति सचि किर संग ॥७३॥

६८—मारू = मारवाड़ का । मधुपुरी = मथुरा । परणायवा = विवाह करने के लिये । मंठै = रचा ।

६९—ज्याग री = यज्ञ की । पगि पगि = पैंड पैंड पर । लगन = विवाह का दिन ।

७०—सांम्हेळै = कन्या के पिता का वर के आदरार्थ सामने आकर मिलना, स्वागत । जोधांण सूं = जोधपुर (जोधपुर के राजा) से । पख = (पक्ष) कुल ।

७१—पधरावियौ = ले जाया गया । मिथला = जनकपुरी । विदेह = जनक राजा ।

७२—उग्र लगन = अच्छे लग्न में । रायंगण = राजांगण में । पधराई = ले जाई गई । कूरम राय = कछवाहों का राजा ।

७३—कूरंमी = कछवाही । ओपै = शोभा देती है । रवि रांना = जैसे सूर्य अपनी स्त्री राणादे से । ससि० = चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र से । सचि = इंद्राणी ।

कवि ओपम ऐसी कहा, औपम और विचार।
जांणिक भायौ रूप मन, पायौ श्रिया मुरार ॥७४॥
रायंगण कूरम रमणि, निरखै अभौ नरिंद।
नां रति विंद सरूप सम, इंद दुडिंद न चंद ॥७५॥

छंद जात हणूफाल

उच लगन लखि रिखि उरधि
अब कूंण प्राचिय सुरधि।
रचि कनक वेह सुरंग
ओपंति नव खण अंग ॥७६॥
मृदु हरित वंस मँगाय
प्रति वेह जुत रोपाय।
रचि चौक चंदण चार
कृति मुकति रेख प्रकार ॥७७॥
श्रियखंड वर मृगसार
सँग अँबर तर घणसार।

७४—ओपम = उपमा। जांणिक = मानों। भायौ = चाहा हुआ, मनोभिलपित। श्रिया = लक्ष्मी। मुरार = (मुरारि) विष्णु।

७५—कूरम रमणि = कछवाहों की स्त्रियाँ। रति विंद = रति का पति, कामदेव। दुडिंद = (दिनेंद्र) सूर्य।

७६—उच = उच्च लग्न। रिखि = नक्षत्र। उरधि = ऊँचा, श्रेष्ठ। अब = सर्व। कूंण = कोण। प्राचिय = पूर्व दिशा की। सुरधि = शुद्धि। कनक = सुवर्ण की। वेह = उपर्युपरि नव कलश रखे जाकर बाँसों के बीच में उनको स्थापित करना। खण = मजला, एक के ऊपर एक स्थान।

७७—मृदु = कोमल, सचिक्कण। चार = (चारु) सुंदर। कृति = रचना। मुकति = मोती।

७८—श्रियखंड = (श्रीखंड) चंदन। मृगसार = कस्तूरी। घणसार =

सुभ आज समधि प्रसिद्ध
करि गार तिण जुति किद्ध ॥७८॥
सुभ रचित पुंज समूल
फबि वास मंजुल फूल ।
विध तेण पाट वणाय
रुचि दुलहि दूलह राय ॥७९॥
पधराय जोड़ सप्रीत
किय पाणिग्रहण सक्रीत ।
चित पवित्र पंडित चार
अण पार वेद उचार ॥८०॥
अभसाह सनमुख इंद
नरनाह सोभ नरिंद ।
ध्रमराय दक्खण धार
वळि वरण पृष्ठ विचार ॥८१॥
अँग वाम वाणि धनईस
सब कीध प्रष्ण सुरीस ।
जिण वार नृप जैसाह
छुति(बि) निरखि धरि अवछाह ॥८२॥

कपूर । आज=(आज्य) घृत । समधि = समिधियाँ । गार=पंक ।

७९—पुंज = ढेर, समूह । समूल = मूल सहित । मंजुल = सुंदर । तेण = उसके । पाट=पट्टा ।

८०—जोड़ = साथ । पाणिग्रहण=हाथ पकड़ना, हथलेवा जोड़ना । सक्रीत = कीर्ति-सहित ।

८१—इंद=इंद्र, इंद्र की दिशा अर्थात् पूर्व दिशा में । ध्रमराय = धर्मराज । वरण=वरुण देवता ।

८२—धनईस = कुबेर । प्रष्ण = प्रसन्न । सुरीस = देवताओं के स्वामी । छबि=शोभा । अवछाह = उत्साह ।

अभसाह सिर उण वार
आपंत लख धन वार।
नरनाथ रमणि सनेम
परखंत कमधज प्रेम ॥८३॥

दुहा

कूरम नृप उच्छव कियौ, वेद सनीत विचार।
दुलहणि जुग लीधा दुलहि, चौरी फेरा च्यार ॥८४॥
भाँवरि भाँवरि भूप रौ, नरपति वदन निहार।
रजत महामांणक रतन, आपै सीस उवारि ॥८५॥

छंद बेअक्खरी

वृति जुति अगनि अधूम विराजै
रतन जड़ित वेदी दुति राजै।
दिव्य काष्ट खट जाति अदूखति
अगर कपूर घिरत जुत आहुति ॥८६॥
औपै वेद जमणिका आगै
ज्वाळ अमळ वेदी मधि जागै।

८३—आपंत = देता है। लख = लक्ष। वार = सिर पर घुमाकर। रमणि = स्त्री। सनेम = नियम सहित।

८४—सनीत = नीति सहित, रीति सहित। जुग = दोनों। फेरा = भाँवरी।

८५—रजत = चाँदी, रौप्य। आपै = दिये। सीस उवारि = सिर पर घुमाकर।

८६—वृति = परिधि। जुति = युक्त। अधूम = धूम-रहित। वेदी = होम करने का स्थंडिल (चबूतरी)। खट जाति = छः प्रकार के। अदूखति = दोष-रहित, शुद्ध।

८७—औपै = शोभा देते हैं। जमणिका = कनात के। मधुपर्कादि =

मधुपरकादि सरस रस माधुर
संसकार परखै देवासुर ॥८७॥
यौं सिर मौड़ रतनमय औपै
ऊपरि आतपत्र आरोपै ।
दूलह सिर सिर राजदुलारी
करै चमर कन्या कोमारी ॥८८॥
गान तरुणि मुखि हरखित गावै
लखि दूलह चखि पलक न लावै ।
भूखण रतन कनक नह भाळै
नृपति अभै चौ रूप निहाळै ॥८९॥
ऊपरि राई लूण उतारै
वळि नौछावर प्रांण विचारै ।
वाजै द्वार छत्रीसूं वाजा
रीत सप्रीत परणियौ राजा ॥९०॥

मधुपर्क प्रभृति । कांस्यपात्र में दही, घृत, शहद, मिश्री और जल, इनको मिलाकर पूजनीय के अर्पण करना मधुपर्क कहलाता है । इसमें जल बहुत अल्प; मिश्री, दही और घृत बराबर; शहद सबसे अधिक रहना चाहिए । माधुर = मधुर, मीठा । परखै = देखते हैं ।

८८—मौड़ = सेहरा । आतपत्र = छत्र । आरोपै = धारण किया । राजदुलारी = राजकन्या । कोमारी = क्वारी, कुमारिका ।

८९—तरुणि = युवती स्त्रियां । चखि० = आंख की पलक नहीं पड़ने देती । भाळै = देखती हैं । निहाळै = देखती हैं ।

९०—ऊपरि० = दूल्हा दुलहन के ऊपर राई-लून करती हैं । वळि = फिर । नौछावर = द्रव्य को सिर पर घुमाकर देना । प्रांण विचारै = इन पर स्त्रियां प्रांण न्यौछावर करना विचारती हैं ।

वार्ता

मंगलाचार की रचना अपार
एक रसणा सूं को पढै पार।
वेद के पातक गांन धुनि गावै
मूरतवंत वेद के रूप दरसावै।
अढार भार वनस्पती का पत्र फूळ फळ।
अड़सठ तीरथ का निरमळाचार जळ।
राजा जैसाह कन्यावळ कौ संकळप लियौ
सो वेदोकति संसकार करि पार कियौ।
दांन के प्रमांण दुहुँ राजानूं के पांण
मेघ के मँडांण कहा सातूं मैहरांण।
देस देस के विद्याधर सूत मागध बंदी जण
आसा धर आए सो भए पूरण।।

दूहा

महारांणी लीधां महल, आयौ श्री अभसाह।
जगि रति मदन हुलास जिम, ओप विलास अथाह।।६१।।

वार्त्ता—रसणा सूं=जीभ से। कन्यावळ=कन्यादान का। पार कियौ=पूर्ण किया, समाप्त किया। प्रमांण=परिमाण। पांण=शक्ति। मेघ के मँडांण=मेघ बरसने का आडंबर। मैहरांण=(महार्णव) समुद्र। विद्याधर=पंडित। सो=वे। पूरण=(पूर्ण) धन मिलने से।

६१—महल=प्रासाद, राजमहल। जगि रति=रात्रि को जागना। विवाह के अनंतर स्त्रियाँ गीत गाती हुई रातभर जागती रहती हैं उसे राती जोगा कहते हैं। मदन हुलास=कामदेव के आनंद के समान।

छंद बेअक्खरी

राजै महल अभौ महाराजा
श्रीवर जेम प्रेम गुण साजा।
नार चतुर इक वदन निहारै
वेखि आभ चख लाभ विचारै ॥६२॥
एक सुघड़ रस कायब उच्चर
पूरण सुख लूटै प्रसनोतर ॥
बळ गुण वयण एक बोलावै
सब लख उण रौ भाग सरावै ॥६३॥
गायण एक सपत सुर गावै
लेख अछर उरवसी लजावै।
झांके एक हास द्रग झूलै
फबि रवि उदै कमळसी फूलै ॥६४॥
अति रीझै इक विरद उचारै
सुख उपजै सुज सुमति सँभारै।
राज रमणि महाराज रिझावै
अति हित निरख हरख उपजावै ॥६५॥

६२—श्रीवर=विष्णु भगवान्। इक=एक, केवल महाराज के मुख को देखती है। वेखि=देखकर। आभ=कांति।

६३—रस कायब=शृंगाररस-संबंधी काव्य को। बळ=बल, गुण और वचन इनमें से एक हो तो भी लोग तारीफ करते हैं। और जहाँ सब देखने में आवे वहाँ उसके भाव की प्रशंसा करते हैं।

६४—गायण एक=एक गानेवाली ऐसी है जो सातों स्वरों का गान करती है। लेख०=जिसके गान को समझकर उर्वशी अप्सरा लजित होती है। झांके=देखकर। झूलै=झोला खाती है। रवि उदै०=सूर्य के उदित होने से।

६५—सँभारै=स्मरण करता है।

दुहा

दंपति रूप अनूप दुति, सोभा हूँत सवाय।
सीळ तणै जोड़ै सथिर, लज्या बैठी आय ॥९६॥
लेखे पम निसीत लग, पेखे प्रेम प्रगास।
जगि रति मदन विलास ज्यौं, हित चित परख हुलास ॥९७॥
समझि चली सुंदर सबै, निज मंदिर लखि नार।
तन ल्याई कुळ कांण तैं, मन नृप रूप मझार ॥९८॥
यौं महलै राजै अभौ, वस दुलही रस वृंद।
इंद सची नह ऐरसौ, जो सुख प्रिया नरिंद ॥९९॥
निज मजलस रस सज्जणां, विंजन ऊग विहांण।
हित करणै जैसाह रै, वरणै को कवि वांण ॥१००॥
परसी कमधां मधुपुरी, जंमण किया सिनांन।
वूठा झड़ मंडे विभै, करे उमंडे दांन ॥१०१॥

९६—दंपति = स्त्री-भर्तार। अनूप = अनुपम। सीळ तणै जोड़ै = पातिव्रत्य के साथ। सथिर = स्थिर।

९७—निसीत = अर्धरात्रि तक। प्रगास = प्रकाश। परख = देखकर, परीक्षा करके।

९८—तन ल्याई० = कुल के लिहाज से शरीर अर्पण किया, परंतु रानी का मन राजा के रूप में लगा हुआ है।

९९—सची = इंद्राणी। ऐरसौ = ऐसा।

१००—निज मजलस = अपने स्थान में। रस सजणां = सज्जनों को आनंद होता है। विंजन० = प्रतिदिन भोजन की तैयारियाँ होती हैं। हितकरणै = जयसिंह जो प्रेम करता है।

१०१—परसी = स्पर्श किया, दर्शन किया। जंमण = यमुना में। वूठा झड़० = वैभव की बरसनेवाली झड़ी लगी। उमंडे = उदारचित्त होकर।

पातल भीम नरिंद रै, जोधे नृप छळ जांण।
लूंटायौ लोभाउवां, महि द्रब लक्खि प्रमांण ॥१०२॥
जग तूठौ बंदी जणां, श्री दूलह अभसाह।
किया सवाई मांडहै, तळ दाई बेराह ॥१०३॥

छप्पय

उंच दिवस असटमी आद पख भाद्रव आयां
महा ज्याग मधुपुरी हुवौ उच्छव मनभायां।
परणीजै अभसाह कियौ निरवाह कविंदां
दांन पेखि अचरिज्ज हुऔ सामंद नरिंदां।
पख एक ईख मधुवन पुरी सीख करे जैसाह सूं
असवार थयौ राजा अभौ इण प्रकार औछाह सूं ॥१०४॥
परणीजे मधुपुरी अभौ वृंदावन आयौ
पेखि धांम सुख परम भड़ां तीरथ मन भायौ।
परखि निगम द्रुम पुंज हेक सुख कुंज निहारे
हेक पुळिण हित करै हेक जळ जमण विहारै।

१०२—पातल० = राज के बंधु जोधा शाखा के प्रतापसिंह और भीमसिंह ने राजा के वास्ते लोभी पुरुषों को एक लाख द्रव्य दिया।

१०३—मांडहै = कन्या के पिता के घर में। तळ दाई बेराह = दोनों राहवाले हिंदू मुसलमानों को तले देनेवाला अर्थात् नीचा किया; अथवा दोनों का हाथ टिका दिया।

१०४—उंच दिवस = ऊँचा दिन। आद पख = कृष्णपक्ष। महा ज्याग = बड़ा यज्ञ (विवाह)। मनभायां = मनचाहा। सामंद नरिंदां = समुद्र के राजाओं अर्थात् विलायतवालों को। पख एक ईख = एक पक्ष मथुरा को देखकर।

१०५ परखि = देखकर। निगम = वेद। द्रुम० = एक बार सुखकर वृक्षों का समूह और एक बार कुंज को देखा। एक बार यमुना का तट

इक वार वार वंदै विपुन निरखै नित्य विहार घर
सुमरै अनेक बाधा हरण राधानंद कँवार वर ।।१०५।।

छंद भुजंगी

वणै रूप वृंदावनं ओप वाधू
सदा सेवतं देवतं व्रंद साधू ।
तरां भार अड्ढार नूं भारतैसौ
अनेकां विराजै वृखां रूप ऐसौ ।।१०६।।
सुरां झंब रूपी तरां अंब सोभै
लखे पारिजाती तजै मार लोभै ।
प्रभा संप चंपे कळी जाळ पेखे
लजै भौण संजीवनी द्रोण लेखे ।।१०७।।
फबै प्रेम दूणै इसा केम फूलै
भ्रमैं इंद्र खंडीवनं वृंद भूलै ।

और एक बार यमुना के जल में क्रीड़ा की । वार = (वारि) जल को वंदन किया । कँवार वर = क्वाँरी कन्याओं का वर ।

१०६ —ओप = शोभा । वाधू = अधिक । देवतं = देवताओं का । व्रंद = समूह । तरां = (तरु) वृक्षो को । तरां भार० = वह वृंदावन अनेक वृक्षों से ऐसी शोभा देता है कि मानों वह अट्ठारह भार वनस्पतियों को भाररूप समझता है । वृखां = वृक्षों का ।

१०७—सुरां झंब० = वृक्षों में आम्रवृक्ष ऐसी शोभा देते हैं कि जैसे देवताओं का गुच्छा, समूह । लखे० = वृंदावन को देखकर कामदेव कल्पवृक्ष को छोड़ता है । प्रभा० = चंपे की कलियों का समूह देखकर संजीविनी औषधि का भवन द्रोणाचल लज्जित होता है ।

१०८—फबै० = द्विगुण प्रेम के कारण पुष्प जैसे वृंदावन में प्रफुल्लित हुए हैं, ऐसे दूसरी ठौर कैसे फूलें । इसी लिये भ्रमर-समूह इंद्र के खांडव वन को

निवासै मुखासै वसुदेव नींबू
जिसाई रसाळै रसा रूप जंबू ॥१०८॥
रसे माधुरे पी जँभीरी विजोरा
झुकै साख फूलां फलां भारि झोरा ॥
सनी सी मधू दाख अनार सेवा
दियौ आणि लंचै सुधा जांणि देवा ॥१०९॥
फळं कंदळी श्रीय स्वादे अफारा।
छये श्रेय बादांम पिस्ता छुहारा ॥
सुधा साव नारंगियां रंग सोहै
महादेव देवेस मेवे विमोहै ॥११०॥
अनेके फले भारिया वृक्ख ओपै
लिये चाहि सेवा न को जाय लोपै ॥
सुगंधाकरं सुंदरं फूल सोहै
महाथंभ सौरंभ सिंभू विमोहै ॥१११॥

भूल गया है। निवासै = सुगंधिवाले। मुखासै = स्वादिष्ठ। वसु = उत्तम। रसाळै = (रसालय) रस से पूर्ण।

१०९—पी = प्रिय। साख = टहनी। झोरा = गुच्छा। सनी सी मधू = शहद से मिली हुई हो जैसी। लंचै = लालच करते हैं, लालायित होते हैं।

११०—कंदळी = जमीकंद आदि कंद। श्रीय = शोभा। अफारा = बहुत अधिक। छये = छाये हुए। श्रेय = श्रेष्ठ। सुधा = अमृत। साव = स्वाद, जायका।

१११—भारिया = भारवाले। सेवा = सेब नाम का फल। न को० = कोई जाकर इनकार नहीं करता। सुगंधाकरं = सुगंधि की खान। महाथंभ = बड़े तनेवाले। सौरंभ = सुगंधि वृक्ष। सिंभू = महादेव को।

फबै मोगरो सेवती जाय फूली
भृँगी पंति सेवंति भूली अभूली ।
लता माधुरी मालती फूल लेखै
दसा आप भू लै तपी रूप देखै ॥११२॥
परा केतकी केवड़ा वात पावै
अनेकां जणां दूर सोरंभ आवै ।
लसै वृंद सानंद कुंदं गुलाबं
निरक्खे हुवै इंद्रवाडी निराबं ॥११३॥
वणै कोकिला मोर चाकोर वाणी
सुकं सारिकायं सुवायं सुहांणी ।
सुखे वैण कारंडवं कोक सद्दै
वळे जीह सूं प्रीय बाबीय वंदै ॥११४॥
हमाऊ रसं सारसं राजहंसं
वृखे भौंर भंकार बेपार वंसं ॥
....
.... ॥११५॥

११२—फूली = प्रफुल्लित हुई । सेवती = गुलाब का एक भेद । भूली = लटकी । अभूली = भूल न करके । धू लै = मस्तक पर धारण करते हैं । तपी = तपस्वी लोग ।

११३—परा = उत्तम । वात पावै = वायु का संयोग पाकर । जणां = लोगों को । सोरंभ = सुगंध । लसै = शोभा देता है । वृंद = वृंदावन में । कुंद = मोगरा । इंद्रवाडी = इंद्र का बाग । निराबं = कांतिहीन । वृंदावन की शोभा के आगे ।

११४—कोकिला = कोयल । चाकोर = चकोर पत्ती । सुकं = सूआ । सुवायं = अच्छी वाणी । सुहांणी = मन को प्रिय लगनेवाली, सुहावनी । कारंडवं = खड़हांस, हंस-विशेष । कोक = चकवा, पत्ती-विशेष । सद्दै = शब्द । वळे = फिर । जीह सूं = जिह्वा से । बाबीय = एक प्रकार की चिड़िया ।

११५—वृखे = वृत्तों पर । बेपार = अपार ।

दुहा

वट तमाल पीपळ विरख, अरुजन समी अपार।
ईढ तजै पत्र एक री, सुरत पांचेई सार ॥११६॥

छप्पय

ताल साल मालिका बकुल कुबजक खरजूरी
बोंलसरी माधुरी निगर भर हरी सनूरी।
कुमुद ढाक कल्हार वेण कचनार विराजै
सोन जाय पल्लव असोक सुर धोक सु साजै।
मंदार पारजाती कलप हरिचंदन संतान तर
परसियौ अभै वृंदा विपन कुंज पुंज तरवर निकर ॥११७॥

दुहा

वृंदावन सुख वेखंतां, निज दळ किया निपाप।
श्री बाई सूरजकँवर, मिळण बुलाई आप ॥११८॥
साथ सवाई तेड़ियौ, जोधहरै जैसाह।
रीत विविध मनुहार री, अति उद्धरी अथाह ॥११९॥

११६—वट = बरगद का पेड़। समी = खेजड़ा। ईढ = बराबरी। सुरत = सूरत, स्वरूप। सार = मुख्य।

११७—मालिका = माला, पंक्ति। बकुल = मौलसरी। कुबजक = कुंजकूजा नामक वृक्ष-विशेष। निगर = (निकर) समूह। सनूरी = कांतिवाली. सुंदर। कुमुद = रात्रिविकासी कमल। (इस प्रकरण में कुमुद को लिखना अयोग्य है)। ढाक = पलाश का वृक्ष। कल्हार = श्वेत कमल। वेण = (वेणु) बाँस। सोन जाय = सोन चमेली। पल्लव = पत्र, पान। असोक = अशोक का वृक्ष। धोक = नमस्कार। मंदार० = मंदार आदि पाँचों देवतरु हैं। कलप = कल्पवृक्ष। कुंज पुंज = कुंज का समूह।

११८—वेखतां = देखते, दर्शन करने से।

११९—सवाई = सवाई जयसिंह को। तेड़ियौ = बुलाया। जोधहरै = जोधपुर के राजा ने। उद्धरी = की गई।

मिलि पधराय सवाय हित, डेरा दिया समीप ।
छत्रपति छाजै ऊधरै, राजै जोड़ महीप ॥१२०॥
प्रतिदिन अति विंजन प्रवित, पाकादिक मिष्टान्न ।
वात कही मैं क्यों वणै, जांणै वात जिहांन ॥१२१॥
घृत पूरित रस जेण घण, अन मिष्टान अपार ।
तरकारी सुथरी अतर, अति सुंदर आचार ॥१२२॥
एकूकी अभसाह री, गोठां उठै गरत्थ ।
प्रगट इतै धन और पह, सो जिग करै समत्थ ॥१२३॥
करि उच्छव सूरजकँवर, कीध विदा अभसाह ।
रिध सोव्रन मोती रतन, वसन अमोल्य विसाह ॥१२४॥
रथ गज वृषभ तुरंग रथ, दन अनमिति सत दास ।
सुसा विदा किय नेम सूं, पूरण प्रेम प्रकास ॥१२५॥
पुहतौ फिर मथुरा पुरी, सीख करै जैसाह ।
चढि आयौ ढुळतां चमर, सहर दिली अभसाह ॥१२६॥

इति श्री राजराजेश्वर महाराजा अभैसिंहजी रा परम जस राजरूपक
मैं श्री मथुराजो परणिया नै दिल्ली पधारिया सो विगत
एकोनचत्वारिंश प्रकास ॥ ३९ ॥

---

१२० — पधराय = प्रवेश कराकर । सवाय हित = सवाए प्रेम से । ऊधरै = अत्यंत अधिक ।

१२१ — विंजन = (व्यंजन) भोजन की तैयारियाँ । प्रवित = पवित्र । मिष्टान्न = मिठाई । कही मैं = कहने में । जिहांन = (जहांन) जगत् ।

१२२ — अन = (अन्य) दूसरा । तरकारी = मांस अथवा शाक । सुथरी = श्रेष्ठ । अतर = (इतर) दूसरा । आचार = केरी आदि का ।

१२३ — एकूकी = प्रत्येक । गोठां = (गोष्ठी) प्रीतिभोज में । गरत्थ = द्रव्य । इतै = इधर । पह = (प्रभु) राजा । सो = एक सौ । जिग = यज्ञ करने की ।

१२४ — रिध - (ऋद्धि) बहुत । विसाह = खरीद कर ।

१२५ — दन = दान । अनमिति = अपरिमाण, बहुत । सत = सौ १०० । सुसा = (स्वसा) बहिन । नेम सूं = नियम से ।

१२६ — ढुळतां चमर = चमर होते ।

छप्पय

अति रस जस ऊधरै अभौ दिल्ली पुर आयौ
मिलै साह महमंद पूछ उच्छव सुख पायौ।
मिलण मीर उमराव राव राजा सब आवै
कोड़ ममारख कहै उवरि वड सुख उपजावै ॥
वंदै प्रताप हिंदू तुरक च्यारि चक्क सोभा चवै
सकबंध कोट कीधा सथिर नृप कमंध छाया नवै ॥ १ ॥

दुहा

उर अभिलाख प्रगट्टियौ, घर पेखण जोधांण।
हुई खुस्याली भूप दळ, सीख दई सुरतांण ॥ २ ॥
उच्छव सूं चढियौ अभौ, देखण मारू देस।
अवध दिसी किर लंक सूं, खड़िया राम नरेस ॥ ३ ॥
कमधां पति दरकूच कर, आयौ गढ जोधांण।
सेख सीत आगम सिसर, हर उत्तर रथ भांण ॥ ४ ॥

छंद हणूफाल

जग नृपति आगम जांण, मन हरख सुख अप्रमांण।
नव कोट घर घर नूर, ससि सरद किर छबि सूर ॥ ५ ॥

१—रस = प्रेम, प्रीति। ऊधरै = ऊँचा, उत्तम। ममारख = कल्याणकारी। उवरि = मन में। वंदै = प्रणाम करते हैं। च्यारि चक्क = चारों दिशाओं में। चवै = कही जाती है। सकबंध = युद्ध करनेवाला। कोट = किला। नवै = नौ ९। मारवाड़ राज्य के नौ कोट प्रसिद्ध हैं।

२—उर = मन की। पेखण = देखने को। खुस्याली = खुशी, आनंद। दई = दी।

३—मारू = मारवाड़। अवध दिसी = अयोध्या की तरफ। किर = मानो। खड़िया = रवाना हुए।

४—सेख० = शिशिर ऋतु के आने से कुछ ठंढ बाकी रही थी। हर० = सूर्य का रथ उत्तर दिशा की तरफ चला।

५—जग = जगत्। नव कोट = मारवाड़ में। नूर = शोभा। ससि० = मानों शरद् ऋतु में चंद्रमा और सूर्य शोभा देते हैं।

रज सुभ्र गोपुर रूप, अभ्रसिखर हूंत अनूप ।
दिपि कनक तोरण द्वार, सम कुसम माळ सिँगार ॥ ६ ॥
प्रति पोळि झूळ सप्रीत, गावंति सुंदर गीत ।
जगमगत दीपक जोत, अति जोति पंति उद्योत ॥ ७ ॥
सुख राजमग जळ सींच, वणि कुसमगर तिण वीच ।
प्रति हाट दांम प्रकास, सोरंभ फूल सुवास ॥ ८ ॥
पट वसन हाट अपार, आछादि अंबर चार ।
निरखंत रूप सनेम, प्रतिमहल त्रिय अति प्रेम ॥ ९ ॥
पुसपंजळी अणपार, वरखंत कुसम कुमार ॥
जण पंति जुत बाजार, परखंत ओप अपार ॥१०॥
सतपंति जोत मुसाल, वाजित्र सबद विसाल ।
पदि झुलति कौतल पाय, जिण निरख नट नमि जाय ॥११॥

६—रज = राज्य के । सुभ्र = श्वेत । गोपुर = शहर का दरवाजा । अभ्रसिखर = बादल के शिखर । अनूप = सुंदर । सम० = पुष्पों की माला से शृंगार किया हुआ ।

७—प्रति पोळि = हर दरवाजे पर । झूळ = स्त्रीसमूह । जोति = तेज । पंति = पंक्ति । उद्योत = प्रकाशमान है ।

८—कुसुमगर = (कुसुमागार) पुष्पों के घर । दांम = (द्रम्म) द्रव्य । सोरंभ = सुगंधि ।

९—पट = कपड़ों से । आछादि = छा दिया है । अंबर = आकाश । चार = (चारु) सुंदर ।

१०—पुसपंजळी = (पुष्पांजलि) हाथ से पुष्प अर्पण करना । कुमार = कुमारिका । जण = (जन) लोग । परखंत = देखते हैं । ओप = शोभा ।

११—सतपंति = सैकड़ों पंक्तियाँ । मुसाल = दीपिका । पदि० = कोतल घोड़े पाँवों से ऐसी चाल चलते हैं ।

जगमगत साज जड़ाव, दुत सूर किर दरसाव।
गज ओप रूप श्रृंगार, लखि इंद्र तजत न लार ॥१२॥
नीसांण पंतिय नेत, वानेत सत धर वेत।
अति चरित आतस अग्गि, लखि अमर अचरज लग्गि ॥१३॥
अस्व दुरद् जेब अनेक, अनि छात गृह अनेक।
सुभ तांन नौबत सद्द, मनि हरत गंध्रब मद्द ॥१४॥
सहनाय सुर विचि सोह, वृति अछुर लेत विमोह।
सब सस्त्र संजुत सूर, पयदात झुंड सपूर ॥१५॥
पछि पैक झमकत पाय, रिझवंत नटवर राय॥
अभसाह गज असवार, अति ओप रूप अपार ॥१६॥
रजि मेघडंबर रूप, सिर झिलत चमर सरूप।
वपि ओप वसन वणाव, रवि तेज मुरधर राव।
उमराव रूप अपार, सँग सुभट लख सिरदार ॥१७॥

१२—जगमगत = चमकता हुआ। साज = घोड़ों का साज। जड़ाव = रत्न-जटित। दुत = (द्युति) कांति। ओप = शोभा देते हैं। लखि० = जिनको देखकर इंद्र पीछा नहीं छोड़ता।

१३—नीसांन = झंडा, अथवा वाद्य। नेत = भाले। वानेत = तीरंदाज। सत = सौ (१००)। धर वेत = (वेत्रधर) ड्योढ़ीदार। आतस = आतिशबाजी। अग्गि = आगे।

१४—अस्व = घोड़े। दुरद = हाथी। जेब = शोभा देते हैं। अनि = (अन्य) दूसरे। छात = राजा के घर में। तांन = स्वर। सद्द = शब्द। मनि = मानो।

१५—वृति = (व्रत) नियम-पूर्वक। पयदात = पैदल सिपाही।

१६—पछि = पीछे, पीठ में। पैक = राजसेवक। नटवर राव = कृष्ण भगवान् को।

१७—रजि = शोभा देता है। मेघडंबर = छत्र। झिलत = शोभा देता है। वपि = (वपु) शरीर पर। वसन वणाव = वस्त्रों की रचना।

छप्पय

प्रथीनाथ गढ पौळि प्रथम अभसाह पधारे
तोरण वंदनमाळ प्रगट उच्छव अण पारे।
कनक कलस जुति कुसम पढै दुज पांणि पवित्रिय
हरी द्रोब दधि अखत ओप दीपक आरत्तिय।
मृदु कंठ गान तरुणी मुखे निरखे रूप नरचंद रौ
नवरंग पत्रवाड़ी विपुन किरि नंदी वन इंद रौ॥१८॥

दुहा

पौळि पौळि उच्छत्र प्रबळ, वेदोकति विसतार।
राजा तखत विराजियौ; सुभ चौकी शृंगार॥१९॥
कवि नव नव कायब कथै, गायब तांन सगांन।
वाजित्रा लोभै अमर, नर सोभै दीवांन॥२०॥
रजधानी उच्छव रहसि, मणि दीपक अप्रमांण।
सूंधै महल सिँगारिया, सोरंभी लहरांण॥२१॥
उमरावां बीड़ा दिया, विदा किया तिण वार।
महिपति चडियौ मिंदरां, बाहुड़ियौ दरबार॥२२॥

१८—जुति = युक्त। कुसम = पुष्प। दुज = ब्राह्मण। पांणि = हाथों में। पवित्रिय = दर्भ की पवित्री धारण किए हुए। हरी = सब्ज। द्रोब = दूर्वा। अखत = चावल। आरत्तिय = आरती। नवरंग = नौ रंगोंवाली। पत्रवाड़ी = पनवाड़ी। विपुन = (विपिन) जंगल। नंदी वन = नंदन वन।

१९—चौकी शृंगार = सिणगार चौकी, यह जोधपुर के किले में एक चबूतरा है, जिस पर राजा बैठता है।

२०—नव नव = नए नए। कायब = काव्य। गायब = (गायक) गानेवाले। दीवांन = राजसभा में।

२१—रजधानी = राजधानी में। रहसि = रहता है, सदा होता है। सूंधै = सुगंधि से। सोरंभी = सुगंधि। लहरांण = लहर की तरह फैलती है।

२२—बाहुड़ियौ = समाप्त हुआ।

पाटंबर पग पांवडै, सुंदर गांन सुवासि ।
मुख निरखे हरखै महल, गायण दासि खवासि ॥२३॥
धन आजूणौ दोहड़ौ, धन आजूंणी रात ।
आयौ ग्रह मारू अभौ, किरि रवि जोति प्रभात ॥२४॥
मृगमद अंबर सारघण, गंधसार अँगरेल ।
कुमकुमादि केसर अतर, विहति सुगंधी रेल ॥२५॥
रूप नरूकी रांणियां, वड भागणि वड लाज ।
पाधारै आया प्रथम, महलि जिके महाराज ॥२६॥
महलि महलि आणंद मन, निसि प्रति प्रेम निवास ।
पेखि सदन सुख भूप कौ, लाजै मदन विलास ॥२७॥

छप्पय

तिलोतमा मैंणका सची उरवसी सरोतरि
सुरपत्ती सेवतां ईढ न धरै तिण औसरि ।

२३—पाटंबर=रेशमी वस्त्र। पग पांवडै=राजा के पैर रखने के स्थान पर। सुवासि=अच्छी सुगंधि। महल=(महिला) रानियाँ।

२४—धन=धन्य। आजूणौ=आज का। दीहड़ौ=दिन। ग्रह=घर पर।

२५—मृगमद=कस्तूरी। अंबर=एक सुगंधित पदार्थ। सारघण=(घनसार) कपूर। गंधसार=एक सुगंधि पदार्थ। अँगरेल=अगरबत्ती। कुमकुमादि=केसर-कस्तूरी-कपूर मिलाकर घिसा हुआ चंदन। विहति=बेहद। रेल=फैली।

२६—नरूकी=नरूका वंश की रानी। रांणियां=अन्य समस्त रानियों में। पाधारै=आई। महलि=जिस महल में।

२७—महलि महलि=महल महल में। निसि प्रति=रात्रि में। पेखि=देखकर। सदन=घर। लाजै०=कामदेव का सुखभोग लज्जित होता है।

२८—तिलोतमा मैंणका=दोनों अप्सरा हैं। सची=इंद्राणी। सरोतरि=समान, सदृश। सुरपत्ती=इंद्र। ईढ=बराबरी। औसरि=

कंता सहित कुबेर वरण निज तरणि विलासत
सरस लेख अभसाह पेखि साराह प्रकासत।
रति मदन वदन हुइ हीणरस रसि उज्जलि पावस धरणि
नव नव विलास नरपत्ति रा ज्यों हुलास हरि गोपि जणि ॥२८॥

दुहा

यों महिलै राजै अभौ, दिन साजै कमधज्ज।
सुर वाजै वाजा सरिस, लाजै मेघ गरज्ज ॥२९॥

छप्पय

चक्रवति दिन पांच मै कियौ दरबार सकारण
अदब थयौ ऊमरां पटां ऊधरां वधारण।
वळे भाग सेवगां लाग धारी समसत्तां
मागध वंदीजणां सूत अदभूत निरत्तां।
चौकी श्रृंगार ढुळतां चमर भले भार गजबंध भति
अभसाह वखत आसाउआं वप अथाह आयौ तखत ॥३०॥

अवसर के। कंता = (कांता) स्त्री। वरण = वरुण। तरणि = (तरुणी) जवान स्त्री। साराह = सब। मदन = कामदेव। हीणरस = कम आनंदवाला। रसि = आनंद से। उजलि = उज्ज्वल। पावस = वर्षा का संयोग पाकर। धरणि = पृथ्वी। जणि = लोकों का।

२९—महिलै = महल में। दिन साजै = अच्छे दिन होने से। सुरवाजै = देवों के वाद्यों के तुल्य। सरिस = सदृश।

३०—चक्रवति = राजा। सकारण = सबब से। ऊमरां = उमरावों का। पटां = जागीर। ऊधरां = उच्च कोटि के। वधारण = वधारा में। वळे = फिर। भाग = हिस्सा। सेवगां = (सेवकाना) नौकर-चाकरों का। निरत्तां = निरंतर। भले भार = अच्छे जुलूस के साथ। गजबंध भति = राव गजसिंहजी के समान। आसाउआं = उम्मीदवारों में से। वप अथाह = बड़े शरीरवाला।

थया हरख सौ गुणां भड़ां चौगुणा वधारा
साज हूंत गजराज किताइ धजराज सिरारा।
खग जड़ाव भारिया कितांइ सिर पाव अमोलक
कितां माळ मौतियां कड़ां नग जडां सतोलक।
ऊलटै चाव वेळां अधिक कर दरियाव कमंध रा
कवि लाह लियै गुण कायबां विरद दियै गजबंध रा ॥३१॥

दुहा

सांमि धरंमी आद सूं, द्यालदास सिर्कदार।
निज दर बैसण रौ नृपति, कुरब दियौ कर प्यार ॥३२॥
मेटण दाळिद्र मंगणां, करण गुणां अधिकार।
औ वहियौ दांनै अभौ, रांणैं रीझ अपार ॥३३॥
चारण भाटां बांमणां, कारण थया अपार।
सू लक्खां गज सासणां, रीझ हुई तिण वार ॥३४॥

३१—वधारा = पहले की जागीर से अधिक जागीर देना। साज हूंत = संज के साथ। धजराज = घोड़े। सिरारा = श्रेष्ठ। जड़ाव भारिया = रत्न से जड़ी हुईं। अमोलक = अमूल्य। माळ मौतियां = मोतियों की माला। नग जड़ां = रत्नजटित। सतोलक = भारी। ऊलटै = बढ़ा। चाव = बलवती इच्छा। वेळां = समुद्र की लहरों से। लाह = लाभ। गुण कायबां = गुण-युक्त काव्यों से। गजबंध रा = गजसिंह।

३२— द्यालदास = दयालदास। यह सोभावत राठोड़ था। सिकदार = कोतवाल। निज दर = अपने दरबार में।

३३—मंगणां = याचकों का। करण० = गुण की कदर करनेवाला। रांणै० = प्रसन्न होकर इनाम आदि देने में राणा से आगे बढ़ा।

३४—कारण = मनोवांछित लाभ। सू = पादपूरणार्थक। सासणां = भूमिदान।

सौ हजार द्रब थेलियां, मोती कड़ा सवास ।
गांम सवायौ सांसणौ, पायौ गोरखदास ॥३५॥
कीजौ कोड़ी समखियां, सुख इण जोड़ न अब्ब ।
दीनौ गोरखदास नूं, ऊठण तणौ कुरब्ब ॥३६॥
कनक माळ मोती कड़ा, पंच तुरी इक ग्राम ।
नरपत्ती रुघनाथ नूं, हाथ मँडायौ तांम ॥३७॥
राजा दोनूं रोहड़ां, रींझ किया कविराज ।
गण दांमां गांमां गजां, सिरनांमां सिरताज ॥३८॥
मौज जवाहर मोतियां, सांसण तेण सवाय ।
खिड़ियौ वखतौ खेड़पति, महिपति लियौ मनाय ॥३९॥
वळे मुकन धधवाड़ियै, पाई मौज अपार ।
पुर सांसण तिण सिर पटौ, रुपिया दोय हजार ॥४०॥
सांसण व्यासां प्राहितां, भाटां दिया भूपाळ ।
करणौ त्याग कमंध रै, को वरणै तिण काळ ॥४१॥

३५—सौ हजार = एक लाख। सवास = कपड़ों सहित। सांसणौ = दान में।

३६—कीजौ० = चाहे करोड़ ही बातें करो, परंतु इसके समान कोई सुख नहीं है। ऊठण तणौ = उठने का। जब गोरखदास दरबार में आता तब महाराजा खड़े होते।

३७—तुरी = घोड़ा। हाथ मँडायौ = दान दिया।

३८—रोहड़ा = रोहड़िया शाखा के चारण। दांमां = (द्रम्म) द्रव्य से। पैसे के पचीस दाम। सिरनांमा = अग्रणी, मुख्य। मस्तक का मुकुट।

३९—खेड़पति = खेड़ नगर का मालिक (महाराजा अभयसिंह)। राठौड़ों की पहले खेड़ राजधानी थी।

४०—वळे = फिर। मौज = आनंद।

४१—त्याग = दान।

व्यासे फतमल वीरवर, सिवड़े सूरजमाल।
कुरब दियौ निज प्यार करि, ऊठण रौ अभसाल ॥४२॥

छप्पय

मौज कड़ां मूंदड़ां गजां गांमां तोखारां
पंच ठाम अंबरां जरी जामां जर तारां।
किता सस्त्र अतिक्रांत जड़ित पन्नां सोव्रन्नां
माळ अमळ मोतियां जाळ सिरपेच रतन्नां।
दुज पात्र वडै सांमै दियै सकळ सदा मैं चै सरै
अदळिंद्र किया आसाउवां अभैसाह अजमाल रै ॥४३॥

वार्ता

श्री महाराज राजेश्वर, अभैसाह नरनाह प्रमेसुर।
आयौ सूत मागध कविंद्र के भाय, दांन की लहरि समुद्र तैं सवाय ॥४४॥
कवेसुर आपणी आपणी वारी दान सनमान पावै।
श्री महाराज की कीरत उच्छव सूं गावै।
अनेक भाट चारण विद्या विसाल सच्चूं विरद के देवाळ ॥४५॥

४२—सिवड़े = पुरोहितों में सेवड़ एक शाखा है।

४३—तोखारां = घोड़े। पंच ठाम अंबरां = कपड़ों के ५ थान। जरी जामां = जरी के जामे। जर तारां = सलमा-सतारे के काम के। अतिक्रांत = अत्यंत कांतिवाले, चमकीले। सोव्रन्नां = सुवर्ण से। दुज पात्र = सत्पात्र ब्राह्मणों को। वडै सामै दियै = बड़े सामान के साथ। सरै = उत्तम। आसाउवां = आशामुखी, उम्मेदवार।

वार्ता

४४—भाय = (भाव) भक्तियुक्त।

४५—आपणी आपणी = अपनी अपनी वारी = पारी, क्रमप्राप्त। बिसाल = बड़ा। देवाळ = देनेवाला।

साचा कूं वखाणै, झूठा कूं असू तैं हीन करि जाणै।
कातर कृपन की आसा तैं लाजै, महासूर दातारूं कै दरबार राजै ॥४६॥
दिनकर रूपी प्रताप के वारिज, सस्त्र बंध खत्रियों के आचारिज।
ऐसे कविराय छंदोक्ति के निधांन,........................ ॥४७॥
श्री महाराज ईश्वरा अवतार, कलिजुग समुद्र जाके आगै पगार।
सूरिज सरूप ओपै जग में प्रताप, मेघ अंधकार को संघारक अमाप॥४८॥
भुजबळ की महिमा दांन को प्रवाह, देवतर साखा तैं सौ गुणी सराह।
चरणूं की छांह आसा धरि आवै, सो पारस पौरसे को ध्यान भूल जावै४९
हिंदू धरम के रखपाळ हिंदुस्थान के प्रमेसुर,
हिंदुस्थान के सहायक सरणायां अभै पंजर।
हिंदुस्थान का छत्र जगत छाया वरतावण
हिंदुस्थान में सूरज कवि-कमळ-विकसावण ॥५०॥
सकबंध सगाह नरिंद इंदु के नाह, पातिसाहां के पातिसाह।
अवतार पुरस राजराजेश्वर महाराजा श्री अभैसाह ॥५१॥

४६—असू = परमाणु का आधा हिस्सा, अति तुच्छ।

४७—दिनकर = सूर्य। वारिज = कमल। आचारिज = आचार्य, गुरु। छंदोक्ति = कविता के। निधांन = भंडार, घर।

४८—पगार = पैरों से पार किया जाय ऐसा। सघारक = संहार करनेवाला।

४९—देवतर = कल्पवृक्ष। सराह = प्रशंसा। छांह = छाया। पारस = वह पत्थर जिसके छूने से लोहा सुवर्ण हो जाता है। पौरसे को = वह सुवर्ण का पुतला जिसको काटकर देने पर भी वह उतना ही बना रहता है।

५०—प्रमेसुर = परमेश्वर। सरणायां = शरणागतों के। अभै पंजर = अभय देनेवाला पिंजरा। कवि-कमळ-विकसावण = कवि-रूपी कमलों को प्रफुल्लित करनेवाला।

५१—सकबंध = युद्ध करनेवाला। सगाह = गर्व-सहित। इंदु = चंद्रमा। नाह = नाथ।

दुहा

गढपत्ती सांसण गजां, आपण लाख पसाव ।
अभौ प्रतप्पौ कोटि जुग, कोड़ि वरीस सुभाव ॥५२॥

वार्ता

विरुदावली हसती वरीस अवनीस
लाख सांसण कोड़ि वरीस ॥
अडंड डंडण अगंजी गंजण
अनमी असूत ताहि ऩमी भूत करण ॥५३॥
सवळ रायथांन उथापण
निरजोर राय सहाय करि थापण ।
खट खंड खुरासांण कौ मांण हीण करण
वेद म्रजाद की म्रजाद असरण के सरण ॥५४॥
पर उपकारी पर दुख प्रहारी
दातारे दातार परम अवतारी ।
सूरा तैं सूर पुरस पौरस उदार
पराक्रम तैं सारदूळ सिंघ रहै वार ॥५५॥

५२—आपण = देनेवाला । लाख पसाव = लक्षदान । वरीस = वर्ष ।

५३—हसती वरीस = हाथी देनेवाला । अवनीस = पृथ्वी का मालिक । वरीस = देनेवाला । अडंड डंडण = दंड न देनेवालों को दंड देनेवाला । अगंजी गंजण = न दबनेवालों को दबानेवाला । असूत = सीधे नहीं, अर्थात् टेढ़े । ऩमी० = नर्म करनेवाला ।

५४—रायथांन = राजस्थान को स्थापित करनेवाला । राय = राजा, राज्य । खुरासांण = मुसलमानों का । मांण = मान, प्रतिष्ठा ।

५५ – पौरस = पुरुषार्थ ।

साभाव की सक्ति समुद्र तैं गंभीर
जुद्ध की बेर सुमेर तैं सधीर।
सूरज वंस के सूरज सूरज के रूप
कुळ भार धुरंधर धमळ तैं अनूप ॥५६॥
गउ ब्राह्मण प्रजा के रखपाळ
नव कोटि नरयंद कविंद्र के पाळ।
कविजण के देवतर अरि जण के अंत
अरिजन के तन प्रजा वन के वसंत ॥५७॥
सत के सोनागिर वाचा हरिचंद
साच के अजातसत्र गात रति विंद।
कृपा की दृष्टि अम्रित के भाय
कोप की विलोकणि काळ तैं सवाय ॥५८॥
हाथ कौ चाव निरखि सायर न राजै
इंद्र धन इंद्र कहा कळप वृंद लाजै।
प्रभुता कौ भास मारतंड सौ विराजै
अनि राय वदन कमौद क्रिया साजै ॥५९॥

५६—साभाव की० = स्वभाव की शक्ति। धमळ तैं = धारी बैल; धुरंधर।

५७—नरयंद = (नरेंद्र) राजा। देवतर = कल्पवृक्ष। अंत = काल, मृत्यु। अरिजन के तन = अर्जुन का शरीर।

५८—सोनागिर = (सुवर्णगिरि) सुमेरु। वाचा = वचन में। अजातसत्र = (अजातशत्रु) युधिष्ठिर। गात० = शरीर से रति का पति (कामदेव)। भाय = भाव। विलोकणि = दृष्टि।

५९—हाथ कौ चाव = हाथ की उदारता। सायर = (सागर) समुद्र। इंद्र धन० = इंद्र का धन और इंद्र महाराजा के आगे क्या वस्तु ? कळप वृंद० = कल्पवृक्षों का समूह। भास = प्रकाश। मारतंड = (मार्तंड) सूर्य। अनि = अन्य। राय = राजाओं का। कमौद = रात्रि-विकासी कमल।

श्री राम कुळ राम अवतार
जैतवारूं के जैवार ।
भोज विक्रम करन तैं सवाय
आचार की सोभा वरणी न जाय ॥६०॥
यौं कविराज श्री महाराज कौ जस गावै
राजहंस राजेस्वर की सभा सुख पावै ।
अभैसाह अद्वीत ईस्वर समांन
ऐसें कविराय बोले बुद्धि उनमांन ॥६१॥

दुहा

महाराजा साजां गुणां, कविराजां प्रतिपाळ ।
तेरह साखां सैंधणी, सौ लक्खां देवाळ ॥६२॥
करे निहाल कवेसरां, श्री अजमाल सुतन्न ।
धरपति महल पधारियौ, ऊठे छुभा प्रसन्न ॥६३॥

इति श्री राजराजेस्वर महाराजा श्री अभैसिंघजी गढ जोधपुर पधारिया प्रथम दरबार उमरावां चारण भाट प्रोहितां समसतां नूं निवाजस हुई चत्वारिंश प्रकास ॥४०॥

६०—जैतवारू के = विजयी पुरुषों को जीतनेवाला। आचार = सदाचार।

६१—राजहंस = राजाओं में हंसरूप। अद्वीत = अद्वितीय ।

६२—साजां = अच्छे गुणों से । सैंधणी = स्वामी । देवाळ = देनेवाला ।

६३—छुभा = (सभा) दरबारी लोग ।

दुहा

यौं दिन दिन वेळां अभौ, चडै धरा चक्रवत्ति।
सेवै सो पावै सकळ, मौज प्रबळ अणमित्ति ॥ १ ॥

छंद हणूंफाल

महाराज भुज अप्रमांण, वधि चाव ऊठा विहांण।
दिपि निस दिवस दरबार, चित सकळ मंगळचार ॥ २ ॥
फबि गान आगम फाग, रसि सरस पंचम राग।
नित बोह केसर नीर, अतिसय गुलाल अबीर ॥ ३ ॥
विहरंत वाग विलास, किरि संभग्रह कयलास।
दिन उदय सुख दरसाव, चित होत मृगया चाव ॥ ४ ॥
नित वणत सुभट सनूर, पोसाक अंबर पूर।
दरसंत राज दुवार, केइ भांति सुख अविकार।
सोभंत आठूंइ सिद्ध, नरनाथ ग्रह नव निद्ध ॥ ५ ॥

१—वेळा = समय पर। चडै धरा = भूमि बढ़ाता है। चक्रवत्ति = राजा। अणमित्ति = अपार।

२—चाव = मन का उत्साह। विहांण = प्रातःकाल में। निस दिवस = रात-दिन।

३— फाग = फाल्गुन मास का उत्सव। बोह = सुगंधि।

४—संभग्रह = महादेव का घर। कयलास = कैलास। मृगया = शिकार। चाव = मन की उत्कट इच्छा।

५—सनूर = सुंदर। अंबर = वस्त्र। अविकार = विकार-रहित, निर्दूषण। आठूंइ सिद्ध = आठों सिद्धियाँ (अणिमा आदि)। ग्रह = घर में। नव निद्ध = नवों प्रकार की निधि।

दुहा

जोधपुरौ जोधांण गढ, उवर न धारै और।
इंदै ग्रह अपणावियौ, नह भूलै नागौर ॥ ६ ॥

छंद बेअक्खरी

अजन अजैगढ जद अपणायौ
साह दिली आकुळ रीसायौ।
सुणी जगति असपत असुहाई
ऊपरि खड़ि बावीसी आई ॥ ७ ॥
बंद इरादत साथे बंगस
संग जैसिंघ कूरमे सक्कस।
साह हुकम पे तीन सवाया
इंदै तणी बांह ग्रह आया ॥ ८ ॥
सो अजमेर छूटतै साथै, हुऔ नागपुर पैलां हाथै।
अभौ तखत जोधांणै आयौ, वेध सखेध न को विसरायौ ॥ ६ ॥
फबि सुभ वार नरां उर फूलै, भूप अभौ नागौर न भूलै।
लाख विलासां चित्त न लागै, उर नागौर रहै तिण आगै ॥१०॥

६—उवर = मन में। और = अन्य को। इंदै = राव इंद्रसिंह ने। अपणावियौ = अधिकार कर लिया।

७—अजन = अजीतसिंह ने। अजैगढ = अजमेर। रीसायौ = क्रोध किया। जगति = जगत्, संसार। असपत = बादशाह। असुहाई = मन को अप्रिय। खड़ि = चलकर। बावीसी = बादशाही फौज।

८—कूरमे = कछवाहा। सक्कस = सरकश, जबर्दस्त। इंदै तणी = राव इंद्रसिंह की। बांह = भुजा। ग्रह = पकड़ने को।

९—नागपुर = नागोर। पैलां हाथे = दूसरों के हस्तगत। वेध = विरोध। सखेध = झगड़ा। को = कोई। विसरायौ = विस्मृत हुआ।

१०— वार = समय। उर = मन, हृदय।

दुहा

नित ऊगां भूलै नहीं, सिंघां चीत सिकार।
नृपति अभौ तिम नागपुर, भूलै नहीं लिगार ॥११॥

छप्पय

यौं हिम रित तिम सिसर गई निस दिवस गिणंतां
होळी मंगळ हुवां रेल चलि खेल वसंतां।
मचि केसर कुमकुमै कीच अंबर कसतूरी
सुभ चंदण घणसार नीर सोरंभ सनूरी।
दिन प्रति वसंत सोभा दिपै सुख किरि सरब सँसार रौ
आगळी भूप अभसाह रै दिपै रूप दरबार रौ ॥१२॥

छंद बेअक्खरी

दळां मिलण मुख आखै दूऔ, होळी खेल नगारौ हूऔ।
सुण डेरां बारै भड़ सारा, अति बळ दळ संमिले अपारा ॥१३॥
कूच थयौ सुण अष्टक न्यारा, चळचळिया थळ भोमीचारा।
इळ जतने नृप जोस अछायौ, असँख दळे जैतारण आयौ ॥१४॥

११—नित ऊगा = नित्य सूर्योदय के होते। चीत = चित्त। लिगार = जरा भी, थोड़ा भी।

१२—हिम रित = हेमंत ऋतु; मार्गशीर्ष और पौष मास। सिसर = शिशिर ऋतु; माघ और फाल्गुन मास। होळी मंगळ हुवां = होली जलने पर। रेल = पानी का प्रवाह। रेल चलि = प्रवृत्त हुआ, चालू हुआ। कुमकुमै = केसर-कपूर आदि युक्त घिसा हुआ चंदन। घणसार = कपूर। सोरंभ = सुगंधि। आगळी = आगे।

१३—दळां = सेना। आखै = कहते हैं। दूऔ = आशा।

१४—अष्टक = आठों सिरायत। न्यारा = जुदा। चळचळिया = चल-विचल हुए। थळ = रेतीला देश। भोमीचारा = वे जमींदार जिनकी भूमि का वंट बराबर हो। इळ जतने = भूमि के वास्ते। अछायौ = भरा हुआ।

दिसि दूजी राजा वरदाई, भूप नमाया बखतै भाई।
वरण कुबेर तणी दिस बखतै, भोमि नचीत करी अरि भख तैं॥१५॥
आडैवळै अभौ न्रप आयौ, करि सर पद्धर कूच करायौ।
धरण नागोर लियण उर धारै, पति जोधां मेड़तै पधारै॥१६॥
आंणी वात न को दूजी उर, आरँभ थयौ नागपुर ऊपर।
ईंदै तणा वावसू आवै, वृति पेखै सुज लेख वतावै॥१७॥
ईंदो सुणे गयण भुज ओडै, छायौ छळि बळि तेण न छोडै।
पूरी दिली दिलासा पाई, साही तिण बिन्न बांह सवाई॥१८॥
बळ लक्खै कूरमां निबाबां, बोलै वांका तेण जबाबां।
कोट धरै सांमान अकारा, गरट किया भड़ राड़ीगारा॥१९॥

दुहा

अहि काळी बळ ओडियां, खित आयौ खगराज।
अति गह सुण इंद्रसिंघ रौ, रूठौ त्यौं महाराज॥२०॥

१५—दिसि दूजी = दूसरी तरफ। वरण कुबेर० = वरुण की दिशा पश्चिम और कुबेर की दिशा उत्तर। बखतै = बख्तसिंह। नचीत = निश्चित। अरि भख तैं = शत्रुओं को खा जाने से।

१६—आडैवळै = अरावली पर्वत; मारवाड़ और मेवाड़ को विभक्त करनेवाली पर्वत-श्रेणी। सर = अधीन। पद्धर = सीधा, सरल। धरण = (धरणी) पृथ्वी।

१७—आरँभ थयौ = आक्रमण हुआ। ईंदै तणा = राव इंद्रसिंह के। वावसू = दूत। वृति पेखै = वर्तमान देखकर। सुज = वह।

१८—गयण = आकाश को। ओडै = धारण करता है। छायौ = भरा हुआ। तेण = उसको। साही = धारण की।

१९—कूरमां = कछवाहों का। कोट = किले में। अकारा = बहुत तीक्ष्ण। गरट = समूह, जमा किया। राड़ीगारा = लड़नेवाले।

२०—अहि० = कालिय सर्प बल को धारण किए। खित = पृथ्वी में। खगराज = गरुड़ को। गह = गर्व। रूठौ = रुष्ट हुआ।

गीत त्रिकटबंध

दळ प्रबळ करि बळ दाखवै, खग तोल नभ अड़तै खवै,
आरंभे द्रंग मोर ऊपर अभौ आरँभ राम।
हुई साज सिंधुर हैमरै प्रति जांण गिरवर पाखरै,
इण रूप नृप चढि सुहड़ आतुर. अष्ट दिसि भड तुरां अड़वडै,
ध्रूज पुड़ धर अगम अंबर, गरज सुर नीसांण गरहर,
फबे लसकर चींध फरहर, पंथ झंगर नयर पाधर,
आवियौ जिम लंक अणडर संक विण सुर स्याम ॥२१॥
इंद्रसिंघ पांणप ऊझळैं वळ घात मूछां का बळे,
रोकियां नाग कि वाघ रूधै रूक ग्रहि भुज राव,
गढ भुरज सझिया चहुंगमे, असमांण पड़तौ आंगमे,
घण दाखि पोरस मेळि दळ घण, प्रगट नियतणि मरण धापण,

२१—दाखवै = दिखलाता है। नभ० = आकाश के कंधे से छूता हुआ। आरंभे = आक्रमण किया। द्रंग = नगर, शहर। आरँभ राम = रामचंद्र के सदृश आक्रमण। साज = तैयारी। सिधुर = हाथी। हैमरै प्रति = घोड़ों पर। सुहड़ = सुभट, योधा। आतुर = उतावला।।तुरां = घोड़े। अड़वडै = आगे से आगे बढ़ते हैं। धूज = कंपित होता है। पुड धर = पृथ्वी की सत्ता। अगम अंबर = आकाश अगम्य हो गया। गरज० = देवों के नक्कारों की गंभीर गर्जना। चींध = पताका। पंथ झंगर = झाड़ियों में मार्ग हो गए हैं। नयर पाधर = नगर नष्ट हो गए हैं। अणडर = निडर। सुर स्याम = देवों का स्वामी विष्णु।

२२—पांणप = समुद्र। ऊझळैं = हद से बाहर हो गया। वळ घात = मूछों के वट देकर। बळे = फिर। चहुंगमे = चारों ओर से। आंगमे = धारण करता है, ठामता है। दाखि = दिखलाकर। नियतणि = नीयत में, मन में। मरण धापण = मरने से तृप्ति मानकर अर्थात् मरना विचारकर।

अरुण हुय मुख वरण ईखण, जुड़ण कजि भड़ बकै जण जण,
पढै कवियण बयण बड पण, ओप गिण सम करण,
अरि जण श्रवण कुवयण, तजे समझण दियण लघुपण दाव ॥२२॥
चक्रवती सुणि आतुर चड़े, अस धमस गरदां ऊपड़े,
आसाढ जांणि डंडूळ, अतिसय गयण चड़िगै तूळ,
उर कोप पूरित ओपियौ, कजि प्रळै पावक कोपियौ,
दधि पियण रिखवर जांणि अण डर, समर जाळण ति कर संकर,
चूर त्रिण तर पसर वनचर, कना मेटण तिमर रवि कर,
धूप चख हर ज्वाळ विखधर धारि सुजहर,
धणी मुरधर घेरि नर तर कोट अरि घर सहर धर सर मूळ ॥२३॥
जुधवार सुत अगजीत रौ, रिण खळां अंतक रीत रौ,
दिसि अष्ट श्रीमुख हुकम दाखवि मोरचे फुरमांण।

वरण = वर्ण, रंग। ईखण = नेत्र। जुड़ण कजि = युद्ध करने को। ओप = शोभा। कुवयण = कुत्सित वचन। समझण = बुद्धि, अक्ल।

२३—चक्रवती = राजा (अभैसिंह)। आतुर = जल्दी। धमस = चलने से। गरदां = धूलि। डंडूळ = धूलि-सहित तीव्र पवन, वातचक्र, बवंडर। गयण = आकाश में। तूळ = रुई। उर = मन में। ओपियौ = शोभायमान हुआ। कजि प्रळै = प्रलय के वास्ते। पावक = अग्नि। दधि = (उदधि) समुद्र को। रिखवर = अगस्त्य मुनि। ति = वह (राजा)। कर = हाथ। संकर = (शंकर) महादेव। तर = (तरु) वृक्ष। वनचर = जंगल के पशु। कना = किंवा। तिमर = (तिमिर) अंधकार। धूप = उग्र। चख = (चक्षु) नेत्र। विखधर = सर्प। सर = तालाब।

२४—जुधवार = युद्ध करनेवाला। रिण = (रण) युद्ध। खळां = शत्रुओं के वास्ते। दिसि अष्ट = आठों दिशाओं में। दाखवि = देकर।

सामांन गोळां सोररां, इमि ढूकि भड़ चहुँ ओर रां,
बिहुँ थाट ऊकस बँधे बरकस, सरस जस कजि तरस साहस,
अरस लगि पड़ि निहस ऊधस, सूर अदरस धूम सपरस,
चरस अश्रु वधि सकति चकरस, दिवस निस भ्रम अगम दिस दस,
वीर रस झड़ बाण पावस अकस वधि असमांण ॥२४॥
मचि सोर झळ अप्रमांण री, बूंगरड़ गोळां बाण री,
धर जांण सेहर अंब धारा ओवडे अण पार,
हुव सबद नाळि निहाव रा, सुधि भाद्र वीज सिळाव रा,
धर सपत पुड़ थर अनड़ धड़हड़, हुबै घड़ असमांन खड़हड़,
वीर हड़हड़ सूर वर चड़, धार सर झड़ भिदै अरि घड़,
बूर पड़ि जंबूर विहुं घड़, भुरज बीछड़ि पड़ै खड़भड़,
विढण धरि अड़ सुहड़ समवड़ वड़वडै पिंड चार ॥२५॥

ढूकि = अपने अपने स्थान पर पहुँचना। बिहुं थाट = दोनों फौजें। ऊकस = उकसकर। तरस = तृष्णा। अरस = आकाश। निहस = नक्कारे पर डंका पड़ा। ऊधस = ऊँचा। अदरस = आदर। सपरस = स्पर्श, फैलना। चरस = आनंद के। सकति चकरस = शक्ति का चक्र। दिवस निस भ्रम = रात-दिन घूमना। अगम = पता नहीं है। अकस = ईर्ष्या, क्रोध आकाश तक पहुँच गया।

२५—मचि सोर = शोर-गुल छा गया। बूंगरड़ = वर्षा, झड़ी। धर = (धराधर) पर्वत के। सेहर = शिखर पर। अंब धारा = मानों पहाड़ के शिखर पर जल की धार पड़ रही है। नाळि = तोपों और बन्दूकें का। निहाव = युद्ध-संबंधी। सुधि = खबर। सिळाव = बिजुळी। पुड़ = तह, पुट। थर = थर थर करते हैं। अनड़ = (अनत) वीर। धड़हड़ = कांपते हैं। हुबै घड़ = सेना युद्ध करती है। हड़हड़ = जोर से हँसते हैं। धार० = बाणों की धारा की झड़ी लगी है। अरि घड़ = शत्रु-सेना। बूर० = दोनों सेनाओं में जंबूरों (छोटी तोपों) का बूर पड़ रहा है, अर्थात् निरंतर चल रही हैं। भुरज० = बुर्जें टूट गई हैं। विढण० = लड़ने की अड़ रखकर। समवड़ = बराबर के। वड़वड़ै = बकते हैं। पिंड = शरीर। चार = (चारु) सुंदर।

किरि दमण अहि जळ कंदरां, आवियौ कान्हड़ ऊपरा,
दुरजणां काढण और दीपै रूप तिण महाराज।
पूंतारि मुख मुरधर पती, पह जोध रिणमल पाखती,
गढ लूंबि चहुँवळ माचि दमगळ, कोट वळवळ प्रलै जळ कळ,
धोम झळवण गयण धूधळ, काजि पळ मुख सकति कळकळ,
भाजि बळ खळ हुए खळभळ, चळ विचळ करि अनिळ दळ चळ,
छोडि वळ.........राव मेळि इम छळि मीन विण जळ माळ ॥२६।
अंत जाणि सगळे ऊंमरे, राव सूं कहियौ रावरे,
जम राव सूं कुण दाव जीपै अभौ तिण गति आज।
कुण उवह तागै ऊंमडै, प्रथम दीपावै पांवडे,
वड विना क्रामति न को वीरति, पिंड हुई मत जाय संपति,
हमैं इण भति धरौ हिम्मति, पुळौ पर खिति रहौ नरपति,

२६—दमण अहि=कालिय नाग का दमन करने के लिये। जळ कदरां=जल की गुफा अर्थात् कालिय ह्रद। कान्हड़=कृष्ण। पूंतारि=आश्वासन देकर। पह=(प्रभु) मालिक। पाखती=पार्श्ववर्ती। गढ०=गढ़ के चारों तरफ लग गए। माचि दमगळ=युद्ध जोर पकड़ गया। धोम झळवण=धूम में से ज्वाला उठने लगी। गयण=आकाश। धूंधल=धुँधला। काजि पळ=मास के लिये। कळकळ=लालायित। खळभळ=घबराहट, हड़बड़ी। अनिळ०=पवन से पत्ता चलायमान होता है वैसे। मेळि०=इस तरह युद्ध करके। मीन०=जल माला के बिना मछली की जो दशा होती है वह दशा इंद्रसिंह की हुई।

२७—अंत०=सब उमरावों ने नाश समझकर। जीपै=जीत सकता है। तिण गति=उस तरह का है। कुण०=कौन उसे छोड़कर वृद्धि पा सकता है। प्रथम०=जो पहले ही पैंड में शोभित करता है। वड विना=बिना बड़ी काति के वीरता कहाँ। पिंड हुई०=आपके मन में यह बुद्धि हुई कि संपत्ति भले जाय तो अब इस प्रकार की हिम्मत रखो। पुळौ०=दूसरे की जमीन में चले जाओ और वहाँ रहो।

ईस असपति किसी उन्नति, करै अवगति जिकुं सिर कृति,
मांन दुख अति धार मसलति लोपि ईजत लाज ॥२७॥
ज्यां घणूं वाळौ जीवणौ, घट तिकां डर व्यापै घणौ,
महाराज सूं ध्रम द्वार मांगै, सहर तजि इंद्रसाह।
नागोर हूंता नीसरे, सुरतांण पुर दिसि संचरे,
धनि अभा छत्रपति सकति धूरति, प्रकति हिम्मति जांण गजपति,
निहसि बाजित घहरि नौबति, कथै कवि कृति उकति कीरति,
महा अजमति परम मूरति, पैज रघुपति तेज पूरति,
प्रभुति सुण अति धूज धरपति सुणै छत्रपति साह ॥२८॥
विड़देस पवँगै वाडतै, खग नागपुर धर खाटतै,
जीवता केहर तणी जांणै खांच काढी खाळ।

ईस० = मालिक बादशाह है तो उन्नति की बात ही कौन सी ? करै० = जिसको सिर पर रखने से बुरी हालत होती है, उसे दुःख मानकर यह और सलाह विचार विचारो और इस समय इज्जत और लज्जा की बात छोड़ दो।

२८—ज्यां० = जिनको जीवित रहना अति वल्लभ है ? घट तिकां = उनके शरीर में। ध्रम द्वार = शरण। इंद्रसाह = हे इंद्रसिंह। सुरतांण पुर दिसि = दिल्ली की तरफ। संचरे = विचरण करो। धनि = धन्य है। सकति धूरति = बल को धारण करनेवाला। प्रकति = (प्रकृति) स्वभाव से। निहसि = बजते हैं। बाजित = वादित्र, बाजे। घहरि नौबति = नौबत घरघराहट करती है। कृति उकति = उक्ति करके। महा अजमति = बड़ा पराक्रमवाला। पैज रघुपति = रामचंद्र के समान प्रतिज्ञा निबाहनेवाला। प्रभुति = प्रभाव को।

२९—विड़देस० = विड़दसिंह के घोड़े को काटते। खग० = तलवार से नागोर की पृथ्वी को हासिल करते। जीवता० = मानों जिंदा केसरी की खाल

ओपियौ विरदै ऊधरै, चौसरै दुळ्तै चम्मरै,
अजमाल संभव परम ओपम, सरम कुळ ध्रम अंबनिध सम,
तेज अनुक्रम वधै तिम तिम, जोम रज क्रम वाधि जिम जिम,
सेस कूरम जितै समरम, इळा सुर ध्रम निगम आगम,
सुखि तपोश्रण भरम प्रम सम, मरम निध जिम माल ॥२९॥

दुहा

नरपति लीधौ नागपुर, अरि गंजे अभसाह।
गह मंदै इंदौ गयौ, दिल्ली हंदै राह ॥३०॥
महपति आयौ मेड़तै, गढ खाटे नागोर।
सिर तिण वरस विँयासियौ, आयौ वड सुख ओर ॥३१॥
अति हित बोलायो अभै, तुरत अनुज बखतेस।
कमधां पति आदर कियौ, दियौ सवाळख देस ॥३२॥
बळ दळ जोडै बंधवां, प्रबळ बधै नित प्रीत।
धांम विराजै ऊधरां, राम लखण री रीत ॥३३॥

खींचकर निकाली। ओपियौ=शोभित होता है। विरदै=विरुद से। ऊधरै=ऊँचा। चौसरै=चार। अंबनिध=(अंबुनिधि) समुद्र। जोम=जोश, बल। रज क्रम=राज्य का काम। सेस=शेषनाग। कूरम=कच्छप अवतार। जितै=जब तक। समरम=बराबर क्रीड़ा करें। ध्रम=धर्म। निगम=वेद। आगम=शास्त्र। तपोश्रण=(तपोधन) तपस्वी। भरम=गुंजाइश। प्रम=परमेश्वर। मरम=गुप्त। निध=नव निधि। माल=धन।

३०—गह=गर्व-रहित। इंदौ=इंद्रसिंह।

३१—महपति=(महीपति) राजा। खाटे=विजय करके। सिर तिण=उसके पश्चात्।

३२—अनुज=छोटा भाई। सवाळख=(सपादलक्ष) नागोर प्रांत का देश।

३३—बळ दळ=सेना का बल। जोडै=जमा करता है। ऊधरां=ऊँचे।

नरपति पुर नागोर नूं, विदा कियौ बखतेस ।
आयौ जैतारण अभै, राजा परमर वेस ॥३४॥
जोधांणै थांणै जतन, पातल मेर प्रमांण ।
राव रजा दे राखियौ, चाड प्रजा चहुवांण ॥३५॥

छंद बेअक्खरी

सेर विलँद गुज्जर खंड सारै, विदा कियौ पतिसाह ति वारै ।
असुर मुरद्धर मारग आवै, वडी फौज अति जगत वतावै ॥३६॥
ओ नबाब नृप चौ डर ईखे, सूधे राह गयौ व्रत सीखे ।
अभौ वळे वळ काढि अनीतां, वळियौ नरिँद सरद रित वीतां ॥३७॥
छुड़तौ गहन खळां मद छायौ, अगहन रित जाळंधर आयौ ।
जोरै गिरां भोमिया जेता, आया पगे बांधि कर एता ॥३८॥
सू बालौत देवळा(ड़ा) सींधल, दबि बोड़ा बालीसा देवळ ।
राड़द्रहां सोढ़ां मछरीकां, सेव ग्रही भिळि मसळि सरीकां ॥३९॥

३४—जैतारण = मारवाड़ में जोधपुर से पूर्व की ओर एक नगर । परमर = श्रेष्ठ, उत्तम । वेस = अवस्था ।

३५—जोधांणै = जोधपुर में । थांणै = थाने की रक्षा के लिये । पातल = प्रतापसिंह को । चाड प्रजा = प्रजा की सहायता के लिये ।

३६—सारै = अधीन करके । तिवारै = उस समय ।

३७—ईखे = देखकर । सूधे राह = सीधे मार्ग । व्रत = नियम । वळे = फिर । वळ० = अन्याय मार्ग चलनेवालों का टेढ़ापन मिटाकर । वळियौ = पीछे लौटा ।

३८—छुड़तौ = मिटाता हुआ । गहन = गर्व । अगहन = मार्गशीर्ष । जाळंधर = जाळोर नगर । जोरै = जोर में थे । गिरां = पहाड़ों में । भोमिया = जमींदार । आया पगे = पैरों पड़े ।

३९—बालौत० = बालौत देवड़ा आदि राजपूत हैं । मछरीकां = चौहान । ग्रही = ग्रहण की । भिळि० = मिसल के सरदारों के शरीक होकर मिले ।

दुहा

अभौ सिवांणै आवियौ, महि सर कर मेवास ।
कूच थयौ जोधांण नूं, आगम सांवण मास ॥४०॥
आयौ वरस त्रयासियौ, पायौ प्रजा निवास ।
धरपति गढ पाधारियौ, मेटे खिति मेवास ॥४१॥

इति श्री राजराजेश्वर महाराज श्री अभैसिंघजी नागोर लियौ नै
सरब भोमिया पायनामै करि जोधपुर पधारिया
एकचत्वारिंश प्रकास ॥४१॥

४०—सर कर = सीधे करके । मेवास = लुटेरों के स्थान ।

दुहा

यों नरपति पुर आपरै, नित प्रति महल निवास ।
सुख अनुराग छ राग सुख, बाग तड़ाग विलास ।। १ ।।
भूप महारस भोगवै, सुरपति रीत सुप्रीत ।
जोधपुरै की जोधपुर, वरखा सरद वितीत ।। २ ।।

छंद बेअक्खरी

आरँभ थयौ सीत रित आई, साह मिलण कर थई सभाई ।
सुंण कागळ इळ कमँध सवाया, आठेइ मिसल तणा भड़ आया ।। ३ ।।
दियण नगारा आग्या दीधी, कूच थयौ न्रप जेज न कीधी ।
कमधां पती प्रजा सुख कारण, जोवण धर आयौ जैतारण ।। ४ ।।
जिम जिम नूर प्रथी चौ जोवै, हुवै मुकाम उवरि सुख होवै ।
सरब धरा लखि चैन सवायो, यौं पति खेड़ मेड़तै आयौ ।। ५ ।।
है गै रथ पायक हैसल्लां, मिळिया दळ जोधां रिड़मल्लां ।
महि मेड़तै सँभाळै मारू, सझि खड़िया दिल्ली पुर सारू ।। ६ ।।

२—महारस=परम आनंद । सुरपति=इंद्र । जोधपुरै=जोधपुर के राजा ने ।

३—आरँभ=यात्रा का आरंभ, चढ़ाई । सभाई=तैयारी । आठेइ मिसल=आठों मिसल के सरदार ।

४—जोवण=देखने को ।

५—नूर=सौभाग्य । जोवै=देखता है । उवरि=हृदय में, मन में । पति खेड़=खेड़ नगर का स्वामी ।

६—है=घोड़े । गै=हाथी । पायक=पैदल । हैसल्लां=उत्साह से । जोधां=जोधा राठोड़ । रिड़मल्लां=रणमल्ल के वंशज राठोड़ । सँभाळै=सम्हाला, निगरानी की । खड़िया=चलाया । दिल्ली॰=दिल्ली नगर के लिये । सारू=लिये ।

दळ सामंद जिसा दरसावै, ऊतरियौ परबत सर आवै।
.... ॥७॥

दूहा

तनि दरसांणी सीतळा, जुगरांणी जगमाय।
सरम ग्रही देवासुरां, सुख कज धरम सहाय ॥८॥

छंद बेअक्खरी

सोळैई थांन अचळ इंद्रीसुर, अति सुख उदै किशो अंतरि उर।
विसन ब्रह्म सिव अरक वखांणौ, जळपति ससि दिस मारुत जांणौ ॥९॥
असनिकुमार अगनि वन आखौ, देवनाथ महि वांमण दाखौ।
समँद प्रजापति आदि सुरेसर, कमँधां धणी तणी रक्षा कर ॥१०॥
सकति गणेस नवै ग्रह सोई, सुर तेतीस सहाय सकोई।
वड पहि जतन सु वारूंवारां, हुवौ धरम लख कोड़ हजारां ॥११॥

७—परबत सर = जोधपुर से ६० कोस के अंतर पर पूर्व दिशा में एक नगर।

८—तनि = शरीर में। दरसांणी = दृष्टिगोचर हुई। सीतळा = चेचक का रोग। जुगरांणी = युगों में रानी रूप। जगमाय = जगत् की माता।

९—सोळैई थांन० = सोलहों स्थानों में (सोलह स्थान—दस इंद्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, हृदय और ब्रह्मरंध्र।) इंद्रियों के देवता प्रजापति सूर्य आदि ने मन में अचल रहकर अत्यंत सुख का उदय किया। विसन = विष्णु। अरक = सूर्य। जळपति = वरुण। ससि = चंद्रमा। दिस = दिशाएँ। मारुत = पवन।

१०—असनिकुमार = अश्विनीकुमार। आखौ = पूर्ण, अखंड। देवनाथ = इंद्र। वांमण = वामन अवतार। तणी = की।

११—सकोई = सब। पहि = (प्रभु) मालिक के। जतन = वास्ते। वारूंवारा = वारंवार।

चारे धन दीठौ उमरावां, रटिया ग्रंथ सकति कविरावां।
एकां तंत्र मंत्र उवचारै, एकां नीर पियौ सिर वारै ॥१२॥

दुहा

ब्रह्म कवच पंजर विसन, रक्षा रांम उचार।
वेदोक्ती सूं ब्राह्मण, आसीसै अण पार ॥१३॥
सुख प्रगट्यौ तूठां सकति, भड़ नवकोटां भाग।
दिल पातां जागी दसा, असहां लागी आग ॥१४॥
मुरधर थया वधामणा, गौ सरि खार विकार।
खटरस भोजन बांमणां, घर घर मंगलचार ॥१५॥

छप्पय

हुए हरख सुख हुवां परखि सुख वार अप्रंपर
निरखि नूर निज दळां वरख दूधे घण सुंदर।
करखि प्रांण केवियां दसा अमरखि दुरवंछां
सु रिख बाण सासत्र जांण सुरं तारिख यंछां।

१२—वारे=सिर पर घुमाकर। दीठौ=दर्शन किया। रटिया=पढ़े। सकति=शक्ति के। एकां=कितने एकों ने। उवचारै=उच्चारण किए।

१३—पंजर विसन=विष्णुपंजर स्तोत्र। रक्षा रांम=रामरक्षा। आसीसै=आशीर्वाद देते हैं।

१४—तूठां=संतुष्ट होने पर। सकति=शक्ति के, देवी के। नवकोटां०=मारवाड़ का भाग्य है। पातां=चारणों के। जागी दसा=अच्छी दशा प्रकट हुई। असहां=शत्रुओं के।

१५—गौ=गया। सरि=शरीर में से। खार विकार=खारा विकार अर्थात् अप्रिय विकार। खटरस=छः रसोंवाला।

१६—परखि=देखकर। वार=समय। अप्रंपर=अपार। वरख०=बादल से दूध की वर्षा हुई। करखि=खिंच गए। केवियां=शत्रुओं के। अमरखि=(अमर्ष) क्रोधवाली। दुरवंछां=बुरा चाहनेवालों की। रिखवाण=ऋषियों की वाणी। सासत्र=शास्त्र। तारिख=(तार्क्ष्य) गरुड़। यंछां=

किरि वाग विरख राजै कळप आरिख लाजै इंद रौ
अनुराग भड़ां चख उल्लसै लखि मुख राग नरिंद रौ ॥१६॥

दुहा

हुकम हुवौ तन सुख हुवां, हुवा नगारां सद्द ।
कूच हुवौ जैपुर दिसा, हुवौ हुलास विहद्द ॥१७॥
सुख पेखण नृप सासरौ, अभौ थयौ असवार ।
अंगे अंतर केसरां, सुरां खँभायच सार ॥१८॥
उच्छव सूं इळगार सूं, आतुर सूं अनिमंध ।
यूं खड़ियां आयौ अभौ, ग्रहि कूरमां कमंध ॥१९॥
कछवाहां उच्छव किया, देख वधाईदार ।
किया वधाया राजग्रह, राणी कियौ श्रृंगार ॥२०॥
राग हरख मंगळ रळी, चक्रवति आयां चाव ।
पति नव कोट पधारिया, महिले मारू राव ॥२१॥
सोभत रंग सुगंध री, कैफ नरंग सुरंग ।
महल सुरंगां मोहियौ, राजेश्वर नवरंग ॥२२॥

इच्छा। वाग०—बाग में कल्पवृक्ष शोभा देता है। आरिख=(आरक्ष) रक्षास्थान। इंद रौ = इंद्र का। राग=प्रेम।

१७—तन = शरीर में। सद्द = (शब्द) आवाज। हुलास = आनंद।

१८—पेखण=देखने को। सासरौ = ससुराल। सुरां=खंभायच राग का स्वर।

१९—इळगार सूं=उत्साह से। आतुर सूं = त्वरा से। अनिमंध = बेरोक-टोक। यूं = ऐसे। खड़ियां = घोड़ों को चलाते। ग्रहि = घर।

२१—रळी=सुखभोग। चक्रवति=राजा। चाव = अभिलाषा। महिले=महल में।

२२—रंग = रंगमहल में। कैफ=माजून। नरंग = स्त्रियाँ। महल= रानी। नवरंग = नवीन रंगवाला, नव रसों से।

कूरंमी धिनि जांणिया, दिन रजनी तिथ वार।
एकूकी छिन ऊपरा, वारै रतन अपार ॥२३॥

नाराच

अनंत वार भूखणे वणे वणाव एरसौ
जड़ाव जोति ओत पोत भूप रूप में जिसौ।
चखां उदै विलास दास यों हुलास चीत में
परीछ जांनकी अनंद रामचंद प्रीत में ॥२४॥
पिया समीप रूपरासि दासि आसि पासियं
भरे प्रकास श्री उदोति दीप जोति भासियं।
सुगंध गंधसार एण सार मेघसार ए
सवास अंबरे लुबान डंबरे निसार ए ॥२५॥
प्रजंक ओप तें अनोप रूप चूंप पार में
हुए विछात सूलि लूंब झूल फूल हार में।
अनूप ताक गोख श्री विचित्र चित्र सूं अटा
घणूं उतंग अंग जांणि शृंग मेघ ची घटा ॥२६॥

२३—कूरंमी = कछवाही रानी। धिनि = धन्य। रजनी = रात्रि। एकूकी = प्रत्येक। छिन = क्षण। वारै = सिर पर घुमाकर देना।

२४—एरसौ = ऐसा। जड़ाव जोति० = रत्नों की चमक। रत्न और उनकी चमक जैसे परस्पर ओतप्रोत है वैसे रानी और राजा का रूप परस्पर गुथा हुआ है। चखां० = नेत्रों में जैसे विलास का उदय है वैसे चित्त में आनंदोद्गम है। परीछ = देखने में आता है जैसे सीता और रामचंद्र का आनंद।

२५—पिया = प्रिया के। श्री उदोति = लक्ष्मी का उद्योत। गंधसार = चंदन। एणसार = कस्तूरी। मेघसार = कपूर। अंबरे = अम्मर। लुबान = लोबान। डंबरे = धूम निकल रहा है।

२६—प्रजंक = (पर्यंक) पलंग। ओप तें अनोप = शोभा में अनुपम। चूंप = मन में विस्मय। विछात = गद्दी-तकिये आदि। सूलि = अच्छी तरह। लूंब झूल = लूंबे लटक रही हैं। ताक = आले। गोख = झरोखा। अटा = घर के ऊपर का भाग। उतंग = ऊँचा। अंग = महल, घर।

जक्षेस वारिईस की सुरेस नेस प्री जिसा
अभौ त्रिलोक में अचंभ भोग भोगवै इसा।
घणा उछाह त्यौं सराह नाह कूरमां घरे
मने कमंध चीत जास प्रीत वास मंदरे ॥२७॥

दुहा

अमित गुलालां अरगजां केसर अतर फुलेल।
हुवै सबोळी मंडळी, होळी हंदा खेल ॥२८॥
निस दिन श्री महाराज नूं, राज तणी मनुहार।
कहि कुण सुख वरणै कवी, उण चिंतामण वार ॥२९॥
नरपति रहियौ जैनगर, परम रिदै धर प्रीत।
रीधौ भूप विलास रस, कीधौ चैत वितीत ॥३०॥
ऊगै दिन आवै वचै. साह तणा फरमांण।
हित राखै दिल्ली धणी, आखै मुखां वखांण ॥३१॥
सुण आरत सुरतांण री, अरज करै उमराव।
चक्रवति तांम विचारियौ, देखण दिल्ली चाव ॥३२॥

२७—जक्षेस = कुबेर। वारिईस = वरुण। सुरेश = इंद्र। नेस = घर में। सराह = तारीफ, प्रशंसा। नाह = (नाथ) मालिक। मने० = राठोड़ राजा मन में जिस बात का स्मरण करता है, वही तैयार है। वास = निवास।

२८—सबोली = गरक। मंडली = समाज।

२९—चितामण = चितामणि रत्न, जो मनोवांछित पदार्थ देता है। वार = समय।

३०—रिदै = हृदय में। रीधौ = प्रसन्न हुआ, आसक्त हुआ। विलास-रस = कामभोग के आनंद से।

३१—ऊगै दिन = प्रतिदिवस। आवै = आते हैं। वचै = पढ़े जाते हैं। हित = प्रेम। आखै = कहता है। वखांण = प्रशंसा, तारीफ।

३२—आरत = ताकीद। तांम = वहाँ। चाव = मन की उत्कंठा।

गाथा

ळग्गी हांम विळासं, वित्ती अग्यात प्रात मध्यानं ।
सायंकाल निसीतं, रतं भूप चूंप मदनायं ॥३३॥
वृंदं फूळ सुगंधं, बंधे सारत्ति पांन मादिकं ।
रत्तं चक्ख सहासं, आमासं पासि रमणीयं ॥३४॥

दुहा

श्री नरनाथ विळास सूं, पूरण कियौ वसंत ।
देखेवा दिल्ली नयर, भायौ कूच निभ्रंत ॥३५॥
प्रात नगारौ वाजियौ, फिर सद्दी करनाळ ।
ऊंच महूरत ईखियौ, कूच कियौ भूपाळ ॥३६॥
सूरहरौ दर कूच सूं, आयौ दिल्ली एम ।
उर जळियां असहा रहै, जेसट थळियां जेम ॥३७॥
साह मिले अभसाह सूं, सिरै दियौ सनमांन ।
छात नचीतौ लेख छति, जांणै वात जहांन ॥३८॥

३३—हांम = हौंस, अभिलाषा । विलासं = सुखभोग । वित्ती = व्यतीत हुई । अग्यात = बिना खबर । निसीतं = (निशीथ) अर्धरात्रि । रतं = आसक्त । चूंप = आनंद में । मदनायं = कामदेव के ।

३४—वृंदं = समूह । सारत्ति = आसक्ति । मादिकं = मादक पदार्थ, मद्य आदि । रत्तं = लाल । आमासं = (आवास) निवास, घर ।

३५—विलास = सुखभोग । नयर = नगर । भायौ = मन को प्रिय लगा । निभ्रंत = भ्रम-रहित, निश्चित ।

३६—सद्दी = बजी । करनाल = वाद्य-विशेष । ईखियौ = देखा ।

३७—सूरहरौ = सूरसिंह का वंशज । एम = इस तरह । असहा = शत्रु । जेसट = ज्येष्ठ मास में । थलियां = रेतीला प्रदेश ।

३८—सिरै = श्रेष्ठ, ऊँचा । छात = राजा । नचीतौ = निश्चिंत । लेख = देखकर । छति = बादशाह को ।

पूरण थयौ त्रयासियौ, वण वरसात सरस्स।
आवण घण गैघूंबियौ, चौरासियौ वरस्स ॥३९॥
एक वरस रहियौ अभौ, दिल्ली साह दुवार।
राजा साहब राव री, अनिसहि दरसे वार ॥४०॥
मांगी सीख मँडोवरै, सीख न अप्पै साह।
तत्ती सेर विलंद री, असपत्ती उर दाह ॥४१॥

हणूफाल

वधि जोर सेर विलंद, दळ साह समवळ दुंद।
मन जोस लग ब्रहमंड, खग दाबि गुज्जर खंड ॥४२॥
महि सतर सहँस प्रमांण, इक छत्र एकण आंण।
जिण ताप कोळिय जेर, फबि आंण देस अफेर ॥४३॥
डँड लिया झालां दूर, चूड़ासमा बळ चूर।
वाघेल गोहिलवाड़, रस कीध घाट बराड़ ॥४४॥

३९—घण = मेघ। गैघूंबियौ = चारों ओर फैल गया, उमड़कर आया।

४०—दुवार = द्वार। अनिसहि = निरंतर। दरसै = देखता है। वार = समय।

४१—मंडोवरै = मंडोवर के स्वामी ने। अप्पै = देता है। तत्ती = ताती, तीक्ष्ण। असपत्ती = बादशाह के। उर = मन में।

४२—समवळ = बराबर। दुंद = युद्ध में। खग = तलवार से।

४३—सतर सहँस = सत्रह हजार गाँव उस समय अहमदाबाद के सूबे में थे। आंण = आज्ञा। फबि = फबने लगी, शोभा देने लगी। आंण देस = अन्य देशों में। अफेर = पीछे न फिरनेवाली।

४४—झालां = एक क्षत्रिय वंश। चूड़ासमा = क्षत्रियों का एक वंश। वाघेल = क्षत्रियों का एक वंश। गोहिल = क्षत्रियों का वंश। रस कीध = अधीन कर लिया। घाट = घाटा, पर्वत का मार्ग। बराड़ = बराड़ देश का घाटा।

कसि वांक वाळां काढि, वैराइयां सिर बाढि।
है कंप भौ महलार, त्यां दीध द्रव्य तोखार ॥४५॥
जेठुए खेमे ओर, कुण तेण चंपै कोर।
जिण पेख जवन सजोस, सुज गयौ तजि गढ सोस ॥४६॥
जिण घेरियौ भुज जाय, दळ प्रबळ सैत दबाय।
धर कीध परवस धाव, रहि कोट ओटां राव ॥४७॥
राखियौ निज पुर राय, सुरराय जेण सुहाय।
जग कमण फेरै जाब, कळ अकळ सेर नवाब ॥४८॥

दुहा

यों नबाब मुख ऊचरै, धरै न संक लिगार।
जाकै घर गुज्जर धरा, को तिण गंजणहार ॥४९॥
पतिसाही अहमंदपुर, ओपी आदि अनाद।
छूटी कायर खूंद सूं, लई अकब्बर बाद ॥५०॥

४५—कसि = बांधकर। वांक = वक्रता। वाळां = राठौड़ों का। वैराइयां = वैरियों का। बाढि = काटकर। है कंप = भय। भौ = हुआ। महलार = मल्हार राव को। तोखार = घोड़े।

४६—जेठुए = जेठवा जाति का। खेमे = नाम। चंपै = दबा सकता। कोर = कनारा, सीमा। पेख = देखकर। सोस = शुष्क होकर।

४७—सैत = सहित। ओटां = आश्रय लेकर। राव = भुज का स्वामी।

४८—सुरराय = इंद्र। सुहाय = सहायक। कमण = कौन। फेरै = लौटा सकता है। जाब = हुक्म। कळ = युद्ध में। अकळ = अविकल, पूर्ण। सेर = सेर विलंद खाँ।

४९—ऊचरै = कहता है। लिगार = किंचित् मात्र भी, जरा भी। को = कौन। गंजणहार = मारनेवाला।

५०—अहमंदपुर = अहमदपुर (दक्षिण में)। ओपी = शोभायमान हुई। आदि अनाद = शुरू से, प्रथम से। खूंद = बादशाह से। अकब्बर = अकबर बादशाह ने।

साह रहै जिण जायगा, साह वणे तिण मांहि ।
मैं ईरान न लज्जवूं, थांन लजावूं नांहि ।।५१।।
सेर विलँद इण रीत सूं, वसियौ अहमदवाद ।
रूके दखणी राखिया, आप तणी मरजाद ।।५२।।
वहतां वरस पच्यासियौ, औ गुजरात अथाह ।
उर लोचै असपति हुअण, सोचै महमँद साह ।।५३।।
जिता हितू जवनेसरा, सुज गिणि खरा सुमत्ति ।
सेर तणौ दुख संभरै, एतां सूं असपत्ति ।।५४।।
चित पतिसाह विचारियौ, वद्ळै सेर विलंद ।
तौ दक्खण पूरब उतर, वदै न मुझ खावंद ।।५५।।

छप्पय

खरौ जिगरिया खांन जिकौ उत्तर अप जोरै,
पूरब सादित प्रगट तकौ ऊवट निज तोरै ।
मेछ निजामलि मुलक अमल दक्खण वरतायौ,
पण कपट आप रौ जिकौ परगट्ट जणायौ ।

५१—साह = बादशाह । ईरान = सेर विलंदखां ईरानी था जिससे उसका कथन है कि मैं ईरान को लज्जित नहीं करूँगा ।

५२—रूके = तलवार से ।

५३—वहतां = वर्तमान रहते । अथाह = गंभीर । उर = मन में । लोचै = विचार करता है । असपति = बादशाह होने को ।

५४—सुज = उनको । खरा सुमत्ति = पक्के बुद्धिमान् । संभरै = याद करते हैं ।

५५—वद्ळै = मुझसे विरुद्ध हो जावे ।

५६—खरौ = पक्का । अप जोरै = आप बलवान् बन गया है, मुझे नहीं ।। सादित = सादित खाँ (पूर्व का सूबेदार) । ऊवट = उत्पथ चलता है । निजामलि मुलक = निजामुलमुल्क । अमल = अधिकार । एण =

सुरतांण साल भ्रंता सबद उर ते चिंता आकरी
तप लेख करै पतिसाह तौ क्यारूं सोबा चाकरी ॥५६॥

वार्ता

रंग राग वाग अंगराग सूं न रींजै, पातिसाह महमदसाह चिंता में छीजै ।
एक दिवस दीवांण किया,
सतरि खांन बहुत्तर उमराव हजूर तेड़ लिया ॥५७॥
पातिसाह ईश्वर की जात, चौरासी पीरों की करामात ।
हिंदू मुसलमांन सलाम कर ठाढे, एक तैं एक सुमेर से गाढे ॥५८॥
आपणौ आपणौ जोस पोरस सरसावै
पातिसाह की निजर सेर से आवै ।
सुविहांण केवांण ग्रहि दाढी पर हाथ दिया,
सूरां कूं हिम्मत व्यापी कायरौं भरम किया ॥५९॥
हजूर अमीर खड़े नामदार सकस,
कमरदीखांन दोरां तुरराबाज बगस ।
साह का दरगाह अथाह निजर आवै,
बारै बारै हजारियां की विगत को पावै ॥६०॥

इसने । साल = शल्य, दुःख । भ्रंता सबद = भ्रांतिवाले वचन । उर = मन में । ते = उसके । आकरी = बहुत अधिक । तप = तपस्या हो तो । लेख = देखकर, समझकर ।

५७—अंग राग = चंदन आदि से । रीझै = खुश होता है । छीजै = क्षीण होता है । तेड़ लिया = बुला लिया ।

५८—करामात = चमत्कार ।

५९—पोरस = पुरुषार्थ, बल की । सरसावै = प्रशंसा करते हैं । सेर से = सिंह के समान । सुविहांण = प्रातःकाल में । केवांण = तलवार । भरम किया = घबराए ।

६०—दोरां = खानदौरा । अथाह = अति गंभीर । हजारियां = हजारी मन्सबदार ।

गांमी गँवार कोई अचाणक देखै, उर मैं अजंप कंप उमर भर लेखै ।
ऐसौ पातिसाह कौ परगाह, सग्गहां तैं अगाह ॥६१॥
बारै हजारी कूं खीज फकीर करै,
फकीर कूं रीझै तौ नामदार की किताब धरै ॥
दिलेसर परमेसर महमंद साह,
उण ठौड़ जोड़ एक नवकोट कौ नाह ॥६२॥
श्री सुविहांण दीवांण सूं हुकम फुरमायौ,
सेर विलंद गुजरात राज ठहरायौ ।
दिली कौ नांम सुण कमांन कूं खांचै,
मीरे फुरमांण हासी तैं वाचै ॥६३॥

दुहा

यों असपत्ती आखियौ, रत्तो तत्ती रार ।
दीठौ सब्बै द्वेख मैं, दिल्ली चै दरबार ॥६४॥

छंद बेअक्खरी (चौसर)

मीर अमीर सतरि धरि मत्थै, सझि बावीस चढौ इक सत्थै ।
खग तोले मग आरत खत्थै, चौड़ै दाबी वात चकत्थै ॥६५॥

६१—गांमी = ग्रामनिवासी, गाँव का । अजंप = कहने में न आवे ऐसा । परगाह = परिग्रह। सग्गहां = गर्ववालों से । अगाह = नाश न किया जाय ऐसा।

६२—किताब = खिताब, पदवी । जोड़ = बादशाह के समान । नवकोट को नाह = मारवाड़ का राजा ।

६३—सुविहांण = प्रातःकाल में ।

६४—असपत्ती = बादशाह ने । आखियौ = कहा । रत्ती = लाल । तत्ती = गर्म । रार = आँख की रेखा । द्वेख = द्वेष में ।

६५—सतरि = ७० सित्तर मीर अमीर । बावीस = बाईस ही सूबों की सेना सजकर । इस सत्थै = एक साथ । खग तोले = तलवार को हाथ में लेकर तोला । मग = मार्ग में । आरत = उतावले । खत्थे = खसवाले ।

ईरानी .तूरानी ऐसै, जवन दुरास प्रळासी जैसै।
सू मकरांण हरेबी सिंधी, आरब्बी गखड़े अनमंधी ॥६६॥
खुरसांणी रहमांन अखूंनी, सीदी हबस राफसी सूंनी।
मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक सगुर जसथांनी ताई ॥६७॥
माझी मीर बलक्की मल्लं, मीर सैद पट्ठाण मुगल्लं।
खारी और सजोर बुखारी, धर काबली विलाति खँधारी ॥६८॥
ऐतूं आदि अनेक असल्ली, दाखौ जाब कहै पति दिल्ली ॥
सेद विलँद परि बीड़ो साहौ, गुज्जर धर आसुर अवगाहौ ॥६६॥

दुहा

रवद स्यांम के रूम के, सुनी राफसी सोय।
साह हुकम चौड़ै अवण, सुण सोचिया सकोय ॥७०॥

छप्पय

सुण निबाब समसत्त जाब छत्रपत्ति जवन्नां
सूर मीर सोचिया नूर खंचिया वदन्नां।
उजबक्की ऊमदां(रां) टेव लग्गी टकटक्की
वांणि खिमा वैसमा जांणि प्रतिमा आवक्की।

६६—दुरास = महा भयंकर। प्रळासी = प्रलय के समान। गखड़े = गक्खड़ जाति के यवन। अनमंधी = नहीं रुकनेवाले।

६७—ताई = (आततायी) शस्त्र धारण किए हुए।

६८—माझी = मुखिया, अग्रणी।

६६—एतूं आदि = इत्यादि। दाखौ जाव = उत्तर कहौ। परि = ऊपर। साहौ = धारण करो। आसुर = मुसलमान को। अवगाहौ = मारो।

७०—रवद = मुसलमान। सकोय = सब।

७१—जाब = वचन। छत्रपत्ति जवन्नां = यवनों के राजा के। नूर = कांति। उजबक्की आरां = उमराव सब अवाक् हो गए। टेव = स्वभाव से। टकटक्की = टकटकी लग गई। वांणि॰ = जबान एक साथ बंद हो गई। मानो

जग पवन विना तर पत्र ज्यौं थिरि जुबान पण थप्पियौ
उरि ताबि सही असपत्ति री पाछौ ज्वाब न अप्पियौ ॥७१॥

सिरविलंद सुविहांण जोड़ दइवांण जुगत्ती
विचत्र अनेकां वीच एक जांणै असपत्ती।
अवरंगी अत्तीव आपरंगी अणनीतौ
कियौ भंग लड़ि कुणै जंग जुड़ि बावन जीतौ।
मिसळिया लड़ाकां मीरजां सुणै किया बोळा श्रवण
अण काळ मरण अण आदरे काळ चाळ झेलै कवण ॥७२॥

को लाहै लोभियां मौत चाहै अणखूटी
कमण पांण पाकड़ै वीज असमांण विछूटी।
मग सागर तजि सुद्ध भँमर कुण बेड़ो घल्लै
अहि कसणा ओटवै कमण रसण कर झल्लै।

पत्थर की मूर्तियाँ बैठी हैं। जग = जगत् में। तर = (तरु) वृक्ष। उरि = मन में। ताबि = ताप।

७२—सुविहाण = प्रातःकाल में, अच्छे विधानवाला। दइवांण = मालिक। विचत्र = मुसलमान। अवरंगी = और ही जिसका रंग है। आपरंगी = अपने इच्छानुसार चलनेवाला। अणनीतौ = अनीतिवाला। कियौ० = जिसको लड़कर किसने भगाया ? जुड़ि = भिड़कर। मिसळिया = मल डाले। अण आदरे = स्वीकार नहीं करता। चाळ = युद्ध अथवा दामन। कवण = कौन।

७३—लाहै = लाभ, अथवा पाता है। अणखूटी = बिना टूटे। कमण = कौन ? वीज = बिजली। विछूटी = छूटी हुई। बेड़ो = नौका। घल्लै = डालै। अहि० = सर्प की डोरी कौन बांधे ? कसणा = कंचुकी बांधने की डोरी के टुकड़े। कमण० = कौन साँप की जीभ को हाथ से

परखिया निजर आलमपती सारा ही मतिमंद सूं
आदरै न को कर मेर उर समहर सेर विलंद सूं ॥७३॥
साह गयौ दरगाह सूं, निज रहवासि अनेह ।
हितकर बोलाया हितू, गौसल अंतर गेह ॥७४॥
खांन कमरदी तेड़ियौ, जो दिल्ली दीवांण ।
छभा परक्खी छत्रपति, त्यौं अक्खी सुरतांण ॥७५॥
मैं कर वीड़ा अप्पियां, कोय न मंडै पांण ।
संके से आए निजर, वंके मीर जवांण ॥७६॥
साह कहै दीवांण सूं, राह दहूं दरगाह ।
को जावै गुज्जर धरा, आवै पैज निवाह ॥७७॥

छप्पय

वयण इमं दीवांण खान कमरदी उचारै
सुणौ अरज पतिसाह गरज कुण और निवारै ।
को अपार धरि कमळि सेख विण भारस धारै
सूर विगर संसार कमण अंधार निवारै ।
असपती सोच मेटण उवरि दीसै और न दूसरौ
दिल्लेस सभौ आडौ दियण एक अभौ अजमल्ल रौ ॥७८॥

पकड़े ? आलमपती = बादशाह । कर मेर = हाथ से मेरु पर्वत को उठाने के समान । समहर = युद्ध ।

७४—रहवासि = रहने की जगह । अनेह = स्नेह-रहित । हितू = हितेच्छुओं को । गौसल = नहाने का स्थान ।

७५—तेड़ियौ = बुलाया । अक्खी = कहा ।

७६—पांण = हाथ ।

७७—राह दहूं = हिंदु मुसलमान । पैज = प्रण ।

७८—इमं = यह । को० = शेष भगवान् के बिना असंख्य मस्तक धारण करके कौन पृथ्वी का भार धारण करे ? सूर = सूर्य के बिना । उवरि = मन का । सभौ = भय के । आडौ दियण = कपाट देनेवाला ।

रुद्र विना सुर कमण जाप परमेसर जाड़ै
विण ग्रह सुख प्रीवरत त्रिपति कुण बंधै तोड़ै।
मेघ विना महितणा अंग कुण सरब उजाळै
विण गंगा नय वार कमण वाधै ऊंनाळै।
विण हणू लंक परखण विभौ सत्र गुणि कुण मांडै श्रमण
अभसाह विना पतिसाह अति लेखवि और न लक्ख जण ॥७६॥

अै राठौड़ अनादि आदि असिवर अनिमंधी
यांनूं चित भळाय प्रीत पतिसाहां बंधी।
बेराहां सिर जोर न क्यूं सारै पतिसाहां
मांग दुबाहां मिलण खागवाहां नरनाहां।
विच त्रांण नाथ अभसाह विण वळि समाथ म गणे वियौ
दिन उदै तेण गुजरात दे दिली छात बीड़ौ दियौ ॥८०॥

७९—रुद्र = महादेव के। सुर = देवता। विण ग्रह सुख० = प्रिया के बरताव बिना घर के सुख की तृप्ति कौन बांध या तोड़ सकता है? अथवा प्रियव्रत राजा के बिना। मेघ० = मेघ के बिना पृथ्वी के सब अंगों को कौन उज्ज्वल कर सकता है? विण गंगा = गंगा के बिना ग्रीष्म ऋतु में किसका जल बढ़ सकता है? विण हणू० = हनुमान् के बिना लंका का वैभव देखने को शत्रु को समझकर कौन कान दे? लेखवि = समझ लो। लक्ख जण = लाखों आदमियों में।

८०—असिवर = बहादुर। अनिमंधी = नहीं रुकनेवाले। यांनूं = इनको। भळाय = सम्हलाकर। बेराहां = हिंदू-मुसलमान। मांग मिलण = मिलने की प्रार्थना करो। दुबाहां = वीर। त्रांण = रक्षा। वळि = फिर। समाथ = समर्थ। म गणे = मत गिन। वियौ = दूसरा। दिन उदै = दिन निकलते ही। तेण = उस (अभयसिंह) को।

सुण सलाह दीवांण चीत सुरतांण निवारी
आणि सुगम ऊठिया जिका खुरसांण अफारी ।
जवनपती जांणियौ हेक इण वात हरक्खे
महाराजा अभमाल स्वाल सुण और न अक्खे ।
दुरवेस विकट करिवा दुरस पुरस रूप जोधापुरौ
मम हुकम लाज राखण मुदै महाराज मंडोवरौ ।।८१।।
किलँबि छात सुख कियौ राति मुख गुज्जर चायौ
प्रात गजर वज्जियां फजर दीवांण बुलायौ ।
देखि खूंद दाखियौ गोपि राखियौ न क्योंही
महाराज मुख कहै तेड़ सुख दीजै त्योंही ।
आरति अनंत सुविहांण उर सो मेटण प्रगटी सुमति
तेड़ियौ प्राण परखै अतर पति जिहांण जोधांण पति ।।८२।।
साह द्वार सक बंध गयौ गजबंध सवाई
हरखवंत सुण हुवा सको सामंत सिपाई ।

८१—चीत = चिंता । अफारी = फूले हुए । हेक = एक । स्वाल = (सवाल) वचन । अक्खे = कहा । दुरवेस = मुसलमान (बादशाह) । विकट = टेढ़े मामले को । करिवा दुरस = दुरुस्त करने को । पुरस रूप = पौरुषवाला । मंडोवरौ = मंडोवर का मालिक ।

८२—किलँबि छात = मुसलमानों का छत्र (बादशाह) । सुख कियौ = निद्रा ली । चायौ = चाहा । गजर वज्जियां = प्रातःकाल का नक्कारा होते ही । खूंद = बादशाह ने । दाखियौ = कहा । गोपि राखियौ = छिपा रखा । महाराज० = बादशाह ने मुख से कहा कि महाराज को बुलाओ । आरति = (आर्ति) दुःख । सुविहांण = (सुविधान) अत्यंत अधिक । उर = मन में । प्राण० = दूसरों का बल देखकर । पति जिहांण = बादशाह ने ।

८३—सकबंध = युद्ध करनेवाला, वीर । गजबंध = गजसिंह का वंशज । सको =

पातिसाह पेखियौ अभौ नरनाह अनम्मी
छभा गरब छीजवै सरब दांमै उद्दम्मी।
पण सधर इसै असपत्ति रै अडर निजर भर आवियौ
केतांई अमीर उर कंपतां दियण धीर दरसावियौ ।।८३।।

दुहा

साह कहै मिळतां समौ, अभैसाह महाराज।
ईढ तेरी तरवार सूं, मेरी लाज सकाज ।।८४।।
गुज्जर धर सोबै गयौ, सेर विलंद अमीर।
सो रीधौ उण भोम सूं, मैं कीधो तागीर ।।८५।।
छंदै ज्वाब न उच्चरै, नह वंदै फरमांण।
उर मेरे जेती वसी, सो कहसी दीवांण ।।८६।।

वार्ता

इतनी कहि पातसाह बीड़ा उठाया,
श्री महाराज का रूप उच्छव सूं छभा की नजर आया।
सो मदवा कै मद भरी तुंग हाथ आई,
कना कांमी कूं रमणी एकंति दरसाई ।।८७।।

सब। छीजवै = क्षीण करता है। दांमै = दमन करता है। सधर = दृढ़। केतांई = कितने ही।

८४—मिळतां समौ = मिलते ही। ईढ = चेष्टावाली। सकाज = सफल होगी, रहेगी।

८५—सो = वह। रीधौ = आसक्त हो गया है, राजी हो गया है। तागीर = मुक्त, पदच्युत।

८६—छंदै = स्वच्छंद होकर। ज्वाब = उत्तर। उच्चरै = देता है, कहता है। नह० = न आज्ञापत्र का अदब करता है।

८७—मदवा = मद्य पीनेवाले के। तुंग = मदिरा का पात्र। कना = अथवा, किंवा।

सिकार में सारदूल गजराज पाया,
कना करसण के कुमळात मेघ झड़ लाया।
नेत्रों में हास की लहर दरसावै,
मुख राग की सोभा कमळ कूं लजावै ॥८८॥
महाराजा अति आदर सूं पांन कर लिया,
पातसाहि रींझ रींझ अपने हाथ दिया।
बीड़ै के साथ गुजरात का पटा,
अमीरां का ऊलेख अंबर सा फटा ॥८९॥

दुहा

दे गजराज तुरंग द्रब, तोरा सपत वसन्न।
मुगतमाळ सरपेच नग, रकमां सात रतन्न ॥९०॥
पातिसाह अति प्रेम सूं, कियौ विदा कमधज्ज।
वात सिपाई उच्चरै, छात भलाई लज्ज ॥९१॥
जो चिंता जवनेस नूं, जग वसि करण जिहांन।
सो डेरां आवै सही, कही कमरदी खांन ॥९२॥
असपत्ती आसाढ मैं, कियौ विदा करि प्यार।
मारू मुरधर देस नूं, अभौ हुवौ असवार ॥९३॥

८८—सारदूल = (शार्दूल) सिंह ने। करसण = खेती के। कुमळात = म्लान होने के समय, सूखते। झड़ = पानी का सतत बरसना।

८९—पांन = बीड़ा। ऊलेख = गर्व। अंबर सा = आकाश के समान।

९०—तोरा = बादशाही मानसूचक पदार्थ। नग = रत्न। रकमां = गहने, आभूषण।

९१—कमधज्ज = राठोड़ राजा को। छात० = बादशाह ने अपनी लज्जा राजा के हाथ में दे दी।

९२—जो चिंता० = बादशाह को जगत् को वश करने की जो चिंता थी वह मारवाड़ के राजा के डेरों पर आ गई।

९३—मारू = मारवाड़ का राजा।

नरपति आयौ जैनगर, निज उर हरख निवास।
सुपह सुरंगौ सासरै, लग्गौ सांवण मास ॥९४॥
कमधज कछवाहां घरे, आयौ नृप अभसाह।
कोड सलूणा कूरमे, उर दूणा ओछाह ॥९५॥
कीधा सो आखै कमण, जो मंगळ जैसाह।
गुण भणि भणि अचरज गहै, सुणि सुणि दोनूं राह ॥९६॥
दिन दस वीतां देस नूं, कूच कियौ कमधज्ज।
महपति आयौ मेड़तै, भर वरखा धर भुज्ज ॥९७॥

छंद बेताळ

वरसात भर धर परम सुख वणि उमड़ि जळधर आवही
घण घोर सोर मयोर रस घण घटा घण घहरावही।
दरसंत जामणि रूप दामणि प्रगटि मिट तम प्रगटही
दृग मिलत अमिलत चपळ देखत अवनि पर जन अघटही ॥९८॥

९४—सुपह = (प्रभु) मालिक। सुरंगौ = आनंदमग्न। लग्गौ = लगा, आरंभ हुआ।

९५—कोड = प्यार। सलूणा = सुंदर, बहुत अधिक। कूरमे = जयपुर के कछवाहा राजा के।

९६—आखै = कहता है। कमण = कौन ? भणि भणि = कह कहकर। दोनूं राह = हिंदू मुसलमान।

९७—मेड़तै = एक नगर, जो जोधपुर से पूर्व में ३५ कोस के अंतर पर है। भर वरखा = पूर्ण वर्षा होते।

९८—मयोर = (मयूर) मयूर पक्षियों को। रस = आनंद, प्रीति। घण = मेघ का। घण० = मेघ की घटा बहुत जोर से शब्द कर रही है। जामणि = रात्रि। दामणि० = बिजली प्रकट होकर अंधकार जाहिरा मिट जाता है। चपळ = बिजली को। अवनि = पृथ्वी पर। अघटही = चकाचौंध होते हैं।

जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत उरड़ झड़ अण पार प
मिटि जळण धरणि विनोद मांनव भूरि सर जळ भार प ।
मरजाद सर सर सरिति अनुमिति छूटि जात अछेहयं
पड़ि खाळ थळ थळ ताळ पूरति खह सरूप अखेहयं ।
प्रति खेत अन तन लहरि निम्म प्रति पसरि वेल अपार प
जिम निजर नरपति हूंत भृत जण वधै दिन दिन वार प ॥९९॥

दुहा

मंडोवरपति मेड़तै, वह पह किया विलास ।
श्रावण कादब सोभियौ, आयौ भाद्रव मास ॥१००॥

छंद बेताळ

वरसंत भाद्रव मास बादळ सिखर उज्जळ सांमळा
सुखि राज कोरण गाज अतिसय अंब नय मय ऊजळा ।
फिरि माचि करदम फूल प्रति फळ ओप रूप अनोप प
लखि प्रिया जांणि मनाय लीधा अंग नवरँग ओप प ॥१०१॥

९९—जाळ = समूह । उरड़ = अधिक वेग से । जळण = ताप मिटकर । भूरि = बहुत । सर० = सरोवरों में बहुत जल भर गया है । अनुमिति = अनुमान, अंदाजा । खाळ = पानी के प्रवाह से गहरे खड्डे । ताळ = तालाब । खह० = आकाश का स्वरूप बिना रज के हो गया है अर्थात् स्वच्छ हो गया है । प्रति० = प्रत्येक क्षेत्र में धान्य है, प्रत्येक रात्रि में शरीर लहराता है, अर्थात् आनंदित है । अपार बेलें खेतों में पसर रही हैं । भृत जण = नौकर लोग ।

१००—कादब = (कादंबिनी) मेघमाला से ।

१०१—सिखर = बादल के टूँक । उज्जळ सांमळा = श्वेत और श्याम वर्ण के हैं । कोरण = श्याम घटा के किनारे के श्वेत बादल । अंब = (अंबु) जल । माचि करदम = कादा-कीचड़ बढ़ गया है । ओप = शोभा देता है । अनोप = अनुपम । अंग = शरीर में । नवरँग = नवीन वर्ण अर्थात् उज्ज्वलता अथवा आनंद ।

नित सूर गरजत नूर नेपत पूर सुख पुर गांम ए
मन भ्रमत किरि हरि सेव मिलतां वरौ जण विसराम ए।
अति सोभ गोधन हरित अवनी सरिति गत जळ सोभ ए
प्रति चरण जांणि सु राज पायां लाज निज व्रत लोभ ए ॥१०२॥
त्रिण वेल तर आछादि गिर तन अवनि पंथ अगंम ए
मन जांणि तापसि विवसि थाया भ्रमत फिर पड़ि भ्रंम ए।

दुहा

यों वरखा रितु ऊतरी, आवी सरद सुभाय।
पित्रेसुर कीजै प्रसन, पोखीजै रिख राय ॥१०३॥

छंद बेताळ

आसोज पूरण जगत आसा भोम- अन अति भार ए
सोभंतु जंतु अनंत सुखमय सुखद संपति सार ए।
सर सरित निरमळ नीर सुंदर अमळ अंबर-ओपयं
किरि सुबुधि वधि सत संग कारण लुबुध होत विलोपयं ॥१०४॥
सिव अवन कन्या हूंत संभव अगनि जोति अनोप ए
सुभ द्दष्ट भूप निहारि प्रज सहि अघट किरि सुख ओप ए।

१०२—सूर = शूकर। नेपत = धान्य की उत्पत्ति। गोधन = गाएँ। हरित अवनी = पृथ्वी हरी हो रही है। सरिति = नदियों का। तर = (तरु) वृक्ष। तापसि = तपस्वियों का।

१०३—पित्रेसुर० = श्राद्धपक्ष होने से। पोखीजै० = ब्राह्मणों का भोजन कराके पोषण किया जाता है।

१०४—आसोज = आश्विन मास। भोम = भूमि पर। अन = अन्न का। अंबर = आकाश। लुबुध = (लुब्ध) लोभी पुरुषों का अथवा लोभ का। विलोपयं = नाश होता है।

१०५—सिव० = कन्या-संक्रांति के कारण पृथ्वी में कल्याण का आविर्भाव हुआ है। अग्नि की ज्योति बढ़ी है। सुभ द्दष्ट० = राजा की शुभ दृष्टि

महि प्रगटि रास विलास मंगळ अमळ रैण अकास ए
सोभंति रिख गण चंद्र सोभा किरण जगमग कास ए ।।१०५।।
रस भरत अम्रत सरद् राका रैण वण जण कारणै
दिन सुखद् राति विलास दायक हित चकोर निहारणै ।

दुहा

सुख लेतां मुरधर सुपह, वीतौ मास कुँवार ।
ऊपरि कानिक आवियौ, सोभा दियण सँसार ।।१०६।।

छंद बेताळ

दिन रात सम तुल रासि दिनकर सरकि अनुक्रमि सरवरी
श्रिय जीत पति गुण परखि चखि सुख सकस पखि जिम सुंदरी ।
सुभ चित्र मंदिर चौक सुंदर ओपि रुचि राय अंगणै
तन सदन सोभित करण तरणी विविध मनि उद्दम वणै ।।१०७।।

को देखकर मानों प्रजा दुःख को सहन करके सुखी हुई है । महि=पृथ्वी में । रास=आनंद । रैण=रात्रि में । रिख गण=(ऋक्ष) नक्षत्र-मंडल । कास ए=प्रकाशमान है ।

१०६—सरद राका=शरद् ऋतु की पूर्णिमा । रैण=रात्रि । चकोर=चकोर पक्षी के दिन में वियोग रहता है, जिससे रात्रि हितकारी दिखाई देती है।

सुपह=(सुप्रभु) मालिक, राजा ।

१०७—तुल रासि दिनकर=सूर्य तुला राशि पर आ गया है । सरकि०=रात्रि धीरे धीरे बढ़ने लगी । श्रिय०=चातुर्मास में विष्णु शयन करते हैं और कार्तिक मास में शुक्ला एकादशी के दिन जाग्रत होते हैं इसलिये उस एकादशी का नाम हरिप्रबोधिनी प्रसिद्ध है । उस दिन लक्ष्मी अपने गुणों से पति (विष्णु) को जीतकर नेत्रों से देख सुख पाती हैं वैसे स्त्रियाँ अपने पति के पार्श्व को पाकर सुखी होती हैं । उस दिन हरि-मंदिरों में चौक में सुंदर चित्र माँडे जाते हैं । वैसे राजा के आँगन में सुंदर चित्र शोभा दे रहे हैं । तरणी०=(तरुणी) युवती स्त्रियाँ शरीर और घरों को शोभित करने को अनेक प्रयत्न करती हैं ।

महि नयर घर प्रति दीप मंडित माळ जोत मनोहरं
किर व्योम नाखत्र परखि कमळा सोभ धारत सुंदरं।
पोसप्प पांन कपूर प्रिथवी वणत जण धनवांन ए
इधकार तीरथ जात उद्दम आदि सुरनदि आन ए ॥१०८॥
दिगविजै कजि नरनाथ सजि दळ प्रबळ उच्छव पेखियौ
सब धरण नव सुख नवल सोभा विमळ रूप विसेखियौ ॥

दुहा

सुख वरती वरखा सरद, आगम अगहन मास।
पेखेवा जोधांण पुर, प्रगटे हरख प्रकास ॥१०९॥
मुरधर पति सूं मेड़तै, अभौ हुवौ असवार।
प्रथीनाथ जोधांणपुर, आयौ हरि अवतार ॥११०॥

छंद बेताळ

जग सीत प्रगटत पंथ चख जग अगनि दिसि असि अनुक्रमे
अँगि जगत जण प्रति सुखद अंबर वियत जळधर वेस मैं।

१०८—दीप मंडित माळ=दीपवली से शोभायमान। कमळा=लक्ष्मी। पोसप्प=पुष्प। वणत=शोभा करते हैं। इधकार०=तीर्थयात्रा के अधिकारी उसका उद्यम करते हैं और दूसरे सुरनदी गंगा को जाते हैं। कार्तिक के पिछले पाँच दिनों में (एकादशी से पूर्णिमा-पर्यंत) पुष्कर-स्नान का बड़ा माहात्म्य है और वहाँ बड़ा मेला लगता है। दिगविजै०=राजा लोग दिग्विजय के लिये सेना सजकर। नवल=सुंदर। विसेखियौ=बहुत बढ़ा।

१०९—वरती=व्यतीत हुई।

११०—सूं मेड़तै=मेड़ता नगर से।

१११—सीत प्रगटत पंथ०=ठंढ का मार्ग प्रकट हुआ; जगत् की

सुर प्रगट मिटि अटकाव सरिता ब्याह मंगळ विस्तरे
सोचंति पुर बाजार सोभा मौज सुंदर मंदिरे ॥१११॥
कण गंज पुंज क्रिसांण करसण धरै उद्यम धारणा
वधि आस ज्यास निवास वहरां अवनि धांन अपारणा।
हिम वाधि हिम रित निसा हरणे दिवस क्रिस गुणि देखिये
चित मोद निस प्रति मिटै चकवा सुख चकोर विसेखिये ॥११२॥
अभसाह नृप दुखहरण आयां जोधपुर सुख जांणिये
सुरनयर की कविलास सोभा वाधि तास वखांणिये ॥

दुहा

गजनहरौ जोधांण गढ, अभौ विराजै एम।
वार किसन वसतां वणी, जग द्वारामति जेम ॥११३॥

दृष्टि अग्नि की ओर क्रम से होने लगी। अंबर=वस्त्र। वियत=आकाश। सुर=देवता। मिटि०=नदियों की रोक मिट गई।

११२—कण गंज=धान्य का समूह। क्रिसांण=कर्षक। करसण=कृषि, खेती की। ज्यास=विश्वास। वहरां=बाहिर। अपारणा=अपार, बहुत। हिम=शीत। हिम रित=हेमंत ऋतु में। हरणे=(हिरण) मृगशिरा नक्षत्र। मृगशिरा नक्षत्र का स्वरूप हरिणाकार माना जाता है। इसलिये मारवाड़ में मृगशिरा नक्षत्र के तारों को हिरणियाँ कहते हैं। हेमंत ऋतु में रात्रि का अनुमान इन्हीं तारों से किया जाता है। क्रिस=(कृश) छोटे। चित मोद०=रात्रि बड़ी होने से चकवों का आनंद नष्ट होता है, क्योंकि चकवा पक्षी को रात्रि में वियोग होता है और चकोर पक्षी को विशेष सुख होता है; क्योंकि रात्रि में उसको संयोग होता है।

दुखहरण=दुःख मिटानेवाला। सुरनयर=स्वर्ग की। कविलास=कैलास पर्वत की। वाधि=बढ़कर। तास=उसकी।

११३—गजनहरौ=गजसिंह का पौत्र। वार=समय, शोभा।

मृग जातै भायौ मनै, आयौ पोस अवन्न।
पसरंतां उत्तर पवन, धर सीतळ रवि धन्न ॥११४॥

छंद बेताळ

इळ सीत अंबर पसरि उत्तर वसन प्रीत विसेख ए
आमिक्ख पानक पूर आसव पुहवि नृप सुख पेख ए।
तनि अगनि सुख निसि रहत तापस सरणि वसन सँसार ए
हिम सरति राह प्रवाह सुख हुय पंथ थाह पगार ए ॥११५॥
वपि असह जळ सुख उसण वल्लभ सूर कर हुइ सीतळं
उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम विखम हिम द्रुम विज्जळं।
उर तरुणि सुख धनवंत जण अति असन गरम अनेक ए
देखंत वीतत अलप रुख दिन अगनि पोरख एक ए ॥११६॥

११४—मृग जातै = मार्गशीर्ष मास के जाने पर। भायौ = अच्छा मालूम हुआ। अवन्न = पृथ्वी पर। पसरंता = फैलते।

११५—अंबर = आकाश में। उत्तर = उत्तर दिशा का पवन। आमिक्ख = (आमिष) मांस। पानक = मदिरा। पुहवि = पृथ्वी पर। तनि० = तपस्वी लोग रात्रि में अग्नि से शरीर को सुखी रखते हैं और संसार वस्त्र का शरण लेकर। हिम सरति० = शीतकाल के आने से रास्ता चलना सुखमय हुआ। पंथ० = जलवाला मार्ग पैरो से पार करने योग्य हो गया।

११६—वपि० = शरीर को जल असह्य, अग्नि सुखकारी और सूर्य की किरण प्रिय और शीतल हो गई। उण किरण० = जैसे ग्रीष्म ऋतु में रात्रि के समय चंद्रमा की किरण हो, वैसी सूर्य-किरण हो गई। विखम० = वृक्षों के लिये हिम बिजली के समान हुआ। धनवंत० = धनवान् लोग अधिक भोजन करते हैं और अनेक प्रकार के गरम पदार्थों का सेवन करते हैं। अगनि० = अग्नि का पुरुषार्थ (शीतकाल में) अद्वितीय है।

जग ईख स्वाद पी ऊख रस जिम अवर चार अनारयं
सुख परम दिनपति नृपति सेवत विवध भोग विहारयं ॥

दुहा

पोस महा सुख पेखतां, श्री नरपति अभसाह ।
आयौ रस लाइक अवनि, मंगळदायक माह ॥११७॥

छंद बेताळ

रवि मकररासि निवास राजत उतर मगहर अनुसरे
दिन वधत अनुक्रम किरण दीपति रैण लघु पण आदरे ।
मिलि अंब साख प्रसाख रसमय अमिति मंजुर अंजुरे
रसहीन अनि तर सरब रेणा सीत छळ कृति संचरे ॥११८॥
तपि अगनि अम्रत वारि अणतर पंथ दुसतर पाव रे
अहनाथ दिन गो गरम अह अह असह निस हिम उत्तरे ।
प्रथमादि आग वसंत पांचिम राग फाग परीखिये
हित धांम धांम धमाळ सुख हुय उरध भींभळ ईखिये ।
अब होलिका नर नारि पूजित माघ पूरण मंगळी
जोधांण प्रतपै छात जोधां अभौ कीरति ऊजळी ॥११९॥

११७—ईख० = देखकर । ऊख रस = गन्ने का रस । अवर = और । चार = (चारु) सुंदर । दिनपति = सूर्य अर्थात् सूर्यवंशी ।

रस लाइक = आनंद के योग्य ।

११८—मगहर = पवन । रैण = रात्रि । अंब = आम्र वृक्ष की । मंजुर = मंजरी । अंजुरे = अंकुरित हुई । अनि तर = अन्य वृक्ष । कृति संचरे = (कृत्या) अभिचार का काम करती है ।

११९—तपि० = अग्नि का ताप अमृत सा और जल उससे और तरह का । पैरों से मार्ग काटना कठिन हो गया । अहनाथ० = सूर्य के कारण दिन गरम जाता है और रात्रि प्रतिदिन, उत्तर के हिम के कारण, असह्य हुई । आग = अग्र, शुरू में । परीखिये = देखे जाने लगे । हित० = घर घर में धमाल राग गाया जाने लगा । भींभळ = महोत्सव । छात जोधां = जोधा राठोड़ों का छत्र ।

दुहा

सोहै दिनकर कुंभ सिर, पच्छिम पवन प्रकास।
हेतिकरण वणिगो हुवां, आयां फागण मास ॥१२०॥

छंद बेताळ

इळ ज्यास फागुणं मास आयै हरखि नदि तटि दोहु ए
दिन रयण सुख वधि वरजि हिम दुख गरजि कण रुख गोहु ए।
रति रयण सुदि नर नारि रांमति गाळि प्रमदति गावही
मुख गान दिन निस स्वाम मंगळ वैण चंग वजावही ॥१२१॥
अति प्रगट रस थुड़ डाळ अद्भुज (त) गाय* अतिरँग आदरे
जिम पुरख नियतीवंत नृप जग प्रजा उर सुख पावरे।
सुख रजनि प्रति दिन पवन अतिसय प्रगट तर सुख पोख ए
जगि सुमति आपत जांणि गुर जण रटत वयण सरोख ए।

१२०—कुभ सिर = कुंभ राशि पर। हेतिकरण = हित करनेवाला।

१२१—ज्यास = विश्वास, धैर्य। हरखि॰ = नदी का जल निर्मल होने से नदी को हर्ष और जल कम होने से तट स्पष्ट दीखने से तट को हर्ष। वरजि॰ = ठंढ का दुःख मिट गया। गरजि॰ = गेहूँ के पौधों में कण पड़ने लगा। रति॰ = रात्रि में स्त्री-पुरुष रतिक्रीड़ा करते हैं। गाळि॰ = स्त्रियाँ गालियाँ गाती हैं।

१२२—थुड़ = वृक्ष का तना। डाळ = शाखा। गाय = गान करके अत्यंत आनंद करते हैं। जिसकी नीयत ठीक है वह पुरुष जैसे सुखी होता है वैसे राजा और प्रजा सब सुखी है। सुख रजनि॰ = हमेशा रात्रि में सुखदायक पवन चलती है जिससे वृक्षों का पोषण होता है। वह कैसे? सो बतलाते हैं। मानों गुरुजन (माता-पिता आदि) क्रोध-सहित वचन कहते हैं,

---

* "गोपि अतिरंगादरे"—पाठांतर।

मुखि गानवंत वसंत मंगळ संत धांम सुहावही
किर प्रति अबीर गुलाल केसर भूप लख सुख भावही ॥१२२॥

छप्पय

हुए खेल होलिका रेलि केसर अँग रेलां
घणसारां अंबरां मलै मृगमद ऊभेलां।
रित वसंत सोभंत अंब तर मंजर ओपै
गुल गुलाब सुखसार हार चौसर आरोपै॥
प्रति दिन विलास नवकोटपति अभैसाह विलसै इसा
चाहै धनेस निरखै चरस इंद्र सराहै एरसा ॥१२३॥

दुहा

जोधहरौ जोधांण गढ, यौं राजै अभसाह।
उर अभिलाख प्रगट्टियौ, संभरि साह सलाह ॥१२४॥
ऊगै दिन असपत्ति रा, वाचीजै फुरमांण।
नवकोटी दळ संमिळे, बळ गंजण खुरसांण ॥१२५॥

वह जगत् को सुमति देते हैं। किर=बिखेरे जाते हैं, गुलाल आदि उड़ाए जाते हैं। लख=देखता है। सुख भावही=सुख के अभिप्राय से।

१२३—रेलि केसर=केसर बहने लगी। अँग रेलां=शरीर पर केसर के रेले बहते हैं। घणसारां=कपूर। अंबरां=अंबर एक अति सुगंधिवाला पदार्थ। मलै=मलयागिर चंदन। मृगमद=कस्तूरी। ऊभेलां=बहुत अधिक। अंब=आम्र। तर=वृक्ष। गुल=पुष्प। आरोपै=पहनते हैं। नवकोटपति=मारवाड़ का मालिक। चरस=आनंद। एरसा=ऐसे।

१२४—जोधहरौ=राव जोधा का वंशज। संभरि=स्मरण करके।

१२५—ऊगै दिन=प्रतिदिन। असपत्ति रा=बादशाह के। दळ=सेना। संमिळे=इकट्ठी हुई। गंजण=नाश करने के लिये। खुरसांण=मुसलमानों का।

चैत्र मास पख चांदणै, भुज झल्लै भर भार ।
आया जळ सामंद्र ज्यों, सब दळ हुए तयार ॥१२६॥
जोधांणै जोधाहरौ, सुख मांणै अभसाह ।
विच मृगसर फागण विचै, च्यार थया वीमाह ॥१२७॥
बेटी ईसरदास री, जे पीहर जेसांण ।
आंणी गढ परणै अभै, रांणी प्रांण समांण ॥१२८॥
कँवरी नाहरखांन री, भाग भरी गुण लाज ।
वधि सोभा जदुवंस री, वरी अभै महाराज ॥१२९॥
रावळ माधोसिंघ री, पुत्री परम सुजांण ।
मनहरणी रांणी अभै, परणी पति जोधांण ॥१३०॥
दोनूं देरावर तणी, भटियांणी वड भाग ।
ओपै वर वरदल अभौ, सोभै अचळ सुहाग ॥१३१॥
पाछै तूंवर परणिया, श्री दूलह अभसाह ।
तनया जोरावर तणी, क्यावर गंग प्रवाह ॥१३२॥
पति कमधां गढ जोधपुर, वड सुख करै विहार ।
खग धर गुज्जर खाटिवा, राजा हुवौ तयार ॥१३३॥

१२६—चांदणै = शुक्लपक्ष ।

१२७—मांणै = भोगता है । वीमाह = विवाह ।

१२८—जेसांण = जैसलमेर । आंणी = लाई गई । परणै = विवाह करके ।

१२९—वरी = स्वीकार की, ब्याही ।

१३०—परणी = पाणिग्रहण किया ।

१३१—वरदल = श्रेष्ठ सेनावाला । अचल = अविचल । सुहाग = सौभाग्य ।

१३२—पाछै = पश्चात् । तूंवर = तोमर क्षत्रिय वंश । क्यावर = कृत्य ।

१३३—पति कमधां = राठोड़ों का राजा । खाटिवा = उपार्जन करने के लिये, जीतने के लिये ।

गढ धर पुर निध राज ग्रहि, लेख हितू उर लज्ज ।
आदर तैसौ आपियौ, ज्यौरो जैसौ कज्ज ॥१३४॥

अथ गुजरात आगम

छप्पय

साह वचन अभसाह असह गंजन मन आंणै
कटक बंध कामंध मिले जळसिंध प्रमांणै ।
अष्टा दिस आतुरे वात विसतरे विकत्थां
राह थाह नरनाह ताहि चिंता समरत्थां ।
अनि गढां विखम भ्रम ऊपजै खळ त्यां उद्यम खंभियौ
गजसाह वियौ गुज्जर सिरै अभैसाह आरंभियौ ॥१३५॥

दुहा

सुजहँ जतन गुरु जन सदा, धर पति कारण धाम ।
थांन उजागर थापियौ, नाजर दौलतराम ॥१३६॥

१३४—गढ धर० = महाराजा गुजरात को रवाना हुए तब पीछे गढ़, मारवाड़ की भूमि जोधपुर आदि शहर । निध = अर्थात् द्रव्य (खजाना), राज्य और घर ये सब जैसा जाति के भाटी जोरावरसिंह को अपना हितेच्छु समझ और उसके मन की लजा को देखकर आदर-पूर्वक उसके हाथ में दिए ।

१३५—असह = शत्रु । कामंध = राठोड़ । जळसिध प्रमाणै = समुद्र के जल के समान । अष्टा दिस = आठों दिशाओं मे । आतुरे = जल्दी । विकत्थां = अफवाह । राह = मार्ग, रीति । थाह = तलस्पर्श । ताहि = उसकी । अनि = दूसरे । विखम = विकट । भ्रम = शका । खळ = शत्रु । खंभियौ = खड़ा हुआ । वियौ = दूसरा गजसिंह । आरंभियौ = चढ़ाई की ।

१३६—सुजहँ = वहाँ । गुरु जन० = रानियों आदि की रक्षा के लिये । कारण धांम = घर के प्रबंध के लिये । थान = (स्थान) जोधपुर में । उजागर = प्रसिद्ध ।

छप्पय

दृढ मंत्री दिल्लेस पास अमरेस भंडारी
रीत नीत ऊजळौ प्रीतधारी हितकारी।
सुपनै ही साभाय न्यायवृत चाय न चूकै
राज काज चित राग माग अनि समळ प्रमूकै।
महाराज अभै मंडोवरै सकळ लाज परखै सरू
दृढ वात नेम लखि रक्खियौ खुंद थांन खेमंगरू ॥१३७॥

दुहा

भूप हुकम भगवांन तण, मुहतौ जीवणदास।
दिल्ली रहियौ साह दळ, साहां करण समास ॥१३८॥
वरधमान प्रोहित वळे, दिल्ली चै दरबार।
नवकोटीपति रक्खियौ, मोटी निजर विचारि ॥१३९॥
मुदै अमर खेमंगरू, जिकण सरू सब ज्यास।
वात करण सुरतांण सूं, अरि घरि करण अज्यास ॥१४०॥

१३७—दिल्लेस पास = बादशाह के पास। अमरेस = अमरसिंह। साभाय = स्वभाव से। चाय = जान-बूझकर। माग = मार्ग। अनि = अन्य। समळ = सदोष, बुरा। प्रमूकै = छोड़ देता है। मंडोवरै = मंडोवर का राजा। परखै = परीक्षा करके। सरू = आदि में। खुंद थांन = दिल्ली में। खेमंगरू = खीमसी के पुत्र को।

१३८—तण = (तनय) पुत्र। समास = (समाश्वासन) तसल्ली देनेवाला।

१३९—वरधमान = पुरोहित का नाम। वळे = फिर।

१४०—मुदै = मुख्य। सरू = वास्ते। ज्यास = विश्वास। अरि घरि = शत्रु के घर में। अज्यास = अशांति।

छप्पय

जोध सहरि गढ जतनि सद्दढ जादव पण सच्चै
सूर पणै समरत्थ रीत अनि पंथ न रच्चै।
सामि धरम, चित सरम, आदि रज करम अरेहण
परम भगत पुन्यवंत रीत खग सकति नरेहण।
परखियौ अभै जोधांण पति मेर जांण उनमांन रौ
रिध नयर जतन थिरि रक्खियौ सूजौ साहिब खांन रौ।।१४१।।

दुहा

फतमल्लौ मधकर तणौ, दूजौ कूंप करन्न।
अति हित सूं दीन्हौ अभै, गढ जोधांण जतन्न।।१४२।।
ऊहड़ भड़ गढ ऊपरा, जोड़ हरी वड जांण।
मांनि सजोसौ मेलियौ, अभै भरोसो आंण।।१४३।।
सुत गोयँद धांधल सकज, दुभल विहारीदास।
राजा निज पुर रक्खियौ, वचन जिके विसवास।।१४४।।
आंमीदास दयाल रौ, दिल उज्जळ सिकदार।
सहर सहाय सचाइयां, पह थापै करि प्यार।।१४५।।

१४१—जादव=यदुवशी, भाटी। पण सच्चै=प्रतिज्ञा के पूरे। अनि=अन्य। आदि०=शुरू से राज्य के काम में बाधा न डालनेवाला। खग०=तलवार की ताकत से पीछा न देनेवाला। मेर०=मानों मेरु पर्वत के समान। रिध=ऋद्धि। जतन=प्रबंध के लिये।

१४२—फतमल्लौ=फतहसिंह। मधकर तणौ=माधवसिंह का पुत्र। कूंप=कूंपावत राठोड़। करन्न=कर्णसिंह।

१४३—ऊहड़=ऊहड़ शाखा का राठोड़। जोड़=बराबरी का। हरी=हरिसिंह। सजोसौ=जोशवाला। मेलियौ=रखा।

१४४—धांधल=धांधल शाखा का राठोड़। दुभल=वीर।

१४५—सिकदार=कोतवाल। सचाइयां=सच्चेपन से। पह=राजा।

अभै विचारे दृढ अकल, मुहतौ साची मत्ति।
गिरधारी गढ राखियौ, सुत जीवण सुभ गत्ति ॥१४६॥

छंद पद्धरी

नरइंद अभौ नवकोट नाथ
सरि करण सतरि धरवर समाथ।
अहमंद नयर खाटण अनूप
रस वीर प्रगट घट विकट रूप ॥१४७॥
सुरतांण सरोतरि विलँद सेर,
जिण मांण हरण जुड़ि करण जेर।
महि लियण सतरि अरिमळण मांण
सज्जे पयांण गज्जे निसांण ॥१४८॥
अनिबंध चमू वणि चतुर अंग
महिनाथ हुकम खुल्लिय मतंग।
गज अवत दांण मद जळद गाज
सोभंति चमक नग कनक साज ॥१४९॥

१४६—अकळ = पूरा।

१४७—सरिकरण = अधीन करने के लिये। सतरि धरवर = गुजरात की भूमि को। समाथ = समर्थ। खाटण = विजय करने के लिये। घट = शरीर।

१४८—सरोतरि = बराबर का, सदृश। मांण = मान, इज्जत। जेर = अधीन करने को। सतरि = सत्रह हजार गाँवोंवाला देश, गुजरात। मळण = नाश करना, म्लान करना। पयांण = प्रयाण। निसांण = नक्कारा।

१४९—अनिबंध = नहीं रुकनेवाली। चामू = सेना। चतुर अंग = चतुरंगिणी। जैसे—हाथी, घोड़ा, रथ और पयादे। मतंग = हाथी। अवत = झरता है। दांण = हाथी का मद। जळद = मेघ। चमक = चमकते हैं। नग = रत्न।

तनि ओप करण कवि वरण तास
प्रति नवल जलद् विद्वति प्रकास।
व्रति चलति सुगति दुति अमित विद्ध
पद्मणिय हंस किरि गुरु प्रसिद्ध ॥१५०॥

निज कुंभ सिंभ जुग वण अनोप
उत्तंग सिखर घण सिखर ओप।
कर लोल झुलत अति चपळ कांन
विखई मन जांणिक उकतिवांन ॥१५१॥

अण चपळ नैण लघु जोम अत्ति
सँगि अहूं विदिसि चेतन सकत्ति।
दीपंत जुगळ कळ अमळ दंत
सुत अरक पांणि लखि जांणि संत ॥१५२॥

अंघ्रीयस खँभ किरि थंभ ऊप
अनि भूप कोप बंधण अनूप।

१५०—तनि = शरीर। ओप = शोभा। वरण = वर्णन। नवल = सुंदर। विद्वति = (विद्युत्) बिजली। व्रति = वृत्ति, रीति। दुति = (द्युति) कांति, शोभा। अमित विद्ध = अनेक प्रकार की। गुरु प्रसिद्ध = बहुत प्रसिद्ध।

१५१—कुंभ = हाथी का कुंभस्थल। सिंभु जुग = दो महादेव के लिंग। घण = मेघ। कर = शुंडादंड। लोल = चपल। विखई = विषयी, कामी पुरुष।

१५२—अण चपळ = अचंचल, स्थिर। जोम = वेग। सँगि० = स्थिर नेत्र ऐसे प्रतीत होते हैं कि मानों चेतन के साथ शक्ति स्थिर है। कळ = सुंदर। सुत अरक० = मानों शनैश्चर के हाथ में सत्पुरुष आ गए हैं।

१५३—अंघ्रीयस = चरण, पैर। ऊप = उपम, सदृश। अनि = अन्य।

बळ अतुळ कंध अनिमंध बाह
दृढ करि वाराह विध हरण दाह ॥१५३॥
गिरि जांणि चरण लहि लखत गोम
वद्दळ इळ दरसे छांडि व्योम।
जंघाळस वंदण चित्र जास
किरि जळद इंद्र धानुख प्रकास ॥१५४॥
अति नग जड़ाव सब साजि अंग
संजीवनि किरि गिरि द्रोण संग॥

दुहा

मन मूरति मूरति मदन, शुभ गुण सदन सिँगार।
असवारी कजि आंणियौ, ऊपरि लूंण उतारि ॥१५५॥
ऐरापति असवार इळ, सुजि सिंगार सिँदूर।
पधरायौ गजराज सौ, श्री महाराज हजूर ॥१५६॥

कंध=कंधा। अनिमंध बाह=बाहु से न रुकनेवाला। दृढ०=वह कंधा शूकर के समान दृढ़ है, जो दाह मिटानेवाला है।

१५४—गिरि जाणि०=पैर पृथ्वी पर ऐसे दिखाई देते हैं कि मानों पहाड़। मानों आकाश को छोड़कर पृथ्वी पर बादल आ गए हैं जिसके मस्तक पर जंगाल का चित्र ऐसा दिखाई देता है कि मानों बादल में इंद्रधनुष तना है। शरीर पर सब साज रत्नों से जड़ा हुआ है। वह ऐसा प्रतीत होता है कि मानों द्रोण पर्वत के साथ संजीवनी जड़ी शोभ रही है।

१५५- मन मूरति=मन से ही जिसकी मूर्ति बनाई गई है, ऐसा। कजि=वास्ते। आंणियौ=लाया गया। ऊपरि०=दृष्टि-दोष न हो जाय, इसलिये सुंदर वस्तु पर लौन उतारा जाता है।

१५६—ऐरापति=(ऐरावत) इंद्र का हाथी। सुजि=वह। पधरायौ=लाया गया।

वळि बळ बळी महावतां, आराधे सुर पीर ।
छुरिति मदोमति छोडिया, किरि गिरि अट्ठ सरीर ।।१५७।।

छप्पय

अमर मंत्र उर धरै विरुद ऊचरै महावत
संक साह संपणै वयण न भणै असुहावत ।
भाय दाय क्रमि भरै पाय लंगर खरळक्कै
पैंड बैंड अड़ियल्ल नीठ दोय पैंड सरक्कै ।
आतस अपार ऊचांर जस गैलाइत तक्कै गळी
नीसार सोर पूरति निपट यौं जांणै पति आगळी ।।१५८।।
पर हूंता जिम पसर धरा फणधर उर धारै
पवन जोर पेरियौ वहै वद्दळ विसतारै ।
नाग राग पेरियौ प्रांण पैलां वसि थप्पै
दास हुकम पेरियौ जास पति धरै सजप्पै ।

१५७—वळि = फिर । बळ = बलिदान । बळी = बलवान् । छुरिति = छः ही ऋतुओं में ।

१५८—अमर मंत्र = देवमंत्र । उर धरै = मन में याद किया । विरुद = यश । संक = शंका, भय । संपणै = संपन्न होती है, उत्पन्न होती है । वयण = वचन । असुहावत = मन को प्रिय न लगनेवाला । भाय० = अपनी इच्छा से जी चाहे जैसा पैर रखता है । पाय = पैर में । लंगर = हाथी के पैर की साँकळ । खरळक्कै = अव्यक्त शब्द करती है । पैंड बैंड = अंडबंड । अड़ियल्ल = अड़नेवाला, रुकनेवाला । नीठ = मुश्किल से । आतस = आतशबाजी । गैलाइत = रास्ते चलनेवाले । तक्कै = ताकते हैं, देखते हैं । गळी = गली, छोटा रास्ता । सोर = शोर-गुल । निपट = अत्यंत ।

१५९—पर हूंता० = जैसे शेषनाग दूसरे की प्रेरणा से पृथ्वी को धारण करता है, जैसे पवन से प्रेरित बादल विस्तृत होकर चलता है, जैसे सर्प राग से प्रेरित अपने प्राणों को दूसरे के वश कर देता है, जैसे सेवक आज्ञा

परतक्ख ठगोरी पेरियौ मनुज ग्रहै ठग मंडळी
पेरियां मंत्र सिंधुर सगह आवै दरगह अग्गळी ॥१५६॥
एक चित्त ऊजळा चलै सुभ नीत रसत्तै
एक खूंन छलवांन वहै कोळाहळ मत्तै।
एक सोर सारत्ति घोर धूंवा रवि डंबर
ज्यौं वावळि वादळ विसाळ ओपै मग अंबर।
इक चलै सूंड अंदोळतां अध ऊरध सावळ अविळ
तम सुभट विछोहौ जांणि तिम दिवस वहै करि डंग बळि ॥१६०॥
साजि कनक अंबरां भीड़ सिंधुरां दरग्गहि
सुकवि सोभ संभरै थोभि नभ धरै जिसा महि।
थळ कज्जळ सरजीव कना असताचळ अग्रज
कना सेव कारणै देव सुत आया दिग्गज।

से प्रेरित होकर मालिक के विचारानुसार बोलता है और ठगिनी की प्रेरणा से मनुष्य ठगों की मंडली में जा पड़ता है, वैसे मंत्र से प्रेरित हाथी दरगाह के आगे आता है।

१६०—एक तरफ उज्ज्वल चित्तवाले अच्छी नीति के मार्ग चलते हैं। एक तरफ छलवाले मस्त होकर खून करते हुए कोलाहल करते हैं। एक तरफ बारूद के छूटने से भयंकर धूएँ ने सूर्य को ढक दिया है। वह ऐसा दिखाई देता है कि वायु के वेग से आकाश-मार्ग में बादल छा गए हैं। एक तरफ हाथी सूँड़ को ऊपर-नीचे उछालते सीधे उलटे चल रहे हैं। वह ऐसा दिखाई देता है कि मानों उतावला तमरूपी सुभट दिन में डांग (लट्ठी) लेकर चल रहा है।

१६१—कनक=सुवर्ण। सिंधुरां=हाथियों की। संभरै=स्मरण करते हैं। थोभि नभ०=आकाश को थाँभकर पृथ्वी को धारण करते हैं। थळ०=हाथी क्या हैं, मानों सजीव कज्जल के धोरे (बालू के टीले) हैं।

कै सूत वैंत सुभ वात कजि सोभै दूत समंद रा
आवियास मिळ भ्रम इंद्र रै कै इळ वद्दळ इंद रा ॥१६१॥

छंद बेअक्खरी

ओपै गज सांमळा अनैसा, जपि गुण डौळ तिमंगळ जैसा।
अरुण अँबाड़ी झूळ अरोहै, सांवण संझ कि अंबुद सोहै ॥१६२॥
अंकुस सीस वणै गुण ऐसौ, जग वेधियौ मघा सनि जैसौ।
अनुहरतां सुरघंट अपारे, दीपै किरि झल्लरि हरि द्वारे ॥१६३॥
कोपि अगम ओपम नवकोटां, सत्रु गढ कोट करण सैंलोटां।

अथ नाम

सुंदरगज गज रतन सरीखा, संक फतैगज जिसा असीखा ॥१६४॥
मद वंका संका नह मांनै, छाति मदोमति हसति अछांनै॥
मोतीगज मोहणगज मंगळ, सांमळगज गज रूप सकोमळ ॥१६५॥
श्री गज इंद्र सवाई सुंदर, मंगळगज वद्दळ मद मंदर॥
गज मंगळ गज खूब गुमांनी, वैरीसाल अलोल सुवांनी ॥१६६॥

कना० = किंवा अस्तगिरि के बड़े भाई हैं। कना० = किंवा महाराज-पुत्र की सेवा करने को दिग्गज आए हैं।

१६२—सांमळा = काले। डौळ = स्वरूप, आकार। तिमंगळ = महामत्स्य। अँबाड़ी = छतरीवाला हौदा। झूळ = समूह। अरोहै = चढ़े हुए हैं। अंबुद = मेघ।

१६३—सिर पर अंकुश ऐसा दिखाई देता है कि मानों शनि ग्रह ने मघा नक्षत्र को बेधा है। मघा नक्षत्र मालाकार है जिस गुलाई से यह वर्णन है।

१६४—करण सैंलोटां = नाश करने के लिये, बिछा देने के लिये। चित करने के लिये।

१६५—छाति = राजा के। अछांनै = मशहूर।

ऐरापति जसतिलक अणी दळ, मतवाळौ छावौ मद मोकळ।
दळ शृँगार गजघंट बहादर, मद मेदनी विकट गज भम्मर ॥१६७॥
नग्गी तेग हिमति गज निझ्झरि, सुंदर स्यांमरतन गज संभरि।
गज अजीत गजराज सांमगिरि, फतै ममारख चैन गयँद फिरि ॥१६८॥
दौलति फतै जैतगज दौलति, भूपन्नाळ महबूब जळद भति ॥
सुंदर छबि घण गरज सवाई, सौभै तन मन प्रसन सझाई ॥१६९॥
एतां आदि सझाय अनेकां, आवत द्वारि अचंभा एकां।
सरकै के व्रत मंत्र सुणंतां, ध्यांन वांन मुख धत्तां धत्तां ॥१७०॥
एक डाक अकसै मगि आवै, एक अड़ै पग नीठ उठावै।
यों गजराज राज मगि आवै, पेखे लोक अचंभो पावै ॥१७१॥
लोक भणै माहुति वृत लेखै, सूर महा त्यां हूंत विसेखै।
के सरकै सहजे अणकंपै, चरखी फूलझड़ी भुँय कंपै ॥१७२॥

१६७—छावौ = प्रसिद्ध। मेदनी = पृथ्वी पर।

१६८—तेग = तलवार।

१६९—भति = भाँति, तरह का। छबि = शोभा। सझाई = साज।

१७०—धत्तां धत्तां = 'धत् धत्' यह अव्यक्त शब्द हाथी को चलाने का है।

१७१—डाक = कदम। अकसै = गर्व के साथ। अड़ै = रुकता है। नीठ = मुश्किल से। पेखे = देखकर।

१७२—माहुति = महावत। वृत = (वृत्ति) ढंग को देखते हैं। सूर = शूकर। बड़े सूवरों से भी कुछ अधिक हैं। के = कितने ही। सरकै = धीरे धीरे स्थानांतर पर जाते हैं। चरखी = एक प्रकार की आतशबाजी, जो गोल चक्कर फिरती है। फूलझड़ी = एक प्रकार की आतशबाजी, जिसमें से फूल झड़ते हैं। भुँय कंपै = पृथ्वी काँपती है।

दुहा

आसाइच मनहर अडर, फौजदार तिण वार।
अरज करी नृप आगळी, सब गज थया तयार ॥१७३॥
गुण पति आग्या सांहणी, अस्व अरोहण कज्जि।
वाजि किया साजां विविध, सिधि रण करण समज्जि ॥१७४॥

छंद पद्धरी

भुज भिड़ज रूप सपतास भांति
कवि तेण लखण गुण वरण क्रांति।
सत उकति जेण पंडित प्रमांण
जुधि जैत मरम क्रम प्रथम जांण ॥१७५॥
वरदाय लखण रण सूर वीर
धारण प्रवीण अणधार धीर।
रस वाग कुसम भ्रम छांह रूप
अवतार अरक वाहण अनूप ॥१७६॥

१७३—आसाइच=चौहानों की एक शाखा। मनहर=एक नाम। फौजदार=फीलखाने का अध्यक्ष।

१७४—सांहणी०=तबेले के अध्यक्ष ने स्वामी की आज्ञा पाकर। अरोहण कज्जि=चढ़ने के लिये। वाजि=घोड़े। साजां=घोड़े का सामान। समज्जि=समाज, सभा।

१७५—भिड़ज=घोड़े। सपतास=सूर्य का घोड़ा। जैत०=विजय के असली तत्त्व के क्रम को पहले जानो।

१७६—वरदाय०=घोड़ों का वर्णन है। वरदाय लखण=वर देनेवाले जिनके लक्षण हैं। अणधार=किसी की परवा न करनेवाले। अवतार०=सूर्य के वाहन के अवतार-रूप।

थळ भांति गात निरतंत थाळि
भ्रम जात अतन तन रूप भाळि।
जिण सक्ति परखि लजि तड़िति जात
वृत गवन पवन मन ज्यों विख्यात ॥१७७॥
सिधि गुलिक वेग पर सक्ति पाव
धजराज मुकट खगराज धाव।
वसि लोह वदन रसि सरस वेख
लज्ज्या म्रजाद किरि महण लेख ॥१७८॥
मुख निकट प्रकासति नास मंज
क्रित उलट प्रगट किरि सुघट कंज।
सुंदर सरूप चखि परखि स्यांम
रस मंजण करि जुग सरति रांम ॥१७९॥
भुज है अति आयति अमळ भाळ
सुख विवध लखण पट्टिय विसाळ।

१७७—थळ० = रेतीले मैदान में नृत्य करे वैसे उनका शरीर थाली में नृत्य करता है। भ्रम० = उनके शरीर को देखकर कामदेव भ्रांत हो जाता है। जिण० = जिनकी सामर्थ्य को देखकर बिजली लज्जित होती है। जिनकी चलने की रीति पवन और मन की वृत्ति के समान प्रख्यात है।

१७८—सिद्ध लोग मुख में गुटिका लेकर वेगवान् होते हैं वैसी उनके पाँवों में शक्ति है। धजराज = घोड़ा। मुकट = शिरोमणि। खगराज = गरुड़। धाव = दौड़ना। वसि लोह वदन = मुख में लोहे की लगाम है। महण = समुद्र।

१७९—नास = नासिका। मंज = (मंजु) सुंदर। क्रित = (कृत) किया हुआ। सुघट = अच्छे आकारवाला। कंज = कमल। चखि = (चक्षु) नेत्र।

१८०—भुज = बाहु, अगले पैर। है = घोड़ों के। आयति = लम्बे। भाळ = ललाट। पट्टिय = रेखा। सतीखण = (तीक्ष्ण) तीखे। अणिय =

वृति कांन सतीखण अणिय वंक
किर कलम जुगल नभ करत अंक ॥१८०॥
अति कंध सवंकति याल अंग
सिव त्रिपुर मृतकि धनु व्याल संग।
सुभ घाट पिट्ठ उर तट विसाळ
सुख पीठ दीठ जग तिण सुढाळ ॥१८१॥
मृदु रूप सिखर थळ दुम विमोह
स्रंगार चमर किर पूंछ सोह।
निज तेज सरति चत्र जुवल नालि
भव कमल जंत्रि सूची कि भालि ॥१८२॥
अति सुघट पौड़ वजरंग ओप
अय पाक उलट चव जव अनोप।
सरबंग उदर उर वर सरूप
चत्रवदन रचे किर परम चूप ॥१८३॥

कानों का अग्रभाग। कलम० = दो कलमों से आकाश में अंक लिखता है।

१८१—याल = (अयाल) घोड़े के कंघे के बाल। सिव त्रिपुर० = मानों त्रिपुरासुर के वध के समय महादेव ने धनुष और सर्प को धारण किया है। टेढ़ी गर्दन धनुष, और अयाल के बाल सर्प। घाट = आकार। पिट्ठ = (पृष्ठ) पीठ। उर = छाती। सुढाळ = अच्छे आकारवाला।

१८२—थळ = स्थल। दुम = पुच्छ। चत्र नाळि = चारों पैरों की नलियाँ। जुवल = जूआ, जुवाड़े के सदृश। भव कमल = ब्रह्मा।

१८३—पौड़ = घोड़े के पैरों के नीचे का भाग। वजरंग ओप = वज्र के सदृश कठोर। अय = लोहा। जव = वेग। सरबंग = (सर्वांग) सब अंग। उदर = पेट। उर = छाती। वर = श्रेष्ठ। चत्र वदन = ब्रह्मा ने। परम चूप = बड़ी बुद्धिमानी से। चूप = मन की अभिलाषा।

दुहा

मणि वाहण साहण मुकटि, रीत सजव नव रूप।
किया साज महाराज कजि, ऐसा वाज अनूप ॥१८४॥

छप्पय

श्री गंगाजळ सरसि आदि मंजण ओपावै
पट अंगुछि घट परखि वेद भट वदन वचावै।
अगर धूप ऊखेवि जंत्र रक्षा गळि धारै
साजि करै सांहणी लूंण ऊपरि ऊतारै।
सुभ वार महूरत जोग दिन तत अभीच साधे तरां
जूजुआ सिरै बाभै जितां हुआ जीण सिर हैमरां ॥१८५॥

छंद त्रोटक

छुट सुंदर वीख सतेज घणा
तन ओप वधै गढ रूप तणा।
दुति वंकति तुंड लगाम दियां
कुळवंतिय घूंघट जांणि कियां ॥१८६॥

१८४—मणि वाहण = अश्वरत्न। साहण मुकटि = श्रेष्ठता के साधन। सजव = वेगवाले। साज = सामान। वाज = घोड़े।

१८५—सरसि = श्रेष्ठ। आदि = प्रथम। मंजण ओपावै = स्नान कराकर कांतियुक्त करते हैं। घट० = शरीर को अँगोछे से पोंछते हैं। वेद० = ब्राह्मण लोग मुख के आगे वेदमंत्र पढ़ते हैं। ऊखेवि = अगर का धूप किया जाता है। जंत्र० = रक्षा के वास्ते गले में यंत्र बाँधे गए हैं। सांहणी० = तबेले का दारोगा घोड़ों के ऊपर लौन भ्रमण करता है। अभीच = वीर, योधा। साधे = तैयार हुए। तरां = तय। जूजुआ = जुदे जुदे। बाभै जितां = जितने बँधे थे। हैमरां = घोड़ों के।

१८६—वीख = गति-विशेष; लंबी डग भरकर चलना। वंकति = वक्र। तुंड = मुख में।

सँग तेण विराजति याल सरी
रमणी अलकावलि सोभ हरी।
सुभ सोभत पंकत हीर सिरै
कृति नौ ससि हस्ति असोभ करै ।।१८७।।

लखि रूप चितांमन वारि लियां
कसि तंग उतंग सु त्यार कियां।
नग बंधण अग्र सुसौभ नई
थिर सेहरि दामणि जांणि थई ।।१८८।।

विध संजुत जीण जड़ाव वणै
भ्रम लोपि कवी तिण ओप भणै।
जग अर्ध प्रकासति अभ्र जुदै
उदयागिरि जांणिक सूर उदै ।।१८९।।

१८७—याल सरी० = अयाल (कंधे के केशों) पर सरी = गुथी हुई जाली ऐसी शोभा देती है, मानों स्त्री की अलकावली की शोभा छीनी गई। हीर० = सिर पर हीरों की पंक्ति ऐसी शोभा देती है, मानों हाथी के मस्तक पर के नवीन चंद्रमा को शोभा-रहित करती है।

१८८—चितांमन = चिंतामणि रत्न जो मनवांछित देता है। वारि लियां = मस्तक पर भ्रमण कराया गया। दृष्टिदोष-निवारणार्थ। उतंग = ऊंचा। सेहरि० = सेली (सेहरा) डाली गई है वह ऐसी दीखती है मानों बिजली चमक रही है।

१८९—जड़ाव० = रत्न-जटित जीन इस तरह का बना है कि मानों उदयाचल पर सूर्य उदय हुआ है। जीन पीठ पर आधी दूर में रहता है जिससे कवि कहता है कि बादल आड़ा आ जाने पर सूर्य आधी दूर में प्रकाश करता है वैसे यह भी प्रकाशता है।

द्रुम आखि जनाखि जड़ाव दिपै
छबि तेण लखै अनि ओप छिपै ।
वणि हीर जगामगि अष्टवळी
महले किर दीपक माळ मिळी ॥१९०॥
कृत सोभति रेसम लूंब करै
धुरवा किर फूलिय संझ धरै ।
अति उग्र तुरंगम अंग बियै
क्रम सोभत आवत डोर कियै ॥१९१॥
अति रूप प्रभा जव तेज इसा
जिण रीत रजै नृप चीत जिसा ।

दुहा

माणिक रतन अमोल मणि, मीठ न क्यों तिण मग्गि ।
रूप अनूप तुरंग रै, लोक तिकां मन लग्गि ॥१९२॥
एक फिरत उचकै उरध, मति जग विरध विमोह ।
नटपट्टी दीखै निपट, घटी पलट्टी सोह ॥१९३॥

१९०—अष्टवळी = आठों दिशाओं में ।

१९१—रेसम लूंब० = रेशम की लूम ऐसी शोभा देती है मानों फूली हुई अर्थात् रक्तवर्ण संध्या के समय में कुहरा छाया है । बियै = दूसरे । डोर कियै = घोड़े के गले में बँधी हुई डोरी को हाथ में लिए । जव = वेग । तेज = तेजी । रजै = प्रसन्न होवै । चींत = चित्त ।

१९२—मीठ = बराबरी, समानता ।

१९३—उचकै = उचकता है । विरध = विरुद्ध । नटपट्टी = नट के बट्टे के समान । निपट = अत्यंत । घटी० = घड़ी घड़ी में पलटता है ।

एक नमायां तुंड असि, उर लगि चिबुक अनोप।
वण कांकणस जवार विधि, पांन कलंगी ओप ॥१९४॥
एक फिरत आतुर अमित, विद्युत सम चित वाग।
उचकै पग पूगै अवनि, जांणिक लग्गै दाग ॥१९५॥
एक अचंभ्रम परखणै, अति छुति सकति अजेव।
ज्यौं मनि आवै सांमिकै, पाय दिखावै वेव ॥१९६॥
उलट सुलट मिति वट झपट, दुघट तिघट चढ पाइ।
परख विकट अस गति लगै, नट नटवर उर लाइ ॥१९७॥
एक वधै मन वेग सूं, अति धावत केकांण।
चक्र सुदरसण गुरुड तिण, करत वखांण प्रमांण ॥१९८॥

छप्पय

खुरासाण उतपन्न सोझ पेराक विसाया
कर दरियावां पंथ जिके नावां सिर आया।

१९४—तुंड = मुँह, मुख। उर = छाती से। चिबुक = ठोड़ी। जवार = ज्वार, धान्यविशेष।

१९५—आतुर = उतावला। विद्युत सम = बिजली के समान। उचकै० = पृथ्वी पर पैर टिकते ही उचकता है। उसे पृथ्वी (दाग) अग्नि के समान लगती है।

१९६—अचंभ्रम = आश्चर्य। छुति = प्रहार। अजेव = अजेय शक्ति-वाला। मनि = मन में। पाय = पैरों का। वेव = वेग।

१९७—मिति वट झपट = बट्टे की तरह झपटता है। दुघट तिघट = दो वार, तीन वार। नट नटवर = श्रीकृष्ण, विष्णु भगवान्। उर = मन में। लाइ = लेकर।

१९८—वधै० = वेग में मन से बढ़ता है। धावत = दौड़ता हुआ। केकांण = घोड़ा।

१९९—घोड़ों की उत्पत्ति के देश, जिनसे घोड़ों की वही जाति कहलाई। सोझ = तलाश करके। विसाया = खरीद किए।

के आरव ऊधरा हेक धजराज हरेबी
आरुहतां उत्तंग अंग जुगि लगै रकेबी।
परचंड गात कच्छिय प्रगट रेवत थट्ट विलाति रा
नव साजि किया हाजर नरां भिड़ज नवल्ली भांति रा ॥१९९॥

दुहा

रंग तुरंगां जूजुवा, व्रत मुख पंच वखांण।
जेता रूप कबूतरां, पता लीजै जांण ॥२००॥
पृथुक तुरी वळ वळ चपळ, द्ळ हळवळ दीवांण।
सरद् निसा किर खीर सर, वेळां सरस वखांण ॥२०१॥
हुऔ नगारौ दूसरौ, भेर भणंके सद्द।
सब आतुर जण द्ळ सकळ, करण मयंदा लद्द ॥२०२॥

छंद भुजंगी

महा रोस रोसा इळा ताव मांनै
वडा जूंग त्यारी किया सारवांनै।

ऊधरा=ऊंचे, श्रेष्ठ। धजराज=घोड़ा। रेवत=घोड़ा। भिड़ज=घोड़ा। नवल्ली भांति रा=नई तरह के।

२००—जूजुवा=जुदा जुदा। मुख=मुख्य।

२०१—पृथुक०=घोड़ों के बछेड़ों का चपल वलवल शब्द। दळ०=दीवानखाने में सेना की चलाचली। सरद०=शरद् ऋतु की रात्रि ऐसी प्रकाशमान है कि मानों क्षीर-समुद्र की सुंदर लहरें आ रही हैं।

२०२—भेर=(भेरी) एक प्रकार का वाद्य। भणंके=बजने लगी। मयंदा=ऊंटों पर लदने के लिये।

२०३—महा रोस रोसा=बड़े रोषवाले। ताव मानै=रोब मानती है, डरती है। जूंग=ऊंट। सारवांनै=तैयारी करनेवालों ने।

जिके द्रेखि रत्ता वहै भेखि भूठा
रहै रोस रै जोस अणदोस रूठा ॥२०३॥
जिके चीत सैंधा न कू प्रीत जांणै
नितू वंक गाढा रहै संक नांणै।
नकेलां न के घात गोळां तुखत्तां
रसै बाधियै खोलिया काय रत्तां ॥२०४॥
तनै दाखवै जोसधाळी तरक्कां
करै दांत आलावता भासळक्कां।
जमै गूगळा घाघ दोनूं जबाड़ै
कवी जांणि झागू लूंणी कराडै ॥२०५॥
वदन्नं वणै कंध वांकै विनांणै
जळै गारडू छेड़ियौ नाग जांणै।
कितां कंध धारां झरै मद्द काळा
वणै जांणि वारिद्द भाद्रव्व वाळा ॥२०६॥

जिके = जो। द्रेखि रत्ता = द्वेष में अनुरक्त। भेखि भूठा = स्वरूप से डरावने। अणदोस रूठा = बिना अपराध क्रोध करनेवाले।

२०४—चीत सैंधा = मन से परिचय रखनेवाले। न कू० = परंतु प्रीति को कुछ नहीं जानते। नितू० = नित्य अत्यंत टेढ़े। नांणै = (न आंणै) नहीं लाते। नकेलां = ऊँट की नाक में डालने की कीली। न के० = जो न तो नकेलों से और न गोलों की घारा से रुकते हैं। रसै = रस्सों से।

२०५—तनै = शरीर से। दाखवै = दिखलाते हैं। तरक्कां = अद्भुत लील़ा। जमै० = जिनके मुख के दोनों गलाफों के धूसर वर्ण फेन जम रहे हैं। कवी० = कवि जानता है कि मानों लूनी नदी के किनारों पर फेन आए हैं।

२०६—मुख और कंधा बड़े वक्र आकारवाले हैं। जळै० = मानों सँपेरे ने कुपित सर्प को छेड़ा है। कितां० = जिनके कंधों पर काले रंग का मद झर रहा है। वह ऐसा प्रतीत होता है कि मानों भाद्रपद मास के काले बादल बने हैं।

रुडै कोस ऊडंगळे जोस राता
घटा जांणि आसाढ गाजै निघाता।
मुखै बांधि खोलै किता रोस मत्ता
अनेके व्रने जोस दाखै उमंत्ता ॥२०७॥
पटाळा हठाळा महागात पूरां
सुरंगा सगाहा सकोपा सनूरां।
सलीतां कन्है झौंकवै प्रांण साहै
लियां हाथ लट्ठी समा सेल ठाहै ॥२०८॥
अड़ै नीठ बैसै वळै बैसि ऊठै
प्रबोधै कितां बाजुवां अग्र पूठै।
बडै कोप बैसारिजै लोप चीखा
सदा भारतां सीख तोही असीखा ॥२०९॥
निठानिठ्ठ बैसाड़ झाड़ै नुखत्तां
खरा भारिया भार पूतारि खित्तां।

२०७—मुखै० = कितने एक ऊँटों का मुख क्रोध से मस्त होने पर बाँध दिया जाता है और खिलाने-पिलाने के समय खोल दिया जाता है। अनेके व्रने = अनेक रंगो के। दाखै = दिखलाते हैं।

२०८—पटाळा = कानों के नीचे लंबे केसवाले। हठाळा = हठीले। महागात पूरां = शरीर के पूरे; बड़े शरीरवाले। सलीतां = सामान डालने का बहुत बड़ा थैला (बोरा)। झौंकवै = मोहरी को झटका देकर ऊँट को बिठाते हैं। प्रांण साहै = बल को धारण करते है। सेल = भाला।

२०९—अड़ै = रुक जाता है। नीठ बैसै = मुश्किल से बैठता है। वळै = फिर। बैसि = बैठकर। बैसारिजै = बैठाया जाता है। लोप चीखा = तीक्ष्ण शब्द को बंद करके। भारतां = युद्धों में।

२१०—भारिया = भारबरदार। पूतारि = तसल्ली देकर। खित्तां =

दिया भारिसा बोझ दावै विदावै
कमालां तणी पीठ डेरा कसावै ॥२१०॥

गाहा चौसर

ऊंबां लूंबां हूंत अनैसी, तर भड़ वळी वहीरां तैसी।
ओपै पंथ कतारां ऐसी, जळ धारां नदि सांवण जैसी ॥२११॥

छंद बेअक्खरी

पँथ गुजरात प्रभाति पहल्लै, हरवल तुंग लड़ंगां हल्लै।
के विसतार कतार कमालां, वेळा जांणि कुलंगां वाळां ॥२१२॥
वहतां पंथ नगारा वागै, आराबा चालै दळ आगै।
तोप भयंकर जोर जतन्नां, तिरजक थया कि कोहर तन्नां ॥२१३॥
वहै दराजमुखी लखवट्टां, फबि छबि काळ सकति मुखफट्टां।
रुहिर अरचि मुख श्रमण सँदूरे, प्रगट धूप तट डंबर पूरे ॥२१४॥

पृथ्वी पर। दावै विदावै = ज्यों-त्यों। कमालां तणी = ऊँटों की।

२११—ऊंबां लूंबां = फूंदे जो ऊँटों के बाजू में लटकाए जाते हैं। अनैसी = (अनीदृश) अद्भुत। तर = ऊँट की नाट में डाले हुए छल्लों में बँधी हुई डोरी जिससे ऊँट काबू में रहता है। वळी = फिर। वहीरां = यात्रा।

२१२—हरवल = आगे। तुंग = ऊँचा। लड़ंगां = बहुत लंबी श्रेणी। कमालां = ऊँटों की। कुलंगां वाळां = कुरज नामक पक्षी की पंक्ति।

२१३—वागै = बजते हैं। आराबा = छोटी तोपें। तिरजक = (तिर्यक्) पशु-पक्षी। कोहर तन्नां = कूओं और गुफाओं में।

२१४—दराजमुखी = बड़े मुखवाली। लखवट्टां = लाखों। मुखफट्टा = मुँह फाड़ी हुई। रुहिर = रुधिर से। अरचि = पूजकर। श्रमण = कान पर। सँदूरे = सिंदूर लगाया गया है।

सकति मंत्र मग पग पग साधे, धारक बावन वीर अराधे ।
अज भैंसा बळि कजि आंणीजै, देवी मुख आमुख भख दीजै ॥२१५॥
सरकै के गज धकै सकत्ती, रँज धूँधळि कोळाहळ रत्ती ।
अति बळ वृखभे जूट अपारां, लंगर प्रबळ कळळ ललकारां ॥२१६॥
जिण दिस चलै हुई वसि जांणै, अकसी प्रळैकरण अहिनांणै ।
काळमुखी अरि भ्रमण अकारी, नाळि प्रबळ गुण न्यारी न्यारी ॥२१७॥

अथ नाम

छप्पय

हणूंहाक चामुंड फतैलश्कर काळिका
सिभुवांण सेरदां कड़कवीजळी किलक्का ।
जितैजंग छांछळी और मांसळी महाबळ
विजैमुलक मैदांन अणी नागणी अतुळ बळ ।
भयकारमुखी अरिदळभखी दुरगा उरग्गहदांमणी
किलकिला असह धांणीकरण ऊलट्टी पहलै अणी ॥२१८॥

२१५—साधे = सिद्ध किया गया । अज = बकरे । आंणीजै = लाए जाते हैं । आमुख = (आमिष) मांस ।

२१६—सरकै = धीरे धीरे स्थानांतर पर जाती है । गज धकै = हाथी के धक्के से । सकत्ती = तोप । रत्ती = अनुरागवाली । वृषभे = (वृषभ) बैल । जूट = युक्त किए गए, जोड़े गए । लंगर = पंक्ति, श्रेणी । कळळ = शब्द । ललकारा = हाँकने का उत्तेजक शब्द ।

२१७—वसि = बस्ती, आबादी । अकसी = एकसी । प्रळैकरण अहिनांणै = प्रलय करने के सदृश । अहिनांण = चिह्न । काळमुखी = मृत्यु के से मुखवाली, मृत्यु के सदृश । अकारी = बहुत तेज । नाळि = तोप, बंदूक ।

२१८—हणूंहाक = तोपों के नाम हैं । हनुमान् के समान शब्दवाली । काळिका = कालिका । अणी = सेनामुख ।

दुहा

नाम महाबळ नाळियां, रव मचि गुज्जर राह।
एकेकी पूठै अवर, सौ सौ तोप सगाह ॥२१९॥
है गै दळ त्यारी हुवा, जेज निवारी वग्ग।
भूप सधीरां भूप दरि, चली वहीरां मग्ग ॥२२०॥
तिण वेळा अजमाल तण, श्री अभमाल नरिंद।
तन सुंदर पहरे वसन, मदन दुड़िंद कि इंद ॥२२१॥

छप्पय

वागै करे बणाव ओपि सुंदर पट अंबर
गौखंबर ऊधरां पाघ सोभाग कि मंदर।
मुकर परखि मुख तांम रूप किर काम पलट्टै
अंगराग आरंभ परम सौरंभ प्रगट्टै।
तन अमित मौल्य मंडित रतन आभूखण गुण ऊधरै
श्रृंगार साजि मंगे ससत्र महाराज मंडोवरै ॥२२२॥

२१९—नाळियां = तोपें, बदूकें। रव = शब्द। राह = मार्ग। पूठै = पीछे। अवर = दूसरी।

२२०—है = (हय) घोड़े। गै = (गज) हाथी। जेज = देरी। वग्ग = बजी, शब्द करने लगी।

२२१—तण = पुत्र। दुड़िंद = सूर्य। इंद = चंद्रमा, अथवा इंद्र।

२२२—वागै = पोशाक। पट = रेशमी वस्त्र। अंबर = सूती वस्त्र। गौखंबर = जालीदार कपड़े। ऊधरां = उच्च कक्षा के। पाघ = पगड़ी। मंदर = मंदराचल पर्वत। मुकर = मुख देखने का काच, आरसी। तांम = उसमें। अंगराग = चंदन आदि। मंगे = मांगे। ससत्र = शस्त्र।

जिकां पार जोवतां वार लग्गै वरणंतां
तड़ित सार अवतार अणी गुण धार अनंतां।
वेदांणी तन मंजि रंजि आभीच लगन्ने
घड़े सघर पुळ सज्जि धूप डंबर वासन्ने।
जमदाढ कूंत वंकी सुजड़ आदि अभूत छत्रीस अनि
महाराज वेग मंगाविया आदि तेग समहर अगनि ॥२२३॥

कड़ि बंधे जमदाढ पाठ जम मंत्र पढंतां
खग वांमै बांधियौ थई जोगणि उनमत्तां।
ढाल बेल गळ धारि सेल तोलियौ करग्गां
करि चंडी जैकार हुई असवार विहंगां।
वेताल वीर आगे वधै चालै भूचर खेचरा
विरदैत पेखि वंदण भणै जैत जैत जोधाहरा ॥२२४॥

२२३—जिकां० = जिनका पार देखते और वर्णन करते देरी लगती है, वे बिजली का सारांश लेकर जो बने हैं। जिनकी धार और अनी अनंत गुणवाली है। वेदांणी = लोहार ने। तन = शरीर (शस्त्र का)। मंजि = माँजकर, साफ करके। रंजि = मल को। आभीच लगन्ने = वीर पुरुषों के पास लगाए हैं, सुभटों को दिए हैं। घड़े = बनाए, रचना की है। सघर पुळ = अच्छे समय में, अच्छे मुहूर्त में। धूप० = धूप और गुलाल अबीर आदि से सुवासित किए हैं। शस्त्रों के नाम—जमदाढ = कटारी। कूंत = भाला। वंकी सुजड़ = टेढ़ी तलवार। अभूत = (अद्भुत) अनोखे। अनि = अन्य, और। तेग = तलवार। समहर = युद्ध में।

२२४—कड़ि = (कटि) कमर में। जमदाढ = कटारी। खग = तलवार। करग्गां = हाथों से। विहंगां = पक्षियों पर। विरदैत = विरुद (जस) करनेवाले, कवि। वंदण = नमस्कार। भणै = बोलते हैं। जैत जैत = जय जय शब्द। जोधाहरा = जोधा राव के वंशज।

करण तुच्छ केवियां अभै कर मुंछ उभारै
आरुहिवा नरइंद पाव धारै पाधारै।
वीख सगह अप्पतैं सोभ विग्रह कवि संभरि
क्रिसन डांणि हल्लियौ जांण बाणासुर ऊपरि।
प्रति भड़ां हुए हड़वड़ प्रगड़ वणे तड़भ्भड़ बाहणां
सुभ खमा खमा जय सद्द रौ कोळाहळ वंदी जणां ॥२२५॥

अभैसाह महाराज रीझ गजराज अरोहै
ऐरापति ऊपरा जांणि सुरपत्ती सोहै।
लग्गौ सायत चाव घाव वग्गौ नीसांणां
किर अधीर सद्दियौ खीर सामंद मथांणां।
परसियां अनळ चळ द्ळ सुपरि वळवळ सुचळ हळोवळां
चक्रवति सतरि सिर चल्लियौ जांणि महण छिळियौ जळां ॥२२६॥

२२५—केवियां = शत्रुओं को। अभै = अभयसिंहजी ने। मुंछ उभारै = मूछ को ऊँचा किया, बट दिया। आरुहिवा = सवार होने के लिये। सोभ = शोभा। डांणि = चांग। प्रगड़ = (प्रकट) बहुत। तड़भ्भड़ = उतावल। बाहणां = घोड़े आदि। वंदीजणां = स्तुतिपाठक।

२२६—चाव = प्रबल इच्छा। घाव = डंका, चोट। वग्गौ = बजा। नीसांणां = नक्कारों पर। सद्दियौ = शब्द किया, गरजा। मथांणां = मथन होने पर। परसियां० = अग्नि, (चळदळ) पीपल वृक्ष और सुपारी का स्पर्श करके। यात्रा के समय इनका स्पर्श करना मांगलिक माना जाता है। वळवळ = सेना में ही हलचल हुई। सतरि सिर = गुजरात पर। महण = समुद्र। छिळियौ = वेला से आगे बढ़ा।

पांनां मुख वाजित्र हिले वांनां वैरक्कां
मेघ रंग मातंग वीढ ऊढंग कटक्कां।
पली जेझ सादळां हिली फौजां घमसांणां
व्योम रजी वित्थरी धमस वज्जो केकांणां।
खह वेध किरण सेलां खिवणि गयण भांण गुंधल ग्रही
असवार तुरां गज ऊधरां नरां पार आवै नही ॥२२७॥

दुहा

सिर गुज्जर करवा समर, अभौ हुवौ असवार।
किर ध्रू ऊपरि गुज्हिकां, समड़े करण सिंघार ॥२२८॥

छंद भुजंगी

चली फौज लाखां सुभट्टां सचेळां
चडै वाइ ज्यौं चाइ सामंद वेळां।
तुरंगां सवेगां नरां जोस तैसौ
जगै नाग रूठै प्रळै आगि जैसौ ॥२२९॥

२२७—पांना मुख = मुख में पान चबाते हैं। वाजित्र = बाजे बज रहे हैं। हिले = पताकाएँ हिल रही हैं। मेघ० = बादल के रंग के हाथी। वीढ = युद्ध में। ऊढंग = बेढंगे, ऊँचे शरीरवाले। कटक्कां = सेना में। पली जेझ = देरी रुकी अर्थात् ताकीद हुई। सादळा = वीर शब्द करनेवाले। घमसांणां = युद्ध में। व्योम० = आकाश में रज फैली। धमस = वेग का घोर शब्द। केकांणां = घोड़ों की। खह० = भालों की किरण की चमक ने आकाश को बेध लिया। गयण० = आकाश में सूर्य और ग्रह धुँधले हो गए। तुरां = घोड़ों की। ऊधरां = उच्च कोटि के, श्रेष्ठ।

२२८—ध्रू० = ध्रुव राजा के ऊपर यक्ष लोग संहार करने को चले।

२२९—सचेळां = समर्थ। चडै० = जैसे वायु से समुद्र की लहरें मनचाही चढ़ें। जगै० = जैसा प्रलयकाल में शेष नाग के कुपित होने पर अग्नि प्रज्वलित हो।

वहै लास छूटां तुरां नास वाजै
वडै मेघ ज्यौं सोक धारा विराजै।
वणै सिंधुरां कुंडळी सुंडवाळी
करै चाळ जांणै फणां नाग काळी ॥२३०॥
वधै लूर सापूर फौजां वखांणै
जळानिद्धि उच्छेदियौ बंध जांणै।
महाराज सेन्या वहै राज मग्गे
वधे बाजुवां लोल हिल्लोळ वग्गे ॥२३१॥
झिलै संप कोटिंत तूटंत झाड़ं
पड़ै ऊवटै पंथ माथै पहाड़ं।
उभै बाजुवां बाज पै रैण ऊठै
प्रथी जीप चालै किता अग्र पूठै ॥२३२॥
रजी वीच गै ऊधरां गात राजै
वडी वावळै वादळां ज्यौं विराजै।

२३०—वहै लास० = नाचते हुए घोड़ों की नाक ऐसा शब्द करती है मानों जोर से बरसते हुए बादल का घोर शब्द सुनाई दे। सिंधुरा = हाथियों की। चाळ करै = खेल करता है। नाग काळीय = कालि सर्प।

२३१—वधै लूर० = जैसे छोटे छोटे बादलों का समूह चलता है वैसे फौजें वेग के साथ चल रही हैं। सापूर = वेग-सहित, जल्दी। जळानिद्धि = समुद्र। उच्छेदियौ बंध = बाँध (मर्यादा) को तोड़कर। लोल = चंचल।

२३२—झिलै संप = बिजली चमकती हो जैसे। कोटिंत = करोड़ों। तूटंत झाड़ं = छोटे छोटे वृक्ष टूटते हैं। ऊवटै = उलटे मार्ग। माथै पहाड़ = पर्वत के ऊपर। बाज = घोड़ों के। पै = पैरों की। रैण = रज, धूलि। प्रथी जीप = पृथ्वी को जीतनेवाले। पूठै = पीछे।

२३३—रजी वीच० = धूलि के मध्य में हाथियों के ऊँचे शरीर ऐसी शोभा देते हैं, मानों प्रचंड पवन के बीच बादल शोभा देते हैं।

पवंगां कळा मित्र जांणै पवन्नां
वदन्नै झरै झाग सिंदूर व्रन्नां ॥२३३॥
धरा मोर खैंगां खुरां जोर धूजै
मरै वग्ग विच्छोहिया मृग्ग मूजै।
हमल्लां असां सेस चा सीस हल्लै
दिसा अग्र बाजू सकाजू दहल्लै ॥२३४॥
दिसापाळ भूपाळ त्यां छूट द्रढ्ढं
गिणैं ओट सेवा तणी कोट गढ्ढं।
गजै मेघ ज्यौं वेग नीसांण गाजै
भयां आस बेज्यास मैवास भाजै ॥२३५॥
चली छात्र मोटां दिसी वात चावी
अरागी तिकां प्रांणि लागी अभावी।
वियौ माळदे हालियौ सेन बंधे
सुणी इंदु (दुंद) ची वाणि सामंद संधे ॥२३६॥

पवंगां० = घोड़ों की कला ऐसी है कि मानो वे पवन के मित्र हैं, अर्थात् पवन के से वेगवाले।

२३४—धरा मोर = पृथ्वी की पीठ। खैंगां = घोड़ों के। वग्ग विच्छोहिया = बाग (लगाम) रहित। मृग्ग मूजै = हरिण घबराते हैं। हमल्लां असां = घोड़ों के तेज दौड़ने से। दहल्लै = भयभीत होती है।

२३५—दिसापाळ० = दिक्पाल इंद्र आदि और राजा लोग मजबूती को त्यागकर कोट और गढ़ों का आश्रय लेते हैं। गजै० = हाथी और नकारे मेघ के समान गाजते हैं। भयां = भय के मारे। आस बेज्यास = निराश होकर। मैवास = लुटेरे लोग भागते हैं।

२३६— चावी = प्रसिद्ध। अरागी = शत्रु। अभावी = अहित, बुरी। वियौ = दूसरा। दुंद = युद्ध। संधे = किनारे।

दुहा

जोधपुरो जोधांण सूं, अभौ हुवौ असवार।
लियां गिरद्दां आसिरा, अरि धूजिया अपार ॥२३७॥
सतरै समत छयासियै, चैत दसमि सित पक्खि।
गुज्जर सिर दूजौ गजन, आसहियौ अमरक्खि ॥२३८॥
कूच विहांणै ऊगणै, अरि घर सोच अथाह।
घास उजाड़ां नीमड़ै, पड़ै पहाड़ां राह ॥२३९॥
आयौ भाद्राजण अभौ, पायौ प्रजा निवास।
मिळिया जोध महाबळी, चळचळिया मेवास ॥२४०॥
नरपत्ती दीठौ निजरि, माल वियै गढमाल।
प्रामै सुख वसियै प्रजा, सत्रां हियै नटसाल ॥२४१॥
ताम विचारै अजन तण, करिवा जतन जिहांन।
अचळ बुलायौ नाथ सुत, हाथां पाथ समान ॥२४२॥
अचळ तणै जोड़ै अकळ, पुत्र पराक्रमवंत।
वखतौ दीठौ वीर वर, मुरधर कंत महंत ॥२४३॥

२३७—गिरद्दां आसिरा=पर्वतों का आश्रय लेता हुआ।

२३८—आसहियौ = आक्रमण किया, सवार हुआ। अमरक्खि = क्रोध करके।

२३९—विहांणै ऊगणै = दिन निकलते ही। उजाड़ां = निर्जन स्थानों में। नीमड़ै=नष्ट होता है।

२४०—भाद्राजण = एक गाँव का नाम। चळचळिया = विचलित हुए। मेवास = लुटेरे।

२४१—गढमाल = मालगढ़ नामक ग्राम। नटसाल = शूल, शल्य, दुःख।

२४२—अजन तण = अजीतसिंहजी का पुत्र, अभयसिंह। अचळ = अचलसिंह को। हाथां० = हाथों के बल में अर्जुन के सदृश।

२४३—जोड़ै = सदृश। अकळ = वीर, पूरा। मुरधर कंत = मारवाड़ के राजा ने। महंत = बड़ा।

बेटो बाप महाबळी, परखि अभै धरि प्यार ।
गिणि चांपा कजि मालगढ, भुज दीना भर भार ।।२४४।।
प्रगट भळावै नरपती, मांनहरां गढ माल ।
सत्रां अभायौ सोन गिर, आयौ सुत अजमाल ।।२४५।।
गजनहरै इळ माल गढ, अभै वसायौ एम ।
सभ्भा पड़ै मेवासियां, प्रजा चढै सुख प्रेम ।।२४६।।

छप्पय

मिटे चोर मारग्ग जोर प्रगटे व्यापारां
वधि वसती रन वने वेळ वरती ऊदारां ।
वडे क्रोध विसतार रींछ सांबर घर रौणा
जठै सिंघ सद्दता तठै गरजंत बिलौणा ।
भोमिया डंड पेसां भरै मैंणे करसण मांडिया
गढपती पेसायौ मालगढ विढ अबदाळ विहंडिया ।।२४७।।

इति श्री राजरूपक में मालगढ वसायौ श्रीजी प्रजारी सहाय
कीवी सो विगत द्वाचत्वारिंश प्रकास ।। ४२ ।।

२४४—चापा=चापावत अचलसिंह और उसके पुत्र बख्तसिंह को मालगढ़ में रखा । भुज०=उनकी भुजा पर भार रखकर ।

२४५—सत्रां अभायौ=शत्रुओं को अप्रिय । सोन गिर=जालोर नगर ।

२४६—गजन हरै=गजसिंह के वंशज ने । सभ्भा=दंड ।

२४७—रन वने=(अरण्य) जंगलों और वनों में । वेळ=समय । ऊदारां=उत्तम पुरुषों का । वडे०=जहाँ बड़े क्रोधवाले रीछ और बारहसींगों का घर था वहाँ रम्य भूमि हो गई । सद्दता=बोलते थे । बिलौणा=दही का मंथन । पेसां=पेशकसी । विढ=युद्ध करके । अबदाळ=शत्रुओं को । विहंडिया=मारा ।

दुहा

गजनहरौ जाळोर गढ, आयौ खड़ि अभसाह।
धरापती अरि धूजिया, दुसह वरत्ती दाह ॥ १ ॥
रिधू सिवांणै रक्खियौ, भंडारी बछराज।
निरख निरम्मळ चित्त नित, रीत परखि महाराज ॥ २ ॥
लालसिंघ चुतरेस रौ, राव छ्ळां रखपाळ।
धरणि सिवांणै राखियौ, प्रजा करण प्रतिपाळ ॥ ३ ॥
महि आडौ मेवासियां, द्दढ बोलै ऊदल्ल।
थिर मांकलसर थापियौ, महाराजा अभमल्ल ॥ ४ ॥
जाळंधर जोधापुरौ, नृप रहियौ सुभ नीत।
सिर आयौ सत्यासियौ, ग्रीखम थई वितीत ॥ ५ ॥
भूप नमाया भोमिया, आया पाए ओर।
रहवाड़ै लाखौ रहै, तिकौ न छोडै तौर ॥ ६ ॥

१—गजनहरौ = गजसिह का वशज। खड़ि = घोड़े को चलाकर। धरापती = राजा।

२—रिधू = द्दढ़, मजबूत।

३—छ्ळां = युद्धों में।

४—आडौ = रोकनेवाला। मांकलसर = एक ग्राम का नाम।

५—जाळंधर = जालोर में। जोधापुरौ = जोधपुर का राजा। सत्यासियौ = वि० सं० १७८७।

६—पाए = चरणों में। रहवाड़ै = एक ग्राम का नाम। लाखौ = देवड़ा राजपूत लाखा।

ऊपर तिण चडियौ अभौ, राजा घाट बराड़ ।
कियौ कटक्कां आवरण, घेरि लियौ पाहाड़ ॥ ७ ॥
सूरजमल पहलै अणी, चांपावत कळिचाळ ।
दारुण लग्गौ देवड़ां, वग्गौ जांणि बळाळ ॥ ८ ॥
भागा भागा उच्चरै, करि वावरै खडग्ग ।
खगवाहौ मिळियौ खळां, मिळियौ रण खण पग्ग ॥ ९ ॥
सूरजमल अड़ियौ समर, पड़ियौ भड़ां किमाण ।
गा दहवट्टां देवड़ा, छोडे झाड़ पहाड़ ॥१०॥
अभै दळां हलकारिया, कळ आगळा लँकाळ ।
चड़िया सायक वेग ज्यों, पायक ऊपरि माल ॥११॥
सोझ गिरां अरि कढ्ढिया, तर वढिया धर तेम ।
ऊघाड़ौ लागै अनड़, जोगी नागै जेम ॥१२॥

७—घाट बराड़ = विकट स्वरूप से । आवरण = घेरा लगाया ।

८—पहलै अणी = सेना के अग्र भाग पर । कळिचाळ = युद्ध में पराक्रम करनेवाला । दारुण = भयंकर ।

९—उच्चरै = कहते हैं । वावरै = काम में लाते हैं । रण खण = युद्ध के समय । पग्ग = पगा हुआ, अनुरक्त ।

१०—अड़ियौ = युद्ध में जुटा । पड़ियौ = आक्रमण किया । भड़ां किमाण = महावीर । गा = गए । दहवट्टा = दशों मार्ग, अर्थात् भाग गए । झाड़ = झाड़ी, अथवा वृक्षों को ।

११—हलकारिया = प्रोत्साहित करके चलाया । कळ आगळा = युद्ध में अग्रणी । लँकाळ = वीर । सायक वेग = तीर वेग से चलता है वैसे वेग के साथ । पायक = पैदल होकर । माल = मालगढ़ ।

१२—सोझ = ढूँढकर । तर० = वैसे ही पृथ्वी के वृक्ष कटवा दिए । ऊघाड़ौ = नंगा । अनड़ = पहाड़, पर्वत ।

देसां अंतर देवड़ो, हालि गयौ ले हार।
राजा थांणौ राखनैं, अभौ हुवौ असवार ॥१३॥
गढ जाळंधर राखियौ, भंडारी मनरूप।
अनमी त्यां नामण इळा, भोमि रहावण भूप ॥१४॥
सोच पड़े सीरोहियां, गिर धूजिया अढार।
बळ आबुवां निवारियौ, उर धारियौ विचार ॥१५॥
मारंतां पौसाळियौ, गह तज राव गरीठ।
घात निवारण मेलिया, करिवा वात वसीठ ॥१६॥
छत्रपति आगै छावड़ौ, मयारांम मतिवंत।
गुज्जर घर चावौ गढां, मांनै भूप महंत ॥१७॥
सांमिधरम्मी सांम तण, सुणि पण गुणे सपूत।
मिळिया ते आथौमणा, राव तणा रजपूत ॥१८॥
मयारांम महाराज सूं, कीधी अरज सकाज।
पेस अछांनो परम हित, सो मांनी महाराज ॥१९॥

१३—ले हार = पराजय पाकर।

१४—अनमी = नहीं नमनेवाला। नामण इळा = पृथ्वी को नमानेवाला।

१५—सीरोहियां = सिरोही नगर के निवासियों को। आबुवां = आबू पहाड़ के रहनेवाले।

१६—मारंतां = नष्ट करते, लूटते। पौसाळियौ = एक ग्राम का नाम (सिरोही राज्य में)। गह = गर्व। गरीठ = (गरिष्ठ) अत्यंत अधिक। वसीठ = संधि के लिये दूत-कर्म।

१७—छावड़ौ = चावड़ा वंश का राजपूत। चावौ = प्रसिद्ध। महंत = बड़ा।

१८—सांम तण = स्वामी का। पण = प्रतिज्ञा। गुणे = गुणों में। ते = वे। आथौमणा = प्रयोजनवाले।

१९—पेस = अर्ज। अछांनी = प्रकट।

मुखि पुत्री राव मांन री, सील निधांन सकज्ज।
वड हित श्रीफळ वंदियौ, अधपति मांन अरज्ज ॥२०॥
आठ तुरंगम ऊधरा, च्यार गयंदा मोल।
साथै चौकी सेव में, अभँग अजेव अडोल ॥२१॥

छंद बेताळ

पख कृष्ण भाद्रव मास प्रगटे महा सुभ निस असटमी
परणावियौ नवकोट चौ पति जतन हित अरबुद जमी।
चित हूंत मेटी राय चिंता वधे चाय वधामणा
दुरदीह चा दुख गया दुरे सँपजि दीह सुहामणा ॥२२॥
अति हरख उच्छव देवड़ां उर सेव सिव फळ संपजै
महाराज दुलहर निरख सुख मुख अघट मंगळ ऊपजै।
देवड़ै नारणदास दरसण कियौ कमधां राव रौ
उमराव अरबुद तणा आया चरस रस वधि चाव रौ ॥२३॥

२०—सकज = श्रेष्ठ। हित = प्यार से। श्रीफळ = नारियल। संबंध होता है तब कन्या के पिता की ओर से वर के पिता के पास सुवर्ण से मढ़ा हुआ नारियल भेजा जाता है। वदियौ = प्रणाम करके स्वीकृत किया। मांन = स्वीकार करके।

२१—ऊधरा = श्रेष्ठ। चौकी = पहरेदारों की गारद। अजेव = अजेय।

२२—चौ = का। जतन हित = रक्षा के लिये। चाय = स्पृहा, इच्छा। वधामणा = बधाई का कृत्य। दुरदीह = बुरे दिनों का। सँपजि = संपन्न होना। दीह = दिन। सुहामणा = अच्छे।

२३—सेव० = महादेव की सेवा का फल। दुलहर = दुलहा, वर। अघट = अपूर्व। कमंधा राव रौ = राठोडों के राजा का। चरस = आनंद का।

अगरचै = अगुरु, सुगंधि काष्ठ। डंबर = समूह। परमळै = सुगंधि, सुगंधि चूर्ण। रास = क्रीड़ा।

अगरचै केसर अतर अंबर प्रगट डंबर परमळे
अति हास रास विलास उच्छव मेळ तिण सुख घर मिळे ॥

दुहा

मन उच्छव महाराज रौ, चित हित नव नव चाव।
सुख निरवहियौ ते कुसळ, रहियौ अरबुद राव ॥२४॥
पाछै दसमी जोधपुर, आणँद प्रगट अपार।
पायौ सुख सारी प्रथी, जायौ राजकुँवार ॥२५॥

संवत् १७ से ८७ के भाद्रवा सुदि १० के रोज श्री राजकुँवर
रामसिंहजी का जन्म

छंद उद्धोर

कमधां नाथ ग्रेह कुमार, प्रगट्यौ रांम तेज अपार।
सुभ ग्रह सुभ घड़ी सुभ वार, कृत स्रब जोग आणँदकार ॥२६॥
वाजा वाजिया जिण वार, दीपै हरख राजदुवार।
सुणि पुर निकर घर सुभ वांण, सनमुख हरखि वधि अप्रमांण ॥२७॥
असहां सुणत छाती एम, जायै फाट दाड़िम जेम।
वाधि वधांमणा सुभ वांण, घर नवकोटि गढ़ जोधांण ॥२८॥
सुणि सुज खबरि नृप अभसाह, छत्रपति कीध उर औछाह।
धरपति अमर तरपण धारि, दीन अदीन कीजत द्वारि ॥२९॥

२४—चाव = स्पृहा, मन की उत्कट इच्छा। निरवहियौ = निभ गया।

२५—जायौ = जन्मा, प्रकट हुआ।

२६—स्रब = सर्व, सब।

२७—दुवार = द्वार। निकर = समूह। वांण—वाणी।

२८—असहां = शत्रुओं की। जायै फाट = फट जाती है।

२९—सुज = वह। औछाह = उत्साह, आनंद। अमर = देवताओं को। तरपण धारि = तृप्त करके। दीन = गरीबों को। अदीन = दीनता-रहित, धनाढ्य।

मागध सूत बंदिय मेळ, वधि रिध जांणि दन दधि वेळ।
उच्छव करै मन उमराव, चक्रवति परखि सुरपति चाव ॥३०॥

दुहा

वाजै द्वार वधांवणा, सोभावणा सुगांन।
वेर अवेरां वांधिया, डेरां डेरां दान ॥३१॥

इति श्री राजराजेश्वर महाराजा श्री अभैसिंघजी रा परमजस
राजरूपक में सिवपुरी परणिया नै श्रीराजकुँवार रामसिंहजी
जनमियां री वधाई सुणी त्रयश्चत्वारिंश प्रकाश ॥ ४३ ॥

३०—रिध = ऋद्धि। दधि = समुद्र की। वेळ = लहर। चक्रवति = राजा को। चाव = स्पृहा।

३१—वधावणा = बधाई के वाद्य। सोभावणा = सुहावने, मनःप्रिय। वेर अवेरां = वक्त बेवक्त।

दुहा

कूच कियौ उच्छव करे, दळ विसतरे प्रचंड ।
आरुहियौ कुंजर अभौ, ऊपर गुज्जर खंड ॥ १ ॥
राजा भाव विचारियां, पायौ राव निवास ।
दीन्हा साथे देवड़ा, आदि नरायणदास ॥ २ ॥

छंद भुजंगी

नरां नाथ मेवास पाए नमाया
अखूटी वँचे देवड़ा सेव आया ।
बिया गोत बाळीस बाळौत बोड़ा
सको पेस देनैं सपाया सजोड़ा ॥ ३ ॥
जळानिद्ध लाजै दळाकार जैसा
तड़ै लागि छूटै खळां बाग तैसा ।
सको पंथ ऊबंध सौ संधि सांधै
बिया छात जोडै अठी वात बांधै ॥ ४ ॥

१—आरुहियौ = चढ़ा ।

२—राजा भाव = राजा के अभिप्राय को। निवास = घर, अथवा कुछ गर्मी ।

३—मेवास = लुटेरों को। पास नमाया = चरणों में नत किए। अखूटी वँचे = साबित रहकर। बिया = दूसरे। गोत = (गोत्र) वंश के। बाळीस० = बालीसा आदि राजपूतों के वंश हैं। सको = सब। पेस = पेशकसी। सपाया = पाया। सजोड़ा = स्त्रियों को।

४—जळानिद्ध = समुद्र। दळाकार = सेना के स्वरूप से। तड़ै० = जैसे बाग चारों ओर तड़ों (वृक्षों की टहनियों) के लगने से बच जाता है वैसे शत्रु झाड़ी आदि का आश्रय लेकर बचते हैं। पंथ ऊबंध = उलटे मार्ग चलनेवाले। संधि सांधै = सुलह करते हैं। विया० = और दूसरे राजों को छोड़कर इधर बातचीत करते हैं।

उभै हाथ जोडे किता पाय आवै
जिकां सास ऊखां तिके नास जावै।
छुधी डंड देतां किता खंड छूटै
खळे मौत केती प्रळै जेम खूटै ॥ ५ ॥
वधै पूर हैलूर फौजां सवाई
प्रथी भूप आकंप साकंप पाई।
अनेकां पहां पेखवा दूत आवै
वधै सोच आलोच ऐसी वतावै ॥ ६ ॥
चलै एक देसा जिता पेस चूकै
सुणै वास मेवास त्यां सास सूकै।
चली वात आठां दिसां वैण चावै
अभी कोपियौ सेर चै सीस आवै ॥ ७ ॥

दुहा

जुध आगम भणियौ जगत, सुणियौ सेर विलंद।
अणभायौ सिर आसुरां, आयौ मुरधर इंद ॥ ८ ॥
मग वहतै मेवासियां, केतांई चाकर कीध।
केतां खंड उबारियां, दे दे दंड प्रसिद्ध ॥ ९ ॥

५—उभै = दोनों। सास ऊखां = जिनका श्वास उखड़ गया है। खळे = शत्रु। मौत केती = कितनी मौतें। प्रळै जेम खूटै = प्रलय में मरैं जैसे मरते हैं।

६—हैलूर = घोड़ों का समूह। आकंप साकंप = थरथराहट। पहां = राजाओं के। पेखवा = देखने को।

७—जिता = जितने। पेस = पेशकसी, दंड। वास = निवास। मेवास = लुटेरों का। वैण = वचन। चावै = प्रसिद्ध। सेर चै = सेर बिलंद के।

८—भणियौ = कहा। अणभायौ = मन को अप्रिय। इंद = इंद्र, राजा।

९—उबारियां = बचा लिए।

आवै दूत नबाब रा, जावै सायक जेम ।
उलटा सुलटा रवि उदै, तन नटवट्टा तेम ॥१०॥

छप्पय

सुणि जबाब एरसा एम निब्बाब उचारै
खग्ग बांधि रण खेत वयौ कुण जैत विचारै ।
हिंदुवांण खुरसांण पांणि ग्रह पद्धर आया
कर मोसूं घमसांण कुणै निज मांण वचाया ।
असमांण पड़ंतो औ ठँभे सौ आसत ईरान में
जवनेस छात कंपै जिसी मेरी वात जिहांन में ॥११॥

दुहा

राजा राह पधारतां, मिळे सकाजां आय ।
आवाजां सामंद लगि, वाजां सद्द सवाय ॥१२॥
सुणिया पत्र वचावतौ, जोधां छात जबाब ।
दिन घटियै बोलै मुखां, वधता वैण नबाब ॥१३॥

१०—उलटा सुलटा = कभी इधर और कभी उधर । रवि उदै = प्रतिदिन । नटवट्टा = नट की गेंद के समान ।

११—एरसा = ऐसे । वयौ = आया हुआ । जैत = जय । हिंदवांण = हिंदू । खुरसांण = मुसलमान । पांणि ग्रह = हाथ पकड़कर । पद्धर = सीधा मार्ग, मैदान । घमसांण = युद्ध । मांण = मान, इज्जत । असमांण० = ईरान का बादशाह आसत, जो गिरते हुए आकाश को थाम सकता है, वह भी मुझसे काँपता है ।

१२—राह = मार्ग में आते । सकाजां = कामवाले । सद्द = शब्द ।

१३—दिन घटतै० = पिछले दिन में नवाब के शेखो के मुख से बोले हुए वचन सुने ।

छप्पय

सुणे वात अभसाह पांणि वळ मूंछ परट्टे
उर सकोप अणथाग चोप मुख राग चठट्टे।
वीर महारस वयण नयण सारत्त वरग्गे
जांणि कमळ दळ जोड़ वणै जळ जावग लग्गे।
तोलियौ खग्ग अजमाल तण बोळण प्रिसण भुआवळां
चांदणी सरद लखि चंद्र कर जांणि वेळ सरवर जळां ॥१४॥
उरध रोम उल्लसै जोम अरि करण रसातळ
भजि त्रिसळौ निज भाळ कळा सोखण सत्र कम्मळ।
उर उछाह ऊपजै धाह पैलां ग्रहि धारण
वदन हास विहसंत रुदन पर वंस वधारण।
दृढ़ नेम वचन मुख देखियां उर कंपावण अव्वरां
आंणियौ हरख लड़वा अभै उच्छव मेटण आसुरां ॥१५॥

दुहा

लीयां लस्कर ऊधरा, कीया फजरां कूच।
अहमदपुर आयौ अभौ, अकळ दळां पुळ ऊंच ॥१६॥

१४—पांणि० = मूँछ पर हाथ धरकर मूँछ को बट दिया। अणथाग = अपार। चोप = उत्साह, आश्चर्य। चठट्टे = बल। सारत्त = लाल। वरग्गे = हुए। जांणि० = मानों कमलदल के पास जल में अलता लगा है। बोळण = डुबाने के लिये। प्रिसण = शत्रुओं के। भुआवळां = भुज-पंक्ति को। वेळ = लहर। सरवर = समुद्र, सरोवर।

१५—उरध रोम उल्लसै = रोंगटे खड़े होते हैं। जोम = वीरता के वेग से, जोश से। त्रिसळौ = त्रिशूल। कळा० = शत्रु के मस्तक की कला को सुखाने के लिये। धाह = भयजनित शब्द। पैलां = शत्रुओं के। अव्वरां = दूसरों को। लड़वा = लड़ने के लिये। आसुरां = मुसलमानों का।

१६—ऊधरा = बहुत अधिक। फजरां = प्रात:काल में। अकळ = पूर्ण, वीर। पुळ = (पल) समय। ऊंच = श्रेष्ठ।

छप्पय

अहमदपुर अभसाह धिखे पतिसाह मुरद्धर
त्रिकुटाचल ऊपरा जांणि आयौ परमेश्वर।
सिर विलंद संपेखि द्वेख पूरियौ धुरंधर
ऊपरि हरि आवियौ जांण बाणासुर आसुर।
अति गह असंक उच्छव अकस जाब विरस मुख जंपिया
चळचळे सहर लसकर चक्रत कायर नर हैकंखिया ॥१७॥

सू मजेज खगि साभि जेज जुधि काज न रक्खी
सूर सगाह सिपाह ताहि लजराह सु दक्खी।
पले प्यार पूछकां खुले कोठार सनाहां
आराबां हल्लिया लिया मोरचा दुबाहां।
अति वंक वयण मुख उच्चरै भुजां गयण किर ऊभरै
लंकाळ आंणि पळ पाळतां बळ दाखै वळि बीभरै ॥१८॥

१७—धिखे = क्रुद्ध होकर। त्रिकुटाचल = लंका का पहाड़। संपेखि = देखकर। धुरंधर = अग्रणी। गह = गर्व से। अकस = ऐंठ। विरस = कटु। जंपिया = कहे। चळचळे = विचलित हुए। हैकंखिया = अवाक् हो गए।

१८—मजेज = जल्दी, शीघ्र। सगाह = गर्व-सहित। लजराह = लज्जा का मार्ग। दक्खी = बतलाया। पले० = प्यार से पूछनेवालों को रोका। सनाहां = वक्तर आदि का। दुबाहां = वीरों ने। गयण = आकाश को। ऊभरै = धारण करता है। लंकाळ = वीर पुरुष। पळ पाळतां = क्षण भर रोकने पर। दाखै = दिखलाते हैं। वळि = फिर। बीभरै = एकदम बिगड़ जाते हैं, क्रुद्ध होते हैं।

वार्ता

तिण वार का सेरखां परखै सिपाई
वडवाग की सिखा कना अजरायल का भाई ।
पर घर सादूळ की कृत दरसावै
इंद्र कै गाज कौ उछेद सुहावै ॥१९॥
जुं(जं)गूं के जैतवार सिपाह बुलाए
दो पक्खी विरदेत असराफों के जाए ।
एक तैं एक जोर का अचंभा
गुमांन का मंदर कै असमांन का थंभा ॥२०॥
बळ के मृगराज कुळवट के अंकूर
पांणी के रच्छक थळवट के कोहर ।
उर के अडोल मेर के दावै
व्योम के पड़ंणै संका न आवै ॥२१॥
ऐसे मिरजा कूं नामदार सर्व जांणै
ख्याल सा खेल संग्राम पहिचांणै ॥

१९—तिण वार का = उस समय का । परखै = परीक्षा करता है । वडवाग = वाडवाग्नि, समुद्र की अग्नि । सिखा = चोटी, ज्वाला । कना = किंवा, अथवा । अजरायल = जबर्दस्त, निडर । कृत = काम । उछेद = नाश ।

२०—जुंगूं के = युद्ध के । जैतवार = जीतनेवाले । दो पक्खी विरदेत = माता पिता दोनों पक्षों से यश पाए हुए । मंदर = (मंदिर) घर, मंदराचल पर्वत । कै = किंवा, अथवा ।

२१—मृगराज = सिंह । कुळवट = कुलीनता के । पांणी के = तेज को रखनेवाले । थळवट = अच्छे स्थान के । कोहर = कूप, कूआ । मेर के दावै = सुमेरु पर्वत से समानता करनेवाले । व्योम० = आकाश के गिरने पर जो भय नहीं लाते ।

दुहा

तेड़ि सिपाह सगाह दर, यों दाखै मुख सेर ।
प्रात लड़ां कमधज्ज सूं, वात न अक्खूं फेर ॥२२॥
मुख हसि वयण अमीर सूं, यों बोले उमराव ।
ए व्यापार सिपाह का, सार न चूकै चाव ॥२३॥

छप्पय

हुए दळां हळवळां हुए वळवळां सनाहां
उर कायर खळभळै थाह चळचळै सगाहां ।
जिरह टोप जळहळै कुंत भळहळै उघाड़ा
सुर अकसे झल्लिया जांण राकसे मुराड़ा ।
भारिया सोर सीसै सकट महा जोर जोधां मचै
तप नृपत जठी अटकण तठी मेळ परट्ठी मोरचै ॥२४॥

गाहा चौसर

सेर खटै मन जोर सँभाया, यों लखि दूत सिताबी आया ।
समाचार निरधार सुणाया, आसुर आया कोप अछाया ॥२५॥

२२—दर = जल्दी । दाखै = कहता है । अक्खूं = कहूँ । फेर = पुनः ।

२३—अमीर सूं = सेर बिलंद से । सार = वक्त, तत्त्व । चाव = मन का उत्साह ।

२४—हळवळां = ताकीद, त्वरा । वळवळां = अव्यक्त शब्द । सनाहां = कवच आदि । उर = मन में । खळभळै = व्याकुल हुए । थाह = स्थिरतावाले । चळचळै = चंचलता । सगाहां = गर्व-सहित । जिलह = कवच । जळहळै = देदीप्यमान हुए । कुंत = भाले । भळहळै = चमकने लगे । उघाड़ा = नंगे । सुर = देवता । अकसे = क्रोध-युक्त हुए । झल्लिया = पकड़े हुए । राकसे = राक्षसों से । मुराड़ा = गर्ववाले । सकट = गाड़े । तप = तपस्वी । जठी = जिधर । अटकण = रोकने को । मेळ = सेना । परठ्ठी = भेजी ।

२५—खटै मन = खट्टे मन । निरधार = निश्चय करके । अछाया = भरे हुए ।

धरी श्रमण मंत्री परधांनै, अकस अमीर लगौ असमांनै।
गुदरावी सुज बात सुण्यांनै, कमधां नाथ सुणी सुज कांनै ॥२६॥
यों मुख दाखै मीर असल्लौ, पेखौ राजा ख्याल पहल्लौ।
महमदसाह तजै जो दिल्लो, तो गुजरात करूं मैं ढिल्लौ ॥२७॥
कहिया वयण निवाब करारा, सुणिया श्रवण अभै नृप सारा।
वागा हुकम हुवा तिण वारा, गहरै सुर रणजीत नगारा ॥२८॥

छप्पय

नां मंत्री पूछिया किया वतकाव न दूजा
जेझ न साहै जुड़ण अभौ जुध चाहै ऊजा।
ज्वाळ अनळ जग्गियौ जांणि वन ढांणि जुगंतां
सारदूळ गज्जियौ सोर गज झूळ सुणंतां।
त्रिण गण समांन गिणि ताइयां, अगनि बांण किर उब्भरै
तोलियौ खाग जुध काज तिम महाराज अजमल्लरै ॥२९॥
मूंछ रोम उल्लसै जोम भुज व्योम परस्सै
करण होम केवियां ति किर धुजधोम तरस्सै।

२६—श्रमण = (श्रवण) कान, कर्ण। अकस = ऐंठवाला।

२७—दाखै = कहता है। ढिल्ली = ढीली, शिथिल।

२८—करारा = सामर्थ्य-युक्त, बलशाली। वागा = बजे। तिण वारा = उस समय। गहरै = गंभीर।

२९—वतकाव = वार्तालाप। जेझ = देरी। साहै = सहन करता है। जुड़ण = युद्ध करने को। ऊजा = (उर्जस्वी) बलशाली। ढांणि = निर्जन वन में कृषक का निवासस्थान। झूळ = समूह। ताइयां = शत्रुओं को। उब्भरै = उभड़ै। अजमल्लरै = अजीतसिह के पुत्र ने।

३०—रोम = केश, बाल। उल्लसै = खड़े होते हैं। जोम = जोश से। व्योम = आकाश को। करण० = शत्रुओं का होम करने के लिये। ति = वहां। धुजधोम = अग्नि। तरस्सै = तृष्णायुक्त होता है।

भोम सतर खाटवा तोम गांजिवा अतारां
कोम पीठ कळमळे गोम चळचळै नगारां।
साजोम कमंधां सूरमां पूछिस भोम परायणां
अणसोम गुणां कोपे अभौ करण मांम किलवायणां ॥३०॥

सेरसाह संग्राम किसूं बळ बांह प्रगट्टे
अभै साह उण वार जिसौ पतिसाह पलट्टे।
धजां धार पळ ध्रवै गजां मदमत्तां गेड़ै
सारदूळ संकवै जिसौ अरि मूळ उखेड़ै।
भाराथ भीम गज गण भुजां अरस जेम उच्चंडियौ
उर आज तेम सोखण असुर महाराज पण मंडियौ ॥३१॥

तेड़ि बंधु बखतेस जिसौ ऊबंध महोदध
भडां अभंगां हष्ट जगै रण जंगां ऊरध।

भोम = पृथ्वी। सतर = गुजरात की। खाटवा = हासिल करने के लिये। तोम = (स्तोम) समूह को। गांजिवा = मारने के लिये। अतारां = मुसलमानों को। कोम = (कूर्म) कछुए की। गोम = पृथ्वी। साजोम = जोश सहित। भोम = पता। परायणां = शत्रुओं का। अणसोम गुणां = असौम्य गुणों से युक्त अर्थात् क्रूर गुणों से युक्त। मांम = नाश। किलवायणां = मुसलमानों का।

३१—किसूं बळ = किस बल से। बांह प्रगट्टे = भुजदंड को ठोंके। पलट्टे = विरुद्ध हो गया। धजा० = तलवारों की धारा से। पळ = मांस। ध्रवै = सूखता है। गेड़ै = समूहों का। सारदूळ = सिंह। भाराथ० = जैसे भीम ने भारत युद्ध में अपनी भुजाओं से हाथियों से आकाश को व्याप्त कर दिया था। उर = मन। पण = प्रतिज्ञा।

३२—तेड़ि = बुलाकर। ऊबंध = मर्यादोल्लंघन करनेवाला।

चांपा कूंपा करन जैत जदु बंस बुलाया
जोधा दूदाहरा विकट ऊदा वतळाया।
पणवंत कमां सकतीपुरां काळ चाळ झल्लै करां
पणबंध अभै पूंतारिया इसा निरभै उम्मरां ॥३२॥
बालां बळ अग्गळां जैतमालां जणियारां
महवेचां मारकां कमध ऊहड़ां अकारां।
पातां रूपावतां विढण गोगादे वंकां
सोनगरां देवड़ां समर ईंदां अणसंकां।
खग जैतहथां जुध खीचियां धांधल्लां ऊंची धरा
पणबंध अभै पूंतारिया इसां निरभै उम्मरां ॥३३॥

दुहा

भंडारी गिरधर रतन, विजैराज वरवीर।
यां भळिया वंका अणी, धणी तणी भळ धीर ॥३४॥

चांपा० = चांपावत, कूंपावत, करणोत, जैतावत भाटी। जोधा = जोधा राठोड़। दूदाहरा = मेड़तिया। ऊदा = ऊदावत राठोड़। कमां = करमसोत राठोड़। सकतीपुरां = चौहान। काळ० = जो काल के पल्ले को हाथ से पकड़ते हैं अर्थात् काल को ललकारनेवाले। पूंतारिया = प्रोत्साहित किया। उम्मरां = उमरावों को।

३३—बालां = बाला राठोड़। जैतमालां = जैतमाल राठोड़। जणियारां = प्रसिद्ध, जिनको जगत् जानता है। महवेचां = महेचा राठोड़। ऊहड़ां = ऊहड़ राठोड़। अकारां = बड़े तीक्ष्ण। पातां रूपावतां गोगादे = राठोड़ों की शाखा। ईंदां = पड़िहारों की शाखा। जैतहथां = जय जिनके हाथ में है। धांधल्लां = धांधल राठोड़। पणबंध = प्रतिज्ञा का पूरा। इसां = ऐसे।

३४—यां = इनको। अणी = सेना के अग्र भाग पर। धणी तणी = मालिक की।

कायथ लाल विसाल कुळ, सरभर बाल किसन्न ।
अै वधिया तीखै अणी, पेखे धणी प्रसन्न ॥३५॥
अभौ कहै साम्है अणी, मो जोवणो मुगन्न ।
वांमें भाई बखतसी, मो दक्षण विजमन्न ॥३६॥

छप्पय

उण वेळा अभसाह दुगम बळ बांह दरस्सै
चक्र ग्राह चूरिवा ति किर चत्रबाह तरस्सै ।
अथग पियण अंजळी जांणि अग्गस्त धरे पण
कना पत्थ कोपियौ मत्थ जैद्रत्थ विछोडण ।
पर जिण त्रिनेत्र गंजण त्रिपुर समहर पायौ सुल्लभौ
जुग अंत मेघ वरसै जिसौ इसी भांति दरसै अभौ ॥३७॥

छंद बेअक्खरी

वखतौ जुध राजा रस वायौ, भूपति वांमौ अणी भळायौ ।
भारथ जीपण विजौ भँडारी, कियौ विदा लखि वेळ करारी ॥३८॥
मेड़तियौ जालम दळ मांहे, सुतन किसोर भार भुज साहे ।
सुरतौ गजौ राजड़ौ सालम, जसू सुभौ सिवसिंघ सिंघ जिम ॥३९॥

३५—विसाल कुळ=उच्च कुल का । सरभर=समान ।

३६—मो=मुझको । जोवणो=देखना है । वांमें=बाईं ओर ।

३७—दुगम=दुर्गम । चक्र=चक्र से । ग्राह=ग्राह को । ति=वह । चत्रबाह=चतुर्भुज, विष्णु । तरस्सै=त्रास देता है । अथग=समुद्र को । कना=किंवा । पत्थ=अर्जुन । विछोडण=काटने के लिये । पर=जैसे । जुग अंत=प्रलय-समय में ।

३८—जुध रस वायौ=युद्ध के रस में मग्न । वांमौ अणी=वाम भाग की सेना । भळायौ=सुपुर्द की । जीपण=जीतनेवाला । वेळ=समय । करारी=विकट, समर्थ ।

३९—यहाँ से ४१वें छंद तक मेड़तिया राठौड़ों के नाम हैं । साहे=धारण करनेवाला ।

मृति नीमियां गुलाब महाबळ, सांवत दलौ गजन भुज साबळ ।
नाहर भुजां बहादर नाहर, मोहण छत्रसाल बळ मंदर ॥४०॥
रुघपति हरा इता छळि राजा, साथ भँडारी तणै सकाजा ।
गिरधर सुत सिवसाह दुयंगम, अमर सुजाव धीर दळ ओपम ॥४१॥
यांरी अणी जीमणी ओपै, लहरीरवण मृजा किर लोपै ।
सांम्है अणी गिणै अरि सल्लां, मारहथां जोधां रिड़मल्लां ॥४२॥
भेळौ आप तिकां भुयपत्ती, प्रिसण सँघार करण छत्रपत्ती ।
सार कोट मन मोट सिघाळा, चक्रवति जतन सुभट कळ चाळा ॥४३॥
असि वर वाद अनाद अकांपा, चूरण खळ आया सामिलि चांपा ।
सकतसिंघ निज दळां सहाई, दांन सुजांन भुजां वरदाई ॥४४॥

४०—नीमियां = नियम लिया हुआ । साबळ = शक्ति शस्त्र, लोहमय भाला । नाहर = सिंह । मंदर = मंदराचल पर्वत के समान, अथवा घर ।

४१—रुघपति हरा = रघुनाथसिंहोत मेड़तिया । इता = इतने । छळि = वास्ते । भंडारी तणै = भंडारी के । सकाजा = कार्य सिद्ध करनेवाले । दुयंगम = दुर्गम । सुजाव = पुत्र । दल = सेना । ओपम = योग्य ।

४२—ओपै = शोभा देती है । लहरी रवण = समुद्र । मृजा = मर्यादा । अरि सल्लां = शत्रुओं के शल्य रूप । मारहथा = हाथ से मारनेवाले । रिड़मल्लां = रिड़मलोत राठोड़, अथवा वीर ।

४३—तिकां = उनके । भुयपत्ती = राजा । प्रिसण = शत्रुओं का । सार कोट = बल का कोट । सिघाळा = वीर । चक्रवति = (चक्रवर्ती) राजा । जतन = वास्ते । कळ चाळा = युद्ध करनेवाले ।

४४—यहाँ से ५४वें छंद तक चांपावत राठोड़ों के नाम हैं । असि वर वाद = श्रेष्ठ घोड़े और तलवार के विवाद में । चांपा = चांपावत राठोड़ । वरदाई = वर देनेवाला, श्रेष्ठ ।

माहव गजां धजां खग मारण, सुतन भूप अरि कोप सघारण।
कुसलौ नाथ सुजाव अकारौ, कळह पाथ सम हाथ करारौ ॥४५॥
दीसै करन प्रेम बळ दूणै, पाली धणी अणी पहिलूंणै।
मेर म्रजाद दलौ मुकनावत, रिण दूणै छक किसन रुघावत ॥४६॥
जुध बळ अनौ पतावत जागै, ओपै जेम धार खग आगै।
जंग अधायौ किसन जसावत, औ जिम बलू लखै प्रब आवत ॥४७॥
अमर धनावत सहसा ओडै, जैतो भांण तणो तिण जोड़ै।
पदम अनावत औसर पायौ, आसमांन लागै जुध आयौ ॥४८॥
समहर आयां रूप सवायौ, जोस सतेज तेजसी जायौ।
रैणायर मौहकम उछरंगे, जगड़ तणा वाधै रण जंगे ॥४९॥
केहरि जुध केहरी कहावै, लड़ण जसावत वार न लावै।
तन रथ वधै अणी गिण तीखौ, साहस माल बलू सारीखौ ॥५०॥

४५—माहव = माधोसिंह। धजां = सेनाओं को। सुतन भूप = राजा का पुत्र। अकारौ = अति तीक्ष्ण। कळह = युद्ध में। पाथ = अर्जुन के। करारौ = समर्थ, बलवान्।

४६—प्रेम = प्रेमसिंह। पहिलूंणै = पहला। मेर = सुमेरु पर्वत। छक = गर्व, वैभव।

४७—ओपै = शोभा देता है। अधायौ = अतृप्त। औ = यह। प्रब = (पर्व) युद्ध का समय।

४८—ओडै = सदृश। औसर = अवसर।

४९—समहर = (समर) युद्ध। जायौ = पुत्र। रैणायर = राजसिंह का पुत्र। उछरंगे = (उच्छृंग) ऊँचा; वीर; उत्साहवाला। जगड़ तणा = जगराम के पुत्र। वाधै = बढ़ते हुए, बढ़े।

५०—केहरि = (केसरि) सिंह। वार = देरी। लावै = लगाता है। तन = शरीर।

सुरतौ गजौ लड़ण जुध सारां, हरी तणा मौहरी हजारां ।
रांमौ करन तणौ रढ रांमण, वाधै खगे पगे जिम वामण ॥५१॥
आगळियार रुघावत ईखौ, सुरतौ विरतै सिंघ सरीखौ ।
पाल तणी सोभा जिण पाई, जूझौ वीर तणौ जैत्राई ॥५२॥
अणद फतावत पौरस एहौ, जाळण खळां अणी बळ जेहौ ।
चौरँग समै हठौ कळ चाळौ, वाधै कर रैणायर वाळौ ॥५३॥
हरियँद तणौ गजौ बळ हाथां, भूप सबाह जिसौ भाराथां ।
सुतन गुमांन किसोर सजोड़ौ, घड़ वड़ दळण वधारै घोड़ौ ॥५४॥
पालहरां जोड़ै पूंचाळा, आया जैतहरा आभाळा ।
जोरौ भांण तणौ पण जेहौ, अघट सुग्रीव राम छळ एहौ ॥५५॥
अचळ तणौ पिण मुगट अवीहां, समहर भलौ तेजलौ सीहां ।
अमर हरौ फतमाल सु अन्नड़, भाऊ सुतन उमेद महाभड़ ॥५६॥

५१—मौहरी = अगाड़ी । रढ रामण = महावीर । वामण = वामन भगवान् ।

५२—आगळियार = अग्रणी । ईखौ = देखो । विरतै = वृत्तांत में । पालतणी = गोपालदास की । जूझौ = जूंझारसिंह । जैत्राई = जीतनेवाला ।

५३—एहौ = ऐसा । जेहौ = जैसा । चौरँग = युद्ध के समय । कर = हाथों में ।

५४—सबाह जिसौ = सुबाहु राजा के जैसा । भाराथा = युद्ध में । सजोड़ौ = समान । घड़ = सेना को ।

५५—पालहरां = गोपालदास के वशजों के, चांपावतों के । इसके आगे जैतावत राठोड़ों के नाम हैं । जोड़ै = साथ । पूंचाळा = शक्तिशाली, पहुँचवाले । आभाळा = देदीप्यमान, ज्वाला-स्वरूप, तेजस्वी । पण = प्रतिज्ञा में । जेहौ = जैसा । अघट = विकट । छळ = युद्ध में, वास्ते । एहौ = ऐसा ।

५६—अबीहां = न डरनेवाले । समहर = युद्ध में । सीहां = सिंहों से अच्छा । अन्नड़ = (अनम्र) जबर्दस्त ।

मुहियड़ दळां विजावत मालौ, वणियां दुंद खुंद मन बालौ ।
अमर लखावत समर असंकौ, वंक खळां दळ करण अवंकौ ।।५७।।
दूदाहरौ विसन वरदाई, समहर सूरजमाल सवाई ।
चांपे सकतावत कळि चाळा, अभै जतन आया आभाळा ।।५८।।
खान तणौ भैरव खगवाहौ, सूर धीर वर वीर सगाहौ ।
मांडण सुतन हठौ दळ मंडण, औपै भूप दळां चौ ओठ (ढ) ण ।।५९।।
देवी सुत वानेत दुबाहौ, वाधै मौहर जिसौ खगवाहौ ।
गोयंद सुतन अमर गाढां गुर, गजौ विजावत धरियां गुम्मर ।।६०।।
अजबौ पतोलियां पण उज्जळ, वैणावत ग्रहियां वीजूजळ ।
सकतावत छळि धणी सिघाळा, आया चांपा वंस उजाळा ।।६१।।
रिणमलोत रिण ताल रंढाळा, भेळा चांपावतां भुजाळा ।
नाहर जांण कोपियौ नाहर, नरहर कौ तिण वार त्रिभै नर ।।६२।।

५७—मुहियड़ = मुख्य । वणियां दुंद = युद्ध के छिड़ने पर । खुंद मन वालौ = बादशाह के मन को जलानेवाला । वंक० = शत्रुओं की वक्र सेना को सीधी करनेवाला ।

५८—दूदाहरौ = मेड़तिया । वरदाई = श्रेष्ठ । समहर = युद्ध में । चांपे = चांपावत । आभाळा = तेजस्वी ।

५९— सगाहौ = गर्व-सहित । दळ मंडण = सेना का भूषण । ओठण = अवष्टंभ, सहायक ।

६०—वानेत = बाना रखनेवाला, चिह्न वा प्रतिज्ञा रखनेवाला । दुबाहौ = वीर । मौहर = आगे । गाढां गुर = पूर्ण गाढ़ा । गुम्मर = गर्व ।

६१—वीजूजल = तलवार । छळि धणी = मालिक के वास्ते । सिघाळा = श्रेष्ठ ।

६२—रिणमलोत = रिणमलोत शाखा के राठोड़ । रिण ताल = युद्ध के समय । रंढाळा = वीर । भुजाळा = बाहुबलवाले । जांण = मानों । त्रिभै = निर्भय ।

सुरतौ अनै तणौ पण साचै, जुध कजि सदा सकति वर जाचै ।
किरतावत बुधसिंघ करारौ, गजां विभाड़णि राढो(ड़ी)गारौ ।।६३।।
अै चांपा आया न्रप आगै, लड़तां जोम व्योम भुज लागै ।
करनहरा सभि रोस कसाया, औरंग विरंग कियौ सुज आया ।।६४।।
दुरग सुजाव अभौ बळ दूणै, धूकळ बेर मेर भुज धूणै ।
कुँवर सिधौ जुधि सेध करेवा, वाय लाय सम वधै विढेवा ।।६५।।
जैतो खेत जैत वृति जांणै, मैहकनोत चित मेर प्रमांणै ।
चैनो प्रथम अणी नह चूकै, सजियां धजां गजां मद सूकै ।।६६।।
दळि बळ घणै जसावत देवौ, केवी मरै करै सुज केवौ ।
सिवो खेम सुत नेम सवायौ, ईखे घणी वणी कळि आयौ ।।६७।।
मोड़ण दळां पतौ महिकांणी, प्रगटै महण लड़ण जिम पांणी ।
तेजावत किसनो खग तोलै, बोड़ण खळां सतेजौ बोलै ।।६८।।

६३—अनै तणौ = अनाड़सिंह का पुत्र । सकति० = देवी के वर की प्रार्थना करनेवाला । करारौ = बलशाली । विभाड़णि = मारनेवाला, भयभीत करनेवाला । राड़ीगारौ = युद्ध करनेवाला ।

६४—अै = ये । करनहरा = करणोत राठोड़ । कसाया = रक्त । औरंग = औरंगजेब बादशाह को । विरंग = फीका । सुज = वे ।

६५—सुजाव = पुत्र । धूकळ = युद्ध के समय । मेर = सुमेरु पर्वत को । धूणै = कंपित करते हैं । सेध करेवा = सिद्धि करने के लिये । वाय = वायु । लाय = दावानल । विढेवा = युद्ध करने को ।

६६—खेत = युद्धभूमि में । जैत वृति = जय की रीति को । मेर = सुमेरु पर्वत । धजां = सेना के ।

६७—केवी = शत्रु । केवौ = वैर, विरोध । ईखे = देखने में आता है । वणी = बन-ठनकर, तैयार होकर । कळि = युद्ध में ।

६८—मोड़ण = पीछे हटाने के लिये । महिकांणी = मेघसिंह का पुत्र । महण = समुद्र का । खग० = तलवार तोलता है । बोड़ण = नाश करने के लिये । खळां = शत्रुओं का । सतेजौ = तेज सहित ।

समहरि कोड जगावत सांगो, रूकै लड़ण चडै मुख रांगौ ।
कळि वणियां मुकनौ कचरावत, रिण रावतां सजूझौ रावत ॥६९॥
सझियौ चुतर सांम छ्ळ सारू, मृत नीमियां फतावत मारू ।
बखतावत जगतौ वरदाई, समहर वरियां करन सवाई ॥७०॥
भीमोते जगनाथ महाभड़, आयौ भोज तणौ जुध अन्नड़ ।
सुत वांनेत साहिबौ साथे, अै भीमोत भुजां भाराथे ॥७१॥
सूर पणै व्रत घणै सवाया, अै करनोत जोत दळ आया ।
रिण नृप जैत करण पि(प)ण रावत, काळ खळां आया कूंपावत ॥७२॥
कान्ह रांम सुत वांन करारै, आसमांन सुधि पांण अधारे ।
सार हथौ किरतौ दळ मांहे, सूजावत आयौ छ्ळ साहे ॥७३॥
विढवा काज सरस रस वायौ, उदिया भांण फतावत आयौ ।
सादल पीथल जोड़ सवाया, आगळि धणी वणी कळि आया ॥७४॥

६९—कोड = उत्साह । रूकै = तलवार से । मुख रांगौ = रक्तमुख होकर । सजूझौ = जूझनेवाला । रावत = वीर ।

७०—साम छ्ळ सारू = स्वामी के युद्ध के लिये । मृत नीमियां = मरणोन्मुख, मरण की प्रतिज्ञावाला । वरियां = समय ।

७१—भीमोते = भीमोत राठोड़ों में से । अन्नड़ = अनम्र । वांनेत = बाना रखनेवाला । भाराथे = युद्ध में ।

७२— जोत = दीपक के समान प्रकाशवाले । रिण = युद्ध में । जैत करण = जय करने के लिये ।

७३—वांन = बाना (पोशाक) अथवा वाणी । करारै = बलिष्ठ । सुधि = सीधा । सार हथौ = तलवार हाथ में लिए । छ्ळ = युद्ध । साहे = धारण करता हुआ ।

७४—विढवा काज = लड़ने के लिये । रस वायौ = वीर रस से व्याप्त । वणी = तैयार होकर ।

ओपै त्रिणे फतावत अैसा, जम ही विमुह खडै लखि जैसा।
सबळ सुजाव रांम बळ संभरि, मृत्यु(तु)तिल मात गिणै लखि मौसरि७५
भीषम जिम हरभांम भुजाळौ, इण व्रत भूप तणौ ओझाळौ।
खेम फतावत नेम न खंडै, मेळै प्रथम जई कळि मंडै ॥७६॥
जोड़ै कान्ह बंधु बे जेहा, रुघो छुतर खग समर अरेहा।
सबळो वाघ तणौ जुध सारा, वाघां हूंत वधै तिण वारां ॥७७॥
सुत सामँत सामंत सवायौ, देवौ देव कळा दरसायौ।
जोड़ै बंधव तेण जवांनौ, दुगम खळां खग लगै दिवांनौ ॥७८॥
जसौ चतुर तण जिण पण जंगां, अरीसाल रिण ढाल अभंगां।
जोरौ पदम तणौ खग जोरै, चौरँगि आव खळां ची चोरै ॥७९॥
चेलौ वखतौ हूंत सचेळौ, भाऊ सुतन जतन ज्यां भेळौ।
ईन्दावत वखतौ आरांणै, पासि जिकां जीपै सुज पांणै ॥८०॥

७५—ओपै = शोभा देते हैं। त्रिणे = तीनों। विमुह खडै = विमुख होकर चला जाय। सुजाव = पुत्र। संभरि = स्मरण करके। मृतु = मृत्यु को। तिल मात = किंचिन्मात्र। मौसरि = अवसर पर।

७६—भीषम = भीष्म पितामह। भुजाळौ = लंबी भुजावाला। ओझाळौ = उग्र तेजवाला। मेळै = मिलकर।

७७—जोड़ै = साथ। जेहा = जैसे। अरेहा = पीछे न हटनेवाले, न हारनेवाले।

७८—सामँत = सामंतसिंह का पुत्र। सामंत = वीर। जोड़ै = साथ। बंधव = भाई। तेण = उसके।

७९—तण = पुत्र। चौरँगि = युद्ध में। आव = आयु।

८०—सचेळौ = श्रेष्ठ, समर्थ। आरांणै = युद्ध में। जीपै = जीतता है। सुज = वह। पांणै = बल से।

हठै तणौ भीमाजळ हाथां, भीम क पाथ जिसौ भाराथां।
नाथ अनै सांमलि रिण नायक, सुतन भूप हलि भूप सहायक ॥८१॥
सुरतांणौत हठौ अवसांणै, पड़तौ गयण गहै रण पांणै।
साभण खळां चतुरभुज सेलां, करमचँदोत मौत के बेळां ॥८२॥
पिड़ दळ जतन रतन ओडण परि, सुतन भीम भुज भीम सिरिख वरि।
सूजावत रिण कारण सांगौ, अणी धणी तिण जिरह कि आंगौ ॥८३॥
सुत सामँत सुरतांण सवायौ, उर पण मरण नीमियां आयौ।
मुहियड़ दळां जसावत माधौ, लाधै विघन जांणि धन लाधौ ॥८४॥
अंगज पदम दुजौ अणछांनै, मृत रिण नेम खेम करि मांनै।
बगसौ आयौ सुतन बहादर, औसोइ जोड़ माधावत ईसर ॥८५॥
औ कूंपा सत्रु करण अनूरा, परखै धणी वणी कळि पूरा।
राड़ हरोल आडि लखि रावत, जैत हथा आया जैतावत ॥८६॥

८१—भीमाजळ=वीर, भीम नाम का। पाथ=अर्जुन। भाराथां=युद्धों में। अनै=और।

८२—अवसांणै=समय पर। गयण=आकाश। गहै=पकड़ता है। पांणै=हाथ से। साभण=जीतनेवाला। बेळां=समय में।

८३—पिड़=युद्ध में। रतन ओडण=रत्नाकर, समुद्र के। परि=समान। सिरिख=सदृश। वरि=श्रेष्ठ। सांगौ=महाराणा सांगा। जिरह कि आंगौ=मानों सेना के अंग का कवचरूप।

८४—उर=मन में। नीमियां=निश्चय करके, नियम करके। मुहियड़=अग्रणी, मुख्य। विघन=युद्ध।

८५—अंगज=पुत्र। अणछांनै=मशहूर, प्रसिद्ध। खेम=क्षेम। जोड़=समान।

८६—अनूरा=तेजहीन। राड़=लड़ाई में। हरोल=अग्रणी। आडि=आड़, रोक। रावत=सरदार। जैतावत=राठोड़ों की एक शाखा।

काळ खळां कर तोलै कत्ती, रूप तणौ कमधे रुघपत्ती ।
गिरवर तणौ फतौ गुर गाढां, असिवर हथौ धजा औ गाढां ॥८७॥
दुजड़ा हथां मुकट दरसावै, कलौ रूप तण भलौ कहावै ।
स्यांम सुतन जुग भांण सकज्जां, गिणतां समर जिसौ अरि गज्जां ॥८८॥
इन्दावत सिवदांन अकस्सै, प्रसण गिळण भुज गयण परस्सै ।
गोपीनाथ पतावत गोढै, बळ खळ अथग जिसौ खळ वोढै ॥८९॥
सांवळ कौ केहरि खग साहै, मारू वणै धणी दळ माहै ।
उमेदसी तारिस अन्नावत, आयौ राजी करण अजावत ॥९०॥
मांन तणौ बखतौ राव मारू, सझियौ घणां खळां म्रत सारू ।
जोर तणौ नाहर अपजोरौ, तिजड़ां अंग झड़ै सुज तौरौ ॥९१॥

८७—कत्ती = तलवार, लचीली तलवार । कमधे = राठोड़ो में । गुर गाढ़ां = परम दृढ़, बड़ा गर्ववाला । असिवर हथौ = हाथ में तलवार लिए । औ = यह । धजा गाढां = दृढ़तावालों की ध्वजा ।

८८—दुजड़ा हथा = तलवार रखनेवालों में । मुकट = शेखर । रूप तण = रूपसिंह का पुत्र । जुग = संसार में । भांण = नाम है । सकज्जां = कार्य करनेवाला, समर्थ ।

८९—अकस्सै = कोप करता है, ईर्ष्या रखता है । प्रसण = शत्रुओं को । गयण = आकाश को । गोढै = पास, समीप में । अथग = अथाह । खळ = शत्रुओं को । वोढै = धारण करे, सहन करे ।

९०—खग साहै = तलवार धारण किए । वणै = तैयार होता है । तारिस = (तादृश) वैसा ही ।

९१—सझियौ = सज हुआ । म्रत सारू = मृत्यु के लिये । अपजोरौ = स्वतंत्र चलनेवाला, मनमते चलनेवाला । तिजड़ां = कटारी । झड़ै = गिरे । तौरौ = प्रभाव ।

वणौ छतौ गोवरधन वाळौ, प्रिसण कमळ जाळण फिर पाळौ ।
ऊदै जैत धणी कजि आयौ, भगवानौत भूप मन भायौ ॥९२॥
दुयणां आदि पराजय देता, जोधा नाथ निरखिया जेता ।
जैता जैत धणी छळि जेहा, रैणा मद आरेण अरेहा ॥९३॥
जादव सांमि तणौ ध्रम जांणै, अनहूंतां मन मोह न आंणै ।
रावळ अमर हरा हित राखै, भूप जतन आया पण भाखै ॥९४॥
इळ वखतौ जीपण अवसांणै, पीथल सुतन सिंघ सम पांणै ।
विसनौ पदम तणौ वरदाई, वप जे नवगढ़ तणी वडाई ॥९५॥
सुरतावत मालौ गुर सूरां, पढियौ लियण प्रवाड़ा पूरां ।
विजपालौत धरै मूंछां वळ, उमेदसिंघ धणी छळ उज्जळ ॥९६॥
कळिहण ईढगरा इधकेरा, जोधांपति व्रत जेसलमेरा ।
धणी हजूर लड़ण पण धारै, जेसा आया इष्ट जुहारै ॥९७॥

९२—वणौ = तैयार हुआ । छतौ = छत्रसिंह । प्रिसण = शत्रु । पाळौ = बर्फ । जैत = जय । कजि = वास्ते । मन भायौ = मन में चाहा हुआ, इच्छित ।

९३—दुयणां = दुश्मनों को । पराजय = हार । जैता = जैतावत राठोड़ । छळि = वास्ते । रैणा मद = मद को रखनेवाले । आरेण = युद्ध में । अरेहा = पीछे न हटनेवाले ।

९४—जादव = यदुवंशी (भाटी) । तणौ = का । ध्रम = धर्म । अनहूंतां = दूसरों से । रावळ = भाटियों की शाखा, जो जेसलमेर के पट्टाधिकारी रावल से फटी है । अमर हरा = अमरसिंह के वंशज ।

९५—जीपण = जीतने के समय । वप = शरीर । नवगढ़ = नौ कोटी मारवाड़ ।

९६—प्रवाड़ा = युद्ध । मूंछां वळ = टेढ़ी मूँछ । वळ = वक्रता ।

९७—कळिहण = युद्ध में । ईढगरा = बराबरी करनेवाले, ईर्ष्यालु । इधकेरा = अधिक । व्रत = वास्ते, नियम । जेसा = जेसा भाटी के वंशज, जेसा भाटी । इष्ट = राजा को । जुहारै = प्रणाम किया ।

सांगौ साहिब तणौ सिघाळो, वांकमि वींद लवेरै वाळो ।
धारण मेर पतौ व्रतधारी, ईंदावत कळि लियण उधारी ॥९८॥
दोलौ गोयंद हरां दुबाहौ, सुत जैसिंघ विवाद सगाहौ ।
सूरौ खांन तणौ ध्वज सूरां, आहव न वदै जिसौ अधूरां ॥९९॥
अमरावत नाथौ दळ आगळ, कळहण गैलौ जांण दबीकळ ।
तेजावत वाघौ रिण तैसौ, जुध बळ घणूं हणूं कपि जैसौ ॥१००॥
खांन तणौ डूंगर विच खागां, भारथ भिळै वळै खळ भागां ।
सकतावत हरिरांम सचाळौ, आयौ जादव लड़ण उताळौ ॥१०१॥
वाधै रांम सदा खळ वागां, खांन सुजाव वाजियां खागां ।
केहरि मांन तणौ मृत कोडे, आयौ गयण भुजा डंड ओडे ॥१०२॥
सांमि सुछळ वीरम सबलांणी, ओपै संग जगौ अबवांणी ।
रुघौ जसावत वांकमि रावत, जोति जिसौ जीवण जेसावत ॥१०३॥

९८—सिघाळो = श्रेष्ठ, वीर । वाकमि = वक्रता में । वींद = दुलहा । लवेरै वाळो = लवेरा जेसा भाटियों का ठिकाना है । मेर = सुमेरु पर्वत ।

९९—दुबाहौ = वीर । विवाद = युद्ध में । आहव = युद्ध में । वदै = कहे । अधूरां = अपूर्णों में ।

१००—कळहण = युद्ध का । गैलौ = मार्ग । दबीकळ = सर्प । हणूं = हनुमान् ।

१०१—भारथ = युद्ध । वळै = फिर । सचाळौ = समर्थ, श्रेष्ठ । उताळौ = त्वरा से ।

१०२—वागां = लड़ने पर । सुजाव = पुत्र । वाजियां = बजने पर, चलने पर । मृत कोडे = मृत्यु के उत्साह से, मृत्यु की खुशी से । ओडे = धारण करता हुआ ।

१०३—सबलांणी = सबलसिंह का पुत्र । ओपै = शोभा देता है । अबवांणी = अभैसिंह का पुत्र ।

उगरावत वखतौ दळ ओडण, खाग हथौ आयौ खळ खंडण ।
गिरवर तणौ खळां खैंगाळौ, भाखर भड़ां विचै भुरजाळौ ॥१०४॥
हरदासौत वधै जुध हाथै, मांजै धजां गजां चै माथै ।
बगसौ आयौ सुतन बहादर, अैसाइ जोड़ माधावत ईसर ॥१०५॥
आदर अणी धणी छळि आया, सेहर सजळ जिसा दरसाया ।
उदियाभांण प्रांण अणमायौ, औ किर हद न जवन सिर आयौ ॥१०६॥
जोड़ै सूरजमाल जगांणी, ओपै रीत लियां आपांणी ।
आगळि कँवर पदम रण पहौ, जगड़हरौ रूठै जम जेहौ ॥१०७॥
मेळण अणी खवा आंमोड़ै, जीवणदास दुजावत जोड़ै ।
विढवा सिवौ खेतसी वाळौ, अरि सिर सतप जिसौ ऊन्हाळौ ॥१०८॥
राजड़ तणौ दलौ छळि राजा, कळह वधै करि छेह सकाजा ।
महकौ जगपति सुतन मुदायत, सहसां गिळै तिसौ जिण सायत ॥१०९॥

१०४—ओडण=धारण करनेवाला । खैंगाळौ=नाश करनेवाला । भुरजाळौ=तलवार वाला ।

१०५—मांजै=साफ करता है । धजां=तलवारों को । जोड़=समान ।

१०६—धणी छळि=मालिक के वास्ते । सेहर=शिखर, बादल । अणमायौ=अपार । हद=मर्यादा ।

१०७—जगांणी=जगत्‌सिंह का पुत्र । आपांणी=बलवाला, अथवा अपनी । रूठै=रुष्ट होने पर । जम जेहौ=यमराज के सदृश ।

१०८—अणी=सेना से । खवा=(स्कंध) कधे को । आंमोड़ै=इधर उधर करता है । सतप=तापवाला । ऊन्हाळौ=उष्ण काल ।

१०९—छेह=अंत । मुदायत=मुख्य । सहसां=हजारों को । गिळै=गिल जाय, पेट में उतार जाय । जिण सायत=उसी वक्त ।

प्रेमो अणँद अमायै पांणी, अधवत सु छळि विन्है अमरांणी ।
माहव तणौ विजै रण मोटां, कळहै ढाल थकै नवकोटां ॥११०॥
समहरि अणी न रावत सूजै, अवरां हूँत लियै जुध ऊजै ।
ओपै हद न हरौलां आगै, भाऊ सुत भुज सेल विभागै ॥१११॥
उरजनहरा धणी छळि एहा, जुध समवड़ी न पूजै जेहा ।
सूर सुजाव हठी ससमाथां, हाथी सहत गिळै खळ हाथां ॥११२॥
सूर तणौ सांवत पण सच्चै, रूकै हाक झड़ै तद रच्चै ।
देवौ सेवै सकति दिनंकर, सांमि कांमि चाहंतां सम्मर ॥११३॥
सोभै सोभा लियण सवाई, लाखां भांजण वधै लड़ाई ।
सूरावत च्यारूं धुज सूरां, पूरै वंस प्रवाड़ां पूरां ॥११४॥
लाखौ लड़तां जेज न लावै, हरी तणौ लख धकै हलावै ।
नाहर वखतसिंघ बे नाहर, सुत लखधीर मीर लखि सिंधुर ॥११५॥

११०—अमायै=अपरिमाण, बहुत । पांणी=पानीवाला, बलवाला, मन की शक्तिवाला । विन्है=दोनों । अमराणी=अमरसिंह के पुत्र नवकोटां=मारवाड़ की ढाल ।

१११—अणी=अग्र पर । अवरां हूँत=दूसरों से । ऊजौ=बहु बलवाला । ओपै=शोभा देता है । हरौलां= सेना के अग्रभाग पर विभागै=तोड़नेवाला ।

११२—उरजनहरा=उरजनोत भाटी । समवड़ी=बराबर । पूजै= पहुँचता है । सुजाव=पुत्र । ससमाथां=समर्थ ।

११३—रूकै=तलवार से । सेवै=उपासना करता है । सकति= चंडी की । सम्मर=(समर) युद्ध ।

११४—धुज=ध्वजा रूप । प्रवाड़ां=युद्धों से ।

११५—लख=लाख मनुष्यों को । धकै=आगे । हलावै=चला है । सिंधुर=हाथी ।

पाल हरौ मधकर पूंचाळौ, साथ कँवर सिवसिंघ सिघाळौ ।
चतुर तणौ हरनाथ सचेळौ, भिळियौ जांणि अगनि घृत भेळौ ॥११६॥
सुतन सुजांण अनौ प्रिय संभ्रम, अखै बिन्है आया जम ओपम ।
अनै तणौ करि कोप अकारौ, गजन आवियौ चाळागारौ ॥११७॥
नाथौ गोवरधनोत अभै नर, गिरवर तणौ हदौ गाढां गुर ।
सांमि कांमि नवगढां सवाया, औ नवकोट धणी छळि आया ॥११८॥
रीत आद जदुवंस घरांणै, जंगां विघन जिगन सम जांणै ।
जीवण हरनाथौत सजोसौ, आसुर व्याधि हरण किर ओसौ ॥११९॥
सकज तेण लघु बंधव साथै, हाथीरांम वहण खळ हाथै ।
वखतौ जैत सुतन वरदाई, वधतेरौ घर तणी वडाई ॥१२०॥
सिवदांनौत जसौ समराथां, भिड़तौ खांन वधै भाराथां ।
भाटी वरसिंघोत भुजाळा, वाधै जुध वीकमपुर वाळा ॥१२१॥
अजबौ जगमालौत अछायौ, इण गत दलौ माधावत आयौ ।
सिरदारौ कुसळावत साथे, बळ चौगुणै भिड़ण रण बाथे ॥१२२॥

११६—पाल हरौ = गोपालदास का पुत्र । पूंचाळौ = पहुँचवाला, समर्थ । सिघाळौ = श्रेष्ठ । सचेळौ = समर्थ । भिळियौ = मिला । भेळौ = शामिल ।

११७—संभ्रम = युद्ध । ओपम = सदृश । अकारौ = अत्यंत, अधिक । चाळागारौ = युद्ध करनेवाला ।

११८—अभै = निर्भय । गाढां गुर = अति गर्ववाला । नवगढां = नवकोटी मारवाड़ के ।

११९—घरांणै = खानदान । विघन = उपद्रव । जिगन = यज्ञ । आसुर व्याधि = यवनों के दुःख को । ओसो = आँख का औषध, अंजन ।

१२०—तेण = उसके । वहण = मारनेवाला । वधतेरौ = बढ़ता हुआ ।

१२१—वरसिंघोत = भाटियों की एक शाखा है । भुजाळा = भुज बलवाले ।

१२२—अछायौ = प्रसिद्ध । इण गत = इसी प्रकार का । बाथे = भुजाओं से ।

आया जोधहरा पति आगै, भांजण पैलां आप न भागै।
पातल तणौ पाय(ल)व्रत पूरै, चौरँग भीम जिही गज चूरै ॥१२३॥
जोधै किसन तणौ राजैाधर, सेख ज्वाळ सम आयौ समहर।
जूझारौत फतौ तिण जांमळ, ज्यों विध कोप पवन पेखै जळ ॥१२४॥
नाहर करन तणौ नर नाहर, जवनां गजां सिकारी जाहर।
दूजौ वाघ वाघ वरदाई, सुतन विहारी मुकन सवाई ॥१२५॥
जोगौ करन तणौ रिण जेहौ, आयां भारथ पारथ एहौ।
मोहण भांण तणौ जुध मारू, सार दहण त्रिण खळां सँहारू ॥१२६॥
जोड़ै पूत पतौ जैताई, सूळ खळां सादूळ सवाई।
लड़ण अणी जोगावत लालौ, भुज बळ नकुळ जिही ग्रहि भालौ ॥१२७॥
देवीदांन भांण सुत दूणौ, केवी रण साझिवा अकूणौ।
सुत बांनेत लखौ तिण सायत, मगज हरौलां सदा मुदायत ॥१२८॥
सुत चँद्रभांण आसकन साथे, भिड़तां सहँस जिसौ भाराथे।
ओपै दळां पिथावत ऐसौ, जुध पैलां अंतक तक जैसौ ॥१२९॥

१२३—जोधहरा = जोधा राठौड़। पैलां = शत्रुओं को। पाय(ल)० = गोपालदास। व्रत पूरै = प्रतिज्ञा को पूर्ण करनेवाला। जिही = जैसे।

१२४—सेख ज्वाल = शेष नाग की क्रोधाग्नि। जांमळ = भाई।

१२५—नर नाहर = नृसिंह रूप।

१२६—एहौ = ऐसा, सदृश। सार दहण = तलवार रूपी अग्नि। त्रिण खळां सँहारू = शत्रु रूपी तृण का संहार करनेवाला।

१२७—नकुळ = चौथा पांडव।

१२८—केवी = शत्रुओं को। साझिवा = जीतने के लिये। अकूणौ = पूर्ण। बांनेत = बाना रखनेवाला। मगज = मस्तक, अग्रणी। मुदायत = मुख्य।

१२९—सहँस जिसौ = अकेला हजार भटों के समान। भाराथे = युद्ध में। ओपै = शोभा देता है। अंतक तक जैसौ = काल की दृष्टि के सदृश।

सारां मौहर दुजौ सबळावत, रिण गज घड़ा विधूंसण रावत ।
सुत जालम दोनूं अड़साळा, सूजौ अनौ विनौ सिव ज्वाळा ॥१३०॥
अनै नाथ सुत खड़ग उनंगी, लोहां बोह लियण हर लग्गी ।
जुध नीमियां हठौ जोगांणी, अरि तन त्रजण ध्रवण ऊबांणी ॥१३१॥
जिण गुण सुतन गुमांनौ जोड़ै, तिजड़ै सूंड गजां रिण तोड़ै ।
जोध तणौ साहिबौ सजोरौ, कुळ विध भिळै लोह लखि कोरौ ॥१३२॥
जैसिंघोत भांण त्यां जोड़ै, मिळिया अणी निबांबां मोड़ै ।
जोरौ फतमालोत सजोरौ, तोड़ै गजां भुजां सुज तोरौ ॥१३३॥
माहव खागां अमळी मांणां, सुतन किसोर वधै अवसांणां ।
सिवदांनौत फतौ विध साथां, भेळौ भिड़ज जिसौ भाराथां ॥१३४॥
नाथ तणौ सकतौ जुधनायक, सूर सधीरां तणै सहायक ।
हरी फतावत दूणौ हाथां, समहर वेळा ढाल समाथां ॥१३५॥

१३०—मौहर = अगाड़ी । घड़ा = सेना को । अड़साळा = कंटक, काँटा । विनौ = दोनों । सिव ज्वाळा = महादेव की नेत्राग्नि के समान ।

१३१—उनंगी = नंगी तलवार । लोहां = शस्त्रों की । बोह = गंध । हर = इच्छा, चाह । लग्गी = हुई । नीमियां = नियम लिए । जोगांणी = जोगा का पुत्र । अरि० = शत्रुओं के शरीर काटने के लिये तलवार ऊँची की अर्थात् प्रहार करने को उठाई ।

१३२—जिण गुण = उसके समान गुणवाला । तिजड़ै = तलवार से । लोह = शस्त्र को । कोरौ = साबित, निर्लिप्त ।

१३३—मोड़ै = पीछे हटाता है । तोरौ = प्रभाव ।

१३४—अमली मांणां = बड़ा अभिमान रखनेवाला । अवसांणां = समय पर । भेळौ = शामिल । भिड़ज = घोड़ा ।

१३५—तणौ = का । तणै = के, के लिये । समाथां = समर्थ ।

लड़िवा भांण तणै प्रब लाधै, वाघौ वाघ तणी पर वाधै।
कमध अमांमैा उग्र करग्गै, वाधै अमर तणैा खगवग्गै ॥१३६॥
दीप तणैा आंनैा खग दीपक, असुर पतंगां जंगां अंतक।
तिजड़ हथैा दीपावत तेजो, आहव लड़वा सदा अजेजो ॥१३७॥
आईदांन जसावत ऐसैा, जुध पति जतन ढाल रिण जैसैा।
पदम दलावत दूणैा पांणै, जुध दव रूप खळां चिण जांणै ॥१३८॥
कमधे फलमालैात किसोरैा, जिण दीठां खळ दळां निजोरैा।
सोहै माहब तणैा सवाई, रिण जिण खड़ग वसै सुरसाई ॥१३९॥
रूप विजावत काळ रवद्दां, वेळ लाज जुध काज विरद्दां।
सुतन गुमांन अभौ खग साहै, महा जोध दळ जोधां मांहै ॥१४०॥

१३६—तणै = पुत्र। प्रब = (पर्व) युद्ध। वाघ तणी पर = व्याघ्र के समान। कमध = राठौड़। अमांमौ = महाबलशाली। करग्गै = हाथों का। तणौ = का। खगवग्गै = तलवार चलने पर।

१३७—अंतक = काल। तिजड़ = तलवार। आहव = युद्ध में। अजेजो = विलंब न करनेवाला।

१३८—दव रूप = दावानल के समान। चिण = चिनगारी, अग्नि का कण।

११९—कमधे = राठोड़। सोहै = शोभा देता है। सुरसाई = देवों की साई अर्थात् स्वर्ग में ले जाने का प्रथम दिया जानेवाला द्रव्य। कोई वस्तु खरीदते हैं तब सौदा पक्का करने के लिये प्रथम कुछ द्रव्य दिया जाता है उसे साई देना कहते हैं। यदि खरीदनेवाला इनकार कर जावे तो साई का द्रव्य बेचनेवाला पीछा नहीं देता। इसके लिये कहावत है "साई खाई।"

१४०—रवद्दां = मुसलमानों का। वेळ लाज = लज्जा, युद्धकार्य और विरुद की मर्यादारूप।

करन तणौ माहव कळ हेवा, सदा सकति हित धारै सेवा ।
देवावत नाहर वरदाई, समहर वांका भड़ां सहाई ॥१४१॥
वखतौ अगळी वेढीगारां, जगपत हरौ तिलक जूझारां ।
भाटी जोधां मुहर भुजाळौ, सकतौ भगवानोत सिघाळौ ॥१४२॥
अै जोधा आया नृप आगै, लड़ता जैत इसा मन लागै ।
ऊदा आया जोस अफारै, किर ग्रीखम रवि ताप करारै ॥१४३॥
रिदैरांम राजैाधर वाळौ, किर छेड़ियौ भुयंगम काळौ ।
दीन्हा डांण जसै ऊदल्लै, पातल तणा करण जस पल्लै ॥१४४॥
वखतौ मांन बिन्हे रण वेळा, खगे सु भावत होळी खेळा ।
सूरां आपण नूर सवाई, मांन तणौ उर खळां अमाई ॥१४५॥
सांमळ सुतन मुकन किर सेहर, अप खग धार बुझायण आसुर ।
गोयँद तणौ चंद गह छायौ, औ छळ धणी अणी हुय आयौ ॥१४६॥

१४१—कळ हेवा = युद्ध करने का जिसका स्वभाव है ।

१४२—अगळो = अग्रणी । वेढीगारां = युद्ध करनेवालो में । मुहर = अगाड़ी । भुजाळौ = बाहुबल वाला । सिघाळौ = श्रेष्ठ, अग्रणी ।

१४३—जैत = जय । ऊदा = ऊदावत राठोड़ । अफारै = बहुत, अधिक । करारै = अधिक, प्रबल ।

१४४—भुयंगम = सर्प । डांण = दाँव । ऊदल्लै = ऊदावत । पल्लै = झोले में ।

१४५—वेळा = समय । खगे = तलवार से । भावत = पसंद करता है । होळी खेळा = होली का खेल । आपण = देने के लिये । नूर = तेज । अमाई = नहीं समानेवाला ।

१४६—सेहर = (शिखर) मेघ । अप = अपनी । बुझायण = बुता देनेवाला, शांत करनेवाला । आसुर = मुसलमानों को । गह छायो = गर्व से भरा हुआ । छळ = वास्ते । अणी = सेना का अग्रभाग ।

अजबौ रूप तणौ अवतारी, कळह वरण वधि घड़ा कुँवारी ।
वखतैप दी सुतन धन वांटै, अभमल सु छळ लड़ण रण आंटै ।।१४७।।
पाहाड़ो चाडण कुळ पांणी, ओडि वधै आहव कुसलांणी ।
हरनाथैात कलौ असि हाथां, मेळै मौहरि जिसौ समाथां ।।१४८।।
नाथैा दीप तणै दळ नायक, वाधै कळह कहै सुज वायक ।
जगराजो(मो)त धणी छळि जोरौ, तेढां भड़ां दिखावै तोरौ ।।१४९।।
जोड़ै रूप तणौ जगपत्ती, केवी घड़ां धपावण कत्ती ।
अरि भांजण हरिकिसन अखांणी, पूरै जोबन रीत पुरांणी ।।१५०।।
मयाराम तन मांन अमायौ, अभै तणौ वह दरगह आयौ ।
सबळावत सिवदांन समाहौ, उर नित कळह करण ऊमाहौ ।।१५१।।
करन प्रताप तणौ जुध कारण, विमुहां करै जिसौ अरि वारण ।
अजबावत जोधौ दळ आगळ, केवी गळै जेम जळ कागळ ।।१५२।।

१४७—अवतारी=अवतार हो जैसा। कळह=युद्ध में। वरण=पाणिग्रहण करने के लिये आगे बढ़ता है। घड़ा=सेना को। कुँवारी=क्वाँरी। आंटै=वास्ते।

१४८—चाडण=चढ़ानेवाला। पांणी=कुल की प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला। ओडि=तरफ, युद्ध की तरफ। कुसलांणी=कुशलसिंह का बेटा। असि=तलवार।

१४९—सुज=वह। तेढां=वक्र, बाँके। तोरौ=प्रभाव।

१५०—घड़ां=सेनाओं को। धपावण=तृप्त करनेवाला। कत्ती=कितनी ही। अखांणी=अखैराज का पुत्र। पूरै=पूर्ण।

१५१—अमायौ=नहीं समानेवाला, पूर्ण। दरगह=राजसभा में। समाहौ=समर्थ। ऊमाहौ=उत्सुक।

१५२—विमुहां=विमुख। अरि वारण=शत्रुओं के हाथियों को। गळै=गल जाते हैं। कागळ=कागज।

हरनाथोत अनौ हाथाळौ, चित जिण हरख वधै लख चाळौ ।
मांन विजैात निजर दिन मावै, कान्ह तणा जुग सिंघ कहावै ॥१५३॥
रोस अछाकै़ा नवल रुघांणी, परजिण बंधु तूटतां पांणी ।
सत्रां लड़ण गोवरधन सारां, हेक हदावत जिसौ हजारां ॥१५४॥
जोगावत पेमैा तिण जांमल, दिल विळकुळै मिळै जद कंदळ ।
वछराजोत अखैा वरदाई, पायां कळह जांणि रिध पाई ॥१५५॥
सबळावत ईंदो दळ साथै, हुबियां दळां अगनि सम हाथै ।
सूजावत किसनौ खळ साभ्रण, वाय प्रळै किर समभ्रै वाजण ॥१५६॥
जंग हरौल सिंघ जोरावर, तिजड़ै नाम तणै गुण तूंअर ।
इम सुरतांण कुँवर मुँह आगै, लड़तां ढाल जिसौ भुज लागै । १५७॥
किरतावत वाघैा रण कंदळ, बंधव जोड़ै जैत महाबळ ।
सुजड़ा हथ जोरावर साथे, भाई लड़ण वधै भाराथे ॥१५८॥

१५३—हाथाळौ = बड़े हाथोंवाला अथवा सिहरूप । चाळौ = युद्ध, उपद्रव । जुग = संसार में ।

१५४—रोस = क्रोध से । अछाकौ = भरा हुआ । रुघांणी = रघुनाथसिंह का पुत्र । परजिण० = (पर्जन्य) जल के समास होने पर जैसे मेघ सहायक हो वैसे यह मेघ का बंधु है । सत्रां = शत्रुओं के । सारां = तलवारों से । हेक = एक ।

१५५—जांमल = भाई । विळकुळै = व्याकुल होता है, उत्साहित होता है । कंदळ = युद्ध । रिध = ऋद्धि ।

१५६—हुबियां = लड़ने पर । साभ्रण = जीतनेवाला, रोकनेवाला । बाय = वायु । प्रळै = प्रलय । वाजण = हवा का चलना ।

१५७—तिजड़ै = तलवार से । तणै = विस्तृत करता है । तूंअर = तुंवर वंश का क्षत्रिय ।

१५८—कंदळ = नाश करनेवाला । जोड़ै = साथ । सुजड़ा = तलवार । भाराथे = युद्ध में ।

पीथल पैहल अणी खग प्राजै(भै), ईसर तण पूरस भुज आभै ।
तूंअर जोड़ तिकां भारी तड़, भेळा कूंपां तणै महाभड़ ॥१५९॥
ऊदां सँग माहवौ अखावत, सझियां खग आयौ सकतावत ।
जोरावर सकतावत जोड़ै, तेजल तणौ गजां ढल तोड़ै ॥१६०॥
अै ऊदा मातै आरांणै, ज्वाळा घृत्त पूरियौ जांणै ।
दूदाहरा नरां पत दीठा, अरि त्रिण जाळण ति किर अँगीठा ॥१६१॥
सेर हजारां जोड़ै सेरौ, सिरदारौ ति कोपि सरसेरौ ।
जुध बंधव सूरजमल जोड़ै, अचळ जिही बळ लाखां ओडै ॥१६२॥
लड़िवा भोमसिंघ खग लीधै, कुसळ सुजाव मरण पण कीधै ।
सांमौ जैत सुतन मन सच्चै, आज इसौ खग रुहिर अरच्चै ॥१६३॥
जुध कजि अचळ तणौ जूंझारौ, कुँवर वणै रिण वार अकारौ ।
कुसळावत सुरतांण करग्गै, खग तोलै भांजण गज खग्गै ॥१६४॥

१५९—प्राजै = उत्कट, उत्कृष्ट । आभै = (अस्ति) है । अधिक । जोड़ = सदृश । तड़ = समाज, पक्ष, पार्टी । भेळा = शामिल । कूंपां = कूंपावत राठौड़ ।

१६०—ऊदां = ऊदावतों के । माहवौ = माधोसिंह । ढल = समूह ।

१६१—अै = ये । मातै = महाप्रबल । आरांणै = युद्ध में । दूदाहरा = मेड़तिया राठोड़ । दीठा = देखे । अरि त्रिण = शत्रुरूपी घास को । ति = वे । अँगीठा = अंगीरा ।

१६२—सेर = सिंह । कोपि = कोप करने में । सरसेरौ = अच्छा, भला । जिही = जिसका । लाखां ओडै = समान है ।

१६३—सुजाव = पुत्र । पण = प्रतिज्ञा । रुहिर = रुधिर । अरच्चै = पूजता है ।

१६४—वणै = तैयार होता है । वार = समय । अकारौ = अति तीक्ष्ण । करग्गै = हाथ से । खग्गै = (खैंग) घोड़ा ।

जसकरणोत चंद खग जेठी, कळह अवर नर करण कणेठी।
अभै अखै खग गुणां अढंगां, भोज तणा भांजण अणभंगा ॥१६५॥
पदमरांम रिण मौसर पायां, सकज कलावत गुणां सवायां।
सहसमाल धुज जगड़ सिघाळां, भाई बे मौहर भूपाळां ॥१६६॥
अै मधकर हर समर अरेहा, जवनां जहर पियालै जेहा।
सूर तणौ जैतौ पण सच्चै, मनि तद रजै कळह जद मच्चै ॥१६७॥
समहर बंधव जोड़ समेळौ, अमी जिसौ मांनै ऊखेलौ।
वखतौ सूर तणौ वरदाई, राड़ उधारी लियण पराई ॥१६८॥
माहव मांन तणौ पट मोटै, कियौ सवाय अभै नवकोटै।
भगवत मुहकम तणौ भुजाळौ, विढतां न धरै ताळ विमाळौ ॥१६९॥
थानसिंघ मिळियां गज थट्टां, रासावत ओपै रजवट्टां।
हिमतौ अणी वधावणहारां, जगमालोत धुजा जूँझारां ॥१७०॥

१६५—खग जेठी = तलवार चलाने में जेठी मल्ल के समान। कळह० = युद्ध करने में दूसरे मनुष्य उससे कनिष्ठ अर्थात् छोटे (कम) हैं। अढंगां = विकट।

१६६—मौसर पायां = मौका, अवसर मिलने पर। कलावत = कल्याणसिंह का पुत्र। धुज = सेना में। सिघाळां = श्रेष्ठ। मौहर = आगे।

१६७—मधकर हर = माधोसिंहोत। अरेहा = पीछे न हटनेवाले। मनि० = मन में खुश होता है। मच्चै = शुरू होता है।

१६८—समेळौ = सुमेलसिंह। अमी = अमृत के समान। ऊखेलौ = युद्ध को। राड़ = युद्ध।

१६९—पट मोटै = बड़ा पटावाला, बड़ी जागीरवाला। विढतां = युद्ध करते। ताळ = समय। विमाळौ = विचार।

१७०—ओपै = शोभा देता है। रजवट्टां = रजपूती में। धुजा = ध्वजा, अग्रणी।

माहव तणौ नवल खळ मिळियां, अवसर गै धारां ऊजळियां ।
जंगे वधे हठावत जीवण, प्रिसणां हार दियण आदू पण ॥१७१॥
जुध दांणी पांणे दळ जोड़ै, मदनावत गज कुंभ मरोड़ै ।
गिरवर कै वैणौ गजराजां, नरपति छळ पोखै नाराजां ॥१७२॥
रूके विकट अनावत रासौ, प्रिसणां खाग जिसौ जम प्रासौ ।
विसन हरा आया वरदाई, वाघारण मेड़तै वडाई ॥१७३॥
दळरांमोत मुकन बळ दाखै, अरि तिण गिणै वयण मुख आखै ।
विनौ दलावत जगत वखांणै, अधपत तणी फतै मन आंणै ॥१७४॥
सुत पीथल खुलियां रण सारां, हेक पतौ सम सिंघ हजारां ।
वीर फकीरदास वरदाई, सुतन जोध कुळ बोध सवाई ॥१७५॥
रायां माल हरा रढ रांमण, दीठा धणी ऊदमा दांमण ।
चांदै अभौ विजावत चावौ, लेखै खळां वाज जिम लावौ ॥१७६॥

१७१—खळ मिळियां=शत्रुओं की भेंट होने पर। गै=हाथी। धारां ऊजळिया=तलवार की उज्ज्वल धारा के समय। प्रिसणां=शत्रुओं को।

१७२—जुध दांणी=युद्ध की लाग (टक्स) लेनेवाला। पांणे=सामर्थ्य से। दळ जोड़ै=सेना को एकत्र करके। मरोड़ै=नाश करता है। नाराजां=(नाराच) बाणों को।

१७३—रूके=तलवार से। जम प्रासौ=यमराज के प्रास शस्त्र के सदृश। मेड़तै=मेड़ता नामक नगर।

१७४—दाखे=दिखाया। वयण=वचन से। आखै=कहते हैं। तणी=की।

१७५—खुलियां=चलने पर, आरंभ होने पर। सारां=तलवारों के। हेक=एक।

१७६—रायां माल हरा=रायमलोत। रढ रांमण=वीर। ऊदमा=उद्यम करनेवाले। दांमण=मालिक के चरणों के सेवक। चांदै=

ओपै नाथ अखावत ऐसौ, तिजड़ां आग झड़ै रिण तैसौ ।
देवै चंदहरां वरदाई, सुतन जोध कुळ बोध सवाई ॥१७७॥
नवल तणौ हिंदू ध्रम नेहौ, जवन महण लख अगसत जेहौ ।
चांदाहरौ सुखो कळ चाळौ, लाखां वधै मिलै जद लाळौ ॥१७८॥
रुघपति हरां जोड़ राजेसर, गयँद हरण हरवळ गाढां गुर ।
धजवड़ हथौ अमर तण धीरौ, असि रण मेळण मुहर अधीरौ ॥१७९॥
गिरवर तणौ घणौ धर गुम्मर, सिवौ नवो नित करणौ समहर ।
आंरौ जोस निजर जद आयौ, भूप अणी जीमणौ भळायौ ॥१८०॥
आया राजा काज उताळा, वणियां अणो मेड़तावाळा ।
सकतीपुरा लाज भुज साहै, आयां सांमि जतन ओछाहै ॥१८१॥

चादावतों में। चावौ = प्रसिद्ध। लेखै = गिनता है, मानता है। बाज = मादा शिकरा। लावौ = चिड़िया विशेष।

१७७—तिजड़ां = तलवारों से। आग = अग्नि।

१७८—हिंदू ध्रम नेहौ = हिंदू-धर्म से स्नेह रखनेवाला। महण = समुद्र। अगसत = अगस्त्य मुनि के सदृश। चांदाहरौ = चांदावत। कळ चाळौ = युद्ध करनेवाला। लाळौ = लोभ।

१७९—रुघपति हरां = रघुनाथसिंहोत मेड़तिया। जोड़ राजेसर = राजराजेश्वर के सदृश। गयँद हरण = हाथियों का नाश करने के लिये। हरवल = अग्रणी। गाढां गुर = बड़े दृढ़। धजवड़ = तलवार। तण = पुत्र। असि = घोड़ा। मुहर = अगाड़ी। अधीरौ = त्वरावाला।

१८०—आंरौ = इनका। अणी = सेना। जीमणौ = दक्षिण की तरफ का। भळायौ = सुपुर्द किया।

१८१—उताळा = त्वरावाले। सकतीपुरा = चौहान। साहै = धारण करते हैं। ओछाहै = उत्साह के साथ।

दीठौ हरी केहरी दावै, लाल सुतन तप अगन लजावै।
सिखर हरौ मोहकम अवसांणै, पीथल कांन उजाळै पांणै ॥१८२॥
वेखै कटक कमंधांवाळा, लाल सुतन जोड़ै लंकाळा।
चुतर तणौ अजबौ पण चावै, काळ रूप रण ताळ कहावै ॥१८३॥
अजब सुजाव गुणां अदभूतां, समहर नाथौ धुजा सपूतां।
सदौ दलावत वाधै सूरां, हेवै दळे वरावण हूरां ॥१८४॥
तेजौ चन्द तणौ खग तैसौ, जुध कुण सहै धकौ खल जैसौ।
जोड़ै कुँवर अनौ पित जेहौ, सत्रां अनेहौ दळां सनेहौ ॥१८५॥
सुतन मुरार करार सत्रायौ, आयौ मधकर गुमर अमायौ।
सुत हरनाथ पाथ जिम सारै, आयौ गिरवर खड़ग उभारै ॥१८६॥
रिण मृत नेम नीमियां रावत, समहर वरण दुजौ सबळावत।
लाल सुतन इन्दौ विच लाखां, सोभ धरण चौबीसां साखां ॥१८७॥

१८२—केहरी दावै = कसरीसिंह के समान। तप अगन लजावै = अग्नि के ताप को लज्जित करता है। अवसांणै = समय पर। उजाळै पांणै = उज्ज्वल सामर्थ्यवाला।

१८३—वेखै = देखकर। कटक = सेना को। कमंधांवाळा = राठोड़ों के। लंकाळा = वीर। पण = प्रतिज्ञा। चावै = प्रसिद्ध। रण ताळ = युद्ध के समय।

१८४—सुजाव = पुत्र। धुजा = ध्वजा, अग्रणी। हेवै = आदतवाला। हूरां = अप्सराओं को।

१८५—सत्रां अनेहौ = शत्रुओं से वैर करनेवाला। दळां सनेहौ = अपनी सेना से स्नेह करनेवाला।

१८६—करार = बल, शक्ति। पाथ = अर्जुन के समान। सारै = तलवार में। उभारै = उठाए।

१८७—मृत नेम नीमियां = मरने का नियम किया हुआ। समहर = युद्ध में। वरण = कबूल करने के लिये। सोभ = शोभा। चौबीसां साखां = चौहानों की चौबीस शाखाएँ हैं।

विढवा प्रथम अणी रसवाया, अै मछरीक वणी कळ आया।
चूंडौ मुकन सुजाव सचेळौ, भूप तणै छळि केहर मेळौ ॥१८८॥
आया कमा धजा उमरावां, पीठ अफेर मेर सम पावां।
ऊदौ हरनाथोत अभीतौ, चाहै जुध तांमौ जिम चीतौ ॥१८९॥
गोपीनाथ तणौ गाढां गुर, आयौ अजबौ दळां उजागर।
पदमौ खड़गसिंघ खग पांणै, जोड़ै सिंघ जसावत जांणै ॥१९०॥
उदियासिंघ जोड़ जुध ईखौ, सिंभू सिंभ नयण सारीखौ।
रूक अचूक कलावत रासौ, विढतां सकत करै खग वासौ ॥१९१॥
असि कसि जैत लखावत आयौ, धुबतौ आरण जांण धूमायौ।
सुत गिरधर जीपण घमसांणां, ओ गोकळ अंतक असुरांणां ॥१९२॥
माहव तणौ सिवो दळ मंडण, खित छळि धणी अणी खळ खंडण।
माहव तण सावँत मिणधारी, आयौ रण चाहंतौ उधारी ॥१९३॥

१८८—विढवा = युद्ध करने के लिये। रसवाया = वीर रस से व्याप्त। अै = ये। मछरीक = चौहान। वणी = तैयार होकर। सचेळौ = समर्थ। मेळौ = शामिल।

१८९—कमा = करमसोत राठौड़। तांमौ = कुपित। चीतौ = व्याघ्र, चीता।

१९०—उजागर = प्रसिद्ध। पांणै = हाथ में।

१९१—सिंभ नयण = महादेव के तृतीय नेत्र के सदृश। रूक = तलवार। विढतां = युद्ध करते। सकत = शक्ति। वासौ = निवास।

१९२—असि कसि = घोड़े को कसकर। धुबतौ = युद्ध करता हुआ। आरण = युद्ध में। धूमायौ = प्रज्वलित किया हुआ। जीपण = जीतने के लिये। घमसांणां = युद्ध में। अंतक = काल।

१९३—खित = पृथ्वी के लिये। मिणधारी = मुकुट।

वीठळ तणौ खगै वरदाई, सकतौ आयौ रीत सवाई ।
करमसीयोत धणी छ्ळि केहा, जंगम प्रथम वजै खगि जेहा ।।१९४।।
भांजण दुयण टवै ज्यां भाला, बळ खळ हरण दरसिया बाला ।
सिवौ पिराग सुत आगि सरीखौ, अरि वन जळै तिसौ तन ईखौ ।।१९५।।
सकजां सीम गुमांन समाथां, हठमालोत दळण खळ हाथां ।
सबळसिंघ पबराज सवाई, सुतन रूप छ्ळि भूप सहाई ।।१९६।।
सुत भगवांन सुजांण सकज्जां, कस वाधै वीरा रस कज्जां ।
अनौ रुघावत करण उखेळा, बंद्र नील जिसौ रण बेळा ।।१९७।।
खेम कलावत जेम खड्ग्गां, वाधै समर न कौ अरि खग्गां ।
वयणां वधी अणी उरवाला, वाधै पण आया रण बाला ।।१९८।।
आहव भार तणा भुज अनड़, आया सांम तणै छ्ळि ऊहड़ ।
हरियँद तणौ सिवौ रण हाथां, बळ जिण अतुळ हुबां खळ बाथां ।।१९९।।
बांकीदास कळह विगताळौ, वाधै करां रिणम्मलवाळौ ।
सामावत खग चंद सवायौ, दूजां अणी दिसौ दरसायौ ।।२००।।

१९४—केहा = कैसे । जंगम = घोड़ा । वजै = युद्ध करे । खगि = खड्ग से ।

१९५—दुयण = शत्रुओं को । टवै = भाले का अग्र, अनी । ज्यां = जैसे । तन = शरीर ।

१९६—सकजां सीम = कार्य करनेवालों में परमावधि । समाथां = समर्थों में । छ्ळि = युद्ध में ।

१९७—कस = सार, बल । उखेळा = युद्ध, उपद्रव ।

१९८—वाधै = बढ़कर है । वयणां = वचनों से । उरवाला = मनस्वी, वीर । बाला = बाला राठोड़ ।

१९९—आहव = युद्ध । अनड़ = अनम्र । ऊहड़ = राठोड़ों की एक शाखा । हुबां खळ बाथां = शत्रुओं से भिड़ने पर ।

२००—विगताळो = उदार चरितवाला । रिणम्मलवाळो = रणमल का पुत्र ।

जैतहथौ जैतौ जाळाहळ, उदियारांम तणौ दळ आगळ ।
मिणयड़ छात कळौ दळ मांहे, रावळ अणी थयौ कुळ राहे ॥२०१॥
जिण छळ करन विजावत जोड़ै, मणियड़ रूप गजां घड़ मोड़ै ।
आया चाड़ धणी अड़साळा, कणियागरा इता कळिचाळा ॥२०२॥
सोनगरौ दळसाह सवायौ, उर पण मरण नीमियौ आयौ ।
सुत हरियँद दळ ढाल सहाई, मेळौ फतौ छतौ जुध भाई ॥२०३॥
हैमतसिंघ दुजावत हाथे, भड़ां सहाय जिसौ भाराथे ।
दोपै सत्रसालोत दुबाहौ, गढपति छळ दळ बेळ सगाहौ ॥२०४॥
भांण सुजाव लाल खळ भांजण, मुगळां रुहिर समर खळ मांजण ।
आगळ दळां लड़ण पण आजै, छतरावत अमरौ तिण छाजै ॥२०५॥

२०१—जैतहथौ = जय जिसके हाथ में है। जाळाहळ = ज्वालाकुल, ज्वाला से व्याप्त। आगळ = अग्रणी। मिणयड़ = मुकुट रूप। छात = राजाओं में। अणी = सेना में। कुळ राहे = कुल मार्ग से।

२०२—मणियड़ = मुकुट। रूप = रूपसिंह। गजां० = हाथियों की सेना को पीछे हटाता है। चाड़ = सहायता के लिये। अड़साळा = शत्रुओं के लिये शल्यरूप। कणियागरा = सोनगरा शाखा के चौहान। इता = इतने में।

२०३—दळसाह = दलेलसिंह। मरण नीमियौ = मरण का निश्चय किया हुआ।

२०४—भाराथे = युद्ध में। दुबाहा = वीर। छळ = वास्ते। दळ बेळ = सेना की मर्यादा।

२०५—मांजण = साफ करनेवाला अर्थात् मारनेवाला। आजै = आज। छाजै = शोभा देता है।

कणियागरा सरोस कसाया, श्रै नरपती निजर सज श्राया ।
जंगे बाथ पाथ ची जांमल, श्राया जैतमाल श्रतुळी बळ ॥२०६॥
सकतावत विसनौ श्रवसांणै, पूरै विसन जैत रिण पांणै ।
श्रमर सुजाव भीम भुज एहौ, जुद्ध भीम श्ररजण रै जेहौ ॥२०७॥
ईसर तणौ स्यांम श्रवसांणै, पावै जैत जैतहरि पांणै ।
मधकर चौ हररांम महाबळ, वेढ उछाह धरै मूंछां बळ ॥२०८॥
कमौ सांम सुत हांम करारी, धारण वदै श्रभौ छत्रधारी ।
समर काज भुज लाज सवाया, श्रै पति हुकम धवेचा श्राया ॥२०९॥
रजवट प्रगट धणी व्रत राता, पण ग्रह सगह श्राविया पाता ।
राजड़ रौ श्रायौ रैणायर, केवी हुवै धकै जिण कायर ॥२१०॥
किसन तणौ मेघौ नृप काजै, सिंघ जिसौ भड़ निवड़ समाजै ।
सूरजमाल ढाल रिण सूरां, पीथल तणौ वधै पण पूरां ॥२११॥

२०६—कणियागरा = सोनगरा चौहान । जालोर के पहाड़ को कनकगिरि कहते हैं । उसके संबंध से चौहानों की सोनगरा शाखा हुई । सोनगरा, स्वर्णगिरि से संबंध रखनेवाले । स्वर्णगिरि और कनकगिरि पर्यायवाची शब्द हैं । कसाया = कोप से रक्तवर्ण । निजर सज = नजराना लेकर । जंगे = युद्ध में । बाथ पाथ ची = अर्जुन की भुजावाले । जांमल = दो ।

२०७—अवसांणे = युद्ध में । पूरै पांणै = पूर्ण बल के साथ । एहौ = ऐसा । जेहौ = जैसा ।

२०८—जैतहरि = जैतमालोत । मधकर चौ = माधोसिंह का । वेढ = युद्ध का । मूंछां बळ = मूछों में वक्रता ।

२०९—हांम = हिम्मत । करारी = प्रबल । वदै = कहता है । धवेचा = राठोड़ों की एक शाखा ।

२१०—रजवट = रजपूती । राता = रक्त, अनुरक्त । पाता = पातावत राठोड़ । रैणायर = रणमल । केवी = शत्रु । धकै = आगे ।

२११—निवड़ = (निपट) अत्यंत वीर, समाज से निबड़नेवाला ।

इंद्रभांण दळ रूप सऔधां, जोध तणौ आगळ छळ जोधां।
रूपै जिसौ इसौ रिण वेळा, भुज किर मिळै गयण चै भेळा ॥२१२॥
गह पूरत बदरौ दुरगांणी, विढ रण जेत्रसिंघ चीबांणी।
गोगादे आयौ गाढां गुर, जगतौ रिदै तणौ जोरावर ॥२१३॥
सबळ तणौ वळ दाख सवायौ, अण भँग रूप धणी छळ आयौ।
हरजी बलू तणौ हाथाळौ, चाहड़दे आयौ कळ चाळौ ॥२१४॥
खेतसीयोत लड़ण रण खागै, आयौ धनौ अखावत आगै।
देवावत भोजौ वरदाई, जोड़ै लड़ण कमध जैत्राई ॥२१५॥
अभै तणै कारण सझ ईंदा, आया सिंघ जांण ओनींदा।
एक लखौ लख सूरां ओड़ै, जैत सुजाव चौगुणौ जोड़ै ॥२१६॥
ईंदौ परब परब आभाळौ, भोज सुतन अनसाह भुजाळौ।
जैत सुजाव जोत जगपत्ती, वधै खीज किर वीज विरत्ती ॥२१७॥

२१२—सऔधां=खानदानी, कुलवान्। आगळ=अग्रणी। छळ= युद्ध में। जोधां=जोधा राठोड़ों में। गयण चै=आकाश के। मेळा=शामिल।

२१३—गह पूरत=गर्व से भरा हुआ। दुरगांणी=दुर्गदास का बेटा। विढ=लड़कर। चीबांणी=चीबा का बेटा।

२१४—दाख=दिखलाकर। हाथाळौ=बड़े हाथवाला, बलवान्। चाहड़दे=राठोड़ों की शाखा।

२१५—खेतसीयोत=राठोड़ों की शाखा। कमध=राठौड़। जैत्राई= जीतनेवाला।

२१६—तणै=वास्ते। ईंदा=पड़िहारों की एक शाखा। ओनींदा= (उन्निद्र) जागृत। ओड़ै=सहश, धारण करे, सहन करे। सुजाव=पुत्र।

२१७—परब=(पर्व) समय समय पर। आभाळौ=बड़ा तेजस्वी। जाज्वल्यमान। जोत=तेजस्वी। खीज=क्रोध। बीज=(विद्युत्) बिजली। विरत्ती=बड़े बेढंग की।

देवीदास करन सुत दोमज, कैरव करन जिसौ राजा कज ।
रांम तणौ कुसळौ अण रेहौ, समरां लागै भड़ां सनेहौ ॥२१८॥
आहव खाग ध्रवण ऊबांणां, खेड़ेचां आगै खूमांणां
सुंदर तणौ खाग खग साहौ, मौहर अणी वणी कळ माहौ ॥२१९॥
साथे दोलौ कँवर सवायौ, असमर हथौ खांन तण आयौ ।
साहँस घणै हरी सब लांणी, पिरियां वडां चडावण पांणी ॥२२०॥
सुत माहेस हरी वधि सेल्हां, पाड़ै जिसौ अखाड़ै पैलां ।
कळहण खीची वणै करारी, धणी जतन जाया व्रतधारी ॥२२१॥
सुत गोकळ ऊदौ व्रत साहै, आयौ लड़ण राव ऊमाहै ।
दारण मारण खळां दयाळौ, वाधै दळ गोपाळे वाळौ ॥२२२॥
धणी जतन जोधौ धुर धम्मळ, जोगावत रावत चै जांमल ।
बाप जोड़ हरनाथ महाबळ, जोध तणौ पौरस्स जळाहळ ॥२२३॥

२१८—दोमज = वैभवशाली, बड़ी भुजावाला । कैरव = कौरव । करन = कर्ण, सूर्यपुत्र । अण रेहौ = पराजित न होनेवाला ।

२१९—आहव = युद्ध में । खाग ध्रवण = खड्ग को धारण करनेवाले । उबांणां = तलवार को ऊँची उठाए हुए । खेड़ेचां = राठोड़ों के । खूंमांणा = सीसोदिया क्षत्रिय । खग साहौ = तलवार धारण किए । मौहर = आगे की । कळ माहौ = युद्ध में ।

२२०—असमर = तलवार । पिरियां = पीढ़ियाँ, वंश-परंपरा । वडा = पूर्वजों की । चडावण पांणी = तेज बढ़ानेवाला ।

२२१—वधि = बढ़ा हुआ । सेल्हां = भालों से । पाड़ै = गिरावै । पैलां = शत्रुओं को । कळहण = युद्ध में । खीची = चौहानों की एक शाखा । करारी = समर्थ, बलशाली ।

२२२—साहै = धारण करता हुआ । ऊमाहै = उत्साह-पूर्वक । दारण = काटनेवाला ।

२२३—धुर धम्मळ = धोरी बैल । जांमल = भाई । पौरस्स = पुरुषार्थ से । जळाहळ = जाज्वल्यमान ।

करमावत बखतेस करारौ, गढपति छळि बळ राड़ीगारौ ।
अजबौ हरी तणौ आणंदै, वेढ तणै कज सूरज वंदै ॥२२४॥
आसावत जैसिंघ अणंडर, साख सरूप भूप छळ सद्धर ।
कुळ सिणगार फतावत केहर, मृत छळ लड़ण वधै दळ मौहर ॥२२५॥
सकतावत जुध वार सकोपौ, आयौ भडां आगळी ओपौ ।
नाहर तणौं पराक्रम नाहर, सांमावत हरखै लखि मौसर ॥२२६॥
आद लाज ज्यां प्रथम अणी री, धांधल आया चाड़ धणी री ।
ऊदावत किसनौ खग अैसो, जंगां वधै दवंगां जैसौ ॥२२७॥
भगवानो नरहर बे भाई, मुकन तणा मृत कोडि मुदाई ।
केसव कौ अखई रण कोडै, अरि दळ गिळै भुजां बळ ओडै ॥२२८॥
पतौ फतावत मन व्रत पूरै, चौरँग वार खगे खळ चूरै ।
बळ दूणै अणदौ बदरावत, कांकण सिव जैतौ किरतावत ॥२२९॥

२२४—करारौ = बलवान् । राड़ीगारौ = युद्ध करनेवाला । आणदै = आनंद मानता है । वेढ तणै कज = युद्ध के वास्ते । वंदै = नमस्कार करता है ।

२२५—अणंडर = निडर । सद्धर = समर्थ । मृत छळ = मरने के वास्ते । मौहर = अगाड़ी ।

२२६–जुध वार = युद्ध के समय । ओपौ = ओपसिंह । मौसर = समय को ।

२२७—आद = प्रथम से । ज्यां = जिनको । धांधल = राठोड़ों की शाखा । चाड़ = सहायता । दवंगां = दावानल ।

२२८—बे = दो । मृत कोडि = मरने के लिये उत्सुक । मुदाई = मुख्य । कोडै = उत्सुकता से । गिळै = निगलता है । ओडै = धारण करता हुआ ।

२२९—चौरँग = (चतुरंगिणी) युद्ध के समय । खळ = शत्रुओं को । चूरै = चूर्ण करता है । कांकण सिव = महादेव का कंकण । वृकासुर ने महादेव को तप करके प्रसन्न किया तब महादेव ने प्रसन्न होकर उसके माँगने पर यह वर दिया कि तू जिस पर हमारा यह कंकण घुमा देगा, वह मर जायगा ।

वाधै जुध हरवळां विहारी, खांन तणौ न गिणै पळ खारी ।
जीवण सबळ तणौ वधि जंगां, भालहथौ रण ढाल अभंगां ॥२३०॥
रूप सुजाव सिवौ मुँह रूकां, आहव साझण खळां अचूकां ।
दुरगावत आयौ सझि दीपौ, जुध करवा अरि साथ अजीतौ ॥२३१॥
कुसळसिंघ रिण सिंघ करग्गां, अणदावत साझिवा असग्गां ।
जगतौ छतौ जैतसी जाया, उजवाळण धांधल सझि आया ॥२३२॥
आगळ धणी लियण इधकाई, दीठा पाल हरा वरदाई ।
पण दूणौ चौरँग पड़िहारां, सोभा लियण वधै रिण सारां ॥२३३॥
सांमळ रिण चूरण खळ सारां, जोगावत आगळ जूँझारां ।
सोभौ कँवर पिता चै साथै, सांवळ सुत छैतरै समाथै ॥२३४॥
ऊदावत नाथौ सझ आयौ, सुतन लाल तिण जोड़ सवायौ ।
जगदे भांण तणौ जिण वेळा, उर हरखै वधतां ऊखेळा ॥२३५॥
जांम तणौ पणवंतां जोड़ै, मनौं इसौ दळ खळां मरोड़ै ।
लाल रूप तण संक न लेखै, दुजड़ै लड़ण वंस छळ देखै ॥२३६॥

२३०—हरवला = हरोल में । विहारी = नाम है । पळ = समय को । खारी = बुरे । भालहथौ = भाला हाथ में लिए ।

२३१—रूकां = तलवारों से । आहव साझण = युद्ध सधने के लिये ।

२३२—करग्गां = हाथों से । साझिवा = जीतने के लिये । असग्गां = शत्रुओं को । जाया = पुत्र । उजवाळण = उज्ज्वल करने के लिये ।

२३३—इधकाई = अधिकता । पाल हरा = पाबू के वंशज । चौरंग = युद्ध में । पड़िहारां = क्षत्रियों का एक वंश । सारां = तलवारों से ।

२३४—सारां = सब । जूँझारां = युद्ध में जूझनेवाले । छैतरै = छिन्न-भिन्न करता है । समाथै = समर्थ ।

२३५—उर = मन में । ऊखेळा = युद्ध ।

२३६—पणवंतां = प्रतिज्ञावालों के, नियमवालों के । जोड़ै = साथ । मनौं = नाम है । मरोड़ै = नाश करता है । दुजड़ै = तलवार से । छळ = युद्ध में ।

असमर हथौ जसौ आझाळौ, वेढै माल राजसी वाळौ।
पदम फतावत रीत पुरांणी, पढुवां कळह चढ़ावण पांणी ॥२३७॥
नाथ तणौ अखई कुळ नायक, वाधै जैत कहै सुज वायक।
सांमि जतन कुळ लाज सवाया, अै पड़िहार भार ग्रहि आया ॥२३८॥
लड़ खाटण रण विरुद सलोभा, सोभावत आया दळ सोभा।
दलौ भलौ रिण वियौ दयाळौ, वाधै रिण रैणायर कालौ ॥२३९॥
प्राग तणौ कुळ लाज सपातौ, तुलछीदास अगन सम तातौ।
सौह चढावण तेरह साखां, लखौ प्राग तण ओडण लाखां ॥२४०॥
विढवा चंद गोरधनवाळौ, अरिसर सोखण जांण उन्हाळौ।
रिण वानर हरिनाथ अरेहौ, सुत नारण पति काज सनेहौ ॥२४१॥

२३७—असमर = तलवार। आझाळौ = वीर, तेजस्वी। वेढै = लड़ता है। पढुवां = मनुष्यों का। कळह = युद्ध में। चढ़ावण पांणी = तेज बढ़ानेवाला।

२३८—जैत = जय को। सुज = वह। वायक = वचन। भार ग्रहि = युद्ध का भार उठाकर।

२३९—खाटण० = उपार्जन करने के लिये, हासिल करने के लिये। विरुद = यश, उपाधि। सलोभा = लोभ-सहित, इच्छावाले। सोभावत = जैतमाल राठोड़ों की एक शाखा। सोभा = शोभा देनेवाले। वियौ = दूसरा। रैणायर = रणमल। कालौ = कल्याण सिंह।

२४०—सपातौ = पात्र। अगन = अग्नि। सौह = शोभा, उत्साह। तेरह सखां = राठोड़ों की शाखाएँ तेरह हैं। ओडण = धारण करनेवाला।

२४१—विढवा = लड़ने के लिये। अरिसर = शत्रु-रूपी सरोवर को। उन्हाळौ = उष्णकाल। वानर = भाटियों की एक शाखा। अरेहौ = पीछे न हटनेवाला। सनेहौ = स्नेहवाला।

पेमावत जोड़ै पण धारी, आयौ तेजल रीत अतारी।
अै वानर भाटियां उजाळा, लोहा बोह लियण लंकाळा ॥२४२॥
रांम तणौ रिणछोड़ रढालां, धांधू वधि वाजण धाराळां।
सुंदर सुत सामंत सिघाळा, रैणायर लखमण रवताळा ॥२४३॥
मांगळिया ईढरां मुदाई, भूप जतन आया बे भाई।
आबदार मछरीक अफारा, सांमि कामि सझि आया सारा ॥२४४॥
विढवा काज सकाज विहारी, भळियौ सिवै तणै छळ भारी।
साथ लियां खग बंधव सांगौ, ओढण झिलम भीड़ियां आंगौ ॥२४५॥
सोहै रांम लखावत साथै, हलतां कूंत खिवै जिण हाथै।
भाला हथौ लाडखां भेळौ, उर चाहतै जुड़ै ऊखेळौ ॥२४६॥
अै चहुवांण हजूरी आया, भूपति तणै सदा मन भाया।
खगि ऊधरौ दलावत खेतौ, दीठौ बळ वांकां छळ देतौ ॥२४७॥

२४२—अतारी = (अवतारी) अवतार की रीति के अनुसार। उजाळा = उज्ज्वल। लोहा बोह = शस्त्रों की गंध लेने को। लंकाळा = वीर, जोरावर।

२४३—रढालां = वीरों में। धांधू = परमारों की एक शाखा। वाजण = युद्ध करने के लिये। धाराळा = तलवार की धारा के जैसे तीक्ष्ण। सिघाळा = श्रेष्ठ। रैणायर = रणछोड़दास का पुत्र। रवताळा = घोड़ों की सेनावाला।

२४४—मांगळिया = गहलोतों की एक शाखा। ईढरां = बराबरी करने में। मुदाई = मुख्य। आबदार = कांतिवाले। मछरीक = चौहान। अफारा = बहुत।

२४५—भळिया० = सिवा का पुत्र विहारी महा घोर युद्ध में शामिल हुआ। बंधव सांगौ = भाई सागा को साथ में लिए। ओढण० = लोहे का टोप धारण किए और कवच पहने।

२४६—हलतां = चलते। कूंत = भाला। खिवै = चमकता है। भेळौ = शामिल।

२४७—ऊधरौ = उन्नत, अव्वल दर्जे का। वांकां = टेढ़े वीरों को।

गढपति जतन मछुर गहिलोतां, दीठौ तठै घणां दैसोतां।
उदैराज नथमल सथ एहा, जामल नकुळ अरी जण जेहा ॥२४८॥
सत वीर गुर विहारी साथे, भीम अडोल जिसौ भाराथे।
नाहरखांन दांन सुत नैड़ौ, खग ची वेळ वधै जिम खेड़ौ ॥२४९॥
कियां सनाह किसन कूंभावत, वधै हरख जिण कळह विसावत।
आया निजर धणी चै एहा, सांमि धरम कुळ सरम सनेहा ॥२५०॥
धजवड़ हथ ठाकुरसी धावड़, मयारांम तिण जोड़ महाभड़।
गढपति लखै सांम सुत गुज्जर, केहर जेम गिळण अरि कुंजर ॥२५१॥
सुंदर खेतल भड़ां सहायक, वाघ तणा सरिखा वरदायक।
विढवा हांम गूजरांवाळी, निरखै भूप रूप दोनाळी ॥२५२॥
इण विध मयारांम उर आंणै, पनि छळ मरण सुमेर प्रमांणै।
व्यास फतौ हाथां वरदाई, दीप तणौ नृप काज मुदाई ॥२५३॥

२४८—मछुर = शत्रुओं का प्रभाव न सहनेवाले। गहिलोतां = गहलोत क्षत्रियों में। तठै = वहाँ। दैसोतां = भूमिपति। नकुल अरी = सर्प के समान क्रोध-युक्त।

२४९—सत वीर = सच्चा बहादुर। नैड़ौ = निकट। जिम खेड़ौ = जैसे उत्तेजित करो, चलाओ।

२५०—कियां सनाह = कवच आदि से सजा हुआ। कळह विसावत = युद्ध का काम पड़ने पर।

२५१—धजवड़ = तलवार। धावड़ = पल्लीवाल ब्राह्मणों में धावड़ एक शाखा है। गुजर = गूजर जाति का। केहर० = शत्रु-रूपी हाथी को गिलने के लिये सिंह रूप।

२५२—भड़ां = सुभटों का। वाघ० = व्याघ्र के सदृश। विढवा = लड़ने की। हांम = हिम्मत, उत्साह। दोनाळी = दोनाल की बंदूक।

२५३—उर = मन में। आंणै = लाता है। व्यास = राजव्यास। दीप तणौ = दीपचंद का पुत्र। मुदाई = मुख्य।

उदैचंद व्यासै उजवाळौ, बंधव जोड़ दलौ बांहाळौ।
जोड़ जसावत सिंघ जुगत्ती, गाहड़मल्ल जतन गढपत्ती ॥२५४॥
सूजौ केहर जोड़ सिघाळा, प्रोहित अखै तणा पूंचाळा।
घण थाटां वाजै चडि घोड़ै, जंगे सिवण कमंधां जोड़ै ॥२५५॥
रिण हरवल प्रोहित रैणायर, सुत जोड़ै नँदलाल वँसोधर।
आयौ द्रोण तणै आचारै, सुत जैदेव वाजिवा सारै ॥२५६॥
अणी धणी जतनै इधकारी, भुजळग हथ आविया भँडारी।
गिरधर रतन दलौ विच गाढां, सकजां धुज धनरूप सगाढां ॥२५७॥
खेतसीयोत विजौ जुध खागै, सूर सांमळौ दीठां सागै।
लूणाहर मुख जोस सलूंणै, देवावत अमरौ बळ दूणै ॥२५८॥
समहर दुयण पतँग संघारण, दीपाहरा दीप गुण दारण।
लिखमीचंद हरौ त्यां लेखौ, वांकिम वीज ससी सम वेखौ ॥२५९॥

२५४—व्यासै उजवाळौ = व्यासों में उज्ज्वल। बांहाळौ = भुजबलवाला।

२५५—सिघाळा = श्रेष्ठ। प्रोहित = राजपुरोहित (सेवड़ जाति का)। पूंचाळा = पहुँचवाला, समर्थ। घण० = बड़े परिकर से घोड़े पर चढ़कर लड़ता है। सिवण = पुरोहितों की एक शाखा, जिनको तिंवरी गाँव जागीर में मिला है। कमंधां जोड़ै = राठोड़ों के साथ।

२५६—हरवल = सेना का अग्रभाग। रैणायर = राजसिंह। वँसोधर = कुल को धारण करनेवाला। द्रोण तणै० = द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा के समान काम करनेवाला; द्रोणाचार्य व्यास, जो जयदेव का पुत्र था। वाजिवा सारै = तलवार लेकर लड़ने के लिये।

२५७—अणी० = मालिक के यत्नार्थ सेना का अध्यक्ष। भुजळग = तलवार। गाढा = दृढ़ पुरुषों में।

२५८—खेतसीयोत = खेतसी का पुत्र। विजौ = विजयराम। दीठां = देखने पर। सागै = बहुत उत्तम। सलूंणै = सुंदर।

२५९—दुयण पतँग = शत्रु-रूपी पतंगे का संहार करनेवाला।

माईदास पास महामाई, देवीचंद करगि वरदाई ।
सिध रिण करण सँग्राम सजेता, अभै हजूर भँडारी एता ॥२६०॥
सिँघवी सिंघ दोयण गज साभण, जोड़ै अचळ जोधमल जीवण ।
चित आदू गुण नाम न चूकै, मल्ल पणौ रणवार न मूकै ॥२६१॥
मुहता जोड़ै मेर म्रजादा, जुध जुध ईढगरां सूं ज्यादा ।
गोकळ सांमिधरम पण ग्राहै, सुंदर सुत आयौ व्रत साहै ॥२६२॥
गढपति काज जोड़ गोपाळौ, सुत कल्याण प्रमाण सिघाळौ ।
देवीदास निवास दुबाहां, सुंदर जोड़ै अणी सगाहां ॥२६३॥
मुहतौ मेघसिंह रण मांहे, सुत जोड़ै आयौ खग सांहे ।
सदारांम उजवाळण साहां, रूप तणौ आगळ रिम राहां ॥२६४॥

दीपाहरा=दीपावत भंडारी। दारण=विदारण करनेवाला। वांकिम=वक्रता में। वीज ससी०=द्वितीया के चंद्र के समान देखो।

२६०—पास=समीपवर्ती। महामाई=महामाया, देवी के। करगि=हाथ। एता=इतने।

२६१—दोयण०=शत्रु-रूपी हाथियों को जीतनेवाला। रणवार=युद्ध के समय। मूकै=छोड़ता है।

२६२—मुहता=ओसवाल आदि में एक पदवी और जाति। मेर=सुमेरु पर्वत। ईढगरां=द्वेष रखनेवालों से। ग्राहै=रखता है। साहै=धारण करता है।

२६३—सिघाळौ=श्रेष्ठ। निवास=घर। दुबाहां=वीरों का। सगाहां=गर्ववालों के।

२६४—उजवाळण=उज्ज्वल करनेवाला। साहां=शाह एक पदवी है। रिम राहां=शत्रुओं के मार्ग में।

मोदी टीकम पीथल मांहे, सांमि जतन आया खग साहे ।
पूरै व्रत आया पंचोळो, हुबिया दळां करण खग होळी ॥२६५॥
बाळकिसन पति छळ बांहाळौ, लाल जोड़ दळ ढाल लंकाळौ ।
सांमि सनाह जिसा विच साथां, हरकिसनोत महाबळ हाथां ॥२६६॥
दोलौ माहव रूप दुनाळां, चंद तणा वाधू कळ चाळां ।
ऐ घर बलू तणौ उजवाळण, जुध कायथ वाधै खळ जाळण ॥२६७॥

दुहा

कळहागम नवकोट रा, जुड़िया थाट हजूर ।
अरि कुळ बळ धूणै इसौ, नरपति दूणै नूर ॥२६८॥
आदरियौ वांमी अणी, वधि राजा वखतेस ।
अभौ छभा तिण ओपियौ, किर कोपियौ महेस ॥२६९॥

वार्ता

तिण वार वीरा रस संगम,
ग्रीध चील्ह नभ छाए विहंगम ।

२६५—मोदी=मोदी का काम करने से ओसवालों आदि में मोदी एक शाखा है। पंचोळी=(पंचकुल) पदवी है। इस समय कायस्थ पंचोली कहलाते हैं। वास्तव में पंचोली 'पंचकुल' शब्द का अपभ्रंश है। 'पंचकुल' ब्राह्मण आदि सब होते थे इसलिये पंचोली पदवी ब्राह्मणों आदि में भी है।

२६६—बाहाळौ=बड़ी भुजावाला। लंकाळौ=वीर। सनाह=कवच के सदृश। साथां=समूह में।

२६७—माहव=माधोसिंह। रूप=रूपसिंह। दुनाळां=दुनाली बंदूकोंवाले। वाधू=बढ़कर। कायथ=कायस्थ (पंचोली)।

२६८—कळहागम=युद्ध के आरंभ में। जुड़िया=इकट्ठे हुए। थाट=समूह। धूणै=कंपित करते हैं। नूर=तेज।

२६९—वखतेस=वखतसिंह (राजा का छोटा भाई)।

२७०—वीरा रस=वीर रस का मिलाप। विहंगम=पक्षी।

कळह का आगम सो विखमारिख,
सार का कांटा सचां पारिख ॥२७०॥
सूर धीर साखैत नीर तैं सोहै,
कायर नर कंपै संाध कूं विमोहै।
श्री महाराज कौ रूप अैसौ निजर आयौ
जांणै रोहिणी कौ संग विरोचन पायौ ॥२७१॥
रांमण कै सीस जम काळ डंड लीनौ
कै कपिल मुनि निद्रा कौ उछेदन कीनौ।
जुग अंत सेख मुख विख ज्वाळा जागै
कै उपयंद्र इंद्र काजि भोम भरन लागै ॥२७२॥
दिख सीस महादेव रौद्र रस छायौ
कै काळजवन दुंद मुचकुंद कूं जगायौ।

विखमारिख = विषम नक्षत्र; खोटे नक्षत्र। सार का = तलवार का। कांटा = तकड़ी। पारिख = परीक्षा।

२७१—नीर तैं = पानी (मन की तेजी) से। संधि कूं = सुलह को। विमोहै = चाहते हैं। विरोचन = बलि दैत्य का पिता।

२७२—उछेदन = त्याग। जुग अंत = प्रलय में। सेख० = शेष नाग के विष की ज्वाला उठी। उपयंद्र = वामन भगवान्। भोम० = पृथ्वी को नापने लगे।

२७३—दिख = दक्ष के। कै = किंवा। दुंद = युद्ध के लिये। मुचकुंद कूं जगायौ = मुचकुंद राजा को जगाया। मुचकुंद मान्धाता का पुत्र था। इसने देवताओं की सहायता की। फिर देवों ने इसे वरदान दिया कि तुझको जो निद्रा में से जगावेगा वह भस्म हो जायगा। श्रीकृष्ण इस बात को जानते थे। वे कालयवन के आगे भागकर उस पर्वत की गुफा में जा घुसे जहाँ मुचकुंद सोया था। श्रीकृष्ण तो उसे अपना पीतांबर ओढ़ाकर अंतर्धान

प्रतंग्या तैं धू कुँवार जक्षपुर आयौ
कै थंभ चीर वीर नरसिंघ दरसायौ ॥२७३॥

दूहा

सोभै छभा सनाह सूं, राजा जोस परम्म।
अणी भळायां सूर नर, सिर पर धरै हुकम्म ॥२७४॥
बेळां प्रळै समुद्र ज्यौं, प्रबळ कळा बळ पूर।
आचारज संग्राम रा, आया तांम हजूर ॥२७५॥

वार्ता

कळह के आचारिज कविराज आए
नरपति कौ रूप निरखे उर हरख पाए।
रूप के प्रमांण जोयां उपमा न आवै
आज कौ नरिंद रूठै जम कूं लजावै ॥२७६॥
आज तौ अडंडों के सीस डंड धारै
आज सुविहांण प्रांण ताकै मांण मारै।
आज जो अनम्मी सोई पेखि नमि जावै
कोड़ कौ सहाइ छात हाथ जोड़ि आवै ॥२७७॥

हो गए। कालयवन ने मुचकुंद को श्रीकृष्ण समझ लात मारी। मुचुकुंद जगा, उसकी दृष्टि पड़ते ही कालयवन भस्म हो गया। प्रतंग्या तैं=प्रतिज्ञा से। धू कुँवार=ध्रुव कुमार (उत्तानपाद राजा का पुत्र)। जक्षपुर०=यक्षों की पुरी में। यक्षों ने ध्रुव के भाई उत्तम कुमार को मार डाला था, इसलिये ध्रुव भाई का बदला लेने के लिये, कुबेर की पुरी में गया था।

२७४—छभा=सभा। सनाह सूं=कवच आदि से।

२७५—आचारज=आचार्य, शिक्षक। तांम=वहाँ।

२७६—जोयां=देखने से।

२७७—अडंडों=जिनको दंड नहीं मिला है। सुविहांण=अच्छा दिन। प्रांण=बल। कोड़ कौ सहाइ=जिसके करोड़ों सहायक हैं। छात=राजा।

आज अभस्याह राजा रूम स्यांम नांमै
उद्दम की सकत आप जगत कूं दांमै।
ता सूं कहा सेरखां विलंद की वडाई
घन जोति आगै पटविजन की नांई ॥२७८॥

दुहा

लखि अचरज्जै कोप नृप, वरण कुबेर सुरिंद।
लाज समेटै और* की, आज मुरद्धर इंद ॥२७९॥

छप्पय

दियै विरद कविराज देखि नृप राज दिनंकर
पढै वंस वाखांण पेखि हरि अंस† प्रमेसर।
भूप श्रवण संभळै पांण बळ मूंछ परट्टै
कुळ हंदां कायबां चोंप सुण कोप चठट्टै।

२७८—रूम स्यांम=रोम और शाम के बादशाहों को। दांमै=दमन करता है। वडाई=अधिकता। घन जोति०=बिजली के आगे। पटविजन=पटबीजने (जुगनू) के समान (सेर विलंद क्या वस्तु)।

२७९—लखि०=राजा के कोप को देखकर वरुण, कुबेर और इंद्र आश्चर्य-युक्त हुए। सोर=बारूद की।

२८०—दियै विरद=यश का वर्णन किया। दिनंकर=सूर्य। वाखांण=तारीफ, प्रशंसा। हरि अंस=विष्णु का अंश। सँभळै=सुनता है। पांण० =मूँछों पर हाथ देकर मूँछों के वट देता है। कुळ हंदा=अपने वंश के। कायबां=काव्य। चोंप=आश्चर्ययुक्त आनंद से। चठट्टै=बढ़ता है।

---

* सोर। † हंस।

उल्लसै जोस सुणतां उवरि सगह दरगाह सद्धरां
कवि वांण असह बरड़ी कितां करड़ी लग्गै कायरां ।।२८०।।

छंद बेअक्खरी

रिणमल जोध सुणै हित राखै, भूप हजूर कवी जस भाखै ।
रोहड़ गोरखदास उचारै, सुणतां सांमि दरग्गह सारै ।।२८१।।
जो अवसांण मांण तजि जीवै, परिहरि अमी जांणि विख पीवै ।
जुध रजपूत विमाळै जेतौ, त्रवै वंस निआदर तेतौ ।।२८२।।
सूर महा पायां अवसांणां, वाधै कवि मुख लियण वखांणां ।
जुध कवि जोड़ इती व्रत जांणै, वाधि लड़ै लड़तां वाखांणै ।।२८३।।
जोड़ै करन केहरी जायौ, सुकवि फेर बोलियौ सवायौ ।
एक ज वार मरण जग आवै, छूटै नही गिरां तन छावै ।।२८४।।
भाळ लेख अतरा दम भरणा, मौत न दोय एक दिन मरणा ।
सोई मरण जुड़ै अवसांणै, जिण सम लाभ न तीरथ जांणै ।।२८५।।

उवरि = मन में । सद्धरां = धीर वीर पुरुषों का । असह = असह्य । बरड़ी = कटु, बेड़ी । कितां = कितनों ही को । करड़ी = कठोर ।

२८१—रिणमल = राव रणमल्ल । जोध = राव जोधाजी । रोहड़ = रोहड़िया चारण । सारै = सब ।

२८२—अवसांण = समय और मान को । परिहरि = छोड़कर । अमी = अमृत को । विमाळै = विमल (उत्तम) समझता है, आदर करता है । जेतौ = जितना । त्रवै = मन में निर्धारित करता है । तेतौ = उतना ही ।

२८३—जोड़ = कविता । इती = इतनी । व्रत = नियम । वाधि = बढ़कर ।

२८४—जोड़ै = साथ, संग । जायौ = पुत्र । गिरां = वाणी में । छावै = व्याप्त हो जाता है, विस्तृत हो जाता है ।

२८५—भाळ० = ललाट में जितना लिखा है उतने ही श्वास लेने हैं । जुड़ै = मिलता है ।

रोहड़ फिर बोलै रुघपत्ती, पेखै निजरि छुभा छत्रपत्ती ।
आव प्रमांण कियौ विध एतौ, जगत भणै सौ वरसां जेतौ ।।२८६।।
जगि सौ वरस न कौ नर जीवै, देखत अमित जिसी गति दीवै ।
ऊमर निसा तेल विध अंकै, काळ पवन विच लियै उचंकै ।।२८७।।
परवस मरण जगत जण पावै, औ अवसांण आप वस आवै ।
घधवाड़ियौ मुकन व्रत धारे, यों मुख बोलै हाथ उभारे ।।२८८।।
खत्रियां संग लड़ै कवि खागे, भेड़ क वन्दै निन्दै भागे ।
जुध खगवाह वतावै जैसी, अरि सिर भड़ां वाहिजै ऐसी ।।२८९।।
कवियौ करन कहै कमधज्जां, समहर सोभा वधै सकज्जां ।
सोभा विना जीवणौ सोई, कीरत हीण कहै सह कोई ।।२९०।।
गहि निंद्या सूं जनम गमावै, खर कूकर जेही भ्रख खावै ।
पूत पिता बंधव परिवारां, सहतौ वहै माहणां सारां ।।२९१।।

२८६—आव प्रमांण=आयु का प्रमाण। विध=ब्रह्मा ने। एतौ=इतना। सौ वरसां जेतौ=सौ (१००) वर्ष की आयु।

२८७—जगि=जगत् में। अमित=प्रमाणरहित। दीवै=दीपक की गति है। ऊमर निसा०=दीपक रात्रि में किया जाता है इसलिये उम्र का रात्रि के साथ रूपक है। तेल०=विधाता के अंक तैल है। लियै उचंकै=काल-रूपी पवन बीच में ही उड़ा लेता है।

२८८—परवस०=जगत् पराधीन होकर मरण पाता है और इस समय मरना अपने अधीन है। हाथ उभारे=हाथ उठाकर।

२८९—कवि=चारण। भेड़०=और जो भागते हैं उनकी कवींद्र निंदा करते हैं। खगवाह=तलवार का चलाना। वाहिजै=चलाई जाती है।

२९०—कवियौ=कविया शाखा का चारण। कमधज्जां=राठौड़ों को। सोई=शोचनीय। सह कोई=सब कोई, हरेक।

२९१—भ्रख=(भक्ष्य) खाना। सहतौ=सहन करता हुआ। माहणां=मलामत, ताना। सारां=सबका।

सो कीरत आवै अवसांणां, वंस उभै गरबै वाखांणां।
वखतौ खिड़ियौ रीत वतावै, उर वांकड़ां भड़ां अँजसावै ॥२९२॥
चाय घाय रजपूत न चूकै, मरणै अडर रहै डर मूकै।
वांका विरद वडेरांवाळा, उजवाळण प्रब वँछै उताळा ॥२९३॥
व्रत अताग कुळ माग वहैवौ, चूकां वरत तणौ चालेवौ।
जीवै जीप तिकां जग जांणै, परब मरै सुज मेर प्रमांणै ॥२९४॥
आ खत्रियां वांटै व्रत आई, उजवाळियां व्रधौ इधकाई।
दाखै धधवाडियौ दुवारौ, वादळ छाया आव विचारौ ॥२९५॥
राखण काजि वडा मुनिराई, सुर आसुर खपिया सगळाई।
क्रित वसि तेण न पूगा केवै, चाक हूंत सत गुणी चलेवै ॥२९६॥

२९२—सो = वह। अवसाणां = समय पर, मौके पर। उभै = दोनों। गरबै = गर्व-युक्त होते हैं। वाखाणां = प्रशंसा। वांकड़ां भड़ां = टेढ़े सुभटों को। अँजसावै = उत्साह-युक्त करते हैं।

२९३—चाय = इच्छा, उत्सुकता। घाय = प्रहार। डर मूकै = भय त्यागकर। विरद = यश, नामवरी। वडेरांवाळा = बड़ों के। प्रब = पर्व, पवित्र समय। उताळा = शीघ्र।

२९४—व्रत = नियम को। अताग = न छोड़कर। कुळ० = अपने कुल के मार्ग में चलना। चूकां० = उसको चूकने पर व्रतभंग होता है। जीवै = जीतकर जो जीता है। परब मरै = मौके पर मरता है। सुज = वह। मेर = सुमेरु के बराबर है।

२९५—वांटै = बंट में। व्रत = नियम। उजवाळियां = कुल को उज्ज्वल करने से। व्रधौ = बढ़ते हैं। इधकाई = अधिक। दाखै = कहता है। धधवाडियौ = चारणों की एक शाखा। दुवारौ = द्वारकादास। आव = उम्र।

२९६—राखण काजि = आयु को रखने के लिये। खपिया = यत्न किया, कोशिश की। सगळाई = सब। क्रित० = यत्न करके रह गए परंतु कोई भी सफल नहीं हुआ; क्योंकि आयु चक्र से भी सौगुनी चलनेवाली है।

आव प्रमांण काळ जर आवै, जगि ऊपजै इतौ मरि जावै ।
दूजा बुझै प्रगट पर दीवै, जो अवसांण मरै सो जीवै ॥२९७॥
सांदू कहै खेतसी साची, पण रजपूत लखौ व्रत प्राची ।
ईश्वर तणी भुजा नृप आखै, भुज नृप कळह खत्री श्रुति भाखै ॥२९८॥
सो पति छळ रिण लाज संभावै, अमर रहै पिरियां अँजसावै ।
तन जग अथिर न को थिरताई, सुजस अमर थिर रहै सदाई ॥२९९॥
सो जस आज महा अवसांणै, छोडै कुण तिण अथिर पिछांणै ।
रोहड़ सुभौ कहै रजपूतां, समहर सोभा वधै सपूतां ॥३००॥
औ अवसांण सूरमां आयौ, पूरां नरां वंछतां पायौ ।
असमर हथा धणी मुख आगै, लड़तां गयण भुजा डॅड लागै ॥३०१॥
जीवंतां त्रिहुँ पखां चडै जळ, मरै तै भेदै सूरज मंडळ ।
आसल धीर कहै लखि औसर, महाराज निज रूप प्रमेश्वर ॥३०२॥

२९७—आव प्रमांण=आयु के अनुसार। जर=जब। जगि०=जगत् में जो पैदा होता है, वह मरता है। दूजा०=दूसरे दीपक की भाँति बुत जाते हैं और जो मौके पर मरता है, वह जिंदा है।

२९८—सांदू=चारणों की एक शाखा। प्राची=पुराना। ईश्वर०=राजा को ईश्वर की भुजा कहते हैं। श्रुति०=वेद कहता है।

२९९—सो पति०=जो मालिक के लिये लज्जा रखता है वह अमर रहता है और वंश-परंपरा को अभिमान-युक्त करता है।

३००—महा अवसांणै=इस बड़े अवसर पर।

३०१—सूरमां=शूरवीरों के लिये। असमर=तलवार। गयण=आकाश में।

३०२—जीवंतां=जीवित रहते। त्रिहुँ पखां=तीनों कुलों का। तीन कुल—पिता, माता और ससुराल। चडै जळ=उत्कर्ष होता है। भेदै=पार करके जाता है। आसल=आसिया शाखा का चारण। धीर=नाम है।

आज छभा ओपै भड़ एहा, ज्यों प्रब लंक रांम दळ जेहा।
धणी जतन ओपै ब्रतधारी, कमँध निवड़ घड़ वरण कुँवारी ॥३०३॥
कीरत सुणै वणै मुख केहा, ज्यों वप छाक दुबारै जेहा।
वधतै जोस लियण वाखांणां, आज जिसा भांजे असुरांणां ॥३०४॥
एतां आद सुकवि गुण आखै, रीत वताय जतन नृप राखै।
कहै प्रस्ताव न धारै कांनौ, विढतां चढै सवायौ वांनौ ॥३०५॥

दुहा

मोटा पात हजूर में, आगै कियां सनाह।
वाण अनै केवांण रै, निरखै छभा निवाह ॥३०६॥
छत्रपत्ती सुणतां छभा, यों दाखै अभसाह।
चारण कारण चौगुणौ, न्याय वदै नरनाह ॥३०७॥
श्रीमुख दाद समप्पियां, दियौ विरद कविराज।
जीपै छात मुरद्धरा, जुध उद्धरा सकाज ॥३०८॥

३०३—प्रब लंक = लंका के युद्ध में। ओपै = शोभा देते हैं। ब्रतधारी = प्रण रखनेवाले। कमँध = राठौड़। निवड़ = (निविड़) घने। घड़० = क्वारी सेना को वरनेवाले।

३०४—केहा = कैसा। वप = शरीर। छाक० = दुबारा मद्य का प्याला पीने से। वाखांणा = प्रशंसा।

३०५—आखै = कहते हैं। प्रस्ताव = प्रसंग। न धारै कांनौ = आनाकानी नहीं करते हैं। विढतां = युद्ध करते। वांनौ = शूरता का चिह्न।

३०६—पात = (पात्र) चारण। कियां सनाह = कवच आदि धारण किए। वाण = तीर। केवांण = तलवार का। निवाह = निर्वाह, निर्भर, परिणाम।

३०७—यों = इस तरह। चारण० = चारण उत्साह का चौगुना सबब है।

३०८—श्रीमुख = राजा ने अपने मुख से। दाद = शाबाश।

एम दरग्गह ऊचरै, वात वडा वरवीर।
ग्रंथ उचार उवारणा, कवि रिण वार सधीर ॥३०९॥

छप्पय

साख साख साखैत हुवा भड़ लाख तयारी
सेल्ह भुजां तोलियां विडँग खोजिया हजारी।
गज हैमर पक्खरां कियां चख रातां कोयां
मुख ताता अक्खरां सुहड़ बगतरां सँजोयां।
रिण जीत नगारै वज्जियै जीत लड़ण वेळो चड़ै
भीड़ियां जंग आगम भड़ां अंग बगत्तर ऊबड़ै ॥३१०॥
हळहळ बळ विस्तरै जांण हीलोहळ फट्टौ
पवन संग पेरियां प्रबळ दव दंग प्रगट्टौ।

समप्पियां = देकर। विरद = आशीष। जीपौ = जय को प्राप्त हो। छात मुरद्धरा = मारवाड़ का राजा। उद्धरा = उच्च कोटि का।

३०९—एम = ऐसे। उवारणा = बलैया लेना। रिण वार = युद्ध के समय।

३१०—साख साख = खाँप खाँप के। साखैत = उच्च कुलवाले। सेल्ह = भाले। विडँग = घोड़े। खोजिया = तलाश किए। हैमर = घोड़े। ताता अक्खरां = उग्र वचन। सुहड़ = सुभट। सँजोयां = तैयार किए। जीत = चित्त। वेळो = तरंग, उमंग। भीड़ियां = चुस्त पहने हुए। जंग आगम = युद्ध का समय आने पर। बगत्तर = बख्तर। ऊबड़ै = फटने लगे (युद्ध के उत्साह से)।

३११—हळहळ = चलाचली। बळ = सेना में। हीलोहळ = समुद्र। फट्टौ = फटा। पेरियां = प्रेरित करने पर। दव = दावानल का। दंग =

चमू काळ बळ चंड ज्वाळ किर मंड जळायण
सरस कोप किर सिंभु महा दिख दंभ मिटावण।
कमधजां ओप वरणै कवण तन अनोप जम कोप तिम।
जगचख सुवार आडी जिती जेज इती जुग च्यार जिम ॥३११॥

गाहा चौसर

आसुर दूत निरक्खण आया, वळिया देख महा भैवाया।
समाचार तिण वार सुणाया, आया राजा जंग अधाया ॥३१२॥
सस्त्रबंध अनिबंध सगाहां, सूरां पूरां धरी सनाहां।
राखण भूप खत्री ध्रम राहां, पीड़ै आज जिसौ पतिसाहां ॥३१३॥

दुहा

समाचार सुणतां समा, उर अति जोस अमीर।
दिया नगारा सांमुहा, सझै अकारा मीर ॥३१४॥

ज्वाला, चिनगारियाँ, दुंग। काळ० = प्रलय काल की प्रबल प्रचंड ज्वाला। मंड = ब्रह्मांड को जलाने के लिये। सिंभु = महादेव। दिख = दक्ष प्रजापति का कपट मिटाने के लिये। ओप = शोभा, उपमा। कवण = कौन। जगचख = सूर्य।

३१२—वळिया = पीछे लौटे। भैवाया = भयभीत होकर। अधाया = अतृप्त।

३१३—अनिबध = रोक-टोक-रहित। सनाहां = कवच आदि युद्ध की पोशाक। राहां = मार्ग। पीड़ै = पीड़ित करे।

३१४—अमीर = सरदार। सझै = तैयार हुए। अकारा = महा तेजस्वी, महाक्रूर। मीर = मुसलमानों के सरदार।

गाहा

बे दळ जोस अमित्ती, बत्ती आचार्ज देव साम्रामं (संग्रामं)।
को प्रांमै जय नन्दो, हा हा अणगम्य लेख विध कृतं ॥३१५॥
आचार्जें सुर जत्तं, किन्नर अछराणि सिद्ध गंधर्वं।
गण।वेताळ मुनिंद्रौ, कितं चवसट्ठि पत्र पाणेयं ॥३१६॥

छप्पय

भाख पला नांखियै असुर भड़ लाख उलट्टा
माचि भीड़ मोरचां घोर किर वादळ घट्टा।
आराबा सल्लळे गात बिळकुळे मुगल्लां
अणी वधण आगळां वणी फौजां हरवल्लां।
है गै हिलूर आसुर हलै पूर बगत्तर पक्खरां
वन अगन सवायै संग विध बळ उतंग मीरां वरां ॥३१७॥

३१५—बे = दोनें। अमित्ती = अप्रमाण। बत्ती = अधिक। आचार्ज = शुक्राचार्य। (ये दैत्यों के गुरु हैं जिससे आचार्य कहने से दैत्यो और देवों के संग्राम से)। के॰ = कैान जय का आनंद पाता है। अणगम्य = अगम्य। लेख॰ = विधाता का लेख।

३१६—आचार्जें = दैत्य। अछराणि = अप्सरा। मुनिंद्रौ = नारद। चवसट्ठि = चैांसठ योगिनी। पत्र पाणेयं = हाथ में खप्पर लिए।

३१७—माचि भीड़॰ = मोरचों पर भीड़ बढ़ी। वादळ घट्टा = बादलों की घटा। आराबा = एक प्रकार की तोप। सल्लळे = चले। गात = शरीर। बिळकुळे = व्याकुल हुए। हरवल्ला = नरोल। है = घोड़े। गै = हाथी। हिलूर = समूह, शीघ्र चलनेवाले बादल। बगत्तर = वक्तर, कवच। पक्खरां = घोड़ों का कवच। वन अगन = वन की अग्नि, दावानल।

सिर सिंधुर सेरखां ओप अंबर सिर लग्गा
उरड़ वडां ऊमरां वधै तुरही सुर वग्गां।
कायमखांन तरीम जोड़ चड तीन हजारी
अलीयार असवार हुवै गज सिंघ प्रहारी।
आरुहे गयँद अबदल अली सैद महाबळ सद्दळां
हाहुळि असंख मिळि हल्लिया जांण क वावळ वद्दळां ॥३१८॥
सुर अंबर संमिलै विवध हळवळै विमांणै
सची सहत सुरपती चरित्र परखण आरांणां।
उमा सहित गण ईस लच्छि जगदीस पधारे
सावत्री सुरजेठ जती जंगम अण पारे।
सारद गणेस नारद सनक भूला पलक सँभारणै
रह व्योम अलह आहट रथां कळह सँपेखण कारणै ॥३१९॥

३१८—सिधुर=हाथी। सेरखां=सेर विलंद, गुजरात का सूबेदार। उरड़=धक्का देकर घुसना, आगे बढ़ना। तुरही=एक प्रकार का वाद्य, जो बिगुल का काम देता है। सुर=स्वर, आवाज। वग्गां=बजी। जोड़=साथ, प्रहारी=प्रहार करनेवाला। आरुहे=चढ़ा। सद्दळां=सेना के साथ। हाहुळि=ताकीद करके। वावळ बद्दळां=बादलों का समूह।

३१९—संमिलै=इकट्ठे हुए। हळवळै=त्वरा से चले। सची=इंद्राणी के साथ। आरांणां=युद्ध का। उमा=पार्वती सहित। गण ईस=गणेश; अथवा गणों-सहित। ईस=महादेव। लच्छि=लक्ष्मी। सावत्री=ब्रह्मा की स्त्री। सुरजेठ=ब्रह्मा। जती=(यति) ब्रह्मचर्य व्रत रखनेवाले संन्यासी। जंगम=एक प्रकार के संन्यासी। सारद=शारदा, सरस्वती। भूला०=आँख की पलक डालना भूल गए, अर्थात् अनिमेष देखने लगे। रह व्योम=आकाश में ठहरकर। अलह=अलहदा। आहट=रथों का शब्द।

कतियांणी जोगणी कोड़ नव चौसठ कोड़ी
ब्रह्माणी नव दूण साथ रथ कोड़ सजोड़ी।
पूरण अंस पचास छपन कोड़ी चामुंडा
भुजा अष्ट चौभुजा आख भुज वीस अखंडा।
अभसाह सहायति ईसरी लोवड़ियाळी लक्ख नव
रथ खेड़ि मिळी गिळवा रवद रूप हद्द जै सद्द रव ॥३२०॥

जै जै सद्द उचार डाक डमरू कर वाजै
मोर हंस मृगराज चडी खगराज गरज्जै।
एक हस्ति आरुही वृखभ अस उष्ट्र विगत्ती
सरभ चील सादूळ रीछ बन्दर तर रत्ती।
अद्‌भूत रूप आकृत अगम किरलक्क हक्क रसणा करै
अण जैत कहै मुख आसुरां जैत कमंधां उच्चरै ॥३२१॥

३२०—कतियांणी = शब्द। नव० = ९ करोड़ रथों के साथ कात्यायनी, चौंसठ करोड़ रथों के साथ जोगणी। ब्रह्माणी अठारह करोड़ रथों के साथ, पूर्ण अंशवाली देवी पचास करोड़ रथों के साथ, चामुंडा छप्पन करोड़ रथों के साथ। लोवड़ियाळी = करणी देवी (लोवड़ी अर्थात् पहनने का ऊन का वस्त्र, उसको धारण करनेवाली)। रथ खेड़ि = रथ को चलाकर। गिळवा = निगलने के लिये। रवद = मुसलमानों को। जै सद्द = जय शब्द। रव = आवाज।

३२१—मोर० = मोर (मयूर) आदि देवियों के वाहन हैं। अस = घोड़ा। सरभ = अष्टापद सिंह-विशेष। तर = (तरु) वृक्ष। किरलक्क = किलकारी करना। रसणा = जिह्वा से। अण जैत = पराजय, हार। जैत = जय।

सीकोतरि सक्कणी प्रेत डक्कणी अपारां
विवध भूत वेताळ वीर पळचर विसतारां।
गिरध चील गोमायु विरक जंबू रसवाया
काक कंक को गिणै आस पळ संभळ आया।
अछुरां शृँगार धरि ऊमही हूरां हरखि उचारियै
महि गयण संग खेळां मिळै आगम जंग विसारियौ ॥३२२॥

छंद बेअक्खरी

प्रिसणां सीस मुरद्धर पत्ती
करि सनाह धर ध्यांन सकत्ती।
धारे अस्त्र सस्त्र धरपत्ती
चडियै तुरँग अभौ चक्रवत्ती ॥३२३॥
चडतां नृपति समा भड़ चड़िया
जोपै रूप सनाहां जड़िया।

३२२—गोमायु = शृगाल, सियार। विरक = (वृक) भेड़िया। जंबू = (जम्बुक) सियार। रसवाया = प्रीति से व्याप्त, प्रसन्न। काक = कौआ। कंक = पक्षि-विशेष, जिसके पर तीर में लगते है। आस पळ = मांस की आशा से। संभळ = सुनकर। अछुरां - अप्सराएँ। ऊमही = उत्साह-युक्त हुईं। हूरां = अप्सराएँ (मुसलमान मरें उनके लिये)। महि गयण० = पृथ्वी और आकाश रज उड़ने से परस्पर एक हो गए। आगम जंग = युद्ध का आरंभ हुआ।

३२३—प्रिसणां० = शत्रुओं के सिर पर। करि सनाह = कवच धारणकर। सकत्ती = शक्ति का। चक्रवत्ती = चक्रवर्ती।

३२४—समा = साथ। जोपै = प्रकाशमान होता है। सनाहां जड़िया =

खह रुकि गरद बधे अस खड़िया
नीरधबंध जांणि नीमड़िया ॥३२४॥
असपत दळां सीस अणभाया
आया राजा कोपि अमाया।
सेन सनाह सहत दरसाया
इळ सिर जांण प्रळै घण आया ॥३२५॥
जुड़तां द्दष्ट पलीता जग्गै
दहुँ दळ तोप भयंकर दग्गै।
वीरा रस वाजँत अति वग्गै
सोर जोर लग धूम सरग्गै ॥३२६॥

छंद पद्धरी

सल्लळे तोप जंबूर सोर,
घण जोत अमित किर चरित घोर।
सुर असुर मथै दधि सावकास,
इळ अंत जांणि पलटौ अकास ॥३२७॥

कवच आदि धारण किए हुए। खह = आकाश। असखड़िया = घोड़ों को चलाया। नीरधबंध = समुद्र का बाँध। नीमड़िया = टूटा; निवृत्त हुआ; समाप्त हुआ।

३२५—असपत = बादशाह के। अणभाया = अनिच्छित। अमाया = बहुत। सनाह सहत = कवच आदि के साथ। इळ सिर = पृथ्वी पर। प्रळै = प्रलयकाल के। घण = मेघ।

३२६—जुड़तां = भिड़ने पर। द्दष्ट = द्दष्टिरूपी। पलीता = चरागें। दहुँ = दोनों। वाजँत = वादित्र, बाजे। वग्गै = बजे। सोर० = बारूद का धुआँ स्वर्ग तक पहुँचा।

३२७—सल्लळे = रवाना हुए। जंबूर = एक प्रकार की तोप। दधि = समुद्र को। इळ अत = पृथ्वी के अंत तक।

रघुवीर चमू किर लंक रांण
वाजंत गिरां गिर असह बांण।
चळ विचळ करण खळ खंभ चीर
वाधे कि सबद नरसिंघ वीर ॥३२८॥
घड़ अनड़ उडावण गहर घोर
जुग अंत जांण मारुत सजोर।
धड़हड़ै धरण पुड़ गयण धुक्कि
चकि चमकि तपी तप ध्यांन चुक्कि ॥३२९॥
धर असह सेख फण फण धरंत
भ्रम कोम पिष्ट आरिष्ट भुजंत।
पेरेक प्रबळ गिरि वज्र पूरि
दिग्गज दिगंत भ्रमि जंत दूरि ॥३३०॥
कळहिया कमंध आसुर सक्रुद्ध
जदुवंस भांण किर बाण जुद्ध।

३२८—रांण=रावण। वाजंत गिरां०=मानो पहाड़ों से पहाड़ भिड़ रहे हैं। खळ=शत्रुओं को।

३२९—घड़=सेना। अनड़=पहाड़ों को। जुग अंत=प्रलय में। धरण पुड़=पृथ्वी का तल धड़ धड़ करता है। गयण धुक्कि=आकाश जलने लगा। चकि चमकि=चकित होकर। तपी=तपस्वी।

३३०—धर=पृथ्वी को। सेख=शेष भगवान्। कोम=(कूर्म) कच्छप। पिष्ट=पीठ। आरिष्ट=तकलीफ से। भुजंत=टूटता है। पेरेक०=मानों पहाड़ पर प्रबल वज्र प्रेरित किया गया है। दिग्गज=दिग्गज हाथी दिशाओं के अंत तक चक्कर खाकर चले गए।

३३१—कळहिया=युद्ध करनेवाले। जदुवंस भांण०=मानों यदुवंश

ओळा कि अतुळ गोळा अपार
वरखंत दहूँ दळ बेसुमार ॥३३१॥
तन प्रथक नरां गण तुरँग तुंड
मट जेम फुटै गज कितां मुंड।
रह थरकि रह्यौ थकि अरक रत्थ
संपेख धेख कंदळ समत्थ ॥३३२॥
ऊपनौ अरक मन भ्रम अपार
कृति कहर समर लखि प्रळैकार।
श्रीरांम कळह किर लंक स्यांम
दृढ अकस फेरि प्रगटै दुगांम ॥३३३॥
कुरखेत वळे कुर पंड काय
आरांण गहण जूटा कि आय।

के सूर्य श्रीकृष्ण और बाणासुर का युद्ध। ओळा = वर्षा के पत्थर, बिनौला। बेसुमार = अप्रमाण।

३३२—प्रथक = जुदे। तुरँग = घोड़ों के। तुंड = मुख। मट = मटका, मिट्टी का पात्र। कितां = कितने ही। मुंड = मस्तक। रह = रास्ते में। थरकि रह्यौ = कंपित होने लगा। धेख = (द्वेष) युद्ध में। कंदळ = संहार, नाश।

३३३—ऊपनौ = उत्पन्न हुआ। कृति = कृत्य, काम। कहर = भयंकर। प्रळैकार = प्रलय करनेवाला। लंक स्यांम = लंका के स्वामी रावण का। अकस = द्वेष। दुगाम = दुर्गम।

३३४—कुरखेत = कुरुक्षेत्र में। वळे = फिर। कुर पंड = कौरव-पांडवों का। काय = क्या। आरांण = युद्ध। जूटा = भिड़े। कि = क्या।

अलका पुरि चाचरि अकसमात
जूटा कि जिख्य उत्तानजात ॥३३४॥

मेटण परजापत जिगन मद्द
भव हुकम विरचियौ वीरभद्द ।
जुरसिंध भीम तजि बाहुजुद्ध
किर सेन बंधि जूटा सक्रुद्ध ॥३३५॥

सुरनाथ वृतासुर साखियात
प्रगटे कि सस्त्र रव वज्रपात ।
सिव त्रिपुर समर प्रगटे सवेव
देवेस कि मिथ्या वासुदेव ॥३३६॥

संभरै अरक धरि तरक सुद्ध
जगि असुर सुरां कोइ अवर जुद्ध ।
....
....॥३३७॥

अलका पुरि = कुबेर की पुरी के। चाचरि = मस्तक पर। जिख्य = यक्ष। उत्तानजात = उत्तानपाद राजा का पुत्र ध्रुव।

३३५—परजापत = दक्ष प्रजापति। जिगन = यज्ञ। भव = महादेव के। वीरभद्द = महादेव का गण। जुरसिंध = जरासंध, मगध देश का राजा।

३३६—सुरनाथ = इंद्र। वृतासुर = वृत्रासुर। रव = शब्द। वज्रपात = वज्र का गिरना। सिव = महादेव। त्रिपुर = त्रिपुरासुर। सवेव = वेग-सहित। देवेस = देवों का स्वामी, श्रीकृष्ण। मिथ्या वासुदेव = प्रति वासुदेव।

३३७—संभरै = स्मरण करता है। तरक = तर्क, विचार। जगि = जगत् में। अवर = दूसरा।

दुहा

योंं नभ रवि अचरज्जियौ, प्रबळ कळह गह पेखि ।
एक प्रहर गोळां उरड़, वृत झड़हूँत विसेख ॥३३८॥

संग्राम-वर्णनम्

हिंदू तुरक हकारिया, नरपति अनै निबाब ।
आरावां भेळौ अटक, मेळौ भड़ां सताब ॥३३९॥
उत आसुर आधौमना, इत हर कमँध अनंत ।
उण वेळा नृप ओपियौ. किर कोपियौ क्रितंत ॥३४०॥
खग्ग उनंगी झल्लियां, जंगी रूप भयांन ।
त्रिपुर निरक्खै रोखियो, कजि त्रिपुरारि निदान ॥३४१॥
कर वागां नर झूँबिया, तिजड़ परक्खै ताव ।
अणसंका आगै इता, रणवंका उमराव ॥३४२॥

३३८—अचरजियौ = आश्चर्य-युक्त हुआ । कळह = युद्ध का । गह = गर्व । पेखि = देखकर । उरड़ = वेग से चलना । वृत = वृत्ति) बरतना । झड़हूँत = सघन दृष्टि से ।

३३९—हकारिया - चले । अनै = और । आरावां = तोपों से । भेळौ = घुस जाओ । अटक = सेना में । मेळौ = मिलाओ, शामिल करो । सताब = शीघ्र ।

३४०—उत = उधर । आधौमना = दिल टूटे हुए । इत = इधर । हर = उत्साह, युद्ध की इच्छा । कमँध = राठोड़ों के । क्रितंत = (कृतांत) काल ।

३४१—खग्ग = तलवार । उनंगो = नंगी । झल्लियां = पकड़े हुए । जंगी = महान् । त्रिपुर = त्रिपुरासुर को । रोखियौ = रुष्ट हुआ, क्रुद्ध हुआ । त्रिपुरारि = महादेव । निदान = आखिर ।

३४२—कर वागां = जिनके हाथों में घोड़ों के लगामें हैं । झूँबिया = शत्रुओं से भिड़े । तिजड़ = तलवार के । परक्खै = परीक्षा करके । ताव = ताप को । अणसंका = निःशंक, निर्भय ! इता = इतने ।

छंद त्रोटक

हर पावक नेत्र कि पालहरा, सकतौ जुध माहव सिंघ छुरा ।
कुसळौ नृप आगळ ढाल कळी, बळि बांधण वांमण जेम बळी ।।३४३।।
करनाजळ कांकळ पेखि करां, प्रगटौ रिख प्रांमिय सिंधु परां ।
करनौत अभौ तिण वार किसौ, जवनां दळ साभण काळ जिसौ।।३४४।।
लख थाट विचै वधि जैत लड़ै, चुगलाळ पड़ै सुज मीट चड़ै ।
कूंपावत भारथ पाथ कळा. विचरै भुज आधिक कान्ह बळा ।।३४५।।
तिण जोड़ पराक्रम भांण तणौ, घण घाव वहै तिम चाव घणौ ।
तिण ताळ पतौ खग भीम तणौ, घर जोध उजाळण बोध घणौ।।३४६।।
किसनावत राजड़ जोस किसौ, अहि लोयण कोयण रोस इसौ ।
सुजड़ा हथ मेडतिए सकसौ, जुध सेर सहावत सेर जिसौ ।।३४७।।

३४३—हर० = महादेव के नेत्र की अग्निरूप । पालहरा = चापावत गोपालदास के वंशज । छुरा = सिंह के हत्थल के सदृश । कळी = युद्ध की । बळि = बलि दैत्य को ।

३४४—करनाजळ = करणसिंह । कांकळ = युद्ध । करां = हाथों से । रिख = (ऋषि) अगस्त्य मुनि । प्रांमिय = पहुँचा । सिंधु परां = समुद्र के समान । जैसे अगस्त्य समुद्र पर पहुँचा और समुद्र को पी गया । करनौत = करणोत राठोड़ ।

३४५—चुगलाळ = चुनिंदा । पड़ै = गिरता है । सुज = वह । मीट चड़ै = गिनती में आता है । कूंपावत = कूंपा का वंशज राठोड़ । भारथ = युद्ध में । पाथ = अर्जुन । कळा = अंश, समान । कान्ह = नाम है । बळा = बल में ।

३४६—जोड़ = समान । भांण तणौ = भांण का पुत्र । घाव = प्रहार । वहै = करता है, धारण करता है । चाव = उत्साह, अभिलाषा । ताळ = समय ।

३४७—अहि० = सर्प के नेत्रों के मंडल में । सुजड़ा = तलवार । सकसौ = बल-सहित । सेर = सिंह ।

कळि बंधव सूरजमाल कनै, विण भारथ पारथ भीम विनै ।
अभसाह विजावत आभ ग्रहै, वप मांण घणै खुरसांण वहै ॥३४८॥
जुध जैत तणौ खग जैत जिसौ, उजवाळै दूदां पाट इसौ ।
वप ऊदां लाज खगेस वरौ, रिदैरांम मुदै बळिरांम हरौ ॥३४९॥
सुभरांम तणौ वखतेस सिरै, गजराज धकै जिण आज गिरै ।
तन कोप सवाइय मांन तणौ, पति नूर दिपै लखि सूर पणौ ॥३५०॥
पिड़ जैतहरां खग जैत पणौ, तिण रीत फतौ गिर मेरतणौ ।
सुत नाथ समाथ धुजा ससमां, करगां बळ ऊदळ रूप कमां ॥३५१॥
उण वार धणी दळ ढाल इता, जदुवंस उजागर अग्र जिता ।
करगै रिण भांण प्रमांण किसौ, जुध हांम लियां खग रांम जिसौ॥३५२॥

३४८=कळि=युद्ध में । कनै=पास, समीप । विण=बिना । भारथ=भारत युद्ध के । विनै=दोनों । आभ=आकाश को । ग्रहै=पकड़ता है । वप=शरीर । माण=मान । खुरसाण=तलवार को । वहै=चलता है ।

३४९—जैत तणौ=जैतसिंह का पुत्र । जैत जिसौ=जय के सदृश । दूदां पाट=मेड़तिया राठोड़ । वप=शरीर । खगेस=तलवार चलाने में । वरौ=श्रेष्ठ । मुदै=मुख्य । बळिराम हरौ=बलराम का पोता ।

३५०—सिरै=श्रेष्ठ । धकै जिण=जिसके आगे । आज=युद्ध में । नूर=तेज ।

३५१—पिड़=युद्ध में । जैतहरां=जैतावत राठोड़ । गिर मेर=मेरु पर्वत के समान । मेरतणौ=सुमेरसिह का पुत्र । समाथ=समर्थ । धुजा=ध्वजा । ससमां=समर्थों में । करगां=हाथों के । ऊदळ रूप=ऊदाजी के जैसा । कमां=कामों में ।

३५२—इता=इतने । जदुवस=भाटियों में । उजागर=प्रसिद्ध । करगै=हाथों से । रिण=युद्ध में । भांण प्रमांण=सूर्य के सदृश । हांम=हिम्मत । खग=तलवार में । रांम जिसौ=रामचंद्र के जैसा ।

वखतेस खळां सिर वेढगरौ, हर कांकण सौ अमरेस हरौ।
सँग रांम रुधै जैसिंघ सही, गज रूप सभै रिम टेक ग्रही ॥३५३॥
जुध वीर महा तिण सूर जदा, सुत नाहर नाहर जेम सदा।
जुध सूर सुजाव जरूर जिपै, दळ ढाल जिसौ हठमाल दिपै ॥३५४॥
मछरीक सदा रणवीर मुदै, अति रोस वणै मुख जोस उदै।
तिण वार अजौ चुतरेस तणौ, घृत संजुत पावक हूँत घणौ ॥३५५॥
हरि बांण जिसौ चहुवांण हरी, वरिवा सुत लाल घड़ा अवरी।
तिण जोड़ै मोहकम लाल तणौ, घण वीज किसूं खग खीज घणौ ॥३५६॥
तिण वार वधै वखतेस तणा, उमराव महा जुध आघमणा।
तन ओस अभौ नृप भीम तणौ, वखतेस अरी जण जेम वणौ ॥३५७॥
वणि जोध रिणम्मल आठवळा, करगै बळवंत कृतंत कळा।
जुधवार सिरै उमराव जिता, तनुत्रांण धणी कज पांण तिता ॥३५८॥

३५३—खळा सिर = शत्रुओं पर। वेढगरौ = युद्ध करनेवाला। हर कांकण सौ = महादेव के कंकण के जैसा। अमरेस हरौ = अमरसिंह का पौत्र। रिम = शत्रु। टेक = प्रण।

३५४—सुजाव = पुत्र। जिपै = जय पाता है।

३५५—मछरीक = चौहान। मुदै = मुख्य। उदै = उदय। पावक हूँत = अग्नि से। घणौ = बहुत, अधिक।

३५६—हरि बांण जिसौ = राम-बाण के जैसा। वरिवा = ब्याहने के लिये। घड़ा = सेना। अवरी = न ब्याही हुई। घण वीज किसूं = मेघ की बिजली उसके आगे क्या? खीज = क्रोध, कोप।

३५७—आघमणा = अग्रणी, उदार चित्तवाले। अरी जण = शत्रु लोग। वणौ = वश में हों।

३५८—वणि = तैयार होकर, सज्जित होकर। जोध = जोधा राठौड़। आठवळा = अष्ट प्रकार के बलवाले, महाबली। करगै = हाथ में। कळा = अंश। तनुत्रांण = शरीर की रक्षा करनेवाले। पांण = बल। तिता = उतने।

तिण वार लखै भड़ भूप तिसौ, जुध मेळै मौहरि वाज जिसौ ।
……………………………………………………………॥३५९॥

छप्पय

करे खग्ग ऊनंग भूप असि वग्ग उठाई
जांणि सेख जुग अंत ज्वाळ अवसेख जणाई ।
सहँसफणां सल्लळै सुजड़ भळहळे सहंसां
सोर जंत्र भुज साझ कुंत धानंख सकस्सां ।
ऊपड़ी वग्ग अभसाह री अति आतंग कजि आसुरां
फिर नीरथळां सैलोट कज सीर पलट्टै सागरां ॥३६०॥
आगै सेर विलंद सेन सनमुक्ख चलायौ
दळ जादव ऊपरा जांण नाळब दरसायौ ।
कुहक बांण हथनाळ विसख वरखै तिणवारां
वृति श्रांमण वद्ळां जांण घण मत्तो धारां ।

३५९—मेळै = मिलाता है, भिड़ाता है। मौहरि = अगाड़ी। वाज = घोड़ा।

३६०—ऊनंग = नंगी। असि = घोड़े की। वग्ग = वाग, लगाम। सेख जुग = लगाम की उत्प्रेक्षा है। मानों दो शेष नागों ने अंत करने की ज्वाला शेष में दिखाई। सहँसफणां = शेष नाग। सल्लळै = धीरे-धीरे सरकने लगा। सुजड़ = तलवारें। भळहळे = चमकने लगीं। सोर जंत्र = तोपें। साझ = धारण करके। कुंत = भाला। धानंख = धनुष। सकस्सां = मजबूत, दृढ़। ऊपड़ी वग्ग = अभैसिंह की वाग उठी। आतंग = भय के वास्ते, दुःख के वास्ते। सैलोट कज = जलाशय और स्थल को समतल करने के लिये। सीर = पानी का प्रवाह।

३६१—दळ जादव ऊपरा = भाटियों की सेना पर। नाळब = पानी का नाला। कुहक बांण = बारूद से चलनेवाला। हथनाळ = हाथ की बंदूक। विसख = बाण, तीर। वृति = बरतना। श्रांमण = श्रावण मास। मत्तो = बहुत बरसनेवाला।

पूंतार दुहूँ दळ आपरां सार धपावण चै समै
ऊपाड़ कुंत मिळिया अणी गज विभाड़ बेहू गमै ।।३६१।।

छंद भुजंगी

अणी भूपवाळौ खड़ौ खेत आयौ
उठी सेरखां मेर पावां अछायौ ।
उबांणे खगे वाजिया रोस आंणै
जुटा पंड कैरों भुजा चंड जांणै ।।३६२।।
हुए हक्क सूरां उठी मेर हक्कां
करै भूत वेताळ चंडी किलक्कां ।
करै जोर प्राहार बेपार कुंतां
दिपै जुद्ध जांणै भृगू लिभु दूतां ।।३६३।।
धडै साबकै जोर सूं खाग धारां
हुयै चौट वारी हजारे हजारां ।

पूंतार=प्रोत्साहन करके । सार धपावण चै समै=तलवार को तृप्त करने के समय । ऊपाड़=उठाकर । कुंत=भाला । अणी=सेना के अग्र भाग पर । विभाड़=भयभीत करके । बेहू गमै=दोनों तरफ से ।

३६२—अणी०=इधर राजा की सेना खड़ी थी, वह रणांगण में आई । उठी=उधर । मेर पावां=सुमेरु के समान दृढ़ पैर जमाए । अछायौ=प्रसिद्ध । उबांणे=उठाए । वाजिया=लड़े । जुटा=भिड़े । पंड कैरों=पांडवों और कौरवों के समान । चंड=प्रचंड ।

३६३—मेर=मीर, मुसलमान सरदार । किलक्कां=किलकारियाँ । प्राहार=प्रहार । बेपार=अपार । कुंतां=भालों के ।

३६४—धडै साबकै=साधारण घड़ों पर । वीर विराध=वीराधिवीर,

वडा वीर वीराध वाकार वाहै
सु तौ सांमुहे चाचरे वाहि साहै ॥३६४॥
तुरस्सां फटै हैमरां तुंड तूटै
फरस्सां खगां सिंधुरां कुंभ फूटै।
उडै मुंड धारा असीता अपारा
हुआ खंड के रुंड लौटै हजारां ॥३६५॥
करै एक एकां धकै जत्रकत्रं
पड़ै हाथ जांणै झड़ै ताड़पत्रं।
किता सीस बेफाड़ चौफाड़ केतां
जपै रूप लेखै कवी ओप जेतां ॥३६६॥
पड़ी विच्छुड़ी दाड़मी जांणि पक्की
दिपै आरपारां हजारां दरक्की।
वधै अग्र सूरां अभौ खग्ग वाहै
सुतौ वाह सी वाह चंडो सराहै ॥३६७॥

महावीर। वाकार=ललकार ललकार कर। वाहै=तलवार चलाते हैं। चाचरे=मस्तक पर। वाहि=चलाकर। साहै=सहन करते हैं।

३६५—तुरस्सां=ढालें फटती हैं। हैमरां=घोड़ों के। तुंड=मुख, मस्तक। फरस्सां=फरसा। सिंधुरां=हाथियों के। मुंड=मस्तक। असीता=तेज। के=कितने ही। रुंड=धड़।

३६६—धकै=आगे। जत्रकत्रं=जहाँ तहाँ। झड़ै=गिरते हैं। बेफाड़=दो फाड़े। चौफाड़=चार फाड़ोंवाले। केतां=कितने ही। जपै=कहते हैं। रूप लेखै=स्वरूप को देखकर।

३६७—विच्छुड़ी=बिखरी हुई। दाड़मी=अनार। दरक्की=फटी हुई। वाहै=चलाता है। वाह वाह=धन्य धन्य। सी=ऐसे। सराहै=तारीफ करती है।

पड़ै बेघड़ां सिंघळी कुंभ पांणै
जिसौ चक्क तूटौ महानक्क जांणै।
वडो हाथ वंकी धजायां विराजै
सुणौ ओण राती कवो ओप छाजै ॥३६८॥
अरोहै दिसा दाहिमें चाहि आंणै
जळाबोळ ऊगौ दुती चंद जांणै।
हजारां हकारै निवारै हजारां
सँहारै हजारां खिवै सार धारां ॥३६९॥
हजारां गुड़ै वीछुड़ै एक होदां
रहच्चक्क मातौ छुटै तक्क रौदां।
सिपायां सिरै सार वाजै सचाळौ
वधै दामणी सौ अणी भूप वाळौ ॥३७०॥

३६८—बेघड़ां = दोनों सेनाओं में। सिंघळी = हाथियों के कुंभस्थल। पाणै = बल से। चक्र = विष्णु के चक्र से। महानक्र = बड़ा मगर। वंकी = टेढ़ी। धजायां = तलवारें। ओण राती = रुधिर से लाल। छाजै = शोभा देती है।

३६९—अरोहै दिसा दाहिमें० = रुधिर से रक्त तलवारें कैसी दिखाई देती हैं, मानों चारों ओर बढ़े हुए दिग्दाह में द्वितीया का चद्र उदय हुआ है। हकारै = बुलाते हैं। निवारै = मना करते हैं। खिवै० = तलवार की धाराएँ चमकती हैं।

३७०—गुड़ै = पाखर डाले हुए हाथी। वीछुड़ै = तितर-बितर होते हैं, बिछुड़ते हैं। रहचक = युद्ध। मातौ = महाप्रबल। छुटै० = मुसलमानों के विचार नष्ट होते हैं। सार = तलवार। सचाळौ = वेग-सहित। दामणी = बिजली। सौ = जैसा। अणी = सेना।

उठी सेर मीरां पचारै अपारां
पढै जाप पीरां उचारै पुकारां।
वधै सूर संग्राम राठौड़ वाळा
जळावै खळां वीजळी सेख ज्वाळा ॥३७१॥
चगत्थां सथां हेड़वै खग्ग चांपा
करै हाथियां हाथ भाराथ कूंपा।
करन्नौत कूंतां अरी नाग काळां
हटावै धुजे सिंघ जेहा हठाळां ॥३७२॥
कमंधां छळे जाद्वां हाथ कैसा
अभैसाह पेखे कहै वाह ऐसा।
वधै जोड़ सूरां तणी खेड़वाळा
कळौ क्रन्न साभै खळां जम्म काळा ॥३७३॥
वधै आग जैता इसा खाग वाधै
लहै दंग तूलंग ज्यौं जंग लाधै।
महा जोध जोधाहरा क्रोध मोटै
जुड़ै जंग राजा तणै अग्र जोटै ॥३७४॥

३७१—सेर = सेरविलंद खां। पचारै = प्रोत्साहित करता है। सेख ज्वाळा = शेषनाग के मुख की ज्वाला के समान।

३७२—चगत्थां सथां = मुसलमानों के साथ को। हेड़वै = टोलते हैं, एक तरफ ले जाते हैं। भाराथ = युद्ध में। करन्नौत = करणोत राठोड़। अरी = शत्रुओं के लिये।

३७३—कमंधां छळे = राठोड़ों के लिये। जादवां = भाटियों के। खेड़वाळा = राठोड़, खेड़ेचा। कळौ = युद्ध में। क्रन्न = कर्ण को अधीन करें। खळां = शत्रुओं के लिये यमराज और काल-रूप।

३७४—आग = आगे। जैता = जैतावत राठोड़। दंग तूलंग = रुई की भूमि। जोधाहरा = जोधा राठोड़। जोटै = शामिल होकर।

अणो मेड़तै रूप त्यां भूप आगै
भिड़ै बंध जेही गजां कंध भागै।
वळै ज्याग ची आग ऊदा वखांणै
जवन्नां करै होम आहूत जांणै ॥३७५॥
महा ज्वाळ रूपी खगै काळ कैसा
जळावै अरी तूळ सामूळ जैसा।
वणै ग्राह रूपी रिमां चाहवाणं
महा कुंत वाधंत तं तं प्रमाणं ॥३७६॥
महा जोर बाळा अनै जैतमाळां
धणी अग्र वागा खगै जंग ढाळां।
रिमांसाल पाता भदा ढाल रूपा
जुड़ै ऊहड़े वंकड़ा भार जूपा ॥३७७॥
जगै अग्र सोनिंगरा सिंघ जांणै
वळे संग खूमांण ईंदा वखांणै।
जतन्नै अणी ज्यौं धणी पासि जेता
अनेकां वधै प्रांण केवांण एता ॥३७८॥

३७५—अणी = सेना में। मेड़तै रूप = मेड़तिया राठोड़। बंध = बंधु, भाई। वळै = फिर। ज्याग ची = यज्ञ की। ऊदा = ऊदावत राठोड़। आहूत = आहुति।

३७६—तूळ = रुई के समान। सामूळ = समूल। रिमां = शत्रुओं के लिये।

३७७—बाळा = बाला राठोड़। वागा = लड़े। रिमांसाल = शत्रुओं के शल्य-रूप। पाता = पातावत राठोड़। भदा = भदावत राठोड़। भार जूपा = भार उठाने के लिये जुड़े हुए।

३७८—खूमांण = सीसोदिया। ईंदा = पड़िहारों की एक शाखा। जेता = जितने। केवांण = तलवार से। एता = इतने।

वडी लाज धांधल्ल संग्राम वेळा
महाराज रै काज खीची समेळा।
हुआं राड़ आगै वधै पाड़िहारं
वधारै संभारै धणी वार वारं ।।३७९।।
लहै जोत सोभा भड़ां में सलोभा
सदा खेत प्रांमै गैहल्लोत सोभा।
सबै मंत्रवी व्यास प्रोहित्त साथे
हकारै कवी वाहता खाग हाथे ।।३८०।।
चडी सार ची हांम रावत्त चेळां
सिंधी आरबी वाजिया जंग सेलां।
अभैसाह लागौ रिमां राह ऐसौ
जते सेरखां मंद सौ चंद जैसौ ।।३८१।।

छप्पय

महा जंग मातंग ढहै खग अंग अनेकां
काठ जांण काटियां हुए सिर पंजर हेकां।

२७९—धांधल्ल = धांधल राठोड़। समेळा = मित्रभाव रखनेवाले, इकट्ठे। राड़ = लड़ाई। पाड़िहारं = पड़िहार क्षत्रिय। वधारै = अधिक। सँभारै = याद करते हैं।

३८०—जोत = कांति। प्रांमै = पाते हैं। गैहल्लोत = सीसोदिया। मंत्रवी = मंत्री। हकारै = बुलाते हैं। वाहता = चलाते हुए।

३८१—चडी = बढ़ी। सार ची = तलवार की। हांम = उत्कट इच्छा। रावत्त = रावत, भीलों के सरदार। चेलां = राजा के पासवानिए। जते = इतने में।

३८२—मातंग = हाथी। ढहै = गिरते हैं। पंजर = धड़। हेकां = एक।

अति कंदळ दळ उभै सार जळ धार सवायौ
भाई वांमी भुजा इतै वखतौ जुध आयौ।
साथ घणै सांघणै अणी जीमणै जवन्नां
उत मातौ भाराथ जांणि पाराथ करन्नां।
कड़कड़ै तिजड़ घड़ियाल किर प्रळै काळ रौद्रां प्रबळ
हळहळै जवन हैकंपिया जांणि पवन्नै सिंधु जळ ॥३८२॥
मेड़तिया जालम्म आदि रुघपत्तीवाळा
सिवै धीर सारीख वंस गोविंद उजाळा।
भंडारी ब्रजराज वाज तोरियौ विकस्सै
अज किसौर ऊठियौ जांण पावक्क परस्सै।
यां जंगम अति वणी अणी जोमणै उठाया
गजराजां ऊपरा जांणि मृगराज अधाया।
आसुरां तणां वांमै अणी सार झड़ै सिर सिंधुरां
मच धाक चाक चड़िया मुगल वागा हाक बहादरां ॥३८३॥

अति कंदळ = अत्यंत नाश हो रहा है। वांमी भुजा = बायाँ हाथ। वखतौ = बख्तसिंह। सांघणै = निविड़, अति सघन। अणी = सेना के। जीमणै = दाहिनी ओर। मातौ = महाप्रबल। पाराथ० = अर्जुन और कर्ण का। कड़कड़ै = कड़कड़ शब्द करती है। तिजड़ = तलवार। घड़ियाल० = मानों घड़ियाल का घटा बज रहा है। प्रळै० = मानों मुसलमानों के लिये प्रबल प्रलयकाल आ गया है। हळहळै = चल-विचल होते हैं। हैकपिया = घबराए हुए। सिंधु = समुद्र का।

३८३ — रुघपत्तीवाळा = रघुनाथसिंघोत। सिवै० = धीरता में सिवा के सदृश। वाज = घोड़े को। तोरियै = चलाया। विकस्सै = प्रफुल्लित होकर। जंगम = घोड़े। उठाया = वेग से आक्रमण किया। अधाया = भूखे, अतृप्त। सार झड़ै = तलवार चलती है। सिंधुरां = हाथियों पर। मच० = भय बढ़कर मुगल चक्कर खा गए। हाक = वीर शब्द।

दुहा वडा

राजा वखतौ राड़, असपत सूं वामै अणी।
वागौ दळ विच त्रायणां, चंचळ रांगां चाड़ ॥३८४॥
वाजै घड़ तरवार, जवनां भड़ भाजै जुड़ै।
मुड़िवाळै वाळै मुड़ै, हींडे जेम हकार ॥३८५॥
सांम्हा सेर तणाह, आवै भड़ खागे इता।
पड़ पड़ दीप पतंग पर, घट अरि तजै घणाह ॥३८६॥
यों नरपति आरांण, लाख दळां वखतां लड़ै।
जुजठळ भारथ जूपतां, जोड़ै पारथ जांण ॥३८७॥
सांम्हौ सेर निहार, आयौ नभ लागां अभौ।
अगनि तणै दळ ऊपरा, पावस अकस प्रकार ॥३८८॥
सॅग विजपाल सगाह, मेड़तिये रिण मेळियां।
वागौ किर नीलै वनै, दाहैवाळौ दाह ॥३८९॥

३८४—राड़ = युद्ध में। वागौ = युद्ध किया। त्रायणां = रक्षा करने को। चंचळ = घोड़े को। रांगां चाड़ = साथलों से दबाकर।

३८५—वाजै = बजती है। घड़ = सेना में। जुड़ै = भिड़े हुए। मुड़िवाळै० = मुड़कर (घोड़े को) पीछे लौटाता है और मुड़े हुए को पीछे लौटाता है। जैसे हींडा आगे का पीछे और पीछे का आगे आता है। हकार = ललकारकर।

३८६—दीप पतंग पर = दीपक में फतंगे गिरते हैं जैसे। घट = शरीर।

३८७—आरांण = युद्ध में। लाख दळां = लाख फौज से। जुजठळ० = युधिष्ठिर के युद्ध में लड़ते। जोड़ै = साथ।

३८८—अगनि तणै = बिना ढंग के। पावस = वर्षा की। अकस = ईर्ष्या। (मानों वर्षा बरसने लगी।)

३८९—विजपाल = विजैराम भंडारी। रिण = युद्ध में। मेळियां = (घोड़ों को) शामिल किया। वागौ = लड़ा। नीलै वनै = हरे वन में। दाहैवाळौ = दावानल का। दाह = अग्नि।

राजा आरँभ रांम, असुरां घड़ बेड़ै अभौ।
गाजै दळ दोनूं गमा, धूजै तीनूं धाम ॥३९०॥
अणी हुवा रिण एक, घणूं वणी करड़ी वगत।
मुगल धकै महाराज रै, ऊथल पथल अनेक ॥३९१॥
कटि कटि झड़ै कराग, देख रही जरदां रहै।
तनवाळी छोडी ति किर, परि कांचळी पनाग ॥३९२॥
मुंड बकै मुख मारि, रुंड खड़ा रिण आंगणै।
खेत वणै विच विच खड़ी, जांणक बेड़ी ज्वार ॥३९३॥
अरि घड़ बेहड़ एक, समर हुआ घर साथरै।
सूता किर जाडा सलभ, उण रण खार अनेक ॥३९४॥
वांमी दिस वखतेस, जुड़ मेड़तिया जींमणै।
आभाड़ा साम्हौ अभौ, राजा महण रवेस ॥३९५॥

३९०—आरँभ राम = युद्ध में रामचंद्र के समान। बेड़ै = काटता है। दोनूं गमा = दोनों तरफ। तीनूं धाम = त्रिलोकी।

३९१—घणूं = अत्यंत। वणी = बनी, आई। धकै = आगे। ऊथल पथल = उलट-पलट।

३९२—कराग = हाथ। जरदां रहै = बक्तर रह जाते हैं। तनवाळी० = हाथ कटकर गिर जाते हैं और बक्तर की बाँह लटकती रह जाती है। वह ऐसी दीखती है कि मानों सर्प ने कांचली (कंचुकी) उतारी।

३९३—मुंड० = मुँह मारकर मस्तक बकते हैं। रुंड० = धड़ रणांगण में खड़े हैं। खेत० = वे ऐसे दिखाई देते हैं कि मानों ज्वार को काटने पर उसका नीचे का भाग खेत में खड़ा है।

३९४—अरि घड़० = युद्ध में शत्रु की सेना कटने से उनके घर पर साथरै अर्थात् शोक-सहानुभूति के लिये लोग जमा हुए। वह दृश्य ऐसा था कि मानों सघन टिड्डी-दल आकर सोया। उण० = उस युद्ध के वैर से।

३९५—वांमी दिस = बाईं तरफ। जींमणै = दाहिनी तरफ। आभाड़ा = काटनेवाला। महण = समुद्र। रवेस = सूर्य।

सिव दौड़ै संग्राम, सिर जोड़ै माळा सझै।
वर सूरां अछरां वरै, हूरां पूरै हांम ॥३९६॥
आवै जाय अपार, ग्रीधां पळ भरि भरि गळां।
फिर नटवाळा गोटका, विचरै रांमत वार ॥३९७॥
पाछटता अण पार, काटकतां वढ़तां कमळ।
धारू जळ धारां थया, आरा ची उणहार ॥३९८॥
माता गज रण मांझ, यों रत राता ईखजै।
वणिया जांणक वादळा, आंवण फूली सांझ ॥३९९॥
जीमैं पळचर जाति, भरियां कोपर भेजियां।
पूर किया काळी पतर, भूर दही ची भांत ॥४००॥
कीधां धजवड़ केत, फिर झड़ पड़ै कळाइयां।
फिर बिय चंद कमोदनो, मिळिया प्रीत समेत ॥४०१॥

३९६—सिर जोड़ैं = मस्तकों को साथ लगाता है। माळा सझै = मुंडमाल तैयार करता है। हांम = मनोरथ।

३९७—ग्रीधा = गिद्ध। पळ = मांस। नटवाळा॰ = नट की खेल की गेंद इधर उधर आती-जाती है।

३९८—पाछटता = चलाते। काटकतां = क्रोध करके ऊपर पड़ना। वढ़तां कमळ = मस्तकों के कटते। धारू जळ = तलवार। आरा ची उणहार = करोत के समान।

३९९—माता = बहुत, बड़े। रत राता = रुधिर से रक्त। ईखजै = देखे जाते हैं। जांणक = मानों।

४००—जीमैं = खाते हैं। पळचर = मांसभक्षी जानवर। भरियां॰ = भेजा (मगज) से भरी हुई खोपड़ियों में। पतर = पात्र। भूर॰ = घने दही की तरह।

४०१—कीधां॰ = तलवार को ध्वजा बनाए हाथ की कलाइयाँ कटकर पड़ती हैं। वे ऐसी दिखाई देती हैं कि मानों द्वितीया का चंद्र प्रीति के साथ रात्रिविकासी कमल से मिला। तलवार द्वितीया चंद्र, कलाई कमोदिनी।

माथा दड़ियां मांनि, गिण पग सुज चौगानियां।
प्रेत रमै हाथां पकड़, चक रस रिण चौगांन ॥४०२॥
ऊभा धकै अनेक, ओण रँगांणा सूर नर।
जांणै वन तरवर झँपां, वागां पवन विसेक ॥४०३॥
आपड़ नोहरां अंत, सूरां धड़ ऊडै समळ।
सोहै गुड्डी डोर सूं, उड्डी जांण अनंत ॥४०४॥
दणियर रथ दौफार, आयौ मधि जुध ईखतां।
ऊलां इधकाई अधिक, पैला पैलै पार ॥४०५॥

छप्पय

खां तरीन पाठांण हरख धर तीन हजारी
गैंवर सूं ऊतरै धरे हैंमर असवारी।
करि सारत अस दब्बि ईख नरपत्ति आडंबर
सिर संकर दौड़ियौ जांण कोपे रिपु संबर।

४०२—माथा० = मस्तक को गेंद मानो और पैरों को खेलने का डंडा। चक रस = प्रीतियुक्त होकर। रिण चौगांन = रणांगण रूप मैदान में।

४०३—धकै = अगाड़ी। ओण = रुधिर से। रँगांणा = रँगे हुए। जांणै० = मानों अधिक पवन के चलने से वन में वृक्षों की सघन पत्तोंवाली टहनियाँ हिलती हैं, वैसे रुधिर से रक्त सुभट लोग खड़े झूल रहे हैं।

४०४—आपड़ नोहरां० = गिद्ध अंत्र पकड़ सुभटों के धड़ को शामिल लेकर उड़ते हैं। वह दृश्य ऐसा दिखाई देता है, मानों कनकौआ डोर से उड़कर आकाश में शोभा देता है।

४०५—दणियर० = युद्ध को देखते देखते सूर्य का रथ मध्य में आ गया, दुपहर हो गया। ऊलां = इधर के (महाराजा) की। इधकाई = अधिकता। पैला = शत्रुओं का। पैलै पार = आगे के तट पर गए, हार गए।

४०६—खां तरीन = तरीन खाँ नामक पठान। गैंवर सूँ = हाथी से। हैंमर = घोड़ा। करि सारत० = घोड़े को सारत चाल पर चलाकर। आडंबर = वैभव। सिर संकर = मानों शंबर दैत्य कुपित होकर महादेव के सिर पर चला।

मिळियौ सवेग अभसाह मुख वाही सांग सगाह तिण
रण भेद बाज जोड़ौ जिरह चुभी लेस दक्षण चरण ॥४०६॥
लोह वाह अंकियौ अरी अभसाह विरत्तै
आंण सोर मेळियौ, जांण पावक प्रजळंतै।
जवन सीस नृप जोस, रोस कर खग्ग वजायौ
वज्र घाय सुरपती जांणि वृत दांणव घायौ॥
सिर उर विदार खळ जरद सम कियौ प्रचंड दुव खंड कृति
उण मीर धरत्ती अंतरिख हूर वरत्ती पूर हित ॥४०७॥

दुहा

दोय भाग दक्षिण दिसा, भुज वांमै त्रण भाग।
आसुर चीर उतारियौ, खेड़ धणी चौ खाग ॥४०८॥
सुर दक्खै जै जै सबद, रस अदभुत लख रीज।
ईढ करै खग सूं अभा, वजर न चकर न वीज ॥४०९॥

मिळियौ० = महाराजा अभयसिंह जी के सामने आया और उसने साँग चलाई। रण० = वह साँग बक्तर को फोड़कर दाहिने पैर में कुछ लगी।

४०७—लोह० = शत्रु के शस्त्र के प्रहार से चिह्नयुक्त होने पर महाराजा कुपित हुए मानों बारूद से आग आकर मिली। वज्र घाय = मानों इंद्र ने वृत्रासुर के ऊपर वज्र का प्रहार किया। उर = छाती। जरद = कवच के साथ। दुव खंड = दो टुकड़े। कृति = काटकर। धरत्ती = (धरित्री) पृथ्वी। अंतरिख = आकाश। वरत्ती = वरण किया। पूर हित = पूरे प्रेम के साथ।

४०८—चीर = विदार कर। खेड़ धणी = महाराजा अभैसिंह। खाग = तलवार।

४०९—दक्खै = उच्चारण करते हैं। रस = वीर रस। रीज = प्रसन्न होकर। ईढ करै = बराबरी करता है। वजर = इंद्र का वज्र। चकर = विष्णु का चक्र। वीज = बिजली।

छप्पय

काठ कांण करवत्त वंट किय दंत विहारै
पछुट वीर भुज पांण चीर जुरसंध विडारै।
जांणि सीप जुग भाग दंतधावन दोय अंगे
कना किसन चीरियौ असुर बक कौतक जंगे।
धरि खबर जांणि बै बंधवां माल बिबंटां मंडियौ
आसुर तरीन राजा अभै खग इण भांति विखंडियौ ॥४१०॥
खां तरीन गिण खेत पवँग हूंता दहुँ पासे
अंग पवंग ऊपरा थयौ धर संग ढिगासै।
अरध सीस कर एक एक पद चीर उतारै
ज्यौं भाजन जगनाथ वांटि राखियौ विहारै।
अदभूत हुयौ रस अम्मरां रूक समैं साराहरै
जम ताव मेछ पड़ियौ जुदौ एक घाव अभसाह रै ॥४११॥

दुहा

खां तरीन आगै खगे, जूटा थाट जुवांण।
झाट कमंधां सार री, पड़िया साठ पठांण ॥४१२॥

४१०—काठ० = जैसे करोत काठ को चीरता है। दंत = वृक्ष का तना। पछुट = चलाकर। भुज पांण = बाहुबल से। जुरसंध = जरासंध को। विडारै = मारा था। जुग = दो। दंतधावन = दतून। कना = किंवा। बै बंधवां० = मानों दो भाइयों ने माल के दो बंट किए। विखंडियौ = खडित किया।

४११—अंग० = आधा अंग घोड़े के ऊपर और आधा पृथ्वी के समीप। चीर = चीरकर। ज्यों० = जैसे जगदीश का अटका दो फाड़ हो जाता है वैसे इसका बंट करके रखा। रस = आनंद। अम्मरां = देवताओं को। रूक समैं = तलवार चलने के समय। साराहरै = सबको। जम० = यमराज के प्रताप से। मेछ = (म्लेच्छ) तरीन खाँ। घाव = प्रहार से।

४११—जूटा = भिड़े। थाट = समूह। जुवांण = जवान। झाट = प्रहार। सार री = तलवार की।

छंद त्रोटक

अहुरांण थया रण हीण अणी
सुज वात सताब नवाब सुणी।
हलकार करार अपार हुऔ
दुरवेस धके सुण सांमि दुऔ ॥४१३॥
जरदैत महाबळ भांति जुमां
अड़िसाल ज्यों मा महमंद उमा।
बगसी मुख कायमखांन बळी
कळ छूटौ जंत्रक मंत्र कळी ॥४१४॥
जमवांन सु एवजखांन जिसा
वप रीस अमाप क वीस विसा।
वधि जोड़ अबद्दल सैद वळे
भुज सार लियौ जिण भार भळे ॥४१५॥
रिस में अयुता रघु वांणि रुठी
इम खाग धजां कर वाग उठी।
मद पूठ सरूठ नबाब महा
क्रत कोपित काळिय नाग कहा ॥४१६॥

४१३—हीण = हीन। सुज = वह। हलकार = बुलाने की पुकार। करार = बहुत जोर से। दुरवेस = मुसलमान। धके = आगे।

४१४—जरदैत = कवचधारी। जुमां = मुसलमानों का बहादुर देवता। मुसलमान लोग शुक्रवार को जुमा का दिन कहते हैं। अड़िसाल = वीर। कळ = युद्ध में। जंत्रक मंत्र = यंत्र-मंत्र की कला।

४१५—जमवांन = जवान। वप = शरीर। रीस = क्रोध। वीस विसा = बीस बिस्वा, परिपूर्ण। भार भळे = युद्ध का भार धारण किए।

४१६—धजां = तलवार। वाग = लगाम। मद = मदद में। पूठ = पीछे। सरूठ = क्रोध-सहित। क्रत = किया गया।

खग मेड़तिया रिण जैत खटै
पण लाज मुरद्धर काज पटै।
खद्राळ लखे रिण राठवड़ां
भुज सार कियां हलकार भड़ां ॥४१७॥
अरि साझण पांच हजार इसा
जम ही विमुहा क्रम देत जिसा।
हिचिया अरि जाळण चंपहरा
धुज धूम जिही खग काज धरा ॥४१८॥
करनौत लड़ै अभसाह कजे
धसि खंड करै गज सुंड धजे।
जुध जादव कांकण रुद्र जिसा
अण चूक करै अरि भूक इसा ॥४१९॥
जुध कूंपहरां वधि कोण जके
धज हूंत ढहै गज कुंत धकै।
पिड़ जैतहरां खग जैत पणै
घण घाव वहै तिम ताव घणै ॥४२०॥

४१७—जैत = जय। खटै = संपादन करते हैं। पटै = अधिकार में है। खद्राळ = मुसलमान। राठवड़ां = राठौड़ों को। सार = तलवार। हलकार = ललकार।

४१८—साझण = जीतने के लिये। जम ही = यमराज भी। विमुहा = विमुख। क्रम = पैंड। हिचिया = लड़े, युद्ध करने लगे। चंपहरा = चांपावत राठोड़। धुज धूम = धूम की ध्वजा अर्थात् अग्नि के जैसे।

४१९—कजे = वास्ते। धजे = तलवार से। जादव = भाटी। कांकण रुद्र = महादेव के कड़े के जैमे। अण चूक = बिना चूके। भूक = चूर्ण।

४२०—कूंपहरा = कूंपावत राठोड़। वधि कोण जके = जिनसे बढ़कर कौन है ! धज हूंत = तलवार से। कुंत = दाँत, भाला। धकै = आगे। पिड़ = युद्ध में। जैतहरां = जैतावत राठोड़। ताव = प्रताप।

हित सांम लड़ै रिण जोधहरा
उण वार न ज्यां मिळ ईढगरा।
मिळ ऊदहरा रिण आघमना
कुर खेत अरिज्जण भीम कना ॥४२१॥

सँगराम सदा मन स्यांम समा
कळहै दळ आगळियार कमा।
लख मीर मुड़ै चहुवांण लड़ै
झड़ सार अमीर अपार झड़ै ॥४२२॥

बळ दाखत बाला बांह बळी
कर खाग वहै झळ आग कळी।
वधि वाह करै खगि खेड़वळा
कमळां रुध धार कि मेघ कळा ॥४२३॥

मिळिया रण चाचक रायमला
भड़ ऊहड़ धूहड़ बेळ भला।

४२१—हित सांम = मालिक के हित के लिये। जोधहरा = जोधा राठोड़। ईढगरा = बराबरी करनेवाले, शत्रु। ऊदहरा = ऊदावत राठोड़। आघमना = मन में युद्ध का आदर करनेवाले। कना = मानों।

४२२—स्यांम समा = मालिक के हितकारी। आगळियार = अग्रणी। कमा = करमसोत राठोड़। झड़ सार = तलवार चलकर। झड़ै = गिरते हैं।

४२३—दाखत = दिखलाते हुए। बाला = बाला राठोड़। झळ = ज्वाला। कळी = युद्ध में। खेड़वळा = खेड़वाले, खेड़ेचा राठोड़; अथवा शत्रु सेना की तरफ। कमळां = मस्तकों से। रुध = रुधिर की।

४२४—चाचक = चाचक राठोड़। रायमला = रायमलोत राठोड़। ऊहड़ = ऊहड़ राठोड़। धूहड़ = धूहड़िया राठोड़। बेळ = सहायता।

जैतमाल ति वार दुझाल जिसा
निज सूर किरां अरि लेख निसा ॥४२४॥
हुबिया रिण पाता रूपहरा
असुरांण दळां जम सूं अजरा।
जिण वार करूर हजूर जिता
तन खीचिय धांधल सूर तिता ॥४२५॥
करि खाग वदोवद वाह करै
धरि लाज गजां सिर वाज धरै।
खग धार ध्रपै पड़िहार हरा
हर खोभ तिसां मुख सोभहरा ॥४२६॥
दुयणां सिर मंत्रिय झाट दियै
लखि नाग धजां दुज खाग लियै।
तिण वार लड़ै सिख सांम तणा
घड़ सोर वधै खग जोर घणा ॥४२७॥

जैतमाल = जैतमालोत राठोड़। ति वार = उस समय। दुझाल = वीर। सूर किरां = सूर्य को किरणों की जैसे। निसा = रात्रि।

४२५—हुबिया = लड़े। पाता = पातावत राठोड़। रूपहरा = रूपावत राठोड़। असुराण = मुसलमानों की। अजरा = अच्छे। करूर = क्रूर। खीचिय = खीची चौहानों की शाखा।

४२६—वदोवद = अहमहमिका से। एक से एक आगे बढ़कर। वाह करै = शस्त्र चलाते हैं। वाज = घोड़े। ध्रपै = तृप्त करते हैं। पड़िहार हरा = पड़िहार राजपूत।

४२७—दुयणां = शत्रुओं के। मंत्रिय = मंत्री, अमात्य (भंडारी सिंघी आदि)। झाट दियै = प्रहार करते हैं। धजां = तलवारें। दुज = ब्राह्मण (व्यास, पुरोहित आदि)। सिख = शिक्षा से। घड़ = सेना में। सोर = वीर शब्द, शोर-गुल।

कर भूप लखै खटत्रीस कुळां
हिक धार अणी गळबाह हुळां।
कवराज तठै खग केत कियां
विध वाह करै रिम राह बियां ॥४२८॥

उत मीर महाबळ धीर इसा
जुध सेर भुजां पग मेर जिसा।
मचि खाग दमंगळ आग मई
किर काळ कराळ भुजाळ कई ॥४२९॥

अरिसाळ घड़ाळ विसाळ अड़ै
पग हाथ कपाळ निराळ पड़ै।
गहमै अण पार करार ग्रहै
वप सार सहै असि धार वहै ॥४३०॥

झड़ि तुंड तुरां गज सुंड झड़ै
चड़ि रुंड गरै सिर मुंड चड़ै।

४२८—खटत्रीस कुळां = छत्तीस वंश के राजपूत। हिक = एक। धार = तलवार की। अणी = भालों की। गळबाह = कंठ पकड़ना। हुळां = छाती में मुक्की मारना। केत = चिह्न। रिम = शत्रु। बियां = दूसरे।

४२९—पग मेर जिसा = मेरु के समान पैर जमानेवाले। दमंगळ = युद्ध। आग मई = अग्नि का सा। कई = क्या, मानों।

४३०—अरिसाळ = शत्रुओं के शल्यरूप। घड़ाळ = सेनापति। अड़ै = भिड़ते हैं, युद्ध करते हैं। निराळ = जुदे। गहमै = गर्व में। करार = बल। वप = शरीर पर। सार = तलवार। असि = तलवार की।

४३१—तुंड = मस्तक। तुरां = घोड़ों के। गरै = पास, समीप में।

झड़सार मचै खग धार झड़ै
पिड़ तारँग धार अपार पड़ै ॥४३१॥
किलकै मुख वीर सधीर किता
तन लोह गिणै मन सोह तिता।
हिँदुवांण अने खुरसांण हिचै
नर धीर सहै लख वीर नचै ॥४३२॥

छप्पय

एक पड़ै ऊपड़ै बंध ऊधड़ै बक्त्तर
सार वहै सूरमां पार विण छूटै पंजर।
एक पौहर नभ अरक ईख रहियौ अचरज्जै
निरख काळ नच्चियौ समै खग चाळ सहज्जै।
आवरत जुद्ध परखै अमर हरखै रिख नारद हर
कमधज्ज निहट्टै किरमरां अत जूटै खूटै असुर ॥४३३॥
पड़े अली अबदल्ल जिकौ अण चाळ जुड़ंतां
बगसी कायमखांन मेर उनमांन महतां।

झड़सार मचै=तलवार की झड़ी लगी। खग धार झड़ै=तलवार की धार चल रही है। पिड़=युद्ध में। तारँग=तरंग, लहर की तरह। धार=तलवार की धार।

४३२—तन०=शरीर पर शस्त्र पड़ते हैं, उनको वे मन की खुशी मानते हैं। खुरसांण=मुसलमान। हिचै=युद्ध करते हैं। लख=देखकर। वीर=बावन वीर नाचते हैं।

४३३—ऊपड़ै=उठता है। पार विण=विना पार, अपार। पंजर=शरीर। समै खग चाळ=तलवार चलने के समय। सहज्जै=सहज में। आवरत=घेरा होते हुए युद्ध में। निहट्टै=नाश करता है। किरमरां=मुसलमानों को।

४३४—अण=दस। चाळ=युद्ध में। जुड़ंतां=भिड़ते समय। मेर उनमांन=मेरु पर्वत के अंदाजे का। महंतां=बड़ों में।

पवज नै अहमंद पड़े भुज दुंद निबाहे
उमां जुमां महमंद छंद जाहर दुय राहे।
कोय दोय हजारी तीन को घड़ा करारी घाय घड़
अरि विखम जंग आवट्टियौ दीवै जांण पतंग पड़ ॥४३४॥

पहर तीन पांडीस कहर वागी रिण कंदळ
घड़ी अष्ट दिन रह्यौ पड़ो खड़भड़ी जवन दळ।
रव भगांण सांभळे सेर परजळे उरंतर
सिंह मूंछ आछटी कना दबि पुंछ फुणंधर।
सामंद उलट्टौ भोम सिर कै रांण प्रगट्टौ राम दळ
.... ॥४३५॥

भड़ घावां भारिया सुणे मारिया अमीरां
नामदार कोपियौ जांणि परिवार कंठीरां।
मूठ जांणि गुल्लाल वाग ऊठी धजराजां
.... ।

दुंद = (द्वंद्व) दोनों। निबाहे = निबाहकर। दुय राहे = दोनों पक्ष में। घड़ा = सेना। करारी = बलवती। घाय घड़ = घावों से जर्जर होकर। आवाट्टयै = नष्ट हुआ। दीवै० = मानों दीपक में पड़कर पतंग नष्ट होता है।

४३५—पाडीस = तलवार। कहर = भयंकर। कंदळ = नाश। खड़भड़ी = हलचल। रव = शब्द। भगांण = भागने का। परजळे = प्रज्वलित हुआ। उरंतर = मन में। आछटी = खींची। कना = किंवा। फुणंधर = सर्प की। सामंद = समुद्र। रांण = रावण पर।

४३६—घावां भारिया = घावों से भरे हुए, घायल। कँठीरां = सिंह। मूठ० = मानों गुलाल की मुट्ठी उड़ी। वाग० = घोड़ों की वागें उठीं।

आयौ सकोप दळ ऊपरा प्रबळ तोप गोळै सु पर
कारण विलोप जग चौ करण धायौ काळक कोप धर ॥४३६॥
अलीयार उण वार हुवौ हरवल्ल हजारां
इंद्रजीत अण संक एम वर सकत अपारां ।
सर वूठा हरि सेन नाग छूटा गयणारां
जांणि दुंद जाळिवा सीस सामंद अगारां ।
उण जंग अरी मत्थै अकस फिरी वग्ग अभसाह री
सुज वेग सुदरसण चक्र सिर हस्त चक्र छूटौ हरी ॥४३७॥

छंद मोतीदांम

उभै दिस पार न मार उचार
वधै दहुँ वै मन क्रोध विकार ।
झुकै अणियाल हुए खग झाळ
जुगंत अनंतक जीभ जुवाळ ॥४३८॥

तोप० = तोप के गोले के समान । कारण० = जगत् को लुप्त करने के लिये मानों काल दौड़ा ।

४३७—अलीयार = इस नाम का मुसलमान । इंद्रजीत० = शक्ति के अनेक वर पाया हुआ, जैसा रावण का पुत्र इंद्रजित् था उसके समान । सर वूठा = बाण बरसने लगे । हरि सेन = रामचद्रजी को सेना में जैसे । वे बाण कैसे दिखाई देते थे, मानों आकाश में सर्प छूटे । जांणि० = मानों युद्ध को जलाने के लिये समुद्र की अग्नि बड़वानल सिर पर आई । अकस = गर्व के साथ । सुज वेग० = महाराजा का चक्र (सेना) ऐसे वेग से चला, जैसे हरि के हाथ से सुदर्शन चक्र चला ।

४३८—अणियाल = भाले । झाळ = अग्नि की ज्वाला । जुगंत० = मानों प्रलयकाल में शेषनाग की जीभ की ज्वाला ।

दहूँ दळ वाधक आंण दुबाह
हिचै खग कुंत मचे हथवाह ।
करै किरमाळ वहै तिण काळ
कटै भड़पाळक भाळ कपाळ ॥४३९॥
कटै जरदाळ वढै छकडाळ
रुळै वरमाळ दुळै रुहिराळ ।
महेस कपाळ चणै कज माळ
चलै रत खाळ तठै पद चाळ ॥४४०॥
वरै सुज हिंदु वरै सुरबाळ
चलै मुख हूर धरै चुँगलाळ ।
जळै किर वांस प्रळै मिळ ज्वाळ
पड़ो किर अंगि कि दृंगि पलाळ ॥४४१॥
धडे लगि सार उठै रत धार
उगी फळ बिंब कि कंब अपार ।
हुए इक सत्थ विना खग हत्थ
मिळै लथबत्थ विना के मत्थ ॥४४२॥

४३९—दुबाह=वीर । हिचै=युद्ध करते हैं । कर=हाथ में । किरमाळ=तलवार । तिण काळ=समय । भड़पाळक=सेनापतियों के । भाळ=ललाट ।

४४०—जरदाळ=कवचवाले वीर । वढै=कटते हैं । छकडाळ=हाथी । ढुळै=वहता है । रुहिराळ=रुधिर, लोहू । चणै=चुनता है । कज=वास्ते । रत खाळ=रुधिर का प्रवाह ।

४४१—वरै=वरण करती हैं । सुरबाळ=अप्सरा । हूर=अप्सरा । चुँगलाळ=मुसलमानों को । अंगि० =मानों भूसे में अग्नि का कण पड़ा ।

४४२—धडे० = धड़ पर तलवार लगती है । उगी० =मानों बिबफल की टहनियाँ उग रही हैं । इक सत्थ=एक साथ ।

रड़ब्बड़ मुंड पड़ै चड़ि रुंड
तिसा विण सुंड वणै गज तुंड।
हिचै नर वीर खगां कर हाक
छकी रिण चौसठ जोगण छाक ॥४४३॥

छप्पय

अली यार उण वार कोपि निज यार हकारे
छूटे सर धानंख पंख जणि चील अपारे।
कै धरि दंभ सुलब्भ अब्भ आछादि रहे धर
तर तमाळ वन तरळ मिळै फिर डाळ समंजर।
अति वेग जांण व्रज ऊपरा प्रळैमेघ मिळ पस्सरे
तिण वार नीर गहरा तिकां रहियौ वीर सरव्वरे ॥४४४॥
भड़ भाजै खड़भड़ै देख आसुर दावानळ
कुंभ करन कोपियौ जांणि कंपियै कपी दळ।
सूर सु माती वार रहे नरपति दहुँ पासे
परख तौर खुरसांण और लग रहे तमासे।

४४३—रड़ब्बड़=इधर उधर लुढ़कते हैं। रुंड=धड़। तिसा=वैसे। तुंड=मस्तक। हिचै=युद्ध करते हैं। छकी=तृप्त हुई। छाक=मद्य से, मद्य के प्याले से।

४४४—यार=मित्रों को। हकारे=बुलाए। अब्भ=आकाश। आछादि रहे=ढक रहे। तर=(तरु) वृक्ष। तरळ=चपल। प्रळैमेघ=प्रलय करनेवाले बादल। पस्सरे=फैले। नीर=बल, उत्साह, जल। गहरा=अगाध। वीर सरव्वरे=वीररूपी सरोवर में।

४४५—खड़भड़ै=विचलित हुए। दावानळ=अग्नि। सूर=शूर वीर। माती वार=महा घोर युद्ध के समय। दुहुँ पासे=दोनों तरफ। तौर=ढंग। खुरसांण=मुसलमान। तमासे=तमाशा देखने लगे।

भय रस प्रकास कायर भड़ां ईख रौद्र रस आसुरां
ओपियौ वीर संजुत अभौ कियौ अद्‌भुत अम्मरां ॥४४५॥
वध प्रचंड वखतेस कियौ कोडंड कुमक्खै
ओप वदन ऊभरै रूप वड़वाग निरक्खै ।
ज्वाळाकार खतंग कीध गुण संग तमक्कै
प्रळैवंत सिव चक्ख जांणि अमरक्ख भभक्कै ।
जवनेस परक्खै लेखि जिम पौरख दाख प्रमांण सूं
जयपत्र धुजां बंधण जगत छूटौ बांण कबांण सूं ॥४४६॥
को वरणै जव इखू असुर आयै औचक्के
मिळे खीजि उर मझि वीज तरळक्कि सळक्के ।
फूट तुरस तनत्रांण उरस आतुर आतम घर
फीफर करे फड़ज्ज पार तन हौदां पंजर ।

भय० = कायरों का भय रस का अनुभव हुआ । रौद्र० = मुसलमानों को रौद्र रस का । ओपियौ० = अभयसिंह वीररस सहित शोभा देने लगा । कियौ० = देवों को अद्‌भुत रस ।

४४६—वध = बढ़कर । कोडंड = धनुष । कुमक्खै = कुपित होकर । ओप = शोभा । ऊभरै = बढ़ती है । वड़वाग = बड़वानल । चाळाकार = युद्ध करनेवाला । खतंग = धनुष । गुण संग = प्रत्यंचा सहित । तमक्कै = क्रुद्ध होकर । प्रळैवंत = प्रलय करनेवाला । अमरक्ख = क्रोध । भभक्कै = ज्वाला सहित बढ़ा । जवनेस० = सेर बिलंद खाँ चित्र का सा खड़ा देखता है । पैरख = (पौरुष) पुरुषार्थ, बल, पराक्रम । दाख = दिखलाकर । जयपत्र० = बखतसिंह के धनुष से बाण छूटा, वह ऐसा दिखाई दिया कि मानों जगत् के जयपत्र के ध्वजा बाँधी गई ।

४४७—जव इखू = बाण का वेग । औचक्के = उचककर, लपककर । वीज० = मानों बिजली की शलाका चमकी । तुरस = ढाल । तनत्रांण = कवच । उरस० = आत्मा (जीव) ने आकाश को घर बनाया । फीफर० = फेफड़ा फड़कने लगा । पार० = शरीर रूपी हौदे के पिंजरे

अळियार यार छुंडे समर पूगौ द्वार परंपरा
जय सद्द करै नभ सिद्ध जण वाजै दुंदुभि अम्मरां ॥४४७॥
वाह वाह वखतेस कहै अभसाह हरक्खे
खळ दुबाह खंडतां प्रबळ बळ बांह परक्खे।
राम बांण सिंधांणि प्राण मारीच विदारे
कना पाथ समरत्थ वाणि जयद्रत्थ प्रहारे।
उच्चरै फतै जय पाठ अति मारू आठ मसल्लरां
वीधौ सक्रोध आसर विकट महा जोध अन (भ) माल रां।।४४८॥
सेर खांन भर समर कहर परखे धर कंदळ
लोथ लोथ ऊपरा गरा भिड़जां गज तंडळ।
दंत कुळी अंगुळी मत्थ पग हत्थ निराळा
अंत तंत्र वित्थरी हंत दाढ़ाळ हठाळा।
रवि सेख महूरत एक रहि ईख वेर वे आब री
फुरमाय हाय गज फेरियौ बीती लज्ज नबाब री ॥४४९॥

में वह बाण पार हो गया। पूगौ० = परंपरा के द्वार को पहुँचा अर्थात् मर गया।

४४८—खळ० = शत्रुओं के वीरों को मारते। बळ बांह = भुजा का बल। राम० = रामचंद्र ने बाण को धनुष पर चढ़ाकर। प्राण० = मारीच राक्षस का प्राण-हरण किया था। कना = किवा। पाथ = अर्जुन ने। वाणि = बाण से। मारू० = मारवाड़ के आठों मिसल के सरदार। वीधौ = विद्ध किया, बेधा।

४४९—कहर = भयंकर। परखे = देखा। धर कंदळ = पृथ्वी का नाश। गरा = ढेर। भिड़जां = घोड़ों के। तंडळ = मस्तक। दंत कुळी = दाँतों का समूह। मत्थ = मस्तक। निराळा = जुदे। अंत = अंत्र। तंत्र = वहाँ। हंत = हाय। दाढ़ाळ = दाढ़ोंवाले, महावीर। हठाळा = हठवाले, साहसी। रवि = सूर्य। सेख = बाकी रहा। वेर = समय। बे आब री = शोभाहीन, कांतिहीन। फुरमाय = 'हाय' ऐसा कहकर। गज फेरियौ = हाथी को पीछा लौटाया। बीती लज्ज = लज्जा जाती रही।

पीठ धणी फेरतां अणी मुड़िया असुरांणां
मद् विलंद् मूकियौ मुगल सैयद् पट्ठांणां ।
नैतबंध बांनेत मेळ रणखेत महंतां
विना दिवाळी बंध जीण खाली मेमंतां ।
वप सोच कंप सम्मर विरह करै सँकोच फकीर रौ
कारण अथाह वरणै कमण उर दुख दाह अमीर रौ ॥४५०॥

दुहा

भाजंतां दिल्ली भड़ां, वरे हिंदु पण बंध ।
सारी लाज हजारियां, धुर ज्यां धारी कंध ॥४५१॥
माहव मांन महाबळी, निज कुळ राखण नीर ।
जुध झड़िया धारूजळै, कुसळै काढि अमीर ॥४५२॥

४५०—पीठ धणी फेरतां = मालिक के पीठ देने पर । अणी = सेना से हट गए । असुरांणां = मुसलमान । मद = गर्व । मूकियौ = छोड़ा । नैतबंध = ध्वजबंध । बांनेत = बाना रखनेवाले, चिह्न रखनेवाले । मेळ = मिले । रणखेत = रणक्षेत्र में । महंतां = बड़े बड़े । विना० = दीपमालिका के दिन हाथी खुले रखे जाते हैं । यहाँ युद्ध में महावतों के मर जाने से हाथी बंधन और जीन बिना हो गए हैं । वप० = शरीर में सोच से काँपनी हो गई है । सम्मर० = वैभव के वियोग का स्मरण करके मन में फकीर होने का संकोच करता है कि क्या मैं फकीर हो जाऊँ ? । कमण = कौन ।

४५१—वरे० = हिंदू प्रतिज्ञा करते हैं । जिन्होंने दो हजारी तीन हजारी नवाबों की समस्त लज्जा का भार अपने कंधे पर धारण किया ।

४५२—माहव = माधोसिंह । मांन = मानसिंह । धारूजळै = तलवार से । अमीर = सेर विलंद को ।

जवन अपूठै जावतै, झड़िया मेछ दुझाल ।
वरघल सारां बेलियां, ज्यों थेलियां गुलाल ।।४५३।।
दुसह अमीर दिलेस दळ, सह जांणै संसार ।
गौ जू मग्गां छोडि गह, जंगां जीपणहार ।।४५४।।
ऊभौ छत्रपत्ती अभौ, राजा रत्ती रार ।
करि नरसिंघ अभूत कृति, अदतीपूत सँघार ।।४५५।।
वाजा वाजै जैत रा, कियौ सकाजा राह ।
ले ऊभौ साजा विरद, महाराजा अभसाह ।।४५६।।
फिरि रण खेत सँभाळियौ, जैत करै कमधज्ज ।
अरि चूरे पड़िया अवनि, कळह इता नृप कज्ज ।।४५७।।

छप्पय

पैहलै अणी करन्न धणी पाली पण धारी
किसन जसावत जोड़ मौड़ चांपे मण धारी ।

४५३—अपूठै जावतै = पीछे जाते । झड़िया = मरे । दुझाल = वीर । वरघल = छेद, मास कट जाने का छिद्र । सारां = सब । बेलियां = सुभट, आदमी । ज्यों० = जैसे गुलाल की थैली लाल होती है वैसे शरीर रक्त से रक्तवर्ण हो रहे हैं ।

४५४—दुसह = दुःसह । सह = सब । गौ = गया । छोडि गह = गर्व त्यागकर । जीपणहार = जीतनेवाला ।

४५५—रत्ती रार = आँख में ललाई लिए । अभूत = अद्भुत । कृति = काम । अदतीपूत = हिरण्यकशिपु को ।

४५६—जैत रा = जय के । सकाजा = सफल, समर्थ । राह = मार्ग, धर्म । साजा = अच्छे । विरद = जस, कीर्ति ।

४५७—अवनि = पृथ्वी पर । कळह = युद्ध में ।

४५८—पैहलै० = पहली अनी में पाली का ठाकुर करणसिंह । जोड़ = समान । मौड़ चांपे = चांपावतों का मुकुट । मण धारी = रत्न ।

गोवरधन्न सुजाव चाव कलियांण न चूकै
सोह पाळ संभारि मोह मन जाळ प्रमूकै ।
ईखतै अरक कंद्ळ अतुळ गजां कमळ कीधा गरा
खळ प्रबळ मीर झड़िया खगे हिचि पड़िया चांपाहरा ॥४५८॥
रांम रूक वाहतौ नांम नरसिंघ उचारै
सबळावत साहकां सकां मारकां सँघारै ।
सुत सामँत सुरतांण खगे खुरसांण विखंडे
दुरजौ पद्म सुजाव आव चित भाव न मंडे ।
हुविया सप्रांण कूँपाहरा कळि समांण राखण कथां
खळ पाड़ इता पड़िया खळै रूक झाड़ि चडिया रथां ॥४५९॥
जोधै हठमल जेम करै कुण नेम करग्गे
सिर पड़ियौ साझियौ खैफ बिळ हैफ खडग्गे ।
जोड़ै पूत गुमांन जवन मोड़ै जोगाहर
गै झूळां हत्थळै जांणि सादूळौ नाहर ।

सुजाव = पुत्र । चाव = उत्साह, उत्कट इच्छा । सोह पाळ = इच्छा को पूर्ण करके । ईखतै अरक = सूर्य के देखते, सूर्य के दीखते अर्थात् पिछले प्रहर । कमळ = मस्तक । गरा = ढेर । हिचि = लड़कर ।

४५९—रांम = रामसिह । रूक वाहतौ = तलवार चलाता हुआ । साहकां = बादशाह के । सकां = सबको । मारकां = मारनेवाले, नामी । खुरसांण = मुसलमानों को । विखंडे = मारा, खंडित किया । सुजाव = पुत्र । आव = उम्र । हुविया = लड़े । सप्रांण = बलवान् । कळि = युद्ध में । समांण = मान, प्रतिष्ठा । कथां = आख्यायिका में । खळै = रणखेत में । रूक झाड़ि = तलवार चलाकर । चडिया रथां = विमानों में चढ़े ।

४६०—जोधै = जोधा राठोड़ । करग्गे = हाथ से । साझियौ = मारा । खैफ = शत्रु को । बिळ हैफ = बिना आश्चर्य के । जोड़ै = साथ । मोड़ै = पीछे हटाया । जोगाहर = जोगीदास का पुत्र । गै झूळां = हाथियों के

जोधहर मेटि पुन रिप जनम इळ कलि सम राखै अचड़
इम नांम धणी छुळि करि अमर गा रवि मंडळ राठवड़ ॥४६०॥
भोमसिंघ भुज बळां जोम दक्खै कुसळांणी
वेगां सूं वाजियौ अभँग तेगां ऊबांणी।
हठमालोत गुलाब आब मेड़तै चढ़ायौ
वेरै भैर तणैह खगे असुरांण खपायौ।
खित मीर अमांमा साभि खग कमँधे जग नामां किया
तजि वात मरण उपजण तणी मिळे जोति मेड़त्तिया ॥४६१॥
कळहै भिड़ करनौत पड़ै चुतरेस कलावत
चहुवांणै दुझमाल सार झाड़ियौ सबळावत।
भाटी साहँस माल पड़े अखमाल समोभ्रम
....।
केहरी पड़े सोनंगरौ दलौ लड़े आगा दळां
केहरी पड़े फतमाल कौ खीची खम झाड़े खळां ॥४६२॥

समूह को। जोधहर = जोधा राव का वंशज, जोधा राठोड़। पुन = फिर। रिप = शत्रु का। इळ = पृथ्वी में। अचड़ = अचलता, स्थिरता। छुळि = युद्ध में। गा = गए।

४६१—जोम = जोश। दक्खै = दिखाता है। वाजियौ = लड़कर मरा। तेगां = तलवार का। ऊबांणी = उठाकर। आब = शोभा, कांति। खपायौ = नाश किया। खित = पृथ्वी में। अमामा = बड़े बहादुर, अप्रमाण। साभि = मारकर।

४६२—कलहै = युद्ध में। दुझमाल = दुर्जनसिंह। सार = तलवार से। समोभ्रम = सदृश। सोनंगरौ = सोनगरा चौहान। आगा = अगाड़ी। झाड़े = मारकर। खळां = दुष्टों को, शत्रुओं को।

दुहा

भगवांनौ नरहर उभै, समहर मुकन सुजाव।
ऊतरिया सारां अगै, धारां धांधल राव ॥४६३॥

छप्पय

मयारांम दळ मुहर भिड़े सुत सांमि भयंकर
सेलां मुहि साझियां किता आसुर लहि कुंजर।
जोस भुजां दक्खवै रोस वीरा रस रत्तौ
गजराजां ऊपरां जांणि मृगराज विरत्तौ।
पड़ियौ सगाह खळ पिंजरै करे वाह झड़ियौ कमळ
गुज्जरां राव गज गाह कर छत्रपत्ती अभसाह छळ ॥४६४॥
प्रोहित केसरसिंघ सिंघ किर संकळ छुट्टौ
अरि सिर अखमालौत जांणि रिख गोत विछुट्टौ।
सुत जैदेव सजोड़ खळां रिणछोड़ अभायौ
अंग श्रोण भारियौ द्रोण किर भारथ आयौ।

४६३—उभै = दोनों। समहर = युद्ध में। ऊतरिया = रणांगण में प्रवेश किया। सारां अगै = सबके आगे। धारां = तलवार की धार।

४६४ – दळ मुहर = सेना के आगे। सेलां मुहि = भालों से। साझियां = मारे। किता = कितने ही। आसुर = मुसलमान। लहि = पाकर। कुंजर = हाथी। दक्खवै = दिखाता है। रत्तौ = अनुरक्त। विरत्तौ = कुपित। पिंजरै = शरीर पर। झड़ियौ = पड़ा। कमळ = मस्तक। गाह कर = मार कर। छळ = वास्ते।

४६५—संकळ = सांकल। रिख० = मानों पर्वत से अलग हुआ रीछ। सजोड़ = समान। खळां = शत्रुओं को। अभायौ = अहित, बुरा। अंग० = जिसका शरीर लोहू से भरा हुआ है। द्रोण = द्रोणाचार्य।

अभसाह सुछ्ळ उजवाळियौ सिवड़ा पोकरणा सभ्रम
लख परम हांम रंभा जजो ब्रह्म धांम वसिया ब्रहम ।।४६५।।

दुहा

एतां भड़ रण आंगणै, पाया सिंघ प्रभाव ।
अन लोहां वस ऊपड़े, एक सहँस उमराव ।।४६६।।

छप्पय

गौ नबाब गह छांडि आब रण कूंड विसारे
खट हजार वीराण यार ऊतरिया धारे ।
रुंड मुंड रातल्ल पिंड सत खंड परक्खै
गूड सार गळ भरे छुंडि पळ लोयण भक्खै ।
गोमाय सगर पळचर गहणि सारमेय नाहर समळ
अँग अंग भखै पळ आसुरां कर पद धर तंडल कमळ ।।४६७।।

सुछ्ळ = युद्ध को । सिवड़ा = सिवड़ शाखा के पुरोहित; पोकरण जाति का ब्राह्मण । हांम = उत्कट इच्छा ।

४६६—अन = दूसरे । लोहांवस = शस्त्रों के वश होकर, घायल होकर । ऊपड़े = उठे ।

४६७—गौ = गया । गह = गर्व । आब = तेज, कांति को । रण कूंड = (कोड) मन की उत्कट इच्छा, उत्साह, प्यार । विसारे = भूल गया । वीराण = वीर । ऊतरिया धारे = भरे । रातल्ल = मादा गिद्ध । पिंड = शरीर, मांस-पिंड । परक्खै = देखा । गूड सार = गुडलियों के सार से । गळ = गला । पळ = मांस । लोयण = नेत्र । गोमाय = शृगाल, सियार । सगर = सब । पळचर = मास खानेवाले । सारमेय = कुत्ता । समळ = शामिल । पळ = मांस । तंडल = (तुंड) मुख ।

म = मस्तक ।

दुजड़ चूर दुरवेस देस अपणावै सतरन
रवी सेस अवनेस बंधु बखतेस सरोतर।
भड़ दुबाह जस भणै बाह हथवाह वडाई
लगी दाह आसुरां थयौ सुर राह सवाई।
जंपतां महाभारत्थ जिम ओपै पांडव ऊधरा
ऊभा समाथ जीपै अभै जैतहथा जोधहपुरा ॥४६८॥

दुहा

राजा भाळ सँभाळ रण, वाजा जैत वजाड़ि।
आया डेरां ऊधरां, चूंड हरा जळ चाडि ॥४६९॥
यों कवि कीरत उच्चरै, निरखै पैज निबाह।
जुध राजा गजबंध ज्यों, महाराजा अभसाह ॥४७०॥

इति श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराज श्री अभैसिंघजी
रा परमजस राजरूपक में वारहजारी निबाब सेर
विलंद अैहमदाबाद सूं लड़नैं काढियौ सो
विगत चतुश्चत्वारिंश प्रकाश ॥४४॥

४६८—दुजड़=तलवार से। दुरवेस=मुसलमानों को। सतरन=गुजरात का। रवी=सूर्य। सेस=शेषनाग। अवनेस=पृथ्वी का मालिक, राजा। सरोतर=बराबर, अच्छा। दुबाह=वीर। सुर राह=देवताओं का पक्ष। जंपतां=कहते। ओपै=शोभायमान होते हैं। ऊधरा=उच्च। समाथ=समर्थ। जीपै=जय पाई है। जैतहथा=जय जिनके हाथ में है।

४६९—भाळ=देखकर। सँभाळ=सँभालकर। जैत=जय के। ऊधरां=ऊँचे, उत्तम। चूंड हरा=चूंडा के वंशजों का। जळ चाडि=तेज या कीर्ति बढ़ाकर।

४७०—पैज=प्रण, प्रतिज्ञा। गजबंध=गजसिंह के जैसा।

दुहा

फेरे पीठ सँग्राम तजि, डेरै गयौ निबाब।
भड़ झड़िया पड़िया लखै, गया निरक्खै आब ॥ १ ॥
उर लग्गी ज्वाळा विरह, जाणि सळग्गी लाय।
भोम निहारै गयण तजि, वयण उचारै हाय ॥ २ ॥
उर मावै न विराम दुख, वीती हांम निहार।
आए कांम सँग्राम त्यां, नांम सँभारि सँभारि ॥ ३ ॥
हाली यार तरीनखां, अबदल सैद जवांन।
कब देखूं लेखूं जनम, प्रेखूं प्रांण गुमांन ॥ ४ ॥
मो सूं जेर अमीर सब, सोबै सेर विलंद।
जोस हरख वीतै भयौ, कृष्ण पक्ष कौ चंद ॥ ५ ॥
तीन पुहर वीती निसा, अति चिन्ती चित दाह।
भड़ आजांन दुबाह सब, कियौ सनाह सबाह ॥ ६ ॥

१—फेरे पीठ=पीठ फिराकर। आब=शोभा, प्रतिष्ठा।

२—सळग्गी=लगी, प्रज्वलित हुई। लाय=अग्नि-ज्वाला। भोम निहारै=पृथ्वी की तरफ देखते हैं। गयण=आकाश को। वयण=वचन।

३—उर०—वियोग का दुःख मन में समाता नहीं है। वीती हांम=उत्साह नष्ट हो गया है। आए कांम=मारे गए। सँभारि=याद करके।

४—हाली=मुसलमानों में जाति। यार=मित्र। लेखूं जनम=जन्म लेना सफल समझूँ। प्रेखूं=देखूँ। प्रांण=बल। गुमांन=गर्व।

५—जेर=वशवर्ती।

६—पुहर=प्रहर। आजांन=जिनके हाथ घुटने तक लंबे हैं। दुबाह=वीर। सनाह=कवच आदि का धारण। सबाह=बाहुबलवाले।

उर उचाट परलाप अति, जांणावै नह जाब ।
कोड वळे भारथ करण, वंछै मरण निबाब ।। ७ ।।

इति श्री महाराज राजराजेश्वर श्री अभैसिंघजी रा परम जस
राजरूपक में लड़ाई जीत डेरैं पधारया सो विगत
पंचचत्वारिंश प्रकास ।।४५।।

७—उचाट = परिताप, दुःख, चिता । परलाप = प्रलाप, अंटशंट बकना ।
कोड = उत्साह । वळे = फिर । भारथ = युद्ध करने का ।

दुहा

असुर हजारां संहरे, हरे अमीरां लज्ज ।
आयौ रण विहरै अभौ, करे फतै कमधज्ज ॥ १ ॥

छंद हणूंफाल

अद्‌भूत जवन अगाह, सुज चूर रण खग साह ।
झड़ पांच रण हुय झीक, सुज मीर सेर सरीक ॥ २ ॥
पड़ि वाज गज अणपार, अण गिणत भड़ असवार ।
इळ रुहिर पूर अथाह, बहि नाळ खाळ प्रवाह ॥ ३ ॥
वृक हरख भूख वरज्ज, गोमायु ग्रीध गरज्ज ।
दळ मीर वर निज देह, सुख गई हूर सुग्रेह ॥ ४ ॥
जुध जीप पति जोधांण, तड़ भांज भड़ विचत्रांण ।
पाधारियौ सिध पाय, अभसाह धांम अकाय ॥ ५ ॥

१—रण विहरै = युद्ध-क्रीड़ा करके । कमधज्ज = राठोड़ ।

२—अगाह = अगाध । सुज = वह । चूर = चूर्ण हो गया, परास्त हो गया । खग साह = तलवार को धारण करके । झड़० = पाँच मीर तो रण में मारे गए, जो घायल हुए वे सेरविलंद के शामिल हुए ।

३—वाज = घोड़े । इळ = पृथ्वी । अथाह = बहुत, अपार । नाळ खाळ = (रुधिर के) नाले खाले बहने लगे ।

४—वृक = भेड़िये खुश हैं । भूख वरज्ज = भूख जाती रही है । गोमायु = सियार । दळ० = सेना में जो मीर मरे उनको वरण करके हूरें सुख से अपने घर गईं ।

५—जीप = जीतकर । तड़ = पक्ष । विचत्रांण = मुसलमानों के । पाधारियौ = आया । धांम = डेरे पर । अकाय = समर्थ ।

दुहा

बळ पतसाह बराबरी, कुळ ईरांन सगाह।
विचत जिकौ भागै विढे, अई सगति अभसाह ॥ ६ ॥
कांम धणी आगै जिके, आया रण उमराव।
धन्य भणै सारी धरा, सुणै मुरद्धर राव ॥ ७ ॥
हिचि सम हरि गज हाथळे, भारमले कुळ लज्ज।
ऊपड़िया जुध एतला, समहर सूर सकज्ज ॥ ८ ॥
बळ भरिया दहुँवै बळां, हूय दळां हलकार।
अठी अमर ऊदाहरौ, आयौ ऐसी वार ॥ ९॥
वांना देठाळै थया, असमांनां धुज रेण।
भुजे हमस वांकां भड़ां, खैंगां घमस खुरेण ॥१०॥
हलकारा दहुँवै दळां, दीनी खबर सिताब।
हेत धणी चित हरखियौ, उर थरकियौ निबाब ॥११॥

६—बळ० = (जिसका) बल बादशाह के बराबर है, ईरानी वंश है वह। विचत = (विचित्र) मुसलमान (सेरबिलंद) भागै विढे = लड़कर भागा। अई० = उसका कारण आई देवी है। अथवा पूर्ण शक्ति आ गई।

७—कांम० = जो स्वामी के आगे काम आए।

८—हिचि = युद्ध करके। समहरि = सिंह के समान। गज हाथळे = हाथियों को हत्थलों से मारा। ऊपड़िया = घायल होकर रणखेत में से उठे। एतला = इतने। समहर = युद्ध में।

९—बळ० = दोनों सेनाएँ बल से भरी हुई हैं और वीर शब्द हो रहे हैं। उस समय ऊदावत अमरसिंह इधर आया।

१०—वांना = दोनों तरफ के चिह्न दिखाई दे रहे हैं। आकाश में धूलि छा रही है। भुजे० = टेढ़े वीरों के मन में युद्ध की इच्छा लग रही है। खैंगां = घोड़ों के खुरों की घमस हो रही है।

११—हेत धणी० = (अमरसिंह का आना सुनकर) बड़े प्रेम से महाराजा का चित्त हर्षयुक्त हुआ। उर = मन में। थरकियौ = थरथर काँपने लगा।

छंद बेअक्खरी

साथै अमर तणै दळ साजा, राजी थयौ निरख महाराजा ।
दाखै भाग कुसळ पति देखै, दुयणां काळ सरीखौ पेखै ॥१२॥
वखतौ लड़ण खळां रस वायौ, अधपति निजर सुभावत आयौ ।
अमर तणै जामळ बळ ऐसौ, जोड़ै भीम अरज्जण जैसौ ॥१३॥
ऊदौ अनौ विकट ऊदावत, जोड़ मोड़ दळ बिन्है जगावत ।
रतन जगावत वांकिम रातौ, रांम सुभावत मेळ अरातौ ॥१४॥
सुभरामोत पेख मुख सोहै, दीसै जिसौ खळां गज ढोहै ।
हाथेसिंघ अभावत हीरौ, सुरतावत तेजलौ सधीरौ ॥१५॥
पदमौ सामँत सामत पांणै, जोड़ अखावत पावक जांणै ।
सांमसिंघ बखतावत सिंगी, जैमल तणौ कान्ह अति जंगी ॥१६॥
पुहकर सुत लखधीर वीर पण, ज्वाळ खगे दौलावत जीवण ।
दीठौ बाळकिसन सुत देवौ, करगे लाज वधारण केवौ ॥१७॥
हिंदू पेमसिंघ सम हाथे, खांन तणा वाधै जुध खाथे ।
अखौ जोध तण क्रोध अछायौ, विसन अनावत लड़ण सवायौ ॥१८॥

१२—साजा = अच्छा । दाखै० = अपने स्वामी को कुशल देखकर अपना भाग्य सराहता है । दुयणां = शत्रुओं ने ।

१३—रस वायौ = वीररस से व्याप्त । सुभावत = मन में प्रिय लगता हुआ । अमर तणै = अमरसिंह के । जामळ = बंधुओं का ।

१४—मोड़ दळ = सेना को पीछे हटानेवाला । बिन्है = दोनों । जगावत = जगरामसिंह का पुत्र । वांकिम = वक्रता से । रातौ = अनुरक्त । मेळ अरातौ = शत्रुओं से संधि करने में विरक्त ।

१५—गज ढोहै = हाथियों को मारता है ।

१६—सामँत = सामंत, समर्थ । पांणै = बल से । पावक = अग्नि ।

१७—करगे = हाथों से । केवौ = युद्ध, लड़ाई ।

१८—खाथे = उतावले, त्वरावाले । अछायौ = भरा हुआ ।

माहव कौ फिरतौ दळ मांहे, वाधै लड़ण जिकौ खग वाहे ।
जैतौ वीक तणौ जोरावर, भाऊ तणौ सिवौ रण भामर ॥१९॥
राज सुछळ सोभौ रूपावत, सार वधै हिमतौ सांमावत ।
आयौ जालम चरण उखेळौ. भ्वांनी दास तणौ रण भेळौ ॥२०॥
सामँत जगपति तणौ सवाई, दौलावत दुरगौ वरदाई ।
भांण तणौ हिंदू अण भंगां, जुड़तां वधै जीपवा जंगां ॥२१॥
अमर सुजाव चंद अमरक्खै, धाल तणौ सांगौ गह दक्खै ।
मुकनौ मदन वणौ कुळ मग्गै, खांन तणा जीपण खळ खग्गै ॥२२॥
अमरै साथ इता ऊदावत, अभौ हरखियौ निजरां आवत ।
पूगी जवन दळै वद पारख, आयौ अमर समर जम आरिख ॥२३॥

दुहा

अमर तणै सँग आविया, जादव भूप जतन्न ।
ईखै छत राजा अभौ, महपत रीझै मन्न ॥२४॥
दो पोत्रा हरदास रा, मांनौ खीम करन्न ।
देवावत अणभंग दळ, पायां जंग प्रसन्न ॥२५॥

---

१९ -रण भामर = युद्ध का भ्रमर ।

२०—राज सुछळ = राजा के वास्ते । सार = बल से । चरण उखेळौ = पैर उखेड़नेवाला । भेळौ = शामिल ।

२१—वरदाई = श्रेष्ठ । जुड़तां = युद्ध करते बढ़ते हैं । जीपवा = जीतने के लिये ।

२२—अमरक्खै = क्रोधवाला । गह = गर्व । दक्खै = दिखाता है । जीपण = जीतने को ।

२३—वद = बात । पारख = परीक्षा करके । जम आरिख = यमराज के सदृश ।

२४—ईखै = देखता है । छत = छत्रपति । रीझै = प्रसन्न हुआ ।

२५- अणभंग = नहीं भागनेवाले ।

चाळै दूणौ चुतर उर, वखतौ आग अजाग।
पांणां जळ चाडै प्रभू, कुसनावत कुळ माग ॥२६॥
तज हिंदू गिरवर तणौ, जोवै वाटां जंग।
जुध पांचां पँडवां जिसा, भाटी पांच अभंग ॥२७॥

छंद बेअक्खरी

तिण करनोत लोह सम ताया, अधपत निजर धिखंता आया।
चैनौ प्रथम अणी नह चूकै, सझियां धजां गजां मद सूकै ॥२८॥
दुरँग सुजाव धणी चख दीठौ, अमी दळां सम खळां अमीठौ।
बिल बळ घणै जसावत देवौ, केवी मरै करै सुज केवौ ॥२९॥
साथे दळां जगावत सांगौ, रूके लड़ण चडै मुख रांगौ।
अै करणोत करण ऊखेळा, वणियां रिण आया तिण वेळा ॥३०॥
चांपाहरा दळण चुँगलाळा, आया अस खाडिया ऊताळा।
जोरौ भांण तणौ पण जेहौ, अघट सुग्रीव रांम छळ एहौ ॥३१॥

२६—चाळै = युद्ध में। दूणौ = द्विगुण। आग अजाग = बिजली की अग्नि। पांणां = बल से। जळ = कीर्ति, कांति।

२७—जोवै वाटां = इंतजार करता है।

२८—ताया = तपाया हुआ। धिखंता = जलते हुए। अणी = सेना का अग्रभाग। सझियां धजां = सेना के सजने पर, अथवा तलवार के सजने पर।

२९—धणी = मालिक। अमी॰ = अपनी सेना के लिये अमृत समान। अमीठौ = खारा। केवी = शत्रु। सुज = वह। केवौ = लड़ाई, द्वेष।

३०—रूके = तलवार से। रांगौ = लाली। अै = ये। ऊखेळा = युद्ध। वणियां = प्राप्त होने पर। वेळा = समय।

३१—चांपाहरा = चांपावत। चुँगलाळा = युद्ध करनेवाले। अस = घोड़ों को। खडिया = चलाते हुए। अघट॰ = जैसा राम के वास्ते बल से पूर्ण सुग्रीव। एहौ = ऐसा।

भीम तणौ देवौ नृप भाळै, दीपै भीम जिही देठाळै ।
बदरावत पाहाड़ बहादर, मेर पहाड़ जिसौ तन समहर ॥३२॥
मेड़तियौ सोखण खळ मंगळ, हैमतसिंघ तणौ हीलोहळ ।
भड़ कुसळौ कुसळावत भेळौ, सेख ज्वाळ किर पवन समेळौ ॥३३॥
पातल तणौ सबळ बळ पूरै, चांदावत धारां गज चूरै ।
जोधां कांम जैतसी जायौ, ईंदौ सांम साम छळ आयौ ॥३४॥
सोढौ जगौ अमर चै साथे, रुघनाथोत अगड़ भाराथे ।
कुसळावत अमरौ पण कीधां, लागौ पगे इतां संग लीधां ॥३५॥

छप्पय

अभैसाह अवनेस, निरखि अमरेस हरक्खे ।
पम हुकम अक्खियौ, परम अवसांण परक्खे ॥
मो दळ सिंघ समांन, रवद भांजण रोसारी ।
अहुर अमर आवियौ, जांण तन पक्खरधारी ॥

३२—भाळै = देखता है । दीपै = शोभा देता है । देठाळै = दृष्टि पड़ने पर । मेर = सुमेरु पर्वत । समहर = युद्ध में ।

३३—हीलोहळ = समुद्र के समान । सेख ज्वाळ = शेषनाग की ज्वाला के समान । पवन समेळौ = पवन के शामिल ।

३४—धारां = तलवार की धार से । जायौ = पुत्र । सांम = नाम है । साम छळ = स्वामी के वास्ते ।

३५—सोढौ = सोढा पवारों की शाखा । अमर चै = अमरसिंह के साथ । अगड़ = आगल । भाराथे = युद्ध की ।

३६—अवनेस = राजा । अक्खियौ—कहा । अवसांण = समय, मौका । रवद = मुसलमानों का । रोसारी = क्रोधवाला । पक्खरधारी = पाखर धारण करनेवाला । यहाँ 'पक्खर' लिखना भूल है; क्योंकि यह अमरसिंह का विशेषण है । पाखर घोड़े पर डाला जाता हैं । मनुष्य के पहनने का 'कवच'

आवियौ फेर मेळो अणी, अति सताब भेलौ अटक।
भळि लियौ हुकम समना भड़ां, करण चूर जवनां कटक ॥३६॥
उठो मेछ अति बली, मरण आदरै समंनौ।
प्रलै रीत पर चक्र, ईख अणचीत उपन्नौ॥
उठी अमर आवियौ, कमध मेळियां करारां।
ऊं निबाब आगळी, कही सगळी हलकारां॥
जिण वार मिळे मंत्री जवन, सकळ वात आखे सगह।
सकबंध भूप अभसाह सूं, करै संधि छुडे कळह ॥३७॥

छंद हणूफाल

वपि सेर सेरविलंद, दुखि विकळ छोडण दुंद।
उरि विरह असह अपार, अब सार समरै वारि ॥३८॥
सक हसतबंध सग्रह, संग दिया महमंद साह।
उरि वेण प्रीत उचारि, सुख वार वार संभारि ॥३९॥

कहलाता है। मेळा = नाम है। अति सताब = बहुत जल्दी। भेलौ अटक = सेना के शामिल हुआ। भळि = फिर। समना भड़ां = अच्छे मनवाले सुभटों से। कटक = सेना।

३७—समंनौ = वीर, वीर प्रकृति का। प्रलै० = शत्रुसेना के वास्ते प्रलय के समान। ईख = देखकर। अणचीत = अचानक। उपन्नौ = प्राप्त हुआ। मेळियां = इकट्ठा करके। करारा = बलिष्ठ, समर्थ। ऊं = इधर। आगळी = अगाड़ी। सगळी = सब। आखे = कही। सगह = गर्व-सहित। सकबंध = युद्ध करनेवाले, लड़ाकू।

३८—वपि = शरीर से। सेर = शेर, सिंहरूप। दुंद = युद्ध। उरि = मन में। सार = तलवार को। वारि = वर्ज करके। (मंत्रियों को)।

३९—सक हसतबंध = युद्ध का हस्तकंकण बाँधनेवाला। संग० = संधि के लिये मंत्रियों के साथ महमदशाह को भेजा। उरि० = उसने अपने मन में प्रेम के साथ कहा।

इम कहै वयण अमीर, धरि संग प्रामूं धीर ।
दुख जीवणै दुरि पार, मृत लहूं मंगलवार ॥४०॥

दुहा

यौं निबाब उर ऊकळै, दिल परजळै सदाह ।
छोहि बळै जिम छाडियौ, अंतरि जलै अवाह ॥४१॥
आखै अरज अमीर सूं, सारा मिले सिपाह ।
ऊपरवट राहां उभै, राठौड़ां चौराह ॥४२॥
रस कीधां साजी रहै, जुड़ियां बाजी जाय ।
लीजै बांह कमंध की, दीजै बीच खुदाय ॥४३॥
संधि विचारे अमर सूं, कीजै वात सिताब ।
उणके हाथ भळाइयै, अपणै दळ की आब ॥४४॥

छंद बेअक्खरी

सेर अरज मांने सुख पायौ, अमर पास निज मंत्री आयौ ।
सेरविलंद तणो विध सारी, अमरै सूं तिण विवरि उचारी ॥४५॥

४०—इम० = ऐसे वचन अमीर से नवाब ने कहे कि किसी का साथ मिले तो धीरज आ सकता है। दुख० = दुःख-पूर्वक जीने से तो पार होना ही अच्छा है; इसलिये मंगलवार को लड़कर मृत्यु पाऊँगा ।

४१—उर = मन में। ऊकळै = पानी खौलता हो जैसे गर्म होकर जल रहा है। परजळै = जलता है। छोहि० = क्षोभ के मारे अंदर ही अंदर वह ऐसे जलता था मानों ढका हुआ भड़भूँजे का भाड़ ।

४२—आखै = कहता है। सारा = सब। ऊपरवट = दोनों पक्षों में राठोड़ों का पक्ष ऊपर है।

४३—रस = प्रीति। साजी रहै = अच्छी रहती है। जुड़ियां = लड़ने से। लीजै बांह = राठोड़ से कौल करार कर लेना चाहिए ।

४४—भळाइयै = सुपुर्द कर देना चाहिए। आब = प्रतिष्ठा, आबरू ।

४५—विध = विगत। विवरि = विवरण करके, विस्तार-पूर्वक ।

आदि पखां रज धरम अमूका, रूकहथा संग उभै नरूका।
नाहर कौ माहव किरि नाहर, मुहकम कौ सूजौ लखमीसर ॥४६॥
सांमि तणै छुळि कांम सगाहा, कमधां दळ साथे कछवाहा।
सहस उभै भड़ लियां सकाजा, मिळियौ अमरहूंत महाराजा ॥४७॥
ऊदाहरै तरां चित आंणी, पण रण चडे मुरद्धर पांणी।
अठी अभौ नृप जंग अधायौ, उठी अमोर चडै रिण आयौ ॥४८॥
पास मुज्झ कजि गुंज पठाया, आरित सूं मंत्री अरि आया।
एत्ती धार महाभड़ अम्मर, धणी पास आवियौ धुरंधर ॥४९॥
आखी अरज धणी सूं ऐसी, ज्यास दहूं दळ पावै जैसी।
अमरै कही सुणौ अधपत्ती, भा प्राताप नमो भुअपत्ती ॥५०॥
हवै दळी बलिवंत हठायौ, प्रथीनाथ जस मोटौ पायौ।
सो अब वेध तजे सुख चाहै, मिळिवा काज मुगल ओमाहे ॥५१॥

४६—आदि० = पहले पक्ष में। रज० = राज्यधर्म को न छोड़नेवाले। रूकहथा = तलवार हाथ में लिए। उभै = दो। नरूका = कछवाहों की एक शाखा, नरूका शाखा के वीर। माहव = माधोसिंह। लखमीसर = लक्ष्मी के पति विष्णु के सदृश।

४७—कांम = कार्य करने में। सगाहा = गाढ़े, दृढ़। सकाजा = समर्थ।

४८—ऊदाहरै = ऊदा के वंशज (ऊदावत) अमरसिंह ने। तरां = तब। चित आंणी = मन में विचार किया। पण = प्रण रहता है और। चडै = मारवाड़ की कीर्ति बढ़ती है। अठी = इधर। अधायौ = अतृप्त, भूखा। चडै = आक्रमण करके। रिण = युद्ध के लिये।

४९—पास मुज्झ = मेरे पास। गुंज = सलाह के लिये। आरित सूं = त्वरा से। एत्ती धार = इतना मन में विचार करके। धुरंधर = अग्रणी।

५०—ज्यास = धैर्य, विश्वास। अधपत्ती = हे स्वामी! भा० = हे पृथ्वीपति! आपके प्रभाव और प्रताप को प्रणाम है।

५१—हवै = अब। दळी = दिल्ली के। वेध = वैर। मुगल = सेरबिलंद। ओमाहे = उत्सुक है।

वाचै रौद्र मेळची वांणी, औ गुजरात निजर आपांणी।
धारां कालि दहूं दळ ध्राया, आज वळै चौड़े रण आया ॥५२॥
दइवी वात अदीपा दीपै, जीती हार हारिया जीपै।
तिणथी चित्त प्रीत मत तोड़ै, जगपति सिंघ करै हित जोड़ै ॥
कमधांनाथ अरज हितकारी, सुणि रीझियौ हकीकत सारी ॥५३॥

दुहा

आखी वद राजा अभै, अमर अभै वर वीर।
उभै प्रवाड़ा ऊधरा, मारि मनावां मीर ॥५४॥
अभौ कहै रींझै अमर, वैगी कीजै वात।
मिच्छ सिधावै हीणपद, ग्रह आवै गुजरात ॥५५॥

इति श्री परमजस रूपक षट्चत्वारिंश प्रकाश संपूर्णम् ॥ ४६ ॥

५२—वाचै = कहता है। रौद्र = मुसलमान। औ = यह। आपांणी = अपने। धारां = तलवारों की धाराओं से। कालि = कल। ध्राया = तृप्त हो गए हैं। वळै = फिर।

५३—दइवी वात = दैव की गति अद्‌भुत है। अदीपा = नहीं प्रकाशवाले। दीपै = प्रकाशित होते हैं। जीती० = जीतनेवाले हार जाते हैं। हारिया = हारे हुए। जीपै = जीत जाते हैं। सिंघ० = हे जगपति! सिंह प्रेम से हाथ जोड़ता है। कमधांनाथ = राठोड़ों का मालिक। रीझियौ = प्रसन्न हुआ।

५४—आखी = कहा। अभै = अभयसिंह। अभै = भय-रहित। प्रवाड़ा = युद्ध। ऊधरा = उन्नत। मारि = मारकर। मनावां = कबूल करवा लेते हैं।

५५—मिच्छ = म्लेच्छ, मुसलमान। हीणपद = पदच्युत। ग्रह = (गृह) अपने घर।

शुद्धिपत्र

[ग्रंथ-संपादक के काशी से सुदूर रहने, विलंब से बचने के लिये उनके पास अंतिम प्रूफ न भेजे जा सकने, क्वचित् लिपि की भ्रामकता रहने तथा प्रूफ-संशोधक को डिंगल भाषा से अभिज्ञता न रहने के कारण कुछ भूलें रह गई हैं। आशा है, शुद्धिपत्र देखकर पाठक सुधार कर लेंगे।]

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ—पंक्ति
अपवग्ग	अपवर्ग	३—२
दुस	दुज	८—२३
दायका:	दायिका	१०—२५
सामथ	सामर्थ्यं	११—२
माली	मांझी	११—११
तिल	तिण	१२—१४
देल	चंदेल	१३—२०
जिवै	जितै	१६—७
	हैं।	१८—१५
महाव्रतवासी	महाव्रतवाली	१८—२५
वीरों नेम हाराज	वीरों ने महाराज	२३—२३
बोल ही बाल	बोल ही बोल	२६—१६
न फेरिय	नफेरिय	३३—१२
मुगद	मुगत	४५—१८
रगे	रग्गे	४६—३
में	से	४६—२३
छत्री सौ	छत्तीसौ	५०—३
चामर आळ	चामरआळ	५१—८
छत्ती सै	छत्तीसै	५१—१०
थमा	थया	५३—६
आंग मै	आंगमै	५३—११

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ—पंक्ति
पर जाळे	परजाळे	५३—१२
अगगै	अंगमै	५४—१४
वारूते	वारू तै	५५—३
मार के	मारके	५८—२३
हेहय	हे=हय, घोड़े	५६—२३
साहब सिंह	साहबसिंह	६१—१६
घांरे	घारे	७१—७
मछरी कां	मछरीकां	७२—३
पडवेस	पंडवेस	८०—१४
बगत्तर यं	बगत्तरयं	८१—९
थाक	थोक	८४—१४
भीमंग रू	भीमंगरू	८८—२
होनूं	दोनूं	१००—६
ऊबेलड़ौ	ऊबेलणौ	१००—१८
कर मरै	करम रै	१०१—१५
०	दुहा	१०६—६
आगमतं	आगम तैं	११०—१२
अजसिंह	अजबसिंह	११४—२०
सबळ सींह	सबलसींह	११७—१२
उतावै	उठावै	१२३—५
मांडल	मांडणा	१२३—२५
हाथ	हाथ मैं	१२६—१६
साई	सांई	१२८—४
खा गह्या	खागह्या	१४०—११
घाघल	घांघल	१४३—१
पड़	पणा	१४३—४
कळ हणा	कळहणा	१४४—८
दरगाह	दरग्गाह	१४६—१२
पूणा	पूर्णा	१४७—२३
लाखी कां	लाखीकां	१६३—९
बोट जै	बोटजै	१६४—८

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ—पंक्ति
जागर्ति	जागृति	१६५—१३
भला मन	भलामन	१६८—१५
उगर सेन	उगरसेन	१७१—७
घरणी बराह	घरणीवराह	१७२—१७
विंदणा	विंदणा	१७३—८
मिलने का	गिलने का	१७९—२१
आ संगरू	आसंगरू	१८०—१४
जगन्नाथ सिंह	जगन्नाथसिह	१८५—२३
सब ळेस रौ	सबलेस रौ	१८६—१२
आरंभ	आरंभे	१८७—४
गोर मैं	गोर मैं	१९२—९
चंद्र प्रहास	चंद्रप्रहास	१९३—१०
रिड़ माल	रिडमाल	१९५—१७
जौंबतां	नौबतां	२०१—९
चाले	घाले	२०१—२४
मछरी के	मछरीके	२११—१०
गुण चाळै	गुणचाळै	२१७—१२
नाटी	भाटी	२२०—४
चका से	चकासे	२२७—८
वाकी	बांकी	२२७—१८
अग	अंग	२३२—१
यी	यों	२३४—१४
आई दान	आईदान	२३५—१७
सकली पुरा	सकतीपुरा	२३७—९
चंद्र प्रहास	चंद्रप्रहास	२४३—३
ऊपर	ऊपरै	२५०—९
बीबां	मुसलमानों का	२५७—२०
तिराए	गिराए	२५८—२२
भराहुआ	मरा हुआ	२५९—१७
घारू जळां	घारूजळां	२६०—५
तूजौ	दूजौ	२६२—१०-२०

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ—पंक्ति
सगती पुरो	सगतीपुरो	२६३—१-१४
चुग ळाळां	चुगळाळां	२८५—३-१९
धर	धरां	२८८—१२
हुम	हुव	२९२—४
द्रणाड़ै	द्रूणाड़ै	२९२—६
राठ वडांह	राठवड़ांह	२९२—६
हरियदं	हरियँद	२९९—७
जुआरी	जूआरी	२९९—११-२१
सूरो	सनूरो	३००—२०
वह तीवान	वहतीवान	३१७—१८
चरणों	चरणों में	३२५—२६
आरिया	ओरिया	३४१—२०
हाथियों का	घोड़ों का	३५३—२१
द्वारका	मेवाड़ में नाथद्वारा	३५६—२०
कमँधी	कमधां	३५९—८
अधाकायौ	अधकायौ	३७२—२३
समीसर	समोसर	३७५—१-१५
नवम	द्वितीय	३७६—१५
भणां कि	भणांकि	३७८—५
सुभ	सुम	३७९—१२
महाराजा को	महाराजकुमार को	३८५—१६
राव चूंडाजी का भतीजा	०	३९१—२५
अकळ पूर्णा	अकळ = पूर्ण	३९३—१९
बाळ किसन	बाळकिसन	३९४—१
कूपा	कूंपा	३९७—३-१४
शत्र	शत्रु	४००—२६
होती	०	४१०—१७
महाराजा	महाराणा	४२७—१३
गिसी	जिसी	४३८—२
तलवारों	तलवारों से	४३९—२१
इपजेणा	उपजेणा	४४२—४

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ—पंक्ति
काम बगस	कामबगस	४४३—६
तेड़ा यौ	तेड़ायौ	४४४—६-१६
सु जपायां	सुजपायां	४४७—४
सो बौ	सोबौ	४५४—१२
हाथाळौ	हाथाळौ	४६१—५
देदावत	दूदावत, मेड़तिया	४६१—२३
सेम	खेम	४६४—५
पधारियो	पधारिया	४६४—७
हिदु	हिंदू	४७४—१०
इंद्र सिघ	इंद्रसिंघ	४८२—५
आका रीठौ	आकारीठौ	४८३—८-२०
टीकमनी	टीकमजी	४९२—२५
रायी कै	रायीकै	४९५—६-२२
राई का	राईका	४९५—२२
पुष्करजी	पुष्करजी में	४९६—२१
अल्ला वरदी	अल्लावरदी	४९७—१४-२३
श्रुति	स्तुति	५०६—२०
उपज	उपजे	५१३—१७-२५
खींचमी	खींवसी	५२०—१३
वरे	तरवरे	५२०—१७
इसलअली	इसनअली	५२२—५
उलट्ट	उलटै	५३६—१
दूल	तूल	५३६—१८
वेदोक्ति	वेदोक्त	५४४—२१
इभ	इम	५५५—४
पडवेसां	पँडवेस।	५५५—७-२०
दाय	दाप	५५५—२१
ध्रुव को	धुरी को	५५८—२०
सम्हळायौ	सम्हळाया	५६५—१९
साभड़	साभण	५६८—२३
उठाया था, वैसे यह शायद		५७६—२६

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ—पंक्ति
अभसल्ल	अभमल्ल	५७७—५
उत्साह से	उत्साह	५९९—१८
राज के	राजा के	६१०—१६
राधानंद कँवार	राधा नंदकवार	६११—२
कंवारवर = क्वारी कन्याओं का वर	राधा और नंदकँवार, श्रीकृष्ण को। वर = श्रेष्ठ	६११—१५
पूर्ण	पूर्ण अथवा आम्रवृत्त	६१२—१६
कंदळी = जमीकंद आदि कंद	कंदली = केला	६१२—२०
गृह	गेह	६१८—५
राव	राजा	६२१—२४
सिर पाव	सिरपाव	६२२—३
धारी	धोरी	६२७—१७
जैवार	जैतवार	६२८—२
ऊठा	ऊठ	६२९—५
पृथ्वी की सत्ता	पृथ्वी की सतह (तल)	६३३—१८
धूधळ	धू ंधल	६३६—५
विड्ड्सिंह	विड्दसिंह	६३७—२३
परबत सर	परबतसर	६४२—१-१३
वांक वाळां	वांकवाळा	६४६—१
वांक = वक्रता। वालां = राठोड़ों का	वांकवालां = टेढ़े चलनेवालों को	६४९—१४
हे कंप	हेकंप	६४९—२-१५
	मानता	६५०—२५
इस	इक	६५२—२५
रसण	रसणा	६५४—१२
उद्दम्मी	उदम्मी	६५८—२
मृगशिरा	मृगशिर	६६५—१७-१८
जाधांण	जोधांण	६६७—१६
फागुणं	फागुण	६६८—५
अहूँ	दहूं	६७५—१०

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ—पंक्ति
तय	तब	६८४—२३
नाट	नाक	६९१—१५
उरग्गह	उरगह	६९२—१३
चाग	त्वरा से	६९५—१५
चठट्ठे = बल	चठट्ठे = बढ़े	७१०—१८
ज्ञु गू	जंगू	७१२—१९
सामिलि	मिलि	७१८—९
सघारण	सँघारण	७१९—१
जातनेवाला	जीतनेवाला	७२०—१६
अघवत	अघपत	७३०—१
न रावत	नरावत	७३०—३
उनंगी	ऊनग्गी	७३३—३-१५
तलवार से	कटारी से	७३३—१९
फलमालौत	फतमालौत	७३४—७
तलवार	कटारी	७३४—१४
वखतौप दी	वखतौ दीप	७३६—२
अछाको	अछायौ	७३७—३·१५
मेघ का बंधु है	सहायक है	७३७—१७
तलवार से	कटारी से	७३७—२३
सिरदारौ ति	सिरदारोत	७३८—७
प्राजै	प्राफै	७३८—१३
टक्स	टैक्स	७४०—१६
तलवारों से	कटारियों से	७४१—१३
चाहंतौ	चाहतौ	७४३—१२
सब लांणी	सबलांणी	७४८—६
राड़ीगारा	राडीगारौ	७४९—१
नरोल	हरोल	७६७—२१
कळह सँपेखया	कलहया पेखया	७६८—१२
शब्द	कात्यायनी देवी	७६९—१३
दृष्टि से	वृष्टि से	७७५—१५
के	की	७७५—२४

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ—पंक्ति
तलवार	कटारी	७७५—२५
तिजड	तलवार	७८६—१८
बिना ढंग के	अग्नि के शरीर पर	७८७—२१
खद्राळ	खदाळ	७९४—३-१८
दस	इस	७९८—२६
अतु	अतुल	८०७—३
पुत्र	पौत्र	८०७—२६
पोकरण	पोकरणा	८१०—१३
भ्वांनी दास	भ्वानीदास	८१७—४
खीम करन	खीमकरन	८१७—१४
पवारों	पंवारों	८१९—२०
एत्ती	एती	८२२—८

बारहट बालाबख्श राजपूत-चारण-पुस्तकमाला

जयपुर के श्रीयुत बारहट बालाबख्शजी के दान से यह पुस्तकमाला प्रकाशित की जा रही है। इसमें राजपूताने के चारणों और भाटों आदि के उत्तमोत्तम प्राचीन ऐतिहासिक काव्य प्रकाशित किए जाते हैं। इस माला में अब तक नीचे लिखे ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं—

१—बाँकीदास ग्रंथावली [पहला भाग]

कविराज बाँकीदास डिंगल भाषा के महाकवि थे। उनके २४ ग्रंथों में से सूर-छतीसी, हसी-छतीसी, वीर-विनोद, धवल-पचीसी, दातार-बावनी, नीति-मंजरी और सुपह-छतीसी ये सात ग्रंथ अभी तक मिले हैं, जो इस खंड में एक साथ ही छापे गए हैं। आरंभ में बाँकीदास जी की जीवनी और प्रत्येक पृष्ठ में कठिन शब्दों के अर्थ तथा उनके उपयोगी विवरण आदि पाद-टिप्पणियों में दिए गए हैं। कविता बहुत ही ओजस्विनी और वीर-रस-पूर्ण है। १०० पृष्ठों से ऊपर की जिल्द बँधी पुस्तक का मूल्य केवल आठ आने।

२—बीसलदेव रासो

यह ग्रंथ सं० १६६९ का लिखा हुआ है। इसकी भाषा प्राचीनतम हिंदी है। इसमें बीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) के जीवन की मुख्य घटनाओं और युद्धों आदि का उत्कृष्ट वर्णन है। कठिन शब्दों के अर्थ तथा टिप्पणियाँ दे दी गई हैं। १७५ पृष्ठों की जिल्ददार पुस्तक का मूल्य केवल आठ आने।

३—शिखर वंशोत्पत्ति

कविवर गोपाल जी रचित यह सीकर राज्य का छंदोबद्ध इतिहास है। यह एक अनूठी और संग्रहणीय चीज है। मू० बारह आने।

४—बाँकीदास ग्रंथावली [दूसरा भाग]

जिन्होंने इसका प्रथम भाग देखा है उनको इस ग्रथ की उपयोगिता के संबंध में बतलाने की आवश्यकता नहीं है। इसमें महाकवि बाँकीदास जी के अन्य उत्तमोत्तम काव्यों का संग्रह है। मूल्य बारह आने।

५—व्रजनिधि ग्रंथावली

इसमें जयपुराधीश स्वर्गीय श्री सवाई प्रतापसिंह जी देव 'व्रजनिधि' रचित २३ काव्य-ग्रंथ संगृहीत हैं। राधाकृष्ण के प्रेम-विषयक एक से एक बढ़कर उच्च कोटि की कविताएँ भरी पड़ी हैं। आरंभ में विद्वान् संपादक लिखित प्रस्तावना और 'व्रजनिधि' जी का जीवन-चरित्र भी है। पृष्ठ-संख्या लगभग पौने पाँच सौ, मूल्य केवल तीन रुपए।

६—ढोला मारूरा दूहा

इस प्रेम-गाथा काव्य में नरवर के राजकुमार ढोला और उसकी प्रियतमा पूगल की राजकुमारी मारुवणी तथा मालवे की राज-कन्या मालवणी के प्रेम की अनोखी कहानी बड़े सुंदर रूप में कही गई है। इस ग्रंथ की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ दुर्लभ स्थानों से प्राप्त करके तीन विद्वानों ने परिश्रमपूर्वक इसको संपादित करके तथा पांडित्यपूर्ण बृहत् भूमिका, हिंदी अनुवाद और पाठांतर सहित मूल दूहे, शब्दार्थ, शब्दकोष और मूल दूहों की प्रतीकानुक्रमणिका देकर प्रस्तुत किया है। पृष्ठ संख्या ९०० से ऊपर; प्राचीन राजपूत-कलम के तिरंगे तीन चित्र, सुंदर जिल्द, मू० चार रुपए।

७—बाँकीदास ग्रंथावली [तीसरा भाग]

इस भाग में बाँकीदास जी के नौ ग्रंथ और एक सग्रह प्रकाशित हुए हैं। प्रारंभ में पुरोहित हरिनारायण शर्मा बी० ए० की ६६ पृष्ठ की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। प्रत्येक पृष्ठ में कठिन शब्दों के अर्थ तथा उनके उपयोगी विवरण आदि भी दिए गए हैं। पृष्ठ-सं० २३३ सजिल्द। मूल्य केवल सवा रुपया।

८—रघुनाथ रूपक गीतांरा

डिंगल-भाषा के महाकवि मंछ (मनसाराम) का यह प्रसिद्ध ग्रंथ सं० १८८३ वि० में लिखा गया था। इसमें श्रीरामचंद्र जी की कथा का बड़ा कवित्वपूर्ण वर्णन है। साथ ही यह डिंगल भाषा का अत्यंत प्रामाणिक रीति ग्रंथ भी है। खारैड़ जी ने डिंगल-छंदों का हिंदी में शब्दार्थ और भावार्थ देकर इस ग्रंथ का बड़ी योग्यता के साथ संपादन किया है। आरंभ में पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी० ए० विद्याभूषण की लिखी हुई महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पृष्ठ संख्या ३६०; सजिल्द; मूल्य दो रुपए।